राम प्रकाश गौर

अभिनन्दन-ग्रन्थ

हिन्दी के उन्हीं साधकों, पुजारियों और पुरोधाओं में प्रो0 राम प्रकाश गोयल का नाम अग्रगण्य है। 74 वर्षीय गोयल हिन्दी के प्रति समर्पित भाव से सेवा कार्य में लगे रहे हैं।

मैं ऐसे धीर, गम्भीर, सरल एवं सहज प्रकृति वाले मानवीय गुणों से सम्पन्न, विद्वान, कवि, लेखक, नाटककार, उपन्यासकार जैसे बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी प्रो0 राम प्रकाश गोयल के अभिनन्दन ग्रन्थ के सफल प्रकाशन हेतु अपनी हार्दिक मंगल कामनायें प्रेषित करता हूँ।

केशरी नाथ त्रिपाठी
अध्यक्ष, विधान सभा लखनऊ

प्रो0 रामप्रकाश गोयल की साहित्यिकता से वर्षों से परिचित हूँ। वे हिन्दी भाषा एवं साहित्य के विकास के लिए तन-मन-धन से समर्पित है। वे बहुआयामी काव्य प्रतिभा के धनी है। मैं सरस्वती के इस वरदपुत्र की स्वस्थ दीर्घायु की प्रार्थना परमेश्वर से करता हूँ

विश्व प्रकाश दीक्षित 'बटुक'
ए-26, लाजपत नगर,
साहिबाबाद, गाजियाबाद

प्रो० राम प्रकाश गोयल

अभिनन्दन-ग्रन्थ

प्रधान सम्पादक

डॉ० महेश 'दिवाकर'

डी०लिट० (हिन्दी)

प्रकाशक

अखिल भारतीय साहित्य कला मंच, मुरादाबाद (उ०प्र०)

दूरभाष : 0591-430111

प्रकाशन	:	चन्द्रा प्रकाशन मुरादाबाद (उ0प्र0) फोन : 0591-358841
सर्वाधिकार	:	अखिल भारतीय साहित्य कला मंच, मुरादाबाद (उ0प्र0)
आवरण	:	कु0 ऋजु पवार मुरादाबाद (उ0प्र0) फोन : 0591-430111
प्रथम संस्करण	:	2001
मूल्य	:	रु0 300/-
वितरक	:	अखिल भारतीय साहित्य कला मंच मुरादाबाद (उ0प्र0)
लेज़र टाइप सैटिंग	:	रॉयस कम्प्यूटर्स साहिबाबाद, गाज़ियाबाद (उ0प्र0)
मुद्रक	:	आर0 के0 ऑफसैट 1617-ए/ए-1, उल्धनपुर, नवीन शाहदरा, दिल्ली-32

PROF. RAM PRAKASH GOEL : ABHINANDAN GRANTH
Edited by : DR. MAHESH 'DIWAKAR'

Price Rs. 300/-

प्रधान सम्पादक

सम्पादन-समिति

सहयोगी संस्थाएँ

1. अखिल भारतीय साहित्य कला मंच, मुख्यालय – मुरादाबाद
   फोन : 0591-430111
2. अखिल भारतीय साहित्य कला मंच शाखा – बरेली
   फोन : 0581-458711
3. अखिल भारतीय साहित्य कला मंच शाखा – मेरठ
   फोन : 0121-533103
4. अखिल भारतीय साहित्य कला मंच शाखा – फैजाबाद
5. अखिल भारतीय साहित्य कला मंच शाखा – सुल्तानपुर
   फोन : 05362-25379
6. अखिल भारतीय साहित्य कला मंच शाखा – बिजनौर
   फोन : 01342-60129
7. अखिल भारतीय साहित्य कला मंच शाखा – गाजियाबाद
   फोन : 0120-463191
8. अखिल भारतीय साहित्य कला मंच शाखा – नैमिषारण्य
   फोन : 05865-51292
9. अखिल भारतीय साहित्य कला मंच शाखा – रायबरेली
   फोन : 05315-44383
10. विवेक गोयल साहित्य पुरस्कार समिति – बरेली
    फोन : 0581-475074
11. साहित्य साधना मंच, रुहेलखण्ड विश्वविद्यालय – बरेली
12. साहित्य सुरभि – बरेली
    फोन : 0581-430626
13. साहित्यकार परिषद् – मुरादाबाद
    फोन : 0591 – 352061, 352370
14. काव्य गंधा – बरेली फोन : 0581-559369
15. राष्ट्रीय हिन्दी साहित्य सेवा सम्मेलन – बरेली
    फोन : 0581-440302
16. कवि गोष्ठी आयोजन समिति – बरेली
17. शब्दाँगन, बरेली फोन : 0581-551710
18. सुर वंदन साँस्कृतिक संस्था, बरेली फोन : 0581-572561

सम्पादकीय

साहित्यकार साधारण से कुछ इतर होता है। वह अपने कृत्यों एव व्यवहार के द्वारा अपने जीवनकाल में कुछ ऐसे अनूठे कार्य कर देता है जिसकी स्थापनाएँ युग-युगान्तर तक मानवता के लिए उद्धरण बन जाती हैं।

अखिल भारतीय साहित्य कला मंच ने अपनी स्थापना (4 मार्च 1988) से ही साहित्यकारों की साहित्यिक गतिविधियों को जीवन्त रखने का स्तुत्य कार्य किया है। अनेक कृतियों का प्रकाशन एव सम्पादन कर उनके साहित्य को हिन्दी-प्रेमियों के लिए उपलब्ध कराया है। यही नहीं ऐसे असाधारण व्यक्तित्व के साहित्यकारों को उनके कृतित्व के लिए सम्मानित एवं अभिनन्दित भी किया है और निरन्तर यह कार्य साहित्य सेवी भामाशाहों की निस्वार्थ सेवा भावना के कारण चल रहा है।

साहित्यकारों का अधिक से अधिक साहित्य प्रकाश में आये। उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व से अधिक से अधिक साहित्य-प्रेमी परिचित हों, इसीलिये मंच की ओर से यह कार्य कई स्तरों पर चल रहा है, यथा-विविध विधाओं में सामूहिक काव्य-संकलनों का प्रकाशन करना, जिसके अन्तर्गत मंच की ओर से अब तक - ''यादों के आर-पार'', 'प्रणय गंधा', 'प्रेरणा के दीप' (कविता-संकलन), 'अतीत की परछाइयाँ' (कहानी संकलन), 'नेह के सरसिज' (गीत संकलन), नूतन दोहावली 'तुलसी वाड्.मय विमर्श' (तुलसी के जीवन दर्शन व साहित्य पर आधारित (निबन्ध), 'काव्यधारा' (गीत संकलन), 'बाल सुमनों के नाम' (बाल कविता-संकलन), 'समय की शिला पर' (दोहा-संकलन) 'वन्दे मातरम्' (देशभक्ति के गीतों-कविताओं का सकलन), रुहेलखण्ड के प्रमुख स्वातन्त्रयोत्तर साहित्यकारों का परिचय कोश', नयी शती के नाम (बृहद काव्य-संकलन-900 पृष्ठ) 'भारत की हिन्दी सेवा साहित्यिक - संस्थाओं का परिचय कोश'

द्वितीय स्तर पर साहित्यकारों की काव्य कृतियों, शोध-ग्रन्थों का प्रकाशन भी मच की ओर से किया है और किया जा रहा है जो कि   के सहयोग से चल रहा है इन प्रकाशनों में

उल्लेखनीय हैं -

1. 'सम्राट' - लेखक प्रो0 राजवीर सिंह 'क्रान्तिकारी'
2. 'गज़लपुर' - सम्पादक-सागर मिरज़ापुरी
3. 'धीरज' (उपन्यास)-लेखक राजकुमार 'रसिक'
4. गुरु गोविन्द सिंह के काव्य में हिन्दू संस्कृति-
   लेखक पं0 विश्व प्रकाश दीक्षित 'बटुक'
5. 'निष्कलंक सुभाष'-लेखक प्रो0 राजवीर सिंह 'क्रान्तिकारी'
6. संस्कृत महाकाव्यों में राम का स्वरूप विकास-डॉ0 अंजूरानी
7. नागार्जुन का कथा साहित्य (शोधग्रन्थ)-डॉ0 जी0डी0 हरित
8. पंत का वैचारिक व्यक्तित्व (शोधग्रंथ)-डॉ0 किरन गर्ग
9. 'आकाश भर आनन्द' (कविता-संग्रह)-योगेन्द्र पाल सिंह विश्नोई
10. 'संवेदना के स्वर' (कविता-संग्रह)-बलवीर सिंह 'वीर'
11. 'चक्रव्यूह' (खण्ड काव्य) - डॉ0 दिनेश गोस्वामी
12. डॉ0 महेश 'दिवाकर' : सृजन के विविध आयाम
    सम्पादक : रामगोपाल भारती, गजराज सिंह, भावना अग्रवाल
13. 'गगन न देगा साथ' (काव्य-संग्रह)-राम लाल 'अन्जाना'
14. 'सारे चेहरे मेरे' (काव्य-संग्रह)-राम लाल 'अन्जाना'

तृतीय स्तर पर मंच ने साहित्य के क्षेत्र में लब्ध प्रतिष्ठित साहित्यकारों के व्यक्तित्व एवं कृतित्व को लेकर उन पर अभिनन्दन-ग्रंथ प्रकाशन की योजना बनाई है, जिसके अन्तर्गत कुछ ग्रंथों का सम्पादन एवं प्रकाशन मंच ने किया है। इनमें उल्लेखनीय हैं :-

1. साहित्यकार बाबू सिंह चौहान : अभिनन्दन ग्रंथ
2. एक शिव-संकल्प : प्रो0 विश्वनाथ शुक्ल : अभिनन्दन ग्रंथ
3. साहित्यकार गंधर्व सिंह तोमर 'चाचा' : अभिनन्दन ग्रन्थ

उपर्युक्त तीनों अभिनन्दन-ग्रंथों का सम्पादन एवं प्रकाशन हो चुका है। अब इसी क्रम में मंच ने साहित्यकार प्रो0 रामप्रकाश गोयल अभिनन्दन ग्रंथ के सम्पादन एवं प्रकाशन की योजना बनायी।

प्रो0 रामप्रकाश गोयल अपने जीवन के 75 वसन्त देख चुके हैं। आप असाधारण व्यक्तित्व से सम्पन्न एवं बहुमुखी काव्य-प्रतिभा के साहित्यकार हैं। समाज, साहित्य, कला, शिक्षा आदि क्षेत्रों में उनकी

अद्वितीय सेवाएँ हैं। उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व के विविध आयाम हैं - कहीं वे चिन्तक हैं, कहीं दार्शनिक, कहीं साहित्यकार, कहीं कवि-शायर, कहीं शिक्षक, कहीं वकील, कहीं नाटककार, कहीं अभिनेता हैं तो कहीं मस्त एवं फक्कड़ व्यक्तित्व के धनी हैं। वे अच्छे मित्र हैं, भाई हैं, पिता हैं अथवा ये कहें कि सही मायनों में सच्चे इन्सान हैं। उनकी पीड़ाएँ, उनकी चिन्ताएँ, उनके दर्द, उनकी कृतियों में साफ झलकते हैं - 'टूटते सत्य' (उपन्यास), 'दर्द की छाँव में', 'रिसते घाव', 'एक समन्दर प्यासा-सा' इसका साक्ष्य हैं।

हिन्दी भाषा एवं साहित्य को समर्पित उनका अनूठा प्रेरक व्यक्तित्व है जो अपने ही संसाधनों से प्रत्येक वर्ष हिन्दी साहित्य के क्षेत्र में सेवारत साहित्यकारों का 'विवेक गोयल साहित्य पुरस्कार' देकर सम्मानित अभिनन्दित करता है जिसके अन्तर्गत चयनित रचनाकार को उसके समग्र साहित्य के लिए आप 5001/- की नक़द धनराशि, शाल, प्रतीक चिन्ह तथा अभिनन्दन पत्र देकर सम्मानित करते हैं। आप 'विवेक गोयल साहित्य पुरस्कार समिति, बरेली' के संस्थापक संरक्षक हैं।

प्रो० राम प्रकाश गोयल की इस समर्पित साहित्य सेवा को देखते हुए अ०भा० साहित्य कला मंच ने उन पर अभिनन्दन ग्रंथ के प्रकाशन-सम्पादन की योजना बनायी जिसे आपके रचनात्मक सहयोग ने मूर्त रूप प्रदान किया है। मैं अ०भा० साहित्य कला मंच के संस्थापक अध्यक्ष एवं ग्रंथ के प्रधान सम्पादक होने के नाते आप सभी का आभारी हूँ। आपने हमारे निवेदन को स्वीकारते हुए यथा समय अपने आलेख एवं संस्मरण, रचनाएँ, पत्र एवं साहित्य भेजकर कृतकृत्य किया है। इन ग्रंथ के प्रकाशन एवं सम्पादन के प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से जुड़े मैं अपने उन सभी साहित्यिक मित्रों एवं आत्मीयजनों के प्रति कृतज्ञ हूँ जिनके शुभ संकल्पों के कारण यह ग्रंथ पूर्णता को प्राप्त हुआ है। मैं 'सम्पादन-समिति' से जुड़े अपने सभी साहित्यानुरागियों का भी आभार व्यक्त करता हूँ, जिनका भावनात्मक सहयोग हमें मिला है। मंच उन सभी बन्धुओं और साहित्य सेवियों के प्रति अपना आभार प्रकट करता है जिनका प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष सहयोग इसके सम्पादन एवं प्रकाशन हेतु

मिला है और हम जिनका स्मरण करना यहाँ भूल गये क्योंकि यह इतनी लम्बी शृंखला है कि सभी बन्धुओं के नामों का उल्लेख करना सम्भव भी नहीं है। वे हमारी भावनाओं से जुड़े हैं।

अंत में प्रो0 रामप्रकाश गोयल अभिनन्दन ग्रंथ को हम सभी साहित्य सेवी एवं आत्मीयजन माँ सरस्वती के वाग्पुत्र प्रो0 राम प्रकाश गोयल को उनके कर कमलों में उनके 75 वें जन्म दिवस पर सश्रद्ध सादर, सप्रेम भेंट करते हुए असीम सुख का अनुभव कर रहे हैं। हम सभी परमेश्वर से प्रार्थना करते हैं प्रो0 राम प्रकाश गोयल स्वस्थ एवं सानंद रहते हुए दीर्घायु प्राप्त करें और ऐसे ही निरन्तर हिन्दी भाषा एवं साहित्य सेवा करते रहें। सद्भावनाओं एवं अमोघ शुभकामनाओं के साथ !

30 जून, 2000

डॉ0 महेश 'दिवाकर'
प्रधान सम्पादक एवं संस्थापक अध्यक्ष
अखिल भारतीय साहित्य कला मंच, मुरादाबाद (उ0प्र0)
फोन : 0591-430111

केशरी नाथ त्रिपाठी
अध्यक्ष, विधानसभा लखनऊ

दिनांक 15 मार्च 2000

संदेश

मुझे यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता हुई कि "अखिल भारतीय साहित्य कला मंच, मुरादाबाद" प्रसिद्ध कवि, लेखक एवं रंगकर्मी प्रो0 राम प्रकाश गोयल का अभिनन्दन ग्रन्थ प्रकाशित करने जा रहा है।

हिन्दी हमारी राष्ट्रभाषा ही नहीं हमारे राष्ट्र की आत्मा की अभिव्यक्ति है। हिन्दी को वैभव सम्पन्न करने के लिए जिन कवियों, लेखकों, भाषा विद्वानों तथा अन्य हिन्दी सेवियों ने प्राणपण से प्रयास किये, वे सभी वरेण्य हैं, अभिनन्दनीय और स्पृहणीय हैं।

हिन्दी के उन्हीं साधकों, पुजारियों और पुरोधाओं में प्रो0 राम प्रकाश गोयल का नाम अग्रगण्य है। 74 वर्षीय गोयल हिन्दी के प्रति समर्पित भाव से सेवा कार्य में लगे रहे हैं।

मैं ऐसे धीर, गम्भीर, सरल एवं सहज प्रकृति वाले मानवीय गुणों से सम्पन्न, विद्वान, कवि, लेखक, नाटककार, उपन्यासकार जैसे बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी प्रो0 राम प्रकाश गोयल के अभिनन्दन ग्रन्थ के सफल प्रकाशन हेतु अपनी हार्दिक मंगल कामनायें प्रेषित करता हूँ। मेरा विश्वास है इससे अभिनन्दन को ऊर्जा मिलेगी और हिन्दी जगत उनके समग्र से परिचित हो सकेगा। ऐसा श्रेष्ठ कार्य करने के लिए मैं अखिल भारतीय साहित्य कला मंच मुरादाबाद को बधाई देता हूँ।

केशरी नाथ त्रिपाठी

सेवा में,
डॉ0 महेश 'दिवाकर'
अध्यक्ष. अखिल भारतीय साहित्य कला मंच.
मुरादाबाद

उ0प्र0 आवास एवं विकास परिषद्

104, महात्मा गांधी मार्ग, लखनऊ

दिनांक 7 अगस्त 2000

संदेश

महोदय,

साहित्यकार प्रो0 राम प्रकाश गोयल अभिनन्दन ग्रन्थ योजना के सम्बन्ध में आपका पत्र मुझे मिला। आपके साथ श्री गोयल से भी बरेली में मिलने का अवसर मिला। उनसे मिलकर अच्छा लगा। इस ग्रन्थ हेतु मेरी ओर से निम्न स्मरण प्रकाशित करना चाहें :-

"श्री राम प्रकाश गोयल से मेरी भेंट बरेली में दिनांक 5 अगस्त, 2000 को हुई। उन्होंने अपनी दो पुस्तकें- "रिसते घाव" एवं "एक समन्दर प्यासा-सा" भी मुझे भेंट कीं। इन पुस्तकों से उनके व्यक्तित्व की गहराई का आभास होता है। इन पुस्तकों में उनके हृदय की वेदना भी भरी हुई है, जिसके माध्यम से उन्होंने एक उपयोगी संदेश समाज को दिया। ऐसे व्यक्तित्व का सम्मान करना गौरव की बात है। श्री गोयल से मेरा अनुरोध है कि वह उपसंहार के रूप में अपनी नई रचना "भरते घाव" के शीर्षक से करें।"

इस अवसर पर मेरी शुभ कमानायें भी स्वीकार करें।

भवदीय,

राकेश कुमार मित्तल

आई0ए0एस0 (आवास आयुक्त)

सेवा में,

डॉ0 महेश 'दिवाकर'

अध्यक्ष

अखिल भारतीय साहित्य कला मंच,

हेमराज सिंह चौहान
विशेष सचिव, मुख्यमंत्री
उत्तर प्रदेश

फोन : कार्यालय - 238371
आवास - 207092
उत्तर प्रदेश शासन, सचिवालय
लखनऊ - 226 001

दिनांक 25 अगस्त 2000

संदेश

आदरणीय श्री गोयल जी,

"एक समन्दर प्यासा-सा" नामक पुस्तक का मैंने अध्ययन किया। कई बार शब्दों में बँधे भाव, अनुभव और कल्पनाएँ कितनी अपनी लगती हैं। आपके जीवन्त मर्मस्पर्शी रचनाओं के इस संग्रह की विभिन्न विधाओं से रूबरू होकर ज़हन में मानो बिजली-सी कौंध गयी। एक चेतना लहू में रेंगने लगी। कहते हैं साहित्यकार के भीतर भी आईना होता है। अरेः वही तो खुदा है। उसको जब ठेस लगती है तो संवेदनाएँ कुम्हलाने लगती हैं। तब भावों की शक्ल में पंक्तिबद्ध हो जो कागज़ पर बिखरता है उसे ज़माना कविता या अन्य हुनर में बाँध देता है। मगर वह होता है – खुला आसमान-सा, श्वेत बर्फ़, निर्मल बहता नीर-सा संवेदनशील हृदय, जिसे "कलाकार" के नाम से पुकारा जाता है। वह हक़ीक़त की भूमि पर जब चाबुक खाता है तो हृदय से फूटती धारा कहलाती है 'कविता'। वही छिटकन कला के स्वरूप में ग़ज़ल, गीत एवं क्षणिकाओं का जामा पहनकर हमारे समक्ष प्रतिरूपित हुयी है। आपके रचना संसार में भी वही भीतर के सत्य की छिटकन है

जैसे-जैसे हम 'एक समन्दर प्यासा-सा' की गहराइयों में डूबते जाते हैं तो तादात्म्यता से रचनाकार की मानसिक पुष्टता और परख की पैनी दृष्टि की अभिव्यक्ति दक्षता मानो बोलने लगती है। आज के परिप्रेक्ष्य में कहीं न कहीं क्षुब्धता न चाहते हुए भी उभर आती है। इस चुभन को इंसानी रूह नापसन्द करती है।

उम्र के अंतिम पड़ाव की ओर बढ़ते हुए क़दमों में कहीं भी थकान का आभास नहीं है। उम्र का लम्बा तजुर्बा अनेकानेक उतार चढ़ावों के रूप में ग़ज़लों में उजागर हुआ है। दार्शनिक क्षेत्र में कहावत प्रचलित है – "जहाँ विज्ञान की पहुँच ठहरती है, वहाँ से दर्शन का आरम्भ होता है।"

इस रचना संग्रह के समन्दर में डूबकर ज़िन्दगी के विभिन्न रंग पाए जिनसे रंग-बिरंगे फूलों का गुलदस्ता मिला। आप जैसे महापुरुष को समाज को दिशा देने एवं अपने अनुभवों से लाभान्वित करने के लिए साधुवाद देते हुए दीर्घ जीवन की शुभ कामना करता हूँ। सादर,

भवदीय,

हेमराज सिंह चौहान

अनुक्रमणिका

खण्ड–एक
प्रो0 राम प्रकाश गोयल
का
व्यक्तित्व एवं कृतित्व तथा रचनाओं की समीक्ष

समीक्षायें – एक समन्दर प्यासा–सा

'सच्चे प्रेम-पत्र' की समीक्षाएँ

'रिसते घाव' की समीक्षाएँ

"दर्द में छाँव में" की समीक्षाएँ

'टूटते सत्य' उपन्यास की समीक्षाएँ

खण्ड–दो

प्रो0 राम प्रकाश गोयल की चयनित रचनाएँ, (
आकाशवाणी वार्त्ताएँ तथा उनके अपने मुक़द

खण्ड : एक

प्रो0 राम प्रकाश गोयल
का
व्यक्तित्व एवं कृतित्व
तथा
रचनाओं की समीक्षाएँ

प्रो0 राम प्रकाश गोयल के जीवन की प्रमुख घटनाएँ - तिथिक्रम में

चयनकर्ता - डॉ0 सुधा गुप्त

30 जून	1925	जन्म, बरेली में।
	1938	नाटक 'वीर अभिमन्यु' में सहदेव का अभिनय।
	1939	कवि दरबार में कवि पं0 सुमित्रानन्दन पन्त का अभिनय।
	1940	कवि दरबार में पं0 माखनलाल चतुर्वेदी का अभिनय।
	1942	हाई स्कूल, बरेली से। प्रथम श्रेणी में।
	1943	राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के प्रथम वर्ष की ट्रेनिंग (ओ0टी0सी0) मेरठ से।
	1944	राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के द्वितीय वर्ष की ट्रेनिंग (ओ0टी0सी0) मेरठ से।
	1945	राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के तृतीय वर्ष की ट्रेनिंग (ओ0टी0सी0) नागपुर से। ट्रेनिंग में सीधे हाथ की उँगली का फ्रैक्चर हुआ।
	1946	बी0एस-सी बरेली कॉलेज बरेली से।
	1946	राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के प्रचारक बनकर राजस्थान गये। 5 वर्ष तक प्रचारक रहे।
	1951	राजस्थान विश्वविद्यालय से एल-एल0बी0 किया।
	1951	राजस्थान से बरेली आए और वकालत शुरू की।
	1952	बरेली में भारतीय जनसंघ की स्थापना। मन्त्री मनोनीत हुए।
9 दिसम्बर	1952	श्रीमती सरला गोयल से विवाह।
	1955	रामपुर बाग, बरेली में 1225 गज़ का प्लाट ख़रीदा और उस पर मकान बनाना शुरू किया।

7 अक्टूबर 1955	पहली पुत्री का जन्म।
1957	पुत्री को भयंकर जिगर की बीमारी। लखनऊ इलाज को भागे। बड़ी मुश्किल से बची।
14 अक्टूबर 1957	जुड़वाँ पुत्रियों का जन्म।
1962	लायन्स क्लब बरेली के चार्टर मेम्बर बने।
21 अक्टूबर 1962	चौथी पुत्री का जन्म।
1963	पहली पुत्री के पेट का लखनऊ में आपरेशन।
1964	भयंकर टॉयफायड हुआ। 4 माह तक बीमार रहे।
3 अगस्त 1964	अपने आलमगीरीगंज के पैतृक मकान से रामपुर बाग के मकान में आए जहाँ अब भी रह रहे हैं।
3 अगस्त 1964	इसी दिन नगर पालिका बरेली (अब नगर निगम) के स्थाई फौजदारी वकील नियुक्त।
1964	उपन्यास 'टूटते सत्य' लिखा।
1964	नाटक 'भोर का तारा' में नायक कवि शेखर का अभिनय।
19 सितम्बर 1966	पुत्र विवेक का जन्म।
22 जुलाई 1968	बरेली कॉलेज के लॉ विभाग में प्रवक्ता नियुक्त।
1968	दूसरा फ्रैक्चर बाएँ पैर में।
1969	लॉ प्रवक्ता की नियुक्ति की आगरा विश्वविद्यालय के कुलपति द्वारा अस्वीकृति। हाईकोर्ट में रिट तथा बरेली में 4 वर्षों तक मुकदमेदारी। 1973 में नये कुलपति द्वारा स्वीकृति प्रदान। हाईकोर्ट के आदेश पर शिक्षण कार्य लगातार करते रहे।
1972	उपन्यास 'टूटते सत्य' प्रकाशित।
30 नवम्बर 1975	पहली पुत्री का विवाह।
1977	तीसरा फ्रैक्चर दाहिने पैर में।
1980	आकाशवाणी रामपुर से पहला कार्यक्रम प्रसारित।
1980	चौथा फ्रैक्चर बाएँ हाथ की अँगुली में।
16 जनवरी 1981	दूसरी पुत्री का विवाह।

14 फरवरी	1983	एक मात्र पुत्र का साढ़े सोलह वर्ष की आयु में निधन।
4 सितम्बर	1984	तीसरी पुत्री का विवाह जम्मू जाकर किया
जनवरी	1985	पुत्र विवेक की स्मृति में हाईस्कूल व इण्टर के छात्र-छात्राओं की वाद-विवाद प्रतियोगिता का आयोजन।
जून	1985	पाँचवाँ फ्रैक्चर बाएँ पैर में।
30 जून	1985	बरेली कॉलेज के लॉ विभाग से अवकाश प्राप्त।
जनवरी	1987	पुत्र विवेक की स्मृति में हाईस्कूल व इण्टर के छात्र-छात्राओं की वाद-विवाद प्रतियोगिता का आयोजन।
5 अप्रैल	1987	ग़ज़ल संग्रह 'दर्द की छाँव में' प्रकाशित।
13 अप्रैल	1987	(बैसाखी) ग़ज़ल संग्रह 'दर्द की छाँव में' का विमोचन।
मई	1987	पुत्र की स्मृति में 16 वर्ष तक की आयु के छात्र-छात्राओं की क्रिकेट प्रतियोगिता का आयोजन।
14 सितम्बर	1987	बरेली की 38 संस्थाओं द्वारा साहित्यकार के रूप में अभिनंदन तथा 'पं राधेश्याम कथावाचक साहित्य पुरस्कार' से सम्मानित एवं पुरस्कृत।
जून	1988	छठा फ्रैक्चर दाएँ पैर में।
अक्टूबर	1988	'दर्द की छाँव में' से ली गयी आठ ग़ज़लों का कैसेट 'आईना' प्रसिद्ध कम्पनी टी सीरीज़ ने निर्मित किया।
जनवरी	1989	प्रसिद्ध गायिका पीनाज़ मसानी द्वारा कैसेट का विमोचन।
अगस्त	1990	पुत्र विवेक की स्मृति में हर वर्ष हिन्दी दिवस 14 सितम्बर को एक साहित्यकार का अभिनंदन कर उसे पुरस्कृत करने के लिये 'विवेक गोयल साहित्य पुरस्कार समिति' की स्थापना। अब तक ग्यारह साहित्यकार सम्मानित हो चुके हैं।

21 जनवरी 1991	चौथी पुत्री का विवाह।
1991	बरेली जेसीज द्वारा सम्मानित।
26 जनवरी 1992	पुत्र विवेक की स्मृति में बालजती कन्या इन्टर कॉलेज बरेली में एक कमरे का निर्माण।
1992	'रिसते घाव' ग़ज़ल संग्रह प्रकाशित।
1992	पुस्तक 'सच्चे प्रेम पत्र' प्रकाशित। पुस्तक में प्रेमी प्रेमिकाओं के सच्चे प्रेम पत्र हैं जिनका संकलन एवं सम्पादन किया है।
1992	बरेली नगर महापालिका द्वारा नागरिक अभिनन्दन।
1992	सीतापुर की साहित्यिक संस्थाओं द्वारा सम्मान।
1992 से 1994 तक	आकाशवाणी रामपुर की कार्यक्रम सलाहकार समिति के सदस्य।
1993	लायन्स क्लब बरेली विशाल द्वारा अभिनन्दन।
26 जून 1993	दिल्ली दूरदर्शन द्वारा साहित्यकार के रूप में साक्षात्कार एवं काव्य पाठ का प्रसारण।
1993	आकाशवाणी बरेली से वार्ताएँ तथा साक्षात्कार प्रसारित।
1994	टेलीफिल्म 'एहसास' में न्यायाधीश का अभिनय।
1995	टेलीफिल्म 'बहूरानी' में नायिका के पिता का अभिनय।
1995	लखनऊ की प्रसिद्ध नाट्य संस्था 'रंग यात्रा' द्वारा कलाकर्मी के रूप में सम्मान एवं अभिनंदन।
1995	'आकाशवाणी वार्ताएँ' पुस्तक का सम्पादन।
1995	साहू रामस्वरुप स्नातकोत्तर महिला महाविद्यालय, बरेली में अँग्रेजी, हिन्दी तथा संगीत (गायन) में सर्वाधिक अंक प्राप्त करने वाली छात्रा के लिये तीन पुरस्कार सृजित।
1997	बरेली कालेज बरेली में हिन्दी तथा

	एल-एल0बी0 प्रथम वर्ष में सर्वाधिक अंक प्राप्त करने वाले छात्र-छात्राओं के लिए दो स्वर्ण पदक सृजित।
1998	टी0वी0 सीरियल 'आज का सच' में न्यायाधीश तथा प्रिंसिपल का अभिनय।
1 फरवरी 1998	हृदय की शल्य चिकित्सा अपोलो अस्पताल दिल्ली में।
2 जुलाई 1999	दूरदर्शन, बरेली से ग़ज़लकार के रूप में ग़ज़ल पाठ।
1999	ग़ज़ल, गीत, मुक्तक संग्रह 'एक समन्दर प्यासा-सा' प्रकाशित।
जनवरी 2000	दूरदर्शन बरेली से 'बुजुर्गों की समस्याएँ और समाधान' विषय पर साक्षात्कार प्रसारित।
फरवरी 2000	कन्या महाविद्यालय आर्यसमाज भूड़, बरेली में हिन्दी, संगीत (गायन) तथा चित्रकला में सर्वाधिक अंक प्राप्त करने वाली छात्रा के लिये तीन स्वर्ण पदक सृजित।
मार्च 2000	महाराजा अग्रसेन महाविद्यालय, बरेली में बी0एस-सी0 तथा बी0एस-सी0 (कैमिस्ट्री) में सर्वाधिक अंक प्राप्त करने वाले छात्र-छात्रा के लिये दो स्वर्ण पदक सृजित।
मई 2000	आकाशवाणी बरेली के कार्यक्रम सलाहकार समिति के सदस्य नियुक्त।
मई 2000	बायें पैर में सातवाँ फ्रैक्चर।
जून 2000	दूरदर्शन बरेली से "संविधान में मूल अधिकार और मूल कर्त्तव्य" विषय पर साक्षात्कार प्रसारित।

प्रवक्ता हिन्दी विभाग विश्व भारती,
शान्ति निकेतन (पश्चिमी बंगाल)

सारस्वत साधना मूर्ति - प्रो० राम प्रकाश गोयल

मोहनराम 'मोहन'

जब मुक़दमों में बहस करते हैं तो ऐसा लगता है कि मानव मस्तिष्क के अवचेतन में छिपी हुई एक-एक पर्त की तह को खोल रहे हों। विधि प्रवक्ता के रूप में जब कानून के विद्यार्थियों को लेक्चर देते हैं तो लगता है मानो एक विद्वान, विधि मर्मज्ञ क़ानून की बारीकियों को छात्रों के सम्मुख उजागर कर रहा हो। जब किसी कवि सम्मेलन अथवा मुशायरे में कविता या ग़ज़ल सुनाते हुए देखा जाये तो विश्वास ही नहीं होता कि इनका तनिक भी सम्बन्ध तर्क और मनोविज्ञान से होगा। ऐसे परस्पर विरोधी व्यक्तित्व का नाम है श्री राम प्रकाश गोयल।

श्री राम प्रकाश गोयल का जन्म 30 जून 1925 को बरेली नगर के मोहल्ला आलमगीरीगंज में स्व० श्री मुकुट बिहारी लाल वकील के यहाँ हुआ। अध्ययनशीलता और संगठन कुशलता बचपन से ही प्रकृति ने आपको दी थी। 14 वर्ष की अल्पायु में ही अपने मित्रों के साथ 'बाल परिषद्' नाम से एक संस्था आपने बनाई जो प्रति सप्ताह वाद-विवाद प्रतियोगितायें अथवा किसी सामाजिक विषय पर विद्वानों द्वारा भाषण का आयोजन करती थी। सुबह 5 बजे उठ कर अपने मित्रों को एक पंक्ति में साथ ले जाकर एक घण्टे का प्रात पर्यटन कई वर्षो तक चलता रहा। 16 वर्ष की आयु में 'यंग क्लब' नाम से क्रिकेट और बैडमिंटन का क्लब बनाया। पढ़ाई में इतने तेज थे कि अपनी ही कक्षा के साथियों को नित्य पढ़ाते थे। नगर में होने वाले साहित्यिक एवं सामाजिक आयोजनों में बचपन से ही बराबर भाग लेते रहे। अँग्रेज़ी, हिन्दी और गणित में आपकी विशेष रुचि थी और इन विषयों में अपनी कक्षा में आपके सर्वाधिक अंक आते थे। इंग्लिश ग्रामर और हिन्दी व्याकरण में आपको विशेष महारत हासिल थी। 1942 में कुँवर दयाशंकर इण्टरमीडिएट कालिज बरेली से हाई स्कूल की परीक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की और उसी वर्ष इण्टरमीडिएट साइन्स लेकर बरेली कालेज में प्रवेश लिया।

सन् 1942 के भारत छोड़ो आन्दोलन में आपने भाग लिया। उसी वर्ष बरेली में राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ की शाखा स्थापित हुई औ

आप संघ के सक्रिय स्वयंसेवक बने। 1943 में संघ के मेरठ प्रशिक्षण केन्द्र से ओ0टी0सी0 (आफ़ीसर्स ट्रेनिंग कैम्प) के प्रथम वर्ष का प्रशिक्षण प्राप्त किया। 1944 में प्रशिक्षण का द्वितीय वर्ष किया तथा 1945 में प्रशिक्षण का तृतीय वर्ष पूर्ण करने के लिये नागपुर गए। आप संघ के बरेली में प्रमुख कार्यकर्ता थे। 1946 में बी0एस-सी0 पास करके संघ का कार्य करने के लिये प्रचारक बन कर जयपुर (राजस्थान) गए। 5 वर्ष (1951 तक) जयपुर, सीकर, पिलानी, बीकानेर आदि स्थानों पर प्रचारक रहे। इसी मध्य 1950 में जयपुर कॉलेज से एल-एल.बी. प्रथम वर्ष तथा 1951 में बीकानेर कालेज से एल-एल.बी. द्वितीय वर्ष की परीक्षायें उत्तीर्ण कीं। राजस्थान की जलवायु आपके अनुकूल सिद्ध नहीं हुई और अत्यधिक स्वास्थ्य गिर जाने के कारण 1951 में आपको बरेली वापस आना पड़ा।

1951 में बरेली में मूर्धन्य फ़ौजदारी वकील स्व0 बाबू रामजी शरण सक्सेना एडवोकेट के शिष्यत्व में आपने वकालत आरम्भ की। प्रातः 7 बजे से 9 बजे तक बाबू जी के निवास पर मुक़दमों की फाइलों का अध्ययन करना, फिर उनके साथ रहकर न्यायालयों में मुक़दमों को देखना और शाम को पुनः बाबू जी के निवास पर जाकर मुक़दमों तथा कानून से सम्बन्धित अपनी शंकाओं का समाधान करना- यह कार्यक्रम अनेक वर्षों तक गोयल साहब का चलता रहा। दस वर्ष तक निरन्तर बाबू जी के साथ आप क़ानून का गहरा अध्ययन एवं उसकी बारीकियाँ सीखते रहे।

बाबू रामजी शरण न केवल एक वकील थे वरन् मेधावी कवि और शायर भी थे। हिन्दी और उर्दू दोनों ही भाषाओं पर उनका समान अधिकार था। काव्य एवं संगीत में गोयल साहब की रुचि होने का श्रेय बाबू जी को ही है। बाबू जी जब मुक़दमों में बरेली से बाहर जाते तो गोयल साहब को अपने साथ ले जाते थे। वे गोयल साहब को अपना शिष्य कम और मित्र अधिक मानते थे। बाबू जी और गोयल साहब एक-दूसरे के लिए खुली किताब थे। दोनों के जीवन की अनेक घटनायें ऐसी हैं जो केवल ये दोनों ही जानते हैं। बाबू जी कहा करते थे "गोयल, जितनी नजदीकी से तुम मुझे जानते हो, उतना मैं भी अपने को नहीं जानता।" गोयल साहब का स्वयं कहना है कि उनके व्यक्तित्व को गढ़ने का बहुत अधिक श्रेय बाबू जी को है और उनसे उन्होंने बहुत कुछ सीखा। 31 अगस्त 1984 को बाबू जी अपना

पार्थिव शरीर छोड़कर अनन्त यात्रा के लिये चले गये उनकी मृत्यु तक गोयल साहब उनके अत्यन्त निकट रहे।

1952 में आपका विवाह साहूकारा, बरेली निवासी भू0पू0 प्रधानाचार्य स्व0 श्यामा चरण वैश्य की सुपुत्री सरला गोयल से हुआ।

अपनी वकालत के 4 वर्ष बाद ही 1955 में नगर के श्रेष्ठ स्थान रामपुर बाग में 1200 गज का एक प्लाट आपने मात्र 3300 रूपये में खरीदा। 1957 से 1966 तक धीरे-धीरे अपने परिश्रम से अर्जित धन से निर्माण कार्य कराते रहे और स्वयं 1964 तक आलमगीरीगंज स्थित पैतृक मकान में रहे।

1955 में आप के यहाँ पुत्री का जन्म हुआ। एक वर्ष की आयु में ही पुत्री को भयंकर रूप से जिगर की बीमारी हो गई और सभी डाक्टरों ने जवाब दे दिया। अपनी पुत्री को लेकर आप लखनऊ भागे और वहाँ बच्चों के जिगर के विशेषज्ञ 'जिम्मी लिवर क्योर' से परामर्श किया और 6 वर्ष तक बच्ची का निरन्तर इलाज करवाकर उसे बचा पाये। 1963 में इस बच्ची के कई बार नाभि से रक्त प्रवाह हुआ और लखनऊ मेडिकल कॉलेज में उसका बड़ा आपरेशन करवाना पड़ा। बच्ची की बीमारी के ये वर्ष गोयल साहब ने अत्यन्त मानसिक कष्टों में बिताये। आप की यह पुत्री अब सकुशल है और उसके तीन पुत्रियाँ हैं।

1957 में आपके जुड़वाँ सुन्दर पुत्रियाँ हुई जो अब विवाहिता हैं और सब प्रकार से सुखी सम्पन्न हैं। 1962 में चौथी पुत्री का जन्म हुआ।

चार पुत्रियों के पश्चात् 19 सितम्बर 1966 को विवेक गोयल नामक पुत्र रत्न की प्राप्ति आपको हुई। आपके सभी सम्बन्धियों एवं मित्रों को अत्यन्त प्रसन्नता हुई। इस अवसर पर आपके निवास पर शहनाई एवं संगीत के कोमल स्वरों के मध्य एक प्रीतिभोज हुआ।

आपका पुत्र विवेक गोयल बाल्यकाल से ही अत्यन्त कुशाग्र बुद्धि का था। वह केन्द्रीय विद्यालय नं0 2 (ए0एस-सी0) बरेली का छात्र था और उसने हाई स्कूल की परीक्षा 80 प्रतिशत अंकों के साथ प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की थी। साढ़े सोलह वर्ष की किशोरावस्था में ही 14 फरवरी 1983 को 4 मास की बीमारी उठाकर वह बालक सदा के लिये आप से बिछुड़ गया। अपने मेधावी, सुशील पुत्र के निधन के असह्य दारुण दुःख ने आपको निस्पृह एवं स्थितप्रज्ञसा बना दिया

और इस असार संसार से आप को विरक्ति-सी हो गयी। बच्चे के दारुण दुःख और मानसिक क्लेश के शमन के लिये जून 1983 में परमार्थ निकेतन, स्वर्गाश्रम ऋषिकेश में आप 15 दिन तक रहे। वहाँ रह कर आपने पूज्य श्री डोंगरे जी महाराज की भागवत् कथा सुनी और कथा के विस्तार से नोट्स लिये। वैसे तो बचपन से ही आपका स्वभाव आध्यात्मिक व दार्शनिक था किन्तु अपने पुत्र के असह्य वियोग ने और अधिक आध्यात्मिक बना दिया। अपने मेधावी पुत्र की स्मृति में 1985 व 1987 में बरेली कालेज में "विवेक गोयल वाद-विवाद प्रतियोगिता" का अयोजन विद्यार्थी परिषद् के माध्यम से किया। प्रतियोगिता का विषय था "विज्ञान मानव के लिये वरदान है।" प्रतियोगिता में बरेली महानगर के हाई स्कूल एवं इण्टरमीडिएट के लगभग बीस विद्यालयों के छात्र-छात्राओं ने भाग लिया। प्रथम, द्वितीय व तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले प्रतियोगियों को पुरस्कृत करने के अतिरिक्त प्रथम आने वाले विद्यालय को 'चल वैजयन्ती' भी प्रदान की गई। भाग लेने वाले प्रत्येक प्रतियोगी के उत्साहवर्धन हेतु उसे माँ शारदा की मूर्तिमाला द्वारा सम्मानित किया गया। इसके अतिरिक्त वर्ष 1984 में हाई स्कूल तथा इण्टरमीडिएट परीक्षा में सर्वाधिक अक प्राप्त करने वाले दो छात्रों को आपने वैजयन्ती प्रदान करके सम्मानित किया। 1987 में किशोर छात्रों की क्रिकेट प्रतियोगिता आपने बरेली स्टेडियम पर आयोजित की। 1990 में अपने पुत्र की स्मृति में "विवेक गोयल साहित्य पुरस्कार समिति" की आपने स्थापना की। इस समिति द्वारा प्रति वर्ष हिन्दी दिवस 14 सितम्बर को एक साहित्यकार को सम्मानित कर अभिनंदित एवं पुरस्कृत किया जाता है। अब तक ग्यारह वरिष्ठ साहित्यकारों को सम्मानित किया जा चुका है।

सन् 1968 में बरेली कॉलेज, बरेली में विधि प्रवक्ता के रूप में अपनी नियुक्ति होने के बाद से अपने साथी प्रवक्ताओं एवं छात्रों में आप अत्यन्त लोकप्रिय रहे। आपका पढ़ाने का ढंग अत्यन्त सरस एव गम्भीर होता था। इसी कारण आपकी कक्षा में पढ़ने वाले छात्र-छात्राओं की संख्या अधिक रहती थी। आप एक कुशल प्रवक्ता थे तथा कभी अपनी कक्षा से अनुपस्थित नहीं होते थे। 17 वर्ष सेवा करने के पश्चात् 30 जून 1985 को आपने विधि प्रवक्ता पद से अवकाश प्राप्त किया। विधि विभाग के प्रवक्तागण तथा छात्र आज भी आप की कमी को बहुत महसूस करते हैं।

अत्यधिक साहित्यिक एवं बौद्धिक प्रवृत्ति के होने के कारण अपने कुछ मित्रों के साथ आपने 1956 में 'सेटर डे क्लब' की नींव डाली। उक्त क्लब की ओर से प्रत्येक शनिवार को विभिन्न विषयों पर वार्तायें और वाद-विवाद होते थे। आप आरम्भ से अब तक क्लब के मंत्री रहे। इस क्लब के प्रमुख सदस्य थे स्व0 निरंकार देव सेवक, धर्मपाल गुप्त शलभ, स्व0 होरी लाल शर्मा नीरव, स्व0 ओम प्रकाश, एस0एन0पुरी, सूरज प्रकाश गोयल, कैलाश नाथ माथुर, स्व0 रमेश चन्द्र रावत। क्लब में देश-विदेश की महान विभूतियों को आमंत्रित करके उनके विचार सुने जाते थे और खुली बहस होती थी।

सन् 1960 में साहित्यक संस्था 'आलोक' के आप संस्थापक सदस्य बने तथा इस संस्था के मन्त्री रहे। 1962 से रोटरी क्लब बरेली के आप चार्टर सदस्य हैं। बरेली के प्रमुख क्लब '[illegible] क्लब' के आप आजीवन सदस्य हैं।

राजनीतिक दृष्टि से आप जनसंघ से जुड़े रहे। 1957 में बरेली में जनसंघ की स्थापना के समय इसके मन्त्री मनोनीत हुए। आजकल आप भारतीय जनता पार्टी के कार्यकर्ता हैं। यद्यपि आपका स्वभाव राजनीति के दाँव-पेंच व उखाड़-पछाड़ के बिल्कुल विपरीत है और आप स्वयं भी कहते हैं कि राजनीति मेरे स्वभाव के प्रतिकूल है किन्तु आपका यह भी कहना है कि वर्तमान में कोई भी व्यक्ति अपने को राजनीति से अलग नहीं रख सकता। अतः प्रत्येक नागरिक का कर्तव्य है कि जो कुछ भी बन पड़े राजनीति के माध्यम से अपने देश की सेवा अवश्य करता रहे।

वेदोज्जीवनी हाई स्कूल बरेली के 14 वर्षों तक आप प्रबन्धक रहे। इस मध्य विद्यालय ने बहुत उन्नति की। वर्तमान में आप विद्यालय की प्रबन्ध समिति एवं ट्रस्ट के अध्यक्ष हैं।

नगर की विभिन्न सामाजिक, साहित्यिक, सांस्कृतिक एवं शैक्षिक संस्थाओं से गोयल साहब सक्रिय रूप में जुड़े हुए हैं। राष्ट्रवादी विचार मंच व संस्कार भारती के अनेक वर्ष तक आप अध्यक्ष रहे। कवि गोष्ठी आयोजन समिति, साहित्य कला अकादमी, हिन्दी साहित्य सेवा सम्मेलन, साहित्य मंच, राष्ट्रीय पत्र लेखक मंच, शब्दांगन आदि के आप संरक्षक हैं। नाटक एवं संगीत में भी आपकी विशेष रुचि है। सरगम परिषद्, संगम तथा कल्चरल एसोसियेशन आदि संगीत संस्थाओं के आप सक्रिय सदस्य हैं। नगर की एक प्रमुख संगीत

ास्था 'सिम्फॉनी कल्चरल एसोसियेशन' के आप प्रथम मंत्री रहे। गीत संस्था 'सुर वंदन सांस्कृतिक संस्था' के आप संरक्षक हैं। आपके ार्ग-दर्शन में महान संगीतज्ञ जगजीत सिंह, पीनाज़ मसानी, अनूप लौटा और मुन्नी बेगम के बड़े-बड़े आयोजन बरेली में हुए। 1988 आपकी ग़ज़लों का कैसेट 'आईना' का निर्माण टी-सीरिज कम्पनी किया जिसका लोकार्पण पीनाज़ मसानी ने किया था।

छात्र-छात्राओं के उत्साह-वर्द्धन के लिये आपने महाविद्यालयों में ोक स्वर्ण पदक प्रदान किये।

बरेली कॉलेज, बरेली :-

(1) राम प्रकाश गोयल स्वर्ण पदक - बी0ए0 हिन्दी में सर्वाधिक अंक प्राप्त करने वाले छात्र / छात्रा को।

(2) राम प्रकाश गोयल स्वर्ण पदक - एल-एल0बी0 प्रथम वर्ष में द्वितीय स्थान प्राप्त करने वाले छात्र/ छात्रा को।

साहूराम स्वरूप स्नातकोत्तर महिला महाविद्यालय, बरेली

(1) राम प्रकाश गोयल संगीत पुरस्कार - एम0ए0 संगीत (गायन) में सर्वाधिक अंक प्राप्त करने वाली छात्रा को।

(3) स्व0 विवेक गोयल हिन्दी पुरस्कार - अपने एकमात्र पुत्र स्व0 विवेक गोयल की स्मृति में बी0ए0 हिन्दी साहित्य में सर्वाधिक अंक प्राप्त करने वाली छात्रा को।

(3) स्व0 महेन्द्र कुमार सक्सेना अंग्रेजी साहित्य पुरस्कार - अपने मित्र स्व0 महेन्द्र कुमार सक्सेना की स्मृति में बी0ए0 अंग्रेज़ीमें सर्वाधिक अंक प्राप्त करने वाली छात्रा को।

आर्य कन्या महाविद्यालय (स्नातकोत्तर) भूड़, बरेली

(1) राम प्रकाश गोयल स्वर्ण पदक - बी0ए0 हिन्दी में सर्वाधिक अंक प्राप्त करने वाली छात्रा को।

(2) राम प्रकाश गोयल स्वर्ण पदक - बी0ए0 संगीत (गायन) में सर्वाधिक अंक प्राप्त करने वाली छात्रा को।

(3) राम प्रकाश स्वर्ण पदक - बी0ए0 ड्राइंग एंड पेन्टिंग में सर्वाधिक अंक प्राप्त करने वाली छात्रा को।

महाराजा अग्रसेन महाविद्यालय, बरेली

(1) राम प्रकाश गोयल स्वर्ण पदक - बी0एस-सी0 में

सर्वाधिक अंक प्राप्त करने वाले छात्र / छात्रा को।

(2) राम प्रकाश गोयल स्वर्ण पदक – बी0एस-सी0 केमिस्ट्री में सर्वाधिक अंक प्राप्त करने वाले छात्र / छात्रा को।

सन् 1964 में आपने त्रिकोण प्रेम पति, पत्नी और प्रेमिका अथवा प्रेमी जैसे कठिन विषय पर 'टूटते सत्य' उपन्यास लिखा। कई वर्षों तक आप उपन्यास के कथानक पर पुनर्विचार करते रहे और 8 वर्ष बाद सन् 1972 में इसको प्रकाशित कराया। उपन्यास का विषय अपने आप में अद्वितीय है और तर्क व भावुकता का विचित्र मिश्रण इस उपन्यास में है।

उपन्यास लिखने के परिश्रम और उसके कथानक से उत्पन्न अन्तर्द्वन्द्व के कारण आप मार्च 1964 में गम्भीर रूप से बीमार हुए और बचने तक की आशा न रही। चार महीने की भयंकर बीमारी से ठीक होने के पश्चात 3 अगस्त 1964 को आप अपने रामपुर बाग, बरेली स्थित भवन में आ गए। यह प्रकृति का वरदान ही कहा जायेगा कि इसी दिन आप नगर पालिका बरेली के स्थाई फौजदारी वकील नियुक्त हुए। तब से लेकर नगर निगम बनने के बाद आज भी इस पद पर आप कार्य कर रहे हैं।

आपने अनेक पुस्तकें लिखी हैं जिनका विवरण निम्नलिखित है –

पुस्तकें तथा कृतियाँ –

1 उपन्यास 'टूटते सत्य' – 1972 में प्रकाशित।
2 गजल संग्रह 'दर्द की छाँव में' – 1987 में प्रकाशित।
3 कैसिट 'आईना' जिसे 1988 में प्रसिद्ध कम्पनी टी-सीरिज ने निर्माण किया। गज़ल संग्रह 'दर्द की छाँव में', की आठ ग़ज़लें इस कैसिट में हैं।
4. गज़ल संग्रह 'रिसते घाव' – 1992 में प्रकाशित।
5. 'सच्चे प्रेम पत्र'। सम्पादक तथा संकलन कर्ता। डॉयमंड पाकेट बुक्स दिल्ली द्वारा 1992 में प्रकाशित। पुस्तक में प्रेमी-प्रेमिकाओं के सच्चे प्रेम पत्र हैं। जनवरी 1993 से दिल्ली से महिलाओं की प्रसिद्ध मासिक पत्रिका 'गृहलक्ष्मी' ने इन पत्रों को प्रकाशित किया है।
6 नाटक 'दिल और दिमाग' – 1992 में लिखा। हृदय और मस्तिष्क के बीच होने वाले सतत संघर्ष का चित्रण नाटक में

किया गया है। कई बार नाटक का मंचन हुआ जिसका निर्देशन स्वयं लेखक ने किया। धारावाहिक रूप से नाटक दैनिक 'आज' बरेली में प्रकाशित हुआ।

7 'आकाशवाणी वार्ताएँ' – 1994 में प्रकाशित। आकाशवाणी के अनेक केन्द्रों द्वारा प्रसारित विद्वानों की वार्ताओं का संकलन।

8 ग़ज़ल–गीत संग्रह – 'एक समन्दर प्यासा–सा' 1999 में प्रकाशित।

फ़िल्म तथा अभिनय –

1 1994 में टेली फ़िल्म 'एहसास' में न्यायाधीश का अभिनय।

2. 1995 में टेली फ़िल्म 'बहूरानी' में नायिका के पिता का अभिनय।

4 1998 में सीरियल 'आज का सच' में प्रिंसिपल तथा न्यायाधीश का अभिनय।

आपके उपन्यास 'टूटते सत्य' पर आधारित सीरियल 'तश्नगी' विचाराधीन है।

सम्मान :

1 1987 में नगर की 30 संस्थाओं द्वारा साहित्यकार के रूप, में अभिनंदन तथा पं० राधेश्याम कथावाचक साहित्य पुरस्कार से पुरस्कृत एवं सम्मानित।

2 1991 में जेसीज, बरेली द्वारा सम्मान।

3 1992 में नगर महापालिका, बरेली द्वारा नागरिक अभिनंदन।

4 1993 में सीतापुर की साहित्यिक संस्थाओं द्वारा सम्मान।

5 1993 में लायन्स क्लब बरेली विशाल द्वारा अभिनंदन।

6 1995 में लखनऊ की प्रसिद्ध नाट्य संस्था 'रंग यात्रा' द्वारा 'कलाकर्मी' के रूप में सम्मान एवं अभिनंदन।

जीवन दर्शन :

1 हर कार्य को व्यवस्था और अनुशासन से करना।

2 गीता के दर्शन 'कर्म करो, फल की इच्छा मत करो' पर पूर्ण आस्था और विश्वास।

3 मानव जीवन सेवा के लिये है।

4 न अन्याय करो, न अन्याय सहन करो।

5 प्रेम से महान कोई भावना नहीं। प्रेम ही परमात्मा है, परमात्मा ही प्रेम है।

आकाशवाणी केन्द्र रामपुर तथा बरेली से आपकी वार्तायें तथा काव्य पाठ बराबर प्रसारित होते हैं। 13 मई 1981 को 'खाली समय का सही उपयोग' विषय पर आपकी एक विशेष वार्ता रामपुर केन्द्र से प्रसारित हुई थी जिसे अत्यन्त पसन्द किया गया। कानूनी सहायता कार्यक्रम में आपको अनेक बार कानूनी समस्याओं का उत्तर देने व उनके प्रसारण का अवसर मिला है। दो वर्ष तक आप आकाशवाणी, रामपुर की कार्यक्रम सलाहकार समिति के सदस्य रहे हैं। दूरदर्शन दिल्ली और बरेली से अनेक बार आपके कार्यक्रम प्रसारित हो चुके हैं।

सन् 1941-42 में मात्र 15 वर्ष की अल्पायु में ही आपने बरेली नगर में दो बार कवि दरबारों का आयोजन किया जिसमें आपने एक बार कविवर पं0 सुमित्रा नन्दन पन्त का एवं दूसरी बार पं0 माखन लाल चतुर्वेदी का अभिनय किया। 1964 में 'भोर का तारा' एकांकी नाटक में आपके द्वारा कवि शेखर का अभिनय किया गया। यह नाटक अपने प्रकार का एक अजीबो-ग़रीब नाटक था और बड़ी कुशलता पूर्वक कवि शेखर की भूमिका आपने निभाई थी। कवि-पत्नी का अभिनय आपकी पत्नी श्रीमती सरला गोयल ने अभिनीत किया था।

श्री राम प्रकाश जी गोयल के हाथ और पैर की हड्डियाँ टूटने का भी अद्भुत इतिहास रहा है। सबसे पहले आपके सीधे हाथ की उँगुली का फ्रैक्चर 1945 में हुआ था जब आप नागपुर में राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के तृतीय वर्ष के प्रशिक्षण में थे। दूसरी बार जनवरी 1968 में रिक्शा और खम्बे के मध्य टक्कर होने के कारण आपके बायें पैर की दो हड्डियाँ टूट गयीं और चार महीने तक निरन्तर पैर में प्लास्टर चढ़ा रहा। तीसरी बार जनवरी, 77 में आपके सीधे पैर की हड्डी टूटी और 3 माह तक प्लास्टर चढ़ा रहा। चौथी बार 1980 में बायें हाथ की उंगुली में और पाँचवीं बार जून 1985 में बायें पैर में फ्रैक्चर हुआ। छटी बार 1988 में आपके पैर की हड्डी टूटी। सातवीं बार 27 मई 2000 को आपके बायें पैर की हड्डी टूटी है। उल्लेखनीय है कि सभी फ्रैक्चर ठीक हो गए और इनसे कोई दुष्प्रभाव आपके शरीर पर नहीं पड़ा। पैरों के फ्रैक्चर के होते हुए भी बैसाखी के सहारे आप कालेज में अध्यापन एवं कचहरी में वकालत करते रहे।

1998 में अपोलो हॉस्पिटल दिल्ली में आपके हार्ट की बाईपास सर्जरी हुई। आप स्वस्थ हैं और पूर्णतः सक्रिय हैं।

गोयल साहब को अव्यवस्था से बहुत चिढ़ है। आप अनुशासन प्रिय व्यक्ति हैं, साथ ही समय की पाबंदी और समय के सद्पयोग पर

विशेष बल देते हैं। स्वच्छता आपके जीवन से जुड़ी हुई है। दर्शन शास्त्र एवं गणित में आपकी विशेष रुचि है।

आपकी दिनचर्या नियमित एवं व्यवस्थित है। आप नित्य प्रात 5 बजे सोकर उठते हैं। नित्य क्रिया से निवृत्त होकर हल्का व्यायाम एव योगाभ्यास करते हैं अथवा एक घण्टे के लिए टहलने जाते हैं। तदोपरान्त मुकदमों से सम्बन्धित फाइलों का अध्ययन करते हैं। साथ ही जो लोग आपसे मिलने आते हैं उनसे भेंट करते हैं। प्रत्येक कार्य दिवस में प्रातः साढ़े दस बजे से सायं 4 बजे तक कचहरी में व्यस्त रहते हैं। पहले जब आप विधि प्रवक्ता थे, तब सांय 5 बजे से 7 बजे तक बरेली कॉलेज, बरेली में विधि छात्रों को पढ़ाया करते थे किन्तु अब सेवा निवृत्त के बाद से शाम का सारा समय सामाजिक एवं साहित्यिक गतिविधियों में देते हैं। रात में सोने से पहले एक घण्टे तक अध्ययन अवश्य करते हैं और रात्रि साढ़े दस बजे सोते हैं। अवकाश के दिन अध्ययन कार्य में विशेष रूप से संलग्न रहते हैं। शाम को आप वकालत से सम्बन्धित कोई कार्य नहीं करते। आप अपने सरल, सहज, निश्छल एवं लोकप्रिय व्यक्तित्व के कारण आदरणीय व गणमान्य लोगों में गिने जाते हैं।

गोयल साहब का कहना है कि हमारा कोई शत्रु नहीं बल्कि हम स्वयं के सबसे बड़े शत्रु हैं। अपने क्षणिक लाभ के लिए एवं सस्ती लोकप्रियता पाने हेतु दूसरों के साथ झूठ बोलना और धोखा देना अन्ततोगत्वा हमारे स्वयं के लिये अहितकर सिद्ध होता है। हमें इससे बचना चाहिए। गीता के दर्शन "कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन्" मे आपका अटूट विश्वास है। आप एक कर्मयोगी के समान कठोर परिश्रम को ही महत्व देते हैं।

आपका कहना है कि मनुष्य को किन्हीं भी परिस्थितियों में निराशावादी मनोभावों का शिकार नहीं होना चाहिए।

30 जून 2000 को आप अपने जीवन के 75 वर्ष पूर्ण कर रहे हैं। अखिल भारतीय साहित्य कला मंच, मुरादाबाद आपके व्यक्तित्व और कृतित्व" पर एक अभिनंदन ग्रंथ तैयार कर रहा है जो आपके जन्म दिवस 30 जून 2000 के बाद बरेली में होने वाले आयोजन मे आपको भेंट करके आपका अभिनंदन किया जाएगा।

वरिष्ठ आयकर अधिकारी,
मुरादाबाद

पुष्प हैं हमारे प्रिय रामप्रकाश

टाट बाबा

प्रभु की वाटिका अनूठी है। इसमें तरह-तरह के रंग बिरंगे पुष्प खिलते रहते हैं जिनसे तरह-तरह की सुगंध प्रस्फुटित होती रहती है। किसी फूल से संगीत की खुशबू फूटती है किसी पुष्प से शास्त्र की सुगंध निकलती है तो किसी फूल से सत्य की सुगन्ध बहती है तो किसी पुष्प से काव्य की सुवास प्रवाहित होती है।

ऐसा ही एक पुष्प प्रभु की वाटिका में खिला। यह फूल गुलाब का है। इसके चारों तरफ काँटे हैं लेकिन इस फूल की यही विशेषता है कि काँटों के बीच में रहते हुए भी यह खिला रहा। अपनी काव्य की सुवास से जनमानस को सुवासित करता रहा।

बहुत सी प्रतिकूलताएँ आयीं, अजीबो-ग़रीब ज़िन्दगी में हालात आये, बेवफाइयों के पत्थर गिरे लेकिन फूल खिला ही रहा। उससे काव्य की सुगन्ध फूटती रही।

जिस पुष्प की हम चर्चा कर रहे हैं वह पुष्प हैं हमारे राम प्रकाश गोयल।

इनके व्यक्तित्व में प्रीति की धारायें बहती हैं। आप जानते हैं, धाराओं में स्वाधीनता का संगीत होता है। धारायें अपनी मस्ती में प्रवाहित होती हैं। धाराओं को किसी सीमा में बाँधा नहीं जा सकता। इनकी प्रीति की धाराओं को कोई बाँध न सका और वह धारायें असीम में बहती रहीं।

वह तो अस्तित्व के एक सितार बन गये। उस सितार से अज्ञात स्वर फूटते रहे। कुछ ऐसे स्वर फूटे जिनसे एक गहरा सत्य मुखर हो रहा है। उनका कलाम है –

मंज़िलें उस तरफ़ भी होती हैं
जिस तरफ़ रास्ता नहीं होता।

सत्य प्रभु अभी है, यहीं है। अब हमें अपने सत्य को, अपने स्वरूप को, अपने प्रभु को उपलब्ध करना है। जो हम सभी की मंजिल है, गन्तव्य है।

मंज़िल कहते ही यह लगने लगता है कि कोई चीज़ हमसे दूर

है जहाँ हमें पहुँचना है और फिर मंज़िल पर पहुँचने के लिए रास्ता चाहिए।

रास्ते पर चलने के लिए जिस्म का सहारा लेना पड़ेगा, मेहनत करनी पड़ेगी। तब कहीं हम मंजिल को हासिल कर पायेंगे और यह भी ज़रूरी नहीं है कि मंज़िल मिल ही जाये क्योंकि शरीर परतंत्र है। परिस्थितिओं के आश्रित है। हो सकता है पर्याप्त श्रम न कर पायें और मंजिल न मिल पाये।

सत्य और प्रभु वह मंज़िलें हैं जिन्हें शब्दों में गन्तव्य कहेंगे लेकिन यह शब्द उनके लिए उपयुक्त नहीं है। वास्तविकता तो यह है कि सत्य और प्रभु के लिए कोई भी शब्द उपयुक्त नहीं है। शब्द तो केवल इशारे करते हैं।

सत्य और प्रभु परम स्वतंत्र हैं। वह परतंत्रता की सीमा में नहीं मिलते। वह प्राप्त होते हैं – स्वतंत्रता की असीमता में।

सत्य और प्रभु कहते ही उसे हैं जिसे सभी पा सकें, सब समय पा सकें, सब जगह पा सकें, सभी अपने में पा सकें।

जिसको पाने के लिए शरीर, श्रम, परिस्थिति की अपेक्षा है उसे संसार कहते हैं, सत्य नहीं।

जब सत्य हमसे दूर ही नहीं तो फिर रास्ते की कहाँ गुंजाइश है। सागर और लहर में जब दूरी नहीं तो उन दोनों के बीच में रास्ता कैसा ? जब परमात्मा और आत्मा अभिन्न हैं तो मध्य में मार्ग की कहाँ आश्यकता है ?

लगता है राम प्रकाश के काव्य में सत्य की गहरी सुगंध है। इनके काव्य की धारा 'इश्क़े मजाजी' से 'इश्क़े हक़ीक़ी' तक सतत बह रही है।

जो जिस तल पर जी रहा है इनके काव्य से उसी तल की सुगंध उपलब्ध कर सकता है।

प्रिय रामप्रकाश गोयल हमारे अभिन्न आत्मन् हैं। इनके जीवन दीप से इसी प्रकार की किरणें फूटती रहें जिनसे जन–जन का जीवन रोशन होता रहे।

ऊँ आनन्दम्

आनन्द फाउण्डेशन
गोपेश्वर वृन्दावन (उ0प्र0) – 281121

अश्क पीना है, मुस्कुराना है

डॉ० मृदुला शर्मा

यह शेर है श्री राम प्रकाश गोयल का जो उनके तप्त ह्रदय की वेदना को न केवल अभिव्यक्त करता है अपितु उनके व्यक्तित्व की एक पहचान, एक झलक भी प्रस्तुत करता है। ह्रदय में पीड़ा का अछोर सागर है, घुटन है, उदासी है, किंतु किसी से कोई शिकायत नहीं है। हरेक व्यक्ति से हँसकर मिलना उनका स्वभाव है।

मुझसे कोई भी रूठ सकता है,
मैं किसी से ख़फा नहीं होता।

अंतर्मन की तड़प को उन्होंने इस प्रकार अपने काव्य में प्रतिबिंबित किया है कि पाठक या श्रोता द्रवित होकर कुछ सोचने को विवश हो जाता है। दिल की बात सीधी सादी आम भाषा में कह देना उनके संपूर्ण काव्य की विशेषता है। सरल अभिव्यक्तिकरण के कुछ उदाहरण दृष्टव्य हैं-

'मुझे साहिल से अपने साथ लाकर,
चढ़े दरिया में छोड़ा है किसी ने।
दर्द तो मेरा सिर्फ अपना है,
उसमें शामिल मगर ज़माना है।
सबके दुखदर्द में शरीक रहूँ,
मुझको दौलत यही कमाना है।

श्री राम प्रकाश गोयल के व्यक्तिगत दर्द में समष्टि सन्निहित है। वे निश्छल जीवन जीने के पक्षपाती हैं। छल कपट उन्हें किंचित नहीं भाता।

बैठ कर दिल की गाँठें खोलें हम, दूर रहकर कहाँ गुजारा है।

कृत्रिमता का जीवन ढो रहे मानव को वे उलाहना देते हुए कहते हैं-

एक कृत्रिमता का जीवन ढो रहे हम
चेहरे पर चेहरा लगा कर रो रहे हम।
दिल में क्या और क्या ज़बाँ पर लोगों के
बीज बर्बादी के अपनी बो रहे हम।

आईना क्यों न हो ख़फ़ा उनसे
जिनके रुख़ पर नक़ाब होता है।

उनके हृदय में प्यार का एक समन्दर है किंतु फिर भी यह समन्दर प्यासा है, उसकी प्रेममयी लहरें दुश्मनी छोड़कर, नफरत छोड़कर खुले दिल से सबसे मिलना चाहती हैं किंतु आज की इस छल फ़रेब की दुनिया में दोहरे चेहरे लेकर जीने वाले लोगों के बीच उन्हें बार बार निराशा का सामना करना पड़ता है जो एक व्याकुलता का रूप लेकर पग–पग पर उनके काव्य में प्रवाहित हो रहा है।

हमने खुद ही फ़रेब खाए हैं,
दिन गुज़ारें हैं काली रातों में
दोस्तों की जुबाँ बहुत मीठी,
है भरा ज़हर उनकी बातों में।
दोस्ती क़ैद अब किताबों में,
आज के दौर का प्रभाव है।
दोस्त बनकर जो कर रहा है वार,
उससे फिर किस तरह बचाव है।

'वियोगी होगा पहला कवि' काव्य की यह परिभाषा श्री रामप्रकाश गोयल पर पूर्णतः चरितार्थ होती है। उनका समस्त काव्य वियोग की असह्य वेदना से व्यथित है। कभी कभी तो प्रतीत होता है जैसे उनका समस्त काव्य ही समर्पित है अपनी प्रेमिका के प्रेम, वियोग, धोखा, बेवफ़ाई और बेरुखी के लिए – *वफ़ा के नाम पर धोखा दिया है, मेरे ख्वाबों को तोड़ा है किसी ने। प्यास बुझने की बस अब एक ही सूरत है यहाँ, वह अगर चाहे तो सहरा को समन्दर कर दे।'*

प्यार के प्रति उनकी अटूट अगाध श्रद्धा है, निष्ठा है, आस्था है। प्रेम वस्तुतः समष्टि में व्याप्त भावना है।

प्यार रुहों का मिलन है ऐ दोस्त, प्यार पर रब निसार होता है।

जीवन में सुख दुख तो आते जाते रहते हैं किंतु कवि के मन में निरंतर एक बेचैनी बनी रहती है जो उनके काव्य की ऊर्जा है। उनका उपन्यास 'टूटते सत्य' , 'दर्द की छाँव में', और 'रिसते घाव' मूलतः प्रेम और विरह के अनुभवों से परिपूर्ण हैं। कवि की आँखें

सर्वत्र किसी की तलाश करती हुई दिखाई देती हैं–

जो नज़र नज़र से मिला सके, मुझे उस नज़र की तलाश है,
हुई जिससे कोई ख़ता नहीं, मुझे उस बशर की तलाश है।

उनका मानना है सच्चे प्रेमी को प्रेम के मार्ग पर चलने के लिए अपना अस्तित्व मिटाना पड़ता है।

प्यार की राह में वही आए,
अपनी हस्ती जिसे मिटानी है।

प्रेमी को आँसुओं का सदा हँसकर स्वागत करने के लिए तैयार रहना चाहिए क्योंकि अश्रु ही प्रायः प्रेम की स्वाभाविक परिणति हैं। इन्हीं आँसुओं से प्यार करना प्रेमी की नियति है – ऐसा गोयल साहब का मानना है–

अश्क क्यों आपकी हैं आँखों में,
जो भी आया है उसको जाना है।।

कहीं कहीं उनकी यह पीड़ा समाज में बढ़ती जा रही संवेदनहीनता के कारण दिखाई देती है। कहीं आपसी प्रेम का अभाव उन्हें बेचैन करता है तो कहीं नफ़रतों की फैलती हुई आग उन्हें संतप्त करती है और वे कह उठते हैं –

इतनी नफ़रत भरी है दुनिया में ,
ज़ल्ज़ला कोई आने वाला है।

मानवीय दायित्व बोध से प्रेरित हो उनका काव्य जन मन को सतर्क रहने की प्रेरणा देता है–

ये शोले भड़के तो नफ़रत को राख कर देंगे,
यह आग पहुँचेगी किस किस के आशियाने में।

राजनीति की विषम गंदगी ने जो दलदल फैलायी है, जनता उससे हताश–सी है। निराशा की इस घड़ी में रोशनी की एक किरण के लिए मन बेचैन है–

रोशनी की किरन नहीं दिखती,
आदमी ज़ुल्मतों का मारा है।

वस्तुतः आज आदमी के हृदय से दया, ममता, प्रेम, सहानुभूति दूर होते जा रहे हैं। धनी और धनिक होते जा रहे हैं, ग़रीब और ग़रीब। इस खोखली व्यवस्था की ओर संकेत करते हुए वे कहते हैं–

दर पे एक भूखा भिखारी मर गया
घर में बजती ही रहीं शहनाइयाँ।

दोस्ती, प्रेम, भाईचारा, टूटती हुई आस्था, विश्वास आज अंधी भौतिकता की दौड़ में बहुत पीछे रह गये हैं इस बात को बड़ी पटुता के साथ गोयल साहब ने कहा है। कवि ने देखा कि धर्म और राज सत्ता दोनों ही पथ भ्रष्ट होकर आदमी के अमन चैन के दुश्मन हो गये हैं, संकीर्णता और बर्बरता का तांडव खुलकर चारों ओर अपना नग्न नृत्य दिखा रहे हैं। ऐसे में कवि ने इंसानियत के दामन को अपने हाथों से न छोड़ने की बात कही है–

जिनकी आँखों में हो आँसू किसी मुफ़लिस के लिए
ऐसे इंसान को भगवान समझते रहिये।
जो मुहब्बत करे नफ़रत से सदा दूर रहे
ऐसे इंसानों की इक बस्ती बसाई जाए।

कहीं कहीं यह पीड़ा बहुत घनीभूत दिखायी देती है और जीवन के प्रति कवि के निराशा जनक चिंतन के दर्शन होते हैं। दर्द ही जैसे कवि के जीवन का सहारा है, संसार है, साथी है।

कवि का ह्रदय जिस पीड़ा से भर उठा है उसे उन्होंने बख़ूबी कागज़ पर उतारने की कोशिश की है। दर्द से कवि का गहन संबंध है पर साथ ही साथ कवि में समस्याओं से जूझने का हौसला भी। आतंक और अविश्वास से आहत मासूम इंसानियत की कोख में अमन और प्यार का सपना पल रहा है जिसे कोई भी अँधेरा निगल नहीं पायेगा। 'एक समन्दर प्यासा सा' के कुछ शेर–

मैं बदल डालूँगा हाथों की लकीरों को जरूर,
मेरा अपना भी मुकद्दर है अभी सोता है।
मैं झुकूँगा न कभी जुल्मों सितम के आगे
इम्तिहाँ मेरा तो हर पल ही यहाँ होता है।
वक्त आ जाये तो पीछे नहीं रह सकते हम,
अपने हालात को खूँ देके बदल सकते हैं।
झूठ हारेगा लाज़मी एक दिन
सच्चे इंसान बनके रहिये आप।

वस्तुतः गोयल साहब ने अपने गीत–ग़ज़लों में भावावेग,

कल्पनाशीलता और कलात्मकता को जिस ढंग से समेटा है और दैनिक जीवन की भागदौड़ में जिस तरह से अपने भीतर छटपटा रहे द्वंद्व को शब्दों में उकेरा है, वे पाठकों को इतना सुकून देते हैं जिसमें वह बह जाते हैं। उनकी ग़ज़लों में प्रेम, मुहब्बत, इश्क की रूमानियत है तो साथ ही साथ यथार्थ का कडवा सच भी है। कहीं कहीं कवि का यही दर्द गहराता हुआ अध्यात्म की वादियों में भटकता हुआ सा लगता है जो खुदी को मिटाकर खुदा से मिलने की बात सोचने लगता है –

पहले अपनी खुदी मिटाना है
फिर खुदा के क़रीब जाना है।
सारी दुनिया की ठोकरें खाकर
हम समाएँ खुदा की बाहों में।
यह दुनिया ख्वाब है इस ख्वाब का भरोसा क्या,
नहीं जो अपना वह अपना दिखाई देता है।

श्री राम प्रकाश गोयलजी का काव्य अपनों की बेरुखी, दोस्तों की छल फ़रेब भरी चालें, पुत्र शोक से आहत मन 'दर्द की छाँव में' 'रिसते घाव' लिए 'प्यासे समन्दर प्यासा–सा' किसी सुकून की तलाश में भटकता है। आँखें पीड़ा में बरबस बरसती तो हैं पर होंठों पर मुस्कान लेकर। कितने भी आहत हों किन्तु सदा हँसते मुस्कराते दिखायी देते हैं। उनकी ग़ज़ल की पंक्तियाँ उन पर ही खरी उतरती हैं

अश्क पीना है मुस्कुराना है
मुझको अहदे वफ़ा निभाना है।
ज़िंदगी से कहो ठहर जाए
मौत को आईना दिखाना है।

प्रवक्ता,
श्री गुरुनानक रिखीसिंह कन्या इन्टर कालेज,
बरेली

अखिल भारतीय कार्यक्रम में श्री राम प्रकाश गोयल को प्रतीक चिन्ह भेंट करते हुए पद्मश्री श्री बचनेश त्रिपाठी। पास के शिक्षा मंत्री डॉ. नैपाल सिंह (2001)।

श्री राम प्रकाश गोयल के गज़ल संग्रह 'एक समन्दर प्यासा-सा
हुए डॉ. नागेन्द्र शर्मा (1999)।

ार्म ड्रामा परफ़ार्मेन्स बरेली के वार्षिकोत्सव पर भाषण देते हुए
पल (1997)।
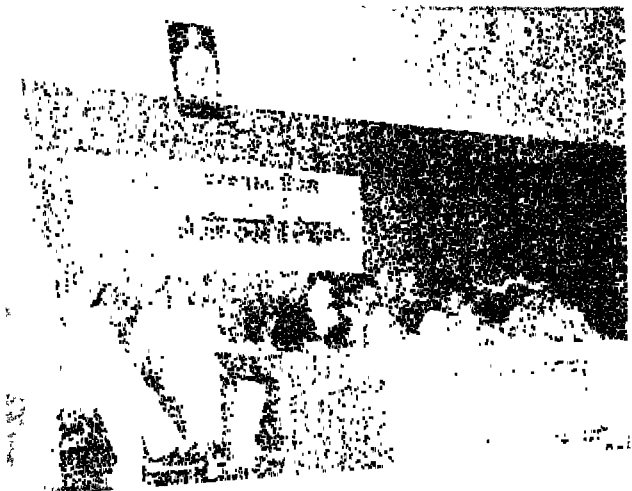
स्व. श्री विवेक गोयल सुपुत्र श्री राम प्रका

अध्ययन करते हुए श्री राम प्रकाश गोयल (1995)।

नाटक 'दिल और दिमाग' का निर्देशन करते हुए श्री राम
में खडे हैं नाटक के पात्र 'दिल दिमाग प्यार और विचार' (1992)

विवेक गोयल साहित्य पुरस्कार समिति द्वारा आयोजित 'हिन्दी' दि
प्रकाश गोयल के ग़ज़ल संग्रह 'रिसते घाव' का विमोचन करते :
श्री देश दीपक वर्मा। पीछे बैठे हैं रुहेलखंड विश्वविद्यालय के कु
देव (1992)

ायल का 'हिन्दी दिवस' 14-9-87 को अभिनंदन। साथ में बैठे
वर तिवारी तथा कार्यक्रम अध्यक्ष श्री जुगल किशोर अग्रवाल।

ायल के ग़ज़ल कैसेट 'आईना' का विमोचन करते हुए सुप्रसिद्ध
नाज मसानी साथ में खडे है सगीत निर्देशक एव गायक श्री
1988

प्रसिद्ध हास्य-व्यंग्यकार श्री के. पी. सक्सेना के साथ मच पर प्रकाश गोयल (1988)
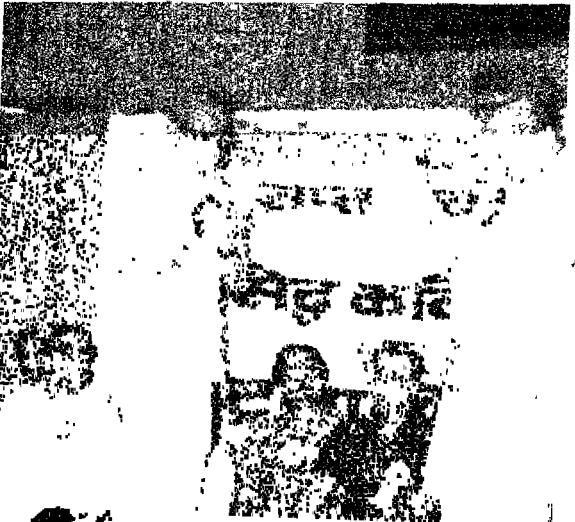
भीड़ में तन्हा, खुद में गुम : क्षितिज पर खड़ा एक आदमी : प्रो० रामप्रकाश गोयल

प्रो० ओ० पी० गुप्ता

एक पहुँचे हुए सूफ़ी साधक से उनके एक शिष्य ने पूछा "हुज़ूर! मैं एक शख्स के साथ अर्से से रह रहा हूँ, वह मेरा दोस्त है फिर भी मैं अभी उसे पूरी तरह समझ नहीं सका हूँ। वह मेरी समझ से बाहर है।" पीर ने हँसकर कहा, "तो फिर वह आदमी नहीं, आदमी की सतह से ऊपर उठ चुका है।"

रामप्रकाश गोयल साहब से चंद साल पहले जब पहली मुलाक़ात हुई तो उनके किसी 'पालिश्ड स्नाब' और 'शूड पेडान्टिक' होने का धोखा हुआ। एक शायर की हैसियत से वह मुझे शायरी के खब्त का शिकार लगे। मुलाक़ातें बढ़ती गईं, परतें हटती गईं और फिर करीब आया एक ख़ालिस पढ़े लिखे आदमी के, चीजों को 'इंटलेक्चेउल रेसपाँस' देने वाले प्रबुद्ध बुद्धिजीवी के, क़ानूनी ज्ञान से संपन्न एक बैरिस्टर के, शेर को रूह से महसूस करके क़ाग़ज पर उतारने वाले पैदायशी शायर के, साफ़ सुथरे आदमियों के दिल की बेदाग़ दीवारों पर चोरी चोरी चुपके चुपके चिपक जाने वाले प्यारे से दिलकश इंसान के, और मैं दिल में उतर गया एक ऐसे दोस्त के जो अपने दोस्तों के आँसू तो ऊँची क़ीमत पर खरीदता है लेकिन जो दोस्तों की जेब में डाल देता है जबरदस्ती अपने हिस्से में आई खुशियाँ।

गोयल साहब का व्यक्तित्व बहुआयामी है। पेशे से वकील, शौक़ से शायर, ज़ौक़ से अदीब, रूह से इंसान, दिल से हिन्दुस्तानी छल –छिद्र की भावना से रहित, शत्रुता से अनभिज्ञ, द्वेष और बैर की भावना से मुक्त व्यक्ति हैं। पूर्वाग्रहों के प्रति उनमें विद्रोह है, अन्याय के प्रति एक क्रान्तिकारी सोच! वह सांस्कृतिक और सामाजिक क्षेत्र में 'नएपन' के स्वागताकांक्षी हैं लेकिन 'पुरानेपन' के प्रति आदर व सम्मान की भावना के साथ। राजनीति के प्रति उनकी विरक्ति नहीं लेकिन उनमें घृणा है विकृत चेहरे वाली उस सियासत से जो इंसानों को ख़ानों और तहख़ानों में बाँट रही है।

रामप्रकाश गोयल ज़ाहिर में जो भी हों, 'बातिन' में खुद में गुम एक आदमी है जो अपने प्याज की मानिन्द दिल को पर्त दर-पर्त

छीलता हुआ आकार से निराकार की ओर बढ़ता हुआ इंसानी किरदार है। उनके ग़म से हम सब दोचार हैं लेकिन उन्होंने ग़म को रोज़ अकेले में बाँचने के लिए न गीता बनाया है और न उन्होंने लोगों के सामने ग़म चेहरे पर ओढ़कर कमज़र्फी का सुबूत दिया है। उन्होंने ख़ुदा के अता किए ग़म को अपनी ज़िन्दगी में सलीक़े से पिरोया है। जीवन के दार्शनिक यथार्थ और स्वतः प्रमाणित सत्य के नितांत व्यक्तिशः 'कारीडोर' से गुज़र कर वह क्षितिज पर खड़े पारलौकिक सत्य को दस्तक दे रहे हैं।

रामप्रकाश जी की प्रकाशन से लेकर दूरदर्शन तक रसाई, टी० सीरीज़ के कैसेट से लेकर टी० वी० सीरियल तक कामयाबी में उनकी कारीगरी छुपी है। लेकिन यह कामयाबी और लोगों की तरह पैदायशी हक़ है। आर्ट –आफ– पब्लिसिटी' बुरी चीज़ नहीं लेकिन शर्त यह है कि पब्लिश कराने या करने के लिए खुद अपना कुछ हो। उनके शहर में भी और दूसरे शहरों में भी ऐसे ग़ज़लकार मौजूद होंगे जो प्रकाशन के लिए साधन सम्पन्न हैं लेकिन प्रकाशित माल में 10% उनका,90% उधार का माल है।

रामप्रकाश जी ने अपनी पब्लिसिटी में किसी से कोई सहारा नहीं लिया। वह प्रतिभा के धनी हैं और धन से सम्पन्न।

उनके शायर होने की पहचान इससे हो जाती है कि वह शायर नवाज़ हैं और अच्छे गद्यकार होने का प्रमाण यह है कि वह विचारशील, प्रबुद्ध और पढ़े –लिखे आदमी हैं। उपन्यासकार इसलिए हैं क्योंकि उन्होंने जीवन की धूप छाँव की गुनगुनाहट और सिहरन चुपचाप झेली है, ज़िन्दगी को भोगा है, परखा है और पास से देखा है।

कुल मिलाकर उनकी शख़्सियत दिलचस्प है और बहुत प्यारी यानी दिलकश। मैंने 20 साल पहले लंदन में एक दोस्त (जो जिन्दा नहीं हैं) को ख़त में लिखा था " डू नाट रीड द मैन एण्ड सी हिज रिफ़लेक्शन। रीड द रिफ़लेक्शन इन द मिरर एण्ड सी द मैन लुकिंग इनटू द मिरर।"
बहुत पुराना मेरा अपना सब्जेक्टिव' एक शेर उन पर भी लागू होता है :–

खामोशियों की झील हूँ पत्थर न मारिए।
मेरे क़रीब बैठ कर मुझको पुकारिए।

रामप्रकाश गोयल का उपन्यास 'टूटते सत्य' बकौल आलोचकों के 'त्रिकोण प्रेम पर आधारित है प्रेम पर अँग्रेजी न

बहुत अच्छे उपन्यास लिखे गए हैं और हिन्दी उपन्यासकार भी इस थीम को आज़मा चुके हैं। ऐसे उपन्यास में अगर एक प्रेमिका दो प्रेमी हैं तो थीम को ट्रीटमेन्ट देना मुश्किल काम नहीं। लेकिन एक प्रेमी, दो प्रेमिकाएँ हैं, तो ट्रीटमेन्ट आसान नहीं क्योंकि एक पुरुष उपन्यासकार संवेगों के सैलाब में बहती दो औरतों के मेण्टल कनफिलक्ट और ' इमोशनल रेसपान्स टू वर्डस गिवेन सरकम्सटांसेज' को शब्दों में उजाकर करने में मात खा सकता है। और फिर उपन्यास पूरा 'रोमांस' या 'यूटोपिया' हो या न हो लेकिन कुछ न कुछ अनासिर उपन्यास में इन दोनों के रह ही जाते हैं। उपन्यास का हर पात्र घटित यथार्थ अथवा सत्य का हिस्सा तो होता नहीं जिसकी 'कैटस्केनिंग' की रिपोर्ट उपन्यासकार की टेबिल पर रखी हो। मेरे कमेण्टस 'टूटते सत्य' पर सही साबित होते हैं या नहीं मैं नहीं जानता क्योंकि मैंने उनका उपन्यास पढ़ा नहीं है।

जहाँ रामप्रकाश जी की शेरगोई का सवाल है वह यक़ीनन शेर कहने की ज़हनी सलाहियत रखते हैं। रदीफ़ क़ाफ़ियों का अच्छा ज्ञान हैं। छंदबद्ध मस्तिष्क होने के कारण बहरों में सकता नहीं छोड़ते। उर्दू शब्दकोष का सही इल्म होने की वजह से उन्हें उर्दू अलफ़ाज के सही वजन की मालूमात है। उन्हें पता है 'माने' नहीं, 'मआनी' है।

रामप्रकाश गोयल साहब बहैसियत शायर के जब सिने बलाग़त पर पहुँचे तो उस वक्त उर्दू शायरी पर रूमानी (इश्किया) शायरी का बडा असर था। 'रेशमी गेसू' 'नीमबाज आँखें' 'गुलाब पंखुड़ी जैसे होठ' 'शबे विसाल', 'शबेवस्ल', जाम –ओ–पैमाना, साक़ी–ओ–मयख़ाना' की रिवायत अभी टूटी नहीं थी। शायर अपनी साँस में महबूब की साँस 'तहलील' (घुलना) होने की आरजू में जी रहा था। सोज़े–मुहब्बत में वह जल रहा था, सुर्ख़ होठ क़यामत ढा रहे थे, शायरी में परी जमाल चेहरों की भीड़ थी, मासूम निगाहों में गुरूर था, गोल गुलनार नौख़ेज़ जवानी के दिलावेज उभार थे। ऐसे माहौल में जवानी की पहली अँगड़ाई लेने वाले शायर रामप्रकाश गोयल पर भी इस सब का असर हुआ जो 'रिसते घाव' से लेकर आज तक 'एक समन्दर प्यासा–सा' पर क़ाबिज़ है।

'एक समन्दर प्यासा–सा' उनकी गजलों, गीतों, नज़्मों और आज़ाद नज़्मों का संग्रह है। ग़ज़लों में गंगा –जमुना डिक्शन है। चन्दा के चुंबन को आतुर, प्रेमी सागर, बाहुपाश, संसार का विज्ञान निश्चय आदि तत्सम हिन्दी शब्दों की बुनाबट है तो कुछ ग़ज़लों में 'हिजाब' अदाए कुर्बत इख्तियार शरर मिस्ले खंजर नजरे करम मंज़िले

मक़सूद मिहरो- माह तग़ाफुल जैसे लफ़्ज़ों और फ़ारसी तरकीबों (ज़ेर लगाकर बनाए गए लफ़्ज जैसे अदाए – कुर्बत) की कढ़ाई भी। ज़्यादातर ग़ज़लें ख़ास उर्दू लब –ओ–लहजे की हैं।

रामप्रकाश गोयल जी का शेर कहने का अपना उस्लूब है। मिसरों को तराशने का अपना ज़ाती ढंग है। क़ाफ़ियों को तलाशने का अपना खुद का सवारा रास्ता है। ग़ज़ल में वह किसी ख़ास शाट या कन्सेप्ट के लिए कमिटेड नहीं दिखाई देते। सभी मौज़ूँ उन्होंने ग़ज़लों में बाँधे हैं। ग़ज़लें सिद्ध हस्त शिल्पी की तराशी लगती हैं।

उन पर इम्प्रशन्स्टि होने का इल्ज़ाम साबित नहीं होता क्योंकि लुग़त से चुराकर सख़्त अलफाज़ों को उन्होंने जान बूझ कर उर्दूदाँ होने के लिए इस्तेमाल नहीं किया है। अशआर में एक 'रौ' (स्पान्टेनियटी) है। 'प्यासा दरिया बहता पानी अपनी, इतनी राम कहानी, – 'साथ नहीं कुछ ले जाओगे, माया तो बस आनी जानी', यह ग़ज़ल मेरे इस दावे को सिद्ध करती है कि उन्होंने ग़ज़लें एक 'पर्टिक्यूलर मूड में दी मोस्ट इन्टीमेट स्पर आफ द इमोशन' के तहत कही हैं।

रामप्रकाश गोयल साहब ने कोई तख़ल्लुस इख़तियार नहीं किया और वह इसलिए क्योंकि तख़ल्लुस रख कर कोई शायर नहीं हो जाता। मुस्तनद तौर पर यह ऐलान करता हूँ कि 'वह ग़ज़ल के इल्म–ओ–फ़न से वाक़िफ़ ओरीजनल शायर हैं।' उनके मेरे पसंदीदा अशआर निम्नांकित हैं :–

आईना कहता है तुम तो बड़े झूठे हो दोस्त
हाथ अपना कभी दिल पर नहीं रखकर देखा।
ढूँढता फिरता हूँ उसको दर बदर
मुझको मेरा 'मैं' मिला तन्हाई में।
मौत और ज़िन्दगी में फ़र्क़ नहीं,
जागने–सोने के बहाने हैं।
मिरे जज़्बात से क्यूँ खेलते हो,
मिरा दिल इतना आवारा नहीं है।

उच्चशिक्षा अधिकारी, बरे

बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी . प्रोफ़ेसर गोयल

डॉ0 सरोजनी अग्रवाल

हार को जीत में बदल देने वाले सिकन्दर संकल्पशील प्रोफ़ेसर राम प्रकाश गोयल के साथ बाँटे क्षणों का संस्मरण अपने आप में एक विशिष्ट आनन्दानुभूति है। आनिन्द्य रूप गुण सम्पन्न, अपनी बड़ी बडी आँखों में एक असाधारण चमक लिये, दूसरों के दुख-दर्द में सहभागी, एक अभूतपूर्व जिजीविषा के अधिष्ठाता, हृदय में प्यार का सागर समेटे, मीठे स्वभाव वाले, शान्त किन्तु जीवन्त भाई रामप्रकाश जी से मेरा परिचय लखनऊ के एक साहित्यिक समारोह में हुआ था लगभग सोलह वर्ष पूर्व। बातचीत करते हम साथ साथ कब घर पहुँच गये पता ही नहीं चला। मेरा आवास 'अभिवादन' बाल्दा कालोनी, निशातगंज, लखनऊ में था। हम बैठे और साहित्यिक चर्चा करते रहे। उन्होंने मुझे अपनी कुछ गज़लें सुनायीं - मैंने उन्हें अपने गीत सुनाये और संप्रेषण के इस सिलसिले ने कुछ ऐसा अपनापन घोल दिया कि जब कभी उनका लखनऊ आना हुआ बिना घर आये वे नहीं लौटे। मेरे पति श्री विनोद चन्द्र अग्रवाल भी काव्य-प्रेमी हैं। उन्हें भी उनका आना अच्छा लगता और कभी प्रेम पर, कभी दुनियादारी पर, कभी राजनीति पर, ज़माने की रफ्तार पर चर्चाएँ होतीं। बहस बाज़ी होती। समय का पता ही नहीं चलता। एक दिन हम लोग बैठे थे। हमारे एक परिचित पं0 डी0 के0 मिश्रा जो एक वकील थे, ऊँचा सुनते थे, आ गये। वे पीअरलैस फाइनैन्स कम्पनी के एजेन्ट भी थे और पीअरलैस की पॉलिसी लोगों को देने के चक्कर में सबकी खूब सराहना किया करते थे। वे कहते थे कि माँ दुर्गा की शक्ति का आराधक हूँ और लोगों का भविष्य बताया करते थे। मैं चाय नाश्ता बनाने में लगी और गोयल साहब और मिश्रा जी की बात होती रही। उन्होंने गोयल भाई पर कुछ ऐसा सम्मोहन डाला कि उन्हें पीअरलैस की पॉलिसी भी दे दी और बरेली उनके घर पर भी आने जाने लगे। गोयल साहब दिल से सच्चे हैं और बहुत भोले भी हैं। जब उनका बेटा विवेक गोयल

बीमार हुआ तो स्वाभाविक तौर पर गोयल साहब बहुत परेशान थे। डाक्टरों का इलाज बराबर चल रहा था पर लाभ नहीं दिख रहा था। श्री डी0के0 मिश्रा ने भी कोई अनुष्ठान किया। उनके यहाँ जाकर ठहरे पर सब अकारथ गया। बाद में जब गोयल साहब ने बताया कि ऐसा हुआ तो मुझे बहुत तकलीफ़ हुई। उनकी बात तो मैं नहीं जानती पर मुझे बराबर लगता रहा कि जाने किस कुघड़ी में मिश्रा जी से गोयल भाई का परिचय हुआ। सीधे सरल गोयल साहब बातों में आ गये। अन्धविश्वास के भरम में फँस गये और कदाचित् इस कारण डाक्टरी चिकित्सा में शैथिल्य आ गया। विवेक बहुत प्यारा बच्चा था, बहुत मेधावी। उसके निधन ने सभी आत्मीयों को जैसे तोड़कर रख दिया।

मुझे याद है 1985 का वह दिन जब वे बीमार थे और लखनऊ के बलरामपुर अस्पताल में भर्ती थे। मैं और मेरे पतिदेव उन्हें देखने पहुँचे। उन्हें बहुत बहुत अच्छा लगा। उस समय वे अकेले थे। उनके रुग्ण चेहरे पर वह खुशी भरी आत्मीय मुस्कान मैं भूल नहीं पाती। प्राइवेट कमरा था। उनके लेखन का सामान इधर उधर से झाँक रहा था। कुशल क्षेम की कुछ औपचारिक बातों के बाद उनके आस पास छिपे गज़ल और गीत सामने आ गये। कब एक घण्टा निकल गया जान ही नहीं पाये। उनके चेहरे पर एक ताज़गी--सी झलकने लगी थी। उनके भीतर की चाहत का एहसास मुझे अनायास होने लगा था।

सन् 1985 में अपनी दिवंगत बिटिया मनीषा की स्मृति में अनाथ और निराश्रित बालिकाओं के पालनपोषण, शिक्षा दीक्षा हेतु मनीषा मंदिर आश्रम की स्थापना का निमित्त ईश्वर ने मुझे बनाया। इस महत् कार्य में मैं बहुत व्यस्त हो गई। प्रायः आश्रम में बालिकाओं की सेवा में व्यस्त होने के कारण मिलना जुलना भी कम हो गया। एक बार मैं अपने घर पर कुछ बालिकाओं की सेवा में संलग्न थी। अचानक गोयल भाई आये। उन्हें बहुत अच्छा लगा। उनमें एक बारह तेरह साल की कन्या थी। देखने में बहुत सुन्दर परन्तु बोलने में और दिमाग़ से कमजोर। उनकी करुणा को तब मैंने देखा। बहुत भावुक हो उठे थे। ऐसे ही क्षणों में उनके मुख से निकला--

"मंजिलें उस तरफ भी होती हैं
जिस तरफ रास्ता नहीं होता

जीवन के तल्ख़ और मीठे एहसासों से प्रत्यक्ष कराती इनकी कविताओ और ग़ज़लों के विषय में चर्चा तो पूरी एक पुस्तक का कलेवर है फिर भी उनकी ग़ज़लों की बारीक रेशमी बुनावट जिसमे बनावटी असम्पन्नता की गुंजायश नहीं है, कहीं न कहीं ज़िक्र में सामने आये बिना नहीं रहती। यथा कुछ अशआर :-

समन्दर-सा है दिल में प्यार मेरे
समन्दर-सा मगर खारा नहीं है।
सबसे मिलने का सिलसिला रखना
तन्हा जीने का हौसला रखना।

कितनी सादगी और सरलता से गोयल भाई बहुत गहरी और गंभीर बात कह देते हैं जिसे उनके साथी और आलोचक दोनों सराहते हैं यथा -

"दिल मिले दिल से तो हालात बदल सकते हैं
उनके आँसू मिरी आँखों से निकल सकते हैं।"
अपने हाथों की लकीरों को पढ़ा है जब भी,
उनमें बस तेरी ही तस्वीर नज़र आई है।"

एडवोकेट गोयल ने उपन्यास तो लिखा ही है नाटक से भी जुडे हुए हैं - "दिल और दिमाग़" के नाटककार के रूप में तो उन्हें प्रशंसा मिली है। दूरदर्शन के पर्दे पर टेलीफिल्म 'एहसास' में न्यायाधीश के, टेलीफिल्म 'बहूरानी' में नायिका के पिता के एवं टी0वी0 सीरियल "आज का सच" में प्रिंसिपल और न्यायाधीश के अभिनय के लिये भी बधाइयों का ताँता लग गया। मनीषा मंदिर की स्थापना के बाद उसके विकास कार्यों एवं अनाथ बालिकाओं के पालन-पोषण में अत्यधिक व्यस्त हो जाने के कारण मेरा बाहर आना जाना बहुत कम हो गया। इस गुरुतर उत्तरदायित्व के निर्वाह हेतु मैंने न केवल सुदूर प्रदेशों के कवि सम्मेलनों एवं सेमिनारों में जाना छोड़ दिया बल्कि आसपास के आयोजनों में मेरा जाना भी बहुत कम हो गया। गोयल साहब से भी भेंट होना बहुत कम हो गया फिर भी उनके समाचार मिलते रहते थे। यदाकदा पत्रों का आदान प्रदान भी। लगभग तीन वर्ष पूर्व मेरा बड़ा बेटा ट्रान्सफर होकर बरेली हाइडिल कालोनी में आ गया। अब यहाँ जब भी हम अपने बेटे बहू के पास आते गोयल भाई के यहाँ भी

आना जाना होता। उनकी ज़िन्दादिली और प्रेम व्यवहार से हम दोनों अभिभूत हो जाते। उनकी पंक्तियाँ –

"प्यार बो दो/ प्यार की फसल बढ़ने दो
आने वाला कल प्यार की फ़सल काटेगा
और उसे फिर फिर बोएगा।"

और उनकी क्षणिकाएँ जैसे –
मैं बोलता बहुत हूँ /सुनता कम / सोचता तो बिल्कुल भी नहीं।
काश, मैं बोलूँ कम / सुनूँ ज़्यादा / सोचूँ और भी ज़्यादा।"

हमें बराबर उनके और निकट लाती गई। उनके भीतर का उजलापन बाहर के उजलेपन से आगे निकल गया। विभिन्न क्षेत्रों में उनकी पैठ, विविध–विषयों में उनकी जानकारी तथा अनेकानेक संस्थाओं से उनकी सम्बद्धता, उनका व्यापक जीवन दर्शन उनके बहुआयामी व्यक्तित्व को निरन्तर उजागर करता गया। इधर कुछ गोष्ठियों में पुन· पुनः गोयल भाई से मेरा साथ हुआ। उनके विविध–स्वरूपों, राग विराग को और निकट से जाना। गागर में सागर समेटे प्रोफेसर गोयल कवि, लेखक, प्रवक्ता, अधिवक्ता, नेता, अभिनेता, पत्रकार एक में अनेक हैं। विधाता ने उन्हें फुर्सत में बड़े मन से गढ़ा है। तन जितना सुन्दर है मन उससे भी सुन्दर है इसका संज्ञान आप उनकी इन पंक्तियों से पा सकते हैं–

"जीवन का अर्थ / सिर्फ़ स्वयं जीना नहीं / औरों को भी जीने देना है।"

अपने नाम को सार्थक करनेवाले राम के प्रकाश से आलोकित गोयल भाई स्वार्थ केन्द्रित नहीं, परार्थ केन्द्रित हैं। कठिन से कठिन परिस्थितियों में भी न टूटने वाले, दूसरों के दुखदर्द को बाँटने वाले, प्रेम को परमात्मा मानने वाले ऐसे कोमल कान्त, दृढ़, बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी प्रोफेसर गोयल के लिये मेरी दो पंक्तियाँ समर्पित हैं –

" रूप, महक, मुस्कान, मधु, तुम गुलाब के मीत
पाती पाती प्रीति है, रेशा रेशा गीत।"

मनीषा मन्दिर, विरामखण्ड–2
गोमती नगर लखनऊ – 226010

आपके गोयल साहब   मेरे 'राम भय्या'
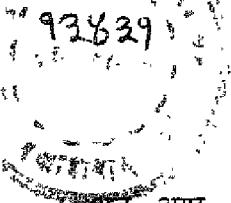
के0 पी0 सक्सेना

अब आप जानो . . . व्यग्यंकार हूँ न छोटा–सा ! न सलमा–सितारे लगाऊँ, न झालरें ! खरी बात कहता हूँ। यह तो बरेलवी हज़रत राम प्रकाश गोयल हैं न . . . आप के लिए वकील एडवोकेट होंगे . . . प्रोफेसर होंगे और जाने क्या क्या तिलसकरी – तिलबुग्गा होंगे . . . मेरे बड़े 'राम' भय्या हैं। लक्ष्मण होना कोई आसान बात नहीं। तीर झेल कर संजीवनी तई दौड़ाने पड़ते हैं। मैंने कोई तीर नहीं झेला . . . संजीवनी नहीं मंगवाई . . . बड़े भय्या का धारावाहिक स्नेह मिलता रहा। बरेली से बाहर खुदा गवाह है, इनका सबसे ज़यादा प्यार मिला के0पी0 को ! . . . इन्हीं से पूछो !

आठ साल का था जब बरेली के बालजती कुँआ (पुराना शहर) तले नाल गड़ी अपनी जन्म भूमि बरेली को छोड़ा . . . अड़सठ पूरे कर चुका, उस मिट्‌टी को नमन कर रहा हूँ। मेरा सौभाग्य है ! उडी हुई गर्द को पूजता कौन है ? मैं पूज रहा हूँ . . . 69 साल का बूढा के0पी0 ! . . . कौन रहा मेरा ? छोटा भाई गुज़र गया . मेरी बहू गुज़र गई . . . मेरा मकान गुज़र गया ! बचा कौन? सिर्फ़ बड़ा भाई, राम प्रकाश ! बरेली के नाम पर इस हार्ट पेशेंट से साँस साँस जुड़ी है मेरी ! कब कौन पहले चल ले . . . साँसों का क्या भरोसा ? . . . . धूप को मुढेर लाँघने में देर लगती है क्या? पके फल हैं . . . कब शाख़ से नीचे आ गिरें ? मगर जब तक मैं हूँ, राम भैया हैं . . . बरेली के उजड़े कुतुबख़ाने को वीरान नहीं होने दूँगा। मेरा नाल गड़ा है, उनकी साहित्य साधना गड़ी है। इकलौता बेटा गँवाने के बाद भी कोई इतना हौसला और दीवानगी दिखा दे मुझे! मेरी बरेली, ज़िन्दाबाद !

अब आप पूछो कि मेरा राम प्रकाश गोयल से रिश्ता क्या है? एक कायस्थ, एक बनिया . . . एक वकील, एक साहित्य का मुजरिम . . एक क़ानून, एक हथकड़ी ! एक बरेली, एक लखनऊ। एक

रडुवा, एक सुहागिना (प्रभु भाभी को ससिंदूर शतायु करें) . . . एक हार्ट पेंशेन्ट . . . एक दिल का बैरागी बादशाह ! . . . रिश्ता क्या है ? पूछा है कभी आपने कि हवाओं से दरख़्त का रिश्ता क्या है ? फूल से खुशबू का क्या नाता है ? . . . मिट्टी से मिट्टी का क्या प्रणय है ? एक उम्दा इंसान से उसका क्या रिश्ता है जो उम्दा बनने का प्रयास कर रहा है ? वही नाता मेरा राम प्रकाश भय्या से है ! समझ गये आप ?

सच्ची बात ! वह एक गज़लगो, एक उपन्यासकार, एक वकील, और न जाने एक क्या क्या बाद में हैं . . . के० पी० के दोस्त पहले। अशआर और पंक्तियाँ फ़ना हो जाती हैं . . . ज़िन्दादिली ज़िन्दा रहती है ! किसी ने कहा है . . . गिर जाओगे तुम अपने मसीहा की नजर से . . . मर कर भी इलाजे दिले बीमार न माँगो !' . . . कभी नहीं सुना कि राम भैया ने बीमार दिल का ज़िक्र किया हो ! . . . हमेशा यूँ टनाटन मिले जैसे जवानी शुरू हुई हो ! . . . क्या भूलूँ क्या याद करूँ (बक़ौल 'बच्चन जी') . . . यह जो आपके फ़लाँ फ़लाँ गोयल हैं न इनके साथ इतनी यादें, इतना स्नेह जुड़ा है, कि क़सम कोहाड़ापीर की, पूरी एक किताब लिख सकता हूँ मैं ! . . . नहीं समझोगे आप . . यह अन्दर की बात है। . . . अपनी नहीं हाँक रहा . . . मन की कह रहा हूँ। 25 साल कवि सम्मेलनों के मंच पर रहा ! पूरा देश . . रूस, कनाडा, अमेरिका, बैंगकाक, हाँगकाँग, पाकिस्तान, जापान कहाँ कहाँ नहीं हो आया . . . पर राहत मिली बरेली के दर्जनों कवि सम्मेलनों में ! क्यों राम प्रकाश भय्या के साथ ठहरा हमेशा ! खुद नहीं पीते, मेरा इन्तज़ाम चौकस ! कभी आधा पेग ले ली तो मन छय्याँ छय्याँ हो गया कि बाक़ी रिंद के साथ है ! बरेली की किन किन अज़ीम हस्तियों से मिलाया क्या भय्या ने। मैं शुक्रगुज़ार हूँ! मेरी छिनी हुई बरेली दे दी मुझे।

इन्हें भी लिखने का जनून . . . मुझे भी ! इत्तफ़ाक है कि मैं एडवोकेट न हुआ, ये व्यंग्यकार न हुए ! दोनों मिलकर बरेली चौपट कर देते . . . ! खैर ! फिर याद आती है उस बेटे की जिसे खोकर आज भी राम का प्रकाश है। मुझ पर घटती तो राम के प्रकाश में विलीन हो जाता है। ग़ज़ब का कलेजा है भय्या का ! एक बार

गुस्ताखी से होटल मे ठहर गया भय्या मेरा सामान छोड़कर घर घसीट लाए ! मुझे अपने सामान की चिन्ता थी, भैया को मेरे लंच की। भाभी ने वह शानदार कढ़ी चावल खिलाए कि मैं अपनी उँगलियों के साथ इनकी भी (भाभी की नहीं) उँगलियाँ चाट गया ! वकील और इतना उम्दा खाना ? बरेली ज़िन्दाबाद ! मुझे यह कहने में कोई गुरेज़ नहीं कि मैंने इस टूटते और हारे थके इंसान से ज़िन्दगी जीने का तलफ्फुज़ सीखा है ! ग्यारह साल पहले पत्नी नहीं रही। अकेलेपन की पीड़ा को पेड़े जैसा आधा आधा भय्या के साथ बाँटा है। भूल नहीं सकता वह शाम जब बरेली में रोटरी कवि सम्मेलन था। भय्या के सीने में एन्जाइना का बेहद पेन ! स्कूटर चला नहीं सकते थे ! क़दम कदम दर्द रोक रहा था। कार आई, भैया ने वापस कर दी ! रुकता ठहरता पैदल जाऊँगा। इस बहाने के0पी0 से कुछ और बातें होंगी। . . . ज़िन्दाबाद, यार भय्या !

बचपन में बरेली छोड़ा ! फिर भी कितने ही ठौर ठिकाने हैं ! उनका स्नेह है कि मुझे अपने साथ ठहराना चाहते हैं। पर राम भय्या के रामपुर गार्डन के दरख्त की शाख पर ही बसेरा डालना अच्छा लगता है . . . कैसे अविस्मरणीय क्षण ! भय्या के बेडरूम में, दवाओं से भरी मेज़ से लगा बेड ! लेटकर दुनिया जहान की बाते ! भैया ताज्जुब से पूछते हैं ' के0पी0 तुम हो क्या यार ? बाटनी एम0एस-सी0, रेलवे, कहानियाँ, नाटक, व्यंग्य, टी0वी0, फ़िल्में . . . थकते नहीं ? ' मैं हँसकर कहता हूँ – 'आपसे ऊर्जा खींच लेता हूँ मैं। भय्या की आँखें गीली होती हैं। कहते हैं – 'के0पी0 आज बहू ज़िन्दा होती तो यह ऊर्जा दोगुनी होती।' मैं किस कलेजे से कह दूँ कि आज आपका बेटा जिन्दा होता तो आप दूसरे ही गोयल साहब होते ! ख़ैर ! बक़ौल शायर – " भरी बरसात में शादाब बेलें सूख जाती हैं . . .हरे पेड़ों के गिरने का कोई मौसम नहीं होता।' . . . ज़िन्दाबाद भय्या ! . . . शतायु हो लो ! बरेली का नाम रोशन करो! आमीन ! . . . .

72, नारायण नगर, लखनऊ

एक और प्रकाश स्तम्भ प्रो० राम प्रकाश गोयल

किशन सरोज

मुरादाबाद की साहित्यिक संस्था 'अखिल भारतीय साहित्य कला मंच' ने 30 जून 2000 को बरेली के गौरव बाबू राम प्रकाश गोयल के पचहत्तर वर्ष पूर्ण करने पर उन का नागरिक सम्मान करने का निर्णय लिया है। निश्चय ही यह एक स्तुत्य प्रयास है। दोनों पक्षों को मेरी हार्दिक बधाई। उपरोक्त महत्वपूर्ण अवसर पर प्रकाशित होने वाले अभिनन्दन-ग्रन्थ में मैं भी कुछ लिखूँ, ऐसा आयोजकों का आग्रह है। मैं स्वयं भी इस सारस्वत यज्ञ में अपनी भागीदारी सुनिश्चित करने को आतुर हूँ, परन्तु क्या लिखूँ यह समझ में नहीं आ रहा।

जो व्यक्ति आपके बहुत निकट होता है उस पर कुछ लिखना आसान नहीं होता। मैं मूलतः गीत-कवि हूँ, किन्तु गीत की अभिव्यक्ति-क्षमता सीमित होती है। अतः उन पर गीत रचने का विचार कुछ जमा नहीं। मन में आया, चलो एक और ग़ज़ल लिख मारूँ पर अपनी पिछली ग़ज़लों का हश्र याद करके हिम्मत नहीं पड़ी। सचमुच मेरी ग़ज़लें मेरे प्रशंसकों को मेरे गीतों के क़द के सामने हमेशा बौनी ही लगीं। अन्ततः गद्य, जिसमें भी मेरी विशेष गति नहीं, को छोड़कर कोई अन्य विकल्प नहीं बचा मेरे लिए। अस्तु, गद्य ही सही, पर समस्या लगभग वैसी की वैसी ही। आखिर ऐसे इन्द्रधनुषी व्यक्तित्व के धनी तथा इतनी बहुआयामी कृतित्व वाले काव्य-पुरुष के सम्बन्ध में क्या लिखूँ, क्या छोड़ दूँ, इस ऊहापोह में हूँ।

अधिसंख्य व्यक्ति आयु के जिस कालखण्ड को जीवन सन्ध्या स्वीकारते हुए, मछुआरों की तरह अपनी व्यस्तताओं के जाल समेटने लगते हैं, सरकारें अपने कर्मचारियों को थका-हारा तथा अकर्मण्य मान कर सेवानिवृत्त कर देती हैं, लगभग उसी समयावधि में हृदयरोगी रामप्रकाश जी पूरी तैयारी के साथ, हाथ की लेखनी को "उत्तर, दक्खिन, पूरब, पश्चिम चारों खूँट चली तलवार" स्टाइल में अन्धाधुंध भाँजते हुए महानगर के साहित्यिक रण-क्षेत्र में आल्हा-ऊदल-जैसे

महानायक बन बैठे। रूप और सौन्दर्य के इस शिल्पी को बरेली ने हाथों-हाथ लिया। बड़े भाई की कलम में ताकत थी सो दवातों की कमी न रही। फिर तो सफलता ने स्वयं आगे बढ़कर उनका वरण किया। तीन-तीन ग़ज़ल-संग्रह, एक उपन्यास, एक 'सच्चे प्रेम-पत्रों' का संकलन, नाट्क, कैसेट, संपादित पुस्तकें, आकाशवाणी व दूरदर्शन से प्रसारण, टेली-फ़िल्मों में अभिनय, अर्थात कवि, शायर तथा नाट्यकर्मी के रूप में अनेकानेक दुर्लभ उपलब्धियाँ। अनगिन साहित्यिक, सांस्कृतिक, सामाजिक एवं शैक्षिक संस्थाओं के संरक्षक, अध्यक्ष अथवा वरिष्ठ पदाधिकारी, "विवेक गोयल साहित्य पुरस्कार" के संस्थापक, विभिन्न सांस्कृतिक समारोहों के सूत्रधार, बरेली कालेज के पूर्व प्रवक्ता और प्रसिद्ध वकील। सरस्वती और लक्ष्मी दोनों के समान स्नेह-पात्र। उनके व्यक्तित्व के इतने सारे आयाम किसी को भी आचर्श्यचकित करने को प्रर्याप्त हैं। मैं भी हूँ। किन्तु सच कहूँ तो मैं उन की बहुमुखी प्रतिभा से कहीं अधिक, उनके व्यक्तित्व में अन्तर्निहित अदम्य जिजीविषा, पहाड़ - जैसे दुख से भी दो-दो हाथ करने का विकट हौसला, अन्यतम अनुशासनप्रियता, सहज सौन्दर्यबोध, अटूट आत्मविश्वास और संकट की घड़ी में उनके दरबार में उपस्थित हुए अक्षम्य प्रतिद्वन्द्वी की भी यथासम्भव सहायता करने को उद्यत उनकी विशाल हृदयता जैसे विलक्षण गुणों से अभिभूत हूँ, अनचाहे ही उनके समक्ष नतमस्तक हूँ।

प्रायः मेरी दृष्टि में कौंध-कौंध उठते हैं उनके एक मात्र 17 वर्षीय लाड़ले बेटे विवेक के निधन के बाद के अनेक मार्मिक चित्र। सरला भाभी, जिनकी उपस्थिति-मात्र साहित्यिक आयोजनों को प्राणवन्त कर देती थी, जिनकी गीत और ग़ज़ल सुनते हुए मुख से अनायास निकली एक 'आह' या 'वाह' कवियों और शायरों को धन्य-धन्य कर देती थी, जिनकी वाक्पटुता और वाचालता के आगे कभी बड़े-बडे महारथी पानी-पानी हो जाते थे, पुत्र-वियोग में ऐसी ढहीं कि एकदम मौन साधकर एक कमरे में बन्द होकर रह गयीं, दीन-दुनिया से बेखबर। ऐसी असहनीय, दारुण विपदा के क्षणों में जब आदमी टूट कर रेत के कणों जैसा बिखर जाता है, धैर्य के साक्षात पर्याय मेरे इन अग्रज ने अपने हाथों अपनी आँखों से बहते आँसू पोंछकर शुभचिन्तकों को अपने होठों की मुस्कानें बाँटीं, किंकिर्त्तव्यविमूढ़ता का आँचल झटक

उसे अपने से अलग किया और गहन अंधकार के पथ पर बढ़ते भाव-तुरंगों की वल्गायें खींच मन के रथ को दूर टिमटिमाते प्रकाश-बिन्दु की दिशा में मोड़ दिया। फिर तो शायद ही कभी कोई शाम उन की अपनी हुई हो। कभी किसी कविगोष्ठी की अध्यक्षता कर रहे हैं, कभी कहीं संगीत-प्रतियोगिता में जज बने बैठे हैं, कभी किसी मीटिंग में विचार-विमर्श कर रहे हैं तो कभी किसी मशाल-जलूस की अगुआयी। सुबह मुवक्किलों से खपड़ियाव तो पूरे दिन कचहरी में बकझक। बस काम ही काम। स्वर्गीय गिरिजा कुमार माथुर की गीत-पंक्ति –

"छाया मत छूना मन
होगा दुख दूना मन" को जैसे आत्मसात् कर लिया था उन्होंने।

यशस्वी रचनाकार श्री गोयल के प्रभा-मंडल की झिलमिलाहट में विशिष्ट योगदान है उनके भीतर के दृढ़ आत्मविश्वास और विरलतम अनुशासनप्रियता का। व्यक्तित्व में दबंगपन ऐसा कि आप उन की आँखों में आँखें डालकर अपने थोथे बड़बोलेपन से उन पर बहुत देर तक हावी नहीं रह सकते, देर-सवेर हथियार डालने ही होंगे। मैंने आँखों के बडे -बड़े गुल्ले निकाल -निकाल कर डींगे हाँकनेवालों को अन्ततः उनके सामने पूँछ दबाये और खींसें निपोरते हुए देखा है। ईश्वर जानता है, इस पचहत्तर वर्षीय युवक ने न जाने कितने स्वयंभू अकबर महानों को जोधाबाई बना कर छोड़ दिया। वे अकाट्य तर्कों से अपनी बात मनवाकर ही रहते हैं। जो कार्य एक बार जिसको सौंप दिया फिर उस में उस की ज़रा-सी भी ढिलाई उन्हें बर्दाश्त नहीं।

बरेली महानगर में इस वरिष्ठ अधिवक्ता का एक भी परिचित ऐसा नहीं जिसे कभी उनकी ज़रूरत पड़ी हो और वे उस के काम न आये हों। उन के विरोधी भी इसे मानते हैं। कवियों की जमात तो शिवजी के बारातियों-जैसी निराली होती है। वह कवि ही क्या जिसका दामन दाग़दार न हो। चोरी-चमारी से लेकर शराब में धुत्त दफ़ा 376 में पुलिस द्वारा चालान करवाये कितने ही कवियों, शायरों और कलाकारों के अनगिनती मुक़दमों में बिना फ़ीस लिए अपना वकालतनामा लगाया है उन्होंने ! एक बार मुझे और मेरे बेटों को भी एक मारपीट के केस से साफ बचाया यद्यपि उस दौरान यार लोगों की लगा बुझाई

से हम लोगों में क़राब-क़रीब बोलचाल तक बन्द थी आपस मे।

आदरणीय की यशोगाथा तो 'हरि अनन्त हरि कथा अनन्ता' जैसी है। कहाँ तक बखान की जाये ? लेख का भी तो समापन करना ही होगा। इतने गुणों के प्रताप से वे कहीं आदमी से देवताओं की श्रेणी में न आ जायें।

एक कमी भी है। थोड़े कानों के कच्चे अवश्य हैं वे । भाई लोगों ने किसी के ख़िलाफ़ चढ़ाया तो फ़ौरन त्यौरियाँ चढ़ जायेंगी। जिद्दी जबरदस्त। सामने वाला ही झुके तभी बात बने नहीं तो शायद सात जन्मों तक वैसी ही रार ठनी रहे।

ख़ैर, इतना कहने की स्वतन्त्रता तो उन्होंने मुझे हमेशा दी है। इस बार भी क्षमा कर ही देंगे लेकिन मैं सच्चे हृदय से स्वीकारता हूँ कि कुछ अर्थों में वे मेरे भी प्रेरणा-स्रोत हैं। जीवन से निराश सर्वहारा जनों के लिए उन के निष्पक्ष व्यक्तित्व की वैसी ही सार्थकता है जैसी अँधियारी रातों में अथाह समुद्र में भटकते जलयानों को किसी प्रकाश स्तम्भ की।

प्रभु से प्रार्थना है कि वे उन्हें शतायुष्य प्रदान करें ! तथास्तु !

32, आज़ादपुरम, निकट हार्टमैन कालेज
बरेली-243122 (उ0प्र0)
फोन : 0581-541004

है वे बौद्धिक हैं पर भावुक भी हैं फौजदारी के अधिवक्ता होते हुए भी ग़ज़ल कह लेते हैं। वकालत के पेशे से जुड़े अनेक व्यक्तियों को उपन्यासकार एवं कथाकार के रूप में उभरते तो देखा है पर कवि के रूप में कम ही व्यक्ति आगे जाते देखे। उनके जीवन से जुड़ी कुछ मार्मिक घटनाओं का शायद इसके लिए कुछ योगदान हो सकता है।

राम प्रकाश गोयल वार्ता के मध्य बहुधा गम्भीरता के होते भी परिहास का एक सूक्ष्म सा पुट बीच बीच में ऐसा ला देते हैं कि सामने बैठा व्यक्ति कभी ऊबता नहीं। जीवंतता से पूर्ण जीवन शैली के कारण ही ये सब कुछ संभव होता है। वे पचहत्तर वर्ष के हो जाने पर भी कहीं से ऐसे नहीं लगते। उन्हें कोई वृद्ध नहीं कह सकता। वे शायद अन्त तक वृद्ध नहीं होंगे। सन् उन्नीस सौ चौंसठ की बात है हम अपनी संस्था के तत्वावधान में एक एकांकी 'भोर का तारा' मंचित करने जा रहे थे। नायक कवि की भूमिका में कौन उतारा जाए जब ये प्रश्न उठा तो वे एक दम कह उठे 'मैं करूँगा ये भूमिका' और उन्होंने सफलता पूर्वक उस भूमिका को साकार किया। आज भी जब दूरदर्शन के लिए बनाए गए सीरियल में उनकी न्यायाधीश और प्रिसिंपल की भूमिका देखता हूँ तो मुझे वह पुरानी बात याद हो आती है। व्यवसाय से भले ही वह वकील हों या प्रोफेसर रहे हों मन से एक कलाकार ही हैं। मेरी अनेक शुभकामनाएँ उनकी दीर्घायु के लिए अर्पित हैं। प्रभु उन्हें यशस्वी करें।

136, जनकपुरी, बरेली –243122

इक लगनशील शख़्स है

पी के ग़म के हज़ार-हा दरिया,
दिल को देते रहे दिलासा-सा,
प्यार की प्यास फिर भी बाक़ी है,
एक समन्दर है यह भी प्यासा-सा।

बेवफ़ाई का शिकवा करते हैं,
बेवफ़ाओं को बेवफ़ा कहकर
लेकिन अपनी वफ़ा पे क़ायम हैं,
बेवफ़ाओं के ज़ुल्म सह सहकर।

मुस्कुराहट लबों पे रहती है।
ग़म की शिद्दत में भी नहीं हैं निराश,
सबको देते हैं प्यार का संदेश,
यानी गोयल हैं, राम का प्रकाश।

नेक जज़्बों का रंग शामिल है,
इनके शेरो-सुख़न की मस्ती में,
आदमीयत का दर्स देते हैं,
आदमी को ये बज़्मे हस्ती में।

छल कपट से है पाक दिल इनका,
प्यार की दास्ताँ है उनकी ग़ज़ल
शायरी के शिखर पे पहुँचेंगे,
इक लगन-शील शख़्स हैं गोयल।

The Ed tior
Akh Bhartiya Sah tya Kala Manch
Moradabad

Prof Ram Prakash Goel

Sir

I am delighted to know that your organisation is publishing a Abhinandan Granth of Shri Ram Prakash Goel.

It has been my proud privilege to intimately know Shri Goel for over a decade. He has been blessed with a magnetic power which attracts people who come in contact with him He has innumerable rare qualities which only great personalities have

He is an advocate by profession and has developed acumanship to pick the right and discard the rest. Prof. Goel, besides being an advocate, is an author of Gazals, Songs, Poetry and Prose He is a recognised dramastist , writer, actor & director. His innumerable qualities of Head & Heart can be summed up in three words.

Gagar Mein Sagar (गागर में सागर)

Another great quality of Prof. Goel is that he is always smiling. We have seen him similing even in most adverse and painful circumstances. He has the charming smile of Lord Krishna

According to Gita, he is True Karam Yogi, who works for other's welfare without caring for the fruits of his action. He is a "Gyan Yogi" full of knowledge without ego or pride.

Poet Gold Smith in his poem "The Village School Master" has described the teacher as -

"And we all wondered - how so small a head could contain all he knew"

Prof. Goel fits in this category.

हे फ़रिश्ते, इन्सान तुमको पहिचान न पाये,
दीन दुखियों के काम आओ तुम, अपनी ज़िन्दगी सजाओ तुम।

Dr. J. C. Bass,
Eye Surgeon
200, Civil Lines, Bareilly

प्रो० राम प्रकाश गोयल : जीवन और साहित्य

डॉ० रोहिताश्व अस्थाना

श्रद्धेय राम प्रकाश गोयल जी का जीवन एवं साहित्य एक खुली हुई पुस्तक के सदृश है। गोयल जी का जन्म 30 जून 1925 ई० को बरेली में हुआ। बी०एस-सी० और एल-एल०बी० की उपाधियाँ प्राप्त करके यह 1951 से एडवोकेट बन गए। कालान्तर में 1968 से 1985 तक (17 वर्ष) वह बरेली कालेज, बरेली में क़ानून के प्रवक्ता रहे।

बचपन से ही उन्होंने अनेक नाटकों में अभिनय किया। आगे चलकर टेलीफिल्मों में इन्होंने न्यायाधीश, पिता एवं प्रिंसिपल की भूमिकायें निभाई। आकाशवाणी एवं दूरदर्शन के यह चर्चित कवि एवं शैक्षिक संस्थाओं से सम्बद्ध रहे हैं। वर्ष 1990 में अपने दिवंगत एक मात्र पुत्र विवेक गोयल की स्मृति में "विवेक गोयल साहित्य पुरस्कार" की स्थापना की जिसमें प्रति वर्ष हिन्दी दिवस 14 सितम्बर को एक साहित्यकार का अभिनंदन करके उसे सम्मानित एवं पुरस्कृत किया जाता है।

गोयल जी ने गद्य एवं पद्य में समान रूप से लेखनी चलाई है। उन्होंने अपने जीवन में जो अनुभव, चिन्तन एवं मनन के मोती खोजे हैं, वे उनकी रचनाओं में भी किसी न किसी रूप में अभिव्यक्त हुए हैं।

उन्होंने समाज को यह संदेश देना चाहा है कि कर्म करो परन्तु फल की इच्छा मत करो। प्रत्येक कार्य को व्यवस्था एवं अनुशासन से करना चाहिए। मानव जीवन परमार्थ एवं पर सेवा के लिए है। उनका मत है कि न अन्याय करो न अन्याय सहन करो। उन्होंने अनुभव किया कि प्रेम से महान कोई भावना नहीं। प्रेम परमात्मा है और परमात्मा प्रेम है।

उनकी प्रकाशित कृतियों में 'टूटते सत्य' चर्चित रही है जो 1972 में प्रकाशित हुई। यह त्रिकोण प्रेम पर आधारित मनोवैज्ञानिक उपन्यास है। 1987 में इनका ग़ज़ल संग्रह 'दर्द की छाँव में' प्रकाशित हुआ। 1988 में टी सीरीज़ ने उनकी गजलों का कैसेट 'आईना' के नाम से प्रस्तुत किया।

गोयल जी ने युवा मन में उठते मचलते हुए प्रेम ज्वार को प्रेम पत्रों की शैली में अभिव्यक्त किया है। उन्होंने प्रेमी-प्रेमिकाओं के सच्चे प्रेम पत्रों का संकलन 'सच्चे प्रेम पत्र' नामक कृति के रूप में प्रस्तुत किया है जिसे डॉयमंड पॉकेट बुक्स दिल्ली ने 1992 में आकर्षक एवं नयनाभिराम रूप में प्रस्तुत किया। यह कृति प्रेमी प्रेमिकाओं को सयत, शिष्ट एवं मर्यादित रूप में अपने भावों को पत्रों के रूप में लिखने के लिए मार्गदर्शिका का कार्य करती है।

वर्ष 1992 में ही 'रिसते घाव' नामक उनकी ग़ज़लों का एक अन्य संकलन साहित्य पटल पर आया। इसी वर्ष गोयल जी का नाटक "दिल और दिमाग़" भी प्रकाशित एवं मंचित हुआ। निश्चय ही यह एक मनोवैज्ञानिक नाटक है जो मन एवं मस्तिष्क के मध्य होने वाले सघर्ष का प्रतीकात्मक चित्रण करने में समर्थ है। उन्होंने वर्ष 1994 मे आकाशवाणी के अनेक केन्द्रों द्वारा प्रसारित विद्वानों की वार्ताओं का सकलन किया।

अभी हाल ही 1999 में गोयल जी की एक अन्य काव्य कृति 'एक समन्दर प्यासा-सा' आकर्षक रूप में प्रकाशित हुई। यह ग़ज़ल, गीत, कतए, शेर, अतुकांत कविताओं एवं क्षणिकाओं का मिला जुला एक अनूठा संकलन है। वास्तव में यह गोयल जी की समस्त काव्य शैलियों की एक समन्वयात्मक प्रतिनिधि प्रस्तुति है।

'एक समन्दर प्यासा-सा' एक चिर शाश्वत् प्यास का पर्याय है। गोयल जी ने स्वयं स्वीकार किया "मनुष्य कभी एक जगह नहीं रुकता, न ठहर पाता है। पता नहीं किस की तलाश है उसे, क्या खलिश है, क्या बेचैनी है ? सुख दुख, धूप छाँव, रात दिन आते जाते रहते हैं, मगर कभी न बुझने वाली एक प्यास बराबर इन्सान को परेशान और बेचैन बनाए रखती है। यह प्यास ही उसकी ताक़त है, उसकी ऊर्जा है जो उसे कुछ कर गुज़रने को मजबूर करती है। इन्सान की तरह समन्दर भी बहुत प्यासा है। कितनी नदियाँ पी चुका है अब तक और हमेशा पीता रहेगा।"

गोयल जी की ग़ज़लों में जीवन की खट्टी मीठी अनुभूतियाँ, अभिव्यक्ति की तीव्रता एवं तग़ज़्ज़ुल श्लाघनीय है। समन्दर की प्यास कैसी है, कोई उसे अब तक क्यों नहीं बुझा पाया ?

"सबसे पूछा, कोई अभी तक, मुझे न बतला पाया है
चाहता क्या है, क्यों ये समन्दर, रहता हरदम प्यासा-सा" ?

ग़ज़लों में प्रायः एक फ़ल्सफ़ा, एक जीवन-दर्शन मिलता है।

"मक़सदे ज़ीस्त है क्या, किसको पड़ी जो सोचे-
आदमी खाता है, पीता है, और सोता है।'

आजकल की दोस्ती पर टिप्पणी करते हुए कवि कहता है-

"दोस्त समझे थे जिसे, उसने निकाली दुश्मनी
दोस्त बनकर ही तो अब, पीछे से करता वार है।"

कवि निरंतर अपने मन में अपने जीवन में एक दर्द का अनुभव करता है। यह दर्द अपना भी है और समाज का भी है।

"जलते हुए दिल का मेरे मंज़र नहीं देखा।
इस आग के दरिया ने समन्दर नहीं देखा।।
अंदाज़ा लगा पाएगा क्या दर्द का मेरे
तर अश्कों से जिसने मेरा बिस्तर नहीं देखा।"

कविवर बिहारी की तर्ज़ पर गोयल साहब का एक नाज़ुक-सा सुन्दर सा शेर पेश करने का मन करता है-

" जिस्म जलता है चाँदनी में मिरा, तुम बिना अब गुज़र नहीं होता।'

"रातें गुज़रीं जागते जिनके लिए,।
वो नहीं मिल पाए एक दिन के लिए।।"

गोयल जी ने अनेक कवियों की अनुभूतियों को अपनी ग़ज़लों में अभिव्यक्ति दी है। पूज्य गोस्वामी तुलसी दास जी के पद 'हृदय घाउ मोरे पीर रघुबीरे।" का भाव गोयल साहब के इस शेर में स्पष्ट झलकता है-

"दिल मिले दिल से तो हालात बदल सकते हैं।
उनके आँसू मेरी आँखों से निकल सकते है।"

जीवन और मृत्यु के सन्दर्भ में कवि का आध्यात्मिक चिन्तन है-

ज़िन्दगी मौत की अमानत है, मौत इस ज़िन्दगी की आदत है।

आत्मा और परमात्मा की विवेचना करने वाले कवि का इसी आध्यात्मिक रंग का एक शेर और देखें -

'मन्दिर मस्जिद ढूँढा उसको, फिर भी मिला नहीं मुझको
झाँका जब अपने अन्दर तो, मैं था उसका साया-सा।।'

आज के विषम परिदृश्य पर कवि की एक प्रश्न वाचक टिप्पणी-

"मैं परेशान हूँ आता न समझ में मेरी
ज़ख़्म हर पीठ पे हर हाथ में पत्थर क्यों है?

गज़ल में यदि प्रेम का रंग भी हो तो वह दिल में उतरती चली है। गोयल जी की एक ग़ज़ल में उनकी सौन्दर्य एवं प्रेम परक रचना देखिए-

"तू तो तस्वीर कला की है, मुजस्सम ऐसी
जब से देखा है तुझे मुझको खुदा याद नहीं।।"

सियासत के इस दौर पर कवि की एक टिप्पणी देखिए -

क्या अजब सियासी यह दौर है, हुए लोग इसमें हैं बदगुमाँ।
जहाँ दोस्त बन के सभी रहें, मुझे उस नगर की तलाश है।।
रहनुमा बन के हमको लूट रहे
ऐसी इस दौर की सियासत है।"

आज के युग में इन्सान भी उँगलियों पर गिनने भर को ही रह है। शैतानियत इंसानियत पर हावी होती जा रही हैं। यथा-

कदम पर मिल रहा शैतान है, इस ज़माने में कहाँ इंसान है।"

भाग्य, एवं पुरुषार्थ के सम्बन्ध में गोयल जी गोस्वामी तुलसी जी की 'होई है वहै जो राम रचि राखा' की तर्ज पर कहते हैं-

"इन्साँ हँसता है कभी और कभी रोता है
वही होता है जो क़िस्मत में लिखा होता है।"

कवि के कुछ प्रेरक एवं आशावादी शेर भी उद्धरणीय हैं-

मंज़िलें उस तरफ भी होती हैं, जिस तरफ़ रास्ता नहीं होता।'
'हार को जीत में बदल दूँगा, मेरे अन्दर छुपा सिकन्दर है।'

संग्रह में नज़्म, कत्अ, शेर और अतुकान्त कविताएँ भी हैं। एक मे आशिक़ अपनी माशूक़ा के लिए खुदा से दुआ माँगता है-

"बस यही अब तो खुदा से मैं दुआ करता हूँ,
उसके आँचल में जहाँ भर की वह खुशियाँ भर दे।
पाने वाला उसे इस दर्जा उसे प्यार करे -
क़तरा-क़तरा ही सही उसको समन्दर कर दे।"

अपने एक 'कत्अ' में कवि लोगों को परामर्श देते हुए कहते हैं-

"जिससे मिलना है तबीयत से मिलो
दुश्मनी छोड़ मुहब्बत से मिलो
प्यार का दिल में समन्दर है मिरे-
डूबना है तो इस हसरत से मिलो।'

गोयल जी की अतुकांत कवितायें भी मन को प्रभावित करती न्दगी को एक कैलेन्डर बताते हुए कवि का कथन है -

"इंसान की ज़िन्दगी क्या है ?
एक कैलेन्डर !
जो हर साल वक्त की दीवार पर
टाँग दिया जाता है,
इंसान हर साल नयी मुबारकबादों के साथ
कैलेन्डर-सा टँग जाता है।"

कवि की एक आस्था परक 'क्षणिका' सचमुच सराहनीय है -

"झूठ सम्मानित है, सच दंडित
झूठ दंडित हो-सच सम्मानित
वह दिन ज़रूर आएगा।"

गोयल जी को ग़ज़ल के शिल्प की अच्छी पकड़ है। उनका अन्दाज़े - बयाँ अपना अलग महत्व रखता है। उनकी अधिकाश रचनायें दैनिक बोलचाल की भाषा में लिखी गयी हैं। जहाँ पर उर्दू के कठिन शब्दों का प्रयोग हुआ है, वहाँ नीचे पाद-टिप्पणियों में उनका अर्थ स्पष्ट किया गया है। कुछ ग़ज़लें तो विशुद्ध हिन्दी भाषा में लिखी गयी हैं -

"आप क्यों इतने मेरे प्रतिकूल हैं ?
मार्ग में पहले ही कितने शूल हैं।"

गोयल जी ने अपनी ग़ज़लों में मतले और मक्ते का सही निर्वाह किया है। हाँ मक्ते में तख़ल्लुस या उपनाम का प्रयोग गोयल जी ने नहीं किया है, जो उन्हें परम्परावादी कवियों एवं शायरों से अलग करता है।

इस प्रकार ' एक समन्दर प्यासा-सा' गोयल जी की रचना-वाटिका का सुन्दरतम फूल है। वह अपने कथ्य एवं शिल्प के सौरभ से पाठकों को मोहित ही नहीं सम्मोहित करने की क्षमता रखता है।

अन्त में हिन्दी और उर्दू की गंगा-जमुनी संस्कृति के संवाहक के रुप में श्री राम प्रकाश गोयल का मैं हार्दिक वन्दन अभिनन्दन करते हुए उन्हें बरेली का ही नहीं अपितु देश-विदेश के हिन्दी-उर्दू भाषा-भाषियों का प्यारा कवि, शायर और दुलारा दोस्त मानता हूँ।

वह निश्चय ही अभिनन्दनीय व्यक्तित्व एवं कृतित्व के धनी हैं। उन्हें अभिनंदन ग्रंथ समर्पित करना वस्तुत. हिन्दी उर्दू साहित्य को सम्मानित करना होगा। वे स्वस्थ सुखी समृद्ध एवं शतायु हों - प्रभु से यही प्रार्थना है

प्रो0 राम प्रकाश गोयल – एक अच्छे दोस्त

प्रो0 वसीम बरेलवी

किसी अपने पर कुछ लिखना खुद से बेगाना हुए बग़ैर मुमकिन ही नहीं और खुद से बेगाना होना तहरीर को बेरब्त बना दे तो कोई ताज्जुब भी नहीं। बडा मुश्किल है यह मरहला, जब एक अच्छे दोस्त की शख़्सी और तख़्लीकी खूबियों को जाब्ता–ए–तहरीर में लाना हो और इन्साफ़ शख़्सियत से भी करना हो और फ़न से भी।

राम प्रकाश गोयल एक मुख़्लिस दोस्त, एक बजअदार रफ़ीक हैं। उनकी ज़ात बरेली शहर की अदबी सरगर्मियों के लिए वक़्फ रही है। उनसे ताल्लुक़ तो तीस पैंतीस साल पुराना है मगर उनकी शेरी काविशों का सफ़र इससे भी पहले शुरू हो चुका था। बड़े बड़े अदीबों, कवियों, लेखकों, दानिशवरों और शायरों की मेज़बानी का उन्हें सर्फ हासिल रहा है। यानी वह अपनी ज़ात से एक ऐसा इदारा–ए–कशिश रहे हैं जहाँ अबीबे फ़िक्रो–नज़र ने आकर दिली सुकूँ महसूस किया। उनकी मेहमानबाज़ी ने अहले क़लम को इस हद तक प्रभावित किया है कि कोई भी बड़ा कलाकार उनकी रवादारियों का उनसे मिलने के बाद क़ायल हुये बग़ैर नहीं रहता। उनके व्यक्तित्व का यह पहलू ही खुद इस बात की दलील है कि साहित्य की साधना उनमें किस हद तक रची बसी है। वह ख़िदमते अदब में ही विश्वास नहीं रखते बल्कि अदीबों की सोहबत को भी तख़्लीक़ी हुनरसे मोतबर बनाने का ज़रिया जानते हैं। उनकी शायरी और उनके फ़न से बरेली का साहित्यिक वातावरण बख़ूबी वाक़िफ़ है। उन्होंने ग़ज़लें भी कहीं, कविताऐं भी लिखीं, उपन्यास और नाटक भी लिखे, मगर कभी उथले तेवरों के शिकार नहीं हुये। बड़े दावों के दावेदार नहीं हुए। दर्मियानी राह पकड़ी और सादगी व सहजता को अपने इज़हार की पहचान बनाया। हर महफ़िल में शरीक हुए, गिरोहबन्दी से दूर रहे, सबके लिए क़ाबिले कुबूल रहे। बेवजह की बहस और तकरार से बचे। संस्थाओं की खानाबन्दी और रस्साकशी में न पड़े और न इसे पसन्द किया। यह उनके मिज़ाज की शायराना अदा है जिसने उन्हें शान्ति और शालीनता से पढ़ते–लिखते रहने का हुनर दिया है। मेरी दुआ है कि उन पर शाया होने वाला यह ग्रन्थ लोकप्रिय हो और उन्हें और बेहतर तरीक़े से समझने का जरिया बने।

5, गढ़ैया, बरेली (उ0प्र0)

बरेली का एक रत्न : प्रो0 गोयल

अतीक़ उर रहमान

फ़ारसी की एक कहावत है "मुश्क ई अस्त खुद मी गोयद नैके अत्तार गोयद" अर्थात् कस्तूरी जहाँ है खुद बोलती है, न कि बेचने वाला। यह कहावत श्री राम प्रकाश गोयल के परिचित लोग उनके बारे में भलीभाँति अनुभव करते हैं। श्री राम प्रकाश गोयल एक ऐसे व्यक्ति हैं जिन्हें बरेली का हर व्यक्ति जानता है। हिन्दी उर्दू के कवि, वक्ता, प्रवक्ता, माने हुए साहित्यकार, गीतकार, लेखक, व्यवहार कुशल, मृदुभाषी यह सारे गुण एक व्यक्ति में मुश्किल से मिलते हैं।

बरेली में शायद ही कोई साहित्यिक या सामाजिक आयोजन ऐसा हो जिसमें गोयल साहब की उपस्थिति न होती हो। उन्होंने अनेक किताबें लिखी हैं जो साहित्य जगत में प्रसिद्ध हुई हैं।

बरेली में हिन्दी दिवस बड़ी शान से मनाया जाता है जिसमें उनका भरपूर योगदान व सहयोग रहता है।

मुझे गर्व है कि वह मुझे अपने दोस्तों में गिनते हैं। जब कभी वह मिलते हैं, एक मधुर मुस्कान उनके चेहरे पर आ जाती है।

उनके ग़म और दुख उनके लिए प्रेरणा का स्रोत बन गए जबकि ऐसा बहुत कम ही होता है।

व्यक्ति के नाम का असर उसके गुणों व चरित्र पर पड़ता है। राम प्रकाश गोयल का यह आशय है – विद्या और ज्ञान का प्रकाश। मेरी दुआ है कि खुदा उनको एक लम्बी उम्र अता करे।

समाज सेवी एवं पूर्व अध्यक्ष
रोटरी क्लब बरेली

प्रो0 राम प्रकाश गोयल – कवि, साहित्यकार रंगकर्मी एवं समाज सेवी

जे0 सी0 पालीवाल

श्री रामप्रकाश गोयल का परिचय या उनके जीवन के बारे मे कुछ अधिक बता पाना मेरे लिये ही नहीं बल्कि अनेक के लिए एक दुष्कर कार्य है। श्री गोयल एक व्यक्ति नहीं, सही मायने में एक संस्था हैं। वे कवि, साहित्यकार, कलाकार एवं समाजसेवी हैं। व्यक्ति से आगे हैं। वे महान कर्मयोगी हैं। उनके व्यक्तित्व से मेरे जैसे सैकड़ों लोगों ने प्रेरणा ली है। वे महान व्यक्तित्व के धनी हैं। उन्होने अपने व्यक्तित्व से लोगों को प्रभावित ही नहीं किया बल्कि अपने व्यक्तित्व की चुम्बकीय शक्ति से उन्हें अगाध प्रेम भी दिया है। इनमे नर, नारी, बच्चे सभी सम्मिलित हैं।

श्री गोयल को मैं लगभग 40 वर्ष से जानता हूँ। इनके साथ मुझे ज़िला कल्चरल एसोसियेशन, सैम्फोनी कल्चरल एसोसियेशन, साहित्य कला अकादमी, सुरवन्दन संस्थान, पांचाल इतिहास परिषद इत्यादि अनेक संस्थाओं में कार्य करने का अवसर मिला है और उनसे सदैव बड़े भाई, गुरु–शिक्षक जैसा स्नेह प्राप्त हुआ है। चाहे समाज सेवा का क्षेत्र हो, साहित्य या कला का क्षेत्र हो, उन्होंने सम्बन्धित सस्थाओं को सक्रिय सहयोग प्रदान कर उन्हें संरक्षण प्रदान करने में कोई कसर नहीं छोड़ी। उनके संरक्षण में दो दर्जन ऐसी संस्थाएँ हैं जो सक्रिय रुप से कार्य कर रही हैं।

श्री गोयल अपने विरोधियों या विचारों से न सहमत होने वाले व्यक्तियों से भी बड़े आदर व प्रेम से मिलते हैं। उनकी यह विशेषता और अदा लोगों को बहुत भाती है। विचार और व्यवहार के धनी परिश्रमी व्यक्तित्व और प्रेरणा के स्रोत श्री गोयल से रंगकर्मियों ने बहुत कुछ प्राप्त किया है। उनकी हीरक जयन्ती के अवसर पर मैं सस्था के सभी पदाधिकारियों और सदस्यों की ओर से उनका हार्दिक अभिनन्दन करता हूँ और उनके शतायु की कामना करता हूँ।

अध्यक्ष, जिला कल्चरल एसोसियेशन, बरेली

प्रो0 राम प्रकाश गोयल : एक सुयोग्य अधिवक्ता

रवीन्द्र मोहन 'अनगढ़'

प्रख्यात अधिवक्ता, कला मर्मज्ञ, साहित्यकार, ग़ज़लकार एव कवि 'श्री रामप्रकाश गोयल जी' का व्यक्तित्व किसी परिचय का मोहताज नहीं है। वह स्वयं अपने आप में अपनी एक पहचान हैं। उनसे मेरा परिचय सन् 1985 में एक ऐसे मोड़ पर हुआ जब मैं हताशा के सागर में गोते लगा रहा था। कुछ षडयन्त्रकारियों ने मुझे एक झूठे मुक़दमें में फँसा दिया था। मेरे एक विद्वान अधिवक्ता मित्र मेरी पैरवी कर रहे थे। उन्होंने मुझे स्पष्ट बता दिया था कि मैजिस्ट्रेट साक्षात कलयुगी अवतार थे। बिना भेंट पूजा के मानने वाले नहीं हैं। तभी एक दिन मुझे उसका साक्षात प्रमाण मिल गया। एक अन्य अधिवक्ता जो मैजिस्ट्रेट के मुँह लगे थे, न्यायालय में मुझसे बात करने लगे और उन्होंने न जाने क्या इशारा कर दिया कि शाम तक मुझे पुकारा ही नहीं गया और फ़ाइल पर लिख दिया गया कि चार बार पुकारा गया किन्तु अभियुक्त यानी कि मैं हाज़िर नहीं हुआ। जबकि मैं सारे दिन न्यायालय में ही मौजूद था। अगले दिन जैसे तैसे करके वारन्ट वापिस हुआ। मुझे सारे दिन कटघरे में खड़ा रहना पड़ा। बाद मे मेरे मित्र की व अन्य लोगों की राय हुयी कि यदि रिश्वत नहीं देना चाहते हो तो गोयल साहब की शरण में जाओ। वह ही कोई हल निकालेंगे। मैं श्री रामप्रकाश गोयल जी से मिला। उन्होंने स्पष्ट कहा "जहाँ अधिकारी भ्रष्ट हो, न्याय की आशा व्यर्थ है। यदि उसूलों पर लडना चाहते हो तो मैं तुम्हारे साथ हूँ। यहाँ से क्या होगा कह नहीं सकता पर अपील में अवश्य विजय होगी", बाद में बहुत दबाव डलवाया गया कि गोयल साहब मुक़दमे से अलग रहें किन्तु हम दोनों ही अपनी जगह दृढ़ थे। अन्त में वही हुआ जो गोयल साहब ने कहा था। यहाँ से सज़ा हुयी पर अपील मंजूर हुयी और मैं बेदाग़ छूट गया।

उन्हीं दिनों का एक और वाक़या मुझे याद आ रहा है। मलूकपुर चौराहे बरेली पर एक ख़ाली मैदान था। वहाँ अब पुलिस चौकी है। उस स्थान का कोई वारिस नहीं था। वहीं एक पीपल का पेड़ था जिसके नीचे किसी ने हनुमान जी की मूर्ति लगा दी। पुलिस ने जबरन उस मूर्ति को हटा दिया भारतीय जनता पार्टी ने और अन्य हिन्दुओं ने विरोध किया बात बढ़ गयी परिणाम स्वरूप पुलिस ने स्व0

श्री सत्य प्रकाश अग्रवाल (पूर्व मन्त्री एव भारतीय जनता पार्टी के वरिष्ठ नेता) श्री वीरेन्द्र वर्मा एडवोकेट, श्री राजवीर सिंह, श्री संतोष गगवार, श्री बाबू सिंह, श्री धर्मगुरु श्री प्रेम शंकर जैटली, श्री दिलीप आर्या आदि 79 भारतीय जनता पार्टी के नेताओं को रात के एक बजे उनके घरों से पकड़ कर पुलिस लाइन में बन्द कर दिया एवं उनकी निर्मम पिटाई की जिससे कई लोगों की हड्डियाँ भी टूट गयीं तथा सुबह उन सब पर दण्ड प्रक्रिया संहिता की धारा 107/117 का चालान कर सैन्ट्रल जेल भेज दिया। यह घटना 19 सितम्बर 1986 की है। श्री राम प्रकाश गोयल 'एडवोकेट' जो न केवल एक सुयोग्य अधिवक्ता थे वरन वे भारतीय जनता पार्टी के शीर्ष नेताओं में स्थान रखते थे उन्होंने इस 107/117 की कार्यवाही के विरुद्ध सेशन जज बरेली के न्यायालय में रिवीज़न दायर कर दिया। न्यायप्रिय जिला जज श्री एस0आर0 भार्गव ने दो दिन तक श्री गोयल की इस जनहित याचिका की बहस सुनी और 22 सितम्बर 1986 की रात्रि के दस बजे अपना निर्णय दिया तथा इस सारी कार्यवाही को अवैध ठहराया। उन्होंने आदेश किया कि तुरन्त इन बन्दी व्यक्तियों को रिहा किया जाये। दूसरे दिन सभी छूट गये।

एक और इसी प्रकार की घटना की धुँधली सी याद शेष है। बिहारीपुर पुलिस चौकी के एक दरोग़ा ने एक निर्धन निर्दोष व्यक्ति को पकड़ कर चौकी में ले जाकर निर्ममता पूर्वक जबरदस्त पिटाई की जिससे उस व्यक्ति की मृत्यु हो गयी। उसके परिवार वाले दरोग़ा के भय से कोई कार्यवाही करने से डर रहे थे। गोयल साहब का जीवन दर्शन है न अन्याय करो न अन्याय सहन करो। ''उन्होंने उक्त व्यक्ति के परिवार वालों को उत्साहित किया और उक्त दरोग़ा के विरुद्ध रिपोर्ट लिखायी। इतना ही नहीं उन्होंने सेशन जज की अदालत में दरोग़ा की ज़मानत की अर्ज़ी के विरुद्ध दो बार ज़ोरदार बहस की तथा दोनों बार ज़मानत की अर्ज़ी ख़ारिज हुई। लगभग 20 दिन दरोग़ा को जेल में रहना पड़ा और इलाहाबाद उच्च न्यायालय से उसकी ज़मानत मंजूर हुयी। गोयल साहब का जीवन दर्शन केवल मौखिक नहीं, व्यवहारिक भी है। अन्याय उनसे सहन नहीं होता। चाहे जो भी सम्मुख हो वे उसके सामने डट जाते हैं।

हम सभी जानते हैं कि टेलीफ़ोन विभाग वाले अन्धाधुन्ध बिल बना कर भेज देते हैं और उपभोक्ता से उचित-अनुचित ढंग से मनमानी रकम वसूल करते हैं। गोयल साहब के साथ भी ऐसा ही हुआ और उन्होंने चार बार उपभोक्ता फ़ोरम में अपने वाद दायर कर टेलीफ़ोन विभाग के विरुद्ध विजय प्राप्त की।

1968 में श्री गोयल की नियुक्ति बरेली कालेज बरेली में लॉ लेक्चरर के रूप में हुयी। उक्त पद पर नियुक्ति के लिए आगरा विश्वविद्यालय के कुलपति का अनुमोदन होना आवश्यक होता था। इस नियुक्ति का अनुमोदन तत्कालीन कुलपति श्री शीतल प्रसाद ने नहीं दिया। इसके विरुद्ध गोयल साहब ने इलाहाबाद हाई कोर्ट में रिट दायर की। न्यायालय ने कुलपति के आदेश को निरस्त किया। यह कानूनी लड़ाई गोयल साहब पाँच वर्षों तक लड़ते रहे और न्यायालय के आदेश पर कॉलेज में पढ़ाते रहे। इस प्रकार अपनी क़ानूनी लड़ाई जीत कर वे सत्रह वर्षों तक बरेली कालेज बरेली में छात्रों को क़ानून की शिक्षा देते रहे। आज भी बरेली में वकालत करने वाले अधिकाश अधिवक्ता उनके शिष्य हैं।

1972 में गोयल साहब का त्रिकोण प्रेम पर आधारित उपन्यास 'टूटते सत्य' छपा था। बाइन्डर ने उक्त उपन्यास की बाइन्डिंग में लापरवाही से काम किया। किसी पुस्तक में कोई पेज कम था तो किसी में ज़्यादा। गोयल साहब के कहने पर भी जब उसने उन्हें ठीक नहीं किया तो गोयल साहब ने उसके विरुद्ध आई0पी0सी0 की धारा 427 का फ़ौजदारी का मुक़दमा दायर किया। उसे गोयल साहब से क्षमा याचना करनी पड़ी तथा सभी पुस्तकों की दोबारा सही ढंग से बाइन्डिंग करके देनी पड़ी।

1987 में उनकी पुस्तक 'दर्द की छाँव में' का विमोचन विख्यात कवि श्री सोम ठाकुर के हाथों संजय कम्युनिटी हाल बरेली मे एक भव्य समारोह व कवि सम्मेलन के मध्य हुआ। पूरा हाल भरा हुआ था जिससे पता चलता था कि गोयल साहब कितने लोकप्रिय व्यक्ति हैं। वे जहाँ एक ओर मृदु स्वभाव के व्यक्ति हैं और सम्बन्ध निबाहना जानते हैं वहीं अधिकार के लिए संघर्ष करने की क्षमता भी उनमें विद्यमान है।

उनके ग़ज़ल संग्रह 'रिसते घाव' का प्रकाशन 1992 में हुआ। प्रकाशक की ग़लती से कुछ पुस्तकों में ऊपर कवर तो 'रिसते घाव' का था परन्तु अन्दर पुस्तक कोई और थी। गोयल साहब ने उक्त प्रकाशक के विरुद्ध उपभोक्ता फोरम में वाद दायर कर दिया। उसे क्षमा माँगनी पड़ी और उन्हीं पुस्तकों को पुनः छपवा कर देना पड़ा।

किसी किरायेदार से मकान या दुकान खाली करवाना आजकल बहुत मुश्किल काम है। गोयल साहब के मकान के एक हिस्से में विद्युत परिषद् व सी0आई0डी0 विभाग के कार्यालय थे। काफ़ी समय से काबिज़ होने के कारण वे मकान खाली करना नहीं चाहते थे। गोयल साहब ने दोनों विभागों के विरुद्ध वाद दायर किये और अपनी

योग्यता से विजय प्राप्त की। दोनों सरकारी विभागों को मकान खाली करना पड़े।

इसी सन्दर्भ में एक और बात याद आती है जिसका ज़िक्र न किया जाय तो बात अधूरी रह जायेगी। गोयल साहब पंजाब नेशनल बैंक के वकील थे। उनका पंजाब नेशनल बैंक में खाता भी था 1994 की बात है। बैंक ने गोयल साहब की फ़ीस का भुगतान किया। बाद में बैंक मैनेजर ने अनुभव किया कि फ़ीस का भुगतान कुछ ज़्यादा हो गया है। उसने वह रक़म उनके खाते में से निकाल ली मगर उनसे कोई अनुमति नहीं ली। जब यह बात गोयल साहब के संज्ञान में आयी तो उन्होंने एतराज़ किया और कहा "किसी भी खातेदार के खाते में बिना उसकी अनुमति के हस्तक्षेप करने का आपको कोई अधिकार नहीं है।" बैंक ने उनकी बात को नहीं माना। मजबूरन उन्हें अपने ही मुवक्किल पंजाब नेशनल बैंक के विरुद्ध उपभोक्ता फ़ोरम में क़ानूनी कार्यवाही करनी पड़ी। बैंक मैनेजर को अपने उक्त कार्य के लिए क्षमा याचना करनी पड़ी और तुरन्त हिसाब करना पड़ा जिसमें गोयल साहब के फीस के रुपये ही बैंक के ऊपर और निकले और बैंक को उनका हिसाब तुरन्त सही करना पड़ा। जो रुपए निकाले थे वह भी देने पड़े। तो ऐसे हैं गोयल साहब जो अपने सही हक़ के लिऐ अपनों के विरुद्ध तक उठ खड़े होते हैं।

गोयल साहब के व्यवसाय से सम्बन्धित इन बातों का ज़िक्र करने का मेरा उद्देश्य उनकी वकालत की प्रशंसा या प्रचार करना नहीं है अपितु उनके स्वभाव, उनकी मनोवृति, उनके जीवनदर्शन को बताना है ताकि और लोग भी उनसे प्रेरणा ले सकें। उनका जीवन दर्शन है:-

1. कर्म करो, फल की इच्छा मत करो।
2. हर कार्य को व्यवस्था और अनुशासन से करना।
3. मानव जीवन सेवा के लिए है।
4. न अन्याय करो न अन्याय सहन करो।
5. प्रेम से महान कोई भावना नहीं हैं। प्रेम परमात्मा है, परमात्मा प्रेम है।

ईश्वर गोयल साहब को दीर्घायु प्रदान करे ताकि वे हमारा मार्ग दर्शन करते रहें। इन्हीं शुभकामनाओं के साथ।

240, सिविल लाइन्स, चौपला
बरेली

श्री गोयल : परिचित भी, अपरिचित भी

त्रिलोक चन्द्र सेठ

आज अखिल भारतीय साहित्य कला मंच, मुरादाबाद द्वारा प्रेषित 'अभिनन्दन-ग्रंथ-योजना' का समाचार पढ़कर बड़ी प्रसन्नता हुई। श्री गोयल के 75 वें जन्मदिवस पर यह अभिनंदन ग्रंथ भेंट करना हम सबके गौरव का प्रतीक होगा।

संलग्न परिचय-पत्र पढ़कर उनके व्यक्तित्व का वह पक्ष भी उजागर हुआ जिसका हम लोगों को कोई परिचय भी नहीं था। प्रतिष्ठित अधिवक्ता के अतिरिक्त उनकी साहित्यिक रुचि का तो परिचय हम लोगों को था ही, सामाजिक सेवाओं का भी थोड़ा बहुत परिचय था परन्तु अभिनय के क्षेत्र में एवं सफल विधि शिक्षक के रूप में उनका परिचय प्राप्त कर विशिष्ट आनंद की अनुभूति हुई।

उनके बहुआयामी व्यक्तित्व से समाज को बड़ा मार्गदर्शन मिलेगा इसी भावना के साथ नवीन ग्रंथ के सफल विमोचन की प्रतीक्षा में,

कोठी काशीनाथ, रामपुर बाग, बरेली

बड़े भाई : प्रो0 गोयल

डॉ0 दिनेश जौहरी

मुझे यह जानकर बड़ी प्रसन्नता हो रही है कि अखिल भारतीय साहित्य कला मंच की ओर से परम आदरणीय श्री राम प्रकाश गोयल के 75 वें जन्मदिन के अवसर पर एक अभिनंदन ग्रंथ प्रकाशित होने जा रहा है जो उन्हें भेंट किया जायेगा।

प्रो0 गोयल मेरे बड़े भाई की तरह हैं व उनका स्नेह मुझे मिलता रहा है। जैसा कि मैं जानता हूँ उनमें एक अच्छे इंसान के गुण विद्यमान हैं। एक सफल अधिवक्ता, साहित्यकार, कवि, कलाकार व सबको सम्मान देने वाला व्यक्तित्व। जिससे मिलता है अपनी मृदुभाषा व स्वभाव से सबको अपना बना लेता है।

अपने एक मात्र पुत्र के निधन के बाद उन्होंने जिस तरह से सामाजिक कार्यों में व्यस्त रहकर अपने को सँभाला है उसकी जितनी प्रशसा की जाए कम है।

मैं उनके जन्मदिन पर प्रकाशित होने वाले अभिनंदन ग्रंथ के सफल प्रकाशन की कामना करता हूँ।

पूर्व स्वास्थ्य मंत्री, उत्तर प्रदेश
3, नेहरू पार्क, पीलीभीत रोड,
बरेली- 243005

श्री गोयल : परिचित भी, अपरिचित भी

त्रिलोक चन्द्र सेठ

आज अखिल भारतीय साहित्य कला मंच, मुरादाबाद द्वारा प्रेषित 'अभिनन्दन-ग्रंथ-योजना' का समाचार पढ़कर बड़ी प्रसन्नता हुई। श्री गोयल के 75 वें जन्मदिवस पर यह अभिनंदन ग्रंथ भेंट करना हम सबके गौरव का प्रतीक होगा।

संलग्न परिचय-पत्र पढ़कर उनके व्यक्तित्व का वह पक्ष भी उजागर हुआ जिसका हम लोगों को कोई परिचय भी नहीं था। प्रतिष्ठित अधिवक्ता के अतिरिक्त उनकी साहित्यिक रुचि का तो परिचय हम लोगों को था ही, सामाजिक सेवाओं का भी थोड़ा बहुत परिचय था परन्तु अभिनय के क्षेत्र में एवं सफल विधि शिक्षक के रूप में उनका परिचय प्राप्त कर विशिष्ट आनंद की अनुभूति हुई।

उनके बहुआयामी व्यक्तित्व से समाज को बड़ा मार्गदर्शन मिलेगा इसी भावना के साथ नवीन ग्रंथ के सफल विमोचन की प्रतीक्षा में,

कोठी काशीनाथ, रामपुर बाग, बरेली

बड़े भाई : प्रो0 गोयल

डॉ0 दिनेश जौहरी

मुझे यह जानकर बड़ी प्रसन्नता हो रही है कि अखिल भारतीय साहित्य कला मंच की ओर से परम आदरणीय श्री राम प्रकाश गोयल के 75 वें जन्मदिन के अवसर पर एक अभिनंदन ग्रंथ प्रकाशित होने जा रहा है जो उन्हें भेंट किया जायेगा।

प्रो0 गोयल मेरे बड़े भाई की तरह हैं व उनका स्नेह मुझे मिलता रहा है। जैसा कि मैं जानता हूँ उनमें एक अच्छे इंसान के गुण विद्यमान हैं। एक सफल अधिवक्ता, साहित्यकार, कवि, कलाकार व सबको सम्मान देने वाला व्यक्तित्व। जिससे मिलता है अपनी मृदुभाषा व स्वभाव से सबको अपना बना लेता है।

अपने एक मात्र पुत्र के निधन के बाद उन्होंने जिस तरह से सामाजिक कार्यों में व्यस्त रहकर अपने को सँभाला है उसकी जितनी प्रशंसा की जाए कम है।

मैं उनके जन्मदिन पर प्रकाशित होने वाले अभिनंदन ग्रंथ के सफल प्रकाशन की कामना करता हूँ।

पूर्व स्वास्थ्य मंत्री, उत्तर प्रदेश
3, नेहरू पार्क, पीलीभीत रोड,
बरेली- 243005

प्रो0 राम प्रकाश गोयल – एक विलक्षण व्यक्तित्व

डॉ0 आर0पी0 सिंह, डी0लिट्0

26 जनवरी, 1997 को संजय कम्युनिटी हॉल में लगी चित्रकला प्रदर्शनी के उद्घाटन हेतु मुझे आमंत्रित किया गया। इस अवसर पर प्रथम बार श्री राम प्रकाश गोयल से मैं रूबरू हुआ। उनका एक शान्त–सा, निश्छल, मेधापूर्ण व तर्कशील व्यक्तित्व लगा। लगभग 15 मिनट बातें हुयीं गोयल साहब से। ऐसा लगा कि उनके अन्दर साहित्यिक व सांस्कृतिक जागृति के लिए एक छटपटाहट है व इस क्षेत्र में युवाओं की छिपी हुई प्रतिभाओं को उजागर करने की ललक है। मैं प्रभावित हुआ। उसी सायं को कुछ वरिष्ठ शिक्षक मेरे बँगले में मुझसे मिलने आये। मैंने जिज्ञासावश उनसे श्री गोयल जी के कार्यक्षेत्र के बाबत पूछा। बहुत सुखद लगा – जब यह ज्ञात हुआ कि गोयल जी एक भावुक कवि हैं, एक समर्पित रंगकर्मी हैं, एक समाज सुधारक हैं व साहित्यिक संस्थाओं के प्राण हैं। एक व्यक्ति सामान्य से क़द वाला इतनी प्रतिभाओं का धनी है – यह जानकर वास्तव में, मैं प्रभावित हुआ। दुनिया में बहुत कम लोग होते हैं जो इतनी खूबियों के धनी होते हैं। इतनी विधाएँ, इतने सोच के कोण, इतनी असंगत रुचियाँ – विरले ही इन्सान में मिलती हैं।

उनके व्यक्तित्व के वास्तविक स्वरूप को उनकी कृतियाँ – रचनाएँ उकेरती हैं। मुझे श्री गोयल साहब ने अपने द्वारा लिखी गयी कई पुस्तकें दीं – जिनमें 'टूटते सत्य', 'रिसते घाव', 'दर्द की छाँव मे' 'एक समन्दर प्यासा–सा' मुख्य रूप से मैंने पढ़ीं। जितना साहित्य को मैंने जाना है उसके अनुभव पर मेरा यह मानना है कि श्री गोयल जी में भावना तथा विचार और उनकी संतुलित अभिव्यक्ति का अनूठा स्रोत है जो रिसता है तो ग़ज़ल बना देता है।

उनका लेखन और उनका व्यवहार दोनों में बहुत अनुरूपता है। बात करते वक्त उनका तन्मय होकर बोलना और उनका आँख बन्द कर सोचना उनके व्यक्तित्व के विलक्षण लक्षण हैं। अपने अकेले बेटे को खोकर भी उन्होंने उसकी याद को साहित्य के प्रति समर्पित कर दिया – यह उनका सच्चा अनुष्ठान है – बेटे की याद का और साहित्य के समर्पण का। श्री राम प्रकाश गोयल 30 जून को पूरे 75 वर्ष के हो जायेंगे। मैं उनकी दीर्घ आयु तथा उनके सुखद स्वास्थ्य की कामना करता हूँ।

प्राचार्य बरेली कॉलेज बरेली

प्रो0 गोयल : एक साफ सुथरा व्यक्तित्व

डॉ0 एन0 एल0 श्रीवास्तव

प्रो0 रामप्रकाश गोयल एडवोकेट से मेरा परिचय 35 वर्षो से है। श्री रामप्रकाश गोयल बरेली की उन हस्तियों में से हैं जिनको देखने मात्र से इतनी स्फूर्ति मिलती है जैसे किसी क्रांतिकारी के सम्पर्क में आने से मिलती है। मैंने जानबूझकर श्री रामप्रकाश गोयल को एक क्रांतिकारी शब्द दिया है। रामपुर बाग स्थित इनका चैम्बर देखने मात्र से ऐसा लगता है कि हम किसी बड़े लेखक, बड़े साहित्यकार एंव उच्चकोटि के विद्वान से भेंट करने आये हैं। इनकी टेबिल भले ही अस्त व्यस्त हो उस पर पुस्तकों का भंडार विभिन्न कार्यक्रमों की फोटोग्राफ़, पुरस्कार, शील्ड एवं फोटो के एलबम देखने मात्र से रोंगटे खड़े हो जाते हैं और मन गर्व से गदगद हो जाता है। मुझे गर्व है कि श्री राम प्रकाश गोयल मुझे बहुत ही स्नेह करते हैं और हर बात की उचित सलाह देते हैं। ऐसा महान साहित्यकार, कलाकार, लेखक, कवि उपन्यासकार का अभिनंदन उनकी 75वीं वर्षगांठ पर बरेली के लोगों के लिए बड़े सौभाग्य की बात है। मेरे पास उनकी प्रशंसा करने के लिए शब्द नहीं हैं। मैं भी एक समाजसेवी हूँ, राजनीतिक व्यक्ति हूँ। बरेली में हर तरफ़ लोगों से वार्तालाप होती रहती है। रामप्रकाश गोयल की हर तरफ़ तारीफ़ ही तारीफ़ सुनने को मिलती है। मेरी भगवान से प्रार्थना है कि ईश्वर उनको दीर्घायु प्रदान करें और पूर्ण स्वस्थ रखकर समाज की सेवा करने का अवसर प्रदान करें। श्री रामप्रकाश गोयल बरेली के एक ऐतिहासिक पुरुष हैं। वह सदैव याद रखे जायेंगे। वो किसी की दया के भिखारी कभी नहीं रहे। मैं इस अवसर पर उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना करता हूँ। श्री रामप्रकाश गोयल ने अपने एकमात्र पुत्र स्व. विवेक गोयल के नाम को अमृतत्व प्रदान करने के लिये हिंदी दिवस के अतिरिक्त उनके नाम पर कई जगह जैसे बालजती कन्या इण्टर कालेज में 'विवेक गोयल कक्ष' बनवाया। यह इस बात का द्योतक है कि रामप्रकाश गोयल कैसा अनुपम और अद्वितीय व्यक्तित्व है। मैं उन्हें बार बार नमन करता हूँ।

प्रबंधक, बालजती कन्या इंटर कॉलेज
685, कटरा चाँद खाँ, बरेली

बहुमुखी प्रतिभा के धनी : प्रो0 गोयल

डॉ0 सतीश चन्द्र अग्रवाल
आई0आर0एस0

बहुमुखी प्रतिभा के धनी श्री रामप्रकश गोयल जी ने जहाँ साहित्य की विविध विधाओं को अपनी रचनाओं द्वारा सजाया सँवारा है वहीं न केवल शहर बल्कि बरेली के आसपास के ज़िलों की तमाम साहित्यिक – सामाजिक – सांस्कृतिक संस्थाओं को जीवन्तता प्रदान की है। कृतित्व के अनुरूप ही उनका व्यक्तित्व भी कालजयी प्रतीत होता है। बढ़ती उम्र को उन्होंने अपने दिलो दिमाग़ पर हावी नहीं होने दिया। जीवन के 75 वर्ष पूरे करने पर भी उनकी सक्रियता, कर्मठता सामाजिक दायित्वों के प्रति सजगता अपेक्षाकृत अल्पवय लोगों के लिए निश्चित ही प्रेरणा का स्रोत है। जीवन के अनेकानेक खट्टे मीठे अनुभवों से पुष्ट चिंतन की छाप उनकी ग़ज़लों में स्पष्ट देखी जा सकती है–

मैंने दुनिया के हर एक रंग का मंज़र देखा।
दोस्त दुश्मन से सभी लोगों से मिलकर देखा।।
सबके दिल में खुदा का जल्वा है, हर बशर कितना खूबसूरत है,
दीन दुखिओं के काम आऊँ मैं, अपनी यूँ ज़िंदगी बिताना है।

उनके अद्यतन ग़ज़ल संग्रह ''एक समन्दर प्यासा–सा'' में दार्शनिक चिंतन बड़े सहज व सरल अंदाज़ में व्यक्त हुआ है–

ज़िंदगी मौत की अमानत है, मौत इस ज़िंदगी की आदत है।
आदमी खुद खुदा का साया है, बाक़ी जो है वो सिर्फ़ माया है।

मैं उनके सतत कर्मशील रहते हुए शतायु होने की कामना करता हूँ।

संयुक्त आयुक्त इन्कम टैक्स,
बरेली

विजय कुमार भार्गव
मण्डल रेल प्रबन्धक, पूर्वोत्तर रेलवे

कार्यालय :
मण्डल रेल प्रबन्धक,
इज्जतनगर

प्रिय श्री गोयल जी,

इज्ज़तनगर कारख़ाने में एक कवि सम्मेलन में आपके कविता पाठ के बाद मैंने आपकी पुस्तक, "एक समन्दर प्यासा-सा" पुस्तकालय से मँगाकर पढ़ी।

आपकी कविता पाठ में मानवीय संवेदना को क़रीब से छूने की क्षमता है और पुस्तक में भी ऐसी ग़ज़लें संचित की गई हैं जिसमें प्रेम और दर्द का बख़ूबी बयान किया गया है।

जिन रचनाओं में आपने वर्तमान राजनीति की आलोचना की है उनमें इतना दम है कि वे हमारे समाज की विचारधारा को उद्वेलित कर सकें।

आपके जीवनवृत को पढ़कर आपकी रचनाओं को समझने में और भी आसानी हुई। अपने जीवन में जिन अनुभवों और कड़वाहटों का सामना करना पड़ा वे आपकी ग़ज़लों और गीतों में स्वतः उतर आये हैं। आपका शेर –

हार को जीत में बदल दूँगा।
मेरे अंदर छुपा सिकन्दर है।।

बहुत ही प्रेरित करने वाला है और मैं स्वयं इससे बड़ा प्रभावित हुआ हूँ। आपका सस्वर कविता पाठ अपने आप में अनूठा अनुभव है और आपसे कुछ भी चीज़ सुनने का अलग ही आनंद है। मेरा यह सौभाग्य रहा कि आप जैसे गुणी और विद्वान व्यक्ति से मेरा परिचय हुआ।

आपका,
(विजय कुमार भार्गव)

सहनशील गोयल जी

मुकुंद देवी शर्मा

श्री राम प्रकाश गोयल जी के विषय में लिखते हुये मैं स्वय को गौरवान्वित अनुभव कर रही हूँ। सर्वविदित है कि राम प्रकाश जी ने साहित्यिक, सांस्कृतिक तथा सामाजिक क्षेत्र में पर्याप्त कार्य किया है। उनकी कई पुस्तकें जैसे "टूटते सत्य" उपन्यास, "दर्द की छाँव में" ग़ज़ल संग्रह "सच्चे प्रेम पत्र", "दिल और दिमाग़" नाटक और अब "एक समन्दर प्यासा-सा" प्रकाशित हुआ है।

मेरा उनसे पारिवारिक सम्बन्ध रहा है। उनकी धर्मपत्नी मेरी मित्र हैं। उनके पुत्र विवेक गोयल से मेरा विशेष स्नेह था। उसकी मृत्यु के समाचार से हृदय दुःख से भर गया था। ऐसे में एक पिता को इस दुःख से उबरना बहुत कठिन होता है। पर गोयल जी ने साहित्य-सृजन तथा सामाजिक कार्यों हेतु अपने हृदय को मोड़ कर उस कष्ट को कम किया। इन सब कार्यों में स्वयं को लगाकर अपने दुःखों को भुला दिया।

मैंने गोयल जी के मुख से कभी भी दुःख की बात नहीं सुनी। वास्तव में यह बहुत बहादुरी की बात है या यों कह सकते हैं कि वे वास्तव में ज्ञानी हैं और गीता के अनुसार ही जीवन व्यतीत कर रहे हैं और दुःख-सुख को बराबर समझ रहे हैं। गीता निरन्तर कर्म में लगे रहने को कहती है और वे बराबर कर्म करने में लगे हैं।

हृदय की शल्य-चिकित्सा के उपरान्त भी मैंने उन्हें हिम्मत हारते नहीं देखा। वे अत्यन्त सरल एवं सौम्य व्यक्तित्व के धनी हैं। ज्ञान संचित करने की उनमें अपार इच्छा है। प्रायः संध्या समय जब सब लोग घर से ऊबकर घूमने-फिरने जाते हैं, वे प्रायः पढ़ते हुए मिलते हैं।

उनके पाँच सिद्धान्त हैं। हर कार्य को ढंग से करो। कर्म करो, फल की इच्छा मत करे। न अन्याय करो न अन्याय सहो। प्रेम को परमात्मा के समान ऊँचा समझो इत्यादि। यह बातें उनके महान जीवन को परिलक्षित करती हैं।

प्रवक्ता बी० एड० विभाग प्राप्त

प्रो0 राम प्रकाश गोयल वेदना से सवेदना तक

डॉ0 इंदिरा आचार्या

श्री राम प्रकाश गोयल एक ऐसे व्यक्तित्व हैं जिनका कृतिकार वेदना की गहराई से शुरू होकर वेदना के विस्तार तक जाता है। कविता जीवन की व्यथा ही नहीं, जीवन की मीमांसा भी है। अपने 'रिसते घाव' और 'एक समन्दर प्यासा-सा' के माध्यम से वे प्रमाणित कर पाए हैं। अपने बिखरते जीवन को उन्होंने जिस अंदाज़ में समेटा है, वही उनके लेखन का धरातल है। उनकी इसी कुशाग्रता ने उनके आनुभूतिक चिंतन को रचनाधर्मिता की कसौटी देकर उसे धारदार बना दिया है। केन्द्र में आहत मनुष्य को रखकर उसे हर कोण से देखा है उन्होंने; फिर चाहे वह राजनीतिक प्रहारों से प्रताड़ित हो, सामाजिक विसंगतियों से संत्रस्त हो, आर्थिक वैषम्य से जूझ रहा हो या फिर अपनी-नितांत मनोकामनाओं से घिरा हो। वे लगातार उसके साथ साथ चले हैं।

श्री गोयल की रागात्मक संचेतना ने एकान्तिक निष्ठा और वियुक्ति का दर्द दोनों को जिया है। एक ओर जहाँ वे कहते हैं-

प्यार में ज़ब्त के सिवा क्या है, ज़ब्त ही प्यार की कहानी है।
जो मिरी ज़ीस्त का सहारा है, मुझको पत्थर उसी ने मारा है।

वहीं दूसरी ओर प्रेम में आत्म विलय का दर्शन स्वीकारते हुए उसे विश्वास का प्रयास मानते हैं।

आईना जब भी देखता हूँ मैं, मैं नहीं उसमें यार होता है।
प्यार का इम्तिहान मत लेना, प्यार बस एतबार होता है।

अनुभूति की सघनता में समर्पण का सुख विलक्षण है, लेकिन द्वैत का एहसास बना रहता है - एक बेचैनी, उद्विग्नता उनके मन को मथती है-

यूँ तो वो बेवफा-सा लगता है, मुझको फिर भी खुदा सा लगता है।
आप इतने क़रीब आ भी गये, फिर भी क्यूँ फ़ासिला-सा लगता है।

प्रेम को बड़ी गहराई से चिंतन की दृष्टि से देखा है श्री गोयल ने, तभी तो वह कह सकते हैं-

मुहब्बत एक ऐसी दास्ताँ है, कहीं चुप है कहीं वह बाज़बाँ है।

लेकिन उनका यह चिंतन भीतर की जिस आग से होकर गुज़रा है, उसे प्राप्त कर पाना हर एक के बस की बात नहीं। ऐसा लगता है-अंतर्दाह की आँच ने उनके भावों को कुंदन बनाया है अवश्य, लेकिन उनके अश्कों से उपजा है यह अनल ! आग और पानी की इस मनोहारी अन्विति में उनकी अन्तर्व्यथा भी है और उनका अभिव्यक्ति कौशल भी।

है आग ही बस आग भरी दिल में है मेरे,
अच्छा हुआ तुमने मुझे छूकर नहीं देखा।
अंदाज़ा लगा पायेगा क्या दर्द का मेरे,
तर अश्कों से जिसने मेरा बिस्तर नहीं देखा।

उनकी यह आग और अश्क उस आम आदमी के हैं जो हर मोर्चे पर लड़ रहा है। उनकी यह लड़ाई उन बेदर्द लोगों के खिलाफ़ है जो अपनी जिव्हा पर वफ़ादारी का मंत्र लिए अपने मनों में नफ़रत पाल रहें हैं। सहानुभूति और औदार्य के पीछे जो जलाने वाले हाथ हैं उन्हें श्री गोयल ने बखूबी देखा है और यह भी आँका है कि अब परिवर्तन ही विकल्प है-

वह जो हमदर्दियाँ जताता है,
आग खुद ही लगाने वाला है
इतनी नफ़रत भरी है दुनिया में,
ज़लज़ला कोई आने वाला है।
कौन है किसकी दास्ताँ सुनता,
दर्द कितना भी हो सदाओं में।
पाक-दामानी का वह दम भरता,
वह जो जीता रहा गुनाहों में।

काँच के टुकड़ों-सा किरच किरच होता आदमी नैतिकता विहीन समाज में किस प्रकार अपनी स्थिरता खो रहा है- यातना की इस कथा से भी वे अंजान नहीं हैं-

इससे बढ़कर अज़ाब क्या होगा, चंद सिक्कों में लाड़ली बेची।
बेवफा हो गया है जब साया, हमने घबरा के रोशनी बेची।

तत्र से लेकर लोकतत्र तक की यात्रा में उन्हें लगा है कि लोक

तत्र समाप्त हो गया है. लोक और तत्र अलग हो गए हैं। व्यवस्था की नीति में सरकार और जनता की सांवादिक प्रतिबद्धता समाप्त हो गयी है और ऐसे में उन्हें क्रांति की अपेक्षा है- ऐसी ऊर्जा की जो सारा कुछ मिटाकर एक नयी तस्वीर रचे -

हुआ क्या है आज निज़ाम को, कहीं अम्न है न सुकून है,
जो फ़जा में आग लगा सके, मुझे उस शरर की तलाश है।
यह अजब सियासती दौर है, हुए लोग इसमें हैं बदगुमाँ,
जहाँ दोस्त बनके सभी रहें, मुझे उस नगर की तलाश है।

उनका द्वंद्व है कि आदमी के हिस्से में आदमियत क्यों नहीं है ?

मैं परेशान हूँ आता न समझ में मेरी,
जख्म हर पीठ पे हर हाथ में पत्थर क्यों है।
चाहते सब हैं रहे अम्न हमेशा ही यहाँ,
ऐसी बरबादी का फिर दुनिया में मंज़र क्यों है।

और इसके लिए उनमें असीम अपराजेय ऊर्जा है, संकल्प बल है और प्राण शक्ति है। हार उनकी न प्रकृति में है न प्रवृत्ति में। वे जीत के लिए आत्म विश्वास से लबालब हैं-

हार को जीत में बदल दूँगा, मेरे अंदर छुपा सिकन्दर है।

श्री गोयल मनुष्यता और जीत की ज़िंदगी के शायर हैं। समय, समाज और नियति को चुनौती देते हुए जब वे कहते हैं-

कौन कहता है थक गये हैं हम,
अर्श से तारे तोड़ लेते हैं।

तो उनकी जीवन्तता और आस्थाओं के प्रति मन अपूर्व उल्लास और संभावनाओं से भर उठता है। आकांक्षा है कि वे कभी न थकें और ज़िंदगी को ज़िंदगी का दर्जा दिलाने के लिए जो रचनात्मक और सामाजिक अभियान उन्होंने छेड़ा है उसे निरंतर प्रशस्त करते रहें। रास्ता मंज़िल को छूता हुआ भले न दिखाई दे लेकिन मंज़िल तक पहुँचेगा निश्चय ही। इसी विश्वास के साथ उनके स्वस्थ चिरायुष की कामना है।

रीडर, हिन्दी विभाग, साहू राम स्वरूप कन्या
स्नातकोत्तर, महाविद्यालय, बरेली

प्रो0 राम प्रकाश गोयल का व्यक्तित्व एव कृतित्व

सूर्य प्रकाश गुप्त

श्री राम प्रकाश गोयल एडवोकेट बरेली के जाने-माने एडवोकेट ही नहीं, वरन् विशिष्ट व्यक्तियों में अपना स्थान रखते हैं। पिछले लगभग चार दशक से मेरा उनसे निकट का सम्बन्ध रहा है और मैं उनके गुणों से प्रभावित हुआ हूँ। एक सफल शिक्षक के रूप में जहाँ उन्होंने सम्मान पाया वहीं एक वकील की हैसियत से कीर्ति अर्जित की। इसी के साथ साहित्य और कला के प्रेमी का ज्वलन्त उदाहरण प्रस्तुत किया। आपके लेखों, कविताओं और पुस्तकों से इनके मन की भावनायें स्वयं प्रकट होती हैं। सुखद जीवन व्यतीत करते हुये सम्बन्धियों और मित्रों से सदैव स्नेह भाव रखा परन्तु कहा जाता है कि बहुत अच्छे व्यक्तियों को कभी नज़र लग जाती है और दुर्भाग्य वश यही हुआ। इनके एकमात्र पुत्र की अचानक मृत्यु से जीवन में दुख का पर्वत जैसा टूट पड़ा। पूरा परिवार स्तब्ध रह गया। उन्होंने पूर्ण रूप से समाज को समर्पित करते हुए समाज सेवा को अपना कर्म और धर्म बना लिया। आज वह एक शिक्षक, वकील, कलाकार, लेखक आदि के रूप में जितना जाने जाते हैं, उससे कहीं अधिक समाज सेवी के रूप में। समाज सेवा की कोई भी संस्था हो उसमें अपना हर प्रकार का योगदान निःस्वार्थ भावना से करना उनकी नीति और रीति बन गई है। विश्व के सभी धर्मों के प्रेम में उनका अटूट विश्वास है।

सहन शक्ति इनका जीवन दर्शन बन गया है। सुख और दुख को बराबर मानते हैं।

कितनी सत्यता है आपके इस विचार मैं कि दुख तो जीवन के लिये वरदान है। ऐसे ही समय सच्चे मित्र की पहचान होती है और इसी से बड़ा अनुभव और शिक्षा मिलती है। आज बरेली नगर में श्री राम प्रकाश गोयल ने अपना विशिष्ट स्थान बना लिया है। मुझे विश्वास है कि वह अपने साहित्य का सृजन इसी गति से करते रहेंगे जिससे आगे आने वाली पीढ़ियों को भी लाभ मिल सकेगा।

मैं उनकी दीर्घ आयु की कामना करता हूँ।

पूर्व-प्राचार्य, विष्णु इंटर कॉलेज,
बरेली

इंसानियत का भी .... है गोयल

शिवनाथ 'बिस्मिल

यूँ तो क़लम से एक ग़ज़लकार है गोयल।
इन्सानियत का भी सिपहसालार है गोयल।।
सच टूटते रहे मगर सच पर रहा अडिग।
अहल-ए-जिगर है साथ ही दिलदार है गोयल।।
रिसते रहे हैं घाव मगर आह तक न की।
सब्र-ओ-सुकूँ का कितना तरफ़दार है गोयल।।
दुश्मन भी बातचीत से होता है मुताअसर।
यानी बड़ा ही साहिब-ए-गुफ़्तार है गोयल।।
बातों से फूल झरते हैं, भावों में है महक।
जैसे कि अपने आप में गुल्ज़ार है गोयल।।
हमको बता रहे हैं उसके 'सच्चे प्रेम-पत्र'।
जज़्ब-ए-वफ़ा से आज भी सरशार है गोयल।
बारिश, बहाव सारे दुखों का समेट ले।
अपने में समन्दर का इक किरदार है गोयल।।
उसकी अदब नवाज़ी पर भी हो कोई किताब।
ऐसी भी इक़ किताब का हक़दार है गोयल।।
छोटों से करे प्यार बड़ों का यह दोस्त है।
छोटे-बड़ों सभी का मददगार है गोयल।।
देश और धर्म पर भी चली उसकी लेखनी।
देश और धर्म का भी परस्तार है गोयल।।
जिस रूप में चाहा है उसी रूप में मिला।
आशिक भी है माशूक भी है, यार है गोयल।।
लगता है कभी बैठा हुआ अपने मकाँ में।
दीवार भी है, छत भी है, आसार है गोयल।।
संगीत हो, अभिनय हो या कविता कि शायरी।
'बिस्मिल' कई विधा का कलाकार है गोयल।।

उज्ज्वल प्रेस, कालेज रोड, बरेल
फोन : 55936

प्रो0 गोयल की ग़ज़लों से गुज़रते हुए

अशोक 'अंजुम'

आज ग़ज़ल अपने पूरे फ़ार्म में है, जैसे सारे जहाँ का दर्द उसके जिगर में सिमट आया है। ग़ज़ल ने पायल की झनकार से कब का नाता तोड़ लिया है। आज वह आम आदमी के सुख-दुख की प्रत्यक्षदर्शिका बनकर उसे ज़ुबान दे रही है। इसकी लोकप्रियता का कारण है कि आज इसमें बेतरह अफ़रा-तफरी भी मची हुई है; समर्थ गज़लकारों के साथ तमाम तथाकथित ग़ज़लकार भी अपनी लूली लंगड़ी ग़ज़लें लेकर मैदान में आ जुटे हैं लेकिन ग़ज़ल की समृद्ध-शृंखला मे समर्थ ऊर्जस्वी गज़लकारों की कमी नहीं है। श्री गोयल के अब तक "दर्द की छाँव में", "रिसते घाव", तथा "एक समन्दर प्यासा-सा" तीन ग़ज़ल संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं। जैसा कि संग्रह के नामों से स्पष्ट है श्री गोयल की ग़ज़लों का स्वर पीड़ा का स्वर है-

हर गज़ल आँसुओं में डूबी है, ये तिरे ग़म की मेहरबानी है,
मेरा दामन छोड़ के जाए, ग़म के बस की बात नहीं।

श्री गोयल दुनिया के तमाम रंग अपनी नम आँखों से देखते चले गये हैं। जो सहारा देने वाले हैं, उनका सच दृष्टव्य है-

जो मिरी जीस्त का सहारा है,
मुझको पत्थर उसी ने मारा है।

लेकिन वहीं एक संवेदनशील रचनाकार की खूबी यह भी है कि

जिसने बर्बाद किया है हमको
उस सितमगर को दुआ देते हैं।

साथ ही-

बर्बाद किया जिसने वह है दोस्त हमारा,
हम नाम बताकर उसे रुसवा नहीं करते।

ऐसे में, जबकि वातावरण में टूटन है, घुटन है, लोग ख़ानों में बँट रहे हैं, दिलों के बीच दूरियाँ निरंतर बढ़ती जा रही हैं; रिश्ते नाते सब स्वार्थ पर केन्द्रित होकर रह गए हैं; आदमी हर चीज़ में अपना

लाभ खोज रहा है– तब इन सब कुसंगतियों पर दृष्टि रखते हुए एक श्रेष्ठ समाज की तलाश आवश्यक हो जाती है; यही कवि–धर्म का निर्वाह भी है–

यह अजब सियासी दौर है, हुए लोग खुद से हैं बदगुमाँ
जहाँ दोस्त बनके सभी रहें, मुझे उस नगर की तलाश है

एक अन्य शेर भी प्रस्तुत है–

जो मुहब्बत करें, नफरत से सदा दूर रहें
ऐसे इंसानों की एक बस्ती बसाई जाये

और इस नफरत को मिटाकर मुहब्बत की बस्ती बसाने के लिए जरूरी है कि–

बैठकर दिल की गाँठें खोलें हम
दूर रहकर कहाँ गुज़ारा है ?

फिर आदमी कोशिश करे तो नामुमकिन कुछ भी नहीं–

दिल मिले दिल से तो हालात बदल सकते हैं
उनके आँसू मिरी आँखों से निकल सकते हैं।

श्री गोयल की ग़ज़लें अपने समय का आईना हैं और इस आईने में इस समय की दूषित राजनीति, सांप्रदायिक हिंसा, जातिगत विद्वेष, नफ़रत की आग, बम विस्फोटों के सिलसिले, युद्ध, स्वार्थ पर टिके रिश्ते आदि सबका अक्स बखूबी उभरता है–

ये शोले भड़के तो नफ़रत को राख कर देंगे
यह आग पहुँचेगी किस–किस के आशियाने में ?

रहनुमा बनके हमको लूट रहे
ऐसी इस दौर की सियासत है।

रचनाकार अपने समय की सच्चाइयों से पूर्णतया वाक़िफ है–

जिस्म जलेंगे कितने और,
गर्म अभी भी है तंदूर।

ख़ून–पानी में कोई फ़र्क नहीं,
कैसा बदला हुआ ज़माना है।

सुन रहे हैं नयी सदी है क़रीब,
दिल पे इसका बड़ा दबाव है।

यह लग रहा है कि करवट बदल रही है आज,

हयात मौत के साये में पल रही है आज।

श्री गोयल की ग़ज़लों में जहाँ पीड़ा है, वहीं विश्वास, स्वाभिमान की भी कमी नहीं है–

हम ज़माने को मोड़ देते हैं
वक्त के साथ बह नहीं सकते।
मैं इम्तहान में क़ायम रहा वफ़ा के साथ
वो टूट-टूट गये मुझको आज़माने में।
ज़िंदगी से कहो ठहर जाए।
मौत को आईना दिखाना है।

तमाम ख़ूबियों के साथ श्री गोयल की ग़ज़लें ज़िंदगी को विभिन्न कोणों से देखती, परखती और परिभाषित करती हैं–

मैं जिसे ज़िंदगी समझता हूँ
वह मिरी मौत का बहाना है
ज़िंदा रखने को सच ज़माने में
अपनी हस्ती मुझे मिटानी है
रफ़्ता-रफ़्ता हो गयी मद्धम मिरे दिल की सदा,
ज़िंदगी के साज़ को हर हाल में बजना पड़ा।
उसकी कुर्बत हो या तग़ाफ़ुल हो,
ज़िंदगी तुझको जी लिया मैंने।
ज़िंदगी जैसे रात का सपना,
सुबह होते ही टूट जाता है।

श्री गोयल की ग़ज़लों पर कहने के लिए इतना कुछ है कि असंख्य पन्ने भी कम पड़ें। सो, श्री गोयल के लिए चलते-चलते उन्हीं का शेर–

हर एक रंज को वह इक ख़ुशी समझता है
अजीब क़िस्म का एहसास है दिवाने में।

एफ-23, नयी कालोनी
कासिमपुर अलीगढ़-202127

तहज़ीब और इसानियत का शायर : प्रो० रामप्रकाश गोयल

डॉ० ओम प्रकाश सिंह

श्री रामप्रकाश गोयल परंपरावादी गज़लों के साथ-साथ नयी अभिव्यंजना के भी ग़ज़लकार हैं। उन्होंने 'रिसते घाव' में जहाँ रूमानियत देखी है वहाँ सामाजिक विसंगतियों व असमानताओं को भी जाँचा परखा है। मगर इसे व्यक्त करने का उनका अपना एक अलग ही अंदाज़ है और उनकी एक अलग रचना प्रक्रिया। यही वह वास्तविक भूमि है जिस पर खड़ा होकर कोई भी ग़ज़लकार अपनी असलियत को खूबसूरती देकर रूपायित करता है। वे स्वयं लिखते हैं-"ग़ज़ल का आधार प्रेम है। प्रेम मनुष्य को मनुष्य से जोड़ने वाला तत्व है। वह अनेक को एक करता है। प्रेम में आर्कषण है, जीवन है, प्रेम से ऊँची जीवन की और कोई अनुभूति नहीं।.... ग़जल चिंतन, विचार तथा भावना के मिश्रण की कला है। उसके मिज़ाज़ में लोच है। यह बहुत आवश्यक है कि अनुभूति के साथ साथ अभिव्यक्ति की शैली भी सशक्त हो। अभिव्यक्ति की शैली का ही दूसरा नाम तहज़ीब है। इसलिए ग़ज़ल केवल शायरी ही नहीं तहज़ीब भी है।"

वास्तव में गोयल साहब की यह तहज़ीब और प्रेम की रंगीन खुशबू 'रिसते घाव' की ग़ज़लों में भरपूर मिलती है। कृष्ण बिहारी 'नूर' का यह कथन एकदम सच साबित होता है कि "शायर का कलाम उसकी सोच, उसके किरदार, उसकी क्षमताओं और सलाहीयतों का आईना होता है, तो आपको इन शब्दों में गोयल साफ़ -साफ नज़र आयेंगे।" वे कहते हैं-

अश्क पीना है, मुस्कुराना है, मुझको अहदे-वफ़ा निभाना है।
हाल दिल का तुम्हें सुनाना है, शेरगोई तो इक बहाना है।
लोग अपनों से बैर रखते हैं, मेरा गैरों से दोस्ताना है।

दरअस्ल ज़िंदगी को आईने की तरह जीने वाला शायर यह तो जानता ही है कि दर्द के टुकड़े करना आसान नहीं और फिर टुकड़ों की जिंदगी से बेहतर है समूची ज़िन्दगी लेकर डूब जाएँ। इसलिए

गोयल साहब मुहब्बत को भी असलियत के खराद पर उतार कर ही शायरी गढ़ते हैं। जब सच्चाई खुलकर अपनी रोशनी लेकर आती है तो अँधेरे पर्दे खुद ब खुद खुल जाते हैं और तन्हाइयों के बाहर सवेरा झाँकने लगता है।

न मसर्रतों की है आरज़ू न खुशी के घर की तलाश है,
रहे ग़म में भी जो शरीके ग़म, उसी हम-सफ़र की तलाश है।
मेरी ज़िंदगी के सुख और दुख, यह तो रात दिन की तरह से हैं।
जो न पहुँचे शाम तलक कभी, मुझे उस सहर की तलाश है।
कई मोड़ आये हयात में, कभी सुख मिला, कभी दुख मिला
मैं हूँ आज ऐसे मक़ाम पर, जहाँ दीदावर की तलाश है।
यह कुछ इस तरह का निज़ाम है, जहाँ हर नज़र में फ़रेब है
जो दिलों में प्यार जगा सके, मुझे उस नज़र की तलाश है।

अनवर चुग़ताई लिखते हैं –"शायर कैसा भी शेर कहे, कैसे ही मज़मून को नज़्म करे, अगर उसका अंदाज़े बयान अच्छा है तो वह ज़रूर पसंद आयेगा। लेकिन शायर ने ऐसा शेर क्यों कहा, वह किन हालात से दो चार है, किस माहौल में जी रहा है, उसके मिज़ाज का रचाव कैसा है यह जानने के बाद शेर और शायर दोनों की अहमियत बढ़ जाती है।" बात बिल्कुल स्पष्ट है कि गोयल साहब का मिज़ाज बेहद शायराना और संजीदा है। उन्होंने ज़िंदगी को जिन लम्हों में देखा परखा है, उसे उसी बेबाकी के साथ खोलकर शायरी में उतारा भी है। उसमें न कोई लुकाव है और न ही छुपाव। उनकी शायरी की यह तहज़ीब देखिये –

हर सहर से वो हसीं रात हुआ करती है,
दिल से जब दिल की खुली बात हुआ करती है।
बात करने को रहा करते हैं जिससे बेचैन,
जब वह मिलता है, कहाँ बात हुआ करती है।
मैंने जिस दोस्त की ख़ातिर है मिटाया खुद को,
वह न मिलता है, न अब बात हुआ करती है।
दिल में दूरी है, निगाहों में अदाए-कुर्बत
हुस्न वालों की अजब बात हुआ करती है।

उनका मानना है कि "आज के समाज के दर्द को साफ़ साफ कहना और चुपके से उनके कारणों पर व्यंग्य भी कर जाना आज की सफल ग़ज़ल की सार्थकता है। व्यर्थ की लाग – लपेट ग़ज़ल को सहन

नहीं। विषमताओं से जूझते हुए व्यक्ति की कराह, रोज़मर्रा की तकलीफ़ों, दुश्चिन्ताओं और भविष्य के प्रति एक डर की अभिव्यक्ति आज की ग़ज़ल की विशेषता है। ग़ज़ल वर्तमान व्यवस्था से लड़ने की ताकत दे रही है। अंगार के ऊपर की राख को उठाने का कार्य ग़ज़ल के हाथों हो रहा है।'' यह बात अपने आप में अहमियत इसलिए भी रखती है कि गोयल साहब में युगबोध है और सामाजिक उतार चढ़ाव की असली समझ भी। वे हर स्थिति पर अपनी पैनी नजर रखते हैं। इस कथन में देखें–

हर तरफ़ एक अजब तमाशा है, आदमी आज खूँ का प्यासा है
हादिसे पूछ कर नहीं होते, आदमी हादिसों से हारा है।

खूबसूरत लफ़्ज़ों और शायरी के उसूलों के साथ चलकर गोयल साहब की शायरी अपनी मंजिल तय करती रही है। उसमें दर्द है, खामोशी है, आँसू है और बेबसी भी। समाज के–आक्रोश, पीड़ा, जलन, बेवफाई, दुश्मनी–सभी रंग के सोच को तहज़ीब देने की भरपूर कोशिश दिखाई पड़ती है। इन्होंने शराफ़त और इंसानियत को बड़ी शालीनता के साथ व्यक्त किया है। जैसे–

मैं इम्तहान में क़ायम रहा वफ़ा के साथ
वो टूट-टूट गये मुझको अज़माने में।
तुम्हारा जुल्म सलामत बस अब ख़ुदा हाफ़िज
सुकून ढूँढ ही लूँगा कहीं ज़माने में।

वाक़ई गोयल साहब की शायरी महज़ शायरी ही नहीं, वह जिंदगी को तराशने और तलाशने का एक अंदाज़ है। उसमें एक खूबसूरती यह भी है कि उनके दिल की चिंगारी बस्तियाँ बर्बाद करने में नहीं बल्कि ज़िंदगी आबाद करने में सहायता पहुँचाती है। वह आदमी के भीतर का दर्द, उसकी कुंठा, हताशा और निराशा, अतृप्त वासना एवं आक्रोश के अंदर मोहब्बत की खोज का तरीक़ा भी छुपाए हुए है। यह बात ही इस शायर को इंसानियत और तहज़ीब के ज़रिये फ़रिश्ता बना देती है।

अध्यक्ष एवं रीडर, हिन्दी विभाग
बैसवारा स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
लालगंज, रायबरेली (उ0प्र0)

प्रो0 राम प्रकाश गोयल : अनेक में एक

डॉ0 सुधारानी शर्मा

मुझे यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता है कि मेरे बड़े भ्राता समान आदरणीय भाई श्री राम प्रकाश गोयल जी के सम्मान में बरेली नगरवासियों और रुहेलखण्ड के नागरिकों की ओर से उनके सम्मान में अभिनन्दन ग्रन्थ प्रकाशन की योजना है। गोयल जी व्यक्तित्व एवं कृतित्व दोनों के ही धनी हैं। इससे अधिक व्यक्तित्व की यह गरिमा, कलात्मकता, विचारपूर्णता और संवेदनशीलता है जो इनकी पहचान है। बरेली के सांस्कृतिक दृश्य पर अद्वितीय उपस्थिति है। इनकी उपलब्धि महानगर को जितनी गौरवान्वित व सार्थक करती है - यह हम सब जानते हैं

भाई राम प्रकाश जी गोयल से मेरा परिचय लम्बे अरसे से है। सर्व प्रथम इन्होंने मुझे एक कवयित्री के रूप में जाना-सराहा और मेरी रचनाओं की भरपूर प्रंशसा की। महाविद्यालय के क्रिया-कलापों में सदैव इनकी उपस्थिति रही। महाविद्यालय सीमा से बाहर भी नगर के प्रायः सभी बड़े-छोटे समारोहों में इनका आना समारोह की गरिमा व सार्थकता रही। जहाँ भी गये पूर्ण मनोयोग से इन्होंने सब कुछ देखा, सुना एवं सराहा। मेरे पुत्र पंकज शर्मा को भी अपनी उदार प्रवृति के कारण, नृत्य से आकर्षित होकर इन्होंने पुरस्कृत किया। महाविद्यालय में भी सर्वोच्च अंक प्राप्त करने वाली छात्राओं को हिन्दी, अग्रेज़ी व संगीत विषय में प्रोत्साहन देने हेतु, प्रतिवर्ष के लिए धनराशि प्रदान की। निश्चित ही इनकी यह सहृदयता व उदारता वन्दनीय है।

बरेली नगरवासी श्री गोयल जी के कृतित्व के विषय में भलीभाँति जानते हैं। आप कई पुस्तकों के लेखन कार्य में जुटे। जब भी कोई नवीन कृति रची मुझे भेंट करते रहे। इसे मैं अपना दोष मानूँगी कि उनकी कृतियों पर कभी भी उन्हें कोई टिप्पणी नहीं दे पाई। ग़ज़ल कैसेट 'आईना' में उनकी आठ ग़ज़लों को भी सुना। सभी ग़ज़लों में दर्द छिपा है, हृदयगत गहराई है।

व्यक्तिगत जीवन में क्या है, कैसे है, यह तो मैं नहीं जानती, किन्तु अपने प्रिय पुत्र विछोह को उन्होंने जिस भाँति सहा है, वह अत्यन्त कष्टप्रद है, हृदय विदारक है। अपने पुत्र की स्मृति में, 'विवेक गोयल साहित्य पुरस्कार' की विधा डालकर एक नयी मिसाल क़ायम

की है। संस्था के माध्यम से ही वर्ष में किसी एक साहित्यकार को पुरस्कृत करके, हिन्दी जगत का गौरव बढ़ाने का कार्य गोयल जी ने किया है। इनकी पुत्रियाँ मेरी छात्राएँ रही हैं। सभी में पिता के गुण संस्कार रूप में व्याप्त हैं।

श्री गोयल जी नाटक लिखते हैं एवं अभिनय भी करते हैं। यह ईश्वर प्रदत्त प्रतिभा इनमें व्याप्त है। नाटक अभिनीत करने में चरित्र को जीने की कला इन्हें आती है। गज़ल, गीत, नाटक, उपन्यास इत्यादि सभी विधाओं पर इनका अधिकार है। एक ही व्यक्ति में, एक साथ इतनी प्रतिभाएँ कम ही देखने को मिलती हैं।

बीते दिनों वे लम्बे समय तक अस्वस्थ रहे। अस्वस्थता के विषय में जब भी उनसे बात की तो बहुत सहजता से उत्तर मिला लगा जैसे कुछ हुआ ही न हो। सम्भवतः अपने दुःख से दूसरों को दु खी करने की उनकी प्रवृत्ति ही नहीं है।

मैंनें गोयल जी का कवि रूप भी देखा है। अपनी बात कहने का अन्दाज़ निराला है। इनके अन्तर्मन में भावनाओं का अपार सागर है, जिसे इन्होंने छुआ है। भाव-विचार तथा कल्पना में इनका जीवन अतीव सन्तुलित रहा है। विकट समस्याओं के झंझावत में भी इन्हें मैंने अटल भाव से देखा है। इनके अप्रतिम ज्ञान के प्रकाश से संशय एवं नैराश्य का अंधकार टिक नहीं सकता। सबसे अधिक इनके स्वभाव की मृदुता, इनके व्यवहार की कोमलता और इनके शील की शालीनता ने हम सभी को आबद्ध किया है। सत्य के परिपालन में इन्होंने स्पष्टवादिता और मृदुलता को अपनाया है और यह सिद्ध कर दिया है कि सत्य सदा कटु ही नहीं, कोमल भी होता है।

साहित्य चिन्तकों की दृष्टि में श्री गोयल जी का व्यक्तित्व एक ऐसे समन्वय का प्रतीक है जिसमें प्रेम और आनन्द, वाणी और कर्म, उदारता और सहयोग तथा विश्वास और निष्ठा का दिव्य रूप समाहित है। इनके जीवन के सामान्य और विशेष दोनों पक्ष प्रेरणा के अक्षय भंडार होकर अनुकरण की वस्तु बन गये हैं।

इनके जीवन-दर्शन के बिन्दु जानकर लगता है ये सन्त मन हैं, सृजक हैं एवं प्रेम तथा वात्सल्य के अजस्र स्रोत हैं।

गोयल जी की नवीन कृति 'एक समन्दर प्यासा-सा' देखी।

सबसे मिलने का सिलसिला रखना।
तन्हा जीने का हौसला रखना।
ज़िन्दगी का कोई मक़सद तय करो
वरना तो यह ज़िन्दगी वीरान है।

मैं तो बदलूँगा लकीरें हाथ की
कर्म करना ही मेरा भगवान है।
किसको पाना है, किसको खोना है,
जो भी होना है, वह तो होना है।
पल में हँसना है, पल में रोना है,
आदमी सिर्फ़ एक खिलौना है।

आपकी जीवन-दृष्टि प्रेम एवं सौन्दर्य केन्द्रित होने के कारण जाति-भेद में विश्वास नहीं रखती। तभी तो भाई खुर्शीद जी से इनकी आन्तरिक मित्रता है। लिखते आप हैं - मुखरित खुर्शीद जी करते हैं।

व्यक्तित्व व्यक्ति की सामाजिक स्थिति और चारित्रिक चेतना का ऐसा जीता जागता, लिपि चित्र है जिसे बालक, युवा और वृद्ध दर्शन मात्र से वाँच लेते हैं। श्री राम प्रकाश गोयल जी ऐसे ही महिमा मंडित व्यक्तित्व के महापुरुष हैं। इनका व्यक्तित्व महान गुणों का एक सकाय है-कर्मठता, दृढ़ता, सत्यनिष्ठा, दूरदर्शिता, कर्तव्य परायणता एवं श्रमशीलता इसमें पूरित हैं। देखा जाये तो गोयल जी एक संस्था हैं, एक परम्परा हैं तथा नयी पीढ़ी के प्रेरणा स्रोत हैं। इनमें कवि भी है, लेखक भी है, शोधकर्ता भी है, एक समीक्षक भी है, प्राध्यापक भी है और न्यायकर्ता भी।

संगीत- साहित्य की संस्थाओं के उन्नयन के लिए भाई गोयल जी सदैव तत्पर रहते हैं। वाद विवाद प्रतियोगिताओं, संगीत सभाओं, विचारगोष्ठियों व कवि सम्मेलनों व मुशायरों में पधार कर, प्रतियोगियों, कलाकारों, कवियों- शायरों का उत्साह वर्धन करने का आपका विशेष स्वभाव बन चुका है। समय- समय पर बाल एवं युवा कलाकारों को पुरस्कृत करने में आपको विशेष प्रसन्नता मिलती है।

मैं सदैव ईश्वर से यही प्रार्थना करती हूँ कि भाई रामप्रकाश गोयल जी चिरंजीव हों, स्वस्थ रहें तथा इसी प्रकार साहित्य-सृजन करते रहें, मुस्कराते रहें तथा नगर की सोभा बढ़ाते रहें। उनका सानिध्य सुख सबको प्राप्त होता रहे। गोयल जी के लिए मेरी अनन्त शुभ कामनाएँ हैं, सद्भावनाएँ हैं।

पूर्व प्राचार्या एवं संगीत विभागाध्यक्ष
साहू राम स्वरुप स्नाकतोत्तर महिला महाविघालय,
बरेली (72, प्रभात नगर, बरेली)

साधारण में असाधारण - प्रो0 राम प्रकाश गोयल

डॉ0 फ़रीदा सुल्ताना

कवि और उनके काव्य किसी दूसरे संसार से नहीं आते। कवि इसी धरातल पर अवतीर्ण होते हैं और उनके काव्य इसी समाज में बैठ कर लिखे जाते हैं। वे भी इसी धरती के मनुष्य हैं। समाज और देश की अवस्था का उनके हृदय पर भी प्रभाव पड़ता है। कवि के मनोभाव जब सहसा स्वर लहरी के माध्यम से फूट पड़ते हैं, तब समाज उसे कविता की संज्ञा देता है। कवि के उद्‌गार ही कविता हैं - यह बात श्री राम प्रकाश गोयल जी के ग़ज़ल संग्रहों से स्वतः सिद्ध हो जाती है। गोयल साहब ने ग़ज़ल को एक खूबसूरत अन्दाज़ में कुछ इस तरह कहा है "आग की तरह मन भी एक आग है। जितना अधिक अँधेरा हो उतना ही आग और मन चमकते हैं। अँधेरे के पत्थर की रगड पाकर रोशनी की किरण और अधिक तीक्ष्ण हो जाती है। जज़्बात की हथेली पर जलते हुए दिये के फ़साने का ही नाम है "ग़ज़ल।"

गोयल साहब ने ज़माना देखा है बहुत क़रीब से। उन्हें एहसास है कि यहाँ ज़ख़्मों के सिवा किसी को कोई कुछ नहीं दे सकता। फिर भी वह कहते हैं।

जानता हूँ कि फिर लगेगा ज़ख्म,
उसकी महफ़िल में मुझको जाना है।

गोयल साहब का कहना है व्यक्तित्व का धनी शायर निस्वार्थ भाव से समाज को कुछ देने का प्रयास तो करता है, बदले में अपेक्षा नहीं करता। अपनी खुद्‌दारी को वह अपनी सबसे क़ीमती दौलत मानता है। इसीलिए गोयल साहब ने कहा है -

शायर कभी खुद्‌दारी का सौदा नहीं करते,
इन्आम की दुनिया से तमन्ना नहीं करते।

गोयल साहब ने अपने ग़ज़ल संग्रहों में प्रेम, बेवफ़ाई, छल, स्वार्थ सभी को तो एक जगह लाकर इकट्‌ठा कर दिया हैं। उनका कहना है कि प्रेम वह आग है जो निरन्तर जलती रहती है लेकिन इसमें जलकर जो निखरता है वही सच्चा प्रेम है -

"यह इश्क़ आग है लिक्खा है यह किताबों में, मगर इस आग में ही ज़िन्दगी निखरती है।" उनका मानना है कि दो प्रेमियों के बीच

आपसी ... .. होना आवश्यक है प्रेम में बधन अच्छा तो लगता है लेकिन इतना नहीं कि ज़ंजीर लगने लगे। प्रेम दो दिलों का मिलन है। बस, पारस्परिक विश्वास की आवश्यकता है। यह बात उन्होंने अपने ग़ज़ल संग्रह 'दर्द की छाँव में' में कुछ इस तरह बयान की है

लाख हो दूर मगर है वह मिरे दिल के क़रीब,
शिकवा होठों पे जो आया तो मुहब्बत कैसी
वह मेरी थी, वह मेरी है, वह रहेगी मेरी,
जब यक़ीं है तो भला उससे शिकायत कैसी ?

गोयल साहब को पुत्र विवेक की जुदाई कवि बना गयी। अपना सब कुछ मिटा देने के बाद भी विवेक की यादों को कविता में सँजोने के लिए ही तो गोयल साहब का हृदय कवि हृदय में परिवर्तित हुआ है, वरना उनकी ज़िन्दगी में बचा ही क्या था। इसी बात को खुद भी उन्होंने 'रिसते घाव' में कुछ इस तरह कहा है –

नहीं आरजू कोई अब रही, मेरी ज़िन्दगी में हैं रंजोगम
जो मिला सके मुझे मौत से, उसी रह गुज़र की तलाश है।

उन्हें अनुभव है कि इस दुनिया में कैसे कैसे लोग हैं–

जो थे करते वादे बड़े-बड़े, वह नजर बचा के चले गये
ये गरज के बन्दों की बज़्म है, यहाँ कौन किसका हबीब है,

गोयल साहब ने कतए, रुबाइयाँ, हिन्दी कवियों के अन्दाज़ में कविताएँ और आज़ाद नज़्में भी लिखीं जिनमें उनकी सोच का अन्दाज़ परिलक्षित होता है जिसके पीछे उनकी घरेलू तहज़ीब, उनके संस्कार, प्रेम को व्यापार न मानकर इन्सानी दोस्ती के रूप में देखना ही तो है। उन्होंने इस दुनिया को बहुत क़रीब से देखा है, समझा है। हर बात को अपने स्वयं के अनुभव और अपने साफ़ सुथरे स्वभाव के अनुसार सोच समझ कर बयान करने की कोशिश की है। उनके ग़ज़ल संग्रहों की हर पंक्ति जज़्बात से जुड़ी है। पढ़कर लगता है कि यह हमसे सम्बन्धित है। इसीलिए तो उनकी रचनाओं को पढ़कर संवेदनशील व्यक्ति तड़प जाता है, कहीं अपने सारे ग़म भूल कर मुस्कराने लगता है और कहीं प्यार में दीवाना हो जाता है। गोयल साहब की विशेषता यह है कि उन्होंने प्रेम को कहीं भी वासना के साथ समाहित नहीं किया है वरन् इतने पाकीज़ा अन्दाज़ में प्यार की दास्ताँ बयान की है कि आदमी उसको गलत अर्थ में ले ही नहीं सकता। उन्होंने प्रेम को पूजा माना है, मन्दिर और मस्जिद के रूप में देखा है। उनका मानना

है कि आज पवित्र प्रेम कहीं भी नहीं और अगर कहीं मिल भी जाता है तो वह पूजने योग्य है। तभी तो वे कहते हैं –

मिरे ख़्याल में मन्दिर है वह वही मस्जिद,
जहाँ भी प्यार की इक शम्मा जल रही है आज।

इन्सान से प्रेम करना तो कोई गोयल साहब से सीखे। वह व्यक्ति को उसकी कमियों के साथ स्वीकार करने का जज़्बा रखते हैं। उनका मानना है हमने जिसको भी चाहा उसकी कमियों को जानते बूझते हुए भी नज़र अन्दाज़ किया। निम्न पंक्तियों में उनके यह जज्बात झलकते हैं –

दिल को दिल से मिलने में कुछ वक्त तो लगता है
नयी इमारत बनने में कुछ वक्त तो लगता है।
मेरी ख़ता को बख़्शो कोई फिर से खता न होगी अब,
अच्छा इन्साँ बनने में कुछ वक्त तो लगता है।

आज के दौर में आदमी ने चेहरे पर एक मुखौटा लगा रखा है। वह कुछ है मगर कुछ और दिखने का प्रयास करता है। इस बात को गोयल साहब कुछ इस अन्दाज़ में कहते हैं –

एक कृत्रिमता का जीवन ढो रहे हम
चेहरे पे चेहरा लगाकर रो रहे हम।
दिल में क्या और क्या ज़बाँ पर कौन जाने
बीज बर्बादी के अपनी बो रहे हम।
कोई मरहम अब लगता ही नहीं
आँसुओं से ज़ख्म अपने धो रहे हम।

गोयल साहब दोस्ती को सबसे पाक रिश्ता मानते हैं। दोस्त के लिए अगर अपनी हस्ती भी मिटानी पड़े तो भी गोयल साहब कंजूसी नहीं करेंगे। दोस्त के काम आना, उसके हर दुख को बाँटना, उसकी खुशी में शामिल होना ही तो गोयल साहब के व्यक्तित्व की खूबी है। वे जिसको अपना मानते हैं उसके लिए अपनेपन का हक़ अदा कर देते हैं। उनकी दोस्ती, उनका प्रेम, वासना से नहीं, भावना से जुड़ा है। उन्हें हमेशा तलाश रहती है तो सिर्फ़ ऐसे दोस्त की जो उनसे बहुत लगाव रखता हो। बहुत प्यार करता हो। उनके जज़्बातों की क़द्र करता हो। दोस्ती के बदले वह दोस्त से माँगते हैं तो सिर्फ़ उसके ग़म, उसकी परेशानियाँ, उसका दर्द। दूसरों के काम आना ही उनका सुकून है। इस बात को "एक समन्दर प्यासा-सा" में वह कुछ इस प्रकार कहते हैं–

काम जो आते हैं औरों के लिए दुनिया में
वो ही जीते हैं कभी मरते वो बेनाम नहीं।

गोयल साहब की कृतियाँ उनके सम्पूर्ण व्यक्तित्व का आईना हैं यदि उनकी ग़ज़लों की हर पंक्ति को ध्यान से समझा जाये तो इंसान सही मायने में इंसान बन सकता है। गोयल साहब ने अपने जीवन में ग़मों के अँधेरे में रहकर भी दूसरों को रोशनी दी। अपने ग़जल संग्रहों के माध्यम से समाज को सोचने पर मजबूर कर दिया-चन्द्रमा जैसी शीतलता, समुद्र जैसी गम्भीरता, पृथ्वी जैसी सहनशीलता तथा पर्वत जैसी मानसिक उच्चता से परिपूर्ण। "दर्द की छाँव में", "रिसते घाव" "एक समन्दर प्यासा सा", "टूटते सत्य", "सच्चे प्रेम पत्र" देकर भी उनके हृदय में शायद अभी कसक बाकी है।

गोयल साहब ने इस दुनिया को बहुत क़रीब से देखा है जिसका एहसास उन्होंने लोगों को अपनी कृतियों के माध्यम से कराया भी है। इस 'देने' में भी समर्पण भाव झलकता है जिसको खूबसूरत अन्दाज़ में कुछ इस तरह कह सकते हैं।

दुनिया ने तजुर्बात की सूरत में आज तक
जो कुछ मुझे दिया है वह लौटा रहा हूँ मैं।

मैंने गोयल साहब को जितना देखा, समझा और पढ़ा है, उससे उनके व्यक्तित्व की एक झलक प्रस्तुत कर रही हूँ -

वह हैवानी-बस्ती में शीशे के मकाँ बनाते हैं।
लोग आँधियों से डरते वह तूफाँ से टकराते हैं।।
उनको मत कमज़ोर समझ लेना ऐ दुनिया वालों।
वक्त आने पर तेज़ वक्त से अपना क़दम उठाते हैं।
सफ़ में खड़े रहें लोगों की, उनको यह मंजूर नहीं।
रवायतों को तोड़-तोड़ वह आगे बढ़ते जाते हैं।।
कुछ इन्साँ तो ठहरे रहते, पत्थर जैसे राहों में।
कुछ राहों पर चलते रहकर अपनी मंजिल पाते हैं।।

प्रधानाचार्या,
जनता इण्टर कॉलेज
पुराना शहर - बरेली

...व्य, साहित्य एव सगीत के चतुर चितेरे
राम प्रकाश गोयल से एक साक्षात्कार

डॉ0 अनीता जौहरी, डी0लिट्0

संगीत के प्रति आपका प्रेम किस प्रकार जागृत हुआ ?

मैं बचपन से ही संगीत कार्यक्रमों में भाग लेता था और स्वयं यदाकदा गाया भी करता था। संगीत के प्रति मेरा प्रेम जन्मजात है।

अपनी साहित्य, काव्य एवं संगीत यात्रा में आपकी प्रेरणा और आदर्श कौन है और क्यों ?

आन्तरिक अनुभूति ही मेरी प्रेरणा है और वही मेरा आदर्श। प्रेरणा कब और कैसे प्राप्त हो जाती है इसका मुझे ज्ञान नहीं।

क्या केवल प्रतिभा के आधार पर जीवन में सफलता प्राप्त की जाती है ?

नहीं, केवल प्रतिभा के आधार पर सफलता प्राप्त करना सम्भव नहीं। प्रतिभा को व्यक्त करने के लिए समुचित अवसर ज़रूरी है। यदि व्यक्ति को अवसर न मिले तो प्राय प्रतिभा भी कुंठित हो जाती है। कहा भी जाता है – "जंगल में मोर नाचा किसने देखा ?"

आपका प्रिय संगीतकार कौन है ?

जगजीत सिंह जो श्रेष्ठतम गज़ल गायक हैं ?

क्या आप एक सफल कवि व लेखक हैं ?

इसका निर्णय करने का मुझे कोई अधिकार नहीं। यह निर्णय तो सुधी पाठक व श्रोता ही कर सकते हैं। हाँ, मैं भी कुछ टूटा–फूटा लिखने का प्रयास अवश्य करता हूँ।

अर्थ के अभाव में आज अनेक प्रतिभाएँ कुंठित होती चली जा रही हैं, उन्हें प्रोत्साहित करने के लिए आपकी भविष्य में क्या योजनाएँ हैं ?

ऐसी प्रतिभाओं के उत्साहवर्द्धन हेतु मैंने जनपद के अनेक

महाविद्यालयो में सगीत पुरस्कार सृजित किये हैं जो हर वर्ष बी0ए0 / एम0ए0 परीक्षाओं में सर्वाधिक अंक प्राप्त करने वाली छात्राओं को दिये जाते हैं। मैं अनेक संगीत संस्थाओं से जुड़ा हुआ हूँ। समय-समय पर संगीत के अयोजन करता हूँ और उत्कृष्ट कोटि के कलाकारों को आमंत्रित करता हूँ जैसे – जगजीत सिंह 1981, अनूप जलोटा (1984), पीनाज़ मसानी (1989), गुलाम अली (1994), मुन्नी बेगम (1997) आदि के संगीत आयोजनों में मेरा सक्रिय योगदान रहा है।

प्र07 पहली बार सम्मान पाकर आपको कैसा लगा ?

उत्तर अच्छा लगा कि समाज ने मुझे मान्यता दी। अनीता जी, सम्मान को प्राप्त करके हमारा उत्तरयायित्व और भी बढ जाता है ताकि प्राप्त सम्मान के अनुकूल स्वयं को क़ायम रख सकें तथा सम्मान करने वाले गर्व का अनुभव करते रहें कि सम्मानित व्यक्ति निश्चय ही सम्मान के योग्य था। सम्मान प्राप्त करने के पश्चात् भी हमें अपनी योग्यता को सतत् बढ़ाते रहना चाहिए और कर्मठता के प्रति जागरूक रहना होगा ताकि समाज हर समय हमारा मूल्यांकन कर सके।

प्र08 सरस्वती व लक्ष्मी दोनों ही की आप पर विशेष कृपा है इसका रहस्य ?

उत्तर प्रभु की इच्छा, अभीष्ठ का आशीर्वाद ! रहस्य तो कुछ भी नहीं है।

प्र09 एक ओर काव्य व संगीत प्रेम दूसरी ओर वकालत के क़ानूनी दाँव-पेंच का उतार-चढ़ाव। इन परस्पर विरोधी परिस्थितियों में स्वयं को कैसे समायोजित करते हैं ?

उत्तर स्वभाव से मैं तार्किक एवं संवेदनशील दोनों हूँ। ईश्वर की अनुकम्पा से दोनों विपरीत गुणों का तालमेल बैठाने में मुझे कोई असुविधा नहीं होती, कोई चेष्टा नहीं करनी पड़ती, सब कुछ स्वाभाविक रूप से हो जाता है। जितनी देर कचहरी में रहता हूँ वकील रहता हूँ। वकील को कचहरी में छोड़कर ही घर आता हूँ। घर आकर एक सामान्य संवेदनशील व्यक्ति हो जाता हूँ

प्राप्त का श्रेय आप किसे देते हैं ? प्रतिभा को योग्यता को अथवा अपनी राजनीतिक पहुँच को ?

उचित अवसर मिलने पर प्रतिभा व योग्यता के आधार पर अथक परिश्रम से प्राप्त सफलता सुखद होती है जिससे मेरी राजनीतिक पहुँच कोसों दूर रही है। मैंने कभी राजनीति का व्यक्तिगत मामलों में सहारा नहीं लिया और न उसकी बैसाखी पर कभी चलने की कोशिश की।

वर्तमान परिवेश में शिक्षा जगत में राजनीति की घुसपैठ के विषय में आपके विचार जानना चाहूँगी ?

शिक्षा जगत में राजनीतिक घुसपैठ ही घोर पतन का कारण है जिससे शिक्षा का मूल अर्थ व वातावरण बदलता जा रहा है, दूषित हो रहा है। राजनीति का घुन जीवन के प्रत्येक क्षेत्र को प्रदूषित कर रहा है, व्यक्तिगत सम्बन्धों को स्वार्थपूर्ण बना रहा है। शिक्षा के साथ राजनीति की दुर्गन्ध मुझे कदापि बर्दाश्त नहीं।

आप स्वयं को संगीत प्रेमी किस रूप में मानते हैं – उसका व्यवहारिक निरूपण ?

मधुर स्वर सुनकर मुझे अलौकिक आनन्द मिलता है। व्यवहारिक जीवन में मधुर स्वर कुछ समय के लिए ही सही मनुष्य को दिव्य लोक में पहुँचा जाता है। संगीत प्रेमी दुखी रह ही नहीं सकता।

आज कवि सम्मेलनों में कविता गद्य में पढ़कर सुना दी जाती है। मेरे विचार से उसका सस्वर पाठ अपना पृथक महत्त्व रखता है। कविता से धुन का पलायन अर्थात संगीत पर कविता का आघात आप कैसे सहन कर पा रहे हैं ?

कविता और संगीत दोनों पृथक–पृथक कलायें हैं। संगीत का आधार प्रायः कविता होती है किन्तु कविता का आधार संगीत हो यह आवश्यक नहीं। अच्छी कविता संगीत की मोहताज नहीं। उसका अपना शिल्प व भाव प्रभावपूर्ण होना चाहिए किन्तु कविता की संगीतमय प्रस्तुति उसमें चार चाँद लगा देती है।

आज सफल कलाकार अपनी सफलता का राज़ नहीं बताते, भले ही उनकी कला शून्य में विलुप्त हो जाए। अपने

अनुभव को समाज में चिरस्थायित्व रूप प्रदान करने का क्या प्रारूप है ?

श्रेष्ठ कलाकार को अपने अनुभवों को अवश्य उजागर करना चाहिए। ज्ञान का विस्तार और उसका बाँटना बहुत आवश्यक है जिससे आने वाली पीढ़ी लाभान्वित हो सके। यदि कोई कलाकार अपने ज्ञान व अनुभवों को तिरोहित करता है तो वह मेरी दृष्टि में अच्छा कलाकार नहीं। कला का लाभ पूरे समाज को मिलना चाहिए। मैं अपनी रचनाओं को समय-समय पर प्रकाशित एवं प्रसारित करता रहा हूँ, ताकि वे जन सुलभ हो सकें।

5 अतुकान्त कविताओं को स्वरबद्ध करना कठिन है। क्लिष्ट शब्दों का गीत में प्रयोग उसके कलेवर को दुरूह बनाता है। सुर प्रेमी, गीतकार एवं ग़ज़लकार के रूप में क्या आपने कभी इस बात का अनुभव किया है और इस दृष्टि से रचना की है ?

कविता और शायरी में बहुत सीधे-सादे शब्दों का प्रयोग होना चाहिए जिससे सर्वसाधारण उसे समझ सके। कठिन शब्दों का प्रयोग कवि को स्वयं बोझिल बना देता है जो समझ में न आए, वह कविता कैसे हो सकती है ?

अपने गीतात्मक संग्रह के बारे में बतायेंगे ?

मैंने अपनी लिखी हुई गज़लों का कैसिट 'आईना' 1988 में बनाया था। इसका निर्माण 'सुपर कैसिट टी0 सीरिज'' ने किया था। अब मैं एक अन्य कैसिट अपनी ग़ज़लों का शीघ्र बनाने जा रहा हूँ।

चेतन मनुष्य में ऊर्जा जागृत होती रहती है। क्या अवस्था अवरोध उत्पन्न करती है ?

अनुभव व आयु से कला में परिपक्वता आती है। अवस्था तनिक भी अवरोध उत्पन्न नहीं करती।

स्वंय को इस उन्नत शिखर पर पहुँचाने में क्या आपको कभी संघर्ष भी करना पड़ा और आप हिम्मत हार गए या दुगने उत्साह से कार्य करने की क्षमता को सहेजा है ?

अनीता जी. मैंने आजीवन संघर्ष व परिश्रम किया है। मुझे जो कुछ भी मिला वो प्रभु-कृपा व परिश्रम से ही मिला है

मैं कभी निराश नहीं हुआ तथा हमेशा कठिनाइयो में भी दुगुने उत्साह से कार्य करता रहा है। इसके जवाब में मैं कुछ शेर अर्ज करूँगा –

हो जिसकी निगाहों में, फ़क़त मंज़िले मक़सूद।

उसने तो कभी मील का, पत्थर नहीं देखा।।

तथा

हर मील के पत्थर पर, लिख दो ये इबारत भी।

मंज़िल नहीं मिलती है, नाकाम इरादों से।।

प्र019 क्या कभी मन अर्थात मूड न होने पर भी आपको काव्य रचना अथवा लेखन कार्य करना पड़ा ? यदि हाँ तो उस विवशता का क्या परिणाम हुआ ?

उत्तर नहीं । जब भी मुझे आन्तरिक प्रेरणा मिली तभी मैं लिख सका हूँ। जबरदस्ती मैं एक पंक्ति भी नहीं लिख सकता।

प्र020 निर्विघ्न शान्तिमय वातावरण अथवा व्यवहारिक व्यक्तित्व इन दोनों में से क्या अपनाया जाए जो एक सफल कलाकार बन सके ?

उत्तर इनमें से किसी को भी अपनाना मनुष्य के अपने वश में नहीं है। जैसा समय व परिस्थिति हो उसके अनुसार ही स्वयं को ढालना पडता है जो एक सफल कलाकार का श्रेष्ठ गुण है।

प्र021 साक्षात्कार के दौरान स्पष्ट प्रश्नोत्तर प्रणाली अपनाने पर आपको कैसा लग रहा है ?

उत्तर मुझे सदैव स्पष्टवादिता पसन्द है। छल–कपट अथवा घुमा–फिरा के बात करना बेहद नापसन्द है। आपने इतने स्पष्ट व सटीक प्रश्न किए इसके लिए मैं आपका आभारी हूँ।

प्रवक्ता संगीत (गायन)
कन्या महाविद्यालय भूड़, बरेली

एक व्यवस्थित व्यक्तित्व - प्रो0 राम प्रकाश गोयल

डॉ0 एन0एल0 शर्मा

आयु वृद्ध, ज्ञान वृद्ध तथा अनुभव वृद्ध स्वनाम धन्य श्री रामप्रकाश गोयल अपने व्यवस्थित व्यक्तित्व के कारण प्रणम्य और अनुकरणीय हैं। रुचि, योग्यता, सामर्थ्य और दक्षता के अनेक आयामों को उद्घाटित करता आपका व्यक्तित्व बहुविधि आकर्षित करता है। शौक़ से शायर, पेशे से वकील, वृत्ति से अध्यापक, प्रवृत्ति से समाज सेवी एवं समाज सुधारक, सामर्थ्य से शब्द शिल्पी, स्वभाव से रचना धर्मी, अभिव्यक्ति से रंगकर्मी अभिनेता राम प्रकाश गोयल के व्यक्तित्व के अनेक रंग और अनेक रूप हैं। इस शख्स की महफ़िल में कई रंग भरे हैं। देखा तो कोई और था पाया तो कोई और! और से और तक फैला उनका व्यक्तित्व इन्द्रधनुषी रंगों की छटा बिखेरता है और उनके व्यक्तित्व पर महाकवि नीरज की ये पंक्तियाँ पूरी तरह सटीक बैठती हैं -

"क्या क्या नहीं बना वो लेकिन जो भी बना भरपूर बना"

उनके व्यक्तित्व के अनेक गुणों में सबसे महत्वपूर्ण और उल्लेखनीय है उनकी व्यवस्था प्रियता। प्रत्येक मनुष्य के व्यक्तित्व का परिचय उसकी निर्णय क्षमता से प्रकट होता है और निर्णय प्रायः चार आधारों पर लिये जाते हैं - सूचनाओं के आधार पर निर्णय, गणना के आधार पर निर्णय, अन्तरात्मा के आधार पर निर्णय तथा अनुभव के आधार पर निर्णय। श्रेष्ठ निर्णय, सूचना गणना अनुभव और अन्तर आत्मा के मिश्रित सहयोग पर आधारित होता है और श्री रामप्रकाश गोयल के निर्णय इन्हीं चार तत्वों के मिश्रित संयोग, सहयोग और उपयोग पर आधारित होते हैं। यह सर्वमान्य तथ्य है कि निर्णय होते तो वर्तमान के परिप्रेक्ष्य में हैं पर उन पर अतीत के अनुभव की छाया के साथ भविष्य की कल्पनाओं की स्पष्ट छाप होती है। विगत अनुभव के आधार को भविष्य की अपेक्षाओं के आवरण में लपेट कर वर्तमान के लिये किये गये कार्य ही फलप्रद होते हैं। अतीत के आँकड़े और भविष्य के पूर्वानुमान वर्तमान के निर्णयों के संवाहक होते हैं और इसलिये वर्तमान के सभी निर्णयों पर अतीत का निर्णायक प्रभाव होता

है व्यवस्थित व्यक्ति और संगठन अपने अतीत, वर्तमान और भविष्य की शक्ति सतत शृंखलावत और शृंखलारत रखते हैं। आवश्यकता पड़ने पर अतीत के किसी भी संस्मरण, समंक, आलेख या प्रलेख को तत्काल उपलब्ध करा देना व्यवस्था की सफलता का परिचय है। इस विचारधारा व भावना प्रधान दृष्टि से यदि देखें तो लगता है कि राम प्रकाश गोयल एक व्यवस्थित व्यक्तित्व की संज्ञा हैं। अपने बहुआयामी व्यक्तित्व के कारण एक व्यक्तित्व से सचमुच संस्था बन गये गोयल साहब सभी रूपों में सहज, सरल एवं सफल हैं। कवि गोष्ठियों के सहज अध्यक्ष और मुख्य अतिथि, शायरी के फ़न के उस्ताद, लोकप्रिय विधि अध्यापक, सफल अधिवक्ता, कुशल अभिनेता, ललित कलाओं के संरक्षक और भारतीय संस्कृति के आधारभूत मूल्यों के ध्वजावाहक, साहित्यिक विधाओं के अधिकर्त्ता रामप्रकाश गोयल की नसों में एक पूरा नगर धड़कता है। यारों के यार रामप्रकाश गोयल नवोदित कवि कवयित्रियों को व्यवस्थित रूप से प्रोत्साहित कर परिपक्व करते हैं। बरेली महानगर के अनेक सशक्त हस्ताक्षर गोयल साहब की प्रेरणाप्रद साधना के प्रतिफल हैं।

गोयल साहब की व्यवस्था प्रियता इस तथ्य से सहज ही प्रकट हो जाती है कि उनके पास उपलब्ध सभी प्रपत्र, फाइलें व पुस्तकें व्यवस्थित रूप से रखी रहती हैं और आवश्यकता पड़ने पर छोटे से छोटा कागज़ भी अभिलेख की तरह तत्काल उपलब्ध हो जाता है। वह जितनी संस्थाओं से जुड़े हैं सभी की अलग अलग फ़ाइलें हैं और सभी के विवरण सम्बंधित फ़ाइलों में यथा समय जोड़ लिये जाते हैं। वह जितने भी कार्यक्रम जब आयोजित करते हैं सभी के पूरे पूरे विवरण लिपिबद्ध होकर आपके पास फ़ाइलों में सुरक्षित रहते हैं। आपके कार्यक्रमों के दृश्य, श्रव्य रिकार्ड भी उपलब्ध रहते हैं ताकि आवश्यकता पड़ने पर उन आयोजनों की छवि, छटा और स्मृति जरा की तरह उजागर हो सके।

उनके साथ काम करना एक सुखद अनुभव है। पूरे के पूरे (सम्पूर्णता के साथ) डूब कर काम करने की उनकी शैली मोहक एवं ग्राह्य है। जब वह किसी कार्यक्रम के विषय में सोच रहे होते हैं तो उसके छोटे से छोटे बिन्दु से लेकर बड़े से बड़े विषय तक उनका ध्यान रहता है। कार्यक्रम के पूरे फलक को उसकी संपूर्णता में सम्बद्ध कर

लेने की उनमें अद्भुत क्षमता है और यही उनके व्यवस्थित होने का परिचायक है और यही उनके कार्यक्रम की सफलता का मूल मंत्र भी है।

विषमतर पारस्थितियों में भी विचलित न होना उनका महत्वपूर्ण गुण है। अपने अति मेधावी पुत्र के असमय निधन के महादुख को प्रभु की इच्छा मानकर धैर्य पूर्वक सहकर उस घटना की स्मृति को महानगर की एक साहित्यिक घटना बना देने का उनका निर्णय उनके अति व्यवस्थित होने का प्रमाण है।

जो लोग गोयल साहब की कार्य शैली से परिचित हैं वे जानते हैं कि गोयल साहब का हर कार्य उनकी व्यवस्था प्रियता का परिचय प्रदान करता है। वह स्वभाव से लोकतांत्रिक और समझौता पसंद हैं। अपने कार्यों में मित्रों के सुझावों के अनुसार परिवर्तन कर लेना उन्हें स्वीकार्य है। वह तर्कपूर्ण और औचित्य परक सुझावों का समावेश कर अपने कार्यक्रमों को श्रेष्ठतम बनाने के लिये लालायित रहते हैं। उत्कृष्टता उन्हें बहुत प्रिय है। जो कुछ हो वह सर्वश्रेष्ठ, उत्कृष्ट और श्रेयस्कर होना चाहिये ऐसा उनका मानना है। अतः उत्कृष्टता के लिये हर सुझाव उन्हें सदैव स्वीकार्य रहता है पर उत्कृष्टता की क़ीमत पर वह कोई समझौता नहीं करते। उनके सभी कार्यक्रम उत्कृष्ट रहने के कारण बरेली महानगर में उन्हें उत्कृष्टता का पर्याय कहा जाने लगा है – राम प्रकाश दाऊ नेम इज एक्सीलेन्स।

कार्यक्रम की रूपरेखा को योजनाबद्ध ढंग से संचालित करने के लिये वह कुशल प्रबंधक की भूमिका में रहते हैं। योजनानुरुप अपेक्षित योग्यताओं वाले मित्रों की संचालन समिति बनाकर कार्यक्रम को बनाया और संपादित किया जाता है। उदाहरण के लिये प्रतिवर्ष विवेक गोयल साहित्य पुरस्कार योजना के कार्यक्रम के आयोजन में एक तदर्थ समिति गठित की जाती है और कार्यक्रम के पूर्व इस समिति की एक के बाद अनेक बैठकें आयोजित की जाती हैं जिनमें कार्यक्रम के अध्यक्ष मुख्य अतिथि, मुख्य वक्ता, स्वागत अध्यक्ष, स्वागत सचिव, कार्यक्रम संचालक आदि महत्वपूर्ण विषयों का निर्णय करने के अतिरिक्त निमंत्रण पत्रों की विषयवस्तु मुद्रण, वितरण आदि का भी निर्णय किया जाता है। किसी कार्यक्रम की सफलता उस कार्यक्रम में उपस्थित श्रोताओं की संख्या और गुणवत्ता पर निर्भर करती है और

यह गोयल साहब की अपनी शैली और व्यवस्था का ही कमाल है कि इस आयोजन में नगर की श्रेष्ठ श्रेष्ठतर और श्रेष्ठतम विभूतियाँ श्रोताओं के रूप में विराजती हैं। कार्यक्रमों में उपस्थिति के लिये मात्र कार्ड बाँट देना पर्याप्त नहीं होता। जिस आग्रह और भावना के साथ आमंत्रित किया जाता है उसका महत्वपूर्ण हाथ होता है। व्यवस्था प्रिय गोयल साहब कार्ड वितरण की क्रिया प्रक्रिया में विशेष संवेदन शील रहते हैं और यह उनकी अति संवेदनाशीलता का ही परिणाम है कि उनके आयोजनों में श्रोताओं की भीड़ उमड़ पड़ती है। कार्ड वितरण का कार्य यदि किसी अन्य कार्यकर्ता ने सम्पन्न किया है तो भी गोयल साहब व्यक्तिगत रूप से या फोन द्वारा सपर्क कर आमंत्रित बंधुओ से कार्ड मिल जाने की स्थिति सुनिश्चित करते हैं और आने का आग्रह करते हैं। कार्यक्रम की ऐसी सुविस्तृत और स्पष्ट रूपरेखा बनाते हैं कि संचालक को लेशमात्र भी उलझन और दिक्कत नहीं होती। अतिथि मंच पर किस क्रम से बैठेंगे कौन कार्यकर्ता किस अतिथि का माल्यार्पण करेगा कौन किसे स्मृति चिन्ह देगा, कौन अभिनन्दन पत्र का वाचन करेगा, कौन प्रस्तुति करेगा और कौन अभिनन्दन पत्रों को सभा भवन में वितरण करेगा। सभी छोटे बड़े प्रश्न गोयल साहब की योजना का सुविचारित अंग होते हैं। वक्ताओं के क्रम को लेकर धन्यवाद ज्ञापन तक का लेखा जोखा उनकी सूझ–बूझ का परिचय होता है। कहा जाता हे कि छोटी छोटी बातों से बड़े आदमियों की आदत और स्थिति का आभास होता है। कार्यक्रमों में अतिथियों का माल्यार्पण एक सामान्य घटना है पर कार्यक्रमों में इस माल्यार्पण के कार्यक्रम में एक भूलचूक या त्रुटि प्रायः देखी जाती है। एक तो संचालक द्वारा माल्यार्पण के लिये जिन महोदय का नाम पुकारा जाता है वह उपस्थित नहीं होते तो विकल्प के रूप में दो दो तीन तीन नाम पुकारने लगता है या फिर माल्यार्पण करने के लिये आये कार्यकर्ता महोदय अतिथि के गले में माला डालने के लिये जब माला हाथ में लेते हैं तो वह अपने आप में इतनी उलझी हुई होती है कि अतिथि महोदय के गले में डाल पाना धनुष जैसी दुर्लभ क्रिया बन जाती है। दोनों ही परिस्थितियों में कार्यक्रम के आयोजक और अतिथि दोनों की स्थिति बड़ी हास्यापद हो जाती है पर गोयल साहब की अनुभव परक तीक्ष्ण बुद्धि का कमाल है कि सारी मालाएँ एक

डण्डे में क्षैतिज रूप में पिरो ली गई हैं और एक के बाद दूसरी माला सरलता से बिना उलझे निकलती जाती है। कार्यक्रम में प्रत्येक कार्यकर्ता को अपनी भूमिका की पूर्व जानकारी रहती है। अत सचालक द्वारा नाम पुकारने पर कार्यकर्ता माला लेकर व्यवस्थित रूप से अतिथि का अभिनंदन कर देते हैं और कार्यक्रम की गति यथावत बनी रहती है।

कार्यक्रम के समापन के पश्चात औपचारिक धन्यवाद ज्ञापन से ही उनके कार्य की इतिश्री नहीं हो जाती। वह अपने आयोजनों के संबंध में श्रोताओं से फीडबैक लेकर आगामी कार्यक्रमों की दिशा तय करते हैं और अनुभव के आधार पर हर बार पहले से अच्छा कार्यक्रम करने का निश्चय करते हैं। निश्चय ही नहीं करते, उस निश्चय को निश्चित रूप से क्रियान्वित कर अच्छे से अच्छे कार्य संपादित करते हैं। कार्यक्रम से जुड़े अतिथि, पदाधिकारी और कार्यकर्ताओं को कार्यक्रम में उनकी उपस्थिति को प्रमाणित करने वाले फ़ोटो बिना विलम्ब के पहुँचाकर गोयल साहब अपनी व्यवस्था प्रियता का परिचय देते हैं।

मेरी मान्यता है कि गोयल साहब अपने सभी दायित्वों का निर्वाह बखूबी कर ही इसलिये लेते हैं क्योंकि वह व्यवस्थित हैं, व्यवस्था प्रिय हैं और व्यवस्था करना जानते हैं। अपने सभी कामों को उचित समय पर सम्पन्न करने वाले गोयल साहब का समय प्रबन्धन श्रेष्ठतम है। अपने प्रत्येक क्षण का विधिवत सार्थक और व्यवस्थित उपयोग कर समय से उचित परिणाम लेना उनकी यशस्वी कार्य शैली का परिचय है। प्रत्येक व्यक्ति के पास अवयव होते हैं समय, संसाधन और मानवीय श्रम और तीनों अवयवों के व्यवस्थित उपयोग से यथेच्छ परिणाम प्राप्त कर लेना ही व्यक्तित्व की सफलता का मापदण्ड है। इस दृष्टि से निश्चय ही व्यवस्थित कृतित्व के धनी श्री रामप्रकाश गोयल एक सफल अभिनन्दनीय एवं प्रशंसनीय व्यक्ति हैं। महानगर की इस महाविभूति को मेरा प्रणाम।

रीडर, वाणिज्य संकाय,
बरेली कॉलेज, बरेली

प्रो0 राम प्रकाश गोयल : एक अंतरंग सहेली

डॉ0 विमला गुप्ता, पी-एच0डी0

'सहेली' शब्द सुनते ही प्रत्येक लड़की एवं महिला का सम्पूर्ण शरीर रोमांचित हो जाता है। सहेली का स्वरूप व उसके साथ बिताया हर पल एक एक करके आँखों के सामने चित्रित होने लगता है। ससार के सारे रिश्ते इस शब्द के समक्ष फीके पड़ जाते हैं। वह रिश्ता जिससे अच्छा-बुरा कुछ भी छिपा नहीं होता। उसके सामने पूरा व्यक्तित्व शीशे के समान पारदर्शी होता है। जो सबसे बड़ा हितैषी होता है, सहेली की उन्नति में सबसे ज़्यादा प्रसन्न होता है। ईर्ष्या नहीं करता। सबसे अच्छा परामर्शदाता। कमज़ोरियों को छिपाने वाला लेकिन धीरे-धीरे उन्हें दूर भी करने वाला। निराशा की स्थिति में सान्त्वना देने वाला, उन्नति के मार्ग पर आगे बढ़ाने वाला होता है। सहेली की हर समस्या उसकी अपनी होती है।

गोयल साहब हमारी ऐसी ही अंतरंग सहेली हैं जिनका सामना होते ही हृदय बाग़-बाग़ हो जाता है। समस्यायुक्त होने पर भी, तनावयुक्त होने पर भी उनके समाने आते ही लगता है कि हमारी आधी समस्यायें स्वयं ही समाप्त हो गयी हैं। सच है उनके व्यक्तित्व में 'सहेली' शब्द पूर्ण सार्थक हो जाता है।

उनसे पहचान हुए पन्द्रह वर्ष व्यतीत हो गये। इन पन्द्रह वर्षों में जीवन के हर मोड़ पर उन्हें साथ पाया। हर दुःख की घड़ी में मैंने उन्हें सीना ताने आगे खड़े पाया जैसे मेरी हर समस्या को चुनौती मानकर स्वीकार कर रहे हों।

ऐसी अतरंग सहेली को जब याद करती हूँ तो सबसे पहले गोयल साहब का चेहरा सामने आता है जिनके सामने आकर लिंग भेद, आयुभेद, मानसिक स्तर सब कुछ समाप्त हो जाता है। समान मानसिक स्तर की सबसे प्यारी सहेली के रूप में मैं गोयल साहब को सदैव याद रखूँगी।

मैंने उन पर सदैव अपना पूर्ण अधिकार माना और उन्होंने सदैव मेरे उस अधिकार की रक्षा भी की है।

मैंने उन्हे अपने लिए हँसते देखा है, रोते देखा है, अपमानित होते देखा है। मेरे लिए समाज की हर अवमानना को गर्व से सहते देखा है। भला ऐसी सहेली पर किसे गर्व नहीं होगा। ऐसी सहेली को कौन छोड़ना व भुलाना चाहेगा।

आज के समय में साधारण जीवन जीने वाले लोग भी व्यस्तता के नाम पर किये गए वादे को नकार देते हैं। लेकिन शहर की बहुत सी संस्थाओं के संस्थापक या अध्यक्ष होने पर भी, अनेक संस्थाओं के सक्रिय सदस्य होने पर भी उन्होंने मेरे काम के लिए व्यस्तता का हवाला नहीं दिया।

अगर उन्होंने घर आने को कहा तो सदैव घर आये। अगर किसी कार्य को हाथ में ले लिया तो उन्होंने पूरा करके ही दम लिया।

उनकी 'हाँ' सदैव 'हाँ' ही रही और उनकी 'न' सदैव 'न' रही। ढुल-मुल की स्थिति उन्हें मंजूर नहीं।

उनके विचार मेरे लिए सदैव मनन करने योग्य व श्रद्धा के योग्य रहे जैसे –

'किसी को प्यार करना है तो उसकी कमज़ोरियों से भी प्यार करना पड़ेगा।'

और

'अगर किसी से प्यार करना है तो उसकी समस्याओं को भी सिर पर लेना पड़ेगा।'

'प्यार' का तो जैसे उनमें सागर ही लहराता है। कितना भी लुटायें, उसमें कमी नहीं आती। उनके हृदय में सभी को स्थान है। सबका अपना-अपना ख़ाना है।

इसके अतिरिक्त उनके अन्य बहुत से रूप भी हैं जैसे राजनीतिक रूप, साहित्यिक रूप और समाज सुधारक का रूप।

सभी रुप उन्हें समाज में एक विशेष दर्जा प्रदान कर रहे हैं। उनके हर रूप की सराहना होती है।

लेकिन मुझे तो जैसे उन सभी रूपों से कोई सरोकार नहीं। मैंने अपने हृदय में उन्हें एक 'सहेली' का स्थान दिया है और मैं उनके उसी रूप को पहचानती हूँ। मैं उन्हें अपनी सहेली बनाकर रखना चाहती हूँ।

ई0 1044 राजेन्द्र नगर बरेली

श्री राम प्रकाश गोयल : मेरा जिगरी दोस्त

राम कुमार अग्रवाल एडवोकेट

श्री राम प्रकाश गोयल और मैं 1942 में इण्टर साइंस में क्लासफ़ैलो थे। मैं इण्टर में फ़ेल हो गया, गोयल साहब पास हो गये। उन्होंने बी0एस-सी0 में दाख़िला ले लिया। मैंने उनसे सलाह ली कि मुझे साइन्स बहुत कठिन लग रही है, अब मुझे क्या करना चाहिए। उन्होंने कहा कि आर्ट साइड में दाखिला ले लो। ऐसा ही किया और बी0ए0 पास किया।

उन्हीं दिनों 1942 का स्वतन्त्रता आन्दोलन शुरू हुआ। गोयल साहब और मैंने भी इस आन्दोलन में भाग लिया। बरेली कॉलेज में कुछ छात्रों ने 1942 के आन्दोलन में बढ़चढ़कर हिस्सा लिया था। अँग्रेज कमिश्नर नीदरसोल ने प्रिंसिपल श्री मदन मोहन पर यह दबाव डाला कि वह कुछ विद्यार्थियों को निकाल दें किन्तु प्रिंसिपल ने ऐसा करने से मना कर दिया तो कमिश्नर ने कॉलेज को बन्द कर दिया। छात्रों की पढ़ाई ठप हो गई। आपस में यह तय किया गया कि सीनियर छात्र जूनियर छात्रों को पढ़ाया करें। लिहाज़ा जुबली पार्क (अब जवाहर पार्क) में ज़मीन पर बैठकर पढ़ाई का कार्य शुरू हो गया। गोयल साहब पढ़ने में बहुत तेज़ थे। उन्होंने इस काम में पूरा सहयोग किया।

1951 में हम दोनों वकालत के पेशे में आए। मैंने दीवानी की वकालत और गोयल साहब ने फ़ौजदारी की वकालत शुरू की। मेरे गुरु बाबू सूर्य प्रकाश थे और गोयल साहब के गुरु बाबू रामजी शरण सक्सेना थे। 1952 में हम दोनों ने एक ही क्लर्क रखकर साथ साथ वकालत शुरू की। हम दोनों को दिन भर में जो फ़ीस मिलती थी उसे हम लोग शाम को बराबर बराबर बाँट लेते थे। हम दोनों का यह सिलसिला 10 वर्ष तक चलता रहा। कभी हम लोगों के बीच कोई गलतफ़हमी या मनमुटाव नहीं हुआ। अकसर हम दोनों के बीच क़ानूनी मुद्दों पर बहस हो जाती थी। गोयल साहब उस वक़्त तक सन्तुष्ट नहीं होते थे जब तक वह खुद क़ानून की किताबें पढ़कर अपनी सन्तुष्टि नहीं कर लेते।

एक और दिलचस्प घटना हम दोनों के बीच की है। एक लड़की का मेरी शादी के लिए पैग़ाम लेकर उसके पिता मेरे पास आए थे।

बाद में गोयल साहब की शादी उसी लड़की के साथ दिसम्बर 1952 में हो गयी। शादी के कुछ दिन बाद जब मैं गोयल साहब के घर उन्हें बधाई देने गया तो मैंने उनकी पत्नी के सामने यह बात बताई। वे दोनों बहुत हँसे और काफ़ी देर तक हँसी खुशी का माहौल रहा।

गोयल साहब भारतीय जनसंघ के बहुत सक्रिय कार्यकर्ता थे और नगर के मन्त्री थे। 1954 में नगरपालिका बरेली के सदस्यों का चुनाव होना था। मैं जनसंघ की विचारधारा से सहमत नहीं था। गोयल साहब ने मुझे बहुत समझाया और उनके आग्रह पर मैंने सदस्यता का चुनाव लड़ना स्वीकार किया और मैं सफल हुआ। मेरी कामयाबी का पूरा श्रेय गोयल साहब को जाता है। मुझे तिलक इन्टर कॉलेज बरेली का मैनेजर नियुक्त किया गया। मेरे कार्यकाल में तिलक इन्टर कालेज ने बहुत उन्नति की। मुझे यह ख्याति और प्रशंसा दिलाने का सारा श्रेय गोयल साहब को ही जाता है।

जनसंघ ने चेयरमैन श्री अब्दुल वाजिद के विरुद्ध अविश्वास प्रस्ताव रखा। मैं उस प्रस्ताव के विरुद्ध था। श्री गोयल ने अपने निवास पर जनसंघ के प्रमुख कार्यकर्ताओं की मीटिंग बुलाई जिसमें मुझे ख़ासतौर पर बुलाया गया। जनसंघ के पदाधिकारियों का मुझसे कहना था कि जब मैं जनसंघ के टिकट पर चुनाव जीता हूँ और मैं पार्टी का सदस्य हूँ तो मुझे पार्टी के आदेश का पालन करना पड़ेगा। यदि आप अविश्वास प्रस्ताव का विरोध करते हैं तो आपको नगरपालिका की सदस्यता और पार्टी से त्याग पत्र देना पड़ेगा। मैंने अपने मित्र गोयल साहब से इस बारे में सलाह मशविरा किया। उनका भी यही कहना था कि नैतिकता की बात तो यही है कि मुझे दोनों ही सदस्यताओं से त्याग पत्र देना चाहिए। मुझे उनकी सलाह पसन्द आयी और मैंने सदस्यताओं से त्याग पत्र दे दिया। अगर ऐसे वक्त में मेरे दोस्त गोयल मुझे सिद्धान्त की बात न समझाते तो शायद मैं ऐसा न करता। गोयल ने मुझे सही राय देकर मेरे ऊपर बहुत बड़ा एहसान किया।

राम प्रकाश गोयल की ईमानदारी और क़ाबिलियत से प्रभावित होकर नगरपालिका बरेली ने 1964 में उन्हें अपना स्थाई फ़ौजदारी वकील नियुक्त किया जिसे वे आज तक बख़ूबी निभा रहे हैं।

हम दोनों पिछले 50 साल से वकालत कर रहे हैं। आज भी हमारी दोस्ती वैसी की वैसी क़ायम है। मुझे इस बात का गर्व है कि मुझे गोयल जैसा एक सच्चा और जिगरी दोस्त मिला है।

135, साहूकारा, बरेली

PROF RAM PRAKASH GOEL - A UN QUE PERSONAL TY

Dr. Kuhu Dutta Gupta

When you talk of a person with unbounded enthusiasm, imagination creativeness, energy and affection, it must be Prof Ram Prakash Goel. Prof Goel is a model who falsified the maxim "A Jack of all trades is a master of none". In fact he has proved himself a jack of several trades and master of all those. As a master of multifarious qualities, he has not put all his fruits in one single basket As an advocate, a teacher, a scholar, a writer, a poet, a novelist, a dramatiest, an actor, a critic, a connoisseur, he has tried his hands quite successfully in all these fields.

I have always found him a loving as well as a loveable elder who is more friendly than authoritative. An artist by temperament he is a refined connoisseur of art and music. Although he has equal hold on English and Hindi languages, but he has chosen Hindi as the medium of expression. His services to the development of Hindi are many and will be remembered for ever. Every year one renowned literator of Hindi is honoured and awared by Prof. Goel with "Vivek Goel Award" for the writer's contribution to Hindi Literature and Language in the fond memory of his only son.

A devotee of knowledge and education, Prof. Goel has released gold medals to several institutions of the city, including mine, for the students securing the highest marks in Hindi, Music (Vocal) and Drawing & Painting with the aim of engineering and inspiring the students for a higher academic achievement.

Filled with high philosphical thought and day reverie for ethical values and noble ideals, he is living life to the full. He is a constant source of courage and inspiration and has succeeded in finding out light through darkness, in revealing happiness through sorrows and in achieving perfection through strict discipline and principles Even the grave tragic moments of life have failed to withhold him from the pursuit of happiness, pleasure and fulfilment.

About his literary creations one can feel a subtle expression of human relationship and experience in his writings throughout the literary journey right from"Toot TE Satya" to Ek Samandar Pyasa Sa. He is a messanger of love and happiness. Even at the threshold of his seventy fifth birth anniversary he appears more young by heart, more active by mind and physique and more juvenile by spirit; he stands firmly on the stable grounds of his strong faith in God, life and love for all. One of the elites of Bareilly, he can safely and most properly be given the title of "The Pride of Bareilly." On his forthcoming seventy fifth Diamond jubilee - birth anniversary I heartily and sincerely congratulate him and wish him a very long life full of health, vigour action, happiness, success, and fulfilment.

Many, Many, Many . . . . happy returns of the Day !

Principal
Kanya Mahavidyalaya, Arya Samaj, Bhoor, Bareilly

भाई राम प्रकाश गोयल – जैसा मैंने उन्हें पाया

प्रो0 नरायन सिंह श्रीवास्तव

जीवन एक यात्रा है जो हर पग पर अजूबों से भरी, अनबूझी पहेलियों से बिंधी, गन्तव्य से परिचित तथा अपरिचित, निश्चित अनिश्चित पड़ावों पर रुकती, खट्टी–मीठी यादें सँजोती द्रुत गति से भागती रहती है। जीवन को हम सब समान रूप से भिन्न परिस्थितियों में जीने को बाध्य हैं। अधिकांश जीवन परिस्थितियों के हाँथों बन्धक हो जाते हैं किन्तु कुछ व्यक्ति शायद भिन्न मिट्टी से गढ़े जाते हैं। कभी–कभी जीवन की यह डगर भाग्य से, ऐसी विभूतियों के सम्पर्क में भी ले आती है।

जीवन एक नाट्य शाला है। हर जीव जन्मता, अपना चरित्र निभाता और फिर अनायास परदे के पीछे छिप जाता है। नायक अपने आदर्श अभिनय से रुलाता, हँसाता, मुस्कान बिखेरता, यादों की बारातें छोड़ता बिदा लेता है। इसके विपरीत, खलनायक कुंठाओं, आक्रोश तथा घृणा छोड़कर पटाक्षेप करता है। दर्शक निर्णय लेते हैं कौन पात्र कैसा है। कथाकार कथा लिखकर अलग बैठा परखता है कि किस किरदार ने अपने चरित्र को भरपूर जिया है। वह कहीं छुपा चुपचाप इस सारे दृश्य के अनुसार अपने ही सिद्धान्तों के द्वारा सबको पुरस्कृत अथवा दंडित करता है।

जिस चरित्र को मैं अपने अनुभवों और सामीप्य के कारण रेखांकित कर रहा हूँ वह मेरा अपना मित्र है जो मुझे तो एक विभूति ही लगा। आप भी देखें – अधरों पर स्थित मुस्कान, मँझोला क़द, आँखों में एक अनोखी शैतानी भरा हास्य, मृदुभाषी, गोरे वर्ण पर फबता वकीलों का काला कोट ऐसे ही एक रूप से मेरा परिचय 1957 में हुआ। उस समय के साथियों के मुँह से निकल ही जायेगा, लो राम प्रकाश गोयल आ गये। नौजवान व्यक्तित्व, अल्लहड़ किन्तु अंतर में छुपा गहन चिंतन। रोम रोम में कोमल भावनायें सिंचित, कुछ ऐसा रूप था कि अगर वह स्त्री होते तो कचहरी के प्रांगण में 1857 के स्वतन्त्रता संग्राम की विभीषिका तांडव करती अभीष्ट की प्राप्ति हेतु। ईश्वर की महती कृपा उन्हें पुरुष रूप में रचा।

की अपना दायित्व तथा

विभिन्न व्यस्ततायें जीवन का अभिभाज्य अग हैं. राजनीति *उस समय* में बुद्धिजीवियों का विशेष आकर्षण था। वह 'युग' जागरूकता का युग था। युग शब्द का प्रयोग कुछ अटपटा अवश्य है किन्तु नैतिकता व्यवहार और मूल्यों के ह्रास और आज के परिपेक्ष में उपयुक्त ही लगता है। यह गिरावट की स्थिति उस समय कल्पना से परे थी।

वह युग आज से बिल्कुल भिन्न, सौहार्दपूर्ण था। उस समय श्री राम प्रकाश गोयल केवल मेरे परिचित मात्र थे। राजनीतिक धाराओं का घोर विरोध भी हमारे सहज स्नेह को रोक नहीं पाया। यह थी श्री गोयल की एक विशेषता।

सन् 1970 में बरेली कॉलिज के विधि विभाग में प्रवक्ता के पद पर मेरी नियुक्ति हुई। 'भाई राम प्रकाश' 1968 से इसी विभाग में कार्यरत थे। तब श्री गोयल को चिन्हित करने का सुअवसर मुझे मिला। मुझे यह तो याद नहीं कि कब वह सामान्य परिचय प्रगाढ़ मित्रता मे परिणित हो गया और वह भाव आज भी दोनों के बीच विद्यमान है। उस समय से एक दूसरे के अंतः में झॉकने बाह्य रूप से विलग 'मन' को पढ़ने बूझने की क्रिया का श्रीगणेश निश्चित प्रारम्भ हो गया।

तब से ही 1985 तक, जब उन्होंने अवकाश ग्रहण किया, उन्हें मैंने प्रवक्ता के रूप में, एक मानक के रूप में परखा और जाना। उनके अवकाश ग्रहण के उपरान्त 1991 तक जब मैंने विभागाध्यक्ष के पद से अवकाश ग्रहण किया उनके अभाव ने विभाग में जो शून्यता का भाव दिखा वह रोज उनकी कमी को उजागर करता था।

विधि ज्ञान के यज्ञ में निष्ठा से दिन प्रतिदिन ज्ञान की आहुति देने की समान रुचि ने हमें और निकटता प्रदान की। अपनी योग्यता अनुकूल उदार हृदय से विद्यार्थियों को केवल कॉलिज में ही नहीं वरन् अपने निवास स्थान पर भी सहायता देना, चाहे वकालत में आर्थिक हानि ही क्यों न हो उनकी दिनचर्या का अंग था। सामान्यतः हम में से कोई भी प्रवक्ता अपने निवास पर विद्या दान की अलख नहीं जगाता था न ही कोई इस सहज भाव से विद्यार्थियों में हिला-मिला था। सारे विद्यार्थी छात्र-छात्राएँ जिस सहजता से श्री गोयल से हिले-मिले थे, उसका सौभाग्य मुझे तो अवकाश प्राप्त होने तक नहीं मिला। शायद मैं ऐसा पुष्प कभी नहीं रहा जिस पर मधुमक्खियाँ झूम झूम कर मँडरायें।

एक जागरूक प्रवक्ता के रूप में समय पूर्व आना, कक्षा में जाकर सुरुचिपूर्ण लेक्चर देना उनका दैनिक कर्म था। मैंने 15 वर्ष के साथ में कॉलिज आकर ख़ाली बैठे उन्हें नहीं देखा। पढ़ाना उनका धर्म

कर्म था। वह एक कर्तव्यनिष्ठ प्रवक्ता थे जो आज के समय में एक अपवाद मात्र है। बाह्य रूप और उनके अंतःमन का अन्तर निकटता से ही आभासित होता था। बाह्य रूप में वह 'उमर खय्याम' से दीखते हैं। अक्षरशः उस चिंतन का स्वरूप –

" A Cup of Wine, A book of verse & Thou beside me "

किन्तु अन्तः में वह इस आवरण से कुछ भिन्न, भावुक, चिन्तक, लेखक, शायर, अभिनेता की एक त्रिवेणी के चरित्र की मूर्ति हैं। धीरे-धीरे सहयोगियों को लक्षित होता था। मेरा तात्पर्य केवल इस पक्ष से ही है।

हास परिहास उनका जन्म-जात गुण रहा है। हम लोग अध्यापन के उपरान्त प्रतिदिन एक घंटे का समय एक परिवार के रूप में प्रवक्ता कक्ष में बिताते थे। रामप्रकाश गोयल अध्यापन उपरान्त छुप कर सदैव भागने को तत्पर रहते थे और हम सब उन्हें रोकने के लिये आतुर रहते। उनसे ठिठोली और हास्य परिहास हेतु और सामान्यत उन्हें पकड़ ही लेते और उन्हें रुकने पर बाध्य कर ही लेते। उस समय का मुखमंडल का रूप देखने योग्य होता, मानो किसी प्रेयसि से मिलने की उत्कंठा में हम सब खलनायक बन कर खड़े हो गये हों। उस भाव भंगिमा पर तैरता कटाक्ष सामान्यतः मन के विनोद का विषय होता। उसके उपरान्त मुक्तकंठ से उठते उनके ठहाके, एक शिशु की भाँति, बाहर से ही उनके उपस्थित होने का बोध किसी भी आगंतुक को करा देता था। अपने को ही हास्य का केन्द्र स्वयं बनाकर स्वयं भी सबके समान आनन्द उठाना, एक ऐसी अनूठी कला है जो मेरी 70 वर्ष की आयु में मुझे अन्यत्र किसी व्यक्ति में नहीं मिली। उनकी बाल किलकारियाँ, क्रोध विहीन शान्त धारा हम सबको मन्त्र-मुग्ध करती रही।

किसी निश्छल मन के वह स्वामी हैं, क्या सरल हृदय उनके शरीर में धड़कता है और किस गहराई में विभिन्न कलायें उनके रोम रोम में व्याप्त हैं – इसका दर्शन बिरलों में ही होता है। हर व्यक्तित्व का आँकलन हर मानव अपने अपने विचारों से करता है इसकी स्वतंत्रता देने में श्री गोयल कभी कृपण नहीं रहे।

आज भी 75 वर्ष का यह जवान यौवन को जीवंत करता है।

बी-318, आशा भवन
सेक्टर-बी, महानगर, लखनऊ

पूर्व विभागाध्यक्ष, विधि विभाग
बरेली कॉलेज, बरेली

हे वदनीय

सूर्य देव पाठक 'पराग'

हे वंदनीय !
स्वीकार करो नव अभिनंदन !!
तुम शांत, सौम्य अतिशय उदार,
कर्मठता-सेवा समाहार,
सज्जनता के आलोक-पुंज
श्रम ही है तेरा जीवन धन !
हे वंदनीय ! शत-शत वंदन !!
काव्याराधन के मूर्त्तरूप,
तेरी रचनाएँ हैं अनूप
कविता, मुक्तक औ गीत-ग़ज़ल
करते रहते अनवरत सृजन !
हे वंदनीय ! शत-शत वंदन !!
'टूटते सत्य' जो उपन्यास,
अभिनंदनीय उत्तम प्रयास,
'दर्द की छाँव' में बैठ तुम्हीं
करते लेपन शीतल चंदन !
वे वंदनीय ! शत-शत वंदन !!
'दिल और दिमाग़' लिखा नाटक,
है नया प्रयोग प्रतीकात्मक,
फिर 'एक समन्दर प्यासा-सा'
है गीत ग़ज़ल संग्रह नूतन !
हे वंदनीय ! शत-शत वंदन ! !
संगीत-बद्ध तेरी ग़ज़लें,
सुनने के लिए सभी मचलें,
संपादित 'सच्चे प्रेम पत्र'

पढ़कर हो जाता प्रमुदित मन !
हे वंदनीय ! शत-शत वंदन !!

तेरी अभिनय-क्षमता अकूत
फिल्मों-मंचों पर हुई मूर्त,
'एहसास' 'आज का सच' – दोनों
करते लोगों को मोद-मगन
हे वंदनीय ! शत-शत वंदन!!

प्राध्यापक शिक्षाविद् महान
मानते- 'प्रेम ईश्वर-समान',
तुम कर्म योग-पथ पर अविरल
बढ़ते लेकर गीता-दर्शन
हे वंदनीय ! शत-शत वंदन ! !

मर्यादा पालन हेतु 'राम'
प्रज्ञा-'प्रकाश' – पूरित ललाम
वाणी-मंदिर के ज्वलित दीप
मानवता के नंदन कानन।
हे वंदनीय ! शत-शत वंदन ! !

कामना यही सौ-सौ वसंत,
जीवन को दें ऊर्जा अनन्त
प्रोद्भासित हों कर्त्तव्य-पंथ
बरसें रिमझिम सुख के सावन।
हे वंदनीय ! शत-शत वंदन ! !

अध्यापक
उच्च विद्यालय, मढ़ौरा
जिला-सारण (बिहार)

श्री राम प्रकाश गोयल   एक अनूठा व्यक्तित्व

गिरिजेश राय

राम प्रकाश गोयल एक ऐसा नाम है जिसके लेते ही मेरे नेत्रों के सामने एक ऐसा बहुआयामी व्यक्तित्व उभरता है जिसमें सब कुछ है। वह एक अच्छा कथाकार है, सफलतम शायर है, कुशलतम अभिनेता है, पारंगत प्रोफेसर है तथा एक सहृदय दोस्त है। यह सब कुछ एक में मिलना बड़ा ही मुश्किल है। यही कारण था कि गोयल जी से जबसे मेरी भेंट हुई वह मेरे आकर्षण का केन्द्र थे। मेरे स्वजनों की सूची में एक अच्छा स्थान उनका है। उनके व्यक्तित्व में सहजता और दुरूहता दोनों हैं। किसी के लिए प्यार है तो किसी के साथ नाइन्साफ़ी भी उन्हें पसन्द नहीं।

फ़िल्म अभिनेता उत्पल दत्त के चेहरे से साम्यता रखने वाले गोयल जी को मैंने देखा कि किस तरह बातों को सहजता से लेते हैं तथा स्नेह की डोरी में बाँध लेते हैं। एक बार ईद का त्यौहार था। अचानक उन्होंने प्रस्ताव रखा। इस बार ईद पर डॉ0 फ़रीदा सुल्ताना के यहाँ चलना है। मैंने उनकी ओर शंका की दृष्टि से देखा। गोयल जी बोले – मुस्लिम महिला है, संस्कृत में पी-एच0डी0 की है। उसने कितना बड़ा रिस्क लिया है। संस्कृत में इस तरह की कम लड़कियाँ आयी हैं। मैंने उनके साथ चलने की हामी भर दी। गोयल जी स्वयं स्कूटर पर आये। मुझे पीछे बिठा लिया और हम दोनों डॉ0 फ़रीदा सुल्ताना के घर चले। टेढ़े-मेढ़े रास्ते पार करते पुराने शहर में उनके घर पहुँचे। डॉ0 फ़रीदा से उन्होंने परिचय कराया फिर उसके बारे में बताया। डॉ0 फ़रीदा के पिता चाहते थे कि उनकी बेटी ने जैसी तालीम ग्रहण की उसी के अनुरूप उसे कोई रोजगार भी मिल जाय। गोयल जी ने पूरे विश्वास के साथ आश्वासन और आशीर्वाद दोनों दिये कि उनकी प्रतिभाशाली कला अवश्य कहीं न कहीं स्थान पायेगी। आजकल डॉ0 फ़रीदा सुल्ताना एक इंटर कॉलेज की प्रधानाचार्या हैं। गोयल जी का स्नेह देखकर मैं गद्‌गद् था।

राम प्रकाश गोयल जी निरंकार देव सेवक के एक सहृदय मित्र रहे। जब तक सेवक जी जीवित थे गोयल जी अक्सर उनके यहाँ जाते रहते थे। सेवक जी का मुझसे प्रगाढ़ स्नेह था। हम लोग अक्सर साथ मिल जाते थे। गोयल जी सेवक जी के बारे में सदैव उनकी महानता की चर्चा करते रहे। एक बार हम लोगों ने एक साथ चित्र भी खिंचवाये।

गोयल जी को नाइन्साफ़ी नहीं पसन्द है। बड़े बेखौफ़ बोलते हैं। यदि सिद्धान्तों के विपरीत कोई बात होती है तो बड़ी दृढ़ता से विरोध करते हैं। दूरदर्शन केन्द्र का यहाँ उद्‌घाटन हुआ। वहाँ से कार्यक्रम के प्रसारण का शुभारम्भ हो रहा था। इस सम्बन्ध में दूरदर्शन के तत्कालीन अधिकारियों ने गौरांग नाम के एक कलाकार की उपेक्षा की। इस उपेक्षा का गोयल जी ने कड़ा विरोध किया जबकि अन्य लोग इसे दबा गये। गोयल जी ने दूसरे दिन अपने आवास पर एक बैठक बुलायी तथा स्थानीय कलाकारों की उपेक्षा, अपमान एवं शोषण के विरोध में एक संघ भी बनाने को कहा था। उन्हें यह बात बुरी लगी कि मौके पर नामीगिरामी स्थानीय कलाकारों की उपेक्षा की जाती है।

ऊपर के तीन शब्द चित्र गोयल जी के तीन स्वरूपों के प्रतीक हैं। उनमें कितने स्वरूप समाहित हैं मैं कह नहीं सकता। उनमें कभी प्रेम पत्र का लेखक बोलने लगता है तो कभी उपन्यासकार उभर आता है। उनका शायर आज भी वृद्ध नहीं हुआ है। वह आज भी जवाँ है। अपने एक मात्र होनहार पुत्र विवेक गोयल के ग़म को भी कविता और गज़लों में ढालकर गोयल जी विषपायी हो गये। वेदनाएँ जब घनीभूत हो जाती हैं तो कविता का एक नया बिम्ब उभर आता है। गोयल जी की ग़ज़ल यह भाव व्यक्त करती है।

जलते हुए दिल का मेरे मंज़र नहीं देखा
इस आग के दरिया ने समन्दर नहीं देखा।
अंदाज़ा लगा पायेगा क्या दर्द का मेरे
तर अश्कों से जिसने मेरा बिस्तर नहीं देखा।

कवि फिर भी अपने हृदय में प्यार को मरने नहीं देता। आज उनका दिल प्यार से भरा है। अपनी एक दूसरी ग़ज़ल में लिखते हैं:-

दिल में मेरे प्यार लबों पर ताला है

मुझको सुख ने नहीं, दुखों ने पाला है।

वास्तव में गोयल जी के हृदय से काव्य का स्रोत विवेक की असामयिक मृत्यु से ही फूटा है। विवेक के वियोग ने उनकी काव्य प्रवृत्ति को जागृत कर दिया। सुमित्रानंदन पंत जी का लिखा कितना सटीक यहाँ बैठता है :-

वियोगी होगा पहला कवि
आह से उपजा होगा गान
निकलकर नयनों से चुपचाप
बही होगी कविता अनजान

गोयल जी के हृदय से भी यह अनजान धारा बही। यह शायर हो गये। एक स्थान पर लिखते हैं :-

पाया है प्यार करने का कितना बड़ा सिला
हम इस तरह मिटे हैं कि मंसूर हो गये।

कथा कहानियों में जीवन के विभिन्न पहलुओं को, प्रेम के त्रिकोण को अभिव्यक्ति करने वाला लेखक कवि के रूप में परिवर्तित हो गया।

राम प्रकाश जी की ग़ज़लें मुझे अच्छी लगती हैं। यदि अतिशयोक्ति न मानी जाय तो यह कहूँ कि मेरे मन को छू लेती हैं। मेरे भावों से तादात्म्य स्थापित कर लेती हैं क्योंकि :-

वो भीड़ में भी तो तन्हा दिखायी देता है
वो जाने क्या है मगर क्या दिखायी देता है

इस उम्र में भी गोयल जी पूरी तरह दिल एवं दिमाग से सक्रिय हैं। टी0वी0 धारावाहिक में भी उनका एक रूप दिखायी देता है। वास्तव में एक व्यक्ति में यह सारी प्रतिभाएँ कम होती हैं। वे विलक्षण पुरुष हैं। अभी भी वे स्कूटर चला कर कचहरी जाते हैं। रामप्रकाश गोयल को देखता हूँ तो लगता है कि मुझे नये अन्दाज़ से ज़िन्दगी जीने का संदेश देते हों। ईश्वर करे उन्हें लम्बी उम्र मिले। वे भविष्य में कुछ और लिखें जो अब तक के साहित्य से आगे हो।

सम्पादक 'आज', बरेली

प्रो० रामप्रकाश गोयल के कुछ संस्मरण

डॉ० महावीर सिंह

श्री रामप्रकाश गोयल का व्यक्तित्व बहुआयामी है। वे बहुमुखी प्रतिभा के धनी हैं। कवि, लेखक, रंगकर्मी, अधिवक्ता और समाज सेवी के रूप में उन्होंने अपने व्यक्तित्व को समग्रता और कलात्मकता से सजाया सँवारा है। वे व्यवस्थित, मधुर भाषी, हँसमुख एवं मिलनसार हैं। मैं गत 25 वर्षों से उनके सतत संपर्क में हूँ। मैंने उनकी अनेक खूबियों को देखा और परखा है। मैं अपने चित्त में संचित उनके कुछ भीने-भीने संस्मरणों को आदरांजलि के रूप में समर्पित कर रहा हूँ।

कुशल वक्ता

बात वर्ष 1993-94 की है। हमने नागरिक सद्भाव और शांति मंच बरेली के तत्वाधान में बरेली के 40 इंटर कॉलेजों में शिक्षकों-छात्रों का प्रबोधन किया था। हमारे योग्य समाजसेवी साथियों में श्री रामप्रकाश गोयल का भी विशेष स्थान था। वे अधिकांश इंटर कालेजों में भाषण देने पहुँचे। उनके भाषण तथ्यपरक थे, भाषा सरल-सुबोध और रोचक थी। भाषण में समय की मितव्यता थी। वे सात मिनट में ही स्थायी प्रभावपूर्ण भाषण देने में कुशल थे, जबकि अनेक वक्ता 30-40 मिनट तक उबाऊ भाषण देते थे। वे छात्रों को हँसाकर उनकी उत्सुकता बढ़ाकर उनसे संवाद स्थापित कर लेते थे।

दानवीर

श्री रामप्रकाश गोयल समाज सेवा में मुक्त हस्त से दान देते हैं। अक्टूबर, 1995 में मैं और कवि-वैज्ञानिक डॉ० मुरारी लाल सारस्वत युवा सद्भावना शिविर हेतु दान प्राप्ति के लिए उनके घर

गये। उन्होंने हर्ष पूर्वक लपाक से हमारा स्वागत किया और अपने कक्ष में सादर बैठाया। मैंने बिना समय गँवाये उनसे शिविरार्थ यथा क्षमता श्रद्धा दान हेतु निवेदन किया। श्री गोयल तत्काल बोले, "कितना दूँ?" हँसमुख हाज़िर जबाब हास्य कवि डॉ0 मुरारी लाल सारस्वत तुरंत बोल पड़े, "250 रु0 केवल" श्री गोयल ने उत्साहपूर्वक पलभर में ही अपनी मेज की दराज़ से 50 रु0 के नये पांच नोट मेरे हाथ पर रख दिये। हमने उन्हें आभार प्रकट किया। हम दोनों उनकी सहज दानशीलता पर गद्‌गद् हो गये। उन्होंने कई बार सर्वोदय कार्यक्रमों में हमें दान दिया। वे सर्वोदय छात्रवृति परीक्षा के लिए भी सदैव सहयोगार्थ तत्पर रहे। उन्होंने एक बार मुझसे कहा था मैं लगभग एक लाख रु0 दान करना चाहता हूँ कृपया कोई उचित योजना बताएँ"

सतत् समाज-सेवी

श्री रामप्रकाश गोयल को समाजसेवा में अति रुचि है। वे अनेक संस्थाओं से संबद्ध हैं। समाज सेवा में उनकी सतत और सक्रियता युवकों को लजाने वाली है। आयोडीन नमक की पूँजीवादी साज़िश के विरोध में अखिल भारतीय सत्याग्रह के अर्न्तगत 5 जून, 1998 को सर्वोदय मंडल बरेली द्वारा भी अंबेडकर पार्क में सत्याग्रह किया गया। मेरे निमंत्रण पर अपने ह्दयकी शल्यक्रिया के कारण क्षीणकाय होते हुए भी श्री गोयल हमारे सत्याग्रह में सम्मिलित हुए, और मार्गदर्शन किया। हम दंग रह गये।

श्री गोयल ने युवा सद्‌भावना शिविर 1993, 1994, और 1995 में शिविरार्थियों को सम्बोधित करके हमें सदैव प्रोत्साहित किया। वे हमारी विचार गोष्ठियों में सतत् भागीदारी करके गोष्ठियों की गुणवत्ता तथा साथियों में आत्मीयता-वर्धन करते रहे।

समाज सेवियों के प्रेरक

श्री रामप्रकाश गोयल नये समाज सेवियों को सदैव प्रेरित-प्रोत्साहित करते रहते हैं। एक दिन मैंने उन्हें फोन पर सूचित किया कि मेरी आत्मकथा, "चरित्र के प्रयोग" प्रकाशित हुई है। वे हर्षित होकर बोले,

वाह भाई वाह ! बहुत अच्छा। ''फिर स्नेह से सराबोर नक़ली क्रोध में मुझे ताड़ना देते हुए बोले, आपने मुझे इसकी प्रति अभी तक क्यों नही भेजी ?'' मैं बोला, ''जी शीघ्र, प्रेषित करुँगा'' । वे बोले, कल शाम तक अवश्य भेज दो, अन्यथा आप पर जुर्माना होगा। मैंने कहा, ''जी अवश्य।'' मैं उनकी मीठी झिड़की पर मुग्ध था। मैंने शीघ्र ही उनके घर जाकर उन्हें पुस्तक दी। उन्होंने गद्‌गद् होकर मुझे उसका मूल्य 20 रु0 दिया तथा पुस्तक की भूरि-भूरि प्रशंसा की।

कुशल कार्यक्रम संयोजक

श्री रामप्रकाश गोयल समाज सेवा के आयोजन में अति कुशल एवं निष्णात हैं। वे ''विवेक गोयल साहित्य पुरस्कार'' का आयोजन प्रतिवर्ष हिन्दी दिवस पर ग़ज़ब की तत्परता, व्यवस्था, रोचकता व गरिमा से करते हैं। बरेली कालेज सभागार में इस आयोजन में वे 300 श्रोताओं की भागीदारी अद्‌भुत संप्रेषण कला से सुनिश्चित करे लेते हैं। वे कहते हैं, ''900 को निमंत्रित करता हूँ तब 300 श्रोता आ पाते हैं।'' निमंत्रितों को पुनः पुनः स्मरण दिलाते हैं। उच्चाधिकारी और बुद्धिजीवी तो उनके आयोजनों में खिंचे चले आते हैं।

कुशल अध्यक्ष

श्री रामप्रकाश गोयल सभाओं की अध्यक्षता करने में भी निपुण हैं। बरेली कालेज में 1994 में आयोजित सद्‌भाव मंच की एक सभा में उन्होंने कुशलता पूर्वक अध्यक्षता करके सबसे अपना लोहा मनवा लिया। उन्होंने सौजन्यता से समस्त इच्छुक वक्ताओं को बोलने का अवसर दिया। उन्होंने वक्ताओं को विषयांतर न करने दिया, समय की मर्यादा में बाँधे रखा तथा गंभीर अवसरों पर भी कटुता न उत्पन्न होने दी। उन्होंने गोष्ठी को उचित उपयोगी परिणित तक ले जाकर गरिमामय समापन किया। श्री गोयल भाषण के साथ साथ लेखन में भी मितव्यता के प्रबल पक्षधर हैं।

मंत्री, उत्तर प्रदेश सर्वोदय मंडल
474, इंदिरानगर, बरेली-24312

अभिनन्दन पत्र

राष्ट्रभाषा हिन्दी के सजग प्रहरी, विधि के मर्मज्ञ, सरस कवि एवं स्नेह की मूर्ति

प्रो0 रामप्रकाश गोयल

के कर कमलों में

हिन्दी दिवस की पावन बेला में सादर प्रस्तुत

परम श्रद्धेय,

बरेली नगर के किसी एक ऐसे व्यक्ति का परिचय देना हो जो साहित्यिक, सांस्कृतिक, सामाजिक एवं शिक्षण संस्थाओं से जुड़ा हो, जो विज्ञान और क़ानून जैसे शुष्क और नीरस विषयों में पला हो किन्तु फिर भी जिसके हृदय में काव्य तथा साहित्य की सरस स्रोतस्विनी सतत प्रवाहित होती रही हो, जो वज्र से कठोर अनुशासन प्रिय और कुसुम से कोमल भावनाओं से आप्लावित हो-तो अनायास ही हमें आपका स्मरण हो आता है।

30 जून 1925 को स्व0 श्री मुकुट बिहारी लाल जी वकील का प्रांगण आपने धन्य किया। अध्ययन-शीलता और संगठन कुशलता प्रकृति माँ ने आपको घुट्टी के साथ पिलाई थी। किशोरावस्था से ही अपने साथियों में देश प्रेम की भावना भरने और उनकी बौद्धिक प्रतिभा जागृत करने के लिए आप सदा प्रयत्नशीलता रहे। 1942 में राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ की शाखा जब बरेली में आरम्भ हुई, उसी समय आप संघ के अग्रणी कार्यकर्ता बने। आपने संघ के तृतीय वर्ष का प्रशिक्षण 1945 में नागपुर से किया और अगले वर्ष बी0एस-सी0 करके संघ कार्य के लिए राजस्थान चले गये। राजस्थान में पाँच वर्ष तक संघ के प्रचारक का त्यागी-तपस्वी जीवन आपने व्यतीत किया। इसी अवधि में आपने वहाँ से क़ानून की परीक्षा पास की।

1951में नगर के मूर्धन्य फ़ौजदारी के वकील, प्रख्यात कवि एवं शायर स्व0 श्री रामजी शरण सक्सेना के शिष्यत्व में आपने वकालत आरम्भ की। उन जैसे यशस्वी व्यक्तित्व के चरणों में बैठकर

आपको वकालत और कविता सीखने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। आपने दोनों ही क्षेत्रों में अपने पूज्य गुरु का नाम उज्ज्वल किया।

प्रकांड विद्वान,

कानून के प्रवक्ता के रूप में आपने सत्रह वर्ष तक बरेली कॉलेज में शिक्षण कार्य किया। आज भी शिक्षक और छात्र आपकी विद्वता की धाक मानते हैं और उनके हृदय पर आपकी अमिट छाप अंकित है।

आपकी काव्य अभिरुचि के प्रमाण 1942-43 के वे दो कवि दरबार हैं जिनमें मात्र 16-17 वर्ष की कल्पायु में ही आपने पं० सुमित्रानंदन पंत और पं० माखन लाल चतुर्वेदी बनकर उनकी कविताओं का सस्वर पाठ किया था।

1964 में एकांकी नाटक 'भोर का तारा' में नाटक के प्रमुख पात्र कवि शेखर की अत्यन्त सशक्त भूमिका आपने अभिनीत की थी।

1964 में ही त्रिकोण प्रेम (पति, पत्नी और वह) जैसे कठिन विषय पर आपने मौलिक मनोवैज्ञानिक उपन्यास "टूटते सत्य" लिखा। उपन्यास में अत्यन्त अनूठे ढंग से आपने दो विपरीत धाराओं - भावना और कर्त्तव्य, हृदय और मस्तिष्क का सामन्जस्य कर अपनी सशक्त लेखिनी का परिचय दिया।

हम सबके आत्मीय,

आपके जीवन की सबसे दुखद और हृदय विदारक घटना 14 फ़रवरी 1983 को घटी जब प्रकृति के क्रूर हाथों ने आपके एकमात्र पुत्र विवेक गोयल को सदैव के लिए आपसे छीन लिया। एकाकी पुत्र के विछोह के दारुण दुख ने आपको मर्माहत और विक्षिप्त-सा कर दिया था किन्तु फिर भी आप निष्क्रिय, निस्पृह और वैरागी नहीं हुए। पुत्र की पावन स्मृति में आप हर वर्ष हाई-स्कूल तथा इण्टर कक्षाओं के छात्र-छात्राओं की वाद-विवाद प्रतियोगिता आयोजित करते हैं। इस वर्ष आपने चौदह वर्ष तक की आयु के बालकों की क्रिकेट प्रतियोगिता आयोजित करके अपने नगर में एक विशिष्ट कीर्तिमान स्थापित किया है। आपके जैसा संतुलित व्यक्तित्व का धनी और कर्मयोगी ही ऐसे आघात के पश्चात क्रियाशील बना रह सकता है।

दिवंगत पुत्र के विरह ने ही आपके अन्दर छिपे हुए कवि को वाणी दी जिसके परिणाम स्वरूप साहित्य संसार के सम्मुख उजागर हुआ अलौकिक प्रेम से परिपूर्ण आपका अद्वितीय ग़ज़ल संग्रह "दर्द की छाँव में" जिसमें दर्द और केवल दर्द ही दर्द भरा हुआ है।

प्रेरणा और स्नेह स्रोत,

आप साहित्यिक, सांस्कृतिक एवं सामाजिक आकाश के दैदीप्यमान नक्षत्र हैं। आपके स्नेहपूर्ण निश्छल मधुर व्यवहार, संगठन कौशल, अनुशासन में बाँध कर सबको सम्मान पूर्वक साथ-साथ ले चलने वाले आत्मीयता भरे स्वभाव ने आपको अजातशत्रु बना दिया है। यही कारण है कि बरेली के इतिहास में आप पहली बार अड़तीस (38) सस्थाओं के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित हिन्दी दिवस पर आपका अभिनन्दन करके और परमपूज्य पं० राधेश्याम जी कथावाचक की पावन स्मृति में आरम्भ हुए "पं० राधेश्याम कथावाचक साहित्य पुरस्कार" से आपको सम्मानित करके हम स्वयं को गौरवान्वित अनुभव कर रहे हैं।

आपसे विनम्र निवेदन है कि आप सदैव हम पर अपनी कृपा बनाये रखें और हमारा मार्ग दर्शन करते रहें। सर्वशक्तिमान परमपिता परमात्मा से प्रार्थना है कि वे आपको शतायु करें।

जीवेम् शरदः शतम्।
पश्येम् शरदः शतम्।।

हम हैं नगर की साहित्यिक, सांस्कृतिक
एवं सामाजिक संस्थाओं के सदस्य

(बरेली की 38 संस्थाओं द्वारा आयोजित हिन्दी दिवस दिनांक 14 सितम्बर, 1987 के अवसर पर श्री राम प्रकाश गोयल को अभिनंदन पत्र भेंट किया गया)

विवेक गोयल साहित्य पुरस्कार : एक साहित्यिक महायज्ञ

डॉ0 मुरारीलाल सारस्वत

कहते हैं कि विश्व की आदि कविता क्रौंच वध देखकर अनायास ही महर्षि वाल्मीकि के मुँह से प्रस्फुटित हुई थी।

परन्तु श्री राम प्रकाश गोयल की कविता आह से नहीं कराह से उपजी है। उन्होंने किसी क्रौंच को तीर से बिंधते नहीं देखा। वह तो स्वयं ही शर बिंधे क्रौंच की तरह हैं। 'एक प्यासे समंदर' से 'दर्द की छाँव में' बैठकर 'रिसते घावों' को निहार रहे हैं। इसी मनः स्थिति में अनायास ही निकली उनकी रचनाएँ जनमानस को अंतर प्रांतर तक झकझोरने में सफल हो रही हैं।

गोयल साहब 60 के दशक से ही बरेली महानगर के साहित्यकारों के संपर्क में रहे हैं। त्रिकोणीय प्रेम प्रसंग पर उनका उपन्यास 'टूटते सत्य' 1972 में प्रकाशित हुआ। उनकी वास्तविक रचना धर्मिता 1983 में घटी एक मर्मान्तक घटना के बाद ही आरंभ होती है जो 'दर्द की छाँव में' 1987 'रिसते घाव' 1992 'एक समनदर प्यासा सा' 1999 के रूप में आज तक निरंतर प्रवाहमान है।

जिसने जन्म लिया है उसकी मृत्यु ध्रुव सत्य है। आत्मा अमर है, शरीर नाशवान। संसार में कुछ ऐसी पवित्र आत्मा समय समय पर शरीर धारण करती हैं जो अल्प समय में ही अमिट छाप छोड़कर पुन परमात्मा में विलीन हो जाती हैं। ईश्वर ऐसी पवित्र आत्माओं को संसार में थोड़े समय के लिए कभी कभी उदाहरण प्रस्तुत करने हेतु ही शायद भेजता है, अन्यथा वह लौटने में शीघ्रता क्यों करती। ऐसी ही एक पवित्र आत्मा ने 19 सितम्बर 1966 के दिन श्री रामप्रकाश गोयल के घर जी-12 रामपुर बाग, बरेली में जन्म लिया। चार कन्याओं के उपरांत पुत्र प्राप्ति को गोयल दंपत्ति ने ईश्वर की महान कृपा के रूप में स्वीकार किया और उनके सुख की सीमा न रही।

इस होनहार बालक का नाम विवेक रखा गया विवेक सचमुच ज्ञान पुज निकला और बचपन से ही अपनी कुशाग्र बुद्धि का परिचय देते हुए पढ़ाई में कीर्तिमान स्थापित करने लगा। इसी श्रृंखला में इस मेधावी छात्र ने स्थानीय केन्द्रीय विद्यालय ए. एस. सी. से राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद के पाठ्य क्रमानुसार हाई स्कूल की परीक्षा प्रथम श्रेणी में 80 प्रतिशत अंक प्राप्त कर उत्तीर्ण की तथा कई विषयों में विशेष योग्यता प्राप्त की। विवेक की बहुमुखी प्रतिभा से सभी परिजन-पुरजन आनंदित थे तथा शिक्षक उस पर गर्व करते थे। विधि को यह उल्लासमय वातावरण या तो भाया नहीं या परमात्मा को विवेक की पवित्र आत्मा की परम आवश्यकता थी, इसीलिए तीन माह मोती झाला (टाईफाइड) और पीलिया की बीमारी झेलते हुए विवेक 16 वर्ष 6 माह की उम्र में 14 फरवरी 1983 के दिन सभी को बिलखता छोड़कर इस असार संसार से विदा हो गया। आत्मा तो परमात्मा में विलीन हो गई पर कवि राम प्रकाश गोयल के हृदय पर जो गंभीर प्रभाव विवेक की असामयिक मृत्यु ने छोड़ा उसका कुछ भाग जहाँ आँसू बनकर बहा, वहीं अधिकतर शर बिंधे क्रोंच की वेदना के समान विगत 17 वर्षों से "दर्द की छाँव में", "रिसते घाव", और "एक समन्दर प्यासा-सा" की त्रिवेणी के रूप में निरंतर प्रवाहमान है।

मेरी किस्मत में दिन नहीं शायद,
रात के बाद रात आई है।
कैसा मुंसिफ निज़ामे कुदरत है,
मारकर मुझको मर गया कोई।
तुम गये क्या मेरी दुनिया ही गयी,
अब तो तन्हाई मुझे भाने लगी।
वक्त से क़ब्ल मर गया कोई,
फूल बनकर बिखर गया कोई।
देखिये तो बशर भीड के साथ है,
सोचिये तो अकेला ही चलता रहा।
इस घुटन से तो यह बेहतर है कि बेघर कर दे,
जिस्म की कैद से अब रूह को बाहर कर दे।

मैं जीतता भी तो, शायद न इतना खुश होता,
मिली है जितनी खुशी तुझसे हार जाने में।
हादिसे पूछ कर नहीं होते,
आदमी हादिसों से हारा है।
मेरा दामन छोड़ के जाए,
ग़म के बस की बात नहीं।
मंजिलें उस तरफ़ भी होती हैं,
जिस तरफ़ रास्ता नहीं होता। (दर्द की छाँव में -1987)
प्यासा दरिया बहता पानी,
अपनी इतनी राम कहानी।
साथ उनका अगर नहीं होता,
मुझसे तय यह सफ़र नहीं होता।
इन्साँ हँसता है कभी, और कभी रोता है,
वही होता हे जो क़िस्मत में लिखा होता है।
पी गया कितनी नदियाँ अब तक एक समन्दर प्यासा-सा,
मीठा पानी पीकर इतना, क्यों है अब तक खारा सा।
समन्दर सा है दिल में प्यार मेरे,
समन्दर सा मगर खारा नहीं है।
वो भीड़ में भी तो तनहा दिखाई देता है,
वो जाने क्या है मगर क्या दिखाई देता है।
("एक समन्दर प्यासा सा" 1999)

राम प्रकाश गोयल का कृतित्व बहुआयामी है। उन्होंने गीत, ग़ज़ल, क़तात, शेर, अतुकांत, कविताएँ और क्षणिकाएँ सभी कुछ लिखा है परन्तु ग़ज़ल पर उनका पूर्ण अधिकार है। काव्य के गुणदोष गिनने वाले समालोचक पंडितों का जो भी मत हो, सहृदय और भावुक पाठक उनकी रचनाओं से अभिभूत होकर परमानंद की अनुभूति करता है। श्री रामप्रकाश गोयल के मन में बहुत समय से यह अभिलाषा रही कि बरेली महानगर में एक साहित्यिक पुरस्कार की स्थापना हो जाए। इसी क्रम में उनके प्रयास से सन 1987 में बरेली के गौरव एवं प्रसिद्ध कवि पं0 राधेश्याम कथावाचक की स्मृति में उनके पौत्र श्री काशीनाथ शर्मा ने राधेश्याम कथावाचक स्मृति पुरस्कार की घोषणा

की यह पुरस्कार 1987 में श्री प0 रामप्रकाश गोयल को तथा 1988 में श्री रघुनाथ सहाय 'वफा' को मिला। 19 अगस्त 1990 के दिन नगर के साहित्यकारों की एक बैठक गोयल साहब की अध्यक्षता में, कवयित्री मनु नीरस के निवास पर हुई। श्री राम प्रकाश गोयल ने अपने स्वर्गीय पुत्र विवेक गोयल की स्मृति में "विवेक गोयल साहित्य पुरस्कार" की घोषणा की। यह तय हुआ कि यह पुरस्कार प्रतिवर्ष हिन्दी दिवस 14 सितम्बर को महानगर के एक चयनित साहित्यकार को प्रदान किया जायेगा। पुरस्कार राशि 1001, शाल, स्मृति चिन्ह व अभिनंदन पत्र आदि के रूप में रखी गई। विशाल ह्रदय गोयल साहब ने अपनी दानवीरता का परिचय देते हुए इस पुरस्कार का पूर्ण व्यय भार स्वयं ही वहन करने की घोषणा करके अलौकिक साहित्य सेवा का परिचय दिया। बैठक में उपस्थित डा मुरारीलाल सारस्वत, शिवनाथ 'बिस्मिल' रघुवर दयाल पीयूष, लक्ष्मीकांत मीत , अविनाश सक्सेना, रमेशचन्द्र गुप्त, राम सिंह भंडारी व अशोक शंखधर आदि ने एक स्वर से विवेक गोयल पुरस्कार हेतु श्रीमती डा महाश्वेता चतुर्वेदी कवयित्री का चयन किया। तब से लेकर आज तक अनवरत रूप से इस पुरस्कार से साहित्यकारों को सम्मानित किया जा रहा है। महानगर की साहित्यिक गतिविधियों में इसका स्थान सर्वोत्तम है।

विवेक गोयल साहित्य पुरस्कार से अब तक पुरस्कृत एव सम्मानित साहित्यकार निम्नवत हैं :-

1 डॉ. महाश्वेता चतुर्वेदी, बरेली - 1990
2 डॉ. मुरारीलाल सारस्वत, बरेली - 1991
3. डॉ. मृदुला शर्मा, बरेली - 1992
4 शिवनाथ बिस्मिल, बरेली - 1993
5. डॉ. छोटेलाल शर्मा 'नागेन्द्र', रामपुर - 1994
6 श्री ह्रदयनारायण मेहरोत्रा "ह्रदयेश" शाहजहाँपुर - 1995
7. श्रीमती ज्ञानवती सक्सेना, बरेली - 1996
8. श्री माहेश्वर तिवारी, मुरादाबाद - 1997
9 डॉ. इन्दिरा आचार्या, बरेली - 1998

10 डॉ महेश दिवाकर' मुरादाबाद 1999

11. श्री राम प्रकाश मधुरेश - 2000

आरंभ में इस पुरस्कार को बरेली महानगर के ही एक साहित्यकार को प्रतिवर्ष देने का निर्णय, नगर के साहित्यकारों को प्रेरणा एवं सम्मान देने हेतु हुआ था। 1994 के आते आते इसका क्षेत्र महानगर से बढ़कर पूरे देश तक फैल गया तथा राशि भी 10001/- से बढ़कर 2101/- रुपये तक हो गई। नयी सहस्त्राब्दी में समिति की ओर से इस पुरस्कार की राशि 5001/- रुपये करने की घोषणा की गई है। हमारी कामना है कि यह पुरस्कार राष्ट्रीय छवि बनाने में सफल हो।

इस प्रकार श्री रामप्रकाश गोयल ने पुरस्कार की घोषणा कर जहां अपने पुत्र को अमर बनाकर सच्ची श्रद्धांजलि दी है, वहीं राष्ट्रभाषा हिंदी की भी अपार सेवा कर कीर्तिमान स्थापित किया है। उनके इस पुनीत कार्य के लिए बरेली महानगर का समस्त साहित्यिक, सांस्कृतिक एवं सामाजिक कार्यों से जुड़ा समाज हृदय से कृतज्ञ है।

शर बिंधे क्रौंच सा व्यक्तित्व लिए श्री रामप्रकाश गोयल अपनी उम्र के 75 वें सोपान पर पहुँचकर भी महानगर की साहित्यिक, सांस्कृतिक एवं सामाजिक सेवा में अलौकिक योगदान दे रहे हैं। वे तन, मन, धन से साधना रत हैं। परमपिता परमात्मा से हमारी यही प्रार्थना है कि उन्हें चिरायु प्रदान करें तथा वे स्वस्थ सानंद रहकर कर्मठता एंव निष्ठा से साहित्यकारों का मार्ग दर्शन लम्बे समय तक करते रहें।

वरिष्ठ वैज्ञानिक, भारतीय पशु
चिकित्सा अनुसंधान संस्थान, इज्जतनगर, बरेली

प्रो0 राम प्रकाश गोयल का जीवन दर्शन

डॉ0 सुरेश चन्द्र गुप्त, डी. लिट

"मनुष्य का जीवन बहुरंगी और बहुआयामी है। वह कभी एक जगह नहीं रुकता, न ठहर पाता है। पता नहीं किसकी तलाश है उसे, क्या ख़लिश है, क्या बेचेनी है ? सुख-दुख, धूप-छाँव, आते जाते रहते हैं, मगर कभी न रुकने वाली एक प्यास बराबर इंसान को परेशान और बेचैन बनाए रखती है। यह प्यास ही उसकी ताक़त है, उसकी ऊर्जा है जो उसे कुछ कर गुज़रने को मजबूर करती है।"

प्रो0 रामप्रकाश गोयल के 'दिल की बात' वस्तुतः दिल की कम दिमाग़ की अधिक है। अपने नाटक 'दिल और दिमाग़' में भी वे हृदय और मस्तिष्क के बीच होने वाले अन्तः संघर्ष से जूझते प्रतीत हुए थे, और प्यासा समुन्दर के रुप में भी वे अन्तर्द्वन्द्वग्रस्त दीखते हैं। अपने द्वंद्वमय जीवन में उन्हें अखंड और शाश्वत कहा जाने वाला सत्य 'टूटते सत्य' की प्रतीति कराता है। चिंतालीन मनु ने शिला की शीतल छाँव में शरण ली थी, पर गोयलजी "दर्द की छाँव में" बैठते हैं, इसके बावजूद 'रिसते घाव' उन्हें चैन नहीं लेने देते। वे कभी कभी महसूसते हैं कि अंदर से चुक गये हैं और बाहर आने को कुछ भी बाक़ी नहीं रहा। इसके बावजूद, पचहत्तर वर्ष की परिपक्व अवस्था में वे अपने अंदर "एक समन्दर प्यासा-सा" हिल्लोलित अनुभव करते हैं। उनके अन्तर्मन में अन्दर ही अंदर, घुमड़ते, घुटते और टूटते इस समनदर ने एक जीवन - दर्शन का रूप ले लिया जो गीत, ग़ज़ल आदि के रूप मे अभिव्यक्त हो उठा।

प्रेम में जीत ही जीत है। प्रेम में सर्वस्व न्योछावर करके भी पराजय नहीं मिलती-

मुहब्बत जिसने समझी है इबादत।
मुहब्बत में कभी हारा नहीं है।।

प्रो0 गोयल प्यार को अपने जीवन का सबसे बड़ा संबल मानते हैं। शायद प्यार के बिना जी भी नहीं सकते-

मैं तो ज़िंदा ही मर गया होता। पास गर उनका घर नहीं होता।।

साथ उनका अगर नहीं होता मुझसे तय यह सफर नहीं होता

पूनम की रातों में सागर कैसी कुलाँचें भरता है
चंदा के चुंबन को आतुर, हो जाता दीवाना-सा।
प्रीतम की बाँहों में समाने, पागल हैं नदियाँ सारी,
प्रेमी सागर बाहुपाश में भरने को बौराया-सा।

प्रेमी पागल होते हैं। नदियों और सागर का प्रणयोत्सुक होकर पागल हो जाना हमें सीख देता है कि हम भी प्यार करने में संकोच न करें।

सुख दुख मन के संकल्प विकल्प हैं लेकिन मनुष्यों को चतुर्दिक दुख ही दुख दिखाई देता है। राम प्रकाश गोयल को लगता है कि उन्हें तो दुखों ने ही पाला है। दुख इतने अधिक हैं कि एक विपत्ति से उबरने के बाद दूसरी आ जाती है तथापि वे दुख से घबराते नहीं और कहते हैं कि दुख तो जीवन के लिए वरदान है। देखें, दुख सम्बंधी उनकी अनुभूतियाँ -

दिल में मेरे प्यार, लबों पर ताला है।
मुझको सुख ने नहीं दुखों ने पाला है।।
मेरी क़िस्मत में दिन नहीं शायद
रात के बाद रात आयी है।।
चाहते हो सुख तो दुख को भी सहो,
दुख तो जीवन के लिए वरदान है।

कवि संसार को क्षणभंगुर समझता है। सांसारिक संबंध दो दिन के हैं। संसार का कुछ भी साथ नहीं जाना है। मनुष्य तो विधाता के हाथों का खिलौना है। इस स्थिति में घमंड कैसा ? झूठ बोलना व्यर्थ है क्योंकि-

झूठ के पैर ही नहीं होते, झूठ कब कामयाब होता है।

मनुष्य को चाहिए कि सदैव कर्म में लगा रहे। गोयल जी कार्य को ही भगवान मानते हैं और चाहते हैं कि मनुष्य सदैव सक्रिय रहे-

दूर मंजिल सफ़र बहुत मुश्किल फिर भी चलते ही चलते जाना है।
कौन जाने कि कब रुकें साँसें, मौत का अपना ही बहाना है।
राह लंबी सफ़र बहुत मुश्किल, चलते रहने से ही मिले मंजिल,
एक पल भी हमें न खोना है।

कवि की मान्यता है कि मनुष्य सृष्टि का श्रेष्ठतम प्राणी है पर उसकी पहचान मनुष्यता में है। पोप और कठमुल्ले मुल्ला मनुष्यता से भी गिर जाते हैं जब किसी इंसान का धर्मान्तरण कराते हैं। हमें चाहिए कि मनुष्य को हिंदू, मुसलमान और ईसाई के रूप में न देखें और जिस इंसान में दीन दुखियों के प्रति हार्दिक संवेदना हो, उसे भगवान समझें –

हम न हिंदू न मुसलमाँ न सिख न ईसाई।
हम हैं इन्साँ, हमें इंसान समझते रहिये।।
जिसकी आँखों में हों आँसू किसी मुफ़लिस के लिये।
ऐसे इंसान को भगवान समझते रहिये।।

कवि की मान्यता है कि हर इंसान से भूल हो सकती है इसलिए जो क्षमा दे सके वही बड़ा है। अपने को अकिंचन मानने और खुदी को मिटा देने में ही बड़प्पन है कि कुछ ऐसा कर जायें कि लोग बरसों तक याद करें; यद्यपि यश मिलने से जीवन की शांति भंग हो जाती है–

चैन से जीना मुश्किल होगा, मत हो जाना तुम मशहूर।।

प्रो० रामप्रकाश गोयल का अनुभव-जगत व्यापक है। समाज, संस्कृति और साहित्य के विधि अंगोपांगों को उन्होंने संवेदनापूर्वक जिया है। पैंट – शर्ट पहनने वाला यह बुद्धिजीवी अत्यंत, सरल, भावुक, संवेदनशील और सहृदय प्रेमी है। वह रसिक होकर भी ऋषितुल्य है। अपनी आँखों में मानव मात्र के लिए करुण और प्यार का समन्दर लिये यह प्यासा भटक रहा है। उसका दर्शन अनुभूति पुष्ट है। जर्जर और रोगग्रस्त शरीर में भी वह दृढ़ संकल्प से समृद्ध है। वह पूर्ण विश्वास से घोषणा करता है–

हार को जीत में बदल दूँगा, मेरे अंदर छुपा सिकन्दर है।

यूँ तो संसार में अमर कोई नहीं है। पर कृति साधकों का यशस्वी जीवन उन्हें अमरता प्रदान करता है। प्रभु से कामना है कि पचहत्तर वर्ष के युवा गोयल जी सतत सक्रिय रहते हुए शतायु हों।

वरिष्ठ रीडर एवं शोध निदेशक
हिन्दी विभाग, बरेली कॉलेज, बरेली

PROF. RAM PRAKASH GOEL - THE MAN AND THE POET

Girish Gupta ' Pracharya'

I take it as a privilege to write on Mr. Goel, the Person and the Poet. As Man-Person : As man Mr. Goel is blend in speech, suave in disposition and benign in the dispensation. His eyes seraching something inside you; wearing a mask of mystery - still revealing his heart - a heart that ever keeps flowing with the milk of love, affection, and human kindness, Mr. Goel is never captive of false show, notions and ostentation. An 'ever-ready to help you Smile' keeps frolicking upon his lips. Such a sweet, lovely and loveable fellow is our, 'old-young, 'chap' called Goel . . . Above all, Mr Goel better delineates himself in his own poetic composition from 'Ek Samandar Pyasa-Sa'.

सब से पूछा कोई अभी तक, मुझे न बतला पाया है
चाहता क्या है, क्यों यह समन्दर, रहता हर दम प्यासा-सा ?

His Poetry - My observations, in the given context, are confined to Mr. Goel's EK Samandar Pyasa - Sa. After the perusal of this volume, Mr. Goel's poems fall into four catagories i.e 1 Pure Love Poems. 2. The poems portraying the real life around us 3 The poems soaked in the nectar of human-brotherhood and universal benevolence. 4. The poems, projecting him as true stoic The most striking feature of his treatment is his total philosophic approach to life.

A Poet of Love : Mr. Goel expresses his love in plain words Even, he pours out the anguish of his inner most heart straight away, just look at the beauty of his simple statement in the following-

जिस्म जलता है चाँदनी में मिरा,
तुम बिना अब गुज़र नहीं होता।

But, the poet never indulges in protests, malignment or abuses. It may be, he shirks from committing the sin of being shallow, revengeful or retaliatory as is the general trend. Mr. Goel treats his frustrations in love in an entirely different manner He gives it a new, novel and ennobling touch. He treats the betrayal on the part of his beloved as a common, general human weakness or something as a way of life and the 'ways of the world'. Then, why, the poet, a lover, should take the betrayal of his beloved on a personal plane ? Why should he not evince the broader look of life? . . . . . the serene ray of his benign heart. Through this kind of PROJECTION, Mr. Goel lends new dimension to earthly - wordly love between a lover and beloved. After all the human beings are

of of Flesh and Bones. Without any grudge, or *hurling abuses at* his SWEET-HEART, he forgives and forgets *all the irks and pricks* Thus, it may be said that he, through this approach to *love, seems* to be evincing the most sound moral airs that may be termed *'hate* the sin and not the sinner'. Sinner or a defaulter in love, is human creature . . . . and, to err is human; to forgive divine'. Each and every Tom, Dick and Harry can hurl abuses. But everyone cannot touch divine heights in earthly love. If the well-known romantic poet Lord Byron can speak about the love of a woman,

'In her first passion, woman loves her lover;
In all the others, all she loves is love. (In Don Juan)

Then, why should the poet a male lover lay blame at the door of his beloved who failed to respond his love ? What is wrong with the LOVE itself ? - Thus, by keeping himself away from fault - finding or any sort of fret or fury, Mr. Goel depicts the betrayal as a human weakness and the popular trend of Time. Thus, Mr. Goel gives new horizons to the mundane. The following extracts speak enough for themselves,

मुहब्बत जिसने समझी है इबादत, मुहब्बत में कभी हारा नहीं है
समन्दर–सा है दिल में प्यार मेरे, समन्दर–सा मगर खारा नहीं है।

Mr. Goel portrays life. He portrays it as it is. All around him is degeneration, hypocrisy, deception and stark selfishness in the most naked form. People pose as the most intimate, reliable and faithful. They are master - craftsmen of their art. Their skill, in grinding their own axes. knows no bounds.

The poet is also surrounded by such sycophants. He has personal and social dealings with such persons; no matter, he understands them. He knows most of them are flattering foes in the garb of 'near and dear' ones. These people have two faces the private and public ones. The poet mixes with them inspite of being fully aware of the fact that they throng round him with concealed - polluted intents. The poet is in the know of the fact that, 'one may smile ad smile; still may be a villain'. To him, it is clear as broad daylight that such persons are not what they pose They can stab you in your back, without the least prick of conscience. Still the poet has a smooth sailing with them. He is ever eager to extend his hand for their help. It is rare feature and gesture of Mr. Goel's temper.

Mr. Ram Prakash Goel seems to be touching angelic heights Here, he resembles a lotus.

वह जो कल तक था हमारा, वो है अब गैर के साथ,
यह तो दुनिया है, यहाँ रोज़ यही होता है।

कोई भी तेरा शरीके ग़म न दिल से है यहाँ,
तू जिसे अपना समझता, ग़ैर का वो यार है,
दोस्ती क़ैद अब किताबों में, आज के दौर का प्रभाव है।
ख़ैर अपनी नज़र नहीं आती, दोस्तों का बड़ा जमाव है।

No doubt the poems of the volume are of various hues, shades, temper and tone. The collection may be termed a fine art-gallery of many paintings.

Mr. Goel's bliss of solitude is his 'Love for all; malice towards none'. It is the sheet - anchor of his day-today living. It mitigates his pains. It wipes out his tears. He is ever eager to forgive and forget He is ever ready to extend his olive branch even towards those who have a dagger in their heart. Thus no hurt can wound the poet. No betrayal can make him depressive. His heart has no room for any sort of frustration The milk of human kindness and benevolence always keeps flowing in his heart.

Thus Mr. Goel uses his benevolence as a panacea. With it he cures all the ills and evils lying scattered all around him. Truly speaking, this ever-ready benevolence is the secret, hidden behind Mr. Goel's smiling face. It is the mystery that, inspite of having fallen upon the thorns of life, Mr. Goel never bleeds. If we can understand it, we can know the REAL Goel. But we shall be nourishing a wrong notion about him, if we think the poet has no tears to shed. His heart is virtually a fathomless ocean of tears. He is a PYASA DARIA. Still, he is always a BEHTA PANI. Through his poem, he reveals the innermost secret of his heart 'how he keeps an ever - smiling face'. In a way, he imparts a message to his readers also through this verse -

प्यार करें हर इन्साँ से हम, यह दौलत है हमें कमानी।
दीन-दुखियों के काम आऊँ मैं, अपनी यूँ ज़िन्दगी बिताना है।
ज़िन्दा रखने को सच ज़माने में, अपनी हस्ती मुझे मिटाना हैं।

Philosophic Approach : - The collection reveals Mr. Goel, the poet, a true stoic in letter and spirit. He is a lover -with unquenched thirst, a tormented soul; still not tormented, as he nowhere feels Broken. No doubt, he yearns for and hankers after something. But, certainly, his hunt is far - far above the mundane He seems to be merging his mundane uneasines as with something on a higher plane. He does not suffer the pains and pangs of a loss. Basically, Mr. Goel is a romantic poet. But he has cultivated a philosophic view of life. So, he is capable of taking into his sweep all his personal losses and converting them into a solace. He does it wihtout a sigh for the lack of many a thing he sought. He performs

th s m rac e by w p ng off the tears *from the weeping eyes of the* have nots and the down-trodden.

The stark betrayal of his beloved and *all that is drab, dross* and shallow fails to make the poet sombre. *Frustrations and biting* - bitter experiences do not embitter his heart. They do *not sully his* vision. They fail to cast any gloomy shadows upon the screen of his soul.

पहले अपनी ख़ुदी मिटाना है, फिर ख़ुदा के क़रीब जाना है
चाहते हो सुख तो दुख को भी सहो,
दुख तो जीवन के लिए वरदान है।
फिर कैसे ख़ुदा तुमको मिले सोच लो साहिब,
जब अपनी ख़ुदी को ही मिटा कर नहीं देखा
प्यार पर है टिकी हुई दुनिया, प्यार पूजा समझ के करिए आप
दुश्मनों से भी प्यार करिए आप, और बेफ़िक्र हो के रहिए आप।
आप औरों से रोज़ मिलते हैं,
एक दिन ख़ुद से भी तो मिलिए आप।
मौत और ज़िन्दगी में फ़र्क़ नहीं, जागने सोने के बहाने हैं

Presentation - The least that I can say is that, I have all praise for Mr. Goel's simplicity of expression. The profound Truth, in the hands of Mr. Goel touched the horizon of ecstasy. The popular saying goes, 'Small is beautiful'. But the poet's pen has made an innovation His verse establishes very impressively that simple may be equally beautiful. Not only beautiful but GOOD and TRUTH as well. Thus, the poet has interwoven Beauty, Truth and Good in the garland of his poetry. His simple diction has been perferctly successful in digging out the most precious gems, lying hidden in the gold-mine of Religion and Philosophy. He offers these gems to his readers Mr. Goel, your style is ravishingly bewitching.

हो जिनकी निगाहों में फ़क़त मंज़िलें मक़सूद,
उसने तो कभी मील का पत्थर नहीं देखा।

Go on . . . . . go on, my Hamdam, my elderly fellow traveller

'Few know how to be old.'

-La Rouchefoucauld

Perhaps, we both are one on this point , 'A man is old when he feels old'.

Ex. Lecturer in English and Principal
G.I.C. Bareilly

'प्रो0 रामप्रकाश गोयल जी' के श्री चरणों में समर्पित

रवीन्द्र 'अनगढ़'

श्री युक्त रहते सदा पायें जग में मान।
राम करे करते रहें माँ वाणी का गान।।
मन में लहरें मारता काव्य कला का प्यार।
प्रगट ज्ञान का हो सदा जीवन में उजियार।।
काश कभी मिलता हमें ऐसे गुरु का संग।
शत शत करते वन्दना बढ़ती नित्य उमंग।।
गोयल जी की लेखनी में है पैनी धार।
यही करेगी स्वप्न अब सब उनके साकार।।
ललक लेखनी की रहे, लिक्खें अगणित ग्रन्थ।
जीवन-दर्शन में रहे सदा सत्य का पन्थ।।

240 सिविल लाइन्स, चौपुला, बरेली, उ0प्र0

आशीष

गायत्री देवी सक्सेना

मुकुट बिहारी जयदेवी ने ऐसे लाल को पाया है,
अपने ज्ञान विद्वता के बल, जिसने नाम कमाया है।
कई पुस्तकें लिखकर उसने हिन्दी को समृद्ध किया
क्रूर काल ने उससे उसका सुत इकलौता छीन लिया।
असह्य हुआ जब ताप दुखों का तभी 'दर्द की छाँव' लिखी
रिसते घाव न रुक पाये जब उसने 'रिसते घाव' लिखी।
बुझी न प्यास तो उसने लिक्खा 'एक समन्दर प्यासा-सा'
समझ न पायी गायत्री दे कैसे तुम्हें दिलासा-सा।
यही सत्य है इस जग का जो आता है वो जाता है,
रहे 'टूटते-सत्य' हमेशा झूठा मौज मनाता है।
देती हूँ आशीष तुम्हें मैं, जीवन लम्बा पाओ तुम,
रहो अलंकृत सदा गुणों से, नाम अमर कर जाओ तुम।

अशोक नगर, मढ़ीनाथ, बरेली

प्रो0 राम प्रकाश गोयल -एक संस्था : एक व्यक्ति

राजेश गौड़

उन दिनों की बात है जब मैं सन् 1991 (अगस्त 3-8-1991) आकाशवाणी नजीबाबाद से पदोन्नति पर आकाशवाणी बरेली स्थानांतरित होकर आया था। नया शहर नये लोग। साथ ही उस समय आकाशवाणी केन्द्र बन रहा था, अतः मेरे लिये केन्द्र भी नया था। इसके अतिरिक्त उसके जल्द आरम्भ होने के भी आसार नहीं थे। ऐसे में एक नये शहर में समय काटना भी एक कठिन कार्य था। ले देकर दो तीन लोकल अखबार ही थे, जिनके माध्यम से शहर की गतिविधियों खासकर साहित्यिक एवम् सांस्कृतिक गतिविधियों का पता चलता था। उन दिनों यही मेरा कार्य था, यही मनोरंजन और अंजान शहर में लोगों से जुड़ने का एक मात्र माध्यम ये अखबार ही थे।

तकरीबन हर रोज़ एक नाम जो अखबारों में अक्सर देखने को मिल जाता था वो नाम था . . . राम प्रकाश गोयल का। सोचा कौन ऐसा मानव है जो अखबारों में छाया रहता है . . . तभी एक दिन खबर छपी कि अमुक तारीख को अमुक स्थान पर साहित्य अकादमी बरेली द्वारा एक कवि सम्मेलन होने जा रहा है, अतः जो काव्य पाठ करना चाहे वह, इसके संयोजक राम प्रकाश गोयल को अपना नाम दे सकता है।

यहाँ मैं ये स्पष्ट कर देना चाहता हूँ कि मैं कोई साहित्यकार नहीं हूँ, लेकिन उन लोगों में आता हूँ जो साहित्यकारों, कवियों, शायरों को लाइन में दूर खड़े होकर उन्हें सुनना और देखना चाहते हैं। हाँ ये और बात है थोड़ा बहुत उल्टा सीधा लिख लेता हूँ। कवि के लिये मंच बहुत ज़रूरी है। चूँकि खाली था अतः दो चार कविताओं को जन्म दे चुका था। अवसर मिल गया, अतः राम प्रकाश जी से मिलने की ठानी। सौभाग्य से मेरा पड़ौसी जो गोयल साहब को जानता था, मुझे उनके घर ले गया।

एक अस्त व्यस्त कमरे में क़ानून की किताबें, साहित्य की सुगंध, स्मृति चिन्हों का जमघट, बेतरतीब अभिनंदन पत्र वाले कमरे में जाकर बैठ गये। थोड़ी ही देर में एक भद्र पुरुष ने कमरे में प्रवेश किया . . . मैं राम प्रकाश गोयल . . . जी, मुझे राजेश गौड़ कहते है, आकाशवाणी बरेली केन्द्र में अभी कार्यक्रम अधिकारी के रूप में

नया–नया आया हूँ, एक कवि भी हूँ। राम प्रकाश जी ने झट से मुझे गले लगा लिया और आसन ग्रहण करने को कहा। फिर बोले राजेश जी कुछ सुनाइये। अंधे को चाहिये, दो आँखें। मैंने कविता सुनाई, फिर राम प्रकाश जी ने भी अपनी कुछ कवितायें सुनाईं। यह थी श्री राम प्रकाश गोयल से मेरी पहली मुलाक़ात। फिर इन मुलाक़ातों का दौर बढता ही चला गया। धीरे–धीरे मैं भी बरेली में जो नया था, थोड़ा पुराना होता गया। 17 जून 1993 को बरेली केन्द्र का उद्घाटन हो गया, और फिर कार्यक्रमों का दौर आरम्भ हुआ। समय जैसे पंख लगाकर उड़ता गया . . . तब से आज तक मेरा गोयल साहब से मुलाक़ातों का सिलसिला जारी है। इस मध्य राम प्रकाश जी को अनेक मंचों पर देखा और सुना और इसी आधार पर जबकि गोयल साहब से मेरे परिचय की आठवीं वर्ष गाँठ चल रही है, मैं कह सकता हूँ . . . ऐसा क़ानूनविद्, साहित्य का बेटा, अभिनय का ज्ञाता, अनेक साहित्यिक एवम् सांस्कृतिक संस्थाओं का संरक्षक बहुआयामी प्रतिभा का धनी रामप्रकाश गोयल स्वयं में एक संस्था है।

उस दिन प्रातः टेलीफोन की घंटी बजी। उधर से राम प्रकाश जी बोल रहे थे। बड़ी विनम्रता पूर्वक बोले . . . राजेश जी एक संस्था उनका अभिनंदन ग्रंथ निकाल रही है . . . मैंने कहा बहुत खुशी की बात है। मेरी ओर से अग्रिम बधाई स्वीकार करें . . . केवल बधाई से काम चलने वाला नहीं है, उसके लिये (अभिनंदन ग्रंथ) कुछ लिखिये . . . ठीक है मैं प्रयास करूँगा।

फोन रखकर बहुत देर सोचता रहा क्या लिखूँ। अचानक कुछ लाइनें आईं . . .

तुम 'प्रकाश' हो 'राम' नहीं हो, जीवन से महरूम नहीं हो।
तपकर बाँट रहे हो सपना, घावों से अन्जान नहीं हो।

साहित्य पथ का ये मनीषी जो निरन्तर साहित्य साधना में लगा है जिसे न अपने ''रिसते घावों'' की परवाह है न ही ''सच्चे प्रेम पत्रों'' की। वह साहित्य ''संमदर'' में ''प्यासा–सा'' है। अबाधगति से बढ रहा है और अब राहत पाने के लिये किसी किनारे पर लगने को छटपटा रहा है।

''मंज़िलें मिल जायेंगी चलते रहो बढ़ते रहो।
कारवाँ बन जायेगा लिखते रहो लिखते रहो।''

परन्तु अभिनंदन ग्रन्थ के पाठको, इस समय राम प्रकाश जी के साथ मुझे अपना एक संस्मरण याद आ रहा है, अगर नहीं लिखा तो बात दिल में रह जायेगी और ये गोयल साहब के साथ बेईमानी होगी।

गोयल साहब 14 सितम्बर हिन्दी दिवस पर 'विवेक गोयल पुरस्कार' से एक साहित्यकार का प्रति वर्ष सम्मान करते हैं। ऐसे ही एक कार्यक्रम में, मैं और हमारे केन्द्र निदेशक जनाब बशीर आरिफ़ आमंत्रित थे। हम लोग कार्यक्रम में कुछ देर से पहुँचे। बरेली कालेज का आडीटोरियम खचाखच भरा था। गोयल साहब एवम् अन्य विशिष्ट जन मंच पर विराजमान थे। कुछ ऐसा हुआ कि उस समय उनका न तो हमारी ओर ध्यान ही गया न ही धन्यवाद ज्ञापन में गोयल साहब ने हमारा उल्लेख किया। उस दिन मुझे राम प्रकाश जी का यह व्यवहार बहुत नागवार लगा। काफ़ी दुख हुआ। रातभर सोचता रहा कि उन्होंने ऐसा क्यों किया। सुबह उठा, गोयल साहब को फोन लगाया, उधर से बड़ी धीमी आवाज़ में गोयल साहब का थका स्वर सुनाई दिया . . मैंने कहा मैं गौड़ बोल रहा हूँ . . . कल आपने हमारे साथ अच्छा व्यवहार नहीं किया। हमारे केन्द्र निदेशक पहली बार आपके कार्यक्रम में शामिल होने गये और आपने कोई नोटिस नहीं लिया। मुझे आपसे सख्त नाराज़गी है . . . एक क्षण की चुप्पी के बाद गोयल साहब बोले "मुझे बहुत दुःख है। मैं आपसे क्षमाप्रार्थी हूँ। वास्तव में मुझसे बहुत बड़ी भूल हुई। कुछ स्थिति भी ऐसी थी कि आपके डायरेक्टर साहब को मैं इतनी दूर से देख नहीं सका . . . मैं उनसे भी (डायरेक्टर साहब) क्षमा माँग लूँगा।" बात ख़त्म हो गई।

कुछ समय बाद एक कार्यक्रम में मेरा उनसे मिलना हुआ। मुझे अभी तक उनसे नाराज़गी थी। . . . अचानक गोयल साहब अपने स्थान से उठकर मेरे पास आये। मेरे हाथों को अपने हाथों में लिया और बड़े भावुक अंदाज़ में बोले "आपने मुझे माफ़ कर दिया न" .

अब शर्मिंदा होने की मेरी बारी थी। मेरा मन लज्जा एवम् आत्मग्लानि से भर गया सोचा कितना बड़ा साहित्यकार तिस पर भी बुजुर्ग . . . पर कैसी विनम्रता है इस मनुष्य में। वास्तव में क्रोध आदमी को अंधा बना देता है। मन में सोचा और मन पश्चाताप से भर गया।

पाठक बन्धुओं, मैं अपनी ओर से उन्हें वही दे रहा हूँ वही लिख रहा हूँ, जो मैंने देखा, समझा और पाया। वास्तव में राम प्रकाश गोयल एक व्यक्ति का नाम नहीं, एक संस्था का नाम है।

कार्यक्रम अधिकारी, आकाशवाणी बरेली

जो क्षमा करदे वही तो है बड़ा-एक बड़ा और महान कवि : श्री राम प्रकाश गोयल

वीरेन्द्र प्रकाश गुप्त 'अंशुमाली'

प्यार मिलाता है, चाँद को चाँदनी से
सूरज को किरण से, फूल को खुशबू से
परवाने को शमअ से, आत्मा को शरीर से,
उसी तरह, जिस तरह तुम्हें मुझसे और
मुझे तुमसे मिलाया। (रिसते घाव -पृष्ठ-88)

'मछली को जल से, पपीहे को मेघ से और चकोर को चन्द्रमा से अति प्रेम होता है। उन्हें एक पल भी उनके बिना चैन नहीं मिलता। प्रियतम की चर्चा में एक अनूठी मिठास होती है। प्रीति की रीति अनोखी होती है। प्रेमी को अपने प्रिय का रूप, उसकी वाणी, उसके कार्य सभी कुछ प्रिय होते हैं। प्रेम तो प्रेमी का सर्वस्व है। प्रेम मानव हृदय की सर्वश्रेष्ठ अनुभूति है। 'प्रस्तावना-सच्चे प्रेम पत्र' पृष्ठ 7

वास्तव में कवि, दार्शनिक, वैज्ञानिक, भक्त, संत, और योद्धा इत्यादि दैविक गुणों से विभूषित अथवा विशेष शक्ति से भरपूर पुण्यात्मा होते हैं, जिनका महत्व उनके घर परिवार में सीमित नहीं रहता। वे पूरी जाति, धर्म, देश या विश्व की संपदा हैं। उन्हें सम्मान देकर हम स्वयं को ही गौरव मंडित करने का प्रयास करते हैं। हर अगली पीढ़ी का यह पावन कर्त्तव्य बनता है।

अपने एकमात्र पुत्र का दिवंगत हो जाना श्री राम प्रकाश गोयल के जीवन में झंझावत भर गया और संभवतः इस ज्वार ने उनका साक्षात्कार करुणा, शोक, संवेदना से करा दिया। एक संबल के रूप में उन्हें कविता या शायरी ने कुछ अलौकिक कार्य की प्रेरणा देकर उन्होंने कई काव्य कृतियों का सृजन द्वार खोल दिया। उन्होंने हमें काव्य-कृतियों यथा- 'टूटते सत्य', 'दर्द की छाँव में', 'आईना', 'सच्चे प्रेम पत्र', 'रिसते घाव', 'दिल और दिमाग़', 'एक समन्दर प्यासा-सा', प्रदान की। उनका कार्य क्षेत्र विशद है जिसकी चर्चा समय समय पर

विद्वानों द्वारा होती रहेगी

मुझे उनकी दो ग़ज़ल कृतियों 'रिसते घाव' और 'एक समन्दर प्यासा-सा' को देखने पढ़ने का सौभाग्य मिला। मिठास, करुणा, प्रेम में सराबोर ये ग़ज़लें हृदय को छूने में सफल हुई। वाक-पटुता एवं शिल्प के साथ कुछ न कुछ मर्म की बात कही जाती है जो सोचने-विचारने पर विवश करती है। फूल-काँटे, दोस्त-दुश्मन, उजाले-अँधेरे, पाप-पुण्य, सभी का द्वंद्व उद्वेलित करता है। 'रिसते घाव' के कुछ अंश देखिये-

जिन निगाहों में सिर्फ धोखा था,
उन निगाहों से प्यार कर बैठे। पृष्ठ -59
मैं जीतता भी तो शायद न इतना खुश होता
मिली है जितनी खुशी तुझसे हार जाने में। पृष्ठ 59
जिस तरफ़ भी हम गये तुम मिल गये,
हर जगह थीं याद की परछाइयाँ पृष्ठ-75

ग़ज़ल का मूल प्रेम है। इसकी विविध परिस्थितियाँ शिकायत, तड़प, निराशा, लगन, सभी भावनाओं को बड़ी बारीकी से अभिव्यक्ति मिली है।

ज़िंदा तो रहोगे मगर इतना भी समझ लो,
हमको ही नहीं खुद को भी बर्बाद करोगे पृष्ठ -74
यह इश्क़ आग है, लिक्खा है यह किताबों में,
मगर इस आग में ही ज़िंदगी निखरती है पृष्ठ -68

कवि कहता है कि 'इंसान की तरह समन्दर भी बहुत प्यासा है। कितनी नदियाँ पी चुका है अब तक और हमेशा पीता रहेगा। इंसान और समन्दर की यह प्यास ही 'एक समन्दर प्यासा-सा' में है। कुछ स्थितियाँ देखिये-

आप कितना भी बोलें सच फिर भी
दुनिया पे कुछ असर नहीं होता। -पृष्ठ -3
फूल के दामन में यारों खार ही बस खार हैं
फूल बन जीना यहाँ दुश्वार ही दुश्वार है।-पृष्ठ-4

कवि आज की विषम परिस्थिति में बदलाव लाने के लिए परस्पर-स्नेह, अमिट विश्वास, सहानुभूति, पर-दुख-कातरता इत्यादि गुणों को पनपाना चाहता है।

देखिये- भूल सकती नहीं उन्हें दुनिया,
टूटे दिल को जो जोड़ देते हैं। - पृष्ठ-15
सच को सुनने की नहीं हिम्मत यहाँ,
आप फिर भी सच को कहते जाइये। - पृष्ठ -23
जो क्षमा करदे वही तो है बड़ा
होती जीवन में सभी से भूल है। -पृष्ठ -42

कवि में राष्ट्रीय - चेतना भी भरपूर है-

दुश्मनों को देश में जो बुलाते हैं,
ऐसे देश द्रोहियों से मुक्ति चाहिये।
देश पर जो मिट सके वह व्यक्ति चाहिये। - पृष्ठ - 94

कवि ने कुछ छंद मुक्त रचनाएँ भी इन कृतियों में समाविष्ट की हैं देखिये -

'आप सुखी हैं न, बस यही तो मुझे दुख है
आप दुखी हो जाइये, मुझे सुख मिल जायेगा।
तुमने बहू को पंखे से लटकाया
फिर भी स्कूटर न मिला
अब तुम फाँसी पर लटको-
ऊपर स्कूटर तुम्हारा इंतजार कर रहा है।

कवि की प्रतिभा बहुमुखी है। उसकी कविता और शायरी में इन्द्रधनुषी छटा है। अन्य अनेक हिंदी प्रेमियों के स्वर में मैं भी यही प्रार्थना करूँगा कि कवि के 75 वें जन्म दिन पर यह अभिनंदन ग्रंथ कवि को शत-वसन्त, शत शरद जीवन का आशीष संबल प्रदान करे।

एक बार मैं पुनः कवि की इन पंक्तियों को दुहरा कर ही अपनी बात को विराम दूँगा।

'याद आई तो दे गई है गज़ल,
जब गयी दे गई रुबाई है।'

भावना के प्रसून भरे, अर्पण की चाह लिये।।

554 ख/ 113, अंशु आवास, विश्वेश्वर नगर,
आलमबाग़, लखनऊ - 226005

प्रो0 राम प्रकाश गोयल : कुछ चन्दन, कुछ कपूर

डॉ0 कुँ0 सतीश चन्द्रा

बड़े भाई राम प्रकाश बहुआयामी व्यक्तित्व के अधिपति हैं। वे विधि के मर्मज्ञ प्राध्यापक हैं, न्याय के लिए संघर्ष करने वाले अधिवक्ता भी। वे ललित कलाओं के प्रशंसक और पारखी हैं। स्वभाव और संस्कार से वे कलाप्रेमी और कलावन्तों के प्रेरक हैं। समाजसेवा और संगठन कला के मर्मज्ञ हैं। शिक्षाविद् के रूप में उनका योगदान अविस्मरणीय है। साहित्यकार के रुप में उनकी विशिष्ट पहचान है। संक्षेप में कहें तो वे व्यक्ति कम, संस्था अधिक हैं।

प्रो0 गोयल मूलतः बुद्धिजीवी हैं। जिन दिनों वे राष्ट्रीय स्वय सेवक संघ के प्रचारक थे, उन दिनों भी उनकी अभिरुचि मुख्यत बौद्धिक कार्यक्रमों में रहा करती थी और संघ शिक्षा वर्ग में उन्हें बौद्धिक प्रभार ही सौंपा जाता था। दिमाग के साथ ही दिल भी उन्हें बहुत संवेदनशील मिला है। वे दूसरों की समस्याओं में रुचि लेते हैं और उनके समाधान के लिए प्रयास भी करते हैं। उनकी विशाल हृदयता के कारण उनके परिचितों और प्रसंशकों का दायरा बहुत बड़ा है। वे जनसंघ के स्थापना काल से ही राजनीति में सक्रिय रहे। आज की भारतीय जनता पार्टी के अनेक वरिष्ठ नेता और अधिकारी उनके पुराने साथी हैं तथा उनके परामर्शो का सम्मान करते हैं। प्रो0 गोयल चाटुकारिता के घोर विरोधी हैं, यही कारण है कि आज की गुट–परस्त राजनीति में अपना कोई खेमा नहीं बना सके। इससे लाभ यह हुआ कि उनकी रचनात्मक प्रतिभा और क्षमता का लाभ समाज को भरपूर मात्रा में मिला।

प्रो0 गोयल कुशल वक्ता हैं। वे समयानुरूप विचार व्यक्त करते हैं जिनमें संगति, तार्किकता, प्रवाह और संबद्धता रहती है। उनकी भाषा प्रांजल और परिष्कृत होती है तथा अभिव्यक्ति श्रोता के मन मस्तिष्क को अभिभूत कर लेती है। विचार–गोष्ठियों में उनकी बात बड़े सम्मान और ध्यान से सुनी जाती है।

प्रो० गोयल ने आरम्भ में गद्य-सर्जना की। प्रेम-त्रिकोण पर आधारित उनके उपन्यास में पाठक के मन को आद्योपान्त बाँधे रखने की अपूर्व क्षमता है। वे सामाजिक समस्याओं की तह में घुसते हैं और पात्र की मनो रचना का चित्रण बडी मार्मिकता के साथ करते हैं। कविता और शायरी के क्षेत्र में उन्होंने बाद में पदार्पण किया और वहाँ भी उन्होंने **"He came, he saw and he conquered"** वाली बात को चरितार्थ किया। वे शिल्प से अधिक महत्त्व विषय-वस्तु **(Content)** को देते हैं। सादगी उनकी विशेषता है। उनके दिल से निकली पंक्तियाँ पाठक और श्रोता के दिल में घर कर लेती हैं।

इंसान के रूप में प्रो० गोयल बहुत मिलनसार, नेक दिल और हमदर्द व्यक्ति हैं। उनकी इस विशेषता ने उन्हें इतना लोकप्रिय बनाया है कि वे व्यक्ति कम, संस्था अधिक हो गये हैं। पुत्र के शोक ने उनकी संवेदनशीलता को बहुत व्यापक आयाम प्रदान किया है। उनके हृदय में कविता न जाने कहाँ छिपी थी। चि० विवेक गोयल की असामयिक मृत्यु ने उसे अवतरित होने में बड़ी भूमिका निभाई।

मैं प्रो० गोयल के दीर्घ जीवन की कामना करता हूँ और सर्वशक्तिमान प्रभु से प्रार्थना करता हूँ कि वे शतजीवी हों और लम्बे समय तक बरेली के बुद्धिजीवियों, शिक्षाविशारदों, कलासाधकों और समाजसेवियों का सक्रिय मार्गदर्शन कर एक स्वस्थ, उदार और समतायुक्त भविष्य की रचना में निर्णायक भूमिका निभाएँ।

सेकरेट्री, प्रबंध समिति
बरेली कॉलिज, बरेली

अदब के आईने में – प्रो0 रामप्रकाश गोयल

सुषमा मित्तल

गोयल साहब से मेरा परिचय अधिक पुराना नहीं है लेकिन वह स्वयं किसी परिचय के मोहताज नहीं हैं क्योंकि –

"A person is known by his deeds"

अल्प समय में उनके बारे में जो कुछ जानने और देखने का अवसर मिला उसके हिसाब से तो उनकी तारीफ़ में कुछ लिखना सूरज को रोशनी दिखाने जैसा है। अफ़सोस इस बात का हो रहा है कि यदि थोड़ी बहुत शायरी मुझे भी आती तो उनके व्यक्तित्व के हर पहलू को शेरो–शायरी से नवाज़ती।

श्री राम प्रकाश गोयल हिन्दी और उर्दू जुबानों की मिठास का खजाना हैं। उन्होंने उर्दू शायरी को अपने जिगर का खून पिलाकर उसकी आबरू को क़ायम रखा है। आपकी शायरी में जज़्बातों की महकी हुई माला है तो कहीं हादसों के मायूस रंग भी शामिल हैं। साहिबे मौसूफ़ ने अपने कलाम में वक्त और हालत को भी नज्म किया है जो आज के दौर की अक्कासी है। वे विधि विभाग के प्रवक्ता रहे हैं और आज भी वकालत में मसरूफ़ हैं। इतनी व्यस्त ज़िन्दगी के साथ साथ शायरी जैसी नाजुक विधा में महारत रखना उनकी शख़्सियत का मज़हर है।

उनकी ग़ज़लों के संकलन ''दर्द की छाँव में'', ''रिसते घाव'' और 'एक समन्दर प्यासा–सा व कैसेट 'आईना' को जब सुनने का मौक़ा मिला तो एहसास हुआ कि बरेली की सरज़मी पर उर्दू–हिन्दी के शायर श्री गोयल अदब की दुनिया में कमाल की हैसियत रखते हैं।

शायरी के अलावा उनके व्यक्तित्व का सार इस कथन में निहित जान पड़ता है –

"Be Courteous to all, Friend to one,
Enemy to none, sociable to most"

77, रामवाटिका, बरेली

व्यापक मानवीय संवेदना के धनी मित्रवर प्रो० रामप्रकाश गोयल

डॉ० विश्वनाथ शुक्ल, डी०लिट०

भारतीय तत्त्व-चिन्तन में कर्मयोग द्वारा शतायु होने की व्यवस्था है। अध्ययन मनन शील मनीषी जनों के असंख्य निर्देशन हमें प्राप्त होते हैं। मेरे अहैतुक सुहृद श्री रामप्रकाश गोयल के यशस्वी जीवन-आयाम को पूर्वजों की आदर्श परम्परा का एक उत्तम उदाहरण कहा जा सकता है। 30 जून 2000 को वे अपने 75 वर्ष पूरे कर 'अमृत महोत्सव के नायक' होंगे। मैं 'शतंजीवेम शरद' से आगे उनके लिए 'भूयश्च शरदः शतात्' की कामना करता हूँ।

श्री राम प्रकाश जी गोयल ने अध्ययन के बल पर वाग्देवी का अनुग्रह प्राप्त किया। मानवीय संवेदना की गहनता उनके व्यक्तित्व का अभिन्न अंग है। मानव के गुण-दोष-मय द्वन्द्वात्मक स्वरूप का आँकलन उनके लेखकीय व्यक्तित्व में हुआ है। उपन्यास 'टूटते सत्य' (1972) ग़ज़ल संग्रह "दर्द की छाँव" (1987), "रिसते घाव" (1992) नाटक 'दिल और दिमाग़' (1992) इसके प्रमाण हैं। उनकी रंगमंचीय अभिनय-क्षमता भारतीय इतिहास और समाज के प्रति उनके गहरे लगाव को दर्शाती है।

उनका अभिनव काव्य-संग्रह- 'एक समन्दर प्यासा-सा' - जिसमें ग़ज़लों की बहुलता है किन्तु जिसमें गीत, अतुकान्त कविताएँ, क्षणिकाएँ, नज़्म, क़तए और शेर भी महत्त्वपूर्ण स्थान रखते हैं, उनके सारस्वत प्रयास का मधुर फल है। उनका गद्य साहित्य उनके समाज चिन्तन की दिशा का बोधक है। उनकी भारतीय सभ्यता, धर्म, संस्कृति के प्रति गहरी आस्था उनके दैनन्दिन-जीवन और सामाजिक-सांस्कृतिक संस्थाओं और संगठनों के सतत-सम्पर्क से व्यक्त होती रहती है। वे निश्चय ही एक अभिनन्दनीय भारतीय नागरिक हैं।

श्रीवत्स, भारती नगर,
मैरिस रोड, अलीगढ़

प्रो0 राम प्रकाश गोयल कुछ अचर्चित प्रसग

डॉ0 ज्योति स्वरूप

सन् 1925 मेरा और प्रो0 रामप्रकाश गोयल दोनों का जन्म वर्ष है। हम दोनों एक ही दिन बरेली कालेज, बरेली से 1985 में सेवानिवृत हुए। बरेली कॉलेज हम दोनों की विद्या कर्मस्थली रही।

9 अगस्त 1942 को 'भारत छोड़ो' आन्दोलन में बरेली कालेज के छात्रों का एक जुलूस 'अंग्रेजो भारत छोड़ो' का नारा लगाते हुए शहर के अनेक मार्गों से होता हुआ शिवाजी मार्ग पहुँचा। गोयल साहब और मैं भी इस जुलूस में सम्मिलित थे।

1942 में राष्ट्रीय स्वयं सवेक संघ की शाखा बरेली में आरम्भ हुई। श्री गोयल संघ की शाखा के प्रथम पंक्ति के सक्रिय कार्यकर्ता थे तथा वे मेरे प्रेरणास्रोत भी थे। मैं 1943 में संघ में शामिल हुआ। शुरू के स्वयं सेवकों में प्रमुख नाम सर्वश्री वीरेन्द्र वर्मा, राम प्रकाश गोयल, स्वर्गीय गिरवर सिंह, कैलाश नाथ गोयल, पं0 राम सनेही शर्मा, रामनारायन आर्य, महाशय रामधुन, रामनरायन तथा मैं हैं। मेरी गोयल साहब से मैत्री दिन प्रतिदिन प्रगाढ़ होती गयी।

1943 व 1944 में गोयल जी ने मेरठ से संघ के आफीसर्स ट्रेनिंग कैम्प (ओ0टी0सी0) में प्रशिक्षण का प्रथम व द्वितीय वर्ष का कोर्स पूरा किया। संघ का तृतीय वर्ष का कोर्स नागपुर से पूरा करने के लिए 1945 में बरेली से श्री गोयल तथा श्री वीरेन्द्र वर्मा नागपुर गए।

उन्होंने सन् 1946 में बरेली कॉलेज से बी0एस–सी0 की परीक्षा उत्तीर्ण की। वे संघ की विचारधारा तथा आदर्शों से अत्यधिक प्रभावित थे। अतः बी0एस–सी0 करने के बाद सन् 1946 में ही वे संघ का प्रचार करने के लिए राजस्थान गए। पाँच वर्षों तक वे राजस्थान में संघ के प्रचारक रहे। इसी दौरान 1951 में उन्होंने बीकानेर से एल–एल0बी0 की परीक्षा उत्तीर्ण की। राजस्थान की जलवायु उन्हें रास न आई तथा अत्यधिक स्वास्थ्य गिर जाने के कारण 1951 में उन्हें मजबूरन बरेली वापस आना पड़ा। राजस्थान के अनेक प्रमुख कार्यकर्ता उनके ही बनाए हुए स्वयं सेवक हैं। भारत सरकार के गृह मंत्री श्री लालकृष्ण आडवाणी और श्री गोयल राजस्थान में कई वर्षों तक साथ साथ प्रचारक रह चुके हैं।

बरेली के मूर्धन्य फौजदारी के वकील तथा नगर के श्रेष्ठ कवि

और शायर स्व0 बाबू रामजी शरण सक्सेना के शिष्यत्व में श्री गोयल ने 1951 में वकालत आरम्भ की। अपने गुरु को ही वे अपनी काव्य रुचि का स्रोत मानते हैं।

1952 में जब बरेली में भारतीय जनसंघ की स्थापना हुई तो गोयल साहब उसके प्रथम मन्त्री मनोनीत हुए।

बरेली के एक सुशिक्षित एवं सुसंस्कृत परिवार की पुत्री श्रीमती सरला गोयल से 1952 में आपका विवाह हो गया। मुझे अच्छी तरह याद है कि गोयल साहब के निवास पर हर मास कोई न कोई काव्य अथवा विचार गोष्ठी होती थी। बरेली के प्रमुख साहित्यकार सर्वश्री निरंकार देव सेवक, होरीलाल शर्मा 'नीरव', सतीशचन्द्र संतोषी, किशन सरोज, श्रीमती ज्ञानवती सक्सेना, कृष्णकान्त खण्डेलवाल, धर्मपाल गुप्त 'शलभ' आदि गोयल साहब के अति निकट थे। प्रख्यात कवि नीरज, भारत भूषण, सोम ठाकुर तो उनके अभिन्न मित्र हैं। गोष्ठियों की व्यवस्था उनकी पत्नी श्रीमती सरला गोयल बड़ी आत्मीयता से किया करती थीं।

गोयल साहब 1968 में बरेली कॉलेज के विधि (लॉ) विभाग में प्रवक्ता नियुक्त हुए तथा 17वर्षों तक विद्यार्थियों को क़ानून की शिक्षा दी। आज के अनेक वकील और न्यायाधीश उनके छात्र रह चुके हैं।

आपकी दो युगल प्रियदर्शी पुत्रियाँ कु0 पद्मिनी व कु0 रागिनी मेरी छात्रा रह चुकी हैं। इन दोनों में इतना अधिक साम्य था कि मैं कभी पद्मिनी को रागिनी और रागिनी को पद्मिनी समझता रहा। रूप और गुण में दोनों 'पद्मिनी' की श्रेणी में आती थीं और अपने नाम को सार्थक करतीं। वे जहाँ भी गयी होंगी, अपने घर में उजियारा कर रही होंगीं। परमेश्वर की असीम अनुकम्पा से चार पुत्रियों के बाद 1966 में गोयल साहब के घर में एक कुल दीपक का जन्म हुआ। पिता के अनुरूप ही बालक में 'होनहार बिरवान के होत चीकने पात' के गुण प्रस्फुटित हो रहे थे। इस मेधावी पुत्र विवेक ने हाईस्कूल की परीक्षा में 80 प्रतिशत अंक प्राप्त किए थे।

मेरी यह लेखनी स्वतः बार-बार रुक रही और आगे लिखने का साहस नहीं जुटा पा रही है। दुखी मनुष्य से दुख का कारण पूछने पर वह और ज़ोर से रोने लगता है। रामप्रकाश जी के इस किशोर पुत्र को एक भयंकर बीमारी ने जकड़ लिया और मात्र साढ़े सोलह वर्ष की आयु में काल के क्रूर हाथों से वह न बच पाया तथा 14 फरवरी 1983 को चिरनिद्रा में सो गया। गोयल साहब और उनके परिवार पर विपत्ति का पहाड़ टूट पड़ा। लगभग एक वर्ष तक तो वे विक्षिप्त से रहे।

समय बड़े - बडे घावों को भर देता है। एक मात्र पुत्र का दारुण दुःख गोयल साहब को कवि बना गया और उनके अन्दर से फूट पड़ी ''दर्द की छाँव में'', ''रिसते घाव'' तथा 'एक समन्दर प्यासा-सा'।

अपने पुत्र की स्मृति में उन्होंने छात्र छात्राओं की कई वाद-विवाद प्रतियोगिताओं का आयोजन किया। किशोर आयु के छात्रों की क्रिकेट प्रतियोगिता भी आयोजित की।

स्वयं साहित्यकार होने के नाते गोयल साहब ने 1990 में 'विवेक गोयल साहित्य पुरस्कार समिति बरेली' की स्थापना की। यह समिति हर वर्ष हिन्दी दिवस 14 सितम्बर को एक साहित्यकार का अभिनन्दन कर उसे सम्मानित एवं पुरस्कृत करती है। यह आयोजन अति अनुशासित एवं सुनियोजित ढंग से प्रतिवर्ष सम्पन्न होता है। आयोजनों के सफल होने का रहस्य गोयल साहब की विवेकशील कार्यप्रणाली है। वे छोटी से छोटी बात का ध्यान रखते हैं। मैं अनेक वर्षों तक समिति का अध्यक्ष रह चुका हूँ। यह समिति अब तक देश के दस साहित्यकारों को सम्मानित कर चुकी है।

गोयल साहब का शिक्षा प्रेम उनके द्वारा सृजित किए गए अनेक स्वर्ण पदक हैं। उन्होंने बरेली कालेज में दो, साहूराम स्वरूप महिला महाविद्यालय में तीन, कन्या महाविद्यालय आर्य समाज में तीन तथा महाराजा अग्रसेन महाविद्यालय में दो स्वर्ण पदक स्थापित किए हैं जो प्रतिवर्ष मेधावी छात्र-छात्राओं को प्रदान किए जाते हैं।

बचपन से ही गोयल साहब को नाटकों में अभिनय का शौक रहा है। उन्होंने अनेक टेलीफिल्मों में न्यायाधीश और प्रिंसिपल का अभिनय किया है। उनके बहुआयामी क्रियाकलापों का 'कैनवस' इतना रंग बिरंगा और विस्तृत है कि उनका उल्लेख करना तो दूर रहा, उनकी गणना करना भी कम परिश्रम का कार्य नहीं। ऐसा लगता है कि उन्होंने जीवन के सब रूप देखे और भुगते हैं। वे अनेक बीमारियों और आपदाओं से घिरे रहे। उनके हाथ-पैरों की सात बार हड्डियाँ टूट चुकी हैं। 1998 में उनके हृदय की बाईपास सर्जरी हो चुकी है। अनेक अन्य भयंकर बीमारियों ने भी उन्हें दबोचना चाहा किन्तु उनकी जिजीविषा और दृढ़ संकल्प शक्ति ने सबको पराजित किया।

वे प्रेम की भावना को सबसे महान मानते हैं। वे स्वयं प्रेम की साक्षात प्रतिमा हैं। उनके सफल जीवन और सुख शान्ति तथा शतायु की कामना करता हूँ।

पूर्व-विभागाध्यक्ष हिन्दी, बरेली कॉलेज, बरेली

एक रात : प्रो0 गोयल जी के साथ

डॉ0 महेश 'दिवाकर'

सुमन खिलते हैं, मुस्कराते हैं, और अल्पकाल तक ही सही अपनी आभा बिखेर कर छुप जाते हैं। मानव जीवन भी एक फूल की भाँति है, जहाँ मनुष्य पुष्पवत आता है और अपने कार्यों की आभा बिखेरकर छुप जाता है। पुष्प की सार्थकता अपने चहुँ ओर फैले परिवेश को सुगन्धित करना है। भले ही, थोड़ी देर के लिए ही सही, लेकिन अल्प समय में ही सुमन अपनी अस्मिता, उपस्थिति का सुन्दरतामय एहसास अपने परिवेश को करा जाता है।

ऐसा ही एक संयोग एक रात्रि के लिए मुझे मिला- हिन्दी साहित्य में विकसित एक समुन के साथ रात्रि बिताने का और वह सुमन है – प्रो0 राम प्रकाश गोयल जो अपनी मधुरता, व्यावहारिकता और सादगी पूर्ण जीवन से साहित्य कुंज को आभामय बना रहा है।

देखने में सौम्य स्वभाव, विनीत, गौर रंग, हँसमुख चेहरा और चेहरे पर लगभग 75 वसन्तों और उतने ही पतझरों की समन्वित दृष्टि लिये। आने-जाने वालों के स्वागत करने को आतुर, उनकी पीडा जानने को आकुल, उनका मन और नैन विह्वल रहते हैं। यह बात उनको देखकर और उनके साथ कुछ पल गुज़ारकर स्वयं अनुभव की जा सकती है।

सच्चे अर्थों में प्रो0 रामप्रकाश गोयल एक सच्चे इन्सान हैं इन्सान इस मायने में कि वे प्रत्येक उम्र के अपने उस मिलने वाले को अपना मित्र समझकर ही बात करते हैं। वे कहते हैं – 'मित्रता के अतिरिक्त मेरा अन्य किसी से कोई रिश्ता नहीं है। मुझसे मिलने वाला हर व्यक्ति, वह किसी भी आयु का हो, मेरा मित्र है। मेरे ऐसा क्यों ? प्रश्न पूछने पर वह तपाक से उत्तर देते हैं – "मित्र से कहीं कुछ छिपाया जाता है। मित्र से कहीं कुछ पर्दा नहीं होता और मित्र ही मित्र की पीड़ा जानने का सच्चाई से उत्सुक रहता है। यही कारण है कि मेरे पास आने वाला हर व्यक्ति वह किसी भी उम्र का क्यों न हो वह मेरे लिए मित्र होता है। यह बात कहने में बड़ी सरल और अच्छी लगती है किन्तु व्यावहारिक स्तर पर अत्यन्त कठिन है लेकिन

यह सच है कि मैंने प्रो0 राम प्रकाश गोयल जी को अपनी इसी भावना के अनुसार जीवन जीते व्यावहारिकता के धरातल पर देखा है।

उनके पास ठहरकर मुझे यह नहीं लगा कि मैं पहली बार ही उनके पास ठहर रहा हूँ। मैंने देखा कि वे छोटी–छोटी बात का भी पूरी दृष्टि से ध्यान रख रहे थे। मुझे लगा कि आज भी दुनिया में अच्छे इन्सानों की कमी नहीं है। प्रो0 गोयल को देखकर एक आशा बँधती है, विश्वास होता है दुनिया के फिर से सजने–सँवरने का।

प्रो0 रामप्रकाश गोयल एक समर्थ रचनाकार हैं। उनकी पुस्तकें मुझे पढ़ने को मिलती रही हैं। 'दर्द की छाँव में', 'एक समन्दर प्यासा–सा', 'टूटते सत्य', 'सच्चे प्रेम पत्र', इन्हें पढ़कर अथवा इनसे गुज़रकर मैंने जाना कि प्रो0 गोयल के हृदय में पीड़ा का अथाह सागर है। जिसमें दर्द का खारा जल है जो कोई पीना नहीं चाहता लेकिन बावजूद इनकी पीड़ा का यह सागर सबको मोहता है। मन में व्यापक भावनाओं को जन्म देता है। ये वही भावनाएँ हैं जो मानवता को किसी न किसी रूप में सजाती–सँवारती हैं। वे अपने हृदय की पीडा किसी के सामने नहीं रखते हैं, अपितु मधुर मुस्कान के द्वारा सबको कुछ न कुछ देते रहते हैं। यही बात उनके काव्य की संवेदना पर भी लागू होती है। उसमें दर्द है, पीड़ा है, वेदना है, तपन है लेकिन जब कोई पाठक उनकी रचनाओं को पढ़ता है तो उसमें स्वयं को भी बिम्बित, चित्रित पाकर सन्तोष एवं आनन्द की अनुभूति करता है। वास्तव में प्रो0 राम प्रकाश गोयल के रचनाकार की यह विशिष्टता है कि वे जानते हैं कि पाठकों को क्या चाहिए। इसकी उन्हें बखूबी पहचान है और अपनी रचनाओं में उन्होंने पीड़ाओं के उच्च सोपानों को आत्मसात कर के अपने पाठकों को सुख दिया।

आइए। अब उनके व्यक्तित्व के एक अन्य आयाम पर दृष्टिपात करें। वे एक शिक्षक हैं, भले ही वे सेवानिवृत हो गये हैं लेकिन आज भी उनका शिक्षकत्व स्पष्ट दिखाई देता है। शिक्षक भी क़ानून के हैं। उनका यह क़ानून घर से लेकर कॉलेज और कॉलेज से लेकर कचहरी और फिर घर तक उनके साथ साये की तरह रहता है जो सिखाता है हमें संयम, अनुशासन, तर्क और व्यवहार। मैंने देखा है कि उनके खाने–सोने आदि का समय सुनिश्चित है। उन्हें क्या खाना है, वह सुनिश्चित है। संयम और अनुशासन उनके नैत्यिक जीवन में सहज

मिला है। इनके बिना वे एक कदम भी आगे नहीं चलते हैं। कानून का यह शिक्षक आज भी विद्यार्थी है। अब आजीविका के रूप में तो नहीं लेकिन दूसरों के लिए सहज एवं निःशुल्क मदद करने को सहज तत्पर रहता है। यही कारण है कि वे अपने व्यवहार के कारण अपने शिष्य वर्ग में अत्यन्त लोकप्रिय शिक्षक माने जाते हैं। उनके शिष्यो की लम्बी कतार है। एक वकील के रूप में वे सफल हैं और अपने कार्य को बड़ी ही ज़िम्मेदारी से निभाते रहे हैं।

प्रो० राम प्रकाश गोयल में एक कलाकार का व्यक्तित्व भी समाहित है। कई नाटकों में उन्होंने जीवन्त अभिनय किया है। उनके टी०वी० सीरियलों में उन्होंने न्यायाधीश और कॉलेज के प्रिंसिपल का अभिनय किया है। उनके उपन्यास 'टूटते सत्य' पर अधारित टी०वी० सीरियल के लिये विचाराधीन है। अभिनय के क्षेत्र में बहुत कुछ करने की चाह एवं ललक उनके चेहरे पर स्पष्ट दिखाई देती है। पर इस मानव जीवन की भी अपनी सीमाएँ हैं। यदि उन्होंने केवल अभिनय के क्षेत्र को ही चुना होता, तो आज बहुत प्रतिष्ठित अभिनेता होते। लेकिन क्या करें, उनके अभिनेता का यह व्यक्तित्व मात्र एक शिक्षक, और साहित्यकार ही बनकर रह गया। संभवतः उनके जीवन की विषादमयी परिस्थितियों ने उन्हें ये सब करने से रोक दिया।

सुबह को जब मैं चलने लगा तो रात्रि में उनके साथ बिताए वे जीवन्त क्षण एक-एक करके मेरे मस्तिष्क पटल पर उभरने लगे। काश मैं उनके साथ एक-दो दिन और रुका होता।

अन्ततः इस निस्पृह निरहंकारी, सर्वात्मयी और हँसमुख इन्सान के बहुआयामी व्यक्तित्व को मैं नमन करता हूँ। मुझे आज भी उनके साथ बिताये क्षण जीवन्त चेतना एवं स्फूर्ति प्रदान करते हैं। आयु के इस मोड़ पर भी वे मस्त हैं, फक्कड़ हैं। परमेश्वर से मैं उनकी स्वस्थ दीर्घायु की प्रार्थना करता हूँ।

डॉ० महेश 'दिवाकर'
अध्यक्ष, रीडर एवं शोध निदेशक
जी०एस०एच० (पी०जी०) कालेज
चाँदुपर (बिजनौर) उ०प्र०

मेरे बाल सखा – श्री राम प्रकाश गोयल

जगदीश बल्लभ अग्रवाल

हमारा परिवार 'नमक वालों का परिवार' के नाम से जाना जाता था। उम्र के अनुसार मैं उनसे केवल सात माह बड़ा हूँ। होश सभालते ही चुंगी के स्कूल में हमारा दाखिला हुआ। छुट्टी में गुल्ली-डंडा, लुका-छिपी, चोर-सिपाही के खेल और समय के साथ फिर गेंद-बल्ला। सरकारी स्कूल में दाख़िले के बाद घर में ताश, कैरम, लूडो, साँप-सीढी और बाहर मैदान में हाकी, क्रिकेट और फुटबाल। सिनेमा का भी मेरे सखा को बहुत शौक़ था। हमारी दोस्ती में व्यवधान तब पड़ा जब उन्होंने 1942 में इण्टर कक्षा में होते हुए राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की शाखा में जाना आरंभ कर दिया। संघ उनके ऊपर हावी होता गया। वह विज्ञान के छात्र थे, मगर साहित्य की ओर उनका बहुत रुझान था। शरत चन्द्र, बंकिम चन्द, प्रेम चन्द, निराला, बच्चन, महादेवी द्वारा लिखी सभी पुस्तकें उन्होंने पढ़ डालीं।

1941-42 में हमने कवि दरबार के आयोजन किए जिसमें उन्होंने पं0 माखन लाल चतुर्वेदी व पं0 सुमित्रानन्दन पंत का जीवन्त अभिनय किया और उनकी बहुत सराहना हुई। राम प्रकाश पढ़ाई में बहुत तेज़ थे और अपने ही साथियों को बड़े प्यार से पढ़ाया करते थे। 17 वर्ष की उम्र में ही उन्होंने 'बाल परिषद्' नामक एक संस्था बनाई, जिसमें हर सप्ताह किसी विषय पर डिबेट अथवा भाषण प्रतियोगिता होती थी। प्रायः विद्वानों को बुलाकर उनके विचारों से हम सभी लाभान्वित होते थे।

वे राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के बरेली के प्रथम पंक्ति के प्रमुख कार्यकर्ताओं में से एक थे। 1942 से 1945 तक उन्होंने राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ की ट्रेनिंग ओ0टी0सी0 का प्रथम, द्वितीय तथा तृतीय वर्ष (नागपुर) से किया। नागपुर से तृतीय वर्ष करने वाले 1945 में केवल वे और उनके दूसरे मित्र वीरेन्द्र वर्मा ही थे।

1946 में उन्होंने बरेली कालेज से बी0एस-सी0 पास कर लिया और वे संघ के पूर्णकालिक प्रचारक बनकर राजस्थान चले गए।

वे पाँच वर्ष तक वहाँ प्रचारक रहे। इसी दौरान उन्होंने राजस्थान से एल-एल0बी0 की डिग्री प्राप्त की। 1951 में बरेली वापस आकर उन्होंने वकालत शुरू की।

वकालत जैसे रूखे कार्य के होते हुए भी साहित्यिक और बौद्धिक गतिविधियों में उनकी विशेष रुचि थी। 1956 में उन्होंने अपने अनेक मित्रों के सहयोग से 'सैटर्डे क्लब' (शनिवारीय क्लब) की स्थापना की। इस क्लब में बारी-बारी से सदस्यों के घर पर हर शनिवार को गोष्ठी होती थी जिसमें साहित्यिक, राजनीतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक सभी विषयों पर खुलकर ज़ोरदार परिचर्चा और बहस होती थी। रूस के साहित्यकार वारिन्निकोव, देश के रक्षा मंत्री कृष्ण मेनन, 'मधुशाला' के रचयिता हरिवंशराय 'बच्चन' जैसी विभूतियों ने 'सैटर्डे क्लब' में पधारकर अपने विचार व्यक्त किए थे। अकेले राम प्रकाश के बल पर अनेक वर्षों तक 'सैटर्डे क्लब' चला क्योंकि उनमें अनुशासन और संगठन की क्षमता जन्मजात थी। मैं भी इस 'सैटर्डे क्लब' का सक्रिय सदस्य था। यह क्लब पूर्णतः बौद्धिक था। बरेली की प्रथम साहित्यिक संस्था 'आलोक' की स्थापना भी राम प्रकाश के सहयोग से हुई। हर वृहस्पतिवार को साहित्यिक चर्चा के लिए हम लोग बैठा करते थे। मुझे आज भी याद है कि 1964 में जब राम प्रकाश ने त्रिकोण प्रेम पर आधारित अपने मनोवैज्ञानिक उपन्यास "टूटते सत्य" लिखना शुरु किया, तो वे जितना उपन्यास लिखते जाते थे उतना 'आलोक' की गोष्ठियों में सुनाते जाते थे।

हम लोग उनसे पूछते थे कि इसके आगे की कथा वस्तु क्या है, तो वह कहते थे 'मुझे खुद नहीं पता कि मैं आगे क्या लिखूँगा। जो अन्दर से आता जाएगा, वही लिखता रहूँगा।' उनके उपन्यास पर खुली चर्चा होती थी और वह धैर्य और एकाग्रता से हर सदस्य की बात सुनते थे।

चार पुत्रियों के बाद उनके यहाँ 1966 में एक पुत्र रत्न आया। घर और परिवार में सब खुशी से नाच उठे। नाम रक्खा 'विवेक'। जैसा नाम था वैसा ही मेधावी व प्रतिभाशाली था वह बच्चा। मगर राम प्रकाश के इस सुख को पता नहीं किसकी नज़र लग गई। 14 फरवरी 1983 को मात्र साढ़े सोलह वर्ष की उम्र में वह बालक उसको रोता

विलखता छोड़कर कभी न जागने वाली नींद में हमेशा–हमेशा के लिए सो गया।

अपने इस कलेजे के टुकड़े के विरह ने राम प्रकाश को कवि बना दिया और उनके अन्दर से प्रकट हुआ उनका ग़ज़ल संग्रह 'दर्द की छाँव में' और उसके बाद तो उनकी लेखनी चल निकली। 'रिसते घाव', 'सच्चे प्रेम पत्र', कैसेट 'आईना', 'आकाशवाणी वार्ताएँ', नाटक 'दिल और दिमाग' और ग़ज़ल संग्रह 'एक समन्दर प्यासा–सा' उन्होंने लिखे।

अपने परिश्रम, लगन, मिलनसारी, हँसमुख स्वभाव, दूसरे के दर्द को अपना दर्द बनाना, सरलता, स्पष्टता आदि अनेक गुणों के कारण उन्होंने अपना एक स्थान समाज में बनाया है। मुझे गर्व है अपने इस बाल सखा पर और गर्व है मुझे अपने पर भी कि वह मेरा बाल सखा है। आज भी जब कभी मैं उससे मिलता हूँ तो उसी प्यार, मुहब्बत व खुलूस के साथ हम दोनों मिलते हैं और अपनी बचपन की यादों में खो जाते हैं।

राम प्रकाश एक कुशल वक्ता हैं। हमारे रोटरी क्लब में उसने कई बार विद्वतापूर्ण वार्ताएँ दी हैं और सभी सदस्यों को बहुत प्रभावित किया है। अपने जिगरी दोस्त की शतायु की कामना करता हूँ।

पूर्व अध्यक्ष रोटरी क्लब
एच–5 बी, रामपुर बाग बरेली

प्रो0 राम प्रकाश गोयल : जैसा मैंने पाया

वीरेन्द्र वर्मा, एडवोकेट

श्री राम प्रकाश गोयल से मेरा सम्बन्ध विशेष रूप से 1942 में बरेली कालेज के छात्र जीवन में हुआ जब हम दोनों की मित्रता ने प्रगाढ़ता का रूप लिया और हम दोनों ही राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के स्वयं सेवक बन गये। हम दोनों ने राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ में बड़ी निष्ठा से कार्य प्रारम्भ किया। वर्ष 1943 में श्री गोयल ने मेरे साथ ही संघ की ओ0टी0सी0 की प्रथम वर्ष एवं 1944 में द्वितीय वर्ष तथा 1945 में नागपुर से संघ ओ0टी0सी0 का तृतीय वर्ष का शिक्षण प्राप्त किया। वर्ष 1946 में श्री गोयल ने बी0एस-सी0 की परीक्षा उत्तीर्ण की और वह संघ के पूर्णकालिक कार्यकर्ता प्रचारक बनकर राजस्थान गये। वे वहाँ 1951 तक (5 वर्ष) रहे। 1951 में बीकानेर से लॉ पास किया। 1948 में गाँधीजी की हत्या के बाद जब संघ पर प्रतिबंध लगा तो वे राजस्थान में 6 मास तक भूमिगत रहे और पुलिस की पकड़ में नहीं आए।

बाल्यकाल से ही वह सौम्य स्वभाव के कारण सभी मित्रों में सम्मान की दृष्टि से देखे जाते थे। पढ़ाई में उनकी विशेष रुचि थी। बचपन में मिलनसार और आत्मीयता की जीवन्त मूर्ति रहे। प्रखर बुद्धि एवं बहुमुखी प्रतिभा सम्पन्न श्री गोयल जीवन के हर क्षेत्र में अपनी प्रतिभा का प्रकाश फैलाने में सफल सिद्ध हुए हैं।

आपको वकील कहा जाये या साहित्यकार या समाजसेवी यह कहना कठिन है। वकील होने के साथ-साथ आपने विधि विभाग बरेली कॉलेज में प्रवक्ता के नाते 17 वर्ष तक शिक्षण कार्य भी किया है।

माँ सरस्वती के भण्डार में श्रीवृद्धि आपके द्वारा ग़ज़ल, कविता, गीत, मुक्तक, उपन्यास, नाटक, पत्र-लेखन आदि अनेक विधाओं के माध्यम से हुई है।

शैक्षिक क्षेत्र में भी आप किसी से पीछे नहीं हैं। बरेली कॉलेज, साहू रामस्वरूप स्नातकोत्तर महिला महाविद्यालय, कन्या महाविद्यालय

आर्यसमाज भूड़, बरेली तथा महाराज अग्रसेन कॉलेज, बरेली में आपने छात्र/ छात्राओं के उत्साहवर्द्धन के लिए दस स्वर्ण पदक /पारितोषिक सृजित किए हैं और उनकी निरन्तरता के लिए अर्थ की समुचित व्यवस्था की है।

अध्यात्मिकता से भी आपका सीधा सम्बन्ध है। आपने गीता के दर्शन–कर्म करो फल की इच्छा मत करो, पर पूर्ण आस्था एवं विश्वास रखकर जीवन जिया है।

राजनीतिक क्षेत्र से भी आप अछूते नहीं है। बरेली में भारतीय जनसंघ जो वर्तमान में भारतीय जनता पार्टी है, के वर्ष 1951 में आपने जिला महामंत्री के नाते उत्तरदायित्व निभाया है।

आप एक लगनशील व्यक्ति हैं और प्रत्येक कार्य को व्यवस्थित एवं अनुशासन से करने की प्रतिभा आपमें विद्यमान है।

अपने बाल सखा श्री गोयल के बारे में जो कुछ कहा जाये वह कम है। जीवन का ऐसा कौन सा क्षेत्र है जिसमें आपका योगदान नहीं है। आकाशवाणी और दूरदर्शन पर आपकी वार्तायें तथा काव्य पाठ के प्रसारण सभी को आलोकित करते रहते हैं।

मैं अपने इस परमप्रिय मित्र के दीर्घ जीवन की हृदय से कामना करता हूँ।

89–क़ानूनगोयान, भूड़,
बरेली

महान व्यक्तित्व के धनी – प्रो0 रामप्रकाश गोयल

राजेन्द्र कुमार कोहरवाल
एडवोकेट

माँ भारती को प्रणाम, माटी हमें है चन्दन
माटी हमारी पूजा, माटी हमारा वन्दन।

देशवासियों के अन्तःकरण में देश के प्रति इसी भावना को जागृत करने व भारतीय जीवन शैली की रक्षा में सतत तत्पर राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के वरिष्ठ स्वयंसेवक रामप्रकाश जी गोयल एडवोकेट की रची हुई ग़ज़लें, गीत, कविताओं का संग्रह "एक समन्दर प्यासा–सा" को पढ़कर एक अजीब प्रकार की अनुभूति व प्रसन्नता हुई।

वे विज्ञान के छात्र रहे। उनके पितृजनों की आकांक्षा रही होगी कि उनका बेटा इन्जीनियर अथवा विज्ञान का प्रोफ़ेसर बनेगा पर उनका सम्पर्क तो राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ से बरेली जिले में सन् 1942 में शाखा स्थापित होने पर माननीय वसन्त राव ओक (प्रांत प्रचारक) से हो गया और राष्ट्र सेवा व समाज सेवा के निमित्त बी0एस–सी0 के उपरान्त 1946 में पाँच वर्ष के लिए पूर्णकालिक प्रचारक बनकर वह संघ कार्य करने के लिये राजस्थान चले गये। वैसे तो संघ के प्रचारक का जीवन कठिनाइयों से भरा हुआ जीवन होता है पर संघ के प्रारम्भिक काल का प्रचारक जीवन अत्यधिक कठिनाइयों का था। परिवार से दूर संध कार्य को प्राथमिकता देते हुए उन्होंने एल–एल0बी0 की पढ़ाई भी जारी रखी व राजस्थान विश्वविद्यालय (बीकानेर) से एल–एल–बी0 की परीक्षा 1951 में उत्तीर्ण की।

1951 में पारिवारिक जीवन में वापस आने के उपरान्त भी उनके हृदय में देश और समाज के प्रति ज्योति–ज्वाला निरन्तर प्रज्वलित है। व्यवसाय के रुप में वकालत और साहित्यिक क्षेत्र में उनका योगदान भी सदा स्मरणीय रहेगा।

उनके द्वारा लिखी सभी रचनाओं की भाषा और शैली बहुत ही

सरल व सामान्य जन के समझ में आने वाली है। कहावत है कि अगर कोई साहित्यकार, कवि, उपन्यासकार अपना पांडित्य दिखाने के लिए अपनी रचनाओं में कठिन से कठिन शब्दों का प्रयोग करता है तो वह साहित्यकार अपने को समाज से दूर रखता है। राम प्रकाश जी ने अपनी कृतियों में सीधी सादी सरल भाषा, हिन्दी, उर्दू के शब्दों को सरल रूप में समावेश किया है और वह जन साधारण के साहित्यकार के रूप में अपनी छवि बनाने में सफल हुए हैं।

"एक समन्दर प्यासा-सा" में देश के प्रति जो उन्होंने अपने उदगार प्रकट किये हैं उससे उनके राष्ट्रवादी विचार धारा के समर्थक होने की झलक मिलती है।

देशवासियों में देश भक्ति चाहिए।
देश पर जो मिट सके वह व्यक्ति चाहिए।।

उनके काव्य-रचना की यह पंक्तियाँ उनकी विचार धारा की ओर इंगित करती हैं।

मुझको खुद से बड़ा लगाव है,
इसलिए जहन में तनाव है।

ऐसे महान व्यक्तित्व के धनी रामप्रकाश जी गोयल से मेरा सम्पर्क सन् 1943 में तब हुआ जब मैं कक्षा 4 का विद्यार्थी था और वह इंटर साइंस (12 वीं कक्षा) के बरेली कालेज में विद्यार्थी थे। जीवन में मैंने उनसे बहुत कुछ सीखा और प्रेरणा पाई है। वही मुझे सन् 1943 में बरेली की गुलाबनगर संघ शाखा में प्रथम बार जब मैं गली में गेंद खेल रहा था ले गये व शिशु वर्ग की पंक्ति में खड़ा करके प्रथम बार उन्होंने संघ की प्रार्थना की पंक्तियाँ "नमस्ते सदा वत्सले मातृभूमि" कहलवाई थीं। सन् 1946 में वह संघ के पूर्ण कालिक प्रचारक बनकर 5 वर्ष के लिए राजस्थान चले गये। उनका मुख्य कार्य क्षेत्र जयपुर बीकानेर रहा। वह समय संघ के लिए अत्यधिक कठिनाइयों का था। बीकानेर में उन्होंने रेगिस्तान में ऊँट की सवारी करके तहसील व गाँव में संघ कार्य स्थापित किया व साथ में एल-एल0बी0 की परीक्षा पास की।

राजस्थान में उन्होंने असंख्य नौजवानों को संघ का स्वयं सेवक बनाया जिसमें से आज राजनीतिक क्षेत्र में भारतीय जनता पार्टी में

अग्रिम पंक्ति के नेता हैं। वर्तमान में केन्द्र सरकार में विदेश मंत्री जसवन्त सिंह, सतीश चन्द्र अग्रवाल व भा0ज0पा0 नेताओं में भँवर सिंह, गिरिराज किशोर चतुर्वेदी, विश्व हिन्दू परिषद के अवकाश प्राप्त मुख्य न्यायाधीश, आसाम हाई कोर्ट के न्यायमूर्ति श्री गुमान मल लोढ़ा व राजस्थान के पूर्व मुख्यमंत्री व वर्तमान में भाजपा के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री भैरों सिंह शेखावत हैं। वर्तमान गृहमंत्री श्री लाल कृष्ण आडवाणी और गोयल साहब अनेक वर्षों तक साथ-साथ राजस्थान में प्रचारक रहे हैं।

1951 में जब वह वापस बरेली आये तो उन्होंने पूरी तन्मयता से वकालत के पेशे पर ध्यान दिया व साहित्यिक क्षेत्र में अधिक रुचि लेने के कारण राजस्थान के सभी संघ के नये व पुराने स्वयं सेवकों से सम्पर्क छूट गया। संघ के एक कार्यक्रम में मेरा जयपुर जाना हुआ। वहाँ पर उपरोक्त महानुभावों से भेंट होने पर इन लोगें ने रामप्रकाश जी गोयल के विषय में मुझसे जानकारी चाही तब मुझे ज्ञात हुआ कि रामप्रकाश गोयल ने कैसे कैसे व्यक्तियों को संघ से जोड़ा है।

मेरा रामप्रकाश जी से वकालत के व्यवसाय और पुराने सम्बन्धों के कारण अत्यधिक निकटतम सम्बन्ध रहा है। उनकी जीवन शैली मुझको प्रेरणा देती है और मैं उनके दर्शाये मार्ग पर सामाजिक क्षेत्र में अग्रणी संगठन राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ में कार्यरत हूँ। उनकी दीर्घायु की व साहित्यिक क्षेत्र में एक प्रसिद्ध साहित्यकार के रूप में उनकी ख्याति हो यही हृदय से कामना करता हूँ।

महानगर संघ चालक
राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ, बरेली

मेरी कामना

डॉ0 भगवान शरण भारद्वाज

चन्दनी साँस का यह गमकता सफ़र
खूब चलता रहे, चाह फलती रहे।
कामना के दिये टिमटिमाते रहें,
बाँसुरी रस-विपिन बीच बजती रहे।
इन पगों में प्रभंजन रहे शक्ति का
इन दृगों में हँसें भक्ति-सौदामिनी
ये भुजाएँ भरे मुट्ठियों में नखत
हो सुनहरा दिवस, हो मधुर यामिनी
इन्द्रधनु उर-पटल पर निखरता रहे,
भोर रोली-अखत ले मचलती रहे।
खुशबूओं के समन्दर लहरते रहें
रोशनी में नहाई हुई हो डगर
गूँजती ही ऋचाएँ रहें प्यार की
तीर तक जा सके हर रुपहली लहर
वाटिका झूमती-मुस्कराती रहे,
प्रीति कलिका-भ्रमर बीच पलती रहे।
धडकनों में शुभाशा समाई रहे
मेघ संवेदना के घुमड़ते रहें
कल्पना की थिरकती रहें पायलें
मधुबनी सरगमें चित्त हरती रहें
नेह-विश्वास की गूँजती हो गज़ल,
आरती सिद्धि-पल ले विहँसती रहे।।

विभागाध्यक्ष हिन्दी,
बरेली कॉलेज, बरेली

वो भीड़ में भी तो तन्हा दिखाई देता है
वो जाने क्या है, मगर क्या दिखाई देता है।

खुर्शीद अली खां

गोयल साहब से मेरा रिश्ता तकरीबन 25 साल पुराना है जब शहर के कुछ कला प्रेमियों ने मिलकर एक सांस्कृतिक संस्था सिम्फनी कल्चरल ऐसोसियेशन का गठन किया था। वर्तमान में इसका नाम सुर वंदन सांस्कृतिक संस्था है। उसमें मैं निदेशक और गोयल साहब महासचिव थे। बस वहीं से हम लोग एक दूसरे से जुड़े और आहिस्ता-आहिस्ता इतना क़रीब हो गये कि मैं अब तक नहीं समझ पाया कि मैं उनका साया हूँ या वो मेरे साये हैं। अगर किसी मसरूफ़ियत की वजह से एक-दो दिन भी उनसे न मिलूँ तो एक हूक सी उठती है और शाम ढलते ही मेरे कदम खुद-ब-खुद उनके घर की तरफ़ चल पड़ते हैं और फिर शुरू होता है सांस्कृतिक, साहित्यिक तथा सामाजिक विषयों पर चर्चा का सिलसिला।

गोयल साहब की शख़्सियत का सबसे अहम् पहलू उनका प्यारा इंसान होना है। प्यार का तो वह एक मुजस्सिम पैकर हैं। प्रेम के बारे में उनका अपना एक अलग नज़रिया है कि प्रेम में देना ही देना है, पाने की उम्मीद करते ही प्रेम, प्रेम नहीं रहता। अपने प्रिय के लिये यदि कुछ करने की हम हिम्मत नहीं कर सकते तो उससे पाने की उम्मीद करना एक मृग मरीचिका के समान है। दूसरे शब्दों में मैं कहूँ तो उनके अनुसार प्रेम का अर्थ त्याग और केवल त्याग है। यही बात उनकी पुस्तक 'सच्चे प्रेम पत्र' से भी ज़ाहिर होती है। वह सच्चे प्रेम पत्र की भूमिका में लिखते हैं- प्रेम पूजा है, अर्चना है, वन्दना है, जीवन है। प्रेम में आकर्षित करने की जितनी शक्ति है उतनी चुम्बक में भी नहीं है। प्रीति की रीति अनोखी है। प्रेम मानव हृदय की सर्वश्रेष्ठ अनुभूति है। प्रेम की आँख वह देखती है जो कोई अन्य आँख नहीं देख पाती। प्रिय का सुख ही प्रेमी का सुख है।

गोयल साहब मेरे और मैं उनके बेहद नज़दीक़ हूँ। इसीलिये मुझे उनके विभिन्न रूपों को बहुत क़रीब से देखने का मौक़ा मिला है जिनमें से एक रूप शायर का और दूसरा संगीत-प्रेमी का है। इन रूपों में भी मैं उनको अपने बहुत नज़दीक पाता हूँ। मैं एक ग़जल-सिंगर के नाते अच्छे कलाम की तलाश में रहता हूँ जबकि ये

खज़ाना मुझे अपने दोस्त गोयल साहब से दस्तयाब हो जाता है। उनकी ग़ज़लों का कैसेट् "आईना" मैंने अपनी और नुसरत की आवाज़ में रिकार्ड किया था जिसको टी-सीरीज़ ने रिलीज किया। टी0वी0 सीरियल "आज का सच" का टाइटिल साँग भी गोयल साहब ने लिखा और मैंने स्वर दिया। उनकी ग़ज़लों का अगला कैसेट बनाने की तैयारी चल रही है जो जल्द ही आप लोगों के पास पहुँच जाएगा। जहाँ तक गोयल साहब की शायरी का सवाल है, उनकी ग़ज़लों में आम आदमी की ज़िन्दगी की अक्कासी है जिसमें हर आम आदमी को अपनी दास्तान दिखाई देती है। साथ ही बहुत आसान ज़बान का इस्तेमाल किया है जिसे एक आम आदमी को भी समझने में दिक्कत नहीं होती। वह खुद संगीतज्ञ नहीं है मगर मैंने महसूस किया है कि उनके दिल और रूह तक में संगीत समाया हुआ है। संगीत का कोई भी आयोजन हो गोयल साहब सबसे पहले दिखाई देते हैं। उनके साथ हम लोगों ने अपनी संस्था, 'सुर-चंदन' के बैनर पर कई अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त कलाकारों के कार्यक्रम आयोजित किये हैं जिनमें जगजीत सिंह, चित्रा सिंह, गुलाम अली, मुन्नी बेगम, अनूप जलोटा, पीनाज़ मसानी के नाम प्रमुख हैं।

मैं उनकी एक शख्सियत से नावाकिफ़ था। उनकी अभिनय कला टी0वी0 सीरियल "आज का सच" में जब मैंने उन्हें जज और कॉलेज के प्रिंसिपल का अभिनय करते देखा तो मुझे बेहद ताअज्जुब हुआ। कहाँ वकालत, कहाँ कॉलेज की प्रोफ़ेसरी, कहाँ शायरी, कहाँ समाज सेवा, कहाँ संगीत प्रेम और कहाँ मझा हुआ अभिनेता। कितने विरोधी तत्वों को इकट्ठा करके खुदा ने गोयल साहब को बनाया है।

मैं उनके बहुत नज़दीक हूँ मगर फिर भी जितना और उनके नज़दीक जाता हूँ उनकी शख्सियत की और कई पर्तें खुलकर सामने आती है। उनकी शख्सियत का एक और रूप उनका शिक्षा के प्रति लगाव है। बरेली कॉलेज, साहू रामस्वरूप महिला महाविद्यालय, कन्या महाविद्यालय तथा महाराज अग्रसेन महाविद्यालय में प्रतिभाशाली छात्र-छात्राओं के उत्साहवर्धन के लिये उन्होंने दस स्वर्ण पदक स्थापित किये हैं। ये उनके दाता और सख़ी रूप का एक हिस्सा है।

गज़ल-सिंगर, म्यूज़िक डायरेक्टर
88, सिविल लाइन्स निकट होटल सीता-किरन
बरेली - 243001,
फोन - 572561

चौहान संजीवनी क्लीनिक एण्ड रिसर्च सेन्टर, बरेली

डॉ0 ए0के0 चौहान

सचिव, अखिल भारतीय
साहित्य कला मंच, मुरादाबाद

आदरणीय बन्धु,

सर्वप्रथम अखिल भारतीय साहित्य कला मंच, चौरसिया भवन, चन्द्र नगर, मुरादाबाद द्वारा माननीय प्रो0 राम प्रकाश गोयल का अभिनन्दन उनके जन्म दिवस पर करने की इस अनोखी योजना के लिए मैं आपको साधुवाद देता हूँ। आज के इस दौर में साहित्यकार और बुद्धिजीवियों का जो हाल हो रहा है वह हिन्दी रचना के पाठकों के लिए एक भयावह दौर है। जो पेड़ मजबूत और गहरा जड़ों से होगा वह ही इस आँधी में टिक सकेगा। श्री राम प्रकाश गोयल को मैंने हमेशा एक बड़े भाई के रूप में देखा है और उनकी बहुत सारी स्मृतियाँ मेरे मस्तिष्क में सजीव होकर स्थिर हैं। मुझे रोटरी में बुद्धिजीवयों को प्रेरित करने के लिए उनकी आवश्यकता अकसर पड़ती रही है और उन्होंने अल्पकालीन सूचना के बावजूद बुद्धिजीवियों की साहित्यिक भूख को लज़ीज भोजन के रूप में दिया है। चाहे उर्दू, हिन्दी एवं अँग्रेज़ी का माध्यम हो उनकी वाणी सपाट, स्पष्ट, पैनी सुरुचिपूर्ण रही है। एक बार श्री खैरनार के आगमन पर श्री रामप्रकाश गोयल के वार्तालाप के सन्दर्भ में उनके साहित्यिक साथियों ने उनकी भूरि-भूरि प्रशंसा की। मुझे श्री रामप्रकाश गोयल जी की सभी रचनाओं को पढ़ने का सौभाग्य प्राप्त हुआ, जिन्हें सजाकर मैंने अपनी लाइब्रेरी में रख रखा है। ऐसे अनूठे व्यक्तित्व का बरेली में होना और हम सबके बीच रहकर साहित्यिक करन्ट लगाकर जागृत करते रहना उन्हें ईश्वर की एक देन है। उनके जन्म दिवस पर हम अपने तथा रोटरी परिवार की ओर से शत शत प्रणाम करते हुए अपनी शुभकामनायें प्रेषित करते हैं तथा माँ देवी से लम्बी आयु की प्रार्थना करते हैं।

ए0के0 चौहान
पूर्व अध्यक्ष रोटरी क्लब, बरेली

PROF. GOEL - A MANY SPLENDOURED PERSONALITY

Dr. Iftikhar Husain Rizvi

Prof. Ram Prakash Goel is a very well-known and many-sided personality of our city. He has been a devoted worker through and through. He is a writer, poet, play-wright, novelist, short story writer and social worker rolled intro one. He is not only a Hindi poet but Urdu Ghazal writer also. His Ghazals are traditional, simple and straight - forward and appeal to the heart. He has three collections of verse in Urdu to his name - "Dard Ki Chhaon Men", Ristey Ghao and 'Ek Samandar Pyasa Sa'. The agony of something missing has always haunted his mind and his heart is lacerated because of the death of his young and only son. That gives a haunting throb to much of his poetry. He is not only like a thirsty sea, as his last collection of Ghazals says, but also himself a thirsty sea which craves for the fulfilment of the thirst. Many of Prof. Goel's Ghazals have been sung by musicians and their cassettes have been released.

Prof. Goel is attached to many organisations and it is astonishing to note that he can do so many things at a time in such an old age, but as Shakespeare said, 'Age cannot wither nor customs stale his ('her' which Shakespeare wrote about Cleopatra) infinite variety.'

Principal Tilak Inter College (Retd.)
Kanghi Tola, Bareially

प्रो0 रामप्रकाश गोयल के प्रति भावाभिव्यक्ति

डॉ0 ऊषा मिश्र

सेवाव्रती, सामाजिक चेतना के चतुर चितेरे, साहित्य जगत के देदीप्यमान प्रकाश-पुंज, मार्मिक सम्वेदनाओं के मर्मज्ञ, मानव-मनोविज्ञान के पारखी प्रख्यात शायर, ग़ज़लकार, साहित्यकार सम्मानीय श्री राम प्रकाश गोयल की समस्त रचनाओं का मैंने आद्योपान्त अध्ययन किया है। यूँ तो समस्त कृतियाँ साहित्यिक कसौटी पर खरी हैं किन्तु उन सबमें से 'एक समन्दर प्यासा-सा' रचना-संग्रह मन-मस्तिष्क को झकझोर देने वाली, सम्वेदनाओं, अन्तर्द्वन्द्वों भावशैलियों, शिल्प विधाओं के अनूठे संगम की बेजोड़ अनुभूतियों से अनुप्राणित हैं।

'एक समन्दर प्यासा-सा' का शीर्षक पढ़ते ही हृदयाकाश में एक बिजली सी कौंध जाती है।

पी गया कितनी नदियाँ अब तक, एक समन्दर प्यासा-सा,
मीठा पानी पीकर इतना क्यों है, अब तक खारा-सा।

युग-युगान्तर से, जन्म-जन्मान्तर से प्राणी न जाने किसकी खोज में लगा है। यह खोज, यह प्यास उसे निरन्तर क्रियाशील बनाए हुए है। 'नेति-नेति' की दुहाई देता हुआ 'चरैवेति-चरैवेति' की ओर प्रेरित करता चला जा रहा है। असीम सागर की गहराइयों और अनन्त-आकाश के विस्तार को ससीम प्राणी छू लेना चाहता है। श्री गोयल जी ने वेदान्त दर्शन और अध्यात्म दर्शन भी बड़े क़रीब से जाना है, पहिचाना है और समझा है।

तन तो कहता है कि कुछ मत छोड़िये
बुद्धि कहती है कि मन को मोड़िये।
सार जीवन का निहित इस तथ्य में,
आत्मा को ब्रह्म से बस जोड़िए।

प्राणी के अन्दर वह असीम विराजमान है किन्तु मानव मन उसे पाने को बैचेन है और भटक रहा है। उसे पाने की कितनी सहज अभिव्यक्ति –

दर बदर ढूँढ रहा था जिसे दुनिया में,
वह मेरे दिल में है यह बात बताई जाए।

मौत और ज़िंदगी की परिभाषा कितनी ज़िन्दादिल है, सरल है,

दिल मे चुभने वाली है और समझने वाला बात है
मौत और ज़िन्दगी में फ़र्क़ नहीं,
जागने सोने के बहाने हैं।

समस्त दर्शन पुकार 2 कर कह रहे हैं और साधना भी चिल्ला-चिल्ला कर कह रही है कि इस भव-सागर को पार करना अत्यन्त दुर्गम और दुष्कर है किन्तु विनम्रता तथा सहज सरल स्वभाव से इसे पार किया जा सकता है। अहंकार के रावण और हिरण्यकशिपु को तो प्रथम मारना ही होगा। इस भाव की अभिव्यक्ति कितनी सादगी से की है -

पहले अपनी खुदी मिटाना है,
फिर खुदा के क़रीब जाना है।
आदमी खुद खुदा का साया है,
बाकी जो है वह सिर्फ़ माया है।
अब तो बाक़ी यही तमन्ना है,
काम आऊँ दुःखी की आहों में।
सारी दुनिया की ठोकरें खाकर।
हम समाए खुदा की बाहों में।

आज के समाज का कितना यथार्थ चित्रण है ? मानव दोहरे व्यक्तित्व में जी रहा है। आज का इन्सान फ़रेबी चेहरा लगाकर जी रहा है। सोचता कुछ है, बोलता कुछ है और करता कुछ और है।

सोचने, बोलने में, करने में,
एक होकर हमें दिखाना है।
दूसरों की ही बुराई में जो रस लेते हैं।
उनकी तस्वीर उन्हें आज दिखाई जाये।।
नाज़ था जिनकी दोस्ती पे हमें,
पीठ पर वो ही वार कर बैठे।

आज का मानव आत्मनिरीक्षण, आत्मविश्लेषण करना भूल गया है। वह पर - उँगुली-निर्देश करने की यात्रा में व्यस्त है किन्तु जीवन का मक़सद और भी है-

मैं हूँ अच्छा, बहुत बुरा है वो
हर किसी की यही शिकायत है।
सच्चे इन्सान बन सको तो बनो,
बस यही एक मिरी वसीयत है।
ज़िन्दगी का कोई मक़सद तय करो

वरना तो यह ज़िन्दगी वीरान है।
त्याग ही इस देश की है संस्कृति,
हमको अपने देश पर अभिमान है।

देश प्रेम, संस्कृति प्रेम, त्याग भावना ही तो इस देश के लोगों को विरासत में मिली अमूल्य निधि है। इसके लिए हमें सहज, सरल पवित्र और कुंठा-रहित बनना होगा -

बैठकर दिल की गाँठें खोलें हम
दूर रहकर कहाँ गुज़ारा है।

समय बहुत तेज़ी से भाग रहा है। इसी रफ़्तार से क़दम मिलाते हुए हर इन्सान को चलना चाहिए -

हर पल यहाँ परीक्षा है,
वक्त करता नहीं प्रतीक्षा है।
अपनी मंज़िल पे गर पहुँचना है,
करनी अपनी तुम्हें समीक्षा है।

आपसी भाईचारा, प्रेम, परोपकार कुछ कर सकने की तमन्ना आदि इन्सानियत की बुनियाद हैं और ख़ुदा तक पहुँचने की मंज़िल हैं-

काम जो आते हैं औरों के लिए दुनिया में
वह ही जीते हैं कभी मरते वो बेनाम नहीं।
जो मुहब्बत करें नफ़रत से सदा दूर रहें
ऐसे इन्सानों की एक बस्ती बसाई जाये।

समाज के इस दर्पण में देश, काल, परिस्थिति सभी कुछ प्रतिबिम्बित हो सजीव हो उठी हैं। हिन्दी की धरती पर उर्दू की हरियाली है। जगद्गुरु आद्याचार्य शंकर के 'ब्रह्म सत्यं जगन्मिथ्या' का चिन्तन है। गीता के ज्ञान, कर्म, सांख्य, वैराग्य, योग का अध्यात्म दर्शन है। देश प्रेम, सौहार्द, मानव प्रेम के आदर्श हैं। सुख-दुख जीवन यात्रा के संदेश हैं और मंजिल तक पहुँचने के आचार हैं। भावों की गहराई है, अनुभूतियों की कसक है, पीड़ा है। 'सत्सैया के दोहरे, ज्यों नाविक के तीर। देखन के छोटे लगैं, घाव करैं गम्भीर' जैसे हैं।

सम्पादिका
आध्यात्मिक संदेश
श्री गायत्री शक्ति पीठ बरेली

मेरे अच्छे दोस्त : प्रो0 राम प्रकाश गोयल

शालिनी रस्तोगी

गोयल साहब के विषय में क्या लिखूँ- कुछ समझ नहीं आ रहा है क्योंकि वह अपने आप में एक ऐसे पूर्ण इन्सान हैं जो शायद ही कोई होगा। मेरे पास तो उनके लिये शब्द ही नहीं हैं पर फिर भी थोड़ा बहुत लिख रही हूँ।

गोयल साहब से मेरी मुलाक़ात 1997 में एक बस में हुई थी। हम अपनी नानी के घर रामपुर जा रहे थे और गोयल साहब मेरे आगे वाली सीट पर बैठे थे। मैं टिकट लेने के लिये खड़ी हुई। काफ़ी लोग बस में टिकट के लिये खड़े थे, तो यकायक गोयल साहब की निगाह मुझ पर पड़ी और वह मुझसे बोले "बेटी यह पैसे मुझे दे दो, मैं टिकट लेकर दे दूँगा ?" मैंने उन्हें पैसे दे दिये और अपनी सीट पर बैठ गयी। उन्होंने टिकट लेकर मुझे दे दिये। कुछ देर बाद बोले, "तुम पढ़ती हो ?" मैंने कहा "हाँ जी"।, कौन सी कक्षा में ? मैंने कहा "बी0एस-सी0 प्रथम वर्ष।" "बोले - बरेली कॉलेज में", मैंने कहा, "हाँ जी"। वे बोले "मैं बरेली कॉलेज में लॉ का प्रोफेसर रह चुका हूँ, अब सेवा निवृत हो गया हूँ और इस वक्त वकील हूँ।

फिर उन्होंने मेरी रुचि के विषय में पूछा। मैंने कहा, "मेरी रुचि कला में है। कुछ बनना चाहती हूँ और दूसरों की सेवा करना चाहती हूँ और बहुत सी बातें होने लगीं। वह अपने विषय में बताते रहे और मैं अपने विषय में। वह रामपुर अपने रेडियो प्रोग्राम के लिये जा रहे थे। उन्होंने मुझे अपनी कविताऐं पढ़वाईं और अपनी किताब 'टूटते-सत्य' भी पढ़ने को दी। पूरा रास्ता कैसे बीत गया पता नहीं चला। उन्होंने मुझे विज़िटिंग कार्ड दिया और बोले 'घर आना'। फिर वह अपने प्रोग्राम के लिये आकाशवाणी चले गये और मैं अपनी नानी जी के यहाँ।

जब मैं बरेली वापस आई तो मैंने सोचा क्यों न उनके यहाँ चला जाये। मैं मम्मी के साथ उनके घर गयी। फिर वहाँ जाकर पता लगा कि वह तो एक बहुत अच्छे इन्सान हैं। साथ-साथ एक अच्छे कलाकार, रचनाकार, लेखक और एक बहुत अच्छे वकील भी हैं। उन्होंने मुझे अपनी किताबें भी पढ़ने को दीं। वह हमारे घर आये। हम

उनके घर गये और इस प्रकार हम लोग एक अच्छे दोस्त बन गये।

एक दिन वह मुझे बरेली आकाशवाणी ले गये। उस दिन उनका वहाँ प्रोग्राम था। प्रोग्राम खत्म होने के बाद मुझसे बोले कि तुम आकाशवाणी में प्रोग्राम करना चाहोगी ? मैंने कहा "क्यों नहीं।" उन्होंने मेरे आकाशवाणी पर प्रोग्राम करवाने शुरु कर दिये। मेरे रामपुर आकाशवाणी में भी प्रोग्राम होने लगे। मुझे आज भी याद है कि जब मेरा पहला प्रोग्राम था वह मेरे साथ बरेली आकाशवाणी गये थे। प्रोग्राम के बाद उन्होंने मुझे बरेली दूरदर्शन दिखाया। उनके डायरेक्टर से मिलवाया और बोले 'तुम्हें टी0वी0 पर भी हम लायेंगे।

मुझे कभी भी, कोई भी, कैसी भी समस्या आती है, मैं उनके पास बेहिचक चली जाती हूँ और अपनी समस्या उनके सामने रख देती हूँ और वह मेरी समस्या का तुरन्त हल निकाल देते हैं। कोई भी काम होता तो बस गोयल साहब 'जिन्दाबाद'। गोयल साहब के रूप में मुझे एक अच्छा नहीं बहुत अच्छा दोस्त मिला है जिसने मुझे हमेशा उन्नति का रास्ता दिखाया है।

जहाँ कहीं उनके प्रोग्राम होते हैं वह मुझे हमेशा बुलाते हैं। उनका ध्येय सिर्फ दूसरों को उन्नति पथ पर लाना है। वह हर वर्ष अपने बेटे की याद में एक प्रोग्राम करते हैं जिसमें वह किसी ऊँची हस्ती को सम्मानित करते हैं। 1999 में मैंने उनके प्रोग्राम में 'अभिनन्दन पत्र' पढ़ा था। आज उन्हीं के कारण मुझे मंच तक जाने का मौका मिला है।

उनके अन्दर एक और अच्छी बात है। एक क्या सब बातें अच्छी ही हैं। वह खुद एक बहुत अच्छे इन्सान हैं। वह मुझे हमेशा सबसे बेहिचक मिलवाते हैं और मुझे इतना सम्मान देते हुये मिलवाते हैं कि मुझे अपने आप पर शर्म महसूस होती है कि एक इतने छोटे से व्यक्ति को वह कितना सम्मान दे रहे हैं।

मुझे उनकी एक बात और अच्छी लगती है। वह न तो कभी झूठ बोलते हैं और न ही कभी दूसरे से झूठ बोलने की अपेक्षा रखते हैं। उनका एक टी0वी0 सीरियल 'तश्नगी' बनने वाला है। गोयल साहब मुझसे बोले कि तुम इस सीरियल में काम करोगी ? मैंने कहा 'क्यों नहीं' । मैंने बिना अपने घरवालों की आज्ञा के 'हाँ' कह दी। जब बाद में पापा जी को पता लगा तो डाँटने लगे और मना कर दिया। इस बात में मेरी घर में लड़ाई हो गई। मुझे इतनी शर्म आने लगी कि मैंने गोयल साहब को फोन तक नहीं किया।

और क्या लिखूं ? कुछ समझ में नहीं आ रहा है। लेकिन गोयल साहब की मदद से आज मैं गर्व से कह सकती हूँ कि मेरे आकाशवाणी में प्रोग्राम होते हैं। वह एक इन्सान के रूप में देवता हैं। उनसे दूसरों का दुःख देखा नहीं जाता। वह हमेशा दूसरों की भलाई के विषय में ही सोचते हैं। गोयल साहब जैसा इन्सान बनना मुश्किल ही नहीं, ना-मुमकिन है। वह अपने दुःखों को छुपाकर दूसरों के दुःखों का निवारण करते हैं। आज मैं सर उठाकर कह सकती हूँ कि गोयल साहब मेरे दोस्त नहीं, बल्कि मैं उनकी दोस्त हूँ। गोयल साहब ने एक सीधी-सादी लड़की को अपनी मेहनत और अपने विचारों से इतना ऊँचा बना दिया कि जिसके वह लायक़ नहीं थी।

वह चाहते हैं कि मैं एक अच्छी गायिका, अच्छी कलाकार बनूँ और न जाने क्या-क्या। बिल्कुल अपनी तरह बनाना चाहते हैं। वह चाहते हैं कि मैं एक आफ़ीसर बनूँ। उनका सपना पूरा करने की कोशिश तो पूरी करूँगी। लेकिन अकेले मेरे करने से कुछ नहीं है। भगवान के साथ-साथ अगर गोयल साहब का हाथ मेरे सिर पर बना रहा तो यह उनका सपना भी पूरा ज़रूर करूँगी।

प्रो0 रामप्रकाश गोयल जी के लिये जितना लिखूँ उतना कम है। मैं सिर्फ़ इतना ही कह सकती हूँ कि वह सच्चाई के मार्ग पर चलने वाले, अच्छे कलाकार, अच्छे लेखक, अच्छे रचनाकार और सब कुछ हैं। उनके कुछ शेर -

मुख्तसर ज़ीस्त का फ़साना है, जो भी आया है उसको जाना है,
पहले अपनी खुदी मिटाना है, फिर खुदा के क़रीब जाना है।
सबके दुख दर्द में शरीक रहूँ, मुझको दौलत यही कमाना है।
ख़ून पानी में कोई फर्क़ नहीं, कैसा बदला हुआ ज़माना है।
चाहते हो सुख तो दुख को भी सहो, दुख तो जीवन
के लिये वरदान है।
मौत और ज़िन्दगी में फ़र्क नहीं, जागने सोने के बहाने हैं।
ये दुनिया ख़्वाब है, इस ख्वाब का भरोसा क्या,
नहीं जो अपना वो अपना दिखाई देता है।

613, मलूकपुर बजरिया
रस्तोगी मार्ग, बरेली।

प्रो0 राम प्रकाश गोयल–श्रेष्ठ गुरु : श्रेष्ठ कवि

अविनाश चन्द्र मिश्र 'चन्द्र

वर्ष 1977 में पीलीभीत जैसे छोटे नगर से आकर मैंने बरेली कालेज, के एल–एल0बी0 (प्रथम वर्ष) में प्रवेश लेने हेतु आवेदन पत्र भरा। प्रवेश सूची प्रकाशित होने पर जब मैंने अन्य आवश्यकताओं की पूर्ति करने के लिए जानकारी की तो ज्ञात हुआ कि इस सम्बन्ध मे प्रोफ़ेसर गोयल साहब (प्रोफ़ेसर राम प्रकाश गोयल) से सम्पर्क करें। मैं एक संकोची छात्र। लघु विद्यालय से निकलकर एक महानगर के विशालकाय कालेज के वातावरण में एक प्रोफ़ेसर से सम्पर्क करना अत्यन्त कठिन जान पड़ा। डरते–डतरे लोगों से पूछा। एक व्यक्ति ने संकेत से प्रोफ़ेसर साहब को बताया। जब मैंने निकट जाकर संकोच भरे स्वर में उनसे बात की तो उनकी सहजता एवम् सरलता देखकर विश्वास ही नहीं हुआ कि मैं विधि संकाय के किसी वरिष्ठ प्रोफ़ेसर से बात कर रहा हूँ।

अध्ययन के दौरान एक बार नहीं अनेक बार उनसे बातचीत करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। गोयल साहब से वही स्नेह मुझे प्राप्त हुआ जो किसी गुरु से उसके प्रिय शिष्य को प्राप्त होता। अध्ययन के दौरान ही मैंने प्रोफ़ेसर साहब से अनुरोध किया कि मुझे और अन्य छात्रों को अँग्रेज़ी में दिया गया व्याख्यान समझने में कठिनाई होती है। उन्होंने तुरन्त मेरी व अन्य छात्रों की समस्या समझी व अपने व्याख्यान में अँग्रेज़ी के साथ कठिन शब्दों का हिन्दी रूपान्तर करके हम लोगों की समस्या का बड़ी सरलता से समाधान कर दिया।

एक घटना उस समय की और याद आती है। वह कक्षा में व्याख्यान दे रहे थे। व्याख्यान के बाद हम लोगों से कुछ भी पूछने को कहा। मैंने एक प्रश्न किया कि भारतीस संविधान में यह कैसा आश्चर्य है कि एक तरफ़ तो हम सभी लोगों को समान अधिकार दिये जाने की बात कही गयी है तो दूसरी तरफ़ कुछ जातियों को विशेष अधिकार दिये गये हैं। क्या यह दोनों बातें एक दूसरे की विरोधी नहीं हैं?

गोयल साहब ने कुछ देर मेरे प्रश्न को गम्भीरता से सोचा तथा कहा कि यद्यपि तुम्हारी बात किसी सीमा तक सही है परन्तु संविधान बनाने वालों ने कुछ सोचकर ही दोनों प्राविधान रखे हैं। इसके उपरान्त लगभग आधे घन्टे तक उन्होंने मेरी शंका का समाधान किया।

एल-एल-बी० पूरी होने के उपरान्त मैं अपनी वकालत में रम गया। बी०ए० का अध्ययन करने के दौरान ही मुझे कविता लिखने का शौक पैदा हो गया था।

वर्ष 1988 या 1989 की घटना होगी। मैं बरेली किसी कार्य से गया था। मेरे एक मित्र ने सूचना दी कि मूक वधिर विद्यालय में एक काव्य गोष्ठी आयोजित की गयी है। आप भी मेरे साथ चलो। मित्र के इस कथन पर यह सोचकर कि चलो नये कविगणों से परिचय होगा मैं मित्र के साथ उस कवि गोष्ठी में गया। वहाँ आदरणीय राम प्रकाश गोयल जी भी उपस्थित थे। मैं सुखद आश्चर्य में था क्योंकि इससे पूर्व मैं प्रोफ़ेसर साहब की काव्य प्रतिभा से परिचित न हो सका। वहाँ उपस्थित सभी कवि एवम् कवयित्रियों को गोयल साहब का अत्यन्त सम्मान करते देख मैं गद्‌गद् हो गया। परिचय के क्रम में जब मैंने उन्हें बताया कि मैं उनका छात्र भी रह चुका हूँ और मुझे उनका जैसा अपार स्नेह उस समय प्राप्त हुआ था आज भी वैसा ही स्नेह मुझे दें।

कविताओं के क्रम में मुझे भी एक कविता सुनाने का अवसर मिला जिसे सबने सराहा परन्तु तब काव्य के क्षेत्र में मेरा केवल प्रारम्भ था। उस दिन मैंने प्रो० साहब के कवि रूप का दर्शन किया। उनके लेखन व कविता पढ़ने के अन्दाज़ की जितनी तारीफ़ करूँ कम होगी। शब्द का चयन, भाषा की सरलता व सहजता उनकी रचनाओं की प्रमुख विशेषता थी।

इस प्रकार प्रो० राम प्रकाश गोयल के दो रूपों से मेरा साक्षात्कार हो सका। मैं गर्व से कह सकता हूँ कि वह न केवल एक श्रेष्ठ गुरु हैं बल्कि एक श्रेष्ठ कवि भी हैं। ऐसे व्यक्ति का अभिनन्दन जो संस्था कर रही है वह बधाई की पात्र है।

24, कुमरगढ़, पीलीभीत (उ०प्र०)

भावुकता के सुमेरु : आदरणीय गोयल जी

अवेस्ता एम०एस-सी०

आज के ज़माने में चारों ओर इंसानियत और सच्ची ईमानदारी लगता है कहीं स्वार्थ के कोहरे में खो गयी है। झूठे व्यवहार को देखकर कभी कभी ऐसा लगता है कि सच्चा और अच्छा व्यवहार करने वाले किसी संग्रहालय में ही देखने को मिलेंगे लेकिन आदरणीय गोयल साहब को देखकर यह विश्वास सुदृढ़ होता हुआ लगता है कि अभी सज्जनता जीवित है, ईमानदारी सुरक्षित है और इंसानियत मेहराब के पत्थर की तरह है। जन सामान्य का यह सोच हमारे विश्वास को बल देता है कि यह पृथ्वी का भार कुछ आदर्श चरित्रों के ऊपर ही टिका हुआ है।

मैं यदि कवयित्री होती तो अपनी बात को किसी कविता में कहती। वह शायद ज़्यादा प्रभावशाली होती। मुझे तो यह लग रहा है कि श्री गोयल एक ऐसे पर्वत हैं जो पृथ्वी को न केवल साधे हुए हैं बल्कि झरनों, जलस्रोतों और नाना प्रकार की वनस्पतियों से भरेपुरे है और लोक कल्याण के लिए ही मानो सारी वसुधा समेटे हुए हैं। श्री गोयल निरभिमानी व्यक्तित्व हैं। ऐसा व्यक्तित्व जो कि व्यापकता लिए हुआ है। उनकी व्यापकता कभी कवि के रूप में, कभी शायर के रूप में, कभी अभिनेता के रूप में, कभी निर्देशक के रूप में, कभी समाज सेवक के रूप में और कभी विशिष्ट संयोजक के रूप में दिखाई देती है। शताब्दी का तीन चौथाई भाग जीकर युवकों जैसा उत्साह लिए हुए हैं। यदि मैं उन्हें हिमालय पर्वत कहूँ तो भी सही लगता है। क्योंकि हिमालय कभी ज्वालामुखी था जो धीरे धीरे शांत हुआ और वर्तमान तक वह अपनी गोद में अनेक ग्लेशियर समेटे हुए है। यही जल-स्रोत नदियों का रूप लेते हैं और लोक हित में संलग्न होते हैं। कुछ इस प्रकार ही अनेक संगठनों, संस्थाओं के रूप में आपका जीवन सजगता से बँटा हुआ है। पर्वतों में पत्थर होते हैं लेकिन जैसे वे पत्थर जल स्रोत को सुरक्षित रखते हैं और लोक हित के प्रति सजग होते हैं ऐसे ही श्री गोयल अपने अंदर भावुकता समेटे हुए हैं और जो कठोरता दिखाई देती है वह उनके आदर्शों की देन है। उनके विशाल व्यक्तित्व को देखकर यही कहना सुगम प्रतीत हो रहा है कि श्री गोयल कहकशाँ हैं, आकाश गंगा हैं अथवा भावुकता का सुमेरु हैं अथवा सागर सी गंभीरता लिए हुए हैं जहाँ सभी के लिए द्वार खुले हुए हैं।

शाँति विहार, बदायूँ रोड, बरेली

प्रो० रामप्रकाश गोयल का परिवार : एक परिचय

सूरज प्रकाश गोयल

मेरे अनुज श्री रामप्रकाश गोयल के जीवन के 75 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में उनके सम्मानार्थ एक 'अभिनन्दन ग्रंथ'' प्रकाशित हो रहा है – यह जान कर मुझे अति प्रसन्नता का अनुभव होना स्वाभाविक ही है। उनके सम्पूर्ण व्यक्तित्व के निर्माण में हमारे परिवार का भी बहुत ही बड़ा हाथ रहा है क्योंकि समाजशास्त्रियों के मतानुसार व्यक्ति के व्यक्तित्व के विकास में उसकी पारिवारिक पृष्ठभूमि बहुत ही महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है तथा परिवार ही मनुष्य के जीवन की पहली पाठशाला होती है। अतः इस अवसर पर अपने परिवार का भी संक्षिप्त परिचय देना मैं बहुत ही आवश्यक समझता हूँ।

हमारा परिवार बरेली नगर का एक बहुत ही प्रतिष्ठित एवं सम्भ्रान्त गोयल गोत्रीय अग्रवाल परिवार रहा है। चूँकि हमारे बुजुर्ग नमक का व्यापार करते थे अतः हमारा परिवार ''नमक वालों का खानदान'' कहलता है। मुझे आज भी भलीभाँति स्मरण है कि हमारे दादा श्री दीनानाथ जी की एक अच्छी ख़ासी नमक की दुकान, आज के शिवाजी मार्ग पर जहाँ बनारस बैंक है उसके सामने थी। मैं भी बचपन में प्रायः उनकी दुकान पर जाकर बैठ जाया करता था और उनका पहला पौत्र होने के कारण वे मुझे प्यार भी बहुत करते थे। उनके बाद हमारे परिवार ने नमक का व्यापार छोड़कर खंडसार का व्यवसाय अपनाया। इस व्यवसाय में हमारे परिवारजनों ने बहुत ही अधिक उन्नति की एवं समृद्धि प्राप्त की। इस व्यवसाय की प्रगति में हमारे ताऊ श्री रम्मनलाल जी का बहुत ही बड़ा योगदान रहा।

हमारे पिताजी श्री मुकुट बिहारी लाल जी नगर के एक कुशल दीवानी के वकील थे। उन्होंने इलाहाबाद में रहकर अपनी एल–एल0बी0 की डिग्री प्राप्त की थी। बहुत समय तक वकालत की प्रैक्टिस करने के बाद इस पेशे के छल–फ़रेबों से उनको वितृष्णा हो गयी क्योंकि अपने क्लाइंट को जिताने के लिए उन्हें भी अनेक बार कोर्ट में असत्य का सहारा लेना पड़ता था। फलस्वरूप सन् 1950 के लगभग उन्होंने वकालत छोड़ दी और अपना शेष जीवन भगवान् के भजन में ही

व्यवतात किया

हमारी माताश्री श्रीमती जयदेवी एक सहनशील घरेलू धार्मिक महिला थीं जिन्होंने अपना सम्पूर्ण जीवन पति की एवं अपने परिवा की सेवा-सुश्रूषा में ही अर्पित कर दिया।

हमारे उक्त बुजुर्गों में से अब कोई भी जीवित नहीं है। वर्तमान में केवल मैं एवं रामप्रकाश ही हैं जो अपने-अपने परिवार के साथ रह कर एक सक्रिय, सुखी व सन्तुष्ट जीवन व्यतीत कर रहे हैं।

हमारे परिवार के व्यक्तियों की मनोवृत्तियाँ एवं रुचियाँ आदि क्या थीं और कैसी थीं - यह जानना भी अति-आवश्यक है क्योंकि उनकी पृष्ठभूमि में ही रामप्रकाश के सम्पूर्ण व्यक्तित्व को भलीभाँति समझा व परखा जा सकता है।

हमारे परिवार के सभी सदस्य धार्मिक आस्था व मनोवृत्ति के व्यक्ति रहे हैं। हमारे दादा श्री दीनानाथ जी बरेली के मंदिर टीबरीनाथ के परम भक्त थे। वे रोज़ ही सवेरे पाँच सेर भाड़ के भुने चने लेकर पैदल ही टीबरीनाथ के मन्दिर जाया करते थे और वहाँ वे चने बन्दरों को खिलाते थे। उन दिनों इस क्षेत्र में बहुत से बन्दर रहा करते थे। मैं भी प्रायः उनके साथ मन्दिर जाता था। कभी-कभी तो बन्दर आकर उनके हाथ से ही चने ले जाते थे।

अपने परदादा को मैंने नहीं देखा किन्तु मेरी दादी बतलाती थीं कि वे गंगाजी के भक्त थे और रोज़ ही पैदल गंगाजी नहाने जाया करते थे। उस समय गंगाजी नगर के पास ही किले के पार बहती थीं।

मेरे पिताजी भी धार्मिक विचारधारा के व्यक्ति थे। शाहजहाँपुर के मुमुक्षु-आश्रम के स्वामी शुकदेवानन्द जी के प्रति उनके मन में बहुत ही श्रद्धा एवं सम्मान था। वे प्रायः हमारे घर आया करते थे और अपने आध्यात्मिक उपदेश हम सबको देते थे। हमारे पैतृक मकान के ठीक सामने ही एक प्राचीन बड़ा मन्दिर है अतः उसमें होने वाले सभी प्रकार के धार्मिक उत्सवों व आयोजनों में भी हम सब बढ़-चढ़कर भाग लेते थे।

शिक्षा के प्रति भी हमारे परिवार में बहुत रुचि रही। परिवार के प्रायः सभी सदस्यों ने उच्च शिक्षा प्राप्त की। साथ ही उन्होंने जीवन भर विभिन्न प्रकार से शिक्षा की सेवा भी की और उसकी उन्नति में अपना योगदान भी दिया। हमारे पिताजी अनेक वर्षों तक वेदोज्जीवनी-संस्कृत- पाठशाला के मैनेजर रहे जो आज वेदोज्जीवनी

हाईस्कूल के नाम से प्रसिद्ध है पिताजी के बाद श अनेक वर्षो तक उसके मैनेजर रहे। आज वह उसके अध्यक्ष हैं। हमारे एक चाचा श्री रामप्रसाद अग्रवाल जी एक अति-सफल शिक्षक होने के साथ ही साथ अनेक वर्षो तक स्थानीय तिलक-इंटर कालिज के प्रिंसिपल भी रहे। उनके समय में इस कालिज ने आशातीत उन्नति व प्रगति की। उन्होंने शिक्षा संबंधी अनेक पुस्तकें भी लिखीं जो आज भी बहुत लोकप्रिय हैं और विद्यार्थियों के द्वारा रुचिपूर्वक पढ़ी जाती हैं। रामप्रकाश ने 17 वर्षों तक बरेली कालिज में लॉ के एक सफल प्रवक्ता के रूप में कार्य किया। आज भी हम दोनों भाई एवं हमारे एक चचेरे भाई श्री कैलाश नाथ गोयल नगर की अनेक शैक्षिक सस्थाओं से जुड़े हुए हैं और उनकी प्रगति में अपना भरपूर सहयोग दे रहे हैं।

विचारों की उदारता व प्रगतिशीलता भी हमारे परिवार का एक विशिष्ट गुण रहा है। जीवन के किसी भी क्षेत्र में हमारे यहाँ विचारों की कठोरता का कोई भी स्थान नहीं रहा। इसी के फलस्वरूप हमारे परिवार के सदस्यों को जो कुछ भी अच्छा व प्रिय लगा उसे उन्होंने बिना किसी विरोध के अवश्य ही प्राप्त किया। परिवार की इस उदार मनोवृत्ति का ही यह फल रहा कि रामप्रकाश ने अपनी मन पसन्द युवती से शादी की और हमारे एक चचेरे भाई डॉ0 केशव कुमार ने अपनी मनपसंद एक कायस्थ युवती से। दोनों का ही हमारे समस्त परिवार ने सहर्ष स्वागत किया। परिवार की इस उदारता एवं प्रगतिशीलता के फलस्वरूप ही सन् 1941-42 में हम दोनों भाइयों के द्वारा आयोजित "हिन्दी-कवि-दरबार" में हमने अपनी और अपने मित्रों की बहिनों को नगर में प्रथम बार रंगमंच पर मीरा, महादेवी एवं सुभद्राकुमारी चौहान के अभिनय हेतु उतार कर जनता के सम्मुख एक कलात्मक आदर्श प्रस्तुत किया। रामप्रकाश ने कवि दरबार में पं0 माखन लाल चतुर्वेदी और पं0 सुमित्रानंदन पंत का अभिनय किया था। परिवार की अनुमति से हम दोनों भाइयों ने भी अपने शिक्षा-काल में नगर में मंचित अनेक नाटकों एवं एकांकियों में प्रमुख भूमिकायें निभायीं।

सामाजिक सुधारों के प्रति भी हमारे परिवारजनों में सदैव ही बहुत उत्साह रहा है और उन्होंने इन सुधारों के पक्ष में ही सतत कार्य किया है। हमारे एक चाचा श्री रामप्रसाद अग्रवाल ने अपने मित्रों के

सहयोग से नगर में "अग्रवाल – सभा" की स्थापना की और उसके द्वारा अग्रवाल जाति में फैली हुई बुराइयों के विरोध में सशक्त आवाज़ उठाई। नगर में उनको "सुधारों का मसीहा" कहा जाता था। बचपन में हम दोनों भाइयों ने भी सभा के कार्यकलापों में सक्रिय भाग लिया और विभिन्न मंचों के माध्यम से आवश्यक व प्रासंगिक सामाजिक सुधारों का संदेश जनता को दिया। सुधारात्मक मनोवृत्ति होने के कारण ही हमारे परिवार में आज तक जितने भी विवाह सबध हुए हैं, उनमें न तो कभी किसी प्रकार का कोई दहेज दिया गया और न ही लिया गया।

साहित्य एवं संगीत के प्रति भी हमारे परिवार में बहुत अनुराग रहा है। हमारे बाबा साहब को बहुत से भजन याद थे, जिन्हें वे बड़े ही मधुर व ऊँचे स्वर में गाया करते थे। हमारे एक चाचा श्री रासबिहारीलाल जी को बाँसुरी बजाने का बहुत शौक़ था। हमारे पिताजी को संस्कृत, हिन्दी, उर्दू एवं अँग्रेज़ी साहित्य की अनेक कवितायें व कोटेशन्स याद थे, जिन्हें वे हमें सबको सुनाया करते थे। साहित्य व संगीत के अनेक मर्मज्ञ कवि, विद्वान् व कुशल कलाकार उनके यहाँ आकर अपने विचारों का और अपनी कला का प्रदर्शन किया करते थे। बरेली के स्वनामधन्य पं0 राधेश्याम कथावाचक जी उनके परम मित्रों में से थे। हमारे परिवार के साहित्य व संगीत के प्रति इस प्रेम के फलस्वरूप ही आज हम दोनों भाई अपनी अपनी सामर्थ्यानुसार साहित्य की सेवा कर रहे हैं और संगीत में भी सतत रुचि लेते हुए नगर की विभिन्न सांगीतिक संस्थाओं से भी सम्बद्ध हैं।

ऐसे ही धार्मिक, शैक्षिक, उदार, सुधारवादी तथा साहित्य व संगीतमय वातावरण में रामप्रकाश का सम्पूर्ण जीवन बीता है जिसका एक निश्चित व निर्णायक प्रभाव उनके व्यक्तित्व पर, उनकी उपलब्धियों पर और उनके जीवन के प्रत्येक पहलू पर स्पष्टतः देखा जा सकता है। अन्त में अपने अनुज के सुदीर्घ, स्वस्थ व सुखी जीवन की मंगल कामना करता हुआ अपने इस लेख को समाप्त करता हूँ।

360 आलमगीरीगंज, बरगद वाली गली,
बरेली – 243005
फोन : 554685

रचना के भीतर से झाँकते गोयल साहब

डॉ० नागेन्द्र शर्मा

'रामप्रकाश गोयल' मूलतः प्रेम और सौन्दर्य के विषय को लेकर लिखने वाले रचनाकार हैं। ग़ज़ल पुस्तकें "दर्द और टीस" को मुख्य विषय बनाकर लिखी गयी हैं "एक समन्दर प्यासा-सा" और "रिसते घाव" के आधार पर मैं गोयल साहब में एक बड़े रचनाकार को पाता हूँ। गोयल साहब की रचना के भीतर टीस और दर्द सहता एक साहित्यकार है जिसकी टीस अपनी है, जिसका दर्द अपना है, जिसके घाव अपने हैं, पर वैयक्तिकता का इतना लोक प्रसारी घाव है कि यह घाव, यह दर्द लोक का हो गया है।

दर्द तो सिर्फ मेरा अपना है, उसमें शामिल मगर ज़माना है।

दर्द देने वाला और कोई नहीं, ईश्वर है जिसने इनकी ममता पर डाका डाला है, इनके लख्ते जिगर को, जिस्म के टुकड़े को, इनके भविष्य को, इनके बुढ़ापे के सहारे को इनसे सोलह वर्ष की उम्र देकर छीन लिया।

दर्द और टीस ने गोयल साहब को बुना है। यह दर्द उनकी रचनाओं में अधिकांशतः प्रेम के बहाने आया है और जहाँ प्रेम लौकिकता को लाँघ कर अलौकिक शक्ति की ओर इंगित करता है वहाँ कविता रहस्यात्मक झंकार देने लगती है

ग़ज़ल या कविता के लिए इन्होंने बहुत ज़ोर नहीं लगाया है - बस हृदय के उद्‌गार रचना में ढलते गए हैं। गोयल साहब की ग़ज़ल कविताओं से ऐसा लगता है कि इसमें कविता अधिक है, विचार कम, हृदय ज़्यादा, मस्तिष्क कम, उद्‌गार ज़्यादा बुद्धि का भार कम, झंकार ज़्यादा है, संस्कार कम। संस्कार प्राचीनता, विचारों का क्रमजाल, बौद्धिकता, शब्द श्रम और कवित्व चमत्कार के पचड़े प्रायः ढूंढे से दिखते हैं। एक स्थान पर उन्होंने स्वयं स्वीकार किया हैः-

नहीं जानता हूँ मैं क़ाफ़िया, न रदीफ़ से मुझे वास्ता
जो दिलों में सीधी उतर सके, मुझे उस बहर की तलाश है।

अपने दोस्तों से दाग़ और चोट पाने के बाद भी गोयल साहब उसकी शिकायत नहीं करना चाहते, बल्कि उसके लिए कहते हैं :-

"दोस्त की शक्ल में जो है दुश्मन,
उसको जीने की दुआ देते हैं"

दुश्मन भी इनके मित्र हैं। मौत को ये आईना दिखाते हैं लाचारियों, नाकामियों और ज़िन्दगी में मिले दर्द भी इन्हें अपने आदर्श से नहीं डिगा सके। एक मशाल, एक किरण, एक नैतिक प्रकाश, एक ऊँचाई को कायम करती इनकी कविता आधुनिक शोर में भी प्रेम का उल्लास का, विशालता का, भाईचारे का, आदर्श का, मानवतावाद का संदेश सौंपती है।

अँधेरा निराला को भी अच्छा लगता था। निराला जी की कविताओं में अँधेरा और मृत्यु का जितना ज़िक्र है, जितनी चर्चा है, इतनी उस युग के और किसी कवि में नहीं है। अँधेरे पर वही लिख सकता है जिसने अँधेरे से संघर्ष किया है :-

अँधेरा मुझे अच्छा लगता है
क्योंकि अँधेरे में मुझे अंदर का उजाला दिखाई पड़ता है।
झूठ सम्मानित है, सच दंडित
झूठ दंडित हो, सच सम्मानित
वह दिन ज़रूर आएगा।

ऐसी कविताएँ, इतनी ज़ोरदार आशावादी कविताएँ कोई बड़ा कवि ही लिख सकता है। आशा जिसका बल हो, आशा जिसको भाती हो। भला दर्द की कविता करने वाला, प्रेम की कविता करने वाला इतने ज़ोरदार तरीक़े से आशा का दीपक जलाए – यह काव्य दृष्टि इनकी वैचारिक चेतना को उन्नत कर जाती है।

गोयल साहब की रचना के भीतर का साहित्यकार कभी-कभी सपाट बयानी भाषा में सीधे-सीधे यथार्थ शैली का सहारा लेकर प्रगतिशील अनुभवी, संवेदनशील कवि की तरह हर वस्तु को सूक्ष्म ढंग से देखकर बेचैनी में बोलता है और ऐसी कविताएँ संख्या में बहुत अधिक नहीं हो कर भी बहुत उल्लेखनीय हैं। गोयल साहब की कविता मानवीय बर्बरता का व्यंग्यात्मक उद्‌गार प्रस्तुत करती है। गोयल साहब ज़िन्दगी को एक कैलेण्डर मानते हैं जो वक्त की दीवार पर टँगा है। समय अपनी गति से चल रहा है। विज्ञान संहार के उपकरण जुटाकर अपने आविष्कार पर गर्व कर रहा है। सभ्यता व्यक्ति को, मनुष्य को बर्बर बनाती जा रही है। मनुष्य मनुष्य में दूरियाँ बढ़ रही हैं और विश्व की दूरियाँ कम हो रही हैं। प्रेम सूख रहा है, हृदय वीरान हो रहा है, मानवता कराह रही है।

निदेशक
भारतीय पशु चिकित्सा अनुसंधान संस्थान
इज्जतनगर, बरेली

प्रो० राम प्रकाश गोयल : अभिनन्दनीय प्रतिभावान

विश्व प्रकाश दीक्षित 'बटुक'

'टूटते सत्य' के अवसर पर 'दर्द की छाँव में' आप 'आईना' देखें और तदनन्तर 'सच्चे प्रेम-पत्र' पढ़कर 'रिसते घाव' के बारे में 'दिल और दिमाग़' से काम लें तो आपको एक प्रकाश के दर्शन होंगे। आप चाहें तो उसे राम प्रकाश कह सकते हैं।

तो मेरा राम प्रकाश गोयल से वास्ता पड़ा, रास्ते चलते, किसी गोष्ठी या आवास-निवास पर नहीं, उनकी कृतियों के माध्यम से मैं उनसे मिला और यही सच्चा मिलनोत्सव है।

यह एक अजब इत्तिफ़ाक़ है कि गोयल की रचनाओं को पढ़ने के बाद आदमी अनुभव करता है कि उनकी कुछ अनुभूतियाँ और सामने आतीं। बहुत कुछ अपने भीतर सहेज लेने पर भी लगता है जैसे पाठक समुद्र हो गया लेकिन फिर भी अभी प्यासा जैसा ही है और ठीक ऐसे समय राम प्रकाश गोयल की एक और काव्य-पुस्तक सामने आ जाती है - 'एक समन्दर प्यासा-सा' यह वह रचना है जिसमें कवि की चुनी हुई कृतियाँ हैं - ग़ज़ल, गीत, शेर, अतुकान्त कविताएँ, क्षणिकाएँ आदि।

किसी भी रचनाकार की रचना को ठीक से समझने में दुतरफ़ा मुश्किलें खड़ी होती हैं - एक मुश्किल तो कवि खुद खड़ी करता है, जब वह अपनी रचनाओं के लिखे जाने के कारणों पर रोशनी डालता है, दूसरी मुश्किल से तब जूझना पड़ता है, जब भूमिका आदि लिखने वाले पाठक को दिग्भ्रमित करते हैं। पर यह चलन है जिसकी चाल उस वक्त मद्धिम पड़ने लगती है जब पाठक अपने दिल और दिमाग़ से काम लेना शुरू कर देता है।

अपनी बात कहते समय राम प्रकाश जी ने कविता के सम्बन्ध में जो कुछ कहा है, वह उनके मनीषी चिन्तक और विचारक होने का प्रमाण है। बहुत कम लोग हैं जो कविता के सम्बन्ध में इतनी सूक्ष्म, किन्तु गम्भीर, साथ ही व्यापक बात कह सकें। वे लिखते हैं - 'काव्य

बहता है, हृदय की रसधार से अथवा मस्तिष्क से। हृदय करता है सृजन और मस्तिष्क करता है निर्माण। सृजन का अर्थ है शून्य से अस्तित्व में लाना। जहाँ कुछ भी न था, वहाँ अचानक शून्य से कुछ अवतरित होता है। वही असली काव्य है। जहाँ मस्तिष्क कार्य करता है, वहाँ हम जमाते हैं, सुन्दर शब्द बिठाते हैं, व्याकरण, छन्द, मात्राएँ – सब व्यवस्थित करते हैं। सच्चे काव्य के लिए भाषा आवश्यक है, अनिवार्य नहीं। काव्य का जन्म मात्र व्यथा से नहीं अपितु व्यथा और वैचारिक अनुभूति के सहयोग से होता है।'

काव्य के भावपक्ष और शिल्पपक्ष पर ये बातें विचारवान् व्यक्ति ही कह सकता है। राम प्रकाश जी ने रवीन्द्र ठाकुर का उल्लेख करते हुए लिखा है – रवीन्द्रनाथ का मार्ग (सौन्दर्य अथवा कला मार्ग) ही काव्य का मार्ग है। जहाँ तक मैं समझ सका हूँ राम प्रकाश जी भाव पक्ष और कला पक्ष दोनों में ही सौन्दर्य अथवा कला के समर्थक हैं। किसी एक पक्ष में सौन्दर्य हो और दूसरों में नहीं तो ऐसी रचना लँगड़ी होगी और यह एक अच्छी बात है कि गोयल ने जो गाया है वह प्रखर है, लँगड़ा नहीं।

उनकी रचनाओं को पढ़कर लगा कि गोयल जी के चिन्तन का, अनुभव का फलक बहुत विस्तृत है। प्रेम के समीक्षक या कोण, अध्यत्म, दर्शन, राजनीति, व्यक्ति, समाज आदि पर उत्तमोत्तम उक्तियाँ प्रस्तुत की हैं उन्होंने। उनके काव्य में जीवन का गान है। जीवन बहुआयामी होता है, फलतः श्री गोयल का काव्य बहुआयामी है।

कुछ विचार या अनुभूतियाँ तो ऐसी है जिन्हें हर वक्त गुनगुनाने का मन करता है। एक गहन आध्यात्मिक अनुभूति का आनन्द लें –

तिरा जलवा आँख जो देख ले, तो हो कामयाब यह ज़िन्दगी,
कभी जिसके बाद न रात हो, मुझे उस सहर की तलाश है।
मैं भटक रहा हूँ इधर-उधर, कभी इसके दर कभी उसके दर,
जो मिला सके मुझे मुझसे ही, उसी राहवर की तलाश है।
खुद घटाएँ संदेश लाती हैं, उनका आना मल्हार होता है।
आईना जब भी देखता हूँ मैं, मैं नहीं उसमें यार होता है।
दीनो-दुनिया का वह नहीं रहता, प्यार का जो शिकार होता है।।

मीराबाई का दर्द और कबीरदास का दर्शन एक साथ अनुभव

करना चाहें तो इन अनन्य भावरी पंक्तियों को गुनगुनाएँ

अविश्वसनीय राजनीति और वर्तमान मायावी मनुष्य पर कटु किन्तु सत्य टिप्पणी देखें –

इस दौरे सियासत में ये सौग़ात मिली है।
अब लोग किसी का भी भरोसा नहीं करते।।
फ़ासिले फिर भी दिल में रहते हैं,
जब कोई फ़ासिला नहीं होता।

बड़ी बात यह कि कवि व्यथा सहता हुआ भी, अविश्वसनीय स्थितियों के बीच रहता हुआ भी सचेत है, सजग है और भविष्य के प्रति उत्साहित है –

मंज़िलें उस तरफ़ भी होती हैं, जिस तरफ़ रास्ता नहीं होता।

रामप्रकाश जी ने रागात्मकता से अलग जब विचार का दामन थामा है, तब वे आधुनिकता के मनोविज्ञान को उजागर करते हैं। 'मेरा दु:ख' कविता में आज के ईर्ष्यालु मनुष्य की मनोवृत्ति का सजीव चित्रण हुआ – हमारा सबसे बडा दुःख यही है कि दूसरा सुखी क्यों है ? 'तन्हा इंसान' आदि रचनाएँ भी आज की मानसिक स्थितियों को उजागर करती हैं।

रामप्रकाश गोयल के काव्य की एक और विशेषता है – वह बामुहावरा है। शायद ही कोई पंक्ति ऐसी हो जिसमें मुहावरा न हो लेकिन इससे भी बड़ी बात एक और है और वह यह कि इस तरह भी अर्थ निकाल लें चाहे तो उस तरह भी। एक उदाहरण लें :–

जब भी तेरे क़रीब होता हूँ, अपने होशो–हवास खोता हूँ।

इन दो पंक्तियों की तितरफ़ा मार है – एक तो शृंगार पक्ष है जब भी प्रेमी–प्रेमिका क़रीब होते हैं तो होशो–हवास कहाँ रह जाता है ? यही शृंगार रस अपने चरम बिन्दु पर है। दूसरा भौतिक शत्रुता का पक्ष। जब भी शत्रु सामने या निकट होता है तो हम अपना विवेक खो बैठते हैं और अघटित घट जाता है। यहाँ रौद्र–रस की परिपक्वता है। तीसरा है आध्यात्मिक पक्ष। जब भी हम भगवान् के निकट होते हैं तो हमें भौतिकता की, तन–मन की सुधि नहीं रहती है।

सच तो यह है कि गोयल की रचनाओं में उनका समग्र जीवन मुखर हुआ है। एक वैज्ञानिक दृष्टि, तर्क संगत विचार और सांस्कृतिक

आग्रह के साथ वर्तमान की विसंगतियों को एक साथ देखना चाहें तो रामप्रकाश गोयल की रचनाओं को पढ़ें।

श्री रामप्रकाश गोयल की प्रतिभा अभिनन्दीय है। आगामी 'जून' में वे 75 वर्ष पार कर रहे हैं, आगामी सदी में। मेरी शुभकामनाएँ और शुभाशीष ग्रहण करें – वे शतायु हों, दीर्घायु हों, चिरायु हों। व्यक्ति, समाज, राष्ट्र और साहित्य की सेवा के अधिकाधिक अवसर प्राप्त कर विजयी हों जीवन के संग्राम में और अपने सामने आने वाली चुनौतियों को मुँह तोड़ उत्तर देते हुए कह सकें :-

मैं इम्तिहान में क़ायम रहा वफ़ा के साथ।
वह टूट–टूट गए मुझको आजमाने में।'

रेणुका सदन, ए–26, लाजपत नगर,
साहिबाबाद – 201005

ग़मख़्वार गोयल

मौ0 फ़हीम सिद्दीक़ी

लगते हैं मज़ामीं[1] के अम्बार[2] बरेली में
इस शान का गोयल है फनकार[3] बरेली में
ढूँढे भी नहीं मिलता ईसार[4] बरेली में
ज़िक्रे मयोमीना[5] है बेकार बरेली में
ये शर्त है शायर की आवाज़ वसीमी[6] हो
तहसीन[7] की फिर देखो बौछार बरेली में
सोये हुए ज़हनों[8] को गर तुमको जगाना है
रहने दो क़लम अपना बेदार[9] बरेली में
इस दौर के शायर का अन्दाज़ है कुछ ऐसा
मद्रास में कश्ती[10] है पतवार[11] बरेली में
यूँ तो है "फ़हीम" अच्छा हर एक यहाँ लेकिन
गोयल सा नहीं, कोई ग़मख़्वार[12] बरेली में।

1. मजमून (टापिक) 2. ढेर, 3 कलाकार, 4. हमदर्दी, 5.शराबदानी या शराब की सुराही, 6. सुन्दर, वसीम बरेलवी का उपनाम, 7. दाद लेना, 8. दिमाग 9. जागा हुआ 10 नाव 11 चप्पू नाव चलाने का 12 हमदर्द

चौहट्यिा तिलहर, (शाहजहाँपुर)

साहित्य सेवी प्रो0 रामप्रकाश गोयल

डॉ0 कौशल नन्दन गोस्वामी

महानगर बरेली माँ सरस्वती के वरद पुत्रों से अभिमण्डित रहा है। यहाँ समय-समय पर साहित्य सेवी और विद्वान जन्मते रहे हैं जिन्होंने माँ भारती के कोष को समृद्ध बनाया है। पं0 राधेश्याम कथावाचक का नाम कौन नहीं जानता जिनके लिये यह कहा जाता है -

समय-समय पर भेजते सन्तों को श्रीराम।
बाल्मीकि तुलसी भये, तुलसी राधेश्याम।।

इन्होंने नाटक और रामायण के क्षेत्र में अभूतपूर्व ख्याति प्राप्त कर बरेली का नाम देश ही नहीं, विदेशों तक पहुँचाया। ऐसे ही मँझे हुए कवि थे श्री रामजी शरण सक्सेना जिनकी 'निर्झरिणी' कृति ने खूब धूम मचायी। यही नहीं सक्सेना जी और पं0 राधेश्याम जी के यहाँ साहित्यिकारों का सम्मेलन होता था तथा साहित्यिक वातावरण तत्कालीन युवा कवियों की प्रेरणा का आधार बना। बरेली नाथूराम 'नम्र', होरीलाल 'नीरव', सन्तोषी जी जैसे कवियों की साधना स्थली रहा है। इनके बाद किशन सरोज, ज्ञानवती सक्सेना, डॉ0 महाश्वेता चतुर्वेदी, डॉ0 मृदुला शर्मा जैसे कई कवि और कवयित्रियों ने साहित्य सृजन कर गौरव प्राप्त किया। प्रो0 राम प्रकाश गोयल ने पुरानी और नई पीढ़ी के बीच की कड़ी बनकर साहित्य जगत में पदार्पण किया। उनकी कृतियों में जहाँ प्राचीन संस्कृति के प्रति व्यामोह है वहीं आधुनिक जीवन की हलचल भी दिखायी देती है।

श्री गोयल कविता ही नहीं हर विधा में अच्छी पकड़ रखते हैं। उनकी प्रतिभा कविता के साथ-साथ उपन्यास, कहानी, नाटक, लघुकथा, वार्ता, साहित्य आदि के रूप में मुखरित हुई है। गोयल जी की कृतियाँ -'टूटते सत्य', 'सच्चे प्रेम पत्र', 'दिल और दिमाग', 'दर्द की छाँव में', 'रिसते घाव', 'एक समन्दर प्यासा सा' आदि विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। इनमें गोयल जी की गहन अनुभूति ही नहीं उनका अनुभव भी सहज व्यक्त होता है।

कवि के रूप में गोयल जी के गीतों और गज़लों में संवेदना,

निष्कलुष आत्मीयता, सरलता और माधुर्य बिखरा पड़ा है। उनके गीत कुछ कहते से, चुभते से और हृदय तल में समाते से प्रतीत होते हैं। उनमें जीवन है, सम्प्रेषणीयता है और हृदय स्पर्शिता विद्यमान है। वस्तुतः राम प्रकाश गोयल परम्परावादी लहजे के ग़ज़लगो कवि हैं किन्तु उनमें आधुनिकता का भी आकर्षण है। इनके संग्रहों में गीत, गज़ल, क़तआत, शेर, क्षणिकायें और कवितायें समाहित हैं। सच तो यह है वे बनावट नहीं बुनावट के कवि हैं। दर्द तो मानो उनके गीतों का प्राण ही बन गया है जिसके उदाहरण "दर्द की छाँव में" काव्य संग्रह में अधिक मिलते हैं। कहीं प्रेम और विरह की अनुभूतियाँ साकार हुई हैं। कहीं सामाजिक विषमताओं की पीड़ा उनके मन मस्तिष्क को झकझोरती है। कवि गोयल अपने प्रिय के लिये कभी व्याकुल दिखायी देते हैं तो कभी बेरुखी के सताये दिखायी देते हैं किन्तु गिला कर पाने में स्वयं को असमर्थ पाते हैं जैसे –

"बेरुखी उसकी सह रहे हैं हम।
फिर भी हमसे गिला नहीं होता।।

कहीं–कहीं उनका दिल क़ाबू में नहीं रह पाता, इसलिये कह उठते हैं –

मैंने चाहा कि उससे दूर रहूँ।
क्या करूँ दिल तो मानता ही नहीं।"

उन्हें सच्चे प्यार पर ही भरोसा है जिसमें नाकामी का कोई स्थान नहीं –

"प्यार होता नहीं कभी नाकाम
इस पे ईमान ला के देखो तो।

कवि इन्सानियत पर हो रहे कुठाराघात को सहन नहीं कर पाता। इन्सानियत की बुनियाद दोस्ती, प्रेम, भाईचारे की भावना का कवि प्रबल समर्थक है। वे दूसरों के आँसुओं से भीगी पलकों वालों के लिये भगवान का दर्जा देते हैं –

"जिसकी आँखों में हों आँसू किसी मुफ़लिस के लिये।
ऐसे इन्सान को भगवान समझते रहिये।"

मुहब्बती इन्सानों से कवि का विशेष लगाव है। वह उनके लिये एक नयी बस्ती बसाने की कामना करता है।

जो मुहब्बत करें नफ़रत से सदा दूर रहें
ऐसे इन्सानों की एक बस्ती बसायी जाये।

कवि गोयल साम्प्रदायिकता व अलगाव वादी प्रवृति के विरोधी हैं। वे सबको भारत भूमि की सन्तान मानते हुए इन्सानियत का सन्देश देते हैं–

हम न हिन्दू न मुसलमाँ, न सिख ईसाई,
हम हैं इन्साँ, हमें इन्सान समझते रहिये।

उन्होंने नीति विहीन राजनीति पर भी प्रहार किया है जिससे पवित्र रिश्तों में भी दरार पड़ जाती है। कवि ने अपनी पीड़ा को आक्रोश भरे स्वर में मुखरित किया है।

"रहनुमा बनके हमको लूट रहे
ऐसी इस दौर की सियासत है।"

कवि ने बढ़ रही दूरी को कम करने के लिये दिल की गाँठें खोलने का मार्ग सुझाया है। उनकी ग़ज़लों में आदमी के खोखलेपन, उसकी निराशा और नाकामयाबी चित्रित है लेकिन कवि आस्था और विश्वास को खोता नहीं –

"थक गये पाँव दूर है मंजिल,
फिर भी चलते ही हमको रहना है।"

यही नहीं गोयल जी का दार्शनिक और आध्यात्मिक चिन्तन भी स्तुत्य है जिसमें जीवन का यथार्थ समाहित है जैसे –

सबके दिल में खुदा का जलवा है
हर बशर कितना खूबसूरत है।
पहले अपनी खुदी मिटाना है,
फिर खुदा के क़रीब जाना है।

वस्तुतः कवि में भारतीय दर्शन की गहरी छाप विद्यमान है। श्री गोयल अन्य कवियों की भाँति भाग्य पर भी भरोसा करते प्रतीत होते हैं, वे किस्मत की प्रबल शक्ति का संकेत कराते हुए लिखते हैं –

"इन्साँ हँसता है कभी और कभी रोता है,
वही होता है जो क़िस्मत में लिखा होता है।"

कहीं–कहीं श्री गोयल उपदेशक से प्रतीत होते हैं किन्तु दोस्ती के अन्दाज़ में अपनी बात रखने में माहिर हैं।

"आपको जो भी जितना प्यारा हो,
उससे उतना ही दूर रहिये आप।"

इनकी रचनाओं में शैल्पिक चारुता भी अवलोकनीय है। गीत और ग़ज़लों में अनूठा प्रभाव है। कवि ने प्रतीकों के माध्यम से अपनी अनुभूतियों को हृदय स्पर्शी बनाया है। बिम्बात्मक भाषा सरलोन्मुख

है व्यवहारिक शब्दावली विविध भाषाओं के शब्दों को समेटे है उनकी रचनाओं में यथा स्थान अलंकारों का भी प्रयोग मिलता है। कवि ने जान-बूझ कर अपनी कविता को अलंकारों का अजायब घर नहीं बनाया है। जो स्वाभाविक रूप से आये हैं, उन्हीं को अपनाया है जैसे

पी गया कितनी नदियाँ अब तक एक समन्दर प्यासा-सा।
मीठा पानी पीकर इतना क्यों है अब तक खारा-सा

गीतों और ग़ज़लों में अन्त्यानुप्रास, टेक, अन्तरा आदि होने से संगीतात्मकता का गुण विद्यमान है। इनको कुशल कलाकार स्वरबद्ध कर आसानी से गा सकता है। अतः इनमें सुगेयता का गुण विद्यमान है।

इस प्रकार श्री रामप्रकाश गोयल अच्छे कवि और ग़ज़लकार हैं। इसके अतिरिक्त इनके गद्य साहित्य को भी सराहा जा सकता है। 'टूटते सत्य' उपन्यास में त्रिकोण प्रेम का चित्रण कुछ अनूठी भंगिमा लिये हुए है। जिसका एक एक शब्द पाठक के मन पर गहरी छाप छोड़ता है। ''सच्चे प्रेम पत्र'' पुस्तक में गोयल जी के अनुभव समाहित हैं। इसी प्रकार 'दिल और दिमाग़' नाटक भी बड़ा मनोवैज्ञानिक है जिसमें मनुष्य के हृदय और मस्तिष्क में उद्भूत द्वन्द्वों का प्रतीकात्मक चित्रण है। श्री गोयल अच्छे वार्ताकार भी हैं जिनकी अनेक वार्तायें आकाशवाणी और दूरदर्शन आदि से समय-समय पर प्रसारित हुई हैं। वे काफ़ी समय से विभिन्न संस्थाओं से जुड़कर माँ भारती की सेवा में मनोयोग से तत्पर हैं और 'विवेक गोयल साहित्य पुरस्कार' के माध्यम से उदीयमान साहित्यकारों का उत्साह वर्धन कर रहे हैं।

निःसन्देह श्रीरामप्रकाश गोयल सच्चे अर्थों में एक उच्च कोटि के साहित्यकार हैं। चिन्तन की गहनता और अभिव्यक्ति की सहजता ने उन्हें अधिक सफल बनाया है हमारी यही कामना है कि वे चिरंजीवी हों और जीवन पर्यन्त साहित्य सृजन कर सरस्वती के भण्डार को समृद्ध करते रहें।

रीडर एवं अध्यक्ष, हिन्दी विभाग
राजेन्द्र प्रसाद (पी0जी0) कॉलेज
मीरगंज (बरेली)

PROF. GOEL, SO MANY IN ONE

Dr.(Smt.) Suman R. Saxena

I take this opportunity to write a few words about Prof. Ram Prakash Goel, one of the most reputed senior citizens of Bareilly. To say the least about him, he is a literary giant and holds a place of pride among the lovers of art and literature. The Goddess of knowledge and wisdom has ever been smiling upon him and has generonsly showered her blessings upon him. He is an extroert and has perhaps mastered the art or living. Instead of sharing his grief, he loves to share the pleasurable moments of life. In fact, he seems to have no complaints, no grudges against life and instead of looking before and after and pining for what is not, he is content with his bounty. By his sweetness of disposition and frankness of manner he charms everyone who comes in contact with him. He is a poet, a play wright, an actor, a ghazal singer, a very good speaker endowed with the wonderful power to keep large number of audience spell bound and what not. No doubt, he is a many sided genius. Our literature would certainly have been poorer without his contribution which is our prized possession. His philosophy of life is one contained in the essence of Gita "Action is thy duty, reward is not thy concern". He honours 'love' as the governing principle of the universe for 'God is love'. It is itself a great honour to be associated with so many institutions and organisations and he has been honoured as such. It will not be too much to say that he is hiding a vast sea within himself as some poet has said :

कहीं समंदर बूँद समाया,
कहीं है सुख में दुख की छाया।

I have always known him as one of my sincerest well wishers and I wish him a long life being awaited by love and honours at every step.

Reader Deppt. of English
Kanya Maha Vidyalaya
Bhoor, Bareilly

एक असाधारण व्यक्ति : प्रो0 रामप्रकाश गोयल

अंजु पाण्डेय

रोशनी देता रहा सबको मगर खलता रहा,
आँधियाँ उठती रहीं तूफ़ान सा चलता रहा,
हँसते-रोते ज़िन्दगी का कारवाँ चलता रहा,
दीप मैं देहरी का बनकर, रातभर जलता रहा,

श्री राम प्रकाश गोयल जी के व्यक्तित्व पर लिखने से पहले उपरोक्त पंक्तियों का स्मरण हो उठा। हमारे लिए यह अत्यन्त सौभाग्य का विषय है कि जनपद बरेली के नागरिकों द्वारा ज्ञानवृद्ध, तपोवृद्ध एवं युवक वयोवृद्ध श्री रामप्रकाश गोयल जी का नागरिक अभिनन्दन उनके पिचहत्तरवें जन्म-दिन पर किया जा रहा है। अनादि काल से ही परम्परा रही है कि तपस्वी, त्यागी, ज्ञानी विभूतियों का अभिनन्दन करके हम गौरव संवृद्ध ही नहीं होते अपितु भारतीय संस्कृति के अनुरूप हम अपने धर्म का पालन करते रहे हैं।

श्री गोयल साहब को मैं लगभग पन्द्रह वर्षों से जानती हूँ। काफ़ी निकट से उन्हें पढ़ा व समझा है। गोयल साहब एक असाधारण व्यक्तित्व वाले व्यक्ति हैं। उनमें अनेक सद्गुणों का समावेश एक कलात्मक ढंग से मैंने पाया है जिसका विशद विवेचन करना भी सूर्य को दीपक दिखाने के समान है।

मेरी सद्भिलाषा है कि श्री गोयल जी सामाजिक, साहित्यिक एवम् धार्मिक यश की पावनमयी स्थिति को प्राप्त हों तथा उनका जीवन स्वस्थ एवं दीर्घजीवी हो। मैं इस कामना के साथ उनके व्यक्तित्व को कुछ शब्द समूह में सिमेटने की कोशिश कर रही हूँ।

श्री गोयल साहब बहुत सरल हृदय, उदार एवं कर्मठ व्यक्ति हैं। जीवन के तमाम रूपों को बड़ी सरलता से सहजता से उन्होंने अपनाया है। वे निश्चित ही निर्लिप्त व्यक्ति हैं। उन्हीं के शब्दों में :-

किसको पाना है किसको खोना है
जो भी होना है, वह तो होना है

पल में हँसना है पल में रोना है, आदमी तो महज़ खिलौना है।

ऐसे बहुमुखी प्रतिभा के व्यक्ति का समाज में महत्वपूर्ण स्थान होना स्वाभाविक बात है। वस्तुतः उनका अभिनन्दन एक विशिष्ट बहुआयामी व्यक्तित्व के सम्मान का प्रतीक है।

श्री गोयल साहब द्वारा समर्पित तन मन धन की सेवा से हम सब उनके निकटस्थ और समर्थक हैं। ऐसे मानवीय भावों से परिपूर्ण एवम् समाज सेवी व्यक्तित्व का सम्मान करना हमारे राष्ट्र व जनपद बरेली का सम्मान है।

संसार में सभी मनुष्यों की प्रवृत्ति भिन्न-भिन्न प्रकार की होती है। कुछ व्यक्तियों का लगाव अर्थ की ओर होता है तथा धनोपार्जन कर वैभवशाली जीवन व्यतीत करना उनका उद्‌देश्य होता है। कई लोगों का झुकाव सत्ता की ओर होता है। वे राजनीतिक दाँव पेंच द्वारा या खुशामद करके पदासीन होकर सत्ता उपभोग करने को कृत कार्य समझते हैं लेकिन उत्कृष्ट प्रकार के लोगों का जीवन उद्‌देश्य धन, वैभव या सत्ता की ओर न होकर अपने कर्मों द्वारा सुयश अर्जन करना होता है। जनता जनार्दन की विभिन्न क्षेत्रों में एवं विभिन्न माध्यमों द्वारा सेवा करना ही उनके जीवन की साध होती है। ऐसे ही मनीषियों में श्री राम प्रकाश गोयल की गिनती होती है।

श्री गोयल जी एक विधि विशेषज्ञ, सहृदय कवि एवं सफल अभिनयकार, गजलकार, गीतकार व साहित्यकार हैं। आपने साहित्य की अधिकांश विधाओं पर लेखनकार्य किया है लेकिन गोयल साहब की ग़ज़लों ने मुझे सबसे ज़्यादा प्रभावित किया है। श्री गोयल साहब की ग़ज़लों में हिन्दी व उर्दू की शब्दावलियों का जो अनूठा संगम है यह अन्यत्र दृष्टिगोचर नहीं होता। आपके साहित्य में मानवीयता, प्रेम, मैत्री, करुणा, सहानुभूति आदि सभी गुण प्रदर्शित होते हैं। गोयल जी की दार्शनिक सोच जीवन की गहरी सच्चाइयों से जुड़ी है। उनके पास अनुभवों का विपुल भण्डार है। श्री गोयल जी ने शेर व शायरी लिखने व सुनाने दोनों में महारत हासिल की है। उनकी ग़ज़लों में तपे हुए दिल की आवाज़ है, एक तड़प व खालीपन है जो शायद उनके बेटे स्व० विवेक गोयल को ईश्वर ने उनसे छीन कर उनके अन्दर भर दी है।

श्री गोयल साहब ने दुनिया व उसके दस्तूरों को काफ़ी नजदीव से देखा है। हर बात को अपने तजुर्बे और अपनी सुलझी हुई संजीद तबीयत के अनुसार सोच-समझकर बयान करने की कोशिश की है जिन्दगी की हर उलझन को हर गम को, हर खुशी को उन्होंने गजल की जुबान से पेश किया है। उनकी गज़लों में प्यार व सच्चाई झलकती है।

वास्तव में मैंने अनुभव किया कि गोयल साहब ने जिस ओर कदम बढ़ाया उसी ओर सफलता ने उनका स्पर्श कर लिया है। गोयल जी बचपन से ही कुशाग्र बुद्धि के थे। आपने 14 वर्ष की अल्पायु में ही अपने मित्रों के साथ 'बाल परिषद' नाम की संस्था बनाकर निम्न कहावत को चरितार्थ कर दिया।

"होनहार बिरवान के होत चीकने पात,
या फिर इस कहावत को यूँ भी कह सकते हैं
सुपूत के पैर पालने में दिख जाते हैं

श्री गोयल जी ने सोलह वर्ष की आयु में यंग-क्लब बनाया। खेलकूद, वाद-विवाद, अभिनय आदि सभी में आपकी समान रुचि थी। 30 जून सन् 1925 से लेकर आज तक सभी पारिवारिक, सामाजिक, साहित्यिक, वैधानिक, राजनीतिक दायित्वों का निर्वाह आपने बखूबी निभाया है। श्री रामप्रकाश गोयल जी के नियमित, व्यवस्थित व अनुशासित जीवन पर जितना भी लिखा जाए कम है। श्री गोयल जी जैसे कर्मयोगी व कर्मठ व्यक्तित्व का बखान करने में लेखनी शायद सक्षम नहीं है।

अभिनन्दन ग्रन्थ समर्पण की इस बेला में मैं उनका सस्नेह, अभिवादन करती हुई, उनके दीर्घायु होने की कामना करती हूँ। मुझे उनके जीवन से काफी प्रेरणा मिली है। हमेशा हर काम में उन्होंने मेरा उत्साहवर्धन किया है। मेरे हतोत्साहित या निराश होने पर हमेशा आशावादी दृष्टिकोण रखते हुए वे कार्य के प्रति नवीन शक्ति संचार करते हैं। सभी उम्र के लोगों के साथ उनका सदैव सहयोगात्मक रवैया ही रहता है। ऐसे बहुमुखी प्रतिभा के धनी, हँसमुख व्यक्ति के लिए अनेकानेक शुभ कामनायें प्रेषित करती हूँ। आपका भावी जीवन बहुजन हिताय, बहुजन सुखाय हो, यही मेरी उस परम पिता से प्रार्थना है।

प्राधानाचार्या
रेलवे कालोनी बरेली

प्रो0 राम प्रकाश गोयल

चेतन दुबे 'अनिल'

श्री राम प्रकाश गोयल एक श्रष्ठ ग़ज़लकार हैं। अब तक उनके तीन ग़ज़ल- संग्रह- 'दर्द की छाँव में', 'रिसते घाव' तथा 'एक समन्दर प्यासा-सा' प्रकाशित हो चुके हैं। 1987 से 1999 तक की 12 वर्ष की अवधि में गोयल साहब ग़ज़ल की दुनिया में एक प्रमुख स्थान पा चुके हैं। उनकी ग़ज़लें अपने प्रिय की सुधियों में सृजित हुई हैं जिनमें मुहब्बत के विविध रंगों की चमक है। विरह की आँच है। उन्होंने प्रेम को भोगा है और भोग कर ही उन्होंने सृजन किया है। उनकी शायरी दिमाग से नहीं दिल से निकली है। डा. उर्मिलेश ने लिखा है- "वे शोर के नहीं शऊर के शायर और कवि हैं। ग़ज़लों में वे एक दर्द -आशना दिल रखने वाले शायर के रूप में नज़र आते हैं। वे दर्द के भोगे हुए क्षणों के निश्छल रचनाकार हैं।"

1951 में स्व. निरंकार देव 'सेवक' और स्व. बाबू रामजी शरण सक्सेना के सान्निध्य में रहकर उनके मन में कविता के प्रति एक सम्मोहन जागृत हुआ। गोयल साहब ने स्वयं लिखा है-" बाबू रामजी शरण सक्सेना के शिष्यत्व में 1951 में मैंने वकालत शुरू की। सप्ताह में एक दिन उनके यहाँ काव्य-गोष्ठी का आयोजन होता था, वहीं बाबूजी के चरणों में बैठकर मैंने वकालत और कविता का अ ब स सीखा।"

14 फरवरी 1983 को गोयल साहब का एक मात्र पुत्र 16 वर्ष की अल्प वय में ही काल के क्रूर हाथों द्वारा सदैव के लिए छीन लिया गया। इस आघात ने उन्हें बुरी तरह तोड़ दिया और उन दिनों हर पल, हर लम्हा एक बेकसी, एक बेबसी के आलम में गुमसुम पड़े रहने वाले गोयल साहब के अंदर के छुपे कवि को, ग़ज़लगो को बाहर निकलने के लिए विवश कर दिया। तभी उन्होंने लिखा-

"मेरी क़िस्मत में दिन नहीं शायद
रात के बाद रात आई है।"

गोयल साहब ने स्वयं उन दिनों के हालातों को स्पष्ट करते हुए लिखा है "ज़िंदगी की ठोकरें, झंझावत, असहाय निराशा, अपनों के धोखे, एहसान फ़रामोशी, स्वार्थ का नग्न नृत्य, आत्मीयता का नितान्त अभाव और जीवन की क्षण भंगुरता ही वे उपादान थे जिन्होंने मुझसे ग़ज़लें लिखवाईं।"

चिन्तन, विचार तथा भावना के मिश्रण की कला को ग़ज़ल मानने वाले ग़ज़लकार गोयल साहब ने सोम ठाकुर के शब्दों में " अपनी ग़ज़लों को गुलाबी उर्दू की महक से वंचित नहीं होने दिया है।"

गोयल साहब के ह्रदय में मुहब्बत का दर्द है जिसे देखने वाले विरले ही हैं–

"सबने मेरी हँसी को देखा है
किसने देखी है मेरी मजबूरी।"

गोयल साहब प्रेम को पूजा मानते हैं। उनकी मान्यता है– "प्रेम सृष्टि के संचालन में ऊर्जा पैदा करता है, गति देता है, नियंत्रित करता है। प्रेम समस्त मानवीय संबंधों में सर्वश्रेष्ठ संबंध है। सर्वश्रेष्ठ सुख है। प्रेम प्रेमी के ह्रदय का स्पन्दन है। प्रेम पूजा है, अर्चना है, वंदना है।"

अपने प्रथम दोनों ग़ज़ल संग्रहों 'दर्द की छाँव में' तथा 'रिसते घाव', उपन्यास 'टूटते सत्य' और पत्र संग्रह 'सच्चे प्रेम पत्र' के बाद गोयल साहब को लगने लगा था कि वे भीतर से चुक गये हैं और अब बाहर आने को कुछ बाक़ी नहीं बचा। वे टूटते रहे, घुटते रहे, दुनिया के थपेड़े उनके जज़्बात पर चोट करते रहे। उन्हें स्वयं भी पता नहीं चला कि कौन, क्यों, कब, कैसे और क्या उनसे लिखवाता रहा। बहरहाल सच इतना ही है कि उन्हें एहसासात ने जब मजबूर कर दिया तभी वे लिख सके। उनका मानना है कि –

जिसकी खातिर ही बिक गये थे हम
उसका दुश्मन से मिलना जुलना है।
कोई इसका सबब बताए तो
क्यूँ इधर से उधर गया कोई।
कैसा मुंसिफ निज़ामे कुदरत है
मार कर मुझको मर गया कोई।
अपने हाथों की लकीरों को पढ़ा है जब भी,
उनमें बस तेरी ही तस्वीर नजर आई है।
क्या करेंगे सुना के हाले ग़म
जख़्म दिल के हमें छुपाने हैं।।
उसे बेवफ़ा मैं समझ गया, मेरी सोच कितनी अजीब है।
वह हज़ार मुझपे सितम करे, मेरे दिल के फिर भी क़रीब है।

अनुसंधान न्यू मॉडल कॉलोनी,
इज्ज़तनगर, बरेली–243124

एक अनुपमेय व्यक्तित्व प्रो0 रामप्रकाश गोयल

डॉ0 उषा शर्मा

श्री गोयल स्वयं में एक ऐसा उल्लेखनीय व्यक्तित्व है जिसने अपनी साहित्यिक उपलब्धियों से न केवल आवासीय जनपद वरन प्रदेश को भी गौरवान्वित किया है। श्री राम प्रकाश गोयल विधिक विषयक् ज्ञान से मण्डित हैं। आपका साहित्यिक ज्ञान नितान्त प्रौढ़ तथा परिमार्जित है। साथ ही आप में ज्ञानार्जन की अनुपम लालसा है और इस लालसा को आप अहर्निश वाङ्गमय तप द्वारा सन्तुष्ट करते रहते हैं। निसन्देह गोयल जी उच्चकोटि के हिन्दी सेवकों की प्रथम पंक्ति में सम्मानित स्थान पाने के अधिकारी हैं। अनेक साहित्यिक गोष्ठियों और साहित्यिक सम्मेलनों का सफल आयोजन कर साहित्य की जो निष्काम सेवा की है वह वास्तव में अमूल्य है।

आदरणीय रामप्रकाश जी न केवल शालीन सुसंस्कृत व सुरुचि सम्पन्न व्यक्तित्व के स्वामी हैं वरन सरस्वती के वरद पुत्र भी हैं। आपने अनेकानेक दूरदर्शन के सीरियलों में प्रभावशाली अभिनय भी किया है। कितनी ही संस्थाओं के संरक्षक, अध्यक्ष, जनक व कर्णधार हैं। विवेक गोयल साहित्य पुरस्कार समिति बरेली के संस्थापक हैं।

'चरैवेति चरैवेति' का मूलमन्त्र आपके ही व्यक्तित्व का पर्यायवाची है। आपके लक्ष्य सदैव सुस्पष्ट एवं पथ सुनिश्चित रहे हैं। वाग्मिता का अपूर्व वरदान आपको प्राप्त है। आपकी तर्कशक्ति विलक्षण एवं स्मरणक्षमता अद्भुत है। कर्म को आपने पूजा माना है। भाव की अपेक्षा विभाव को प्राथमिकता प्रदान की है। साध्य की अपेक्षा साधना को प्रीतिकार माना है। वैयत्तिक जीवन की जटिलताओं एवं संघर्षों से जूझते हुए भी कभी एक पल को कर्तव्य पथ से विचलित नहीं हुए।

जब–जब मैं गोयल साहब से मिली, जब–जब मेरी उनसे बातचीत हुई मैंने उनके भीतर छिपी एक ऐसी दिव्य आध्यात्मिक शक्ति के दर्शन किये जिससे पूरी मानव जाति को अपने कल्याण का मार्ग मिल सकता है। पूर्ण विश्वास है कि श्री गोयल जीवन पर्यन्त सारस्वत अध्यवसाय, साहित्य सेवा एवं समाज कल्याण कार्य में अनवरत संलग्न रहेंगे।

आज हमारा पावन कर्त्तव्य है कि साहित्य गगन के इस जाज्वलल्यमान नक्षत्र, उदारचेता, सुरभारती के उपासक वैभव मण्डित महामानव का सम्मान कर अपने सामाजिक व नैतिक दायित्व का निर्वाह करें।

रीडर, राजनीति शात्र, कन्या महाविद्यालय, भूड़, बरेली

प्रो० राम प्रकाश गोयल – एक सहज व्यक्तित्व

राजकुमारी 'रश्मि'

आज जिसे देखो वही ग़ज़लें कह रहा, पढ़ रहा और वाहवाही भी लूट रहा है परन्तु मन में उतरने वाली ग़ज़लें कहना बड़ा ही कठिन है और ऐसी ग़ज़लों के बारे में कहना और भी ज़्यादा कठिन है। वह भी तब जब अपने किसी आत्मीय के बारे में कुछ कहना हो।

आदरणीय रामप्रकाश गोयल एक ऐसा नाम है जिसने साहित्य की कई विधाओं को अपनी लेखनी से निःसृत किया है। एक ऐसी अजस्र धारा जो निरंतर बहती जा रही है। "एक संमदर प्यासा-सा" उनका तीसरा ग़ज़ल संग्रह हैं।

पुस्तक पढ़ने के बाद यह बात ज़हन में आई कि उनके मन के भीतर बहुत गहरे जाकर जो 'कुछ' टूटा है उसी 'कुछ' ने उन्हें इस मुक़ाम पर ला खड़ा किया है जो वे इस तरह की ग़ज़लें कह सके। किसी शायर ने भी इश्क को इस तरह परिभाषित किया है –

"यह इश्क़ नहीं आसाँ, इतना ही समझ लीजे
इक आग का दरिया है और डूब के जाना है।"

भाई राम प्रकाश जी ताउम्र इसी आग के दरिया में डूबे उतराए हैं। उनका ये इश्क़ रूहानी है। आँसुओं की हदों को पार करने वाले शेर जगह-जगह उनकी ग़ज़लों में छाए हुए हैं –

"वह भीड़ में भी तो तनहा दिखाई देता है
वह जाने क्या है, मगर क्या दिखाई देता है"
सबसे मिलने का सिलसिला रखना।
तनहा जीने का हौसला रखना।
प्यासा दरिया बहता पानी
अपनी इतनी राम कहानी।"
कुछ नहीं इस जहाँ में बाहर है
जो भी है आदमी के अन्दर है।
हार को जीत में बदल दूँगा
मेरे अन्दर छुपा सिकन्दर है।

नना हौसला रखते हुए भी वह भाग्य को ही पहला दर्जा देते हैं –

"इन्साँ हँसता है कभी और कभी रोता है
वही होता है जो किस्मत में लिखा होता है।

कुछ क्षणिकाओं के माध्यम से भी उन्होंने अपनी अनुभूतियों को उकेरा है जिसमें उनकी दार्शनिकता और चिन्तन की झलक मिलती है।

"मेरे पास धन है, फिर भी मैं दुखी हूँ
तुम्हारे पास धन नहीं, फिर भी तुम सुखी हो
सुख धन में नहीं, मन में है", "मैं बहुत व्यस्त हूँ
इसीलिए अस्त व्यस्त हूँ।"

उनकी ग़ज़लों में प्रेमिका की बेवफ़ाई का एहसास भी बहुत गहरे होकर उभरा है –

"तुम्हें फुर्सत हो ग़ैरों से तो आना मेरी बाहों में
तुम्हारी दास्ताँ होगी मिरी ख़ामोश आहों में।"
"गर बुलाओगे तो पलकों से चला आऊँगा मैं
वर्ना खुद्दार हूँ, खुद तो न मैं आऊँगा कभी।"

बेवफ़ाई का यह चेहरा उनके अपने उन दोस्तों का भी है जो उनके बहुत क़रीब रहे या उन्होंने जिसे अपने क़रीब समझा।

दोस्तों ने तो दोस्ती बेची, हमने उनके लिए खुशी बेची।
ले सकूँ और चन्द साँसे मैं, क़तरा–क़तरा यह जिन्दगी बेची।
बेवफ़ा हो गया है जब साया, हमने घबरा के रोशनी बेची।

उन्हें यह भी विश्वास है कि हर व्यक्ति अपने किये का फल अवश्य पायेगा।

" हर गुनाह की सजा मिलेगी हमें
सब फ़कीरों ने यह बताया है।"

दर्द को छिपा कर हँसते रहने का भी उनका अपना एक अंदाज है। उनकी सहजता, उनकी विनम्रता और अपनत्व को जैसा मैंने अनुभव किया उसे उसी तरह कहना चाहूँगी –

बात चीत व्यवहार में अपनेपन की गंध,
मिलते ही ऐसा लगे जन्मों का सम्बन्ध।
ऊपर है हलचल बहुत, भीतर है ठहराव,
जितनी हल्की चोट है, उतना गहरा घाव।

उनकी इस रचना धर्मिता को मैं हृदय से नमन करती हूँ।

'अक्षरा' एन–21, गाँधीनगर, ग्वालियर (मध्यप्रदेश)
फोन : 428938

श्री राम प्रकाश गोयल   जैसा सुना वैसा पाया

शतदल

गोयल साहब को, मतलब उनके व्यक्तित्व को, दो-चार मुलाक़ातों में जितना जान पाया उसके आधार पर यही कह सकता हूँ कि वे ज़िन्दा दिल मुजस्सिम इंसान हैं, कवि हैं।

गोरे रंग का खूबसूरत चेहरा, स्वस्थ शरीर, चश्मे के भीतर से झाँकती भावपूर्ण बड़ी-बड़ी आँखें, यही छवि अंकित है मेरे भीतर गोयल साहब की जो कि अब से बीस साल पहले जा बसी थी। इसके पीछे बड़ा रोचक संस्मरण है।

बीस साल पहले पिथौरागढ़ के एक कवि-सम्मेलन का संयोजन मैंने किया और सभी कवियों को लिख दिया कि वे फलाँ तारीख की शाम तब गीत-कविता के जाने-माने कवि श्री किशन सरोज के घर पहुँच जाएँ। सर्वश्री रमानाथ अवस्थी, कन्हैया लाल नन्दन, भारत भूषण, डॉ0 अरुण त्रिवेदी, मक्खन मुरादाबादी (चार और कवियों के साथ) किशन जी के बँगले पहुँच गए। जब मैं कानपुर के चार और कवियों के साथ किशन भैया के बँगले पर पहुँचा तो उन्होंने लपक कर मुझे पकड़ा।

मेरा कॉलर पकड़ कर बोले - 'अबे, यह मेरा घर है कि सराय ?

मुझे पहले से आभास था कि बिना किसी पूर्व सूचना के जब चौदह-पंद्रह कवि किशन भैया के घर जा धमकेंगे तो उनकी भाव-भंगिमा देखने योग्य होगी। सो, मेरे सामने थी। मेरे साथ के चारों कवि ड्राइंग-रूम में चले गए। पर किशन भैया, बराण्डे में मेरा कॉलर पकड़े, मुझे रोके हुए सवाल पर सवाल दागे जा रहे थे। तनिक देर में ही आकर बीच-बचाव किया भारत भैया ने। हम दोनों की पीठ पर हाथ रखकर , हमें कमरे में धकेलते हुए बोले- 'चलो, चाय आ गयी है, चल कर पहले चाय पियो फिर शिकवे-शिकायत करते रहना।'

अपनी-अपनी चाय लेकर हम पुनः बराण्डे मे आ गए। किशन भैया कह रहे थे - 'अबे, इतने लोगों का खाना बनाते - बनाते तेरी

भाभी तो बुढ़ा जायेगी, तभी बँगले के गेट पर दिखे उन्हें राम प्रकाश गोयल–संकट मोचन राम प्रकाश गोयल।

किशन भैया ने लपक कर गोयल साहब का स्वागत किया, भीतर लाए और मेरा परिचय कराया। गोयल साहब बड़ी आत्मीयता से गले मिले। इतने सारे कवियों को पाकर गोयल साहब तो खिल उठे। ज़हीन इंसान हैं इसलिए किशन भैया की परेशानी ताड गए। सभी से राम–जुहार करके वापस हो गए। यह कहते हुए कि 'मैं अभी थोड़ी देर में हाज़िर हुआ।''

गोयल साहब चले गए, पूरा माजरा देख–सुन–समझकर। करीब आधे घण्टे बाद लौटे तो खाने–पीने का पूरा इन्तज़ाम करके और टैक्सी वाले को भी साथ लेकर ।

उस रात किशन भैया के घर में गोयल साहब की सौजन्यता ने हमारी मस्ती में चार चाँद लगा दिए।

ख़ैर, हम लोग तीन दिनों बाद जैसे–तैसे पिथौरागढ़ से लौटे। इस प्रसंग का वह हिस्सा छोड़ता हूँ कि हम पिथौरागढ़ कैसे पहुँचे। हम लौटकर जब किशन भैया के घर आ गए तो पता चला कि टैक्सी वाले दो दिनों से घर का चक्कर लगा रहे हैं। गोयल साहब भी उलझन मे कि हम लोग लौटे क्यों नहीं।

गोयल साहब शाम को दोनों दिन हमारी खोज–ख़बर लेने किशन भैया के घर आए थे। सो आज तीसरी शाम भी आए। संयोग से उसी समय टैक्सी वाले भी आ धमके।

टैक्सी वाले कह रहे थे कि स्वाला में रास्ता खुलने के बाद तीनों टैक्सियाँ पिथौरागढ गयी थीं पर हम लोग उन्हें नहीं मिले। हम उनका सफ़ेद झूठ सुनकर भी उनसे भिड़ नहीं पा रहे थे। यहाँ फिर गोयल साहब ने जज की भूमिका अदा की और हमारा समझौता कराया।

हमने देखा कि गोयल साहब बड़े शान्त, मृदुभाषी और सुलझे हुए व्यक्ति हैं। बड़ा मीठा बोलते हैं, क्रोध उन्हें शायद ही कभी आता हो।

उनके काव्य संग्रह – ''एक समन्दर प्यासा सा'' में छोटी बड़ी बहरों की अनेक ग़ज़लों के शेर 'कोट– करने योग्य हैं जिनमें उस्तादाना कमाले–फ़न झलकता है, मसलन –

इश्क जब कामयाब होता है !
और भी लाजवाब होता है !
झूठ के पैर ही नहीं होते
झूठ कब कामयाब होता है।
आईना क्यों न हो खफा उनसे
जिनके रुख़ पर नक़ाब होता है।

फ़ासिले फिर भी दिल में रहते हैं
जब कोई फ़ासिला नहीं होता
मंज़िलें उस तरफ़ भी होती हैं
जिस तरफ़ रास्ता नहीं होता।

अस्ल में गोयल साहब की शायरी के गहने सादगी और साफ़गोई हैं। कहीं कोई बनावट नहीं। सीधी-सादी रोज़मर्रा की भाषा में सरल-सी बुनावट होती है उनके यहाँ। उनकी ग़ज़लें, नज़्में, कत्आत पढ़ते हुए एहसास होता हे कि उन्हें शेर कहने में कसरत नहीं करनी पड़ती और शायरी अव्वल दर्जे की। वे एक सच्चे शायर हैं। अपने वक्त से मुतअस्सिर होके एक जगह कहते हैं :-

हुआ क्या है आज निज़ाम को, कहीं अम्न है न सुकून है
जो फ़ज़ा में आग लगा सके मुझे उस शरर की तलाश है।
मैं भटक रहा हूँ इधर-उधर, कभी इसके दर कभी उसके दर
जो मिला सके मुझे मुझ से ही, उसी राहबर की तलाश है।

गोयल साहब की सादा बयानी पर तो ' . . . . कौन न मर जाय ऐ खुदा।'

छोड़ कर तुमको मुझे तन्हा सफ़र करना पड़ा
क्या बताऊँ मुझको खुद से किस क़दर लड़ना पड़ा।
रफ़्ता रफ़्ता हो गयी मद्धम मेरे दिल की सदा,
ज़िन्दगी के साज़ को हर हाल में बजना पड़ा।

सोचता हूँ गोयल साहब जैसे हमारे आस-पास, हमारी पहुँच में साधु-संत कोटि के -निर्विकार, निर्लिप्त, निर्पेक्ष कवि-साहित्यकार कितने हैं ? श्री किशन सरोज की धरती पर नज़र डालता हूँ तो गोयल साहब ध्रुवतारा नज़र आते हैं।

डाकतार कालोनी
कानपुर कैंट

प्रो० रामप्रकाश गोयल : व्यक्तित्व एवं कृतित्व

डॉ० नागेश्वर प्रसाद

जीवन में सुख भी है और दुःख भी है, वेदना की टीस भी है तथा प्रेम की मिठास भी। सुख जीवन को नहीं निखारता है। मानव जीवन के प्रति तब सचेत होता है जब वह सहसा वेदना से साक्षात्कार करता है।

श्री रामप्रकाश गोयल की कृतियों के मूल में जीवन की वेदना और प्रेम का द्वन्द्व कार्यशील है। 'टूटते सत्य' (1972), 'दर्द की छाँव में' (1987), 'रिसते घाव' (1992), 'सच्चे प्रेम पत्र' (1992) और 'एक समन्दर प्यासा-सा' (1999) जैसी उनकी कृतियों में इस तथ्य को आसानी से देखा जा सकता है। श्री रामप्रकाश गोयल का व्यक्तित्व तथा कृतित्व दोनों ही बहु-आयामी हैं। इन दोनों ही क्षेत्रों में उनकी बहुआयामिता खुलकर सामने आयी है। एक वकील के रूप में, एक शिक्षक के रूप में, एक नाटककार के रूप में, एक साहित्यकार के रूप में, एक कवि के रूप में, एक दूरदर्शन कलाकार के रूप में और एक समाजसेवी के रूप में उन्होंने अपने जीवन को नयी ऊँचाइयाँ प्रदान की हैं। इन सभी रूपों में उनमें वेदना की टीस और प्रेम की सुगन्ध विद्यमान है। वस्तुतः उनका कृतित्व ही उनके व्यक्तित्व का दर्पण है। उनके व्यक्तित्व में कहीं कोई बनावट, छिपाव और दिखावा नहीं है। उनका जीवन पारदर्शी है और यह पारदर्शिता उनकी कृतियों में स्पष्टतः देखी जा सकता है।

श्री रामप्रकाश गोयल के जीवन का साध्य प्रेम है। उनके लिए "प्रेम से महान कोई भावना नहीं। प्रेम परमात्मा है और परमात्मा प्रेम है।" उन्होंने प्रेम को परमात्मा माना और इसी के लिए अपना समूचा जीवन और कर्म समर्पित कर दिया। उनका यह प्रेम निश्छल प्रेम है, पारदर्शी प्रेम है और आग्रही प्रेम है। मानवता की उदात्त भावना से अभिप्रेरित इस प्रेम में एक संयम है और एक संदेश भी। इसीलिए उनका प्रेम सर्वव्यापक रूप ग्रहण करता दिखायी पड़ता है। इस प्रेम-परिधि के बाहर और उसके विरोध में कुछ नहीं बचता है। उनके शब्दों में -

तन तो कहता है कि कुछ मत छोड़िये,

बुद्धि कहती है कि मन को मोड़िये,
सार जीवन का निहित इस तथ्य में,
आत्मा को ब्रह्म से बस जोड़िये।
नफ़रतों की आग को बुझा के रहेंगे
आपसी ये दूरियाँ मिटा के रहेंगे
हम सभी में ऐसी आत्मशक्ति चाहिए।
तन नश्वर, मन भी है नश्वर,
ईश्वर केवल एक अनश्वर,
फिर तन मन में अन्तर ही क्या ?
समझ न पाता क्यों संसार ?
हम न हिन्दू, न मुसलमाँ, न सिख, ईसाई
हम हैं इंसान, हमें इन्सान समझते रहिये।।
सबके दिल में खुदा का जल्वा है
हर बशर कितना खूबसूरत है।

श्री राम प्रकाश गोयल के जीवन की दूसरी प्रमुख विलक्षणता है कर्म की, साधना की। वेदना और प्रेम की मनोभावनायें निःसार हैं यदि उनके साथ कर्म की ऊर्जा सतत प्रवाहित न रहे। वस्तुतः गोयल के जीवन में कर्म की अथक साधना विद्यमान है। समय का सदुपयोग कैसे करना चाहिए यह उनके जीवन से सीखा जा सकता है। अपने जीवन का हर क्षण उपयोग करते रहते हैं और इस वृत्ति को विविध क्षेत्रों से जोड़कर जीवन को सार्थक बना देते हैं। उनके शब्दों में –

पारस पत्थर छिपा है तुझमें, इसका तुझको ज्ञान नहीं,
लोहे को भी सोना कर दे, तू इतना गुणवान है।
चलते चलते पहुँचेगा तू, खुद ही अपनी मंज़िल पर
नहीं असम्भव कुछ भी जग में, दिल में जब अरमान है।

पर श्री गोयल के जीवन में यह कर्म जब अपने अनुभवों को आकार देने हेतु उद्यत होता है तब उसके दो खण्ड हो जाते हैं। पर ये खण्ड परस्पर विरोधी न होकर पूरक हैं। एक खण्ड रचना के विविध क्षेत्रों में अपने को संस्थापित करता है और दूसरा खण्ड समाज सेवा के क्षेत्र में क्रियाशील दिखायी पड़ता है। इन दोनों ही खण्डों में उनके कर्म के विविध रंग, रूप, तेवर और आकर्षण विद्यमान हैं। यही कारण है कि श्री गोयल एक ओर तन्हाई में शान्ति की तलाश करते हैं और दूसरी ओर जीवन की पूर्णता व संतुष्टि समाज सेवा में पाते हैं। गोयल के शब्दों में –

सबसे मिलने का सिलसिला रखना,

तन्हा जाने का हौसला रखना।
खुशियों को बाँटकर ही ज़माने में तुम रहो,
रोतों के आँसू पोछ के दुनिया में तुम जिओ,
बुझते दिलों में रोशनी करती है ज़िन्दगी।

श्री गोयल अपनी कर्म-साधना में जीवन की यथार्थताओं, वास्तविकताओं से साक्षात्कार करते हुये आगे बढ़ते हैं। भुक्त यथार्थ से वे सीखते हैं, टूटते नहीं और न ही उसे अनदेखा करते हैं। यह उनके जीवन का सर्वाधिक सशक्त पक्ष है। दूसरों को देने का सामर्थ्य उसी में विकसित होता है जो जीवन की विपत्तियों, परेशानियों व कठिनाइयों के समक्ष टूटता नहीं, बिखरता नहीं और न ही हार मानता है। इन्हें जीवन की प्रवृत्ति मानकर जीवन्तता के साथ संघर्षरत रहकर जीवन के अर्थ को जानने के लिए सतत साधनारत रहता है। साध्य साधना का परिणाम है और साधना का तात्पर्य है लक्षित साध्य हेतु अपने को पूरी तरह समर्पित कर देना। इस समर्पण में साध्य ही साधना की निष्पत्ति बन जाती है। इस स्थिति में दोनों अभिन्न हो जाते हैं। तब साधक के लिए साधना ही सब कुछ हो जाती है। अपनी साधना के परिणाम के लिए साधक के लिए कोई महत्व नहीं रह जाता है। साधना में ही साधक अपने जीवन के रहस्यों की तलाश करता नज़र आता है। गोयल की साधना की इसी वृत्ति ने उन्हें निष्काम कर्म का साधक बना दिया जो समूची सृष्टि के साथ अपने को विलयित करने के लिए आग्रहशील है। उनकी रचनाओं और समाज-सेवा में यही साधना-सौंदर्य प्रस्फुटित हुआ है। इसकी खूबी यही है कि यह उनके सम्पर्क में आने वाले लोगों को बरबस अपनी ओर आकर्षित किये बिना नहीं रह सकता। नम्रता, साफ़गोई और प्यार को पाने की अधीरता, अतृप्तता तथा प्यार को देने की आकुलता, तीव्रता जैसे जीवन-मूल्य उनके व्यक्तित्व में समाविष्ट होकर उन्हें जीवन के प्रति एक विशिष्ट नजरिया प्रदान करते हैं उन्हीं के शब्दों में -

गुनाह कितने किये इसका कुछ हिसाब नहीं
मिलेगी कितनी सज़ा इसका भी जवाब नहीं,
मुआफ़ करना मिरे सारे ही गुनाहों को,
हूँ आदमी मगर इतना तो मैं खराब नहीं।

रीडर एवं अध्यक्ष, राजनीति शास्त्र
राजेन्द्र प्रसाद स्नातकोत्तर कालेज,
मीरगंज, जनपद बरेली

बहुमुखी प्रतिभा के धनी प्रो0रामप्रकाश गोयल

विजय सिंह

बहुमुखी प्रतिभाओं के धनी श्री रामप्रकाश गोयल जी पेशे से वकील ज़रूर हैं परन्तु उनका व्यक्तित्व एवं जीवन दर्शन वकालत जैसे शुष्क विषय से कोसों दूर है। अपने जीवन में युवावस्था से ही विधि के प्रोफ़ेसर के रूप में उन्होंने देश को उसका उत्तम भविष्य प्रदान किया। इसके साथ-साथ मानव जीवन की वास्तविकताओं का विभिन्न रूपों में चिन्तन, मनन किया और उन्हें अपने जीवन में साकार रूप देने के लिए समाज सेवा में कूद पड़े और वहाँ भी वे एक स्थान पर ही नहीं रुके रहे वरन अपनी बहुमूल्य और अद्‌भुत लेखनी के माध्यम से जीवन की सूक्ष्म से सूक्ष्म संवेदनाओं को बटोर कर अपनी विभिन्न रचनाओं द्वारा समाज के समक्ष प्रस्तुत किया। क्रूर काल चक्र के हाथों उनके एक मात्र पुत्र-बिछोह ने उनके जीवन को सांसारिक, सामाजिक, प्रेम-वियोग, प्रणय एवं दर्द के सागर में ऐसा डुबोया मानो वे समस्त संसार के अन्दर व्याप्त पीड़ा की प्रतिमूर्ति बन गये हों और उनकी भावनायें उनके दिल और दिमाग़ से ऐसी प्रस्फुटित हुईं जोकि एक अविरल गंगा की पवित्र धारा की भाँति उनके गीत, ग़ज़ल और कविताओं के रूप में जन जन तक पहुँच कर जीवन के बहुआयामी पहलुओं का दर्शन करा रही हों।

प्रेम और वियोग ने उनके मन की गहनतम गहराइयों को कुछ इस तरह स्पर्श किया कि उनके मन मस्तिष्क में समन्दर के प्रति प्रश्नचिन्ह जैसी भावना उबल पड़ी ....

सबसे पूछा कोई अभी तक, मुझे न बतला पाया है,
चाहता क्या है, क्यों ये समन्दर रहता हरदम प्यासा-सा ?

गोयल साहब का हृदय स्वयं एक समन्दर की ही भाँति है जो कि स्वयं में सारे संसार की बुराइयों एवं भलाइयों को स्वयं में ही आत्मसात कर ले और कहे . . . . .

जिन्दगी में जितना रोते जायेंगे,
दोस्तों को उतना खोते जायेंगे।

प्यार से बोलो मिलो बातें करो,
सब तुम्हारे साथ होते जायेंगे।

जीवन में मिलने वाले प्रत्येक व्यक्ति एवं प्राणी के लिए प्रेम की भावना को अपने मन में जीवित रखना किसी साधारण व्यक्ति के बस की बात नहीं है। ऐसी विचार धारा तो किसी परम वैचारिक एवं चिन्तनशील मनुष्य के ही हृदय में पनप सकती है। बच्चों को बचपन से ही शिक्षित किया जाता है कि मानव मात्र एवं प्राणि मात्र से प्रेम करे ईश्वर के दर्शन स्वयं ही हो जायेंगे परन्तु यह विचार कितने लोग जी पाते हैं। ऐसा सोचने के लिए और उसे अपने जीवन में अक्षरसः जीने के लिए स्व त्यागना पड़ता है जो कि गोयल साहब कर सकने में समर्थ हो सके और जीवन की विविध भावनाओं को उन्होंने जीवन में जीने के बाद ही लेखनी बद्ध किया है। यह कोरा लेखन तो हो ही नहीं सकता। गोयल साहब की नज़र में . . . .

खुशियों को बाँट कर ही ज़माने में तुम रहो,
रोतों के आँसू पोछ के दुनिया में तुम जियो।
बुझते दिलों में रोशनी करती है ज़िन्दगी।

करुणा और दया, वेदना और ममत्व शायद उनके हृदय में छिपी पीड़ा को रोक न पाई जो उनकी निम्न पंक्तियों में प्रतिलक्षित होती है–

जो कह रहे थे मुझसे ज़रा अश्क रोकिये,
हालात हुये ऐसे कि वे खुद ही रो दिये।

उनके एकाकी दर्द के एहसास को दर्शाती हुई निम्न पंक्तियाँ मानो दर्द की तीव्रता का साक्षात् दर्शन करा रही हों . . . .

भीड़ में रहकर भी जो तन्हा रहे,
जख्म होंगे किस क़दर उसके हरे।

मानव जीवन का कोई मक़सद होना कितना आवश्यक है ? इस बात की सार्थकता को जीवन की सत्यता के धागे में गोयल साहब ने कुछ इस तरह पिरोया है .. . . .

'ज़िन्दगी का कोई मक़सद तय करो,
वरना तो यह ज़िंदगी वीरान है।
सब यहीं पर ही पड़ा रह जायेगा,

जिन्दगी क्यों मौत से अन्जान है।
समाज में फैली बुराइयों और बुराइयों में पलते लोगों को भी उनकी यह पंक्तियाँ दिशा देने में नहीं चूकेंगी . . . .

दूसरों की ही बुराई में जो रस लेते हैं,
उनकी तस्वीर उन्हें आज दिखाई जाये।
जो मुहब्बत करे, नफ़रत से सदा दूर रहें,
ऐसे इन्सानों की एक बस्ती बसाई जाये।

काश ! ऊपर लिखी पंक्तियों को साकार रूप देखने को मिल जाता और समूचे वातावरण में मुहब्बत की ठंडी हवा बहती जिसमें नफ़रत का कोई स्थान न होता। गोयल साहब का एक और कथन देखिए-

'मय मुझे मदहोश कर सकती नहीं,
मेरे अन्दर प्यार का मैख़ाना है।'

गोयल साहब ने प्यार और मुहब्बत को दौलत के किसी भी पैमाने पर आँकने से साफ़ इन्कार किया है क्योंकि यह प्यार वह दौलत है जो जितना ख़र्च होती है इन्सान को उतना ही धनवान बनाती जाती है।

"है अजीब प्यार की रहगुज़र, यहाँ सोना चाँदी है बेअसर,
वह जो लुट गया वो अमीर था, जो बचा रहा वह ग़रीब है।"

'एक समन्दर प्यासा-सा' एक ऐसा संग्रह है जिसके माध्यम से गीत, गज़ल और कविता का मिलाजुला स्वरूप हमारे समक्ष साक्षात समन्दर के रूप में लहरा रहा है।

गोयल साहब के अतुलित योगदान की परितुलना में हमारी प्रशंसा-क्षमता पर्वत के समक्ष राई की भाँति है। अपनी बात को उपसंहार की ओर ले जाते हुये मेरा यही कहना है कि गोयल साहब की प्रभावशाली लेखनी द्वारा जो भी कविता संग्रह व उपन्यास आदि प्रकाशित हुये हैं वे स्वयं में एक कीर्तिमान हैं।

मेरी यह भावना है कि उनकी लेखन प्रतिभा की भगीरथी सदैव प्रवाहित होती रहे तथा जन-जन के हृदय को आलोकित करती रहे।

प्रधानाचार्य
श्रीमती चन्द्रावती सूरज औतार पब्लिक स्कूल
श्यामगंज बरेली

प्रो0 रामप्रकाश गोयल . मन की व्यथा ग़ज़ल में साकार करने को आतुर

इन्द्रदेव त्रिवेदी

श्री राम प्रकाश गोयल से मेरा परिचय काफ़ी पुराना है। पुराना इस सन्दर्भ में कि पत्रिकाओं, अख़बारों या आकाशवाणी पर उनका नाम सुना या पढ़ा करता था। व्यक्तिगत आत्मीय परिचय पिछले 12 वर्ष पुराना है। इस काल में विधि विशेषज्ञ, समाजसेवी, कलाकार, साहित्यकार और प्रमुख वक्ता के रूप में उनकी पहचान समाज में निरन्तर बनी हुई है।

किसी व्यक्ति के व्यक्तित्व का समाज पर तभी सार्थक प्रभाव पड़ता है जब समाज उसको मान्यता प्रदान करता है; उसे आदर भाव देकर उसे अपना मानने के लिये तैयार रहता है। श्री गोयल इस कला में हमेशा सिद्धहस्त रहे। समाज के मध्य रहकर उसके मनोभावों में डूब जाना, समाज की अभिव्यक्ति को विविध प्रकार से आकार देना और समाज के समर्पण से प्रेरणा ग्रहण कर नया कुछ रच डालना श्री गोयल के हमेशा मानदण्ड रहे।

लेकिन सामाजिक प्राणी होने के साथ-साथ श्री रामप्रकाश गोयल व्यक्तिगत रूप से जिन व्यथाओं से प्रभावित रहे, उसके विषय में उनके अभिन्न लोग जानते ही हैं। उन्हीं व्यथाओं को साकार रूप से अभिव्यक्त करने को उन्होंने एक प्रेरणादायी विधा का आश्रय लिया जिसे साहित्यिक रचनात्मकता के नाम से अभिहित किया जा सकता है। श्री गोयल के लिखे गीत, मुक्तक, ग़ज़ल और अतुकान्त रचनाओं ने समाज को जहाँ रचनात्मकता दी, वहीं सामाजिक सहभागिता से कभी यह उजागर नहीं होने दिया कि मन की यह टीस भीतर कहाँ तक सालती रहती है।

यही नहीं श्री गोयल यह भी मानते हैं कि मन की व्यथा कोई आकस्मिक सहचरी उनकी नहीं हैं वरन् यह तो उनकी ऐसी संगिनी है, जिसके सानिध्य में उन्होंने अपना समस्त जीवन ही बिताया है। तभी वे कह उठते हैं -

दिल में मेरे प्यार लबों पर ताला है,
मुझको सुख ने नहीं, दुःखों ने पाला है।

मन की व्यथा से श्री गोयल का इतना क़रीबी रिश्ता है कि कुछ पुरानी यादों के सहारे अपने ग़म की व्यथा का असर भी कम हो जाता है-

गम का कोई असर न होता जब,
तेरी यादों को ओढ़ लेते हैं।

श्री गोयल निरन्तर प्राप्त होने वाली व्यथाओं से चिन्तित भी रहे, क्योंकि वे भी आख़िर इन्सान ही हैं। वे चाहते रहे कि समाज उनका इस ग़म में साथ दे तो वे और सकारात्मक रूप से समाज सेवा कर सकते हैं। इसीलिए वे अपने को साभिप्राय बनाने के लिए बोल उठते हैं कि -

किसी के दिल में रहम नहीं, थोड़ी सी भी शरम नहीं।
मैं तो वक्त का मारा हूँ, मुझपे ढाना सितम नहीं।

श्री राम प्रकाश गोयल की हमेशा यह धारण रही कि जीवन में उतार चढ़ाव प्रत्येक व्यक्ति को प्राप्त होते हैं। इसलिए उनसे सामना करना ही श्रेयस्कर है। वे मानते हैं कि समाज में रहकर कुछ कर्तव्य पूरे करने हैं, कुछ वादे निभाने हैं इसलिए यह जीवन आवश्यक है . . . इसलिए यह समाज आवश्यक है . . . . और इसीलिए अपना अस्तित्व आवश्यक है।

श्री गोयल के लिए ग़म और व्यथा जीवन को सम्बल देने वाले तथ्य हैं। उनके लिए जीवन की व्यथायें ऐसी साबित हुई हैं जो उनके लिए निरन्तर प्रेरणा की वाहक हों। इसी हेतु वे सदैव कुछ न कुछ करते रहने के लिये व्यग्र हैं। क्योंकि करते रहने से रचनात्मकता को नया आयाम मिलता है और समाज को भी इसी से कुछ न कुछ दिया जा सकता है। उनके दर्द की यही आवाज़ आत्मा से निःसृत होकर होठों तक इस प्रकार आयी -

उनके ग़म से मेरा दिल बहलता रहा,
दर्द की छाँव में ज़ख्म पलता रहा।

श्री राम प्रकाश गोयल के लिए बेचैनी के क्षण यूँ ही नहीं आए, वरन् ऐसा लगता है कि एक शक्ति ने निरन्तर प्रेषित की जाने वाली व्यथाओं के लिए ही उन्हें चुना है। वे कहते हैं कि इतने सारे ग़मों के साथ वे और यहाँ नहीं रह सकते लेकिन समाज के प्रति कर्म की भावना उनसे अपेक्षा करती है कि नहीं अभी नहीं . . . . अभी नहीं ... .। इसीलिए चाहे जितनी रातें गुज़र जायें, चाहे वे एक दिन के लिए चैन न पा सकें या चाहे कितने भी कष्ट मिलें पर जीवन जितने दिन का है, उसे सहेजकर रखना है, क्योंकि वह समाज के प्रति कर्म करने को वचनबद्ध हैं -

जब गजल ने श्री गोयल के द्वारा प्रेषित भावनाओं का रूप लिया तो प्रश्न दर प्रश्न उन्होंने समाज से प्रश्न किया कि वे सब व्यथायें उन्हीं के लिए क्यों ? समाज से जब उन्हें उत्तर नहीं मिला तो उन्होंने स्वयं से ही पुनः प्रश्न किया क्या स्वयं उन्हें इस बात का एहसास है कि गमों के न उभरने देने के प्रति उन्होंने क्या-क्या श्रम किए, कैसे जज़्बातों को रोका या किन-किन झंझावातों को सीने में दफ्न करके रखा -

क्या बताऊँ यह क्यों क्या किया मैंने,
अपने होठों को सी लिया मैंने।
वक्ते रुख़्सत थे अश्क आँखों में,
उनको किस ज़ब्त से पिया मैंने।

वे यहीं नहीं रुके वरन् प्रश्नों की श्रृंखला में स्वयं से प्रश्न कर उत्तरों को ढूँढते रहे -

उम्र कट जायेगी क्या वक्त को रोते रोते,
मौत आ जायेगी बस बोझ को ढोते ढोते।
इस क़दर हम पे पड़ा, उनकी जुदाई का असर,
खो गयी आँख की बीनाई भी रोते-रोते।

और भी -

उनको पाता हूँ और खोता हूँ, रोज तन्हाइयों में रोता हूँ,
जिन्दगी हो गयी बहुत बोझिल, जिस्म का बोझ अपने ढोता हूँ।

श्री गोयल के ग़म, व्यथा, दर्द और तड़प का सच निचोड़ इन शब्दों में ऐसे झलकता है जैसे पानी भरी थाली में पूर्णमासी का चाँद। पता ही नहीं चलता कि असली यहाँ है . . . या वहाँ है . . . . ।

वे कह उठते हैं :-

अँधेरा मुझे अच्छा लगता है, क्योंकि अँधेरे में मुझे,
अन्दर का उजाला दिखाई देता है।

और यही उजाला ग़म, व्यथा, दर्द पर तब भारी पड़ जाता है जब श्री गोयल कर्म की अनासक्ति का भाव मन में रखे कर्म-पथ पर क़दम बढ़ा देते हैं :-

जीवन का अर्थ, सिर्फ स्वयं जीना नहीं,
औरों को भी जीने देना है।

214, बिहारीपुर खत्रिपान, बरेली,
फोन : 456710

प्रो० रामप्रकाश गोयल : एक प्यासा समन्दर

श्यामजी शर्मा

'एक समन्दर प्यासा-सा' मेरे समीप आ पहुँची। इसकी उत्ताल तरंगों ने अंतस्तल को उद्वेलित कर दिया। अधिवक्ता का कवि स्वरूप मेरे लिए अपरिचित नहीं पर मेरे इस प्यासे समन्दर की इतनी गहराई का मुझे भान न था। धूप-छाँव से भरे जीवन की अनगिनत वेगवती काव्य सरितायें इस समन्दर को समृद्ध बनाने में पूर्ण सक्षम रही हैं जिनमें कहीं जीवन की नश्वरता है तो कहीं नितान्त एकाकीपन का एहसास। एक ओर विगत जीवन का मूल्यांकन तो दूसरी ओर प्रेम की प्रगाढ़ता। यह प्यासा समन्दर अपनी काव्यमय अभिव्यक्ति से अनगिनत काव्य पड़ावों पर आश्रय लेती पिपासुओं की तृषा शांत करेगी।

स्वस्थ एवं दीर्घ काव्यमय जीवन की शुभकामनाओं सहित बधाई।

स्वास्तिक फायनेंन्शियर्स, रामपुर बाग, बरेली।

प्रो० गोयल : एक सीधा सच्चा व्यक्तित्व

कृष्णा खंडेलवाल 'कनक'

श्री रामप्रकाश गोयल जी से मेरा परिचय 1984 में एक संक्षिप्त सी मुलाक़ात द्वारा हुआ। उसके बाद आपसे कई बार कवि गोष्ठियों में मुलाक़ात हुई। आपका स्नेह और सरल स्वभाव दिल को छू गया। आपकी प्रेरणा से आपके संरक्षण में ही मैंने 'लेखिका संघ' की स्थापना की जो आज भी गतिशील है। समय समय पर आपके सुझावों से हम लाभान्वित होते रहे है। आपका हर एक क्षेत्र में नाम है तथा विभिन्न विषयों में आपकी विद्वता स्पष्ट रूप ये झलकती है। आपके विभिन्न संस्थाओं द्वारा अनगिनत अभिनंदन हो चुके हैं।

अध्यक्ष : लेखिका संघ
292, गंगापुर, बरेली

हँसते हुए जख़्मों का आईना : श्री गोयल

स्वराज्य शुचि ऐरन

श्री राम प्रकाश गोयल ने एक साहित्यकार के रूप में तो अपना विशेष स्थान बनाया ही है, साथ ही सहृदय इन्सान के रूप में भी यश अर्जित किया है। वकालत के पेशे के साथ सामाजिक, सांस्कृतिक और साहित्यिक गतिविधियों में निरन्तर सक्रिय रहकर इस महानगर को रचनात्मक दिशा देने में अग्रणी भूमिका निभायी है। वे आत्मानुभूति के शिल्पकार हैं, अपनी रचनाओं में पीड़ा को स्वर दिया है जो निरन्तर उनकी लेखकीय ऊर्जा के रूप में काम आयी है।

संसार को परखने और अनुभवों को ग्रहण कर उन्हें अभिव्यक्त करने की अद्भुत क्षमता उनमें निहित है। यही कारण है उनका ग़ज़ल संग्रह पीड़ा के प्रतिनिधि बन सके हैं। श्री गोयल ने स्वयं माना है – 'यह दुनिया बड़ी अजीब है। जो दिखाई देता है वह सच नहीं, जो सच है वह दिखाई नहीं देता। इन्सान ने अपने चेहरे पर कई और फ़रेबी चेहरे लगा रखे हैं जिनमें उसका असली चेहरा गुम हो गया है।'

इस कथन का निहितार्थ ही उनकी रचनाशीलता का आधार है। अपने आस–पास के परिवेश के साथ आत्मीय भाव और अन्तर्मुखी सम्प्रेषणीयता के साथ उसका साक्षात्कार उनकी रचना का धरातल तैयार करता रहा है। "दर्द की छाँव में", 'रिसते घाव', और 'एक समन्दर प्यासा-सा' जैसे ग़ज़ल संग्रह मरुभूमि में खिली हुई वनस्पति के समान हैं। दर्द के साथ रिश्ते बना कर उसकी सकारात्मक टिप्पणी करना उनकी विशेषता है।

इसी तरह उनका व्यक्तित्व हँसते हुए जख़्मों का आईना है। अपने सम्बन्धों को निभाने की निपुणता और भाईचारे को बनाये रखने की भावुकता उनके व्यवहार की विशेषता है। महानगर की सामाजिक दिनचर्या में श्री गोयल की भागीदारी आज भी महत्वपूर्ण है।

अभिनन्दन ग्रन्थ के लिए अपनी शुभकामनाओं के साथ आशा करती हूँ कि उनकी लेखन प्रक्रिया निरन्तर जारी रहेगी। आपने संस्कृति, साहित्य और समाज सेवा के बीच समन्वय स्थापित कर यहाँ के लोगों को गतिशीलता प्रदान की है। वह आगे भी बना रहे, इसी आकांक्षा के साथ।

297, सिविल लाइन्स, आर्मी रोड, बरेली

प्रो० गोयल जी का साहित्य प्रेम सराहनीय है

सुकेश साहनी

कविता में अपेक्षाकृत कम रुचि होने के कारण मैं प्राय गोष्ठियों में नहीं जाता। सन् 1987 के आसपास तो स्थानीय साहित्यकारों से मेरा परिचय भी काफी सीमित था। अखबारों में छपने वाली साहित्यिक गतिविधियों की रिपोर्ट विशेष रुचि से पढ़ता था। तभी पहले पहल राम प्रकाश गोयल जी के नाम से परिचित हुआ था। समय के साथ-साथ उन्हें सुनने समझने का अवसर मिलता रहा। बरेली के लगभग सभी साहित्यिक आयोजनों में उनकी सक्रिय भागेदारी रहती है। अपनी रचनाओं, अध्यक्षीय भाषणों में वे विभिन्न सामाजिक स्थितियों को वैज्ञानिक दृष्टि से विश्लेषित करने का प्रयास करते हैं। बरेली में लगभग चौदह वर्ष के प्रवास में उन्हें क़रीब से जानने का अवसर मिला। कहना न होगा कि गोयल जी का साहित्य प्रेम सराहनीय है।

साहित्यकारों के प्रति गोयल जी के सम्मान/स्नेह को लेकर एक घटना याद आ रही है। दिल्ली के प्रकाशक से किसी पुस्तक के प्रकाशन को लेकर गोयल जी का विवाद हो गया था। पर्याप्त अवसर देने के पश्चात भी जब प्रकाशक ने उनकी नहीं सुनी तो विवश होकर उनको उपभोक्ता फोरम में केस करना पड़ा था। वे सही थे, अत फोरम ने प्रकाशक के विरुद्ध निर्णय देते हुए गोयल जी की पुस्तक को पुनः मुद्रित करने के आदेश दिए। संयोग वश दिल्ली के वे प्रकाशक मेरे एवं कथाकार भाई दामोदर दत्त दीक्षित के भी अच्छे मित्रों में से थे। उन दिनों वे भारी आर्थिक संकट में डूबे हुए थे। उन्होंने बरेली आकर अपनी विवशता बताई। हम उन्हें लेकर गोयल जी के पास आए। उन्होंने हम लोगों का मान रखते हुए प्रकाशक से समझौता कर लिया और इस तरह आर्थिक संकट से जूझ रहे प्रकाशक को बहुत बड़ी राहत मिल गयी। इस घटना से राम प्रकाश गोयल जी के साहित्य प्रेमी हृदय की धड़कन को महसूस किया जा सकता है।

प्रकृति ने गोयल जी को कुछ ऐसे जख़्म दिए हैं जिनकी निरंतर पीडा को सह पाना आसान नहीं होता। इन सबके बावजूद उनकी सक्रियता देखते ही बनती है। अपने पुत्र की स्मृति में वे प्रत्येक वर्ष

किसी साहित्यकार को उसके उल्लेखनीय योगदान के लिए 'विवेक गोयल पुरस्कार' देते हैं। पहले यह पुरस्कार बरेली के साहित्यकारों तक सीमित था। इधर इसका दायरा बढ़ा है। इस पुरस्कार के द्वारा बरेली में अच्छी साहित्यिक हलचल देखने को मिलती है। विश्वास है कि साहित्य के प्रति गोयल जी के इस समर्पण का लाभ लम्बे समय तक मिलता रहेगा। मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ।

सिविल लाइन्स, बरेली

मेरे विशिष्ट पापा

दिनेश सिंघल

मैं श्री रामप्रकाश गोयल जी का ज्येष्ठ दामाद, फ़रीदाबाद निवासी दिनेश सिंघल हूँ।

पापा जी एक कर्मठ एवं निष्ठावान व्यक्तित्व के पर्यायवाची हैं। समाज सेवा आपमें कूट-कूट कर भरी है, जीवन में सभी क्षेत्रों में आपने खूब प्रगति की है और जीवन को भली प्रकार जिया है। किसी भी विपरीत परिस्थिति में भी हार न मानते हुए सदैव अपने परिवार एवं समाज के लिये कार्यशील रहे हैं।

आपके लिये समाज सेवा एक प्रमुख उद्देश्य रहा है। अपने लिये जीवन तो सभी जी लेते हैं। जिस भूमि एवं समाज में हम जी रहे हैं यदि उसके लिये हमने अपना कुछ सहयोग नहीं दिया तो जीवन निरर्थक है। पर पापा ने अपने तन मन धन से इस समाज को भरपूर योगदान दिया है। समाज उनकी सेवाओं को कभी नहीं भूलेगा।

मैं ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ ऐसे कर्मठ व्यक्ति इस धरा पर सदैव आते रहें जो केवल अपना उत्थान न चाहकर सारे समाज का स्तर उठाने में कार्यशील रहें। जीवन एक मूल्यवान वस्तु है। इसकी रक्षा स्वयं पर भी निर्भर करती है। शरीर ईश्वर की संरचना है। यदि शरीर ही इस योग्य नहीं है तब जीवन किस तरह जिया जा सकता है। पापा ने ईश्वर की इस मधुर संरचना को 75 वर्षों तक बहुत जतन से ईश्वर की धरोहर समझकर सँजोये रखा है जिसके बल पर वह आज हम सबको स्वास्थ्य के मूल्य से अवगत करा रहे हैं।

मेरी ईश्वर से प्रार्थना है पापा अपने उद्देश्य में सफलता प्राप्त कर दीर्घ आयु प्राप्त करें।

2359, सेक्टर-8, फ़रीदाबाद

यशस्वी लेखक, सरस कवि, वरिष्ठ समाज सेवी,
नाट्य–कर्मी, विधि–मर्मज्ञ, राष्ट्रभाषा हिन्दी के सजग
प्रहरी एवं संवेदनशील मानव

श्री रामप्रकाश गोयल

का

सारस्वत अभिनन्दन

बाल्यावस्था से ही विचारशील एवं कर्मठ,
बरेली कॉलेज के निष्ठावान कर्तव्यपरायण विधि शिक्षक के रूप में सुविख्यात प्रवक्ता,
विज्ञान के स्नातक होकर भी साहित्य को समर्पित प्रकाण्ड विद्वान,
त्रिकोण प्रेम पर आधारित मौलिक उपन्यास "टूटते सत्य" के लेखक,
एकमात्र पुत्र 'विवेक' के चिर विछोह से आहत
अपने सुप्त कवि को जगाकर,
"दर्द की छाँव में" जैसी काव्य–कृति के भावुक कवि,
ग़ज़ल कैसेट "आईना" में व्यथा को रागिनी बनाने वाले शिल्पी,
ग़ज़ल संग्रह "रिसते घाव" के माध्यम से
अपने ही घावों की चुभन से अभ्यस्त शायर,
संसार के कटु यथार्थ से परिचित,
अनुपम पुस्तक "सच्चे प्रेम पत्र" द्वारा अमर प्रेम का नंदा दीप जलाने वाले सहृदय प्रेमी,
सबसे प्यार करने वाले अजातशत्रु,
नगर की अनेक सांस्कृतिक, साहित्यिक, सामाजिक, धार्मिक एवं शैक्षिक संस्थाओं के पदाधिकारी,
"पं० राधेश्याम कथावाचक साहित्य पुरस्कार" नगर महापालिका, जेसीज़ एवं अनेक संस्थाओं द्वारा सम्मानित एवं अभिनन्दित प्रतिभाओं के उन्नायक के रूप में प्रतिवर्ष अपने दिवंगत पुत्र की पावन स्मृति में "विवेक गोयल साहित्य पुरस्कार" के आयोजक,

राष्ट्रभाषा हिन्दी के अथक प्रसारक
"दिल और दिमाग" नामक मनोवैज्ञानिक नाटक द्वारा अपनी नाट्य प्रतिभा को उजागर करने वाले,
आकाशवाणी और दूरदर्शन से सम्बद्ध,
संगीत और कला के प्रति समर्पित अनवरत साहित्य साधना में लगे साहित्य-साधक,
लायन्स क्लब बरेली के चार्टर मेम्बर,
लायन राम प्रकाश गोयल का अभिनन्दन कर हम स्वयं को गौरवान्वित अनुभव कर रहे हैं,

'हिन्दी दिवस' पर हम उनके दीर्घ एवं यशस्वी जीवन की हार्दिक कामना करते हैं।

लायन मनजीत सिंह कीर
अध्यक्ष

लायन महेन्द्र सिंह बासु
सचिव

लायन प्रो० एन०एल० शर्मा
संयोजक
लायन्स क्लब बरेली विशाल
बरेली कॉलेज, बरेली
21 सितम्बर, 1993

रामप्रकाश गोयल - मेरा मित्र

भारत भूषण

बरेली मेरे लिए सदा एक आकर्षक और आत्मीयता भरा शहर रहा है। बरेली के साहित्यिक मित्रों, परिचितों और अन्य मित्रों का कभी एक केन्द्र रहा था, बाबू राम जी सरन सक्सेना, एडवोकेट। बाबू जी स्वयं एक समर्थ कवि और शायर थे। ऐसा व्यक्ति मैंने अभी तक दूसरा नहीं देखा है। एक शाम जब मैं उनके यहाँ गया तो फिर सदा को वहीं का हो कर गया। अब तो केवल इतना ही कह सकता हूँ कि 'अब न रहे वे पीने वाले अब न रही वो मधुशाला'। इसी घर में मुझे किशन 'सरोज', इसी में रामप्रकाश, इसी में ब्रजराज पाण्डेय, इसी में वसीम भाई, इसी में अनवर, यहीं सेवक जी मिले, यहीं हरीश जौहरी, यहीं ज्ञानवती सक्सेना और . . . अब तो नाम भी याद नहीं आ रहे हैं। मैं बरेली का स्थानीय कवि सा हो गया था। राम प्रकाश यार हो गए थे और किशन मेरी धड़कन बन गया था। शाम हुए और सभी प्यारे ही प्यारे 'नीलकमल' में बंद हो जाते थे। कभी शायरी, कभी कविताएँ, यही सब प्रतिदिन का क्रम रहता था। बाबू जी राम प्रकाश के वकील-गुरु थे। ये सारा समय मेरी स्मृतियों में अब भी कभी कभी दीपावली सी मनाने लगता है। धीरे-धीरे समय बीतता गया और हम सभी जैसे बिछुड़ गये। तब मैं सोच भी नहीं सकता था कि राम प्रकाश उपन्यास, ग़ज़ल, नाटक आदि भी लिखेंगे और अभिनय भी करेंगे।

तुलसी की सम्पूर्ण रचना ऊर्जा का आधार पत्नी रत्नावली से बिछुड़ जाना है। उसने तुलसी के जीवन को पहले से अलग एक नयी सृष्टि सौंप दी थी। कितना करुण रहा होगा ये प्रसंग। राम प्रकाश के जीवन में भी एक घटना ऐसी ही रही। इकलौते बेटे विवेक का असमय देहावसान। इस मार्मिक चोट ने राम प्रकाश की जीवन धारा पूरी तरह बदल दी। एक वकील समर्थ रचनाकार हो गया। घर रहते हुए भी घर से अलग, कचहरी में बैठे हुए भी कचहरी से दूर, दोस्तों से बातें करते हुए भी कहीं और। यही मानसिकता राम प्रकाश की

हो गई. दर्द की छाँव में मैंने पढ़ी है। बहुत अच्छी ग़ज़लें हैं। बाद में उपन्यास और 'रिसते घाव' भी पढ़ी। राम प्रकाश अभिनेता भी हो गए और क्या क्या होंगे समय जाने। जन्मतिथि पढ़कर लगा कि राम प्रकाश मेरे अग्रज हैं। उनका अभिनन्दन होना बहुत सुखद है। आप सभी के साथ मैं भी अपने मित्र राम प्रकाश जी का अभिनन्दन करता हूँ और उनके रचनाकार के लिए मंगल कामनाएँ करता हूँ।

650, ब्रह्मपुरी, मेरठ

प्रो0 रामप्रकाश गोयल के प्रति

रामसिंह भण्डारी

एक सितारा नभ से टूटा, और अँधेरा घना हुआ।
सच कहते हैं इस दुनिया में, जीवन जीना एक जुआ।
पढ़कर के क़ानून ज़िन्दगी,
अधिवक्ता तो सफल बनी,
लेकिन समय यती के हाथों,
टूट-टूट कर ग़ज़ल बनी.
धुआँ-धुआँ अंगार हो गये, जब जब बढ़ कर उन्हें छुआ।
रिसते रहे घाव हृदय के
और 'दर्द की छाँव' मिली,
पाती 'सच्चे प्रेम पत्र' की,
ग़लत पते के गाँव मिली।
उनका 'आईना' उन्हें दिखाती, शैतानों की नहीं बुआ।
जितना अधिक कठिन पतझर में,
कोयल के स्वर खनकाना,
उससे अधिक कठिन जीवन में
गोयल जैसा बन जाना,
संग अमीरी मिली फ़कीरी, देते सब को सदा दुआ।

1208, विक्रम कोचिंग, बालाजी कालोनी,
राजेन्द्र नगर, बरेली

श्री रामप्रकाश गोयल – व्यक्तित्व का श्रेष्ठ परिचय

धर्मपाल गुप्त 'शलभ'

व्यक्ति का कार्यक्षेत्र बहुआयामी हो सकता है किन्तु उसका व्यक्तित्व भी बहुआयामी हो, ऐसा मैं नहीं मानता। व्यक्तित्व तो किसी एक क्षेत्र में ही उभर सकता है और इसी से व्यक्ति की पहचान बनती है। साहित्य के क्षेत्र में व्यक्ति का व्यक्तित्व उसकी रचनाधर्मिता से उभरता है और इसमें ही वह समस्त गुण और मूल्य समाये रहते हैं जो रचनाकार के व्यक्तित्व को पूर्णता प्रदान करते हैं। राम प्रकाश गोयल का कार्यक्षेत्र विस्तृत एवं व्यापक है किन्तु उनकी शिनाख्त अथवा उनके व्यक्तित्व की पहचान तो उनके द्वारा रचित साहित्य से ही बनती है। वह ग़ज़लकार के रूप में सर्वाधिक चर्चित हुए हैं। उनकी गज़लों में अभिव्यक्त सूक्ष्मतम मनोभावों और प्रेमजनक संवदेनाओं ने ही उनके व्यक्तित्व को गढ़ा है, ऐसा मैं मानता हूँ।

लगभग पच्चीस वर्ष पूर्व प्रकाशित उनके प्रथम उपन्यास 'टूटते सत्य' पर जब साहित्यिक चर्चा हुई थी, तब उसमें मैंने भी भाग लिया था। औपन्यासिक शिल्प सौन्दर्य के अभाव के बावजूद इस उपन्यास में लेखक ने आत्मदमन और वर्जनाओं की दीवार को झूठा सत्य कहकर तोड़ गिराया था। उनका 'सच्चे प्रेम पत्र' संग्रह भी मेरी नजर से गुज़रा है। उनकी ग़ज़लों के तीनों संग्रह भी मैंने पढ़े और समझे हैं। इस सम्पूर्ण क्रम में मनोभावना और मनोदशा की ऐसी कड़ी है जिसके बीच स्त्री–पुरुष के प्रेम अथवा सैक्स संबंधों से जुड़े तथाकथित नैतिक एवं सामाजिक अवरोध आड़े नहीं आते। वह अपने अश्‌आर में जटिलता नहीं आने देते। अपनी अंतरव्यथा को सहजता से अभिव्यक्त करने की सामर्थ्य उनमें है। अन्य हिन्दी ग़ज़लकारों की तुलना में रामप्रकाश गोयल की विशेषता यह है कि उन्होंने अपनी ग़ज़लों को उर्दू की जूठन नहीं होने दिया।

वर्षों से उन्हें जानता आया हूँ। याद है जब निरंकारदेव सेवक के निवास पर साहित्यकारों और साहित्यिक विचारकों की स्थानीय संस्था 'आलोक' की सदस्यता के नियमों की चर्चा हो रही थी, तब मेरा ज़ोर इस बात पर था कि इसमें केवल रचनाकारों को ही सदस्यता दी जानी चाहिए। राम प्रकाश गोयल भी वहाँ मौजूद थे। तब वह रचनाकार नहीं थे, साहित्य में अभिरुचि रखते थे। उन्होंने मत प्रकट किया था कि साहित्यिक विचारकों और साहित्यिक अभिरुचि के

व्यक्तियों के लिए भी 'आलोक' की सदस्यता के द्वार खुले रखना चाहिए। अंत में उन्हीं का मत स्वीकार किया गया। उनके व्यक्तित्व के संबंध में एक बात का उल्लेख अवश्य करना चाहूँगा। मेरे और उनके विचारों में प्रारंभ से आज तक अंतर बना रहा है। इसे राजनीतिक अंतर भी कहा जा सकता है। उनकी विशेषता यह रही है कि वह वैयक्तिक और सामाजिक सम्बन्धों में वैचारिक अंतर को कभी प्रमुखता नहीं देते। सम्बन्धों में माधुर्य ही उनके व्यक्तित्व का श्रेष्ठ परिचय है। यह कोई व्यावहारिकता भी नहीं है। प्यार की पीड़ा को सहन करने और उसकी मार्मिक प्रतिक्रिया को व्यक्त करने की सहजता ने ही उन्हें इस रूप में निखारा है। उनकी रचनाधर्मिता में उनके व्यक्तित्व को तलाश किया जा सकता है।

ए-182, राजेन्द्र नगर, बरेली

श्री रामप्रकाश गोयल – एक जीवंत पीड़ा

ज्ञानवती सक्सेना

श्री राम प्रकाश गोयल को पूरे रूप में मैं तब पहचान पायी जब उनका परिचय पढ़ा। वे वास्तव में सराहने योग्य हैं। वे सामाजिक, सांस्कृतिक, साहित्यिक और शैक्षिक सेवाएँ देते रहे, नगर चर्चा से सदैव दूर रहे।

मुझे इस बात का दुख रहा कि मैं उनका टी0वी0 सीरियल 'आज का सच' नहीं देख पाई जिसमें उन्होंने कॉलेज के प्रिंसिपल तथा न्यायाधीश का अभिनय किया था।

उनकी कई पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं। वे सभी मैंने पढ़ी हैं। जब उनका गज़ल संग्रह 'एक समन्दर प्यासा-सा' पढ़ा तो मुझे श्री रामअवतार त्यागी की पंक्तियाँ याद आ गयीं –

मैं हूँ दर्द, आदमी कब हूँ। ईश्वर के घर से मैं जाने
किसकी देह चुरा लाया हूँ

एक मात्र किशोर पुत्र विवेक का आकस्मिक निधन उन्हें कितना तोड़ गया है कि यदि वह लेखन का सहारा न लेते तो जी नहीं पाते। अपनी पंक्ति में वह स्वयं ही बोल रहें हैं –

एक कृत्रिमता का जीवन ढो रहे हम,
चेहरे पे चेहरा लगाकर रो रहे हम।

राजेन्द्र नगर, बरेली

बहुआयामी व्यक्तित्व : प्रो० राम प्रकाश गोयल

महेश 'मधुकर'

बहुआयामी प्रतिभा के धनी साहित्यकार श्री राम प्रकाश गोयल, प्रख्यात साहित्यकार होने के साथ ही विचारक, समाजसेवी, प्राध्यापक, अधिवक्ता, नाटककार, रंगकर्मी एवं अभिनेता भी हैं। इतनी सारी कला रूपी सरिताओं का संगम-स्थल निःसंदेह एक सागर-हृदय बहुआयामी व्यक्तित्व ही होगा। कवि, शायर, उपन्यासकार एवं कहानीकार गोयल साहब बड़े ही सरल, सहज एवं नेक दिल इंसान हैं। समय की पाबदी एवं कथनी करनी में एकरूपता आपके विशेष गुण हैं। ऐसे अथाह सागर से व्यक्तित्व को कुछ पृष्ठों में उतार पाना गागर में सागर भरने के समान है।

आपने अपने साहित्य के द्वारा समाज में व्याप्त भ्रष्टाचार, बेईमानी, हिंसा एवं द्वेष जैसी बुराइयों के प्रति आक्रोश एवं पीड़ा को उकेरते हुए सत्य निष्ठा, दया, प्रेम एवं इंसानियत का परचम फहराने का प्रयास किया है। ''एक समन्दर प्यासा-सा'' आपकी नवीनतम कृति है। घृणा, द्वेष एवं दूसरों की बुराई करने की प्रवृत्ति का विरोध करते हुए इन्सानियत को अपना फ़र्ज बताते हुए आप कहते हैं कि-

> ''हर किसी शख्स को इन्सान समझते रहिए
> और इस बात को ईमान समझते रहिए
> दूसरों की ही बुराई में जो रस लेते हैं
> वे हैं नादाँ उन्हें नादान समझते रहिए।''

ग़रीब, अमीर, होने से कोई इन्सान छोटा या बड़ा नहीं हो जाता। सभी प्राणी एक ही ईश्वर ही रचना हैं और वह सभी से बराबर प्यार करता है। यही भावना व्यक्त करते हुए आप कहते हैं कि -

> इन्साँ इन्साँ से हो दूर, है ये खुदा को नामंजूर
> दौलत का अपना ही नशा है, बिना पिए होता सुरूर''

आज आदमी अपने स्वार्थ वश इन्सानियत से कोसों दूर चला गया है। वह इन्सान का लहू बहाने से भी नहीं हिचकता -

> ''आदमी आदमी को खाता है
> और फिर भी न कुछ वो पाता है
> खुद ही बुनता है, जाल चारों तरफ

जिन्दगी भर निकल न पाता है।''

प्यार के प्रति आपकी सोच वासनात्मक न होकर रागात्मक है। नारी सौन्दर्य, मांसलता अथवा अपने प्रिय को संदेह प्राप्ति की कामना उन्होंने कहीं भी नहीं की है। अपने प्रिय की बेवफाई पर भी उन्हें गुस्सा नहीं बल्कि उस पर प्यार आता है। वे मन से मन के तारों को मिलाकर आत्मा के परमात्मा से मिलन की कामना करते हैं।

''मैं उसके प्यार को रुसवा न होने दूँगा कभी
जो मेरा हो के पराया दिखाई देता है''
है खुदा मिलता नहीं परछाई में
ढूँढ लो उसको कहीं गहराई में
हैं नहीं मुश्किल उसे अब छोड़ना
मैंने पाया है उसे रुसवाई में''

अपने प्रिय के सानिध्य की सुखद स्वर्गिक अनुभूति का वर्णन करते हुए वे कहते हैं :-

''स्वर ही नहीं रूप भी संगीतमयी है
सानिध्य तुम्हारा तो जीवंतमयी है
देखा जब से तुम्हें विश्वास हुआ है मुझको
माया उस ब्रह्म की आनन्दमयी है''

आपके काव्य के भाव पक्ष व कला पक्ष दोनों ही अपने में पूर्ण हैं।

साहित्य-सिन्धु गोयल साहब समाज में व्याप्त द्वेष, हिंसा, भ्रष्टाचार, बेईमानी, स्वार्थपरता एवं झूठ आदि के कारण अत्यन्त चिंतित हैं। वे सत्यनिष्ठा, ईमानदारी, सौहार्द, प्रेम, परोपकार आदि की सरिताएँ बहाने को सतत प्रयासरत् हैं।

ऐसे बहुआयामी व्यक्तित्व, रुहेलखण्ड मण्डल के गौरव, साहित्यकार श्री गोयल साहब के व्यक्तित्व के उचित मूल्याकंन के लिए उन पर शोध की आवश्यकता है। मैं उनके दीर्घायु की मंगल करता हूँ।

सचिव, अ0भा0 साहित्य कला मंच
आई-28, एम0जे0पी0 रुहेलखण्ड विश्वविद्यालय परिसर
बरेली - 243006

मेरे अप्रतिम पापा

अर्चना सिंघल

मेरे पापा बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी हैं। उनके व्यक्तित्व की प्रमुख विशेषता उनका अत्यधिक साहित्य-प्रेम एवं सामाजिक होना है। हमने पापा से ही सीखा है कि मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है और वह समाज से कटकर अलग-थलग होकर नहीं रह सकता। उन्होंने निःस्वार्थ भाव से अनेक रूपों में समाज की सेवा की है – जैसे अच्छे अंकों से पास होने वाले छात्र-छात्राओं का उत्साह बढ़ाने के लिए उन्होंने बरेली के चार महाविद्यालयों में 10 स्वर्ण पदक स्थापित किये हैं। मेरे पापा का मानना है कि ये बच्चे ही देश का भविष्य और कर्णधार हैं। गरीबों और असहायों के प्रति उनके मन में बहुत दया और सहानुभूति है। उन्होंने समय-समय पर ऐसे व्यक्तियों की दिल खोलकर सहायता की है। उनका मानना है कि हम सब समाज के अंग हैं और हमारा समाज के प्रति महत्वपूर्ण दायित्व है। उनके व्यक्तित्व में समाज को देना ही देना भरा है। उन्होंने अनेक पुस्तकें लिखी हैं। उनकी लेखन शैली बहुत सरल और सहज है। वे समय-समय पर साहित्यिक-सांस्कृतिक और संगीत के आयोजन करते रहते हैं।

मेरे पापा के व्यक्तित्व की विशेषताएं हैं –धैर्य, संयम, सहनशीलता, गंभीरता, दया एवं न्यायप्रियता। कठिन से कठिन परिस्थिति में भी उन्होंने कभी धैर्य और संयम का साथ नहीं छोड़ा। फरवरी 1998 में जब दिल्ली के अपोलो अस्पताल में उनके हृदय की बाईपास सर्जरी हुई तो उन्होंने बड़े धैर्य और साहस के साथ हँसते-हँसते अपना आप्रेशन कराया। हम बच्चों का उन्होंने हमेशा मनोबल बढ़ाया तथा हमारे प्रति अपनी पूरी जिम्मेदारी और निष्ठा को निभाया। हमने उनसे सीखा है – यदि तुम किसी का भला नहीं कर सकते हो तो उसका बुरा भी मत करो। 'जियो और जीने दो' उनके जीवन का मूल-मंत्र है। गीता के सार 'कर्म करो-फल की इच्छा मत करो' को उन्होंने

अपने जीवन में उतारा है। उन्होंने भाग्य को कभी भी पुरुषार्थ पर हावी नहीं होने दिया तथा अपना हर कार्य निष्काम भाव से किया है।

मैंने बचपन से यह देखा है कि उन्होंने अपने स्वास्थ्य पर विशेष रूप से ध्यान दिया है। उनकी दिनचर्या बड़ी नियमित और संयमित रही है। उन्होंने जीवन से कभी हार नहीं मानी। उनके शरीर में सात बार फ्रैक्चर हो चुके हैं किन्तु वह इन फ्रैक्चरों के दौरान भी बराबर कचहरी जाते रहे और कालेज में भी लॉ डिपार्टमेंट में पढ़ाते रहे। आज 75 वर्ष की आयु में भी वह स्वस्थ और सक्रिय हैं।

हम चारों बेटियों को उन्होंने बेटों की तरह ही पाला है और कभी हमारे अंदर यह हीन-भावना नहीं आने दी कि हम बेटियाँ हैं। परीक्षाओं में पास होने पर वह हमेशा हमें पुरस्कृत करते थे। मुझे अपने पापा पर गर्व है और मैं इस बात पर फ़ख्र करती हूँ कि मैं उनकी बड़ी बेटी हूँ। भगवान से मेरी यही प्रार्थना है कि वह सदैव समाज और साहित्य की सेवा करते रहें और स्वस्थ शरीर के साथ दीर्घायु हों।

फ़रीदाबाद

प्रो० राम प्रकाश गोयल की काव्य-साधना

डॉ० गणेश दत्त सारस्वत

प्रो० राम प्रकाश गोयल सच्चे अर्थों में 'सारस्वत' हैं। उनका अध्यवसाय अव्याहत तथा अप्रतिम है। वे जितने रससिद्ध सुकवि हैं, उतने ही श्रेष्ठ उपन्यासकार तथा नाटककार हैं। गद्य लेखक के रूप में भी वे पर्याप्त चर्चित हैं। 'दर्द की छाँव में, 'रिसते घाव' तथा 'एक समन्दर प्यासा-सा' उनकी उल्लेखनीय काव्य-कृतियाँ हैं जो यह सिद्ध करने के लिए पर्याप्त हैं कि रचनाकार के पास अनुभूतियों का अक्षय तूणीर है। अभिव्यंजना-ऋजुता के कारण उनकी ये रचनाएँ सहृदयों को रससिक्त किए बिना नहीं रहतीं। प्रतिभा, अध्यवसाय तथा अभ्यास के संगम में अवगाहन कर उनकी काव्य-कला निश्चय ही पर्याप्त निखरी है।

गोयल जी बहुभाषाविद हैं – विशेष रूप से उनका उर्दू तथा हिन्दी पर अबाध अधिकार है। उन्होंने इन दोनों ही भाषाओं की प्रकृति को आत्मसात किया है। उनकी उर्दू की रचनाओं में जो माधुर्य है, व्यजना का कौशल है तथा जीवन के खट्टे-मीठे अनुभवों से साक्षात्कार कराने की सामर्थ्य है, वह निर्विवाद रूप से बेजोड़ है। वे जितने परम्परावादी हैं उतने ही आधुनिक भी हैं। उनकी कविताओं का मूल स्वर प्रेम है। प्रेमशास्त्र शारीरिक आकर्षण ही नहीं है, उससे बहुत ऊपर है। द्वैत से अद्वैत होने का दूसरा नाम ही प्रेम है। प्रस्तुत पंक्तियों में उसे एक ऐसी 'दास्ताँ; बतलाया गया है जो वाणी से परे भी है और वाणी का विषय भी है –

मुहब्बत एक ऐसी दास्ताँ है
कहीं चुप है कहीं यह बाज़बाँ है।

प्रेम कभी असफल नहीं होता, रचनाकार का यह विश्वास है,

तुमको मैंने लिखे थे जो भी खतूत
उनको दिल से लगा के देखो तो
प्यार होता नहीं कभी नाकाम
इस पे ईमान लाके देखो तो।

प्रेमी की यह विवशता है कि वह चाहते हुए भी प्रिय से दूर नहीं रह सकता। उसकी बेरुखी सहना तथा 'उफ़' तक न करना ही उसकी नियति है। वह चाहे भी तो शिकवा-गिला नहीं कर सकता –

बेरुख़ी उसकी सह रहे हैं हम
फिर भी हमसे गिला नहीं होता।
उसका अन्दाज बेरुख़ी वाला
प्यार करना सिखा गया मुझको।
सताकर मुझको अपनी बेरुख़ी से,
मुझे अपने से जोड़ा है किसी ने।

सच्चे प्रेमी की यह दिशा निश्चय ही बड़ी विलक्षण है। सुख में उसे न तो किसी ने हँसते ही देखा है और न दुख में रोते ही। अजीब क़िस्म का एहसास उसमें भर गया है। लगता है कि जैसे इस लोक का वह प्राणी ही नहीं है। पंक्तियाँ देखिए –

न सुख में हँसते ही देखा, न दुख में रोते ही,
अजीब क़िस्म का एहसास है दीवाने में।

उसका तो यह स्वभाव ही हो गया है कि हर रंज को वह एक

खुशी समझता है। उसका यह संकल्प उसके प्रेम की प्रकृष्टता का पुष्ट प्रमाण है – 'अश्क पीना है, मुस्कुराना है, मुझको अहदे – वफ़ा निभाना है।

काव्य में यत्र-तत्र दार्शनिक पुट भी है, जो बड़ा मनोहारी बन पड़ा है। अभिव्यक्ति की अकृत्रिमता, सहजता तथा निश्छलता ने उसकी अर्थवत्ता को द्विगुणित कर दिया। ज़िन्दगी की इससे सरल परिभाषा और क्या होगी – 'ज़िन्दगी जैसे रात का सपना, सुबह होते ही टूट जाना है।'

कवि की दृष्टि में मौत और ज़िन्दगी में कोई फ़र्क़ नहीं है; जागने और सोने के ये बहाने मात्र हैं – 'मौत और ज़िन्दगी में फ़र्क़ नहीं, जागने सोने के बहाने हैं।'

इस संसार में मनुष्य की हैसियत क्या है, इन पंक्तियों में देखें – कौन कहता है मयकदा है ज़िन्दगी, आदमी खाली-सा इक पैमाना है।'

अयन्त्र वे तुलसी की सूक्ति 'ईश्वर अंस जीव अबिनासी' से प्रभावित होकर लिखते हैं – 'सबके दिल में खुदा का जल्वा है, हर बशर कितना खूबसूरत है।' इस खूबसूरती के देखने के लिए आवश्यकता है 'मानस-चक्षु' की, उन नेत्रों की जो अन्तर्दर्शन की अभ्यस्त हों।

संसार मिथ्या है, स्वप्नवत है। यहाँ अपना कुछ भी नहीं है फिर भी ऐसा लगता है कि सब कुछ अपना ही है। इस 'अस्ति-नास्ति' पर भरोसा करना बहुत बड़ी मूर्खता है। आद्य शंकराचार्य के 'ब्रह्म सत्यं जगन्मिथ्या' से अनुप्राणित ये पंक्तियाँ देखने योग्य हैं –

यह दुनिया ख़्वाब है, इस ख़्वाब का भरोसा क्या
नहीं जो अपना वो अपना दिखाई देता है।

सन्त कहते हैं कि 'अहं' के विसर्जन के उपरान्त ही ईश्वर की निकटता सम्भव है। गोयल जी भी यही कहते हैं किन्तु इस रूप में उनका 'अन्दाज़े बयाँ' मन मुग्ध किए बिना नहीं रहता – 'पहले अपनी खुदी मिटाना है, फिर खुदा के क़रीब जाना है।' वे दुख को जीवन का वरदान मानते हैं, इसीलिए कहते हैं –

चाहते हो सुख तो दुख को भी सहो
दुख तो जीवन के लिए वरदान है

उनका नियतिवादी दृष्टिकोण इन पंक्तियों में द्रष्टव्य है–

इन्साँ हँसता है कभी और कभी रोता है
वही होता है जो क़िस्मत में लिखा होता है।

गोयल जी के इस 'शेर' पर इन पंक्तियों की छाप स्पष्ट है। ये पंक्तियाँ किसी बहुत पुराने शायर की हैं –

मुद्दई लाख बुरा चाहे तो क्या होता है
वही होता है जो मंजूरे खुदा होता है।

गोयल जी की रचनाओं में वर्तमान सन्दर्भों को भी वाणी प्राप्त है। आज सर्वत्र स्वार्थपरता का बोलबाला है। दुखियों के आँसू पोछने का किसी के पास अवकाश ही नहीं है। लगता है मानवीय संवेदना ही निःशेष हो गई है। इसीलिए 'दरपे इक भूखा भिखारी मर गया, घर में बजती ही रही शहनाइयाँ।' हम पर उसका कोई प्रभाव ही नहीं पड़ता। कवि की दृष्टि में वही भगवान है 'जिसकी आँखों में हों आँसू किसी मुफ़लिस के लिए।' ऐसे व्यक्ति जो दूसरों के काम आते हैं, मर कर भी अमर हैं। वे कभी गुमनामी के हवाले नहीं रहते–

काम जो आते हैं औरों के लिए दुनिया में
वो ही जीते हैं कभी मरते वो बेनाम नहीं।

कवि का आग्रह ऐसे लोगों की बस्ती बसाने का है जो मुहब्बत करें, नफ़रत से सदा दूर रहें। उसकी यह चेतावनी दूसरों को कष्ट देने वालों की आँखें खोलने के लिए पर्याप्त है –'जुल्म करना तो ध्यान में रखना, हश्र के दिन हिसाब होता है।' उसकी स्वयं की यह अभिलाषा है कि 'सबके दुख–दर्द में शरीक रहूँ, मुझको दौलत यही कमाना है।'

गोयल जी जितने पारस्परिक सौहार्द के लिए व्यग्र हैं, उतने ही विघटनकारी शक्तियों से दुखी भी हैं। उनकी दृष्टि में साम्प्रदायिकता के विष ने सामाजिक समरसता को खोखला कर दिया है। इसीलिए आज कहीं हिन्दू–मुस्लिम का झगड़ा है, कहीं मन्दिर–मस्जिद का विवाद है और कहीं वर्ग भेद की गहरी खाई है। इस स्थिति में मुक्ति के लिए जिस चिन्तन की आवश्यकता है, उसके यत्किंचित दर्शन निम्नलिखित पंक्तियों में किए जा सकते हैं। गोयल जी हिन्दू मुस्लिम, सिक्ख, ईसाई का सदेह हिन्दुस्तान की संज्ञा देते हुए लिखते हैं कि सभी इस धरती के बेटे हैं उनका यह सम्बोधन बड़ा ही सामयिक है –

नहीं तू हिन्दू नहीं तू मुस्लिम, नहीं तू सिख ईसाई है।
इस धरती का तू बेटा है, तू ही हिन्दुस्तान है।

उनकी यह अपेक्षा है कि देशवासियों को जाति, धर्म तथा रूढ़ियों के बन्धन में न जकड़ा जाए। सभी इन्सान हैं, उन्हें केवल इन्सान ही समझा जाए –

हम न हिन्दू न मुसलमाँ, न सिख ईसाई,
हम हैं इन्साँ, हमें इन्सान समझते रहिए।

गोयल जी इस सम्पूर्ण सामाजिक दुरावस्था के लिए राजनीति को दोषी मानते हैं। इन पंक्तियों को देखिए – 'रहनुमा बन के हम को लूट रहे, ऐसी इस दौर की सियासत है!' 'इस दौरे सियासत, में ये सौग़ात मिली है, अब लोग किसी का भी भरोसा नहीं करते! इस सियासत का न सुख से कोई वास्ता है और न शान्ति से। इसमें आग लगा देना ही श्रेयस्कर है। इसके लिए कवि को तलाश है उस 'शरर' की जो फ़ज़ा में आग लगा सके, 'उन्हें तलाश है उस नगर की 'जहाँ दोस्त बनके सभी रह सकें। आज की सिमटती हुई इस दुनिया में दूर रहकर गुज़ारा सम्भव ही नहीं 'बैठकर दिल की गाँठें खोलें हम, दूर रहकर कहाँ गुज़ारा है!'

गोयल जी के कुछ 'शेरों' में उनका उपदेशक रूप मुखर है।'

सुख जो चाहो तो सब को दो सुख तुम
दोगे जो भी वही तो मिलता है।
आपको जो भी जितना प्यारा हो
उससे उतना ही दूर रहिये आप।
क़द्र जिसने न की वक्त की वक्त पर
ज़िन्दगी भर वो ही हाथ मलता रहा।
खुद्दारी को ज़िन्दा रखना।
मेरा है बस यह पैग़ाम।

स्वाभिमान रचनाकार का सबसे बड़ा गुण है। इसको केन्द्र में रखकर सच्चे शायर की पहचान गोयल जी ने इस रूप में करायी है– 'शायर कभी खुद्दारी का सौदा नहीं करते, इन्‌आम की दुनिया से तमन्ना नहीं करते।'

सारस्वत सदन
सिविल लाइन्स, सीतापुर

साहित्य साधक प्रो० राम प्रकाश गोयल जी

डॉ० रश्मि जायसवाल

साहित्य साधना में सतत् रूप से संलग्न बरेली के जाने-माने अधिवक्ता श्री राम प्रकाश गोयल जी का व्यक्तित्व किसी परिचय का मोहताज नहीं है। वे अपनी सहजता, सरलता और सहृदयता के कारण बरेली की जनता में अत्यधिक लोकप्रिय हैं। उनका शान्त, उदार और स्नेहपूर्ण व्यवहार, सहजता, सौम्यता और सरलता से अभिमंडित उनका गम्भीर शान्त व्यक्तित्व, उनके हृदय की दिव्यता, शुचिता से हमारा साक्षात्कार कराने में समर्थ है। उनका वैविध्यपूर्ण उन्नत कृतित्व बरेली की जनता को उनका एक महान उपहार है। वे बरेली के एक लोकप्रिय और सृजनशील हस्ताक्षर हैं। शताब्दी के सातवें दशक से ही वे एक जाने माने कवि एवं लेखक के रूप में स्थापित हो चुके थे। मानवीय संवेदनाओं के कुशल चितेरे के रूप में जहाँ आपकी ग़ज़लें हृदय की अतल गहराइयों का संस्पर्श कर सकने में समर्थ हैं वहीं आपके मनन और लेखन के विराट आयामों को देखकर मन प्रशस्ति और विस्मय से भर उठता है।

यूँ तो किसी भी व्यक्ति की आकृति तो परमात्मा की देन है और उसका नाम उसके माता पिता की देन परन्तु उसका अपना व्यक्तित्व तो उसके उदात्त कृतित्व का ही जीवन्त दस्तावेज होता है। कुछ ऐसे ही विलक्षण व्यक्तित्व के धनी हैं श्री राम प्रकाश गोयल जी। उनका काव्य हो या लेखन, उसकी संवेदन संप्रेषणीयता सदैव ही अपनी शैल्पिक चारुता के कारण आकर्षण का विषय रही है। यही कारण है कि उसे पर्याप्त मात्रा में सामाजिक प्रशस्ति मिली है। उनकी व्यक्तिगत एवं सामाजिक अनुभूतियों ने ही उनके लेखन को बहुआयामी बनाया है। उनकी सशक्त लेखनी ने साहित्य की अनेक विधाओं पर समान रूप से साहित्य-सृजन किया है। उनका काव्य हमारे लिए एक जागरण, एक चेतना और आत्मोपलब्धि का एक आयाम बन जाता है। उनके रचना साहित्य में एक अद्भुत अन्तर्दृष्टि और प्रखर संवेदनशीलता है। वे अपने सामाजिक दायित्वों के प्रति सदैव सचेत रहे हैं। यही कारण है कि आपका साहित्य-सृजन आपके

गहन अनुशीलन, चिन्तन और ज्ञान का परिणाम है। उनकी व्यक्तिगत एवं सामाजिक अनुभूतियों ने ही उनके लेखन को बहुआयामी बनाया है। आपका गजल संग्रह हो या उपन्यास, नाटक हो या आकाशवाणी वार्ताएँ, चिन्तन के लिए प्रभूत सामग्री हमारे समक्ष परोस देता है और हम चिन्तन के उस दिव्य लोक में भ्रमण करने लगते हैं जहाँ पर सत्यं, शिवं, और सुन्दरम् जीवन के अपरिहार्य मूल्य हैं। तीनों का सामंजस्य ही उनके कृतित्व की सफलता का परिचायक है। उनके गीत, गजल और कविताएँ उनके मन का निजी एकान्त हैं, उनके व्यक्तित्व की भावाकुल एकान्तिक वेदना उनके गीतों ग़ज़लों में फूट पड़ी है। वस्तुतः उनकी ग़ज़लें, गीत उनकी आत्मा के प्रतिबिम्ब हैं क्योंकि बाह्य जगत के समान मनुष्य के अन्तर में भी एक जगत होता है जिसे भाव लोक की संज्ञा से अभिहित किया जा सकता है। सामान्य जन की अपेक्षा कवि अधिक संवेदनशील और भावुक होता है। अतः बाह्य जगत् के प्रभाव उसके मानस पर गहरा प्रभाव डालते हैं। यही प्रभाव फिर मधुर, सुन्दर, कोमल और कल्याणपरक बनकर उसके काव्य में अभिव्यक्ति पाते हैं। गोयल जी का रचना संसार इसका जीवन्त प्रमाण है। साहित्य सृजन के क्षणों में उनकी अनुभूतियाँ ही अभिव्यक्ति के रूप में साकार हुयी हैं। ये मार्मिक अनुभूतियाँ जीवन की हैं और जगत की भी जो व्यक्तिनिष्ठ होते हुए भी समष्टिगत हैं। उनके साहित्य - सरोवर में अवगाहन करके प्रतीत होता है कि शब्दों को आकार देने के लिए उनमें एक छटपटाहट है, तभी वे समय की सरिता की जीवन्तता को समझ सके हैं। उन्होंने वर्तमान के सुलगते प्रश्नों की ज्वालाओं को अनुभव किया तभी वे उसका समाधान निम्न पंक्तियों में दे सके-

'नहीं तू हिन्दू , नहीं तू मुस्लिम, नहीं तू सिख, ईसाई है,
इस धरती का तू बेटा है, तू ही हिन्दुस्तान है।'

यही नहीं व्यक्ति में व्यक्ति की गरिमा को स्थापित करने एवं उसमें आत्मविश्वास का प्रकाश भरती हुई निम्न पंक्तियाँ भी, जीवन से हारे थके व्यक्ति में नूतन प्राण प्रतिष्ठा करती हैं -

' पारस पत्थर छिपा है तुझमें, इसका तुझको ज्ञान नहीं,
लोहे को भी सोना कर दे, तू इतना गुणवान है।'

उन्होंने वर्तमान के सुलगते प्रश्नों को उत्तर या समाधान तक पहुँचाया है -

'कर्म करो फल की कभी चाह न करो
भला-बुरा कोई कहे, आह न भरो,
अपने मन में ऐसी ही विरक्ति चाहिए।
" है नहीं ये भूमि ये तो माँ हमारी है,
ये नहीं शरीर, ये तो जाँ हमारी है,
मातृभूमि के लिए आसक्ति चाहिए।
देशवासियों में देश भक्ति चाहिए। "

उन्होंने उपन्यास, नाटक, ग़ज़ल संग्रह, साहित्य की अनेक विधाओं में अपनी सशक्त लेखनी के चमत्कार से सबको चमत्कृत कर दिया। यही नहीं "आकाशवाणी वार्ताएँ" के वे प्रधान सम्पादक भी रहे हैं और इस प्रकार सम्पादन के क्षेत्र में भी आपने बहुआयामी व्यक्तित्व की अमिट छाप छोड़ी है। वे न केवल लेखक, कवि, सम्पादक ही हैं अपितु अनेक नाटकों में सफल अभिनय द्वारा उन्होंने दर्शकों की तालियों को भी समेटा है। पिछले कई वर्षो से वे आकाशवाणी से वार्ताकार एवं कवि के रूप में रचनाओं का प्रसारण करते रहे हैं। दूरदर्शन में भी आपके प्रसारण एवं परिचर्चा देखी व सुनी जा सकती है। एक साहित्यकार, होने के साथ-साथ समाज के प्रति अपने दायित्वों का भी निर्वहन उन्होंने अत्यधिक कुशलता के साथ किया है। अनेक सांस्कृतिक, साहित्यिक, सामाजिक एवं शैक्षिक संस्थाओं के वे सक्रिय सदस्य ही नहीं अपितु पदाधिकारी भी हैं। अपने दिवंगत पुत्र श्री विवेक गोयल की स्मृति में 'विवेक गोयल साहित्य पुरस्कार' द्वारा वे हिन्दी दिवस 14 सितम्बर को एक साहित्यकार का अभिनन्दन करके उसे सम्मानित एवं पुरस्कृत करके साहित्यकारों का सम्यक् अभिनन्दन भी करते हैं। कबीर के जीवन दर्शन 'ढाई आखर प्रेम का पढे सो पंडित होय' एवं श्रीमद्भागवत गीता के 'कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन' को अपना जीवन दर्शन बनाने वाले श्री रामप्रकाश गोयल जी के शतायु होने की मंगल कामना करती हूँ।

प्रधानाचार्या
कस्तूरबा नगर निगम बालिका
इण्टर कालेज, बरेली

अभिनन्दन-शत अभिनन्दन श्री गोयल

श्रीनिवास चतुर्वेदी

हे गौरव – गरिमा के नायक, तुम्हें नमन् शतबार नमन्
साहित्यिक शुभ गतिविधियों के उन्नायक-आधार नमन्।

भारतीय संस्कृति के तुम हो दिव्य पुरुष, अविकल संधान
नगर बरेली के प्रति तुम हो, मदृत शक्ति के शुभ अवदान।
आलोकित है जिससे मण्डल का समाज-संसार नमन्
हे गौरव-गरिमा के नायक तुम्हें नमन्, शतबार नमन्।

पचहत्तर वर्षीय प्रतनु, तव आभा दीप्ति उन्नत भाल
उद्घोषित शुचिता अन्तर की, करता मुख ज्यों दीपक बाल।
अवनि और अम्बर से उठते हैं – शुभ, शिव उद्गार नमन्
हे गौरव-गरिमा के नायक, तुम्हें नमन् शतबार नमन्।

कवि उद्गाता विश्वप्रेम के सूत्रधार भाव-नाटक के
अमित कथाओं के सर्जक, सुख-किरण योगयुत त्राटक के।
ऐसे जन से कालपुरुष भी करता सद्व्यवहार नमन्
हे गौरव-गरिमा के नायक, तुम्हें नमन् शतबार नमन्।

हम सबकी आकांक्षाओं के लोक-पुरुष, संस्कृति के प्राण
सत्यम्-शिवम्-सुन्दरम् के साकार-रूप, सज्जन परित्राण।
सुख-दुख के आनन्द, सुयश के क्षण-क्षण के विस्तार नमन्
हे गौरव-गरिमा के नायक, तुम्हें नमन्-शत बार नमन्।

कहता है जग जिन्हें प्रेम से श्रीयुत रामप्रकाश गोयल
वय का तिमिर भेदकर उनके यौवन का है अरुणाँचल।
बरसें अम्बर से शुभ-सुमनों के सुरभित उपहार नमन्
हे गौरव गरिमा के नायक, तुम्हें नमन् शतबार नमन्

जगदीश्वर से यही प्रार्थना, भोगें आप शताधिक आयु
जरा न व्यापे, रुग्ण न हो तन, लगे न जग की दारुण वायु।
श्रद्धायुत अभिनन्दन अर्चन वन्दन हो स्वीकार नमन्
हे, गौरव-गरिमा के नायक, तुम्हें नमन् शतबार नमन्।

दोहे

जयति-जयति जय-जय जयति, जयदेवी के लाल
विधि-विधिज्ञ वर पितृश्री, मुकुट बिहारी लाल।

यशः सिद्ध-सुत, विधि पुरुष, आलोकित आकाश
सामाजिक व्यवहार-विद्, गोयल रामप्रकाश।

आकृत हैं साहित्य के सांस्कृतिक आधार,
श्री गोयल जी बाँटते, वर्ष-वर्ष पुरस्कार।

संस्कृति के उन्नयन के भारतीय आचार
श्री गोयल जी ने रचे, मानदण्ड-व्यवहार।

नगर बरेली से चली, कविता की रसधार
आप्लावित जिससे हुआ साहित्यिक संसार।

उपन्यास, नाटक रचे, ग़ज़ल, गीत, नवछन्द
आध्यात्मिक सुख-शान्ति के, स्वास्ति भाव आनन्द।

भाषा भावों से भरे अभिनय के आयाम
श्री गोयल जी का हृदय माँ-वाणी विश्राम।

स्वार्थहीन करुणा विमल, कर्मकुशल, निष्काम
अभिनन्दन, वन्दन सहित, करते सुजन प्रणाम।

लीला निवास, अवधपुरी
सुभाषनगर, बरेली (उ0प्र0)

SPARKLING PROF. RAM PRAKASH GOEL

Kunwarani Chopra Bansi

Mr. R.P. Goel is an unassuming dynamic personality. I gained so much confidence by reading his works, that I feel I can do anything now. Sky is the limit.

Mr. Goel's poems are easy to understand, imbibe and follow Some have pathos, others revolutationary, yet others very touching Some personal tinge of the poet can be felt reading " Ek Samandar Pyasa-Sa" His senstivity, his intelligence is par excellence. Only a very sensitive mind can enter the depth of his works, feel with it and appreciate the vastness of the poet's heart. You pick up 'Ek Samandar Pyasa Sa', go through a few poems; you just don't want to part with it. One wants to go on and on and on. That is the beauty of his work. His poems literally shake you up into doing something constructive for the mother land.

His work has become my inspiration. What change it will bring in my personiity, I can't fatthom yet. The spark has been lighted. Time will tell how his vision helps me.

Kandhar pur, Lal Pathak, Bareilly

PROF. RAM PRAKASH GOEL - A FIGHTER AND A SOLDIER

Col. Dewan R. K. Chopra

Prof. Goel is a poet, a soldier and a saint in my eyes. He has seen the extremes in his life and has come out fighting with both hands like a prize fighter and a soldier. He deserves admiration from the fact that the vicissitudes have made him more humane and he has not lost the fine aspects of life. His calender of novel, poems, ghazals and philosophy of life shows his great multi-factetted personality. This reflects his personality -

जुल्मते दौरों से फिरता ही नहीं मर्दों का रुख,
शेर सीधा तैरता है वक्ते रफ्तन आब में।

With salute to Prof. Ram Prakash Goel

Kandhar pur, Lal Pathak, Bareilly

सृजन के लिए

रमेश गौतम

'एक समन्दर प्यासा-सा' का रचनाकार अपने लम्बे साहित्यिक सांस्कृतिक सफ़र में जिस अदम्य जिजीविषा के साथ आगे बढ़ा है वह उल्लेखनीय है। प्रेम और पीड़ा के भोगे हुए यथार्थ को कहने में श्री गोयल संकोच नहीं करते। 'टूटते सत्य' से 'एक समन्दर प्यासा-सा' तक का उनका लेखन एक निश्छल अभिव्यक्ति की सुनहरी बुनावट है। वे अनुभूतियों के एक-एक तिनके से अपने साहित्यिक नीड़ का सृजन करते हैं। निश्चय ही सृजन के इन क्षणों में वे अपने भीतर के दर्द को स्वाभाविक रूप से व्यक्त कर देते हैं। लुका-छिपी तथा आँख-मिचौनी की आदत उन्हें नहीं है। राग-विराग, कल्पनातिरेक, रूमानियत और लौकिक प्रेम के प्रस्फुटन में वे कहीं भी कथ्य को रहस्य के आवरण में नहीं लपेटते और न ही अपनी गोपन व्यथा का स्वाँग करते हैं। आशा-निराशा के टूटते मोहपोश, प्रेम और विरह के हृदयाघात, अन्तर्द्वन्द्व आदि की अनुभूतिगत सहज स्वीकारोक्ति उन्हें विशिष्ट बना देती है। कलात्मक लाक्षणिक भंगिमाओं को अपने कथ्य में सप्रयास प्रतिष्ठित करने की चेष्टा भी उनके द्वारा नहीं हुई है। अतः ऐसे रचनाकार का भावपक्ष अपने कलापक्ष को आलोचना के आक्रोश से बचाए रखने में सहायक हो सकता है। राम प्रकाश गोयल हृदय की भाषा से सम्वाद करते हैं। एक अर्थ में जीवन सृजन का ही दूसरा नाम है। सृजन चेतना ही शब्दों को जन्म देती है। शब्दांकन की इस प्रक्रिया को श्री गोयल ने जिया है। इनकी अभिव्यक्ति में रागतत्व, रूपतत्व और विषयतत्व विविध आयामों में उपस्थित हुए हैं।

इकलौते पुत्र विवेक के असामयिक निधन ने श्री गोयल को मर्मान्तक पीड़ा दी है। इस दैवीय क्षति को अपार सहनशीलता के साथ स्मृतियों में सँजोकर श्री गोयल ने 'विवेक गोयल साहित्य पुरस्कार' की ऐसी आधारशिला रखी है जो हर वर्ष साहित्यकारों के लिए प्रेरणा का माध्यम बन जाती है। उन्होंने दिवंगत स्व0 विवेक को मानस पुत्र के रूप में साहित्यकारों के हवाले कर दिया है जो निश्चय ही बरेली के साहित्य जगत के लिए एक शुभ सन्देश है।

श्री राम प्रकाश गोयल की दीर्घायु की शुभकामनाओं के साथ।

78-बी, संजय नगर, स्टेडियम रोड, बरेली

प्रो0 गोयल साहब – ज़िन्दादिली का एक नायाब नमूना

नाहर खान एडवोकेट

अगर किसी को ज़िन्दादिली का सबक़ लेना है, तो गोयल साहब से मिले। उनके पास मानो अपने लिए कुछ भी नहीं, सभी कुछ दूसरों को लुटाने का जज़्बा ही उन्हें और ज़्यादा जीने का हौसला दिए जाता है। ख़ुदा की दी हुई दरियादिली, उनकी शख़्सियत में जैसे चुम्बक का काम करती है। यह उनकी मिलनसार शख़्सियत की ही वजह है जो एक बार उनसे मिल लेता है, बार-बार मिलने की जुस्तजू रखता है। बरेली का कोई भी सामाजिक, साहित्यिक या सांस्कृतिक कार्यक्रम ऐसा नहीं होता जहाँ से निमन्त्रण गोयल साहब को न आता हो। चाहे अध्यक्ष की हैसियत से या विशिष्ट अथवा मुख्य अतिथि की हैसियत से या वक्ता अथवा विचारक के रूप में गोयल साहब को ज़रूर बुलाया ही जाता है और गोयल साहब भी किसी प्रोग्राम में भूल से भी गैर हाज़िर होकर उसकी बेरौनकी का ज़िम्मा अपने सिर नहीं लेना चाहते।

बरेली की सरज़मीन ने बहुत से फ़नकार दिए हैं जो हिन्दोस्तान के कोने-कोने में अपने फ़न का जादू बिखेरे हैं। अगर आपको उन सभी से मिलकर धन्य होना है तो आप गोयल साहब से राबिता कायम कीजिए और उनके दौलत ख़ाने से आमद-रफ़्त रखिए। यक़ीनन आप सभी से मुलाक़ात कर सकते हैं। यह उनके दर से मिलने वाला तोहफ़ा ही है। कोई कलाकार भी ऐसा नहीं जो आपके आवास पर हाज़िरी देने न आता हो – चाहे दोस्त की हैसियत से या शागिर्द की हैसियत से, बड़ा भाई बनकर दुआएँ देने या छोटा भाई बनकर दुआएँ लेने या फिर साथी की हैसियत से ख़ैरियत पूछने।

इस शख़्स की पैदायश ही जैसे देने के लिए हुई है। उन्हें बहुत मिला है, लेकिन – दर्द। दर्द अपना हो या दुनिया का, उनके लिए बराबर है। यही एक ख़ास चीज़ है जिसने इस हस्ती को उस मुक़ाम पर पहुँचा दिया है जहाँ गिनती के लोग पहुँचते हैं जिस पर मुझको, आपको, बरेली की सर ज़मीन को बेहद नाज़ है।

जेल रोड, कचहरी-बरेली

सृजनशील व्यक्तित्व के बहुआयामी रचनाकार : प्रो0 राम प्रकाश गोयल

डॉ0 ओम प्रकाश सिंह

कोई भी सृजनशील व्यक्तित्व संघर्ष की धरती पर उतरकर ही विविध रंग-अर्थों में अपना इन्द्रधनुषी आयाम लेता है। कभी उसे काँच के टुकड़ों को बीनना पड़ता है और कभी पंखुरियों पर चलकर अपनी मंजिल तलाशनी होती है। कभी उसे चिलचिलाती धूप में अपने क़दम बढ़ाने पड़ते हैं और कभी बर्फ़ की मोटी शिलाओं को छूकर नयी दिशा खोजनी पड़ती है। मगर यह स्पष्ट है कि रचनाकार को लेखनी तराशने के लिए हर स्थितियों से गुज़रना होता है। जो इन पर्वतों को लाँघता हुआ अपने लक्ष्य की ओर अग्रसर होता है, वही अपनी ज्वलनशील अनुभूतियों के सहारे सृजनात्मक जीवन जीने में सफल होता है। प्रो0 राम प्रकाश गोयल एक ऐसे ही हस्ताक्षर की पहचान हैं।

सरलता की प्रतिमूर्ति, व्यवहार कुशल और आत्मीयता से भरे-पुरे गोयल जी 'कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन' के आदर्श हैं। अतएव हर कार्य को व्यवस्थित और अनुशासन में जीकर करना चाहिए। इन्होंने संतुलित जीवन जीकर ही साहित्य और समाज की महती सेवा की है। उन्होंने अपने व्यक्तित्व को विकसित एवं सम्पन्न बनाकर जिन मानव-मूल्यों को स्थापित किया है, वे मूल्य इस शाश्वत जीवन की धरोहर हैं।

गोयल जी ने अपनी प्रतिभा और सतत् साधना के द्वारा साहित्य की जो अनुपम सेवा की है, वह प्रशसंनीय ही नहीं बल्कि अनुकरणीय है। गद्य-पद्य की अनेक विधाओं में इन्होंने साहित्य सेवा की है। गीत, ग़ज़ल, कविता, मुक्तक, उपन्यास, नाटक पत्र लेखन इत्यादि इनकी साहित्यिक प्रतिभा के विविध आयाम हैं। इन्होंने गीत-ग़ज़ल संग्रह 'एक समन्दर प्यासा-सा' में प्रेम और सौंदर्य की गहरी संवेदना व्यक्त की है। जहाँ एक ओर गीतों में अनुभूति की गहराई और यथार्थ बोध प्रतीत होता है, वहीं दूसरी ओर नये प्रतीकों व बिम्बों की ताजगी का एहसास कराने वाले अच्छे गीत भी हैं। इनकी ग़ज़लों में स्वर भी है और भी मगर वे नये

बोध के साथ सहज अभिव्यक्ति भी देते हैं। 'रिसते घाव' में शब्दशक्ति और अर्थ लावण्य का विशेष प्रभाव दृष्टिगोचर होता है उनमें सामयिकता भी है और सामाजिक सरोकार भी। त्रिकोण प्रेम पर आधारित उपन्यास 'टूटते सत्य' एक मनोवैज्ञानिक कृति है जो मानव मन की जटिलताओं और सामाजिक विकृतियों व असमानताओं से पड़े आघातों को यथार्थ स्वर देकर कथा-जगत के लिए विशिष्ट भेंट है। इसमें दाम्पत्य प्रेम के खारेपन को या प्रेमी-प्रेमिका की मिठास को संवेदनशीलता के धरातल पर देखा-परखा गया है। इस उपन्यास पर आधारित कथ्य को दिल्ली दूरदर्शन अपना सीरियल निर्मित करने की योजना बना रहा है।

गोयल जी का ग़ज़ल-संग्रह 'दर्द की छाँव में' पाठकों के मध्य बहुचर्चित हुआ है। इनका नाटक 'दिल और दिमाग़' एक प्रतीकात्मक मनोवैज्ञानिक नाटक है जिसमें हृदय के भाव और मस्तिष्क के विचारों के मध्य असमानता के कारण जीवन में घटित घटनाओं व असंगतियों को उद्घाटित करने का एक सफल प्रयास है। इसके अतिरिक्त गोयल जी ने एक लम्बे समय से आकाशवाणी और दूरदर्शन के द्वारा गीत, गजल, लेख व नाटक द्वारा अपने मूल्यबद्ध विचारों को संप्रेषित करने का पूर्ण प्रयास किया है। साथ ही एक संपादक के रूप में इन्होंने आकाशवाणी की वार्ताओं को संपादित व प्रकाशित भी किया है।

अभिनय-रंगमंच प्रो० गोयल के बहुआयामी व्यक्तित्व का दूसरा चरण है। 'वीर अभिमन्यु' में सहदेव का अभिनय, कवि दरबार में माखनलाल चतुर्वेदी तथा सुमित्रानन्दन पंत का अभिनय, 'भोर का तारा' में शेखर का अभिनय, 'एहसास' में न्यायाधीश और ''आज का सच'' में प्रिंसिपल तथा न्यायाधीश का अभिनय अत्यन्त सुन्दर प्रशंसनीय एवं महत्वपूर्ण रहा है। वास्तव में जिस नाटक को 'पंचम वेद' की संज्ञा दी गई उसको सार्थक करने वाले नाटककार गोयल जी की लोकप्रियता इस दिशा में कहीं कम नहीं रही है बल्कि ये इस क्षेत्र में टेलीफिल्मों में अभिनय करने के कारण विशेष चर्चित हुए। गोयल जी आकाशवाणी रामपुर की 'कार्यक्रम सलाहकार समिति' के सक्रिय सदस्य भी रहे।

प्रो० गोयल ने हिन्दी भाषा और साहित्य के उन्नयन व समृद्धि के लिए अत्यन्त प्रयत्नशील रहे। राष्ट्र भाषा के प्रचार-प्रसार में इनका योगदान बहुत ही सराहनीय रहा। अनेक साहित्यिक संस्थाओं के विशिष्ट पदों-अध्यक्ष, संरक्षक, जनक आदि पर रहकर अपनी सेवाएँ अर्पित कीं। अपने एकमात्र दिवंगत पुत्र की पुण्य स्मृति में सन्

बेहद खुशनुमा एक यादगार शाम प्रो0 गोयल के साथ

हरि विश्नोई

बरेली की अभिजात्य कालोनी, रामपुर गार्डन। आनंद आश्रम के समीप गली नम्बर दो में मकान नम्बर जी-12 का ड्राइंग रूम। शाम की चाय का समय था।

एक टी0वी0 प्रोग्राम के सिलसिले में अपनी पत्नी के साथ पहली बार वहाँ गया था और चुपचाप बैठा तीन प्रबुद्ध महिलाओं का वार्तालाप सुन रहा था: विश्व जनसंख्या दिवस के अवसर पर आयोजित परिचर्चा की यह एक पूर्व बैठक थी। वहीं अचानक गोयल साहब ने कमरे में प्रवेश किया। अभिवादन के साथ साथ मैं उन्हें देखकर अवाक रह गया। दो हफ्ते पहले मैंने उन्हें टी0वी0 पर देखा था। इसलिए मैं तुरंत उन्हें पहचान गया। जब भारतीय संविधान में नागरिकों के मूल अधिकार तथा मूल कर्तव्य विषय पर एक आधुनिका उनका इंटरव्यू ले रही थी तो उनके जवाब देने की शैली, विद्वता तथा विश्लेषण क्षमता ने मुझे बहुत प्रभावित किया था। उस दिन मुझे इस बात का तनिक भी तो एहसास नहीं था कि इतनी जल्दी ही इस हस्ती से मिलने का सौभाग्य मुझे प्राप्त हो सकेगा।

जब ईश्वर की कृपा होती है तो अच्छे लोगों से मिलना होता है। निसंदेह यह एक अविस्मरणीय संयोग था कि मैं प्रो0 राम प्रकाश गोयल जी के घर पर था। औपचारिक परिचय के बाद जब बातों का दौर चला तो सचमुच में गदगद हो गया। उस शाम को मैं कभी नहीं भूल सकता। सहज सरल स्वभाव के धनी गोयल साहब को अहंकार ने छुआ तक नहीं है। क़ानून व वकालत उनकी जीविका रही है लेकिन हृदय उदगार साहित्य की विभिन्न विधाओं के साथ निकले हैं। मैंने उनकी रचनाएँ पढ़ीं – सुनीं तो लगा कि सचमुच प्रतिभा के कितने रंग हो सकते हैं।

आज 75 वर्ष की आयु में साहित्य की सेवा आप उसी प्रकार

से कर रहे हैं जैसे कि कोई युवक। गोयल साहब के कृतित्व को देखकर मुझे लगा कि वास्तव में वह असाधारण क्षमता से युक्त हैं स्वभाव ऐसा कि जैसे विनम्रता, स्नेह और मधुरता की त्रिवेणी बह रही हो। वे दुर्लभ क्षण थे।

मैं उनसे मिला तो लगा कि मुझे बहुत कुछ मिला। प्यार मिला, प्रेरणा मिली, एक दिशा मिली। सबसे बड़ी बात यह थी कि मुझे ऐसा लगा कि जैसे यह मुलाकात पहली न होकर बहुत पुरानी जान पहचान वाली हो। बहुत स्नेही हैं गोयल साहब।

उत्कृष्ट सोच, अत्युत्तम जीवनदर्शन से ओतप्रोत गोयल साहब के साथ मिलकर बैठकर पता ही नहीं चला कि कब घंटों बीत गए। वह समय तो निकल गया लेकिन एक अमिट छाप छोड़ गया। हृदय के आकाश पर बहुत कुछ लिख गया। जल्दी ही फिर मिलूँगा। इस इच्छा के साथ मैंने विदा ली।

माँ सरस्वती के इस लाड़ले रचनाकार के सम्मान में किस प्रकार अपनी भावनाओं को यहाँ व्यक्त करूँ ? एक हीरा व्यक्ति से मिलाने के लिए हे प्रभु तेरा कोटिशः धन्यवाद और उनके स्वस्थ एवं यशस्वी जीवन हेतु कामना।

77 गांधी नगर, बरेली

प्रो0 रामप्रकाश गोयल – जीना इसी का नाम है

संगीता रस्तोगी

किसी की मुस्कराहटों पे हो निसार, किसी का दर्द मिल सके तो ले उधार। किसी के वास्ते हो तेरे दिल में प्यार–जीना इसी का नाम है

ये पंक्तियाँ उस सरस्वती पुत्र के जीवन पर पूर्ण रूप से सत्य उतरती हैं जिसमें सम्पूर्णतः है, अपनत्व है और जो सदैव ही हर मानव की सहायता के लिए तत्पर रहता है। वह व्यक्तित्व है गुरुदेव श्री राम प्रकाश गोयल जी। जीवन के 75 वर्ष पूर्ण करने के बाद भी वे आज युवक जैसे सक्रिय हैं। जब मैं गुरुदेव श्री गोयल जी से मिली तो मुझे ऐसा महसूस हुआ कि मेरा अब तक का जीवन एक श्रेष्ठ गुरु के

आशीर्वाद और मार्गदर्शन से वंचित ही रहा। मैंने अब तक के जीवन में ऐसा व्यक्तित्व नहीं देखा है। आप एक श्रेष्ठ साहित्यकार, ग़ज़लकार, उपन्यासकार, कलाकार, नाटककार, अभिनेता, अधिवक्ता एवं प्रोफेसर हैं। आपकी रचनाएँ जीवन के सत्य और कटु अनुभवों पर आधारित हैं। अपने जीवन में बहुत दुख उठाए हैं और अपने हृदय में वेदनाओं का एक समन्दर छिपाए हुए हैं जो 'एक समन्दर प्यासा-सा' व्यक्त कर रहा है। आपने कभी भी अपने दुखों को किसी के साथ नहीं बाँटा। दुनिया में दुख में दुखी होने वाले दोस्त बहुत कम हैं। हर व्यक्ति सुख में साथ देना चाहता है किन्तु गुरुदेव ने तो सदैव खुशियाँ बाँटकर और रोतों के आँसू पोछकर अपना जीवन बिताया है। तभी तो वे कहते हैं -

"खुशियों को बाँटकर ही ज़माने में तुम रहो,
रोतों के आँसू पोछकर दुनिया में तुम जियो,
बुझते दिलों में रोशनी करती है जिन्दगी"

गोयल गुरुदेव जी जो अन्दर से महसूस करते हैं वही सच्चाई और ईमानदारी के साथ अपनी रचनाओं में प्रस्तुत करते हैं। त्रिकोण प्रेम पर आधारित उपन्यास "टूटते सत्य", प्रेमी-प्रेमिकाओं के 'सच्चे प्रेम पत्र' ग़ज़ल संग्रह 'रिसते घाव' और 'एक समन्दर प्यासा-स' आपके प्रेम और दर्द की अनुभूतियों का आईना हैं। आपने जीवन की कठिनाइयों का सामना हँसते हुए सहजता, सरलता से किया है आपके शरीर में सात बार फ्रैक्चर हुए हैं, हृदय की बाईपास सर्जरी हो चुकी है, सोलह वर्ष की किशोर आयु का आपका एक मात्र पुत्र सदैव के लिए बिछुड़ चुका है किन्तु इन सब कष्टों और पीड़ाओं के बाद भी आपका उत्साह और जिजीविषा वैसी की वैसी बरकरार है। वे अन्दर से कितने अकेले और टूटे हुए हैं इसका जरा सा भी एहसास किसी को नहीं होने देते। यदि ऐसा न होता तो वे कैसे लिखते -

वो भीड़ में भी तो तन्हा दिखाई देता है,
वो जाने क्या है मगर क्या दिखाई देता है

उनको देखकर और समझकर महसूस होता है कि जीना इसी का नाम है।

468, मलूकपुर, बरेली

उदार चेतना प्रो० गोयल

प्रो० एस०के० शर्मा

हर्ष का विषय है कि श्री रामप्रकाश गोयल अपने सार्थक जीवन के साढ़े सात दशक कुछ ही महीनों में पूरे कर रहे हैं। आगामी अमृत महोत्सव पर उन्हें मेरी ओर से हार्दिक बधाई।

गोयल साहब से मेरा सम्पर्क तब हुआ, जब उन्होंने बरेली कालेज के विधि विभाग को विभूषित किया। उनके मानवोचित गुणों तथा होठों पर सदैव विद्यमान रहने वाली मुस्कुराहट ने शीघ्र ही मेरा दिल जीत लिया। हमारा सानिध्य साहित्य कला अकादमी के माध्यम से और अधिक बढ़ा। विज्ञान का छात्र होने के कारण मैं नीरस व्यक्ति हूँ किन्तु मेरी नीरसता की बंजर भूमि की प्यास गोयल साहब की सरसता सदैव बुझाती चली आई है।

गोयल साहब स्वयं आत्म-सम्मान प्रिय व्यक्ति हैं किन्तु दूसरों को सम्मान भी भरपूर मात्रा में देते हैं। गोष्ठियों, कवि सम्मेलनों आदि में अपने विचार व भाव तो दूसरों के समक्ष रखते हैं किन्तु दूसरों के विचारों भावों व कृतियों को भी सम्मान देने में कोई कंजूसी नहीं करते। एक सफल वकील होने के साथ-साथ आप एक लोकप्रिय कवि व संवेदनशील व्यक्ति भी हैं। दूसरों की पीड़ा से बहुत जल्दी द्रवित हो जाते हैं। गोयल साहब के अन्तर की पीड़ा समाज के सर्वहारा वर्ग की पीड़ा से तो जुड़ी है ही, साथ ही अपने एकमात्र पुत्र 'विवेक गोयल' के असामयिक निधन का कारण भी है। चेहरे पर मुस्कुराहट का मुखौटा ओढ़े व अपने में कितनी वेदना समेटे हुए हैं इसका अन्दाज़ आप इनकी पुस्तक 'एक समन्दर प्यासा-सा' के इस आत्मकथ्य से लगा सकते हैं :-

'अन्दाज़ा लगा पाएगा क्या दर्द का मेरे
तर अश्कों से जिसने मेरा बिस्तर नहीं देखा'
'रो लेता हूँ औरों के आँसू समेट कर
मुझको तो अपने आँसू बहाना नहीं आता।'

गोयल साहब बहुत उदार चित्त व्यक्ति हैं। सदैव दूसरों की मदद करने को तैयार रहते हैं। उदीयमान युवा कवियों को सदैव बढ़ावा देते हैं, उनका हौंसला बढ़ाते हैं। युवा पीढ़ी के लिये उनका सन्देश है:-

होती हर पल यहाँ परीक्षा है, वक्त करता नहीं प्रतीक्षा है,
अपनी मंजिल पे गर पहुँचना है, करनी अपनी तुम्हें समीक्षा है

कोआर्डीनेटर, बरेली कॉलेज, बरेली

सुयोग्य शिक्षक प्रो0 गोयल जी

उमेश चन्द्र अग्रवाल

अत्यन्त हर्ष का विषय है कि माननीय श्री राम प्रकाश गोयल जी एडवोकेट के जीवनवृत्त पर अभिनन्दन ग्रन्थ प्रकाशित हो रहा है। श्री राम प्रकाश जी गोयल अत्यन्त सूझबूझ के विवेकी, धनी, कर्मठ एव सहृदय व्यक्तित्व हैं। मुझे इनके द्वारा रचित कविताओं के अनेक सग्रह पढ़ने का अवसर प्राप्त हुआ है। रचनायें इस प्रकार की हैं, जो हृदय के अंतरंग को छूती हैं। आप एक योग्य शिक्षक भी रहे हैं। बरेली कालेज, बरेली में आपने एल-एल0बी0 कक्षाओं में जिस तत्परता एवं कठिन परिश्रम से विधि की शिक्षा दीक्षा दी है, वह अनुकरणीय है। विधि की शिक्षा में आपके द्वारा दिया गया मार्गदर्शन विद्यार्थियों को सदैव ही लाभकारी रहा है। मैं माननीय श्री रामप्रकाश गोयल जी के प्रति अपनी कृतज्ञता प्रकट करते हुये स्वयं को अभिभूत अनुभव करता हूँ। मेरी ईश्वर से यह विनम्र प्रार्थना है कि वह दीर्घ आयु हों और अपने उद्देश्य प्राप्ति में सदैव तत्पर रहें और सभी का मार्गदर्शन करते रहें।

अतिरिक्त जिला जज, बरेली

माननीय श्री राम प्रकाश गोयल जी,

मुझे यह जानकार बहुत हर्ष हो रहा है कि आपको आपके 75वें जन्म दिवस पर 30-06-2000 को आपका अभिनन्दन किया जा रहा है और अभिनन्दन ग्रन्थ भी भेंट किया जा रहा है।

आपने न केवल उत्तर प्रदेश का वरन् समूचे भारत का सिर गर्व से पूरे संसार में ऊँचा किया है। मैंने आप द्वारा लिखित पुस्तकें पढ़ी हैं जो अन्तर्राष्ट्रीय विषयों पर आधारित हैं।

जितनी सेवा साहित्य और समाज की आपने की है आपको विधान परिषद् या राज्य सभा का नमित सदस्य होना चाहिए था लेकिन -

कब किसको दिखे हैं, वे नींव के पत्थर,
है जिन पे महल क़ायम, वे नीचे दबे हैं।

शुभकामनाओं सहित

जे0डी0 बजाज एडवोकेट, बरेली

कर्म की साकार मूर्ति – मेरे पापा

डॉ0 ममता गोयल

'कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन'

गीता के इस श्लोक को जीवन में रचा बसा लेने वाले व्यक्तित्व का नाम है 'राम प्रकाश गोयल' – मेरे पापा। मैंने कभी भी, कहीं भी उन्हें कर्म से पीछे हटते नहीं देखा। इतनी सहजता से वह न्यायकारी ईश्वर की सत्ता को स्वीकार कर निश्चिन्त मन रहते हैं कि हैरानी होती है। भाग्य के भरोसे टिककर बैठना नहीं, कर्म का दामन छोड़ना नहीं।

ईश्वर ने हर मनुष्य को कुछ न कुछ विशेषता दी है। ईश्वर प्रदत्त विशेषताओं के साथ जो अपनी प्रबल इच्छा शक्ति से अपने व्यक्तित्व को और अधिक निखार ले, वह सही मायनों में सफल मनुष्य है और ऐसा कर दिखाया है पापा ने। उनका व्यक्तित्व अनेक विशेषताओं का गुलदस्ता है। कहाँ से शुरू करूँ, कहाँ अन्त करूँ, समझ में नहीं आ रहा।

75 वर्ष की जीवन यात्रा में अनेक ऊबड़ खाबड़ रास्तों को पार करते हुए वह निरन्तर अर्जुन की तरह अपने लक्ष्य पर दृष्टि जमाए रहते हैं। कोई बाधा, कोई मुसीबत उनकी जिजीविषा को लेशमात्रा भी कम करने में सफल नहीं हो पाती। उन्होंने हम सब को मुसीबतों के आगे घुटने टेककर बैठ जाने को कायरता के स्थान पर डटकर संघर्ष करना सिखाया है। जितना धैर्य, जितना संयम, जितना शांत स्वभाव और गम्भीरता उनमें देखी, वह विरले ही किसी में होती है। जीवन के प्रति सदैव उनके आशावादी दृष्टिकोण ने हर परेशानी को बौना कर दिया। तभी तो वह सिकन्दर की तरह एक के बाद एक फतह करते गये। उन्होंने कभी किसी के साथ पलट कर बुरा नहीं किया बल्कि धैर्य के साथ अपने को प्रमाणित कर दूसरे को झुका लिया। एक जगह उन्होंने लिखा भी है –

दुश्मनों से भी प्यार करिए आप, और बेफ्रिक्र हो के रहिए आप।

'स्वास्थ्य ही जीवन का परम रक्षक और सच्चा साथी है' – इसका जीता जागता उदाहरण हैं वे। 'स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मस्तिष्क होता है' – यह उन्होंने साबित कर दिया है। उनके पास जबर्दस्त अच्छी स्मरण शक्ति है। आज भी वह किसी पर निर्भर न हो कर, अपने कार्य स्वयं करते हैं। उन्हें देखकर कोई भी युवा प्रेरणा ले सकता है। अध्ययन में हमेशा वह रत रहते हैं। शायद पुस्तकों को उन्होंने सच्चा जीवन साथी बनाया है। जीवन के प्रति आशावादी दृष्टिकोण और हिम्मत की कहाँ कहाँ तक बात करूँ। उनके शरीर में सात बार फ्रैक्चर हो चुके हैं – किन्तु उन्हें इसकी तनिक भी चिन्ता नहीं है। जीवन की वह घड़ियाँ जब वह जिन्दगी और मौत के बीच झूल रहे थे और 72 वर्ष की आयु में जब उन्हें हार्ट अटैक पड़ा और हमें उन्हें दिल्ली ले जाना पड़ा। तब भी वह रास्ते में कविता लिखवाते हुए जा रहे थे। अपोलो अस्पताल के डाक्टर्स को अपनी बाईपास सर्जरी की बिना तनाव और चिन्ता के सहजता से अनुमति देकर सबको सकते में डाल दिया। जीवन के प्रति आशावादी दृष्टिकोण, प्रबल इच्छा शक्ति, हिम्मत और अदम्य उत्साह पर मानो ईश्वर ने भी उन पर अपना वरद हस्त, रख दिया है और वह सकुशल वापस आ गये। सबके साथ मिल जुल कर कार्य करने के कारण ही उन्होंने सबके दिलों में अपना स्थान बनाया है। सबके दोस्त हैं वह। उन्हीं के शब्दों में –

वो जो कहता है कि अब दोस्त ज़माने में नहीं
उसने तो मुझसे अभी तक नहीं मिलकर देखा।

सामाजिक कार्यों के लिए उन्होंने भरपूर सहयोग दिया है। गरीबों के प्रति सदैव दया भाव रखा। उनकी हर सम्भव सहायता की। बच्चों को हमेशा सफलता के लिए प्रेरित किया। उन्हें पुरस्कार देकर सम्मानित किया। साहित्य सेवा में वह लम्बे समय से जुड़े हैं। मानवीय संवेदनाओं, मस्तिष्क के उहापोह, प्रेम की अनुभूतियों को बड़ी सरल भाषा में गहराई से व्यक्त करते हैं। जीवन के संघर्षों और दार्शनिक चिन्तन ने उनकी लेखनी को नया रूप दिया है। सच्चाई और अच्छाई की सदैव तलाश की उन्होंने। यह बेचैनी उनके एक शेर में

साफ दिखाई देती है -

जो नज़र नज़र से मिला सके, मुझे उस नज़र की तलाश
हुई जिससे कोई ख़ता नहीं, मुझे उस बशर की तलाश है।

सीखने की कोई उम्र नहीं होती - इसका साक्षात प्रमाण वह। उन्होंने सदैव दूसरे को अपनी भावनाओं और विचारों को व्यव करने का पूरा पूरा अवसर दिया है। उन्होंने हम सब को बिना भेदभा के वह सब दिया जो हमने चाहा। सदैव हमारे संघर्षों में एक सेनापति की भूमिका निभा कर हमारा मार्गदर्शन किया और हर संघर्ष को पार किया। वह कहते हैं :-

मैं झुकूँगा न कभी जुल्मों सितम के आगे,
इम्तिहाँ मेरा तो हर पल ही यहाँ होता है।

वकालत उनका पेशा है लेकिन उन्होंने कभी उसे अपने ऊपर हावी नहीं होने दिया। वकालत जैसे पेशे में भी वह एक दम शान्त रहते हैं। वह बरेली कॉलेज के विधि विभाग में एक सफल शिक्षक के रूप में आज भी याद किए जाते हैं। जो भी कार्य वह करते हैं, पूरी एकाग्रता और निष्ठा से करते हैं। यह उनकी सफलता का राज़ है। उन्होंने 'एकला चलो' के सिद्धान्त को अपना जीवन दर्शन बनाया। कभी किसी से अपेक्षा न कर अपना मार्ग बनाते चले गये। उन्होंने अपने मृदु व्यवहार से सबका सहयोग प्राप्त किया है।

उनकी एक बेटी होने के कारण उनके जीवन को मैंने बहुत निकट से गहराई के साथ देखा है। मुझे उनकी बेटी होने पर नाज़ है। भावनाओं के आगे शब्द कितने सीमित और बौने होते हैं - यह अनुभूति मुझे इस समय हो रही है। चाह कर भी पापा के व्यक्तित्व को शब्दों की क़तार में बाँधना किसी समन्दर को बाँधने का प्रयास करना है। उनकी उदारता, कर्मठता, सहनशीलता, लगन, निष्पक्षता, उत्साह, आशावादिता, उनकी जीवन यात्रा को निखारती ही रहे। ईश्वर उन्हें दीर्घायु करें। हम सब उनकी छत्रछाया में ऐसे ही पल्लवित पुष्पित होते रहें ऐसी मेरी कामना है।

जी-12, रामपुर बाग, बरेली

एक आत्मीय व्यक्तित्व : प्रो0 राम प्रकाश गोयल

सरला सक्सेना

आज गोयल साहब को लेकर उनके बारे में कुछ लिखने का अवसर मिला है। पर क्या लिखूँ, कैसे लिखूँ उनके किस रूप का वर्णन करूँ। वह तो अब एक सागर का रूप ले चुके हैं जिसमें सुख-समृद्धि, मान-प्रतिष्ठा, प्यार, प्रेम, मिलन-वियोग दुःख पीड़ा आदि सभी का समावेष है।

आज 25 सालों से गोयल साहब को जानती हूँ जिन्हें मेरे पति ने एक छोटे भाई का प्यार दिया और इसी नाते वह मेरे घर के सदस्य बन गये। मैंने उन्हें एक सीधे साधे सरल मिलनसार हँसमुख स्वभाव के साथ साहित्यिक प्रवाह में डूबते देखा है। आज वह अपने दुःख, दर्द, प्यार, प्रेम, विरह आदि के रूप में इस कदर समा गये हैं कि वह साहित्य की दुनिया में पूर्ण रूप से छा गये। साहित्य के हर भाग में डूब कर विचलित होते देखा है। उन्हें समाज के हर कार्यो में सम्मिलित होकर प्रेम से उसमें साथ देते देखा है। यही कारण है कि चाहे दूरदर्शन हो या आकाशवाणी या नाट्य संस्था, कवि, सम्मेलन हो या मुशायरा हर जगह उनका नाम है, सम्मान है। कहीं अपनी कविताओं के नाते, कहीं ग़ज़लों के नाते तो कहीं सरल साहित्यिक स्वभाव के कारण हर जगह वह छा कर रह गये हैं।

शुरू से ही उन्हें साहित्य से प्यार था। वह हमेशा प्रेम प्यार से सराबोर रहे। प्रेम, प्यार तो उनकी आत्मा में कूट कूट कर भरा था। उनकी लिखी कविताओं और गज़लों से ऐसा मैंने महसूस किया। प्यार तो पूजा है, प्यार तो ज़िन्दगी है। पर इस प्यार और प्रेम के रूप पचासों हैं। प्यार तो माँ अपने बच्चों से भी करती है और अथाह करती है। यहाँ तक कि प्रेमी प्रेमिका का प्यार भी उसके पीछे धूमिल है। प्यार तो लोग भगवान को भी करते हैं फिर प्यार शब्द को लोग बुरा क्यों कहते हैं। यह तो आप को दर्द की पीड़ा में, सुख की रोशनी में, ग़म की रात में, वियोग मिलन की राह में, हर जगह मिलेगा। इसमें से जो भी रूप साथ दे जाये। गोयल साहब में दर्द, पीड़ा, घुटन, प्यास, वियोग एक साथ होकर इतना समा गये कि उनके मन की गगर तलाबलब भर गई है। दुःख दर्द पीड़ा जैसे उनकी आत्मा को

मार कर खुद उनकी आत्मा बन बैठा हो और इसी दर्द की कराहट से जो आह निकली है जो आवाज़ मन की पीड़ा से निकली है, वह आज आप के सम्मुख 'रिसते घाव' तथा 'एक समन्दर प्यासा-सा' के रूप में प्रस्तुत है।

शायद यह सच है कि जीवन की पीड़ा, हृदय की वेदना ही मनुष्य को ज्यादा सुन्दर व्यक्ति या शायर बना देती है।

सबसे बड़ी बात तो उनकी शैली है जो इतनी सरल और मीठी है कि हर इन्सान के दिल को छू लेती है। हर इन्सान उस गहराई तक आसानी से पहुँच जाता है जिसे वह दिखाना चाहते हैं।

ऊपर से इतने हँस-मुख, हर कार्य क्षेत्र में, सांस्कृतिक साहित्यिक, सामाजिक, शैक्षिक, राजनैतिक आदि कितनी ही संस्थाओं में आज वह पूर्ण रूप में छाये हुए हैं। पर उनकी शैली की ओर निहारने से पता चलता है कि अन्दर से वह कितने टूटे हुए इन्सान हैं किन्तु कितनी सुन्दरता से उन्होंने अपने दुख, दर्द, पीड़ा को अपने में समेट लिया है। उसका ही नमूना आप के सन्मुख उनकी लिखी 'दर्द की छाँव में', 'एक समन्दर प्यासा-सा' से मिलता है। बस एक दर्द जो जग विदित है उनकी अमूल्य निधि विवेक था। उनसे बिछुड़ जाना। शायद जैसे सोना तप कर कुन्दन होता है वैसे ही इस पीड़ा भरी अग्नि से तप कर गोयल साहब निखरे हैं अपनी साहित्य की दुनिया में। आज हर जगह उन्हें मान प्रतिष्ठा सम्मान मिल रहा है। अपनी पीड़ा को भुलाने के लिए ही शायद वह हर क्षेत्र में कूद पड़े हैं। हर संस्था में उनका नाम है।

उनकी लिखी कितनी ही कविताओं व ग़ज़लों में उनकी छवि दर्द से पीड़ित होकर उभरी है। उनकी पीड़ा को वही समझ सकता है जिसने उनकी किताबें पढ़ी हैं। किस अन्दाज़ से उन्होंने कह दिया है-

"अन्दाज़ा लगा पायेगा क्या दर्द का मेरे
तर अश्कों से जिसने मेरा बिस्तर नहीं देखा"

ऐसे ही कितनी कविताओं में उनकी पीड़ा की झलक दिखती है। बस मैं इतना ही कहूँगी। अब वह साहित्य का एक सितारा बन चुके हैं और आशा ही नहीं पूरा विश्वास है कि हमेशा आगे बढ़ते हुए सदा चमकते रहेंगे और उनकी यह लेखनी की गागर कभी रिक्त नहीं होगी। इसी शुभ कामना के साथ।

बालजती बरेली

सुखद भविष्य की कामनाओं के साथ

रणधीर प्रसाद गौड़ "धीर"

श्री रामप्रकाश गोयल बरेली महानगर की ऐसी अज़ीम हस्ती हैं जो किसी परिचय की मोहताज नहीं। मैं गोयल साहब से पूर्व से ही परिचित था परन्तु औपचारिक रूप से मेरा परिचय लगभग 15 वर्ष पूर्व स्त्री सुधार कन्या इंटर कालेज में आयोजित एक कवि गोष्ठी में हुआ। मैंने श्री गोयल को सदा से अत्यधिक व्यस्त पाया क्योंकि यह सांस्कृतिक, सामाजिक, और राजनीतिक हर प्रकार से समाज की सेवा में कार्यरत रहे हैं। यह रंग-मंच से भी काफी अर्से से जुड़े हुए है। इन्होंने नाटकों तथा टेलीफिल्म में अभिनय किया है तथा नाटक भी लिखे हैं। श्री गोयल ने उपन्यास, गीत, कविताएँ, अतुकांत, रचनायें, नज़्म आदि साहित्य की अनेक विधाओं में सृजन किया है। इनकी भाषा शैली साधारण बोलचाल की है जिसमें हिंदी एवं उर्दू को समान स्थान प्राप्त है। जहाँ जिस शब्द की आवश्यकता अनुभव की है उसका प्रयोग किया है जिससे इनकी बात जन जन तक पहुँची है। दूसरे उनकी शायरी इनके मन की आवाज़ है और मन की आवाज़ ही दूसरे के मन को छूने में सक्षम होती है। मेरी दृष्टि में इनकी रचनाओं का भाव पक्ष अत्यंत प्रबल है। समाज की पीड़ा, संवेदना का सफल चित्रण अगर देखना हो तो इनकी रचनाओं में देखा जा सकता है। कहते हैं कि वही आदमी जीवन में सफल होता है जो अपनी बुराइयाँ एवं दूसरों की अच्छाइयाँ देखता है। श्री गोयल की सफलता का यही कारण है जैसा इनके अशआर से जाहिर होता है:-

> उंगलियाँ और पर उठाऊँ क्यों,
> मेरे अपने भी तो फ़साने हैं।
> मौत और ज़िंदगी में फ़र्क़ नहीं,
> जागने सोने के बहाने है।

इनकी कृतियाँ स्वयं बोल रही हैं और नगर, प्रदेश तथा देश में इनको ख्याति दिला रही हैं। इनका मृदुस्वभाव तथा अनुशासन के प्रति जागरूकता हर मानव को अपनी ओर आकर्षित करने में अहम भूमिका निभाती है। श्री गोयल की ज़िंदगी का वह क्षण इनको बुरी

तरह झकझोर गया जब इनके किशोर पुत्र विवेक गोयल को नियति के क्रूर हाथों ने इनसे छीन लिया। यह ऐसा समय था जब य बिल्कुल टूट से गये और इनका ग़म इनकी ग़ज़लों से स्पष्ट झलकने लगा लेकिन स्वयं पर संयम रखते हुए यह सदा दूसरों के लिए मुस्कराये जैसा इनके इस मुक्तक से व्यक्त होता है-

अश्क पीना है, मुस्कराना है,
मुझको अहदे वफ़ा निभाना है।
ज़िंदगी से कहो ठहर जाये,
मौत को आईना दिखाना है।

इनकी 75 वीं वर्षगाँठ पर अभिनंदन ग्रंथ के प्रकाशन की सूचना सुनकर मुझे असीम प्रसन्नता हुई। मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ सदैव उनके साथ हैं। साथ ही मैं यह भी कामना करता हूँ कि साहित्य के आकाश में अनवरत रूप से अग्रसर होते रहें, शतायु हों और भविष्य में अपनी श्रेष्ठ कृतियों से समाज का मार्गदर्शन करते रहें। इनका स्नेह तथा आशीर्वाद हम लोगों को इसी प्रकार प्राप्त होता रहे जैसा आज तक होता रहा है। मैं निम्न पंक्तियों के माध्यम से इनके अभिनंदन के शुभ अवसर पर बधाई देना चाहता हूँ।

राम प्रकाश से आलोकित अब जन जन है।
मध्य में मन के खिला हुआ सा उपवन है।
प्रखर ज्योति में तपा हुआ यह कुंदन है।
काल चक्र न तोड़ सका वह दर्पन है।
शशि, रवि के प्रकाश से आलोकित लगता,
गोया कि हर गीत में प्रभु का दर्शन है।
यहाँ वहाँ हर जगह महक इसकी फैली,
लगा हुआ मस्तक पर ऐसा चंदन है।
कोई कोमल कली आज तो फूल बनी,
बनी फूल महकाया हर घर आँगन है।
धारण करके "धीर" मुदित हो पुलकित हो,
ईश कृपा से वंदन का अभिनंदन है।

448, साहूकारा
बरेली

बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी आर0पी0 गोयल

(दैनिक जागरण, बरेली में प्रकाशित 'शख्शियत' दिनांक 29-2-99)

तमाम खूबियों से भरे बरेली के 74 वर्षीय वकील राम प्रकाश गोयल ने कानूनविद, रंगकर्मी और कवि व शायर के रूप में अपनी विशिष्ठ पहचान बनायी है। 30 जून 1925 को शहर के आलमगिरी गंज में एक मध्यमवर्गीय परिवार में जन्मे श्री गोयल अपनी जीवंतता के लिए जाने जाते हैं। उम्र और बाईपास सर्जरी ने सावधानी बरतने को भले ही मजबूर किया हो पर उनकी सक्रियता और मनश्चेतना को प्रभावित नहीं कर पायी है। संक्षेप में उनकी जीवन यात्रा इस प्रकार है। बरेली कालेज, बरेली से स्नातक करने के बाद राजस्थान में आर आर.एस के पाँच वर्षों तक प्रचारक रहे। वहीं 1951 में राजस्थान विश्वविद्यालय से कानून की डिग्री हासिल कर लौटे तो बरेली में जनसंघ के जिला मंत्री बनाये गये। इसी दौरान बरेली की ही सरला गोयल से उनकी शादी हो गयी। चार पुत्रियों के बाद जन्मे पुत्र विवेक गोयल का 16 वर्ष की उम्र में असमय ही निधन हो जाने से श्री गोयल पूरी तरह से टूट गये। मन के मनोभावों को वह कागज पर उतारने लगे और कवि बन गये। पुत्र की याद में श्री गोयल ने 1990 में उसकी स्मृति में 'विवेक गोयल साहित्य पुरस्कार' शुरू किया जो प्रत्येक वर्ष एक साहित्यकार को दिया जाता है। विभिन्न संस्थाओं द्वारा अनेक पुरस्कारों से नवाजे जा चुके श्री गोयल अब तक दो गजल संग्रह ''दर्द की छाँव में', 'रिसते घाव', व एक उपन्यास 'टूटते सत्य' लिख चुके हैं। इसके अतिरिक्त प्रेमी-प्रेमिकाओं के पत्रों पर आधारित उनके 'सच्चे प्रेम पत्र' को डायमंड पाकेट बुक्स ने प्रकाशित किया है। गजलों का एक कैसेट 'आईना' भी मार्केट में आया है जिसे टी सीरीज ने निकाला है। अब तक उनकी चार टेलीफिल्में एहसास, यथार्थ, बहूरानी व आज का सच दूरदर्शन द्वारा प्रसारित की जा चुकी हैं। 1969 से बरेली कालेज में उन्होंने 17 वर्ष तक छात्रों को कानून पढ़ाया। स्वभाव से स्वाभिमानी, न्यायप्रिय व खुद्दार श्री गोयल गीता के दर्शन 'कर्म करो, फल की इच्छा मत करो' में पूर्ण विश्वास करते हैं। अन्याय बर्दाश्त नहीं, इसलिए वकील होते हुए भी विभिन्न लोगों के खिलाफ अपने 20 मुकदमे दायर करने पड़े हैं। पुत्र विवेक की याद उन्हें हमेशा सताती है। दुख सहन नहीं होता फिर भी होंठों पर मुस्कान लेकर कहते हैं - मेरी किस्मत में दिन नहीं शायद, रात के बाद रात आयी है।

बालजती कन्या इण्टर कालेज, बरेली में "विवेक गोयल कक्ष" का शिलान्यास

,43 वें गणतन्त्र दिवस पर बालजती कन्या इण्टर कालेज, पुराना शहर, बरेली के प्रांगण में राष्ट्रीय ध्वजारोहण कार्यक्रम बड़ी धूमधाम से मनाया गया। इस कार्यक्रम के साथ ही बरेली के सुप्रसिद्ध साहित्यकार कवि एवं लेखक तथा निवर्तमान बरेली कालेज के विधि के प्रोफ़ेसर, वर्तमान में सीनियर अधिवक्ता, जनप्रिय एवं लोकप्रिय समाज सेवी माननीय श्री राम प्रकाश गोयल ने अपने एक मात्र पुत्र स्वर्गीय विवेक गोयल की स्मृति में एक विवेक गोयल कक्ष का शिलान्यास माननीय श्री राजकुमार अग्रवाल, नगर प्रमुख के कर कमलों द्वारा किया गया। श्री गोयल की पत्नी श्रीमती सरला गोयल भी इस अवसर पर उपस्थित थीं। श्री गोयल ने अपने भाषण में कहा कि वह इस कालेज को डिग्री कॉलेज के स्तर पर पहुँचाना चाहते हैं। प्रबंधक डॉ० एन० एल० श्रीवास्तव ने कहा कि धन का सबसे अच्छा उपयोग विद्या दान है। नगर प्रमुख श्री राजकुमार अग्रवाल ने श्री गोयल द्वारा अपने पुत्र की स्मृति में कक्ष बनाने के लिये उन्हें हृदय से बधाई दी।

इस अवसर पर बरेली कॉलेज के पूर्व हिन्दी विभागाध्यक्ष डॉ० ज्योति स्वरूप ने भी अपने विचार व्यक्त किये और विद्यालय की प्रगति की कामना की।

संचालन डॉ० एन० एल० श्रीवास्तव ने किया। आभार प्रिंसिपल डॉ० नजमा बेगम ने व्यक्त किया।

('जीवन उत्सर्ग', बरेली में 26-1-92 को प्रकाशित)

प्रो0 राम प्रकाश गोयल : एक भावुक कवि

डॉ0 किश्वर सुल्ताना

श्री रामप्रकाश गोयल व्यवसाय से एडवोकेट हैं परन्तु रचनात्मक दृष्टि से एक कवि हैं। कचहरी में उन्हें समाज की अच्छाई और बुराई दोनों ही अच्छी तरह देखने को मिल जाती हैं। शायद इसी झूट और सच के संसार में रहने के बाद उनके अंदर का एहसास जाग उठा और काव्य रूप में उसने अभिव्यक्ति पायी। अदालतों में कोई किसी का मित्र नहीं होता, बरसों के दोस्त एक दूसरे की दुश्मनी में खुद को साहूकार साबित करने की कोशिश करते हैं। आज के प्रगति शील युग में हम समाज के इस नासूर को बढ़ता हुआ अधिक देख रहे हैं। शायद यही कारण है कि गोयल जी की कविताओं में 'दोस्त' और युग सत्य' सबसे अधिक उभर कर आया है : –

दोस्ती कैद अब किताबों में
आज के दौर का प्रभाव है।

उनकी एक कविता का शीर्षक है:
'दोस्त इस दौर में दुश्मन से भी बदतर क्यों है' उसमें कहते हैं:

मैं परेशान हूँ आता न समझ में मेरी,
जख्म हर पीठ पे हर हाथ में पत्थर क्यों है।

उक्त पंक्तियों में 'क्यों है' की रदीफ़ कायम करके भावुक कवि समाज के रखवालों से यह जानना चाहता है कि इस प्रगति के युग में जबकि हम नवीन सहस्त्राब्दि में शीघ्र ही प्रवेश करने वाले हैं अखलाक़ में गिरावट क्यों आ रही है। इसलिए कि जब दोस्त सामने होते हैं तो दोस्ती का दम भरते हैं और पीठ मोड़ते ही बुराई शुरू कर देते हैं। समाज के हर व्यक्ति के हाथ में एक ऐसा पत्थर क्यों है जो पीठ को जख्मी करता है? उनका भावुक मन 'रिसते घाव' में थोड़े से अंतर के साथ इसी बात को इस प्रकार कहता है :

हर तरफ़ एक अजब तमाशा है
आदमी आज खूँ का प्यासा है।

उत्प्रेक्षा के स्तर पर कवि श्री रामप्रकाश गोयल ने समन्दर श
का प्रयोग जिस प्रकार और जिस अर्थ में किया है यह उनका ।
हिस्सा है :-

पी गया कितनी नदियाँ अब तक एक समन्दर प्यासा-सा
मीठा पानी पीकर इतना क्यों है अब तक खारा सा।

इस शेर को राजनीतिक पृष्ठभूमि में देखें तो कैसे कैसे उच्चकोटि के कवि, दार्शनिक और महान व्यक्ति अपने हृदय की कोमलता और मीठे व्यवहार को लेकर राजनीति की धारा में दाख़िल हुए पर उस समन्दर को मीठा नहीं कर पाए और मिठास सागर जैसे खारे पानी में जाकर लुप्त हो गई।

श्री रामप्रकाश गोयल की शायरी पर ग़ज़ल का प्रभाव अधिक है। उसकी आधारभूत बातों में एक यह भी है कि इसके हर शेर का मज़मून अलग होता है। शायद इसीलिए इसी कविता में कहते हैं :

सागर तो सारा ही खारा, एक बूँद भी मीठी नहीं,
बरसाता पर मीठा पानी, दाता है वह न्यारा सा।

मेरे सामने कवि रामप्रकाश गोयल के दो काव्य संग्रह 'रिसते घाव' और 'एक समन्दर प्यासा सा' है। इन दोनों काव्य संग्रहों को पढ़कर यह निष्कर्ष निकलता है कि यह भले ही देवनागरी लिपि में लिखी गई कविताएँ हों परन्तु पढ़ने के बाद यह उर्दू की ग़ज़लियात लगती हैं। बहरें, मज़ामीन और इन कविताओं का मिजाज उर्दू ग़ज़ल में रचा बसा हुआ है। कुछ उदाहरण दृष्टव्य हैं :

मुझको ले आयी कहाँ बेताबियाँ,
बढ़ गयीं कुछ और भी वीरानियाँ।
जब भी तेरे क़रीब होता हूँ,
अपने होशो हवास खोता हूँ।
लेके गुल से शराब आये हैं,
तुझको देने शबाब आये हैं।

उनकी कविताओं में उर्दू के ही नहीं फ़ारसी और अरबी के शब्द तकल्लुफ़ इस्तेमाल हुए हैं। उर्दू और हिंदी का आधार खड़ी बोली पर । इस प्रकार यह दोनों भाषाएँ सगी बहनें हैं। परिस्थिति वश इनके नों रूप बदलते रहे हैं। एक समय ऐसा भी आया कि हिंदी कवियों

ने अपने काव्य फ़ारसी उर्दू लिपि में लिखे। रामपुर रज़ा लाइब्रेरी में अनेक ऐसी पांडुलिपियाँ मौजूद हैं। गोयल साहब की कविताओं ने इस प्रकार हिंदी और उर्दू के फ़ासले को कम किया है।

कवि यह भी चाहता है कि देश में रामराज्य स्थापित हो। जो लोग धर्म के नाम पर दंगा-फ़साद करवाते हैं कवि उनके विरुद्ध है

लड़वाया इंसानों को है, मंदिर मस्जिद वालों ने,
आग लगाई है हर दिल में, उनकी गंदी चालों ने,
बन पायें हम सच्चे मानव, ऐसी ज्योति जगाना है।

अभी तक गोयल जी के जिन अशआर पर मैंने बात की उन शेरों में उनके एहसास की हल्की हल्की आँच महसूस होती है जो नम्र लहजे में दोस्तों का शिकवा करती हुई इंसानियत को तलाश करती है। बात प्रसंग से हटती है। एक दार्शनिक 'जान कलबी' था जो दिन में लालटेन लेकर घूमा करता था। जब कभी उसे कोई मनुष्य दिखता, वह अपने लालटेन वाले हाथ को उपर उठाकर मनुष्य के चेहरे को गौर से देखता और जब लोग उससे पूछते कि क्या तलाश कर रहे हो तो वह उत्तर देता 'इंसान को'। वास्तव में मनुष्य रूपी इंसान तो सभी थे लेकिन उसे उस जैसे इंसान की तलाश थी जैसा कि वह स्वयं था। गोयल जी को भी ऐसे इंसानों की तलाश है जो धर्म के नाम पर इसानों को लड़वाते न हों और दूसरों की पीठ पर पत्थर न मारते हों। उन्होंने अपनी नयी कविता 'जिंदगी-एक कैलेंडर' में भी इसी बात को अभिव्यक्त किया है। उनका कहना है कि विज्ञान और समाज की प्रगति ने इंसान को जंगलीपन और बनावटीपन के नज़दीक किया है मगर 'जंगलीपन को और ज़्यादा जंगली बनाया है।'

गोयल जी ने आधुनिक और प्राचीन दोनों ढंग से कविता की है। डूबते और बिखरे समाज के लिए उनके मनोभाव काव्य के रूप में अवतरित हुए हैं और यही उनकी कविता का महत्वपूर्ण रचनात्मक पहलू है।

रीडर, हिन्दी विभाग
रा0उ0स्ना0 महा0वि0
रामपुर

मेरे पापा - एक अनूठा व्यक्तित्व

पद्‌मिनी अग्रवाल

75 वें जन्म दिन के उपलक्ष्य में उनको दिया जाने वाला अभिनन्दन ग्रन्थ का तोहफा एक नायाब तोहफा है। मेरे एवं मेरे परिवार की तरफ़ से उन्हें बहुत-बहुत बधाई।

अनेक वर्ष उनकी छत्र छाया में रहकर मैंने उनमें बहुत सी खूबियाँ देखी हैं। वह साहित्य-प्रेमी, कला-प्रेमी एवं संगीत प्रेमी हैं। यह एक ऐसी विधा है जो मनुष्य को आत्मिक शान्ति तो अवश्य ही प्रदान करती है किन्तु इसकी प्यास को निरन्तर बनाये रखती है। व्यक्ति हमेशा ही कुछ विशेष पाने को व्याकुल रहता है और यही प्यास, तड़प मैंने पापा में देखी है जो उनको आगे बढ़ने की प्रेरणा देती है।

कला प्रेमी होने के नाते आपने कभी भी मुझे कला सम्बन्धी ज्ञान प्राप्त करने से नहीं रोका अपितु सदैव प्रोत्साहन ही दिया। मुझे अच्छी तरह याद है कि मुझे कालेज में सांस्कृतिक कार्यक्रमों में भाग लेने पर घर आकर अवश्य ही पुरस्कार देते थे।

साहित्यकार होने के कारण आपकी शब्द शक्ति बहुत ओजपूर्ण है जो आपकी लेखन् कला को विकसित करने में बहुत सहायक रही है। निरन्तर अध्ययन रत रहना आपकी खूबी है क्योंकि समझा जाता है कि ज्ञान एक ऐसा कोष है जो कभी भरता नहीं है। जहाँ व्यक्ति इससे संतुष्ट हुआ, समझिये उसकी कला का अन्त हो गया।

अपने विचारों की अभिव्यक्ति के अनेक माध्यम हैं और सभी का आपस में अटूट सम्बन्ध है और इनसे पापा भी अछूते नहीं रहे हैं। लेखन, संगीत एवं अभिनय तीनों ही विधाओं ने आपके व्यक्तित्व को निखारा है। टी0वी0 सीरियल 'आज का सच' में आपके जज और प्रिंसिपल के अभिनय को भुलाया नहीं जा सकता।

आपका ताज़ातरीन गीत, ग़ज़ल संग्रह 'एक समन्दर प्यासा-सा' में अनेक गीत हृदयस्पर्शी हैं जो पाठक को कुछ सोचने के लिए, कुछ लिखने के लिए, उसको अन्दर तक झिंझोड़ देते हैं। उसे जितना पढ़ते जायें उतनी ही पाठक के मानस पटल पर गहरी छाप छोड़ती चली जाती है, यही कवि की सबसे बड़ी सफलता है।

ईश्वर से प्रार्थना है कि पापा की क़लम अबाध गति से चलती रहे।

हल्द्वानी

प्रो० राम प्रकाश गोयल : साहित्य के आईने में

वीना शर्मा

श्री राम प्रकाश गोयल एक ऐसे साहित्यकार हैं जिन्होंने साहित्य लेखन की हर विधा पर अपनी लेखनी का बेझिझक प्रयोग किया है। साहित्यकार जैसा समाज में देखता, सुनता व सोचता है उसे अपनी रचना के माध्यम से जन-साधारण तक पहुँचाने का प्रयास करता है।

गोयल साहब ने चाहे अपनी बात को उपन्यास अथवा नाटक, गीत, गज़ल, अतुकान्त अथवा क्षणिका के रूप में ही क्यों न कहा हो लेकिन वे कहीं न कहीं आम आदमी को छूकर गुजरती हुई लगती हैं। ऐसा लगता है जैसे श्री राम प्रकाश गोयल अपनी बात न कहकर जन-साधारण की बात को रचना के माध्यम से व्यक्त कर रहे हैं।

मैंने उनके उपन्यास में त्रिकोण प्रेम की जो कथा वस्तु व प्रस्तुति देखी, वह श्री राम प्रकाश गोयल जैसे साहित्यकार ही व्यक्त कर सकते हैं। गीत, गज़लों, अतुकान्त व क्षणिकाओं में गोयल साहब का कथा व भाव पक्ष दोनों पर समान अधिकार है। हर विधा पर अपनी भाव अभिव्यक्ति के लिये गोयल साहब ने साहित्य जगत में नये आयाम स्थापित किये हैं। गोयल साहब की गज़लों का कैसिट "आईना" सुनते ही बन पड़ता है। गोयल साहब की गज़लों का चयन भी सराहनीय है। कुल मिलाकर गोयल साहब का अक्स साहित्य के आईने में उभरता रहेगा। मैं गोयल साहब को इतना ही कहना चाहूँगी कि –

गोयल तेरी रचनाओं में, सत्य उजागर होता है।
मिटा अँधेरा जग चमकादे, वही दिवाकर होता है।

विशेष न्यायिक मजिस्ट्रेट
बरेली

साहित्य साधक प्रो0 राम प्रकाश गोयल के प्रति

डॉ0 महाश्वेता चतुर्वेदी

जो करता प्रतिभा का वन्दन,
उस ''गोयल'' का है अभिनन्दन।
''दर्दों की छाँव'' बैठ करके,
दर्दों को जिसने बिसराया।
पाये जब ''रिसते घाव'' वहाँ
गीतों का मरहम मल पाया।
''टूटते सत्य'' को देख किया
जिसने सच का है आराधन। (उस गोयल का है . . . .)

लिख डाले 'सच्चे प्रेम पत्र'
जब नहीं प्रेम सच्चा पाया।
दुर्भावों को सद्भाव दिये,
निष्ठुर जग जिससे सकुचाया।
मधुमास बसा कर अपने मन
पतझर को देता नन्दन वन। (उस गोयल का है . . . .)

लिख 'एक समन्दर प्यासा-सा'
साहित्यिक प्यास बढ़ाई है।
चिन्तन के नव सोपानों पर
जिज्ञासा नित्य चढ़ाई है।
कर्मों का अर्घ्य चढ़ा करके
जीवन का करता अभिवादन। (उस गोयल का है . . . .)

उस धन कुबेर से लेना क्या
जो बन्द बोतलों-सा सीमित,
है लक्ष्य नहीं जिसका कोई
वैभव है ऐसा अभिशापित।
अनगिन हों भले विसंगतियाँ
घिस घिस कर चन्दन (उस गोयल का है

कुछ जलधर भी ऐसे होते
सन्ताप न वसुधा का हरते।
कहने भरके हैं जो केवल
क्यों सागर से जल को भरते.
निज फूल निरन्तर बरसा कर
क्यों हर सिंगार न हैं उन्मन। (उस गोयल का है . . . .)

वरिष्ठ प्रवक्ता एवं शोध निदेशिका हिन्दी
आर.पी.पी. जी. कालेज,मीरगंज (बरेली)

कवि–वर प्रो0 राम प्रकाश गोयल के श्री–चरणों में सादर

वीरेन्द्र प्रकाश गुप्त 'अंशुमाली'

प्रभु मोद–प्रमोद–विनोद भरें,
नित, मोदक, धान रहे भरता।
कवि, काव्य–कला–निधि कान्ति करें।
मकरन्द, सुवास रहे झरता।
यह 'राम प्रकाश', मयूर बना,
उतरे अंगना पग को धरता।
सुख 'अंशु' समीप सदैव बसै,
दुख दूर छिपे डरता डरता।

ऋतुएँ अगवानी तुम्हारी करें,
पथ–पाँवड़े, फूल बिछाते मिलें।
जिस राह चलो, अवरोध हटें,
अभिवादन द्वार सजाते मिलें।
हर ओर सुहानी बहार मिले,
तरु–पादप गन्ध लुटाते मिलें।
घर आँगन सौख्य–बसेरा बने,
सुख आते मिलें, दुख जाते मिलें।

554/ख/113, अंशु आवास,
विशेश्वरनगर, आलमबाग, लखनऊ – 226 005

मिलनसार व्यक्तित्व : श्री राम प्रकाश गोयल

महेश चन्द्र शर्मा

श्री राम प्रकाश गोयल को मैंने अति निकट से देखा है। श्री गोयल अति सहृदय, मिलनसार एवं हँसमुख व्यक्तित्व के धनी कुशल अधिवक्ता के अतिरिक्त कवि हृदय, उत्कल्पना शील तथा सरल स्वभाव के प्रबुद्ध नागरिक हैं। सामाजिकता की स्थिति यह है कि प्रत्येक सम्मेलन, कविगोष्ठी, आयोजन विचार गोष्ठी तथा सामाजिक समारोह में प्रसन्नता से सभी के साथ हाथ मिलाते हुए कुशल क्षेम पूछते श्री गोयल को देखा जा सकता है। यदि कहीं न पहुँच पाएँ तो क्षमा याचना करते हुए, आयोजक बुलाना भूल जाय तो आत्मीयता के साथ मुस्कराते हुए गिला-शिकवा करना श्री गोयल की स्वभावगत विशेषता है।

ऐसा निश्चल, निश्च्छल एवं सामाजिकता पूर्ण मिलनसार व्यक्तित्व आज के समय में कम दिखाई पड़ता है। अस्वस्थ्य होने पर भी दूरभाष से सम्पर्क रखना तथा सबसे मिलने की लालसा तथा कुशलक्षेम जानने की इच्छा रखने वाले व्यक्ति अब विरले ही हैं।

हृदय में एक 'टीस' होने पर भी सहृदय बने रहना, संयम रखकर मधुर स्मृति में सृजन की ओर अग्रसर रहना श्री गोयल की अपनी विशेषता रही है।

श्री गोयल तन, मन, मस्तिष्क से स्वस्थ रहते हुए नवसृजन में लगे रहें तथा अपने रचनात्मक दृष्टिकोण से समाज को गौरवान्वित करते रहें, यह मंगलकामना रहेगी।

प्रधानाचार्य
श्री गुलाब राय इण्टर कॉलेज,
एवं
जिला कमिश्नर (स्काउट) बरेली

प्रो0 राम प्रकाश गोयल : मेरे गुरु

तुषार चन्द्रा एडवोकेट

मुझे सौभाग्य प्राप्त हुआ है कि मैं अपने गुरु प्रो0 राम प्रकाश गोयल एडवोकेट के विषय में कुछ कहूँ क्योंकि किसी शिष्य का इससे बड़ा सौभाग्य यही हो सकता कि उससे उसके गुरुवर के विषय में कुछ कहने को कहा जाये।

मेरा आदरणीय श्री राम प्रकाश गोयल का प्रथम परिचय तब हुआ जब मैंने विधि स्नातक के पाठ्यक्रम में प्रथम वर्ष में बरेली कालेज महाविद्यालय में प्रवेश किया एवं गुरु के रूप में दक्षता और विद्वता के साथ उन्होंने विधि के पाठ्यक्रम को हमें पढ़ाया। इस पाठ्यक्रम के नितान्त नीरस विषय को भी श्री गोयल ने अति सुन्दर ढ्ग से सजीव व रसपूर्ण बनाकर हम लोगों के सामने प्रस्तुत किया जो प्रत्येक प्रकार से न भूलने योग्य तथा अतुलनीय है।

मुझे यह सौभाग्य प्राप्त हुआ है कि विवेक गोयल साहित्य पुरस्कार समिति बरेली के सदस्य के रूप में उनके साथ कुछ काम करने व कुछ सीखने एवं उनके विविधता पूर्ण बहुआयामी व्यक्तित्व का सामीप्य व स्नेह प्राप्त करूँ। इसके अतिरिक्त एवं कलाकार के रूप में एक गज़लकार के रूप में भी मैंने उनको बहुत निकट से देखा व समझने का प्रयास किया। अन्य सांस्कृतिक संस्थाओं जैसे नृत्य, नाट्य संगम बरेली, जिला कल्चरल एसोसियेशन, जिला समारोह समिति, बरेली कला मंच और ऐतिहासिक व सामाजिक संस्था जैसे पाचाल इतिहास परिषद् व अन्य एवं विधिक संस्थायें बरेली बार एसोसियेशन व पब्लिक लीगल विंग जैसी संस्थाओं में भी मुझे उनका आशीर्वाद प्राप्त हुआ एवं होता रहता है। मैंने अपने जीवन में श्री गोयल जी से बहुत सीखा है।

ऐसे महान बहुआयामी व्यक्तित्व को शत्-शत् प्रणाम करते हुये उनके विषय में किसी शायर की दो पंक्तियों से ही अपने आदर भाव व्यक्त कर रहा हूँ।

हजारों साल नरगिस अपनी बेनूरी पे रोती है
बड़ी मुश्किल से होता है चमन में दीदावर पैदा।

राष्ट्रपति पदक विजेता
कृष्णाकुटी 52, सिविल लाइन्स, बरेली

अकथनीय व्यक्तित्व - मेरे पापा

राग़िनी अग्रवाल

मेरे जीवन के आज के यह पल उस समय अविस्मरणीय स्वर्णिम पल में परिणात हो गए जब मैं अपने पापा की 75 वीं वर्षगाँठ के उपलक्ष्य में उनके व्यक्तित्व पर कुछ कहने बैठी। इस समय एक अजीब रोमांच अपने अन्दर महसूस कर रही हूँ। लिखने के लिए कलम तो उठा लिया पर मैं उन शब्दों को खोज रही हूँ जो मेरी भावनाओं को व्यक्त कर सकें। लेकिन इस असफलता में भी मुझे खुशी का एहसास हो रहा है क्योंकि माता-पिता के प्रति बच्चों के अनुभव शब्दहीन होते हैं। उन एहसासों के आगे शब्द बौने बन जाते हैं पर फिर भी इन खुशी के लम्हों को शब्दों की माला में गूँथना चाहती हूँ।

बच्चे की प्रथम पाठशाला उसके माता-पिता ही होते हैं। बीज जैसा बोया जाएगा, बृक्ष उसी तरह का फल, फूल देगा। मैं भाग्यशाली हूँ कि कितने योग्य माँ-बाप की मैं बेटी हूँ। उनके वात्सल्य पूर्ण वृक्ष की छाँव के तले कब बड़ी हो गयी, पता ही नहीं चला। उस बड़ेपन का एहसास तब हुआ जब उन्होंने अपने हार्दिक आशीर्वाद के साथ डोली में बैठाकर विदा किया। बचपन से लेकर अभी तक कोई ऐसी इच्छा नहीं होगी जो उन्होंने पूरी न की हो।

मैं अपने पापा के विषय में और क्या लिखूँ ? भगवान ने उन्हें कौन सा गुण नहीं दिया। एक अच्छे पिता के साथ-साथ वह एक सफल वकील, साहित्यकार, गीतकार एवं नाटककार भी हैं। उनमें एक गुण यह भी है कि वह अपने को हमेशा व्यस्त रखते हैं, न स्वय खाली बैठते हैं और न दूसरों को बैठा देख सकते हैं। यही कारण है कि उन्होंने इन्हीं गुणों को अपने बच्चों में देखना चाहा। इसी चाह के कारण उन्होंने हमेशा हमें हर क्षेत्र में बढ़ने के लिए प्रोत्साहित किया, चाहे उसके लिए उन्हें कितनी परेशानियों का सामना करना पड़ा हो। पापा ने कभी यह नहीं कहा कि तुम लड़की हो यह काम तुम नहीं

करो। इतने प्यार-दुलार के साथ-साथ हमारी गल्तियों को भी नजर-अन्दाज किया। जहाँ भी हमारी गलती देखी वहाँ प्यार के साथ डाँटा भी जिससे दुबारा वह गलती न हो। हमारे अन्दर इतने शौक पैदा कर दिए कि भविष्य में हम 'बोर' शब्द का प्रयोग न कर सकें। इसके लिए मैं हमेशा ही उनकी ऋणी रहूँगी।

मेरे पापा नियमों के प्रति जितने कठोर हैं, हृदय से उतने ही दयालु भी हैं। इन्हीं गुणों के कारण समाज में उनका नाम बड़े फ़ख्र और गर्व से लिया जाता है। किसी भी ऐसे व्यक्ति की जो परेशानी में घिरा हो स्वतः ही अपनी सामर्थ्य अनुसार मदद करते हैं।

आज मैंने अपने पापा के असीमित व्यक्तित्व को शब्दों में सीमित करने की कोशिश की है। ऐसी कोशिश में जिन शब्दों ने मेरा साथ दिया उनकी मैं एहसानमन्द हूँ।

मुझे अपने पापा को 'अपना पापा' कहने में गर्व है और प्रभु से प्रार्थना करती हूँ कि धरती पर जब भी मानस देह रूप में आऊँ तो हर जन्म में इन्हीं की बेटी या बेटा बन कर आऊँ।

ऐसे हैं मेरे पापा।

जम्मू

श्री राम प्रकाश गोयल शतायु हों !

डॉ0 मुरारी लाल सारस्वत

रात दिन हिन्दी की ही सेवा में रहे हैं लीन,
भरते रहे हैं भारती के भंडार को।
मन से निकल काव्य सरिता प्रवाहमान,
अक्षुण्य रखेगी तब नाम और विचार को।
प्रकाशित करें आप निशिदिन वसुधा को,
पाते रहें सदा हम आपके दुलार को।
कामना सदा ही रही सतपथ चलने की,
मूर्तरूप दे दिया है अन्तर के प्यार को।
शमन किया है दुर्भावनाओं का ही सदा,
सच्चा मार्ग हमको आपने दिखाया है।
गोता ज्ञान सागर में खाते रहे हैं आप,
अभिनव रूप काव्य कृतियों ने पाया है।
यह हीरक जयन्ती वर्ष आनन्द प्रदाता बने,
गाते रहें गान जैसा अब तक गाया है।
लखकर दूसरों की वेदना द्रवित हुए,
देकर सहानुभूति कष्ट को मिटाया है।
शत-शत वर्ष तक प्रकाशित करती रहे,
ज्योति जो नवीन आज आपने जलाई है।
ताप भारती का हर लिया सेवाभाव से है,
बरेली नगर की कीर्ति ध्वजा फहराई है।
युग परिवर्तन कृतित्व से किया है और,
व्यक्तित्व प्रभावशाली दे रहा दिखाई है।
हों-होवें चिरजीवी यश सुरभि सदा ही फैले
बार-बार आपको हमारी ये बधाई है।

वरिष्ठ वैज्ञानिक
एम-2, वृन्दावन कॉलोनी, आई0वी0आर0ई0 रोड,
इज़्ज़तनगर, बरेली

प्रो0 रामप्रकाश गोयल : एक कर्मनिष्ठ व्यक्तित्व

डॉ0 अतुल कुमार सिन्हा

1985 के जुलाई माह में रुहेलखण्ड विश्वविद्यालय में प्राचीन इतिहास के प्रवक्ता पद पर मेरी नियुक्ति के बाद बरेली शहर का मिज़ाज जानने के अभिप्राय से कुछ लोगों से मुलाकातें हुईं और शहर की साहित्यिक, सांस्कृतिक गतिविधियों का ज़िक्र चला तो अकसर श्री राम प्रकाश गोयल का नाम सुनने को मिलता। अखबारों में भी दूसरे-तीसरे दिन उनका नाम पढ़ने को मिलता। किसी न किसी बहाने से कभी काव्यपाठ के सम्बन्ध में तो कभी किसी सभा में भाषण देने के लिये, तो कभी किसी और सन्दर्भ में। अमूमन ये सन्दर्भ साहित्यिक अथवा सांस्कृतिक गतिविधियों से जुड़े होते थे। बहुत इच्छा होने पर भी गोयल साहब से मैं मुलाकात नहीं कर सका। पांचाल इतिहास परिषद की कुछ बैठकों में निश्चय हुआ कि शहर में किसी समय काफ़ी प्रचलित रही 'सैटरडे क्लब' की तर्ज़ पर कोई ऐसा फ़ोरम बनाया जाये जिसमें समय-समय पर (महीने में कम से कम दो बार) एक होकर समसामयिक तथा ज्वलन्त मुद्दों पर विचार विमर्श करें और इस प्रकार ''वैचारिकी'' की शुरुआत हुई जिसमें (स्व0) निरंकार देव सेवक, स्व0 रमेश चन्द्र रावत, श्री एम0एस0 सक्सेना, प्रो0 उदय प्रकाश अरोड़ा, श्री आर0के0 सक्सेना, डॉ0 ओम प्रकाश शर्मा, डॉ0 दिवाकर उपाध्याय, डॉ0 वीरेन डंगवाल, डॉ0 अभय कुमार सिंह तथा मैं अवश्य उपस्थित होते थे। कभी-कभी अन्य लोग भी आ जाते थे। अकसर विचार व्यक्त करते समय हम सब मूल मुद्दे से इधर-उधर हो जाते थे, तब बीच में से एक प्रभावशाली व्यक्ति अपनी बात कहने के लिए उठता और शुरू ही यह कहते हुए करता ''देखिये विचार का मुद्दा अमुक है। इसकी अवधारणा का ध्यान रखे बिना हम लोग इधर-उधर की बातों में उलझ रहे हैं।'' किसी से पूछा ये सज्जन कौन हैं तो जवाब मिला शहर के वरिष्ठ वकील और कानून के अध्यापक, कवि, कलाकार और जाने क्या-क्या श्री रामप्रकाश गोयल। इस प्रकार गोयल साहब से मुलाक़ात हुई और इसके बाद तो मुलाक़ातों पे मुलाकातें और धीरे-धीरे गोयल साहब से घनिष्ठता क़ायम हो गयी और वह अब तक क़ायम है। इस बीच उनके कवि व्यक्तित्व का परिचय मिला। उनके मुँह से उनकी ग़ज़लें और कवितायें सुनते हुए और

महफ़िलों में उनके शेरों पर दाद देते हुए। 'दर्द की छाँव में', औ 'रिसते घाव' के बाद 'एक समन्दर प्यासा-सा' में तो गोयल साहब ने अपना 'आईना' ही सामने रख दिया। 'सच्चे प्रेम-पत्र' तो गोयल साहब की प्रेमानुभूतियों (चाहे दूसरों के बहाने से ही सही) की मार्मिक अभिव्यक्ति है। उनकी अभिनय-कला का परिचय दूरदर्शन पर मिला। समझ में नहीं आता कि इस व्यक्ति के व्यक्तित्व के आयाम कितने हैं? कोई एक शब्द इस व्यक्तित्व का पर्याय हो सकता है तो शायद वह शब्द 'कलाकार' होगा लेकिन कलाकार तो बिखरा-बिखरा-सा होता है और गोयल साहब तो बड़े व्यवस्थित व्यक्तित्व वाले आदमी हैं। शायद वो मानते है कि 'लाज़िम है दिल के पास रहे पासबाने-अक़्ल' पर आगे यह भी है कि 'लेकिन कभी-कभी उसे तनहा भी छोड़ दें।'

पचहत्तर के होने को आये और दिल की बाईपास सर्जरी से गुज़रे हुए गोयल साहब इतने क्रियाशील और ज़िन्दादिल हैं कि लगता नहीं कि 'सठियाने' वाली बात सही होती है। अगर होती भी है तो गोयल साहब अपवाद हैं। अभी कुछ दिन पहले टी0वी0 पर उनका इन्टरव्यू देखा। बड़े सहज ढंग से अपनी दिनचर्या बताते हुए जब अपने जीवन-दर्शन पर आये तो इस व्यक्तित्व के दो मूल-मंत्र तुरन्त समझ में आए। एक तो व्यवस्थित दिनचर्या और कर्मनिष्ठ-प्रवृत्ति तथा दूसरी कभी किसी को नुक़सान पहुँचाने के बारे में सोचना भी नहीं। यही तो सार्थकता और सकारात्मकता है मानव-व्यक्तित्व की। फिर वह कुछ भी पूजा-पाठ, व्रत-उपवास करे न करे, धर्मपालन स्वतः होता रहेगा। मनुष्य और मनुष्यता गोयल साहब के जीवन-दर्शन के केन्द्रीय तत्व हैं और 'परहित' सबसे बड़ा स्वार्थ और यही स्वार्थ उन्हें संचालित और संचरित करता रहता है यहाँ से वहाँ और कहाँ से कहाँ। 'आदमी ख़ुद ख़ुदा का साया है' लिखने वाले गोयल साहब क्या कहते हैं, सुनिये तो -

अब तो बाक़ी यही तमन्ना है
काम आऊँ दुखी की आहों में।

और

इससे बढ़कर भलाई कुछ भी नहीं
जो मिले उसको ही हँसाना है।
दीन-दुखियों के काम आऊँ मैं
अपनी यूँ ज़िन्दगी बिताना है।

"एक समन्दर प्यासा सा" - कवि के व्यक्तित्व का उजाला

डॉ० विनोद कुमार रस्तौगी

'दर्द की छाँव में' 1987 और 'रिसते घाव' 1992 के बाद सन् 1999 में प्रकाशित 'एक समन्दर प्यासा-सा' श्री राम प्रकाश गोयल का एक ऐसा काव्य संग्रह है जिसमें उक्त दोनों संग्रहों की भाँति केवल गज़लें ही नहीं अपितु गीत, कतअ, शेर, अतुकांत कविताएँ और क्षणिकाएँ भी समाविष्ट हैं। बहुमुखी प्रतिभा के धनी श्री गोयल की अन्य कृतियों के सापेक्ष यह संकलन और अधिक प्रखर निखार संपन्न और उनसे भी अधिक पूर्णता लिए हुए तो है ही, साथ ही श्री गोयल के जीवन दर्शन का यह निर्मल और उज्ज्वल दर्पण है जिसमें श्री गोयल के ज्ञान, अनुभव और वैचारिक छवि के दर्शन सुस्पष्टता के साथ हो जाते हैं। कहना न होगा ये सभी मिलकर कवि के अंतर्बाह्य व्यक्तित्व के व्याख्याता हैं।

श्री गोयल का आलोच्य संग्रह भाषा, विचार, शैली, आदि किसी भी दृष्टि से निराश नहीं करता। एक सहृदय सामान्य पाठक भी उनकी इस कृति से काव्य-मुक्ता चुनकर रस-विभोर हो सकता है। पृष्ठ-पृष्ठ पर विकीर्ण, उत्कीर्ण कण्ठग्राह्य गज़लें, सूक्तियाँ इसकी गंभीरता और वैचारिकता को सतत प्रमाणित करती हुई इसकी स्पृहणीयता को और भी बढ़ाती हैं।

साहित्य की धारा से प्रथक विज्ञान और विधि की ज्ञान धारा में सतत प्रवाहित एवं आकण्ठ निमज्जित श्री रामप्रकाश गोयल का यह साहित्यिक प्रदेय उन महानुभावों के लिए प्रेरणात्मक आदर्श का उदाहरण बन सकता है जो हिंदी साहित्य के पठन-पाठन से जीविका चलाते हुए भी मौलिक सृजन के नाम पर अपने नाम के साथ कटियानुमा प्रश्न चिह्न लगाने को बाध्य करते हुए हिंदी के होकर भी हिंदी के न होने का भ्रम उत्पन्न करते रहे हैं।

अंत में, श्रेष्ठ मानव-मूल्यों के धनी श्री गोयल इसी जून को अपने जीवन्त जीवन के 75 वर्ष पूर्ण कर 76 वें वर्ष में प्रवेश कर रहे हैं, यह सुखद और आनंदप्रद है। आशा है वे निरोग रहते हुए शताधिक आयु प्राप्त कर अपनी कारयित्री प्रतिभा द्वारा पाठकों को और भी अनुपम कृतियों द्वारा उनकी पठन रुचि को प्रबुद्ध और समृद्ध करते रहेंगे। शुभमस्तु।

'ज्योति कलश' सी - 201/3, राजेन्द्र नगर, बरेली - 243122

बहुआयामी – प्रो0 गोयल जी

अशोक शंखधर

अहंकार से दूर हैं, सरल सौम्य व्यवहार।
कवियों को गोयल लगें, प्यार भरा उपहार।।
टूट टूट जुड़ते रहे, लिये 'दर्द की छाँव'।
सारा जग जिसको लगे, अपना प्यारा गाँव।।
विद्वत जन को खोजकर, जो करते सम्मान।
बढ़ा रहे हैं देश में, निज नगरी का मान।।
बृहस्पति सम सम्मान दे, अधिवक्ता समुदाय।
विधि विधान के सीखता, इनसे नये उपाय।।
क्षेत्र कला का कोई हो, नाटक, गायन फ़िल्म।
जग में शेष रहा नहीं, इनसे कोई इल्म।।

कविकुटी ए–1149, राजेन्द्र नगर,
इज्जतनगर, बरेली

प्रो0 राम प्रकाश गोयल के प्रति

रामेश्वर दयाल शर्मा 'दयाल'

राम का प्रकाश है जिनके हृदय में
भर रहे जो ज्योति कण इस जग निलय में।
विवेक दीपक के हृदय के चक्षु खोले।
वेदना पीयूष निज ग़ज़लों में घोले।
काव्य ही जिनके हृदय का हार है।
विश्व ही जिनके लिये परिवार है।
प्रेम का प्रसाद जग को बाँटते जो,
'दयाल' का सादर उन्हें नमस्कार है।

प्रज्ञा–कुंज, 200 इन्द्रापुरम
निकट बी0डी0ए0 कालोनी, करगैना,
बरेली – 243001

श्री रामप्रकाश गोयल – मुजस्सम दर्द

अब्दुल रऊफ़ 'नश्तर'

30 जून 1925 को बरेली शहर के आलमगीरीगंज में एक मध्यमवर्गीय परिवार में जन्मे 'राम प्रकाश गोयल' जी इस समय एक वरिष्ठ साहित्यकार के रूप में जाने जाते हैं।

10 वर्ष पूर्व आपने 'विवेक गोयल' की स्मृति में 'विवेक गोयल साहित्य पुरस्कार' आरम्भ किया जो 14 सितम्बर 'हिन्दी दिवस' के अवसर पर एक साहित्यकार को दिया जाता है। वे अनेक संस्थाओं द्वारा सम्मानित हो चुके हैं। आपका इकहरा बदन परन्तु चुस्त और रौबीले चेहरे पर पुत्र का वियोग साफ़ झलकता है परन्तु इस घटना को ईश्वर की इच्छा मानकर संतोष भी है। आपकी वाणी में बला की मिठास है, हँसते हैं तो मानो मुख से फूल झरते हैं।

तेरे कलाम में जाने-अवाम है गोयल।
तेरे लबों पे वतन का पयाम है गोयल।।
तेरी जुबाँ पे हकीकत का नाम है गोयल।
तेरा बयान पयामे-अवाम् है गोयल।।
ज़माना इसको समझ पाया न समझ पाये।
तेरा अदब में बड़ा इक मुक़ाम है गोयल।।
मैं तशनगी की शिकायत करूँ तो कैसे करूँ।
कि मेरे हाथ में तेरा ही जाम है गोयल।।
तू दे रहा है ज़माने को आज रंगे वफ़ा।
हर इक क़दम पे यूँ शादकाम है गोयल।।
तुम्हारा हुस्ने मोहब्बत रहा है पेशे नज़र।
हर इक क़दम पे तुम्हीं को सलाम है गोयल।।
जो जल रहे हैं मोहब्बत के चारसू ये दिये।
यह शाम आज फ़क़त तेरे नाम है गोयल।।
तेरे ही दम से है क़ाइम विकारे मयखाना।
हर इक के हाथ में तेरा ही जाम है गोयल।
चला हूँ आपके नक़्शे कदम पे मैं 'नश्तर'।
मेरा कलाम तुम्हारा कलाम है गोयल।।

114, बिहारीपुर मेमारान, बरेली

PROF RAM PRAKASH GOEL A VERSATLE PERSONALTY

Dr. Vijay Kumar Shrotryia

It is my proud privilege to contribute something for a personality known to me for around last 15 years (1/5th of his remarkable life span) I must congratulate ' Akhil Bhartiya Sahitya Kala Manch' for honouring Sri Ram Prakash Goel for his contributions in the field of Hindi literature and for the services rendered by him as an academician and as a social activist. For Bareilly it is a matter of great proud that Sri Goel was born there and could prove himself to be the loyal son of the soil of Bareilly

It is around 10 years since I left Bareilly but I have never been out of touch of the literatic developments taking place in Bareilly. One cannot expect any activity of literature in the town without the presence of Sri Goel. His contributions to the literature as a novelist, poet, editor playwright, actor and as a voracious reader cannot be expressed in the limited words It would require volumes but still I doubt whether it would cover every aspect of this being, this great being.

I have gone through some of his works and found it worthy of interational recognition. He deserves much more ' Ek Samandar Pyasa Sa' his latest collection of poems & Ghazals, is one of the best collections comparable to any work of a renowned poet. While going through his poetry, I could feel the touch of Urdu Poet Nida Fazli and Bareilly's own Hindi poet Kishan Saroj As an editor he has successfully edited Radio Talks & Reports and Love Letters One can experience the pleasure and pain, happiness and sadness in his poems / ghazals. Devoid of any religious feeling, his writings have secular feature which is very well illustrated in most of his works Touchwood at his age he could be as young as any school going kid. I remember two lines of an urdu poet:

इस से बढ़कर वक्त क्या ढाता सितम,
जिस्म बूढ़ा कर दिया, दिल को जवाँ रहने दिया।

I am really lucky to have met him and to be in his company. The qualities he possesses are very rare and it is very difficult to find a versatile person like him A professional advocate, a teacher and a perfect practitioner of good human / public relations I am informed that he is working on a T. V. Serial based on his novel TOOT-TE-SATYA which he published in 1972. I wish him all the success in this endeavor and for all his future plans Long live Sri Goel Ji !
May Almighty God shower upon him all His blessings and wishes!

"The poet and the dreamer
are distinct, diverse, sheer opposite antipodes.
The one pours out a balm upon the world,
the other vexes it "
John Keats

Department of Commerce Sherubtse College
(University of Delhi) Kang ung Bhutan

फैला है जो धरती से आसमान तक

निर्मला सिंह

युगों बाद खिलता है, महकता है
नरगिस का एक फूल किसी वन–उपवन में,

30 जून 1925 में ऐसे ही जन्मे हैं श्री राम प्रकाश गोयल श्री मुकुट बिहारी लाल के प्रांगण में। उपन्यास 'टूटते सत्य', ग़ज़ल–संग्रह दर्द की छाँव', 'रिसते घाव', 'एक समन्दर प्यासा सा', एवं 'सच्चे प्रेम पत्र' नामक पत्रों की पुस्तक आदि का किया है प्रणयन। वीर अभिमन्यु नाटक में सहदेव, कवि सुमित्रानन्दन पंत, कवि माखन लाल चतुर्वेदी, कवि शेखर, नाटक 'एहसास' में न्यायाधीश, फ़िल्म 'बहूरानी' पिता का, फिल्म 'आज का सच' में प्रिंसिपल तथा न्यायाधीश आदि का आपने अभिनय किया। रामपुर, बरेली आकाशवाणी से होती हैं आपकी वार्तायें एवं गज़लें प्रसारित। कई साहित्यिक एवं सामाजिक संस्थाओं से हुये हैं आप सम्मानित। सुलझा व्यक्तित्व, गंभीर कृत बन गये हैं जीवन की ढाल, छिपा के अंतस में पीड़ा, व्यथा आप सदा रहते खुशहाल, ज्यों धुआँ छिपाता रहा है अगन,

अश्रु आपके छिपाते रहे हैं नयन,
आप न कभी करते अन्याय
आप न कभी सहते अन्याय

सबको बताते खुश रहने का उपाय – "प्रेम है जीवन, प्रेम है शाश्वत्, प्रेम है भावना। सतत् कर्म करते रहना ही है जीवन की साधना। पर उपकार वचन मन काया ही है जीवन की उपासना" नयी पीढ़ी के लिये आप हो प्रेरणा स्रोत, ज्यों अँधेरे में हो जलते दीपक की ज्योत, देकर प्रतिवर्ष विवेक गोयल पुरस्कार, सम्मानित करते हो आप उत्कृष्ट साहित्यकार, कभी नहीं करते किसी का उपहास, हिम्मत से जीते, सँजोकर आस। कभी नहीं कर्त्तव्य–पथ से मुड़े, अनगिनत संस्थाओं से जुड़े रहते हैं आप – "चलना है जीवन और रुकना है मरण" व्यक्तित्व आपका है व्यापक आकाश, और स्वभाव मधुमय मधुमास, नफ़रत को महसूसा है आपने प्यार सा, पतझर को माना है खिलती बहार सा, सागर से गहरे एक इंसान को कैसे शब्दों में बाँधूँ एक पहिचान को।

185 ए, सिविल लाईन्स, बरेली – 243001

मेरे अनुपमेय नाना जी

स्वाति सिंघल

हिन्दी साहित्य रूपी आकाश में चन्द्रमा के समान अपने काव्य की ज्योति फैलाने वाले और बहुमुखी प्रतिभाशाली व्यक्तित्व के धनी आदरणीय श्री रामप्रकाश गोयल जी की धेवती होने पर मुझे गर्व है।

नाना जी का चरित्र अत्यन्त लोकप्रिय है। मैं अपने अब तक के जीवनकाल में ऐसे शान्त स्वभाव वाले और हर परिस्थिति में सदैव समान भाव से रहने वाले व्यक्ति से परिचित नहीं हूँ। उन्होंने ही अपने जीवन को सही ढंग से जीना सीखा है। वह अपना जीवन दूसरों के हित के लिए जीते हैं। उनके जीवन का उद्देश्य समाज सेवा और कर्मशीलता है। उन्होंने अनेक गरीबों की आर्थिक सहायता की और उनके लिए कई बार निःशुल्क मुक़दमे लड़कर उन्हें न्याय दिलवाया। उन्होंने होशियार बच्चों के लिए पुरस्कार की योजना चलाई है। वह अत्यन्त न्यायप्रिय हैं। समाज सेवक होने के कारण ही आज उनका इतना बड़ा सोशल सर्किल है कि शायद किसी का ही होगा। समाज में उनकी अत्यधिक प्रतिष्ठा है।

उनके व्यक्तित्व की विशेषता यह है कि वह सर्वदा कर्मशीलता में ही आस्था रखते हैं। उनका विचार भी गीता के अनुरूप है कि कर्म करो, फल की इच्छा मत करो। हमने उन्हीं से यह शिक्षा ग्रहण की है कि हमें हमेशा हिम्मत और पूर्ण निष्ठा से अपना कर्म करना चाहिए तभी हम सफलता की उस सीढ़ी पर पहुँच पाएँगे जहाँ आज हमारे पूज्य नाना जी हैं। उनकी आस्था इतनी गहन है कि उनके लिए कोई भी काम करना कठिन नहीं है। उनके लिए यह कहना बिल्कुल उचित है कि –

"काम करने से काम होता है,
 जिक्र करने से कुछ नहीं होता।
जो भी होता है हो के रहता है,
 फ़िक्र करने से कुछ नहीं होता।"

उनकी यही हिम्मत, विश्वास, उनके अच्छे कर्मों का फल और सभी लोगों की दुआएँ उनको मौत के मुँह से बाहर निकालकर ले गईं जब उनका हृदय का ऑपरेशन 1998 में हुआ था यही सब

विशेषताएँ हम आज उनके बच्चों में भी देखते हैं। मेरी माता जी भी उन्हीं के समान दृढ़ संकल्प वाली, किसी भी विपरीत परिस्थिति में हिम्मत से काम लेने वाली और न्याय प्रिय हैं। नाना जी जैसा ही मनोबल उनमें भी विद्यमान है।

हमारे नाना जी शुरू से ही अच्छे स्वास्थ्य पर विश्वास रखते हैं क्योंकि "स्वास्थ्य ही सच्चा धन है।" उनके अनुसार यदि मनुष्य अपने जीवन में प्रगतिशील होना चाहता है तो उसका शरीर स्वस्थ होना आवश्यक है जो व्यायाम, अच्छा खान-पान और सदा खुश रहने से ही प्राप्त हो सकता है। आज 75 वर्ष पूरे होने पर भी वह उतने ही स्वस्थ, चुस्त, तन्दुरुस्त और परिश्रमी हैं जितने वह 30 वर्ष की आयु में रहे होंगे। कोई भी व्यक्ति उनकी रचना को पढ़कर बिना प्रभावित हुए नहीं रहता है। एक बार तो उसके मुँह से निकलकर ही रहेगा – " वाह ! गोयल साहब क्या सोचा है और क्या कलम से उतारा है।" उनकी अनेक कृतियाँ हैं जैसे 'टूटते सत्य', "दर्द की छाँव में", "रिसते घाव" आदि। "टूटते सत्य" पर तो आजकल धारावाहिक भी बनने की योजना है। भगवान उनको इस कार्य में सफलता प्रदान करें।

अन्त में मैं यही व्यक्त करना चाहूँगी कि नाना जी जैसे सामाजिक प्राणी की आज अत्यन्त आवश्यकता है। भगवान ऐसे व्यक्तियों को बार-बार इस धरती पर भेजता रहे। नाना जी तो एक महापुरुष, समाज सेवक, हितकारी, सहयोगी, हिम्मतदार नौजवान और लोकप्रिय साहित्यकार हैं। मैं भगवान से उनकी दीर्घायु की प्रार्थना करती हूँ और चाहती हूँ कि उनका भविष्य बिना किसी संकट के हो और वह आराम से अपना जीवन व्यतीत करें। उनके लिए इबादत करना किसी मंदिर या मस्जिद में पहुँचकर सर झुका देना नहीं, बल्कि –

"इबादत है किसी बेआसरा को आसरा देना,
इबादत है किसी मक़रूज़ का क़र्ज़ा चुका देना।
किसी मजलूम को ज़ालिम से छुड़वाना इबादत है
किसी नादार की मुश्किल में काम आना इबादत है।
इबादत है किसी भूखे को दो रोटी खिला देना,
इबादत है किसी नंगे को कुछ कपड़ा दिला देना।
किसी बर्बाद को आबाद कर देना इबादत है,
किसी नाशाद को दिलशाद कर देना इबादत है।"

फ़रीदाबाद

एक समर्पित साहित्यकार : प्रो0 गोयल

ब्रजराज पाण्डेय

एक दिन उल्लसित और काव्यजीवी क्षणों में मैंने "एक समन्दर प्यासा-सा" पढ़ा और फिर क्रमबद्ध होकर समग्र परायण ही कर डाला। लगा कि जैसे मेरी अपनी अनुभूतियाँ ही साक्षर मुझसे बातें कर रही हैं। आपकी रचनायें अन्तर्मन की सफल अभिव्यक्ति हैं। ऐसा प्रतीत ही नहीं होता वरन् यह कटु सत्य है कि आपने भोगे हुये सत्य को सफलतापूर्वक शब्दाकार किया है। फलतः आप एक समर्पित साहित्यकार हैं।

डॉ0 उर्मिलेश से मैं पूर्णतया सहमत हूँ कि "रचनाओं में आप जैसे हैं, वैसे ही प्रस्तुत हुये हैं, रचनाओं में बुनावट है, बनावट नहीं" सरलतम अभिव्यक्ति ही आपकी विशेषता है।

समय समय पर आपने बरेली महानगर की सांस्कृतिक, सामाजिक, साहित्यिक तथा शैक्षिक संस्थाओं को जो मार्ग दर्शन दिया है वह सराहनीय है। कभी कभी व्यक्ति अपने साथ घटित ईश्वरीय प्रकोप का शिकार होकर उसे भुलाने हेतु अपने अतीत में डूब जाने को विवश होता है जैसा कि दुर्भाग्यवश उनके एक मात्र पुत्र विवेक के अनायास आकस्मिक निधन के कारण हुआ। यथा :-

"कैसी जीवन की मजबूरी, झूठे सन्दर्भों में जीना।

कुहरे के धागों से विस्मृत, स्वप्नों की प्रतिलिपियाँ सीना।

विश्वास है कि आपकी रत्नगर्भा लेखनी से अभी अनेकानेक काव्य-रत्न प्रसूत होकर साहित्य मन्दिर को उद्योतित करेंगे।

विवेक की स्मृति ने श्री गोयल को जो दर्द एवम् स्वप्निल संसार दिया व उससे उनके हृदय-सिन्धु में सुप्त अनुभूतियों को जागृत कर उन्हें शब्दाकार करने पर विवश कर उन्हें स्थापित साहित्यकार / रंगकर्मी स्वरूप प्रदान कर अपने को पितृ ऋण से उऋण किया। अत श्री गोयल विवेक की स्मृति-गंगा में ही डूबे रह कर साहित्य सर्जना में लीन हैं।

इस सफल कृति के लिये बधाई।

127, बिहारीपुर खत्रियान,
बरेली - 243 003

प्रो० राम प्रकाश गोयल : बहुआयामी व्यक्तित्व

विश्वजीत सिंह 'निर्भय'

बहुमुखी प्रतिभा से अनुप्राणित श्री राम प्रकाश गोयल जी का बहुआयामी व्यक्तित्व आज किसी परिचय का आकांक्षी नहीं है। उनके तेजस्वी एवं गरिमामय मुखमंडल तथा मृदु व्यवहार में उनकी प्रतिभा सम्पन्नता की झलक स्पष्ट दिखायी देती है। उनका विस्तृत कार्यक्षेत्र दीर्घकाल से विद्वता, कला, साहित्य-साधना एवं सामाजिक कार्यशीलता के विभिन्न आयामों में निरन्तर विकास की ओर अग्रसर है। व्यक्तिगत रूप से परिचित न होते हुए भी व्यक्ति श्री गोयल जी के साहित्यिक एवं सामाजिक स्वरूप से भली भाँति परिचित हैं।

यद्यपि उनके जीवन में आये निष्ठुर तूफानों ने उन्हें बुरी तरह झकझोर दिया है। भाग्य ने अत्यधिक पीड़ित किया है फिर भी वे विचलित नहीं हुये हैं और मानवी कर्तव्यों का भलीभाँति निर्वाह कर रहे हैं। श्री गोयल जी अनेक सामाजिक, शैक्षिक एवं साहित्यिक संस्थाओं के संरक्षक हैं। साहित्य, शिक्षा एवं कला के क्षेत्र में प्रयत्नशील व्यक्तिओं को सदैव उनका प्रोत्साहन मिलता रहा है।

अपने साहित्य में वे कवि, शायर एवं गद्यकार तीनों रूपों में उपस्थित हैं। हिन्दी तथा उर्दू दोनों भाषाओं पर समान अधिकार रखते हुये अधिकांशतः उन्होंने सहजता से अपने उद्‌गारों को व्यक्त किया है। उनके गीतों में एक अनोखी पीड़ा है, अंतर्द्वन्द्व है, कटु अनुभव हैं जो जीवन के वास्तविक स्वरूप को दर्शाते हुये एक नये रास्ते का संकेत देते हैं। रचनाओं को पढ़कर ऐसा प्रतीत होता है मानो सम्पूर्ण विश्व के पीड़ित और त्रस्त व्यक्तिओं का स्वर उनके माध्यम से मुखरित हुआ है। वे समाज को अन्याय एवं अत्याचार से लड़ने हेतु कमर-कस लेने की प्रेरणा देते हैं।

उनके गीत-संग्रहों में वर्णित 'प्रेम' एक अत्यन्त कोमल एवं पवित्र भावना है। वह वासनात्मक या दैहिक न होकर एक अनुपम, सुखद अनुभूति है। उनके अनुसार प्रेम ईश्वर के समतुल्य अमर, अखण्ड एवं अपराजेय है।

हजरतपुर, बदायूँ

ो0 रामप्रकाश गोयल : एक शख्सियत – एक

डॉ0 आश

ऐसा है एक शख्स यहाँ मन जिसे भूल न पाता है,
सोचें तो सम्बन्ध घना है वैसे कोई न नाता है।
इन्सानों के वेश में देखो यहाँ मसीहा रहता है,
'गोयल साहब राम प्रकाश' जिसे ज़माना कहता है।
गीत ग़ज़ल जो भी वो लिखते उन्हें ज़माना गाता है,
भाव विह्वल होकर गोयल खुद सबको उन्हें सुनाता है
ऐसा है एक शख्स यहाँ . . . .
'एक समन्दर प्यासा-सा' चुपचाप बहुत कुछ सहता है,
उद्वेलित लहरों के संग भी खुद सीमा में रहता है,
ज्योति पुंज बन जो धरती को किरणों से चमकाता है,
ग़ैरों के भी ग़म धो धोकर धीरज उन्हें बँधाता है।
ऐसा है एक शख्स यहाँ . . . .
अँधियारे में दीपक बन जो सबके लिए प्रकाश बने,
सुबह को धरती बन कर फैले शाम ढले आकाश बने,
ऐसा दरिया दिल जहान में भला किसे मिल पाता है,
अपना दामन छोड़ जो दामन औरों के सी जाता है।
ऐसा है एक शख्स यहाँ . . . . . .
इतना सब एक शख्स में हमने कभी नहीं देखा जाना,
आँखों से देखा पहले फिर सब मित्रों ने ही माना,
वह औरों की बुद्धि विवेक को आगे सदा बढ़ाता है,
मानव सेवा करके 'गोयल' मन ही मन हर्षाता है।
ऐसा है एक शख्स यहाँ . . . . . .
गोयल का तुम नाम प्रभु सदा सदा उज्ज्वल रखना,
'आशा' और विश्वास का उसके सदा हृदय में बल रख
जुल्म के आगे कभी नहीं जो अपना शीश झुकाता है,
कर्म करो तुम मत फल चाहो 'गोयल' यही सिखाता है
ऐसा है एक शख्स यहाँ . . . . . .

रीडर एवं अध्यक्ष चित्रकला वि
कन्या महाविद्यालय आर्य समाज भूड़, ब

प्रो0 रामप्रकाश गोयल–व्यक्तित्व और कृतित्व

राम अवतार गुप्ता 'मुज़्तर'

श्री रामप्रकाश गोयल जीवन्त शायरी के रचयिता हैं, उनको अल्फ़ाज का जादूगर और एक अनोखी इनफ़िरादियत वाले जज़्बात के चितेरे की पदवी देना अतिशयोक्ति न होगी।

उनके बहुत से लाफ़ानी शेर हमको बहुत कुछ सोचने और कुछ करने को आन्दोलित करते हैं। उनकी शायरी के सरोकार ज़िन्दगी और ज़िन्दगी का विराट कैनवास हैं। वह एक ऐसे फ़नकार हैं जिनके व्यक्तित्व का ख़लूस बेनूर ज़िन्दगी को जगमगाने में सक्षम है। दोहरे मापदंडों वाले समाज से उनका कोई सरोकार नहीं। शीशे के घरों में रहकर दूसरे के घरों पर पत्थर फेंकने वालों की पगड़ी उतारने पर वह कभी आमादा नहीं होते। वे समझौतावादी भी नहीं हैं कि समाज में फैली तमाम गन्दगी और बुराइयों को सहज में बरदाश्त करते चले जायें। साहित्यिक मोर्चे पर वह अपने मन की समस्त करुणा व संवेदनाओं के साथ–साथ दिल को मोह लेने वाले अछूते अंदाज़े–बयाँ से अपना लोहा मनवा लेने की क्षमता रखते हैं। वह एक ही वक्त में कानूनदाँ, उपन्यासकार, नाटककार, साहित्यकार, अभिनेता व शायर हैं। आपकी बहुआयामी प्रतिभा अपनी मिसाल आप है। आप ज़िन्दगी के रूबरू होकर उससे आँखें मिला सकने वाली उच्च कोटि की कविता में दक्षता रखते हैं। सीधे तौर पर दिल को छू लेने वाले अन्दाज़े–बयाँ सादा व शाइस्ता शैली के साथ फ़िक्र के हर पटल पर जलवागर होते हैं। जिस मज़मून को जिस अन्दाज़ से बेबाकी के साथ सुन्दर शब्दों से सँजो कर पेश करते हैं वो अपनी सादगी सरलता और सहजता के कारण अमरता प्राप्त कर लेते हैं।

गोयल साहब को हिन्दी के पटल पर उर्दू ग़ज़ल का शिल्पी कहना कुछ अतिशयोक्ति न होगी। गोयल जी के बहुत से अशआर हीरे की कलम व आँसुओं की स्याही से दिल की तख़्ती पर लिखने के योग्य हैं। जैसे –

पूछते हो मुझसे आकर ख़्वाब में, क्यों बुलाया है ज़रा बतलाइए।
मैं तो सहरा में तड़प जाऊँगा पानी के लिये, चन्द बूँदें मेरी
क़िस्मत में मयस्सर कर दे।
"उसकी याद आई है, साँसों ज़रा आहिस्ता चलो
दिल धड़कने से तसव्वुर में ख़लल पड़ता है।"

अध्यक्ष ग़ालिब एकेदमी, ए–3, आदर्श नगर, नजीबाबाद (उत्तर प्रदेश)

एक बेलौस, पुरखुलूस इंसान – गोयल साहब

मुख़्तारुल हसन

आज के लगभग 10 वर्ष पूर्व श्री राम प्रकाश गोयल से मेरी मुक़ालात हुई। प्यार, खुलूस, हमदर्दी का समन्दर लगे वो। श्री गोयल जी के विषय में क्या लिखूँ – इसके लिए मेरे पास अल्फ़ाज नहीं हैं। मैंने अपने सैकड़ों मुलाक़ातियों में उन जैसा बेलौस, पुरखुलूस, हमदर्द, नेक इंसान नहीं पाया। हैरत की बात है कि वकील होने के नाते भी यह ग़रीबों और अपनों से बतौर मेहनताना एक हब्बा भी लेने को तैयार नहीं बल्कि खुद ख़र्च करते हैं और हर वक्त ख़र्च करने को तैयार रहते हैं। इनकी ख़ूबियों की वजाहत करने के लिये मुझे अल्फाज़ नहीं मिलते। मेरी 80 वर्ष की आयु में श्री गोयल जी मेरे लिये मिसाल बन गये हैं।

मैं आज तक नहीं समझ पाया कि वह मेरे परिवार के सदस्य हैं या मैं उनके परिवार का सदस्य हूँ। खुदा उन्हें लम्बी उम्र दे और वह भटके हुए बेसहारा लोगों को सही राह दिखा सकें।

552, नवादा शेख़ान, पुराना शहर, बरेली

साहित्य साधक प्रो0 रामप्रकाश गोयल के प्रति

सफ़िया सुल्ताना

जनाब राम प्रकाश गोयल साहब से मेरा पारिवारिक सम्बन्ध है वे एक शायर, लेखक के साथ साथ सच्चे हमदर्द भी हैं। उन्होंने हिन्दी, उर्दू की ख़िदमत शायरी व लेखन द्वारा की है। वह अनुकरणीय है। उन्होंने अपनी शायरी में तल्ख़ सच्चाईयों को अपना मौजूँ (टापिक) बनाया है। बड़ी बात को छोटी कर के कहना इनकी आदत बन गई। इन्होंने अपनी शायरी में हिन्दी, उर्दू के सरल शब्दों का इस्तेमाल किया है। इनकी शायरी आम आदमी की समझ में आसानी से आ जाती है।

हिन्दी की जान है तो ये उर्दू की शान हैं
गोयल हमारे देश के शायर महान हैं।
ख़िदमत अदब की इनकी यहाँ पर है बेमिसाल
हर कोई यहाँ जर्रा और ये आस्मान हैं।

जनता इंगलिश स्कूल, सब्जी मंडी चौहटिया,
तिलहर, शाहजहाँपुर उ0प्र0

प्रो० रामप्रकाश गोयल : एक परिपूर्ण व्यक्तित्व

रवि शर्मा

शान्ति, स्नेह, प्रेम, करुणा, मानवता, सहजता एवं उदारता जैसे गुणों से परिपूर्ण व्यक्तित्व के स्वामी श्री राम प्रकाश गोयल का नाम उन विद्वानों की श्रेणी में आता है जो समाज में संवाहक के रूप में प्रतिष्ठित हैं। श्री गोयल के व्यक्तित्व की झलक जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में मिल जाती है। आप एक अच्छे कवि, शायर, उपन्यासकार, नाटककार, लेखक एवं कलाकार के रूप में स्वनाम धन्य हस्ताक्षर हैं। एक व्यक्ति में इतना सब समाहित होना ईश्वर की असीम अनुकम्पा से ही संभव होता है। निश्चित रूप में माँ शारदे की आप पर असीम कृपा है। आज जब समाज धार्मिक उन्माद, भाषायी दीवारों में फँसा हुआ है, आपकी रचनाएँ धार्मिक संकीर्णताओं से ऊपर उठकर मज़हबी कट्टरताओं की परवाह न करते हुए हिन्दी उर्दू की गंगा जमनी संस्कृति का संगम नज़र आती हैं।

आपका समग्र जीवन समाज के उन्नयन हेतु समर्पित रहा है। जीवन के 74 वसंत पार कर लेने के उपरान्त भी आपकी अदम्य इच्छा शक्ति एवं दृढ़ विश्वास भावी पीढ़ी के लिये प्रेरणा स्रोत है जिससे सृजन की रश्मियाँ विकीर्ण हो रही हैं। हम आपके सफल जीवन यात्रा एव आपके संदेश जन-जन के उन्नयन का परिचारक बनें ऐसी कामना करते हैं।

प्रबंधक
अमर उजाला, बरेली

प्रो० राम प्रकाश गोयल – बहुआयामी व्यक्तित्व

स्वामी ज्ञान 'समर्पण'

लगभग एक दशक पूर्व एक सामाजिक संस्था की मीटिंग में श्री रामप्रकाश गोयल से पहली भेंट हुई तब उनका पीड़ितों को न्याय दिलाने को कटिबद्ध व्यक्तित्व दिखाई पड़ा। समाचार पत्रों में, पत्रिकाओं में, अनेक मित्रों के साथ उनका जिक्र पढ़ा सुना। मिलने की इच्छा हुई और मैं 1992 में उनसे मिला। उस दिन से आज का दिन है, उनका स्नेह मुझे बराबर मिल रहा है।

बरेली महानगर की कोई भी साहित्यिक गतिविधि श्री गोयल के बिना अधूरी रहती है। सांस्कृतिक कार्यक्रम, रंगमंच, कवि सम्मेलन, विचार गोष्ठी श्री गोयल की गरिमामयी उपस्थिति हर जगह रहती है। मैं अकसर हैरान रह जाता हूँ कि इस आयु में इतनी सक्रियता का राज़ क्या है ?

श्री गोयल से हुई अन्तरंग वार्ता में पता लगा कि मेरे स्वर्गीय पिता मास्टर नित्यानन्द ने श्री गोयल को कक्षा दस में कुँवर दयाशंकर एडवर्ड मेमोरियल इन्टर कॉलेज में पढ़ाया था। इस सम्बन्ध की जानकारी होने के बाद से हमारा अग्रज अनुज सम्बन्ध बना हुआ है।

कालान्तर में उनहोंने रहस्यदर्शी ओशो के युग क्रान्ति दर्शन को समर्पित विचार मंच 'ओशो कल्याणमित्र' की सदस्यता ग्रहण कर ली। हमारी लगभग सभी कक्ष गोष्ठियों में उनकी उपस्थिति रहती है।

कई बार मैं 'विवेक गोयल साहित्य पुरस्कार' के समारोह में सम्मिलित हुआ हूँ। वहाँ देखकर प्रसन्नता होती है कि श्री गोयल द्वारा आयोजित कार्यक्रम न सिर्फ़ सुव्यवस्थित होते हैं वरन उनमें महानगर के कई ज्ञान पिपासु, साहित्य प्रेमी, कवि रुचिपूर्वक सम्मिलित होते हैं।

श्री गोयल कवि हैं, लेखक हैं, उपन्यासकार हैं, शायर हैं, अभिनेता हैं, क्या क्या हैं ? और क्या क्या हो सकते हैं कहा नहीं जा सकता है। इतने ऊर्जावान व्यक्तित्व की शतायु की प्रार्थना है ताकि उनका प्रेमाशीष हमें अभी पच्चीस वर्ष तक और मिलता रहे।

5-ए नैनीताल रोड बरेली

जीवेम् शरदः शतम्

डॉ० सुचित्रा डे

जी-बारह नम्बर कोठी का पता रामपुर बाग है,
है आवास यहाँ गोयल का स्वच्छ नगर का भाग है।।
मुकुट बिहारी पिता, मात जयदेवी के यह पूत हैं।
अधिवक्ता मशहूर शहर के और न्याय के दूत हैं।।
सरला जी के प्रिय पति हैं, वे प्यारे पिता विवेक के।
बेटा हुआ स्वर्गवासी, हैं दुखी पुत्रियाँ देख के।।
सत्रह वर्ष बरेली कॉलेज में क़ानून पढ़ाया है।
न्याय दिलाकर असहायों को भी कर्तव्य निभाया है।।
धन-वैभव सम्पन्न हैं लेकिन नहीं अहंकारी हैं।
राजनीति के पंडित हैं वे और शान्तिधारी हैं।।
रहे दर्दमन्दों में शामिल आप "दर्द की छाँव में"।
भाव किये साकार हृदय के अपने "रिसते घाव" में।।
नाटक लिखे कई आपने, उपन्यास भी लिक्खा है।
'सच्चे प्रेम-पत्र' का भी वह, हमें संकलन भाया है।।
बनकर पिता 'बहूरानी' में, फ़र्ज पिता का सिखलाया।
और 'आज के सच' में, सच का रस्ता हमको दिखलाया।।
कई सीरियलों में जीवन के भिन्न रूप दर्शाये हैं।
टी०वी० और रेडियो पर भी निज जौहर दिखलाये हैं।।
खग कुल कलरव में जैसे पहचान अलग है कोयल की।
वैसे ही कवियों में हस्ती एक अलग है गोयल की।।
धर्म-कर्म में भी आगे है, सात्विक, शुद्ध आचार हैं।
जीवन भी सादा है इनका, इनके उच्च विचार हैं।।
गजलों के यह बादशाह हैं, गीतों के सिरमौर हैं।
अतुकान्त कविताओं के भी बड़े निराले तौर हैं।।
कई संस्थाओं के द्वारा आप हुए सम्मानित हैं।
आप सदा साहित्य-सेवियों की सेवा में अर्पित हैं।।
प्रभु वन्दन स्वीकार 'सुचित्रा' का होगा आभार तेरा।
है अधिकार माँगना मेरा, देना है अधिकार तेरा।।
यही प्रार्थना है श्री प्रभु से आप हमेशा स्वस्थ रहें।
जीवेम् शरदः शतम् उल्लसित रहें सदा ही मस्त रहें।।

472, इन्दिरा नगर, इज़्ज़तनगर, बरेली

'सहस्राब्दि में बरेली के गौरवपूर्ण स्तम्भ : प्रो0 गोयल

वीरेन्द्र रायजादा

रुहेलखण्ड के केन्द्र बरेली जनपद के सौम्य स्वभाव व आत्मीय की प्रतिमूर्ति श्रद्धेय श्री रामप्रकाश गोयल जी के पावन जन्म दिवस पर अर्पित इस अभिनंदन ग्रंथ के माध्यम से मेरी हार्दिक बधाइ वरिष्ठ साहित्यकार, गज़ल व गीतकार, पूर्वविधि–प्रवक्ता व अधिवक्ता जैसी महान विधाओं से परिपूर्ण श्री गोयल जी को यदि बरेली का देदीप्यमान दीप कहा जाये तो अतिश्योक्ति न होगी। इस आदर्श समाजसेवी का ऐतिहासिक मूल्यांकन सूर्य को दिया दिखाने के समान है। अत्यन्त मिलनसार, हर आयु वर्ग के बीच उचित सामंजस्य बिठा पाने की अलौकिक क्षमता, बहुमुखी प्रतिभा के धनी श्री गोयल के मित्रगण व सामाजिक संबंधी स्वयं को गर्वित अनुभव करते हैं।

श्री गोयल नयी पीढ़ी के लिये अति उत्तम मार्गदर्शक व ज्वलंत आदर्श स्तम्भ हैं जिनमें समस्त मानवीय गुणों का समावेश जैसे अनुशासित जीवन, मैत्री, सहानुभूति इत्यादि किरणों का विकीर्ण होता है। अखिल भारतीय कला मंच को इस विलक्षण व्यक्तित्व का अभिनंदन ग्रंथ प्रकाशित करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है इसके लिए वे बधाई के पात्र हैं। वरिष्ठ साहित्यकार का इन पंक्तियों के साथ पुन अभिनंदन –

"हजारों साल नर्गिस अपनी बेनूरी पे रोती है, बड़ी मुश्किल से होता है चमन में दीदावर पैदा।"

इन्हीं शब्दों के साथ मैं प्रख्यात रचनाकार व हिन्दी प्रेमी को अभिनंदित कर प्रभु से यह प्रार्थना करता हूँ कि वे श्री गोयल को सदा स्वस्थ, प्रसन्न व दीर्घायु रखें ताकि समाज को नयी दिशा मिलती रहे

सधन्यवाद

अध्यक्ष
नागरिक अधिकार कल्याण समिति (रजि0)
बरेली (उ0प्र0)

1547 अवधपुरी
सुभाष नगर,
बरेली फोन 432271

साहित्यकार प्रो० राम प्रकाश गोयल : व्यक्तित्व एवं कृतित्व

डॉ० रमेश चन्द्र जोशी

जयन्ति ते सुकृतिनः रससिद्धाः कवीश्वराः।
नास्ति येषां यशः काये जरामरणजं भयं।।

सरस्वती के वरदपुत्र प्रो० रामप्रकाश गोयल ऐसे ही सुकृती हैं। बहुमुखी प्रतिभा के धनी प्रो० गोयल ने अपने जन्म से बरेली नगर को धन्य कर दिया। आपने स्व० श्री मुकुट बिहारी लाल गोयल के घर 30 जून, 1925 को जन्म लिया। आपकी परम स्नेहमयी माताजी का नाम श्रीमती जयदेवी था।

आप बचपन से ही विद्याव्यसनी रहे। शिक्षा के विभिन्न सोपानों को सफलतापूर्वक पार करते हुए आपने 1946 में बरेली कॉलेज बरेली से बी०एस-सी० की परीक्षा उत्तीर्ण की। अपने पिताश्री को वकील के रूप में जन-सेवा करते देख आपके मन में भी वकील बनने की इच्छा जागृत हुई। इसीलिए आपने 1951 में राजस्थान विश्वविद्यालय से एल-एल०बी० की उपाधि प्राप्त की और अपने गृहनगर बरेली में वकालत प्रारम्भ की। वकील के रूप में आप अत्यन्त सफल रहे। वकालत करते हुए आपने धनार्जन के बदले गरीबों, पीड़ितों के दुख दर्द को दूर करने को अत्यधिक महत्व प्रदान किया।

वकालत का कार्य करते हुए भी आपके अन्दर का व्यक्ति शिक्षा, साहित्य एवं संस्कृति में रमा रहता था। अतः उसकी सन्तुष्टि के लिए आप शिक्षा-जगत की ओर उन्मुख हो गए। आपने 1968 से बरेली कॉलेज बरेली के विधि विभाग में अध्यापन कार्य प्रारम्भ कर दिया और यह कार्य 1985 तक जारी रखा। इन सत्रह वर्षों में आपने अध्यापन के उच्चतम मानदण्ड स्थापित किए। आपके पढ़ाए हुए छात्र आज न केवल अनेक प्रशासनिक व न्यायिक पदों को सुशोभित कर रहे हैं वरन् अनेक न्यायालयों व उच्च न्यायालय में अधिवक्ता का कार्य कर रहे हैं।

आप स्वभाव से अत्यन्त मृदु हैं। आपका स्वभाव अत्यन्त सौम्य

है। आत्मीयता आप में कूट-कूट कर भरी है। पेशे से वकील होते हुए भी साहित्य-सृजन इनका प्रिय कर्म रहा। गद्य-पद्य की अनेक विधाओं में आपने साहित्य सृजन कर माँ सरस्वती के भंडार में श्री-वृद्धि की. कविता, गीत, मुक्तक, ग़ज़ल, उपन्यास, पत्र-लेखन, नाटक इत्यादि इनके साहित्य-सृजन के अन्यान्य आयाम हैं।

प्रोफ़ेसर साहब हिन्दी भाषा एवं साहित्य के न केवल विकास वरन् प्रचार व प्रसार के लिए भी निरन्तर कार्यरत रहे। आप अनेक साहित्यिक संस्थाओं के संरक्षक, अध्यक्ष एवं संचालक हैं। व्यक्तिगत जीवन में आपको पुत्र-विछोह का दारुण दुःख झेलना पड़ा। अपने दिवंगत एकमात्र पुत्र विवेक गोयल की स्मृति में आपने 1990 में पुरस्कार योजना बनाई थी और 'विवेक गोयल साहित्य पुरस्कार समिति, बरेली' की स्थापना की। आप इस समिति के संस्थापक संरक्षक हैं। यह समिति प्रतिवर्ष हिन्दी दिवस 14 सितम्बर को किसी साहित्यकार का अभिनन्दन व सम्मान करती है।

आप आकाशवाणी और दूरदर्शन से भी सम्बद्ध रहे हैं। आपमें ग़ज़ब की अभिनय प्रतिभा है। अनेक नाटकों व टी0वी0 सीरियलों में भी आपने अपनी प्रतिभा का प्रकर्ष प्रस्तुत किया है। आज आप अपने जीवन के 74 वसंत पार कर चुके हैं लेकिन इस अवस्था में भी आप आज भी निरन्तर सरस्वती के भण्डार की श्रीवृद्धि करते जा रहे हैं। वरिष्ठ साहित्यकार के रूप में दूरदर्शन पर आपके साक्षात्कार तथा ग़ज़लें भी प्रसारित हो चुकी हैं। आपका व्यक्तित्व असाधारण है।

आपका जीवन गीता के दर्शन के अनुसार संचालित होता है। 'कर्मण्येवाऽधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन' सिद्धान्त पर पूर्ण आस्था होने के कारण आप निष्काम कर्मयोगी का जीवन व्यतीत करते हैं। आप मानव जीवन को सेवा व परोपकार के लिए मानते हैं। प्रत्येक कार्य को आपके द्वारा व्यवस्था व अनुशासन से किया जाता है। वे प्रेम को परमात्मा मानते हैं। किसी पर अन्याय करने और किसी का अन्याय सहने दोनों के ये विरोधी हैं। आपका बहुआयामी व्यक्तित्व प्रेरणाप्रद तथा अनुकरणीय है।

एम0ए0, डी0आई0एम0 (मै0) पी-एच0डी0
प्रवक्ता हिन्दी,
आर0पी0पी0जी0कॉलेज, मीरगंज (बरेली)

प्रो० रामप्रकाश गोयल से एक मुलाक़ात

चन्द्र बहादुर सक्सेना 'शाद'

बरेली नगर की विभिन्न सामाजिक – सांस्कृतिक संस्थाओं से जुडे श्री रामप्रकाश गोयल से मेरी पहली मुलाक़ात एक कवि गोष्टी में हुई। कवि – गोष्ठी के समापन के पश्चात हम दोनों में परस्पर औपचारिक परिचय हुआ। स्थानीय होते हुए भी आपस में परिचय न होने की वजह यह रही कि मैं सन 1970 से 1996 तक के अंतराल में कवि–गोष्ठियों एवं मुशायरों से दूर रहा जबकि मेरा सुखन गोई से राबिता बना रहा।

गोयल साहब के तीन ग़ज़ल संग्रह – 'दर्द की छाँव में' ,'रिसते घाव' तथा 'एक समन्दर प्यासा सा' प्रकाशित हो चुके हैं। मुझे 'रिसते घाव' तथा 'एक समन्दर प्यासा सा' पढ़ने का ही सौभाग्य प्राप्त हुआ।

गोयल साहब की ग़ज़लों को पढ़ते हुए लगा कि उनकी शख्सियत के कई पहलू – आशिकाना मिज़ाज, ला – लेक्चरार, उपन्यासकार, अभिनेता, नाटककार एवं ग़ज़लकार – घुल – मिल गये हैं। कलाम में उनकी शख्सियत नुमायाँ होती है। वह हर बात को अपने अनुभवों के मुताबिक ही कहते हैं। उनके कुछ अशआर ही मेरे कथन की पुष्टि के लिए काफी होंगेः–

सबसे मिलने का सिलसिला रखना।
तन्हा जीने का हौसला रखना।।
देता हो बुराई का भलाई से जो बदला ।
इस दौर में ऐसा कोई पैकर नहीं देखा।।
आपसे तुलना भला कैसे करें।
आपके पैरों की हम तो धूल हैं।।
मुहब्बत जिसने समझी है इबादत,
मुहब्बत में कभी हारा नहीं है।
प्यार ही सब कुछ जहाँ में दोस्तो
जाइए नज़दीक सबके जाइए।

36, कामरान,
बरेली, उ. प्र.

प्रो. रामप्रकाश गोयल के अश्आर

रामकुमार भारद्वाज 'अफ़रोज़'

गोयल साहब से मेरा परिचय पुराना नहीं है। पिछले तीन चार वर्षों से ही कवि-गौष्ठियों में मिलना जुलना हुआ है। मैंने उनकी जिंदगी को क़रीब से नहीं देखा है। सुना अवश्य है कि वे अपने बेटे की असामयिक मौत से संजीदा हो गये हैं। ग़म को भुलाने के लिए इसान ऐसा कुछ न कुछ ज़रूर करता है कि वह तरोताज़ा रह सके।

गोयल साहब शराब की लत या अकेलेपन के शिकार न होकर शायरी की दुनिया में आ गये। हालाँकि गोयल साहब को नाटकों में अभिनय करने का भी शौक़ रहा है।

हर शायर का कलाम, उसकी सोच तथा उसके किरदार रंजोअलम की बेचैनियों के दायरे से बाहर निकलने के लिए छटपटा रहे हैं। इस कथन की पुष्टि के लिए गोयल साहब के निम्नलिखित शेर देखिये-

मुझे साहिल से अपने साथ लाकर,
चढ़े दरिया में छोड़ा है किसी ने।
हर तरफ़ तीरगी के साये हैं,
ऐसे में फिर शमअ् जलाना है।
मेरी क़िस्मत में दिन नहीं शायद,
रात के बाद रात आई है।

सुख़नगोई के लिए किसी न किसी आग का दिल में होना बहुत ज़रूरी है। गोयल साहब के भी दिल में आग है लेकिन दुर्भाग्य से पुत्र वियोग की।

दुश्मनी करके भला किसने सुकूँ पाया कभी
बीज बर्बादी के इंसान तो ख़ुद बोता है।
जो मुहब्बत करें, नफ़रत से सदा दूर रहे,
ऐसे इन्सानों की एक बस्ती बसाई जाए।

98 गदैया स्कूल वाली गली
ब्रेली र प

प्रो0 राम प्रकाश गोयल- एक शख़्सियत

कलीम अल्वी 'दर्पण'

30 जून सन् 1925 को बरेली की धरती पर एक ऐसी किरण का उदय हुआ जिसके स्थाई प्रकाश ने धीरे-धीरे बरेली के साहित्यिक जगत में हलचल मचा दी। इस क़द्र इल्म का मजमुआ कि मानो रूह मे साक्षात सरस्वती का समावेश हो। मेरी मुराद आदरणीय श्री रामप्रकाश गोयल से है। मैं स्वयं साहित्यिक जगत में उतरने से पूर्व सर्व प्रथम श्री गोयल जी से आशीर्वाद प्राप्त करने अपने एक मित्र के साथ उनके निवास स्थान पर गया था। मैंने उनके साहित्यिक कार्यों के बारे में बहुत कुछ सुना, पढ़ा और समझा था। उनकी शिक्षाप्रद रचनाओं से मेरे ज़हन के पर्दे पर उनके व्यक्तित्व का अमिट अक्स बन गया था। सोचा मुलाक़ात की जाये। काफी हिम्मत बटोर कर इल्म के इस समन्दर से जीवन के कुछ वास्तविक तजुरबातों से सराबोर होने पहुँच गया तो देखा कि एक व्यक्ति जो अपनी आयु के 74 वर्ष पूर्ण करने के पश्चात् भी चेहरे पर रोब के साथ बला का सन्तोष लिये, दिल को छू लेने वाली अंदाज़े गुफ़्तगू में शायरी की झलक साफ़ नज़र आ रही थी। उनके चुस्त और फुर्तीले शरीर से साफ ज्ञात होता है कि 74 वर्ष की आयु उनके दिलो दिमाग का कुछ नहीं बिगाड़ पायी है। दूसरों के प्रति स्नेह भाव और छोटों को बराबर का सम्मान देना वह अपना परम् कर्तव्य समझते हैं। मेरे मस्तिष्क में श्री गोयल साहब का जो अक्स उभरा था और जैसा मैंने गोयल साहब के बारे में सुना था वैसा ही पाया।

पुत्र 'विवेक' गोयल के असमय निधन ने 'गोयल' साहब को झकझोर कर रख दिया और वह कवि हो गये और फिर साहित्यिक सफ़र की शुरुआत हुई तो साहित्य की अनेक विधाओं में महारत हासिल की। उनके व्यक्तित्व को उनकी ग़ज़लों में बख़ूबी देखा जा सकता है। सहृदय, संजीदा और सामाजिक यथार्थ पर गहरी और पैनी निगाह रखने वाले गोयल जी ने अपनी ग़ज़लों में अपनी सोच और नज़रिये को एक अलग अंदाज़ में अपनी रचनात्मक अभिव्यक्ति और काव्य सौन्दर्य में बनाये रखा है। उनकी रचनाएँ ज़िन्दगी के तल्ख़ तजुर्बात और सच्चाई की अनुभूति ही नहीं करातीं बल्कि ऐसा लगाता है कि उनमें जीवन का वास्तविक यथार्थ विद्यमान है।

291, शाहबाद, छोटे पुल के नीचे
बरेली - 243003

प्रो0 राम प्रकाश गोयल एक मानसरोवर

अम्बरीष कुमार गर्ग

आपकी काव्य-कृति एक 'समन्दर प्यासा-सा', डॉ0 महेश दिवाकर, के द्वारा प्राप्त हुई। पुस्तक का अवगाहन करने पर मुझे 'समन्दर ' मिल ही गया लेकिन मुझे नहीं लगा कि वह समन्दर खारा है। मुझे नहीं लगा कि यह समन्दर हारा है। वह अभी संयम की सीमाओं में बँधा है। यदि उसका संयम टूट गया होता तो वह भूतल पर प्रलय मचा देता।

वह समन्दर भीष्म बना हुआ शर-शैया पर लेटा है। त्रासदियों के बाणों से बिंधा हुआ भीष्म किसी को शाप नहीं दे रहा है। किसी के अनिष्ट की कामना नहीं कर रहा है। फिर ? कहाँ है इसमें खारापन ! दर्द की अभिव्यक्ति का नाम खारापन नहीं होता। हाँ, उस समन्दर में प्यास है। एक अतृप्त प्यास। एक अनबूझ प्यास। उस समन्दर का नाम है – राम प्रकाश गोयल।

दर्द का अन्दाज तो एक आँसू देखने से लग सकता है लेकिन जिस (समाज) की संवदेनाएँ पथरा गई हों व अश्कों से तर बिस्तर देख कर भी दर्द का अन्दाज़ नहीं लगा सकता। हम ऐसी पत्थर की भित्तियों में संवेदनाएँ कब तक ढूँढ़ते रहेंगे ? मैं जानता हूँ कि हम पत्थर के शिवलिंग पर सदियों से जल-चढ़ाते आए हैं – इस विश्वास को लेकर कि शायद किसी दिन यह पत्थर द्रवीभूत हो जाए। यह एक सकारात्मक प्रयास है। हमारी शाश्वत् जिजीविषा है। यद्यपि प्रत्येक जिजीविषा किसी मृग-मरीचिका पर जाकर बिखर जाती है लेकिन हम उस बिखराव को समेटने में फिर से जुट जाते हैं और यह क्रम चलता रहता है।

नहीं, नहीं ऐसा कुछ भी नहीं है। सारी उपमाएँ गलत हो गईं। सारे रूपक उलझ गए। राम प्रकाश गोयल समन्दर हैं ही नहीं। वह तो 'मानसरोवर' हैं। उसने किसी भी नदी को पिया नहीं है। उसने तो नदियों को जन्म दिया है। वह दूसरों की प्यास बुझाता है लेकिन अपने आप वैसा ही निष्काम बना रहता है। वह प्यासा है – केवल इसलिए कि अभी तक 'आदमी' प्यासा है। वह आदमी की प्यास बुझाने के लिए निरन्तर बह रहा है। वह कहीं गंगा बनकर प्यास बुझाता है, कहीं यमुना बन कर, कहीं सिन्धु बन कर। वह कहीं मन्दाकिनी है तो कहीं ब्रह्मनद है। इस मानसरोवर ने विसंगतियों में जीना सीख लिया है।

समन्वयक, शिक्षा विभाग, गोकुलदास गर्ल्स कालेज, मुरादाबाद

PROF. R. P. GOEL - AS I KNOW

Dr. S. C. Agrawal

A Senior Colleague of mine Sri Ram Prakash Goel joined as lecturer in the faculty of Law. Bareilly College Bareilly in the year 1968 I had the privilege of meeting him on different occasions, Academic Meetings Faculty seminars, Conferences, Mushaira Kavi Sammelan, Kavi Gosthi and University Examination. He believes in perfection His personality reflects an outstanding Sincerity and Gravity every where.

I may be permitted to record my stepwise opinion.

As an academician :

Howsoever a teacher qualified and experienced may be but his success could only be calculated from the angle of students. I found his students always had a word of praise even in his absence. His departmental colleagues Prof O.B.L. Saxena, then Head of the Law Department and Prof. Narain Singh Srivastava too spoke very high of him

While in the Court :

My friend Late Sri Murari Lal Saxena Advocate used to sit close, to Sri Goel in the courts I remember he used to regard him as the only trust worthy member in his circle

As a Poet

What a curious combination of two in one in him It is indeed difficult to differentiate as he has equal command on Hindi and Urdu ? Persons who have had as opportunity of listening him from the stage would probably agree that he occupies equal position on both the ancient languages.

Successful Writer :

Needless to mention popularity he has earened on his novel "Toot-Te-Satya" Dard Ki Chhaon Mein, Ek Samandar Pyasa Sa.

As a father :

I have come across to feel the emotional attachment that he keeps in his heart for his children all the time. As a result of his blessings all his children are well off and have full regards for the parents

As a husband :

Maintains a perfect balance while handling all sorts of house hold responsiblities He is fortunate enough that he has been gifted by an extra ordinarily careful, God fearing and sensitive wife to look after every thing in the life all the time.

I wish Almightly may grant him a very long life

Reader, Department of Zoology
Bareilly college, BAREILLY

हमारे नानाजी

मानवी अग्रवाल

हमारे नानाजी बहुमुखी प्रतिभा के स्वामी हैं। उनके पास अनुभवों और ज्ञान का एक ऐसा भंडार है जिसके द्वारा हम अपनी जिज्ञासा शान्त कर सकते हैं। उन्होंने अपनी कल्पना और शब्द शक्ति द्वारा अपने लेखन को नित्य नये आयाम दिये हैं। ऐसा इसलिए संभव हो सका क्योंकि वे सदा अध्ययन करते रहते हैं। उनकी तीक्ष्ण बुद्धि आज भी हमारे विषयों को पढ़ाने में सक्षम है। अपनी ज्ञानबर्द्धक बातों से वे सदा हमारा मार्गदर्शन करते रहते हैं।

संगीत प्रेम के कारण ही उनका ग़ज़ल संग्रह का कैसेट 'आईना' बना है जो हमें बहुत अच्छा लगा।

इन सब ख़ूबियों के साथ एक कमी हमें खलती है कि वह कम बोलते हैं। परन्तु यह कमी भी तब लुप्त हो जाती है जब वह बिना शोर शराबे के चुपचाप अपनी सुंदर किताब लिख लेते हैं। शृंखला की एक ऐसी ही कडी है 'एक समन्दर प्यासा-सा' जिसकी एक कविता 'वह पल' मुझे बहुत अच्छी लगी और जिसने मेरे हृदय को छू लिया।

मैं उम्मीद करती हूँ कि हमारे नानाजी स्वस्थ रहकर अपनी उम्र के साथ साथ अपनी किताबों का भी शतक पूरा करें।

हल्द्वानी

हरफ़नमौला नाना जी

शशाँक अग्रवाल

अपने जीवन की 74 सीढ़ियाँ चढ़ चुके मेरे नाना जी अनेक प्रतिभाओं के मालिक हैं। इनकी अनेक पुस्तकें भी छप चुकी हैं। जैसे - "एक समन्दर प्यासा-सा", 'प्रेम पत्र- आदि। कभी-कभी तो उनके प्रभावशाली व्यक्तित्व को देखकर सोच में पड़ जाता हूँ कि "क्या यही मेरे नाना जी हैं ?" समाज के प्रति भी वह जागरूक हैं और उसमें सशक्त रूप से अपनी भूमिका निभाते हैं। अकसर उनकी समाज सेवा के प्रति लगन इतनी बढ़ जाती है कि वह अपने घरेलू जीवन की ओर ध्यान ही नहीं दे पाते हैं जिसे देखकर मुझे बहुत अफ़सोस होता है।

अपने स्वास्थ्य के प्रति भी वह बहुत जागरूक हैं। हर रोज़ वह सुबह उठकर व्यायाम करते हैं जो उनको तंदुरुस्त रखता है।

अन्त में मैं इतना कहना चाहूँगा कि मेरे नाना जी हरफ़नमौला हैं इसलिए कभी-कभी उनको गहराई तक समझने की इच्छा होती है

एक साफ़ सुथरा व्यक्तित्व – प्रो. रामप्रकाश गोयल

बाबू राम गुप्ता

मेरा गोयल साहब का परिचय लगभग 10 वर्ष पुराना है। मैं कानपुर से अपने लड़के से मिलने के लिए बरेली साल में 1 या 2 बार आया करता हूँ। इसी दौरान मेरा गोयल साहब से साक्षात्कार किसी संयोग वश हो गया। उनकी चतुर्मुखी प्रतिभा से मैं अवाक् रह गया। तबसे जब मैं बरेली आता हूँ तो उनके निवास पर इस प्रकार जाने लगा हूँ जैसे कोई यात्री तीर्थ स्थान पर जाता हो।

मुझे उनकी साहित्य सेवा की जानकारी वर्षों बाद हुई जबकि पहली बार उनका उपन्यास "टूटते सत्य" मेरे हाथ में आया। उसमें कथानक एक क्रम से पिरोया गया था जिससे पाठक इस भ्रम में पड़ जाता था कि वह सत्य कथा का पात्र है अथवा उसे दूर से देख रहा हो। फिर उनका काव्य "दर्द की छाँव में" देखने को मिला। उस समय उनकी काव्य रचना का प्रखर रूप सामने आया। "एक समन्दर प्यासा–सा" ने कवि गोयल को ऊँचाइयों तक पहुँचा दिया। क्या ग़ज़लें हैं। इन ग़ज़लों को पढ़ कर फिर पढ़ने का मन करता है। मैं कोई साहित्य का मर्मज्ञ नहीं हूँ। जो कुछ लिखा है एक साधारण पाठक की प्रतिक्रिया मात्र है। मुझे ऐसे में आदरणीय बच्चन जी की स्मृति आ जाती है जब वह भारत सरकार के आफ़ीसर–आन–स्पेशल ड्यूटी थे और विलिंगडन क्रीसेन्ट में निवास करते थे। उस समय उनसे मिलने के अनेक अवसर मिले। क्या उनका गौरीशंकर पर्वत समान व्यक्तित्व था। उनकी याद फिर गोयल साहब ने जागृत कर दी।

साहित्य साधना के अतिरिक्त अनेक व्यक्ति एवं संस्थाएँ उनकी कृपापात्र हैं। किसी लेखक या कवि की चिकित्सा, जिसे वह धनाभाव के कारण नहीं करा पा रहा हो या कोई निर्दोष व्यक्ति जो पुलिस की चपेट में आ गया हो – यह सब ऐसे विषय हैं जो उनकी कृपा के पात्र हैं, जिसकी सहायता वह प्राथमिकता के आधार पर करते हैं। मुझे कानून में रुचि व दिलचस्पी है। जब किसी बिन्दु पर उनसे परामर्श किया तो जो उनका सटीक उत्तर सामने आया वह किसी सारगर्भित ग्रन्थ को फीका कर देता है। आख़िरकार वह एक कॉलेज में क़ानून के प्राध्यापक रहे हैं।

एफ–44, किदवई नगर, कानपुर – 208011

प्रो0 राम प्रकाश गोयल – एक परिप्रेक्ष्य

प्रेमनारायण 'प्रेम'

श्री रामप्रकाश गोयल, जो कि देश-प्रदेश के सम्मानीय व्यक्ति है, उनके विषय में कुछ भी आधिकारिक रूप से लिखना या कहना सरल नहीं हैं। यह सौभाग्य ही है कि उनका जन्म बरेली के उसी मुहल्ले में हुआ जहाँ मेरा जन्म हुआ। होश सम्भालते ही उनको विभिन्न रूपों में देखने का अवसर मिला। जब छोटा था, उनका व्यक्तित्व मानस पटल पर अंकित हो गया और समय के साथ रंगों की विभिन्न छटाओं के साथ उभरता गया। सन् उन्नीस सौ पच्चीस के दशक से आज तक इस नयी सहस्राब्दि के प्रथम वर्ष में जब वह 75 वर्ष की अवस्था पार करने वाले ही हैं, उनका जीवन कर्म, सृजन उदाहरण है। आज, जब उनके बहुत से सहयोगी उनका साथ छोड़ गये, समय के थपेड़ों के साथ निष्क्रिय हो गये, पराश्रित हैं, विक्षिप्त और संकटग्रस्त हैं, श्री रामप्रकाश गोयल आज भी उतने ही कर्मठ, जागृत, तेजस्वी हैं जैसे मैंने उनको 1940 के दशक में देखा था। वह विलक्षण स्मृति के धनी हैं। शब्दों के चयन एवं वार्तालाप के आचार्य और दूरदृष्टा हैं। उनके सम्मुख बैठकर आत्मीयता का बोध होता है। वह अभिमान से दूर लेकिन स्वाभिमानी हैं। उनका मधुर भाष कर्ण प्रिय तथा मन को झंकृत करने वाला है।

75 वर्ष की अवस्था में उन्होंने जो पाया है, उसका अपना इतिहास है। उसके पीछे उनकी तथा उनके परिवार की अटूट तपस्या है। उन्होंने अपना तरुण जीवन, ऐसा समय जो हमारे जीवन का स्वर्णिम काल है, राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ की सेवा में समर्पित कर दिया। संघ में उनकी निष्ठा, आस्था तथा कर्मठता का विवेचन करने के प्रश्चात् उनके वरिष्ठ अधिकारियों ने उनको राजस्थान में प्रचारक के रूप में नियुक्त कर दिया। राजस्थान की तप्त एवं शीतल भूमि यद्यपि उनके स्वास्थ्य के अनुकूल नहीं थी किन्तु वे अपने कार्य में पूर्ण दत्तचित्त होकर संलग्न रहे। लेकिन शरीर की भी अपनी सीमायें हैं। जब सब कुछ चरम बिन्दु पर आ गया तो उनको बरेली पुनः वापस आना ही पड़ा। इस सन्दर्भ में इतना कहना भी उल्लेखनीय है कि श्री रामप्रकाश जी ने संघ के प्रचार-प्रसार के समय भी अपने अध्ययन में किसी भी प्रकार की कमी न आने दी और अवकाश के प्रत्येक क्षण का सदुपयोग कर उपयोगी साहित्य का अध्ययन करते हुए उन्होंने विधि स्नातक की उपाधि भी राजस्थान विश्वविद्यालय से प्राप्त कर ली।

वह एक ऐसी उपाधि थी जो एक कठिन समय में उनकी जीवकोपार्जन की प्रक्रिया का एक अंग बन गयी।

श्री राम प्रकाश गोयल बहुआयामी व्यक्तित्व के पुरुष हैं। जन साधारण में उनकी पहचान अनेक रूपों में की जाती रही है। व्यवसाय से वह अधिवक्ता के रूप में तो ख्याति प्राप्त कर ही चुके हैं पर वह कवि, ग़ज़लकार, उपन्यासकार, पत्र-लेखक, नाटककार, अभिनेता तथा प्राध्यापक के रूप में भी अपने अस्तित्व की स्थापना कर चुके हैं। यही कहना सही है कि उनमें जन्मजात प्रतिभा थी पर उस प्रतिभा का विकास एवं विलक्षणता का रूप उनके जन्म से लगभग 47 वर्ष बाद देखने को मिला, जब उनकी कृति 'टूटते सत्य' जो त्रिकोण प्रेम पर आधारित मनोवैज्ञानिक उपन्यास है पाठकों के लिए तैयार थी। वह रचना पुस्तक के रूप में सन् 1972 में जनता के सम्मुख आयी। आज के उनके बहुआयामी रूप की पृष्ठभूमि उनके जीवन एवं सृजन का अंग है। उनको कई बार शारीरिक वेदनाओं और कष्टों से जूझना पडा। सन् 1945 से लेकर सन् 1998 तक कितनी ही बार वह शारीरिक कष्टों से प्रताड़ित रहे पर यह कष्ट उनकी दृढ़ इच्छा शक्ति को कमज़ोर नहीं कर सके। हर बार वह उन परीक्षाओं में खरे उतरे तथा नव-विश्वास और साहस के साथ कर्मक्षेत्र में और भी सक्रिय हो गये। उन वेदनाओं के क्षेत्रों में उन्हें अलौकिक शक्ति प्राप्त हुई जो अच्छी रचनाओं, अभिनयों में स्पष्ट प्रतीत होती है। शारीरिक कष्ट के रिक्त समय में उनका मानस चिन्तन करता था, सृजन की और निर्माण की। 1998 में उनकी हृदय-शल्य चिकित्सा हुई। शल्य क्रिया के तत्काल बाद ही उनका आत्म विश्वास देखने योग्य था। आज भी वह किसी शारीरिक कार्य से पीछे नहीं हटते, क्रियाशील रहते हैं तथा दूसरों का सम्बल बने रहते हैं। कैसी विलक्षण प्रतिभा का है यह व्यक्ति। लौह इच्छा शक्ति, संवदेनशील मानस, तेजस्वी व्यक्तित्व।

श्री गोयल परोपकारी हैं। शिक्षा एवं शिक्षण संस्थाओं से जुड़े रहने के कारण वह छात्रों की प्रतिभा का आदर करते हैं और उनको किसी न किसी रूप में उत्साहित भी करते हैं। उन्होंने बरेली की प्रमुख शिक्षण संस्थाओं के लिये दस पदक। पारितोषिकों की व्यवस्था की है। 1990 में उन्होंने अपने दिवंगत एक मात्र पुत्र विवेक गोयल की स्मृति में 'विवेक गोयल साहित्य पुरस्कार' की स्थापना की। यह पुरस्कार प्रत्येक वर्ष 'हिन्दी दिवस' पर 14 सितम्बर को एक साहित्यकार को प्रदान किया जाता है।

एम0ए0, एल0एल0एम0 भू0पू0 राजनयिक
दिल्ली

युग पुरुष श्री गोयल

मौ0 फ़हीम सिद्दीकी

22 अक्टूबर 1994 समय रात्रि लगभग 9 बजे मेरी मुलाकात जनाब राम प्रकाश गोयल साहब से एक वैवाहिक कार्यक्रम में हुई थी। वैसे तो उक्त प्रोग्राम में हिन्दुस्तान के मशहूर शायर, प्रोफेसर, डॉक्टर और अधिकारीगण मौजूद थे लेकिन जब मेरी गोयल साहब से मुलाक़ात कराई गई तब इनमें बनावट और दिखावा कहीं दूर तक मुझे नज़र नहीं आया।

इनका सरल स्वभाव और मीठी वाणी चेहरे पर मुस्कराहट से सभी चीजें मेरे दिल में इनके लिए घर कर गई। इसके बाद फिर मेरा इनसे सम्पर्क बन गया और आना जाना शुरु हो गया। आपका काव्य सग्रह ''दर्द की छाँव में'', ''रिसते घाव'', व 'सच्चे प्रेम पत्र', 'एक समन्दर प्यासा-सा' का मैंने अध्ययन किया। मैं तो यही कहूँगा कि इनकी शायरी ने मौजूदा घटनाओं और हालात को अपनी शायरी का मौजूँ बनाया है तथा इन्होंने शायरी में 60 प्रतिशत उर्दू व 40 प्रतिशत हिन्दी का इस्तेमाल किया है।

बड़ी बात को छोटी बात में कहना इनकी विशेष योग्यता है। हिन्दी उर्दू के सरल शब्दों में शेर कहना इनकी आदत है। इनके ये शेर मुझे बहुत पसन्द हैं :-

अन्दाज़ा लगा पायगा क्या दर्द का मेरे,
तर अशकों से जिसने मेरा बिस्तर नहीं देखा।
वक्त से क़ब्ल मर गया कोई,
फूल बनकर बिखर गया कोई।

उक्त शेर इनके दिल की आवाज़ है और इन्होंने उक्त मतला अपने पुत्र की मृत्यु के उपरान्त कहा होगा। बहुत अच्छा मतला है। आज के इस दौर में मैं समझता हूँ कि जनाब गोयल साहब एक युग पुरुष हैं और मैं ईश्वर से यही प्रार्थना करता हूँ कि इनकी लम्बी आयु हो ताकि ये दुनिया में अपनी क़लम के माध्यम से सच्चा प्रेम, भाईचारा, हमदर्दी, नजाकत इज्जत शोहरत और मुहब्बत का सन्देश दे सकें

समन्दर-सा प्यासा : श्री गोयल

रामसूर्ति गौतम "गगन"

श्री रामप्रकाश गोयल एडवोकेट बरेली महानगर की बहुआयामी प्रतिभा हैं जिसका प्रकाश सभी क्षेत्रों में यश की किरणों से ज्योतित है। गीत, ग़ज़ल, नाटक, वार्ता, अभिनय, आकाशवाणी से दूरदर्शन तक फैलकर अपनी सुरभित रश्मियों से जनमानस के हृदय पटल पर परिचय की छाप छोड़ते हैं। विज्ञान के स्नातक, विधिवक्ता, प्रवक्ता, निधियों के धनी परन्तु समय के विषम प्रहारों से घायल हृदय में पीड़ाओं को समेटे जीवन पथ पर आदर्शों के चिन्ह बनाता पथिक, संसार के स्वार्थों के जंगल में प्रेम की छाँव ढूँढ़ता रहा। परमार्थ, न्याय और सत्य की खोज का दर्पण विसंगतियों को दिखाता चल रहा सूर्य की भाँति अपने ढलने तक के कटु अनुभव एवं भावों को उड़ेलता रहा जो चिरस्मरणीय और जनमानस को दिशा ज्ञान देने वाले सिद्ध होंगे। बरेली महानगर ही नहीं अपितु अन्य जनपद व प्रान्तों में भी श्री गोयल जी के यश की कस्तूरी अपनी गंध बिखेर रही है। मैं उनके सुखद एवं मंगलमयी जीवन की कामना करता हूँ।

तीस जून पच्चीस को बरेली आँचल में,
बहुमुखी प्रतिभा का खिला एक फूल है।
प्रेम के सुमेरु चढ़ा साहस की सीढ़ियों से,
सौम्य शील साधना का संत सानुकूल है।
सरस सुधा को बाँट चातक-सा प्यासा रहा,
लेखनी का धनी और सर्जना का तूल है।
'टूटते सत्य' और 'दर्द की छाँव में'
'सच्चे प्रेम पत्र' का 'आईना' समूल है।।

काल के कुठाराघात कर गये वज्रपात,
छा गया है जीवन में सघन कुहासा-सा
ढूँढ़ता रहा है मन मृग ममता की छाँव,
लगता है कुंठाओं का पत्थर तराशा-सा।
काल का कुचक्र कर गया पंगु कामना को,
तेज-पुंज भास्कर डूबता उदासा-सा।
भरता रहा है प्रेम सुधा से कलश नित,
सपनों का रह गया है 'समन्दर प्यासा-सा'

प्रहलाद नगर, मढ़ीनाथ रोड,
बरेली

कुछ सफ़र-कुछ हम सफ़र

विनय कुमार जायसवाल 'सागर'

साहित्यकार एवं ग़ज़लगो श्री रामप्रकाश गोयल निस्सन्देह आज एक बड़ा प्रतिष्ठित नाम बन चुका है। आज गोयल साहब का नाम पत्र-पत्रिकाओं, समाचार पत्रों, आकाशवाणी, दूरदर्शन, नाटक, फ़िल्मों आदि के माध्यम से होते-होते उनकी अपनी कृतियाँ - "दर्द की छाँव में", "रिसते घाव", "टूटते सत्य", "सच्चे प्रेम पत्र" और 'एक समन्दर प्यासा-सा' तक आ पहुँचा है।

उनकी इस ऊँची छलाँग से उनके समकालीन एवं पूर्वकालीन साहित्यकारों एवं विशेषकर उर्दू शायरों को (मुझ समेत) बहुत हैरत है क्योंकि गोयल साहब अपनी रचनाओं (ग़ज़लों) से या अपने क्रिया कलापों से इतनी बड़ी शख्सियत कभी नहीं लगे।

उनकी शायरी भी काफ़ी हद तक सादगी के साथ उनके ही इर्द-गर्द घूमती सी लगती है। उनकी शख़्सियत भी देखने में सादगी ओढ़े हुये ही लगती है।

श्री राम प्रकाश गोयल साहब पूर्व में राजनीति के भी खिलाड़ी रह चुके हैं और, गाहे-ब गाहे आज भी बड़े-बड़े राजनीतिज्ञों से जुड़े हुये हैं। वे समाज सेवी भी हैं।

आप पेशे से वकील हैं और एक मँझे हुये वकील माने जाते हैं। जिस तरह वह अपने पेशे में सोच समझ कर क़दम बढ़ाते गये हैं उसी तरह शायरी की डगर पर भी उन्होंने अपनी उसी सोच समझ का सहारा लेकर मंज़िलों को छूने की कोशिश की है।

उनकी शायरी सादा और अपने वजूद में सिमटी हुई सी मालूम पड़ती है। उनकी शायरी उनकी अपनी बात अपना दर्द और अपनी फ़िक्र के साथ-साथ दोस्तों की ख़लिश और उनके दोग़लेपन की शिकायत ही अधिकतर करते हुये मिलती है। ऐसा लगता है गोयल साहब को तमाम उम्र दोस्तों की बेवफ़ाई का सामना ही करना पड़ा है। शायद उनकी ज़िन्दगी में एक भी बावफ़ा दोस्त नहीं मिला या यूँ कहिये कि वह खोज नहीं पाये या फिर दोस्तों से ज़्यादा उम्मीद कर बैठे हों।

सोच समझकर अदा किया उसने हर किरदार।
लोगों को लगने लगा गोयल है फ़नकार।।
होठों पे मुस्कान है आँखों में है नीर।
लहजा-लहजा झाँकती उसके मन की पीर।।

846 शाहबाद गोंदवी चौक
जोगी

पत्र

प्रो0 हरिशंकर 'आदेश'

प्रिय डॉ0 महेश दिवाकर जी,

साहित्यकार प्रो0 राम प्रकाश गोयल एक महान हिन्दी सेवी हैं। उनके अभिनन्दन ग्रन्थ की श्लाध्य योजना के आयोजक बधाई के पात्र हैं। मैं इस ग्रन्थ–यज्ञ में अपनी आहुति न डाल सका, तदर्थ खेद है। इसका कारण यह नहीं कि मैं कुछ लिखना नहीं चाहता (कवि और लेखक तो जन्मजात लेखनी–व्यसनी होता है) अपितु मेरी व्यस्तता, यथाशक्ति देश विदेश में हिन्दी भाषा, साहित्य भारतीय संस्कृति तथा अध्यात्म के प्रचार–प्रसार हेतु परिभ्रमण तथा एक स्थान पर अधिक देर तक न रुकना ही मूलतः मेरे पत्रोत्तर तथा पत्रांकन में विलम्ब का कारण बन जाता है। कहने को इतना होता है कि अधिक समय की अपेक्षा होती है। सोचता हूँ, आज लिखूँगा, कल लिखूँगा और यही मानसिक तैयारी करते करते बारात बिदा हो जाती है। प्रो0 राम प्रकाश गोयल जी पर प्रकाशित अभिनन्दन ग्रन्थ की एक प्रति मैं भी प्राप्त करना चाहूँगा। आप उनके अभिनन्दन समारोह पर उन्हें मेरी ओर से बधाई प्रदान करें। आज के इस अहंवादी युग में प्रो0 राम प्रकाश गोयल जैसे निःस्पृह साहित्य सृजनधर्मी तथा सिन्द्धातों से समझौता न करने वाले संस्कृतनिष्ठ साहित्यकार मिलने कठिन होते हैं। आज के स्वच्छन्दतावादी व्याकरण विहीन साहित्य सृजन संक्रान्ति काल में मानवीय आदर्शों, जीवन के नैतिक मूल्यों तथा काव्य की गरिमा को बनाए रखना बड़ी टेढ़ी खीर माना जाता है। श्री गोयल जी इन सभी कसौटियों पर खरे उतरते हैं। हिन्दी भाषा के प्रचार प्रसार में यावज्जीवन रत रहने वाले एवं हिन्दी को समर्पित ऐसे बहुआयामी महान व्यक्तित्व वाले निराभिमानी साहित्यकार का अभिनन्दन भारतीय संस्कृति का अभिनन्दन है, हिन्दी का अभिनन्दन है। राजर्षि पुरुषोत्तम दास टण्डन की परंपरा के ही उत्तर प्रदेश के गणमान्य हिन्दी–सेनानी का अभिनन्दन समस्त हिन्दी साधकों एवं हिन्दी स्वयं सेवकों का अभिनन्दन है। ईश्वर उन्हें शतायु करें

18 शुगर बुश ~~~~ वेस्ट हिल अन्टारियो (कैनाडा)

भावांजलि

डॉ0 मृदुला शर्मा

राम प्रकाश हृदयस्य सदाऽवलम्बः
आशासितः शुभगुणैर्लसितो विवेकः।
कालेन निर्दय करेण हृतोऽप्यकाले,
कं वीक्ष्य मातृपितरौ धरतांस्वधैर्यम्।।1।।

अर्थात् शुभ गुणों से युक्त

पुत्र विवेक श्री राम प्रकाश के हृदय का सदा अवलम्ब रूप आशासित था।

किन्तु अकाल में काल ने अपने निर्दय हाथों से इसे छीन लिया। अब माता-पिता किस विवेक से धैर्य रखें।

मन्ये, विवेक रहितो यमराद् तदाऽऽसीत्,
तस्माज् जहार धरणीतनयं विवेकम।
एवं कृते न गणना भविता-यमस्य्,
सदसद् विवेकिषु जनेषु कदापि भूयः।।2।।

अर्थात् हम मानते हैं कि उस समय यमराज विवेक से रहित था इसलिए वह इस धरती पुत्र विवेक को ले गया। इतने पर भी यमराज की सद्सद् विवेकीजनों में गणना कदापि न होगी।

राम प्रकाश हृदयं व्रणितं तदानीम्,
तस्मादजस्मपि तत् स्त्रवति प्रणंहि।
वर्षान्त एवं भवतीह विरोपणं तत्,
प्रत्यब्दमुच्चरति हन्त विमोचनेन।।3।।

अर्थात् उसी समय पिता राम प्रकाश का हृदय व्रणित हो गया। तब से निरन्तर ही वह घाव रिस रहा है। वर्ष भर (364 दिन में) इस घाव का विरोपण (भरना) हो जाता है किन्तु प्रति वर्ष स्मृति दिवस पर (365 वे दिन) यह घाव पुनः विमोचन होने पर रिसने लगता है।

41 प्रभात नगर बरेली

श्री राम प्रकाश गोयल – साक्षात पीड़ा

राम प्रकाश सिंह 'ओज'

रवि के प्रकाश से कवि का प्रकाश कम स्थाई नहीं। रवि उदय होकर शाम को अस्त हो जाता है परन्तु कवि उदय होता है तो कभी भी अस्त नहीं होता।

जिस प्रकार "प्रकाश" का प्रकाशित होना ही गुण है, धर्म है, कर्तव्य है न कि व्यापार। उसी प्रकार कवि का प्रकाशित होना भी गुण है, धर्म है, कर्तव्य है न कि व्यापार।

ऐसे ही एक कवि बरेली महानगर के विख्यात साहित्यकार "श्री राम प्रकाश गोयल" हैं जिनकी लोकप्रियता दूर-दूर तक विद्यमान है।

आप साहित्य के प्रति सदैव से तन, मन, धन से समर्पित हैं। इसके अलावा भी आप में कई विशेषतायें हैं। जैसे कि अन्याय सहन न करना, दूसरों के दुख से दुखी होना, हर संभव उसकी सहायता करना और समय-समय पर निर्धन व्यक्तियों की सहायता करना।

आपकी मुख्य विशेषता यह है कि आप जो भी कार्य करते हैं उसे बड़ी लगन से एवं मन लगाकर करते हैं। आपका स्वभाव सरल, मृदुभाषी, अहंकार रहित तथा अपने से छोटों को विशेष सम्मान देना है

मुझे विश्वास है कि ऐसे महान व्यक्ति के चरित्र से युवा कवि अवश्य प्रेरणा लेकर अपना भविष्य उज्ज्वल बनाने का प्रयास करेंगे।

मेरा गोयल साहब से परिचय 31.12.97 को "शब्दांगन" साहित्यिक एवं सामाजिक संस्था की मासिक काव्य गोष्ठी में आदरणीय श्री इन्द्रदेव त्रिवेदी के निवास स्थान पर हुआ था। उन दिनों मैंने लेखन कार्य आरम्भ ही किया था। जब हम दोनों को पता लगा कि हमारे एक से नाम हैं तो दोनों को अधिक प्रसन्नता हुई।

मुझे जब इनकी पुस्तक "दर्द की छाँव में" पढ़ने का सौभाग्य प्राप्त हुआ तो मेरे अन्तःमन ने उस पुस्तक को काफ़ी सराहा एवं गोयल जी के लिये हार्दिक धन्यवाद व्यक्त किया एवं इस पुस्तक की भूरि-भूरि प्रशंसा की।

इस पुस्तक में इनका एक शेर तो मुझे काफ़ी प्रभावित कर गया।

अब ग़मे-दुनिया नहीं लगता है ग़म
ये तिरे ग़म की अजब तासीर है।

पुस्तक अति सराहनीय है तथा इसमें उनके जीवन का अनुभव है। तथा "दर्द की छाँव में" से सुख की छाँव तक पहुँचाने का प्रयत्न भी है।

इस पुस्तक के उपरान्त मुझे उनकी पुस्तक "रिसते घाव" पढ़ने की जिज्ञासा हुयी तो मैं अपने प्रिय मित्र श्री रवींद्र मोहन "अनगढ़" जी से माँग कर लाया।

इस पुस्तक की जितनी प्रशंसा की जाये कम ही होगी। "रिसते घाव" में गोयल जी ने सत्य ही कहा है कि :-

घाव ही घाव हैं मिरे दिल में
जो कि रिस-रिस के मुस्कुराते हैं।

वास्तव में गोयल जी के हृदय में अनेक घाव हैं जो सदैव मुस्कुराते तो हैं परन्तु भरते नहीं। उनके जीवन में सबसे दुखद हृदय विदारक घटना 14 फरवरी 1983 को घटी जब उनके एक मात्र पुत्र विवेक गोयल को काल के क्रूर हाथों ने सदैव के लिये उनसे छीन लिया। उसके विछोह के दारुण दुख ने उन्हें मर्माहत और पागल-सा कर दिया। उस समय ऐसा लग रहा था कि वह सब कुछ भूल कर अन्धकार में खो चुके हैं परन्तु उनके अन्तःकरण का विवेक पुत्र बन कर उनका साथ देता रहा और अथक परिश्रम करने का साहस प्रदान करता रहा।

इसका परिणाम सामने आया। वह आज साहित्यिक क्षितिज पर एवं अभिनय के मंच पर चमक रहे हैं। कुछ करते रहने का संदेश दे रहे हैं। सब कुछ होते हुये भी वे एक समन्दर की तरह अपने को प्यासा ही मानते रहे हैं, समन्दर में अथाह जल है। हीरे, जवाहरात एवं मोतियों का भन्डार है फिर भी वह शुद्ध निर्मल जल के लिये प्यासा ही रहता है।

सम्भवतः इसी अनुभव के आधार पर आपने अपनी एक और पुस्तक "एक समन्दर प्यासा-सा" लिखी जिसे पढ़कर ऐसा लगता है कि इस पुस्तक में उनके जीवन के 74 वर्षों का नहीं बल्कि 7400 वर्षों का अनुभव छुपा हुआ है। पुस्तक की शीर्ष पंक्तियाँ हैं :-

पी गया कितनी नदियाँ अब तक एक समन्दर प्यासा-सा,
मीठा पानी पीकर इतना क्यों है अब तक खारा सा।

श्री गोयल जी निरन्तर साहित्य रूपी पौधे को सींच रहे हैं। मुझे विश्वास है उस पर अवश्य फूल खिलेंगे।

ऐसे महान व्यक्ति के लिये मेरा मस्तक सदैव नत् रहेगा।

बरेली

नगर गौरव श्री राम प्रकाश गोयल जी

शिवशंकर 'यजुर्वेदी'

तीस जून उन्नीस सौ पच्चीस को बरेली मध्य,
आप जन्मे आपका कुलीन परिवार है।
श्रेष्ठ अधिवक्ता, श्री राम प्रकाश गोयल जी –
काव्य–ध्येय आपका समाज–उद्धार है।।
आपका सम्मान कर गर्वित हैं संस्थाएँ,
आप शुभ–चिंतक, उर आपका उदार है।
सामाजिक शैक्षिक, साहित्यिक जगत हेतु
आपकी सेवाओं का ऋणी यह संसार है।।

मात जयदेवी, तात मुकुट बिहारी जी के,
पुत्र आप प्रतिभा के धनी कलमकार हैं।
हिन्दी के प्रचार व प्रसार को संघर्षरत–
दूरदर्शन व आकाशवाणी कलाकार हैं।।
एक ही नहीं अनेक संस्थाओं के संरक्षक,
संस्थापक व अध्यक्ष और कर्णधार हैं।
"दर्द की छाँव में", "समन्दर एक प्यासा–सा"
"रिसते घाव", कृतियों के आप सृजनकार हैं।।

"स्वर्गीय विवेक गोयल साहित्यिक पुरस्कार"
हिन्दी प्रगति हेतु संचलन किया आपने।
और छात्र–छात्राओं के उत्साहवर्द्धन हेतु–
पदक, परितोषकों का सृजन किया आपने
न्याय, प्रेम और गीता–ज्ञान के संदेश हेतु
लेखनी से सभी का, आह्वान किया आपने।
आप हैं समाज के हितैषी और सच्चे कवि
सर्वदा ही सच का समर्थन किया आपने।

517, कटरा चाँद खाँ, बरेली

श्री गोयल – सरल अभिव्यक्ति के धनी

प्यारे लाल उपाध्याय

बहुमुखी प्रतिभा के धनी प्रो० रामप्रकाश गोयल जी द्वारा विभिन्न विधाओं (गद्य–पद्य) में लिखी गयी पुस्तकों के पठन से सिद्ध होता है कि वे साहित्य के क्षेत्र में अपना अलग स्थान रखते हैं। वह वास्तव में बहुपठित व बहुश्रुत साहित्यकार हैं। उनके उपन्यास 'टूटते सत्य' में त्रिकोणात्मक प्रेम तथा 'रिसते घाव' व "दर्द की छाँव में" विशेष रूप से विरह व प्रेम का सटीक चित्रण हुआ है।

"एक समन्दर प्यासा–सा" वास्तव में जीवन की सुन्दर अनुभूतियों से परिपूर्ण, भावपूर्ण गज़लों का अनूठा संग्रह है। वैसे उनके द्वारा लिखित सभी पुस्तकों, लेखों व पत्रों में पुरातन व नवीन विचारों का यथार्थपरक सामंजस्य है। वे सब विविधता से परिपूर्ण एवं बोधगम्य रचनायें व लेख हैं। वस्तुतः गोयल जी का सम्पूर्ण साहित्य उच्च विचारों एव सरलता से परिपूर्ण है और उनके साहित्य में उनके सम्पूर्ण सुन्दर जीवन की जीवन्त झाँकी दृष्टिगोचर होती है। उनमें अभिनय प्रतिभा भी है और वह मानव मूल्यों के सुन्दर चितेरे व दार्शनिक कवि हैं।

"रसात्मक वाक्यं काव्यम्" अर्थात रसात्मक एवं विभिन्न रसों से परिपूर्ण कविता ही सत्काव्य की श्रेणी में आती है। इस दृष्टिकोण से गोयल जी की अधिकतर रचनायें रसात्मक एवं माधुर्य भावों से लबालब भरी हुई हैं। सरलता व माधुर्य काव्य का प्राण होता है जो इनकी कृतियों व लेखों में सर्वत्र दिखाई पड़ता है। मुझे यहाँ यह कहने में कोई संकोच नहीं है कि गोयल जी की कृतियों में "क्षणे क्षणे म नवतामुपेति" की उक्ति सार्थकता लिये है।

उनके गीतों, क्षणिकाओं में राष्ट्रीय प्रेम, विरह एवं दर्शन की सरलतम अभिव्यक्ति है। मैं कामना करता हूँ कि "एक समन्दर प्यासा–सा" जो कितनी ही नदियों का जल पी गया है फिर भी है प्यासा। श्री गोयल जी साहित्य सृजन हेतु प्यासे ही बने रहें और अपने जीवन को धन्य करें।

संरक्षक, श्री अगस्त्य मुनि आश्रम, बरेली

अनुपम व्यक्तित्व – प्रो0 रामप्रकाश गोयल

डॉ0 प्रदीप जोशी

अखिल भारतीय साहित्य कला मंच ने साहित्यकार माननीय प्रो0 रामप्रकाश गोयल के अमृत महोत्सव पर उन्हें एक अभिनन्दन ग्रन्थ भेंट कर उनका सम्मान करने की 30 जून 2000 को जो योजना बनाई है उसके लिए भारतीय साहित्यकला मंच को कोटिशः धन्यवाद।

साहित्यकार प्रो0 रामप्रकाश गोयल एक असाधारण व्यक्तित्व हैं, जिनके अन्दर अनेक प्रकार के व्यक्तित्वों का समावेश है। अपनी युवावस्था में सन् 1946 में 21 वर्ष की आयु में समाज एवं राष्ट्र की स्थिति को देखते हुए वे राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के राजस्थान में प्रचारक रहे। अपनी युवावस्था के 5 वर्ष राष्ट्र को समर्पित करने के पश्चात एल–एल0बी0 करके बरेली में 1951 में प्रेक्टिस आरम्भ की। लेकिन केवल निजी जीवन यापन तक आप स्वयं को सीमित न रख सके।

स्वयं अपने आप में प्रतिभा के पर्याप्त प्रभाकर, गौरव के उत्तुंग मेरुश्रंग, कल्पना के प्रकाण्ड कोष एवं भावुकता के अथाह सागर होने के कारण एक ओर समाज के प्रति दर्द, अनेक सामाजिक संस्थाओं से आपका सम्पर्क कराता है, दूसरी ओर आपकी अन्दर की प्रतिभा कविता, ग़ज़लों एवं उपन्यास के रूप में प्रस्फुटित होकर आज साहित्य जगत में प्रकाशमान होती है।

अनेक बार अनेक संस्थाओं द्वारा आपका यह सम्मान किया जाना ही इस बात का सूचक है कि लोग आपके साहित्य की क़द्र, सम्मान एवं आपसे प्यार करते हैं।

आप जैसी विलक्षण प्रतिभा को पाकर बरेली भी धन्य है।

पुनः एक बार इस ग्रन्थ के प्रकाशन हेतु अखिल भारतीय साहित्य कला मंच को कोटिशः धन्यवाद।

रीडर वाणिज्य विभाग
बरेली कालेज, बरेली

मेरे मार्ग-दर्शक : प्रो0 राम प्रकाश गोयल

डॉ0 ललित चन्द्र गुप्ता

माननीय श्री रामप्रकाश गोयल जी से मेरा सम्बन्ध एक गुरु-शिष्य का सा है, बल्कि उससे भी ज़्यादा। मुझे एक सलाहकार, मददगार की आवश्यकता थी मैं गोयल महोदय के सम्पर्क में आया और उन्होंने यथेष्ट परीक्षाओं के पश्चात् मुझे पुत्रवत स्वीकार किया। उस दिन से जी-12, रामपुर बाग, बरेली का मार्ग मेरे लिये एक मन्दिर-सा पवित्र हो गया। मै अपने सभी दुःख-सुख उनसे वर्णन करता रहा हूँ। वह सुनते हैं व उचित परामर्श देते हैं। कई बार मेरे और संकटों के मध्य पर्वत बनकर खड़े हो गये और मुसीबत को अपने ऊपर लेकर मेरे व मेरे परिवार वालों पर आँच भी नहीं आने दी। कभी वह मेरे उत्साह को बढ़ाते, कभी राह में आए धोखे की ओर ध्यान दिलाते जिससे मैं उस मार्ग पर सफलतापूर्वक चल सकूँ। मैं आज गर्व के साथ कह सकता हूँ कि उनकी छत्र-छाया को पाकर मैंने एक दुरुह वस्तु पा ली है।

मैं इस द्विविधा में हूँ कि गोयल साहब का कौन सा पहलू उजागर करूँ। वास्तव में उनके समस्त क्रिया-कलाप लिखित में आने योग्य हैं। उनका विधि सम्बन्धी ज्ञान देखते ही बनता है। कोई क़ानून सम्बन्धी समस्या आई और वह उसमें रम गये जब तक कि उसका निदान नहीं ढूँढ़ लिया। मैंने देखा कि वह गुम-सुम क़ानूनी गुत्थी सुलझाने में दिन रात जुटे रहे जब तक कि उसका एक ग्राह्य स्वरुप नहीं खोज लिया।

कभी उनको साहित्य सृजन की बेला में देखा। वह अपने आसपास की वस्तुओं से जैसे विलग हो जाते और कालातीत झरोखों से झाँकते हुए विस्मृत्ति के गर्भ में कुछ खोजने का प्रयास करते। एक दिन मैं उनके पास जाता हूँ, प्रणाम करके उनके निकटस्थ बैठता हूँ पर वह मेरी ओर ध्यान नहीं देते। बाद में पता चलता है कि वह शेरो-शायरी के भँवर जाल में उलझे हुए थे। वह जो कार्य हाथ में लेते है उसे खूब तन्मयता से करते हैं।

मैंने श्री गोयल जी की जो झाँकी प्रस्तुत की है, उसमें दिखाया कम है, छुपाया अधिक है। यदि उनके जीवन का हर पहलू दर्शाया जाये तो एक पुस्तक बन सकती है। मैं तो उनकी एक चिराग से तुलना करता हूँ जो चारों ओर अपना प्रकाश बिखेरता है और जो भी उसकी परिधि में आता है, प्रकाशित हुए बिना नहीं रहता।

ई-1044 राजेन्द्र नगर, बरेली

बहुमुखी प्रतिभा के धनी–प्रो0 रामप्रकाश गोयल

डॉ0 जितेन्द्र कुमार शर्मा 'ज्योति'

30 जून 1925 को जन्म लेकर बरेली नगर को धन्य करने वाले प्रो0 राम प्रकाश गोयल ने न केवल अपने पिता स्व0 श्री मुकुट बिहारी लाल एवं माता श्रीमती जयदेवी का नाम रोशन किया अपितु वे अपनी बहुमुखी प्रतिभा एवं विचार कौशल के माध्यम से साहित्यिक क्षेत्र में चिरस्थायी कीर्ति–स्तम्भ बने।

संसार में बहुत कम लोग ऐसे होते हैं जिनके जीवनकाल में ही उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व की समीक्षा व्यापक स्तर पर विभिन्न क्षेत्रों के प्रतिनिधियों द्वारा एक समय में एक साथ की जाती है। ऐसे ही सौभाग्यशाली व्यक्ति हैं प्रो0 राम प्रकाश गोयल।

वस्तुतः होता यह है कि समाज में व्यक्ति दो प्रकार से पहचाना जाता है एक, अपने व्यक्तित्व द्वारा, दूसरा कृतित्व के द्वारा। इसके लिए व्यक्ति का जहाँ अत्यन्त प्रभावशाली एवं विविधतापूर्ण व्यक्तित्व का स्वामी होना आवश्यक होता है वहीं एक कुशल एवं परिपक्व चिन्तनयुक्त कृतित्व का धनी होना भी नितान्त आवश्यक होता है। निस्सन्देह प्रो0 राम प्रकाश गोयल इन दोनों ही विशेषताओं से युक्त बहुमुखी प्रतिभा के धनी व्यक्तियों में से एक हैं।

अपने 74 वर्षीय जीवन काल में प्रो0 गोयल ने जहाँ एक ओर विभिन्न साहित्यिक कृतियों का सृजन किया वहीं अपने स्नेहियों की याद में विभिन्न पुरस्कार एवं पदकों का श्री गणेश भी। यह दोनों ही इतने महत्वपूर्ण कार्य हैं जो कि व्यक्ति को सदियों तक जीवन्त बनाये रखने में अपनी अहम् भूमिका अदा करते हैं। व्यक्ति 'स्व' के घेरे से बाहर निकल कर जब 'पर' के विशाल सागर में कदम रखता है तब वह समय प्रारम्भ होता है जब वह अपना न रहकर सबका हो जाता है और इस प्रकार उसके 'सबका' होते ही सब 'उसके' हो जाते हैं, अपने पराये का भेद समाप्त हो जाता है। आज यही स्थिति प्रो0 रामप्रकाश गोयल की है कि वह कुछ इस कदर सबके व सब उनके हो गये हैं कि कहीं परायापन दूर–दूर तक नजर नहीं आता।

मेरा इनका साथ यद्यपि बहुत अधिक नहीं रहा परन्तु जितने अल्प समय में मैं इन्हें करीब से देख व जान पाया हूँ वह यही इंगित

करता है कि वह व्यक्ति नितान्त यथार्थवादी एवं वर्तमान को सलीके से जीने की इच्छा रखते हुए सदैव अपनों की तलाश में भटकता रहा है। इनकी काव्य रचनाएँ इसका जीवन्त प्रमाण हैं। एक अन्जाना सा दर्द, एक अजब सी टीस लेखक के हृदय को सदैव सालती रही है और शायद यही टीस (रिसते घाव) ही इनके लेखन की आत्मा है जिससे अनुप्राणित होकर इनका साहित्य गतिमान बना हुआ है।

इनकी गहरी पारदर्शी आँखें सामने बैठे हुए व्यक्ति के भी पार न जाने क्या (शायद खोया हुआ अपना पन) तलाशती हुई सी प्रतीत होती हैं परन्तु इस स्थिति में भी इनके होठों की मन्द स्मित कभी इनका साथ नहीं छोड़ती। मैंने सदैव इन्हें गम्भीर ही पाया है। उन्मुक्त हास-परिहास शायद इनके दिल के किसी दर्द में डूबकर सिमट सा गया है। इनके एकमात्र पुत्र विवेक गोयल के विछोह को ही मैं इसका हेतु पाता हूँ।

एक व्यक्ति में इतनी मौलिक प्रतिभाएँ यथा – अभिनय (रंगमंच एवं टेली फ़िल्म), लेखन (ग़ज़ल, गीत, कविता, लेख, नाटक एवं उपन्यास), वार्ता (आकाशवाणी एवं दूरदर्शन पर वार्ता एवं साक्षात्कार), राजनीति (भारतीय जनसंघ एवं भारतीय जनता पार्टी), विधि एवं न्याय (17 वर्ष तक विधि प्रवक्ता) के अतिरिक्त विभिन्न सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक एवं साहित्यिक संस्थाओं में सक्रिय योगदान, एक साथ समाहित होकर एक धारा में प्रवाहित हो रही हैं, यही इनके बहुमुखी प्रतिभायुक्त व्यक्तित्व की मूल विशेषता है।

इतना सब प्राप्त होने के उपरान्त अहं आपको छू भी गया हो ऐसा प्रतीत नहीं होता परन्तु अपने स्वाभिमान के साथ भी आपने कभी कोई समझौता नहीं किया है। गंभीर से गंभीर परिस्थितियों में भी आपने अपने स्वाभिमान की सदैव रक्षा की है।

समय-समय पर विभिन्न संस्थाओं द्वारा अनेकानेक पुरस्कारों एवं सम्मान यथा पं० राधेश्याम कथावाचक साहित्य पुरस्कार, कला-कर्मी सम्मान आदि के माध्यम से सम्मानित किये जा चुके श्री राम प्रकाश गोयल एक नितान्त साधारण व्यक्ति से प्रतीत होते हैं और शायद यही साधारणता ही उनका वह गुण है जो कि उन्हें असाधारण व्यक्तित्व का स्वामी बनाकर जन-सामान्य के हृदय में कहीं गहरे तक पैठ गया है।

——— 'शंखनाद' 728 सुभाष नगर,
बरेली

एक प्रो0 रामप्रकाश गोयल के साथ

ज्ञान स्वरूप सक्सेना 'कुमुद'

मेरा व्यक्तिगत परिचय माननीय श्री राम प्रकाश गोयल एडवोकेट जी से पन्द्रह वर्ष पूर्व 'तुलसी स्थल' पर आयोजित एक कवि गोष्ठी में हुआ। मैं उनके मृदुल व्यवहार, रचना धर्मिता से अत्यन्त प्रभावित हुआ। वह हम सब के हितैषी हैं। उनका सरल हृदय एवं उदार भाव जनमानस पर खरा उतरा है। उनकी रचनायें पीड़ा के स्वर को मुखरित करने में समर्थ हैं। त्रिकोण प्रेम पर आधारित उपन्यास 'टूटते सत्य', 'रिसते घाव', 'दर्द की छाँव में', 'सच्चे प्रेम पत्र' एवं 'एक समन्दर प्यासा-सा' उनकी लोकप्रिय प्रकाशित साहित्यिक धरोहर हैं। श्री गोयल ने इन पुस्तकों को आम साहित्यकारों एवं मित्रों तक पहुँचाया।

यहाँ एक संस्मरण का विवरण देने में मुझे अत्यन्त प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है। बरेली में श्री गुलाब राय इण्टर कालेज के श्री मनुदेव शर्मा रिटायर्ड प्रधानाचार्य जो शरीर से काफी कमज़ोर हो चुके थे के सम्मान हेतु कवि गोष्ठी आयोजन समिति ने मन बनाया। क्योंकि गोयल साहब कवि गोष्ठी आयोजन समिति के संरक्षक होने के साथ-साथ मेरे शुभचिन्तक भी रहे हैं अतः मैंने संस्था के मंत्री होने के नाते उनसे सम्पर्क किया तथा उन्हें अपनी भावनाओं से भी अवगत कराया। उन्होंने हमारा मनोबल बढ़ाया। हम आपके साथ हैं - कार्य योजना सुन्दर है - आप क्रियान्वित करें। मैंने श्री गोयल साहब से प्रभावित होकर यह कार्यक्रम 1991 में हाथी वाले मन्दिर साहूकारा बरेली में रखा। हम लोगों के बीच श्री गोयल साहब भी पधारे। उन्होंने प्रसन्न मुद्रा में स्व0 श्री मनुदेव शर्मा को क़ीमती गर्म शाल उढ़ाकर पूर्ण सम्मान दिया। सभी ने श्री गोयल साहब के इस कार्य की अत्यन्त सराहना की। बरेली नगर में एवं बाहर सभी जगह श्री गोयल साहब के शुभ संकल्पों की चर्चा होती रहती है। यह हम लोगों के लिए गौरव की बात है।

301, कुँवरपुर, बरेली - 243003

पिचहत्तरवीं वर्षगाँठ के अवसर प

डॉ० सविता

गूँज रहीं स्वर से जिनके नगरी की सभी दिशाये,
उस विभूति की वर्षगाँठ हम मिलकर आज मनाये
सौम्य स्वभाव, आत्मीयता के गुण से जो हैं भरपू
विविध विधाओं के लेखन में रहते हैं जो हरदम चू
बड़े शौक से गीत, ग़ज़ल और मुक्तक हमें सुनायें,
विद्वत-जन साहित्य-प्रेमियों का दरबार लगायें,
कोई कितना भी रूठा हो पल में उसे मनायें।
उस विभूति की वर्षगाँठ . . . . .

सबसे जो सम्बन्ध बनाते, अग्रज, अनुज, सखा का,
अभिनय और कला में परिचय देते हैं प्रतिभा का,
फ़िल्म, सीरियल में अभिनय के जो हैं रंग दिखायें,
अपनी ग़ज़लों के कैसेट यह आगे भी बनवायें,
गूँजें गली-गली में उनकी ग़ज़लों की चर्चायें।
उस विभूति की वर्षगाँठ . . . . .

संस्थापक, संरक्षक और अध्यक्ष संस्थाओं के,
विवेक गोयल पुरस्कार जलाये दीप आस्थाओं के,
पग-पग रहकर साथ हमारा साहस खूब बढ़ायें,
सभी कलाकारों को लेकर एक मंच पर आयें,
अपने सद-व्यवहार के कारण सारे मित्र लुभायें।
उस विभूति की वर्षगाँठ . . . . .

फैले कीर्ति तुम्हारी गोयल पूरे विश्व भवन में,
भाव समर्पित करती 'सविता' तुम्हें काव्य-कानन में,
फूल बनें सब गीत व ग़ज़लें कलियों-सी मुस्कायें,
शेर और क़तआत आपके गुलशन को महकायें,
सन्ध्यायें दीपावलियाँ हों भोर बहारें लायें
उस विभूति की वर्षगाँठ . . . . .

प्रवक्ता, कन्या महाविद्यालय, भूड़,

भाव विरह का बने आईना : प्रो० गोयल

एस. कालरा

मेरे विचार से श्री राम प्रकाश गोयल पहले एक चितेरे, विचारक व दार्शनिक तथा बाद में एक साहित्यकार हैं। उनकी रचनाओं में मानव मन की पीड़ा के भाव और सोच ज़िन्दगी की सही तस्वीर का आईना दिखाते हैं। साथ ही एक मात्र पुत्र विवेक गोयल के वियोग के कारण उनकी रचनाओं में अध्यात्म-दर्शन व प्रभु के प्रति भय अधिक है जो सीधे हमें अनन्त की गहराइयों व सोच में ले जाकर उस असीम परमात्मा की निकटता का भी बोध कराते हैं। यहाँ तक कि श्रृंगार को भी उन्होंने अध्यात्म व दर्शन से जोड़ने का सफल प्रयास किया है।

गोयल साहब की रचनाएँ चाहे वे किसी विधा-उपन्यास, नाटक, गीत, ग़ज़ल, अतुकान्त व क्षणिका के रूप में क्यों न हों भाषा की सरलता, सहजता, प्रवाह व संप्रेषण का दामन नहीं छोड़ सकी हैं। यह एक अच्छे रचनाकार की पहली पहचान है जो अपनी बात को, विचार को, भाव को जन साधारण तक पहुँचाने में पूरी सहायता करती है। क्लिष्ट भाषा लिखना, कठिन शब्दों का प्रयोग करना कुछ साहित्यकार अपनी योग्यता समझते हैं लेकिन गोयल साहब इन अर्थों में काफ़ी आगे हैं। गोयल साहब की रचनाओं में भाव पक्ष अधिक है।

श्री रामप्रकाश गोयल की कल्पना में वास्तविकता के दर्शन होते हैं। वास्तविकता यह भी है कि गोयल साहब का भावों की प्रस्तुति के लिए शब्द चयन, संयोजन, नियन्त्रण व समन्वय सराहनीय बन पड़ा है। अपनी कल्पना शक्ति एवं विचार शक्ति को जन साधारण तक पहुँचाने-समझाने में गोयल साहब पूरी तरह सफल प्रस्तोता कहे जा सकते हैं।

"मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है" यह तर्क जितना सत्य है उतना सत्य यह भी है कि गोयल साहब सामाजिक, व्यवहारिक, विचारक, दार्शनिक, चितेरे व बहुमुखी प्रतिभा के धनी होते हुए भी अपनी रचनाओं में "दोस्त और दोस्ती" पर कटाक्ष करने से नहीं चूके हैं।

क़िला कोठी, बरेली (उ०प्र०)

अनूठे व्यक्तित्व के धनी : प्रो0 राम प्रकाश गोयल

सुरेन्द्र बीनू सिन्हा

20 वर्ष पूर्व मेरे ही निवास पर आयोजित वसंत पंचमी के अवसर पर 'निराला जयन्ती' में एक 'काव्य गोष्ठी' में गोयल साहब से मेरा परिचय हुआ था। कभी न भुला देने वाली यह काव्य संध्या साहित्यकार एवं पत्रकार स्वं0 निरंकार देव सेवक की अध्यक्षता में हुई थी। श्री राम प्रकाश गोयल ने काव्य पाठ करके सबका मन मोह लिया था। आप हमारे राष्ट्रीय पत्रकारिता संस्थान के सरंक्षक हैं।

सौम्य स्वभाव और आत्मीयता के भंडार प्रो0 गोयल को किसी को अपना बनाने में समय नहीं लगता है। मृदुल भाषी होने के कारण लोग भी आपको जल्द ही अपना लेते हैं। एक अच्छे साहित्यकार होने के साथ साथ आप एक श्रेष्ठ अभिनेता भी हैं।

एडवोकेट गोयल जी 17 वर्ष तक बरेली कॉलेज में लॉ के प्रोफ़ेसर रहे हैं। आपके पढ़ाए कितने छात्र आज अच्छे अधिवक्ता हैं। आपके अनेक छात्र तो जज और मजिस्ट्रेट बन गये हैं।

आप अनेक साहित्यिक, सामाजिक और सांस्कृतिक संस्थाओं से निकट से जुड़े हैं और आवश्यकतानुसार उनकी सहायता करते रहते हैं। आपमें समाज सेवा की भावना कूट कूट कर भरी हुई है।

आपके 75 वसंत पार करने पर मेरी और मेरे संस्थान की बहुत बहुत शुभकामनाएँ।

निदेशक, भारतीय पत्रकारिता संस्थान
बिहारीपुर, कहरवान, बरेली

साहित्य शिल्पी : प्रो0 रामप्रकाश गोयल

सतीश शर्मा

कुशल अधिवक्ता एवं विधि आचार्य रहे श्री रामप्रकाश गोयल का एक लेखक के रूप में परिचय अल्प जीवी नहीं है। श्री गोयल ने अपने युग को खुली आँखें से देखा तथा उसी के प्रेम तथा व्यवहार से सराबोर हो और कल्पना में सँजोकर साहित्य की अनेक विधाओं को जन साधारण में प्रस्तुत किया है।

व्यक्ति के जीवन में कोई न कोई ऐसी घटना प्रायः घटित हो जाती है जो उसके जीवन की दिशा बदल देती है। ऐसी ही घटना श्री गोयल के जीवन में घटी। आपके परिवार में सबसे छोटा एवम् एकलौता पुत्र विवेक गोयल जो 19.9.1966 को जन्मा था दिनांक 14.2.1983 को पिता माता तथा चार बहनों को रोता बिलखता छोड़ भगवान को प्यारा हो गया। इस महान दुख से दुखी हो श्री गोयल के मुख से अनयास ही एक क़तआ निकल पड़ा और उन्हें एक शायर बना गया।

"कैसा मुंसिफ निज़ामे कुदरत है, मार कर मुझको मर गया कोई।"

पुत्र शोक भुलाने हेतु आप ने अपनी लेखन विधा को जाग्रत किया और अल्प समय में ही शायरी के आकाश में चमकते सितारे के रूप में बरेली जनपद तथा आसपास के जनपदों में चमके। आपके ग़ज़ल संग्रह 'एक समन्दर प्यासा-सा', 'रिसते घाव' तथा 'दर्द की छाँव में' उपन्यास 'टूटते सत्य', 'सच्चे प्रेम-पत्र', 'आकाशवाणी वार्ताएँ' छप चुके हैं। टी0वी0 सीरियल यथार्थ, 'आज का सच' तथा 'बहूरानी' में आपका अभिनय सराहनीय रहा है।

आप रामपुर आकाशवाणी तथा बरेली आकाशवाणी से विभिन्न विषयों पर वार्ताएँ तथा काव्य पाठ किया करते हैं। 1992 से 1994 तक आकाशवाणी रामपुर के कार्यक्रम सलाहकार समिति के सदस्य रहे हैं।

25 जून 1993 को दिल्ली दूरदर्शन से एक महान साहित्यकार के रूप में साक्षात्कार एवं काव्य पाठ, 1987 में 'पं0 राधेश्याम कथा वाचक साहित्य पुरस्कार' से सम्मानित, लायन्स क्लब बरेली के 1962 से चार्टर सदस्य, नगर की अनेक साहित्यिक, सामाजिक एवं शैक्षिक संस्थाओं के संरक्षक एवं अध्यक्ष रहे हैं। ईश्वर आपको उत्तम स्वास्थ्य सहित लम्बी आयु दे ताकि आप नव साहित्यकारों, कवियों एवं शायरों का मार्ग दर्शन करते रहें।

सेवा निवृत्त पुलिस उप0निरीक्षक
207, कुंवरपुर, बरेली

बहुआयामी या आकाशधर्मी – प्रो0 राम प्रकाश

जितेन्द्र कमल 'आनन्द'

संसार में तीन तरह के परिचय होते हैं – प्रथम साक्षातपरिचय, द्वितीय समाज में लोक चर्चित परिचय और तृतीय वह परिचय जो इतिहास के पृष्ठों में छिपा हुआ होता है। श्री रामप्रकाश गोयल से मेरा दूसरे प्रकार का परिचय है। मैंने कभी उनसे साक्षात्कार नहीं किया और कभी उनके किसी आयोजन में भी नहीं गया जो देखने मात्र का ही परिचय हो जाता।

डॉ0 नागेन्द्र से मेरा बीसियों वर्ष पुराना परिचय है। चूँकि डॉ0 नागेन्द्र का श्री गोयल से घनिष्ठ बल्कि आत्मीयता का परिचय है अत आए दिन उनकी चर्चा हमारा परिचय बढ़ाती रही है। कभी कवि के रूप में तो कभी शायर के रूप में और कभी कुशल अभिनेता के रूप में तो कभी समाज सेवक के रूप में हमारे बीच आते रहे हैं लेकिन जब 'दर्द की छाँव में' , 'रिसते घाव' और 'एक समन्दर प्यासा सा' के रूप में हमारे बीच पधारे तो आत्मीयता बढ़ना स्वाभाविक ही है। अनेक बार मन में आया कि व्यक्तिगत स्तर से परिचय की दिशा में बढ़ा जाए लेकिन चर्चा में निरन्तर आते रहने के कारण प्रत्यक्ष परिचय की जिज्ञासा को शान्ति मिलती रही। अक्सर सुनता रहता हूँ कि वे अनेक संस्थाओं के संरक्षक हैं, कई एक के प्रधान हैं, कवि गोष्ठियों में अध्यक्षता करते है तो उन्हें आये दिन मुख्य अतिथि बनाया जाता है। कभी साहित्यिक आयोजनों में मुख्य भूमिका निर्वाहित करते हैं तो कभी सामाजिक कार्यों में नौजवानों की तरह जुटे हुए पाये जाते हैं और इतनी व्यस्तता के बीच गीत, ग़ज़ल, कविताएँ और कवियों को प्रोत्साहन का कार्य भी करते हैं। एक ही व्यक्ति इतना कार्य करे वह भी 75 वर्ष का होकर तो आश्चर्य स्वाभाविक ही है।

यदि श्री गोयल जी के व्यक्तिगत जीवन पर दृष्टिपात किया जाए तो लगता है कि वे पीड़ाओं, कष्टों और अन्तर्द्वन्द्वों की चट्टानों के नीचे दबे हुए हैं। एकमात्र पुत्र की मृत्यु, दिल के रोगी 7 बार के फ्रैकचरों से पीड़ित और विसंगतियों से जूझते गोयल जी कैसे जीवित हैं। हमारे लिए तो साक्षात् मूर्ति ही लगते हैं। निस्सन्देह हमारे लिए वे प्रेरणा के स्रोत हैं कि जीवन विपरीत परिस्थितियों में भी कैसे जिआ जा सकता है और कैसे जीना चाहिए। मैं स्वयं नहीं समझ पा रहा हूँ कि उन्हें बहुआयामी व्यक्ति कहूँ या आकाश धर्मी मान कर प्रणाम कर विस्मय के साथ चुप रह जाऊँ कि आप धन्य हैं।

विद्या मंदिर हा0से0स्कूल रामपुर 244901

प्रो0 रामप्रकाश गोयल और उनकी हिन्दी सेवायें

जगदीश 'निमिष'

प्रो0 राम प्रकाश गोयल का सर्व प्रथम परिचय मुझे उनके उपन्यास 'टूटते सत्य' के माध्यम से मिला। त्रिकोण प्रेम पर इस अनुपम उपन्यास के प्रकाशन के समय मैं बरेली कॉलेज में बी0एस-सी0 का छात्र था। जब मैंने कॉलेज की एल-एल0बी0 कक्षाओं में प्रवेश लिया तब तक गोयल साहब बरेली कालेज से विधि विभाग के प्रोफ़ेसर के रूप में अवकाश ग्रहण कर चुके थे। मेरा गोयल साहब से कोई व्यक्तिगत सम्पर्क न होते हुये भी उनके उपन्यासकार होने के नाते मैं उनका प्रशंसक था।

आगे चलकर गोयल साहब ने उत्तर प्रदेश हिन्दी प्रचार समिति के अनेक कार्यक्रमों को सुशोभित किया।

उत्तर प्रदेश हिन्दी प्रचार समिति मुरादाबाद द्वारा वर्ष 1989 में आहूत हिन्दी सप्ताह के अन्तर्गत एक स्तरीय कवि सम्मेलन आयोजित किया गया जिसमें गोयल साहब ने विशेष रूप से बरेली में एक हिन्दी भवन की आवश्यकता पर बल दिया जो आज भी प्रासंगिक है। उन्होंने अँग्रेज़ी की मानसिकता को समाप्त करने पर ज़ोर दिया।

श्री गोयल ने हिन्दी के प्रति अपने विचार व्यक्त करते हुये कहा कि एक विधान, एक प्रधान, एक निशान और एक भाषा के रूप में आज तक हिन्दी को हम स्थापित नहीं कर पाये हैं। हिन्दी को उसका उचित स्थान न मिल पाने के कारण ही हमारी राष्ट्रीय एकता में कमज़ोरी परिलक्षित होती है।

प्रो0 राम प्रकाश गोयल अभिनन्दन ग्रन्थ के माध्यम से उत्तर प्रदेश हिन्दी प्रचार समिति उनके 75 वें वसन्त के पूर्ण होने पर उनका अभिनन्दन करते हुये उनके दीर्घजीवन की शुभकामना करती है और आशा करती है कि वे हिन्दी की श्रीवृद्धि करते हुये शतपथ की ओर सतत अग्रसर होते रहेंगे।

प्रान्तीय महामंत्री
उ0प्र0 हिन्दी प्रचार समिति, बरेली
(प्रधान कार्यालय मुरादाबाद)

प्रो. राम प्रकाश गोयल - मेरी प्रेरणा

उमाशंकर शर्मा 'चित्रकार'

अखिल भारतीय साहित्य कला मंच मुरादाबाद द्वारा रुहेलखण्ड के प्रतिभा शाली साहित्यकार कवि एवं अभिनेता श्री राम प्रकाश गोयल एडवोकेट के 75 वें जन्म दिवस के शुभ अवसर पर 30 जून 2000 को उनके सम्मान में उनके जीवन से सम्बन्धित "अभिनन्दन ग्रंथ" भेंट करने की अनूठी योजना वास्तव में सराहनीय सफल प्रयास है। इस कार्य हेतु मैं साहित्यिक संस्था के संस्थापक श्रीमान डॉ० महेश चन्द "दिवाकर" अध्यक्ष जी को हृदय से इस पुनीत कार्य हेतु धन्यवाद देना अपना परम् कर्तव्य समझता हूँ जिन्होंने श्री रामप्रकाश जी गोयल साहब के जीवन की तमाम साहित्यिक व सामाजिक उपलब्धियों को एक ग्रन्थ का रूप देने का अटल निश्चय कर बरेली महानगर के साहित्यकार जगत को गौरवान्वित किया है।

प्रो० राम प्रकाश गोयल से मेरी सर्व प्रथम भेंट जिला परिषद हाल में आयोजित राष्ट्रीय हिन्दी साहित्य सेवा सम्मेलन के कवि सम्मेलन में, जिसकी अध्यक्षता गोयल साहब ही कर रह थे, सन् 1978 में हुई। मुझे कविता लिखने और काव्य पाठ मंच पर करने की नयी नयी रुचि जागृत हुई थी और तब उस दिन गोयल साहब की अध्यक्षता में काव्य पाठ्य करने का मुझे सौभाग्य प्राप्त हुआ। आप भारतीय जनता पार्टी के प्रबल सर्मथकों में से एक हैं। पार्टी द्वारा आयोजित पार्टी बैठकों में कभी-कभी इनके रामपुर गार्डन स्थित दौलत खाने पर भी जाता था। पूर्व राज्य मंत्री उ0प्र0 सरकार स्व0 सत्य प्रकाश अग्रवाल जी के साथ मेरी बातचीत गोयल साहब के सन्मुख राजनीतिक एवं सामाजिक समस्याओं पर बहुत देर तक होती रही।

गोयल साहब के शालीन एवं मृदुल स्वभाव वश मैं काव्य गोष्ठियों में बेझिझक होकर कविताओं के सम्बन्ध में व अन्य समस्याओं के बारे में भी यदकदा चर्चा करता रहता हूँ। चित्रकला में अत्यन्त गहरी रुचि रखने के कारण ही गोयल साहब मेरी चित्रकला से बहुत प्रभावित हुये और तब उन्होंने मुझे कुछ महीनों तक अपनी पुत्री को चित्रकला सिखाने का अवसर प्रदान किया।

प्रचार सचिव साहित्यिक संस्था - शब्दांगन बरेली
राष्ट्रीय हिन्दी साहित्य सेवा सम्मेलन, बरेली

प्रो. राम प्रकाश गोयल – मेरी नज़र में

ओम नारायण 'नीरज'

श्री राम प्रकाश गोयल जी से मेरा परिचय नगर बरेली की साहित्यिक गोष्ठियों में हुआ। पेशे से वकील, शान्त, सौम्य मृदुभाषी श्री गोयल लोगों का दिल जीत लेने में माहिर हैं। जो भी उनसे मिलता है उनसे प्रभावित हो जाता है। ऐसा ही मेरे साथ भी हुआ। 30 जून 2000 को 75 वर्ष की आयु तक पहुँचने वाले साहित्यकार श्री गोयल की गणना नगर के वरिष्ठ साहित्यकारों में है। गोयल जी को मैंने, राष्ट्रीय हिन्दी साहित्य सेवा सम्मेलन, साहित्य सुरभि, शब्दांगन, काव्यगन्धा आदि विभिन्न मंचों पर देखा व सुना और पाया कि हर जगह पर उन्हें विशेष सम्मान दिया जाता है। सभी साहित्यकारों के प्रति उनके मन में विशेष स्थान है और वे उनके साथ मित्रवत व्यवहार करते हैं। यदि कोई चाहे तो उनसे बहुत कुछ सीख सकता है।

17 वर्ष बरेली कालेज में विधि प्रवक्ता रहे श्री राम प्रकाश गोयल जी पैनी नज़र रखते हैं तथा गुण दोषों का आँकलन शीघ्र ही कर लेते हैं। सभा के मध्य किसी पर छींटाकशी करना उनकी आदत नहीं है। एकान्त में रचना सुनते सुनाते या साहित्यिक चर्चा करते समय वे सहज ही त्रुटियाँ बता देते हैं और उनका निराकरण भी कर देते हैं। विशेष कर नये साहित्यकारों को प्रोत्साहन देना उनकी आदत में शुमार है। चाहे कनिष्ठ हो या वरिष्ठ यदि कोई उनकी किसी रचना पर विचार व्यक्त करता है तो वे उसे ध्यान से सुनते हैं और यदि सुझाव सही हो तो उस पर अमल भी करते हैं।

गोयल जी मुख्यतः ग़जलगो हैं और उनकी ग़ज़लों के तीन संग्रह, 'दर्द की छाँव में', 'रिसते घाव' व 'एक समन्दर प्यासा-सा' प्रकाशित हो चुके हैं। इसके अतिरिक्त 'टूटते सत्य' उपन्यास व कुछ नाटक भी उन्होंने लिखे हैं। अभिनय का शौक़ उन्हें बचपन से रहा है और आज भी है। टी0वी0 सीरियल तथा टेलीफ़िल्मों में भी उन्होंने अभिनय किया है। बहुआयामी प्रतिभा के धनी गोयल साहब के दीर्घ जीवन की मैं कामना करता हूँ।

अशोक नगर, मढ़ीनाथ, बरेली

सरस्वती पुत्र प्रो० गोयल

चन्द्र प्रकाश झा चन्दर

पूज्यनीय रामप्रकाश गोयल जी की अनूठी समाज सेवाओं के विषय में मात्र बरेली नगरी ही नहीं सम्पूर्ण भारत वर्ष एवं देश विदेश में भी लोग परिचित हैं। आप समय-समय पर विभिन्न संस्थाओं द्वारा सर्वोत्तम साहित्य पुरस्कारों द्वारा अभिनन्दित है। आप अनन्त सुधी साधक हैं, मनीषी है। हिन्दी संस्कृत उर्दू एवं अंग्रेजी तथा क़ानून के प्रकाण्ड विद्वान हैं। आप शास्त्रीय मर्यादाओं के अनुवर्ती तथा विवेकपूर्ण नवीन जीवन मूल्यों को अपनाने वाले वर्चस्वी महाकवि छन्दकार, ग़ज़लकार हैं। आपने ग़ज़ल की विधा अद्यावधि काव्य के रूप में जो भी रचा है वह सब नियम पूरक है। नवीन उपमानों, प्रत्यग्र उद्‌भावनाओं, ललित कल्पनाओं और भारतीय संस्कृति के जीवन आदर्शों को संदेश वाहक के रूप में जो भी कुछ दिया है वह सृष्टि अभिराम, विलक्षण तथा प्रेरक है।

ऐसे वन्दनीय अपने अग्रज श्री रामप्रकाश गोयल एडवोकेट को उनके सारस्वत वैभव के उत्तरोत्तर उत्कर्ष की माँ सरस्वती से उनके दीर्घ आयु के होने की कामना करते हुए उनके श्री चरणों में अपने अंतस के भाव सुमन अर्पित करता हूँ।

उर्दू-हिन्दी की निधि से सजा कर नागरी को,
गागर में सागर समस्त भर लाता कौन ?
समाज की समेकता के हित हो अनन्याचित,
जन-जन की पीर को चरित को सुनाता कौन ?
भारत और भारती की भक्ति के प्रचार हित,
रसहीन हृदयों में अनुरक्ति को जगाता कौन ?
होते न गोयल यदि सुकवि और ग़ज़लकार
चन्दर मन-पीर को साहित्य से सजाता कौन ?

वर नव शताब्दी के सभी स्वर्णिम वर्ष आपको प्रदान करे।

सिकलापुर, बरेली

समय के पाबन्द : प्रो0 रामप्रकाश गोयल

हेमपाल 'अनुराग'

जून उन्नीस सौ पच्चीस, मुकुट बिहारी द्वार,
उदय बरेली में हुआ, गोयल सा परमार।
जन्म जात प्रतिभा लिये, बहुआयामी व्यक्तित्व,
हर विधा में रँगा हुआ, गोयल का कृतित्व।

गोयल जी बहुआयामी प्रतिभा के धनी, समय के पाबन्द सौम्य स्वभाव, मिलनसार और आत्मीयता की जीवन्त मूर्ति हैं। एक स्वतंत्र साहित्यकार के रूप में इन्होंने ग़ज़ल, कविता, गीत, मुक्तक, अतुकांत कविता, उपन्यास, नाटक, पत्रलेखन आदि अनेक विधाओं में अतुलनीय साहित्य सृजन किया है।

गोयल जी से मेरा परिचय कुछ ही समय पहले गोष्ठियों में हुआ था। इनके बारे में मैंने बहुत कुछ पहले ही सुन रखा था अतः मिलने की तीव्र अभिलाषा थी किन्तु मैं सकुचा रहा था कि इतना बड़ा साहित्यकार मुझसे क्या बात करेगा लेकिन जब मैंने उनसे सम्पर्क साधा तो पाया कि उन जैसा व्यवहार कुशल, मिलनसार, हँसमुख मिज़ाज तथा समय के पाबन्द आज बहुत कम ही व्यक्ति मिलेंगे।

गोयल जी एक अच्छे वकील के रूप में काफ़ी ख्याति प्राप्त कर चुके हैं। वह उनका जन्म-जात गुण है। वे न्याय के प्रति सजग हैं तथा न्याय के प्रति उनमें अटूट श्रद्धा है। समय की पाबन्दी गोयल जी के चरित्र की सबसे बड़ी विशेषता है। 74 वर्ष की उम्र में भी माँ शारदा की सेवा उतने ही जोश एवं लगन के साथ करते हैं जितना कि अपनी जवानी में। महानगर की सभी गोष्ठियों में भाग लेना समय से पहुँचना तथा प्रत्येक कवि को पूरे ध्यान से सुनना हम सब के लिए एक सीख है।

निकट राजकुमारी इन्टर कालेज
अशोक नगर मढ़ीनाथ, बरेली

प्रो0 रामप्रकाश गोयल के काव्य में प्रेम, वेदना और दर्शन

डॉ0 कृष्ण गोपाल मिश्र

कवि श्री राम प्रकाश गोयल ने भवभूति और पंत की मान्यताओं को स्वीकार करते हुये काव्य सृजन की प्रक्रिया को रेखांकित करते हुए लिखा है –"काव्य का जन्म मात्र व्यथा से नहीं, अपितु व्यथा और वैचारिक अनुभूति के सहयोग से होता है।" पीड़ा के अतिरेक मात्र से काव्य सृष्टि नहीं हो सकती। केवल वेदना तो रुदन को ही जन्म दे सकती है। व्यथा के चरम उत्कर्ष पर स्थित किंकर्तव्य-विमूढ़ हतप्रभ व्यक्ति कोई सृष्टि कैसे कर सकता है ? सृजन के लिये उद्वेलित भावपूर्ण मनोदशा के पीछे वैचारिक – चेतना की प्रेरणा अत्यावश्यक है। तब तक वह बह नहीं सकेगी, केवल बिखर कर रह जायेगी। इस दृष्टि से कवि श्री गोयल की उपरोक्त मान्यता युक्ति सिद्ध होती है। कवि श्री गोयल का रचना-संसार उनकी उपर्युक्त अवधारणा के सर्वथा अनुरूप है। उन्होंने काव्य-दृष्टि के जिस हेतु को विचारपूर्वक सिद्धान्त के स्तर पर निर्देशित किया है, उसे व्यवहार के धरातल पर अपनी रचनाओं में प्रस्तुत भी किया है। उनके संपूर्ण-काव्य में वेदना का अजस्र प्रवाह है, जिसे उनके विचार-सम्पदा ने निरन्तर नियन्त्रित किया है। उसमें वेदना का वेग जितना प्रबल है, विचारों की सघनता भी उतनी ही अधिक है।

श्री गोयल सच्चे अर्थों में प्रेम की पीर के कवि हैं। उनकी वेदना का निर्झर प्रेम से उत्स से ही प्रवाहित हुआ है। प्रेम को उन्होंने व्यापक फलक पर प्रतिष्ठित किया है। उनकी प्रेम-भावना की सीमायें विश्व बंधुत्व की परिधि तक प्रसृत हैं। उनमें जातीयता, क्षेत्रीयता अथवा सांप्रदायिकता की संकुचित एवं सीमित लक्ष्मण रेखायें नहीं हैं। उनके हृदय का द्वार मानव मात्र के लिए खुला हुआ है। उसमें सभी के प्रति प्रेम-भाव समान रूप से विद्यमान है प्यार किसी व्यक्ति अथवा वर्ग विशेष की धरोहर नहीं है। प्यार तो एक सर्वव्यापी भाव

है जिसका प्रसार प्राणि मात्र में है।

पारस्परिक विश्वास प्यार की आधार शिला है। प्यार की मीनार का निर्माण विश्वास की नींव पर ही संभव है। जहाँ प्रतीति न हो वहाँ प्रीति असंभव है। प्यार के स्वरूप की विवेचना करते हुये कवि श्री गोयल ने ठीक ही लिखा है –

प्यार की राह कितनी मुश्किल है, इसमें तो गुल भी ख़ार होता है।
प्यार का इम्तिहान मत लेना, प्यार बस ऐतबार होता है।
प्यार रूहों का है मिलन ऐ दोस्त, प्यार पर रब निसार होता है।
दीनो – दुनिया का वह नहीं रहता, प्यार का जो शिकार होता है।

बात दुश्वार नहीं कोई जहाँ में यारो,
दिल की क्या बात है पत्थर भी पिघल सकते हैं।

श्री गोयल की प्रेम भावना सबके प्रति द्वेष–रहित, मित्रतापूर्ण और करुणासिक्त है। उसमें क्षमाशीलता का तत्त्व प्रचुर मात्रा में है –

दुश्मनों से भी प्यार करिये आप, और बेफ़िक्र हो के रहिये आप।
प्यार पर है टिकी हुई दुनिया, प्यार पूजा समझ के करिये आप।

वेदना को कवि श्री गोयल ने काव्य–सृष्टि का महत्वपूर्ण हेतु स्वीकार किया है। वेदना उनकी काव्य–यात्रा का प्रस्थान बिन्दु है। व्यथा के गोमुख से उनकी भाव गंगा सतत निसृत है। वेदना की तीव्रतम अनुभूतियों ने ही श्री गोयल को कवि बनाया है। इसलिए उनकी पीड़ा जगत की पीड़ा बनकर प्रकट हुई और प्रभावपूर्ण बन गयी। उनकी बहुत सी ग़ज़लों को पढ़ने पर प्रतीत होता है कि उनकी प्रेमिका ने उन्हें छला है। कहीं–कहीं प्रेमिका की विवशता के मूक–संकेत भी अंकित हैं। कदाचित उसकी विवशता पर विचार करके ही कवि उससे रुष्ट नहीं हुआ है। बेवफ़ाई के बाद भी उसके कल्याण की कामना करने में व्यस्त है।

"बस यही अब तो खुदा से मैं दुआ करता हूँ
उसके आँचल में जहाँ भर की वह खुशियाँ भर दे,
पाने वाला उसे इस दर्जा उसे प्यार करे
क़तरा क़तरा ही सही उसको समन्दर कर दे।
उसके दिल से मेरा हर नक़्श मिटा दे यारब,
भूल से भी न हो उस सम्त कभी मेरा गुज़र,

मैं तभी समझूँगा था मुझको कभी पासे-वफ़ा,
मैं तभी मानूँगा है मेरी मुहब्बत में असर।"

कवि सब प्रकार से अपने प्रिय को सुखी देखना चाहता है, चाहे वह स्वयं उसके कारण वेदना की अतल गहराइयों में ही क्यों न डूब गया हो। वह स्वयं तो बड़े से बड़ा दुख सहने को प्रस्तुत है परन्तु अपनी प्रेमिका पर आँच नहीं आने देता। उसका प्रेम दैहिक-मिलन का मोहताज नहीं।

"मैंने जिस दोस्त की ख़ातिर है मिटाया खुद को
वह न मिलता है, न अब बात हुआ करती है।
वह ख़यालों में भी आए तो खुशी के मारे,
आँख से अश्क की बरसात हुआ करती है।"

विवेक का असामयिक निधन वेदना का द्वितीय महत्वपूर्ण आयाम है। इस वात्सल्य जनित विरह के विविध-दृश्य श्री गोयल के काव्य में सहज सुलभ हैं।

"सभी चिराग़ बुझे से लगे हैं तेरे बाद,
कोई किरन नहीं दिल के सियाहख़ाने में,
ये चन्द लम्हे जो बीते हैं तेरी कुर्बत में,
लगेगा एक ज़माना उन्हें भुलाने में।"

ज़ीस्त में अब वह बात नहीं, दिल है मगर जज़्बात नहीं।
अब तो अश्क भी सूख चुके हैं, आँखों से बरसात नहीं।
मेरा दामन छोड़ के जाए, ग़म के बस की बात नहीं।
टूट गया दिल पर ज़िन्दा हूँ, मौत है यह तो हयात नहीं।

आश्चर्य का विषय है कि ऐसे आन्तरिक बिखराव के बाद भी कवि बाह्य-स्तर पर स्वयं को पूर्ण रूप से व्यवस्थित कैसे किये हुये है। संभवतः उसकी सहनशीलता और व्यवस्था की पृष्ठभूमि में उसका स्वस्थ विचार-दर्शन, गंभीर शास्त्रीय अध्ययन और निर्भ्रान्त स्वस्थ-चिंतन निहित है।

प्रेमिका और पुत्र के बिछोह की पीड़ा ने रचनाकार के हृदय की भावभूमि को अत्यन्त कोमल और उर्वर बना दिया है। प्रेम और वेदना की अति उर्वर भावभूमि में कवि श्री गोयल के दार्शनिक चिन्तन ने अपना सुदृढ़ आधार ग्रहण किया है उनकी चिन्तन धारा अध्यात्म और

जीवन–दोनों दिशाओं में समान रूप से प्रवाहित है। उसमें आत्मा, ब्रह्म, जीवन, जगत, मृत्यु, मोक्ष आदि दार्शनिक अवधारणाओं की सहजानुभूति परक बुद्धिसम्मत युक्ति व्याख्या तो है ही, साथ ही प्रेम, सत्य, परोपकार आदि जीवन–मूल्यों तथा संघर्ष, कर्म, आशावाद, नियतिवाद आदि जीवन आदर्शों की भी लोक–कल्याणोन्मुखी विवेचना है।

कवि श्री गोयल के आध्यात्मिक–विचार कबीर–दर्शन के अत्यन्त निकट हैं। जैसे कबीर 'ब्रह्म' को अन्तस्थ मानते हैं, 'कस्तूरी कुंडल बसै' कहकर ब्रह्म की चेतना के स्तर पर स्वीकृति देते हैं वैसे ही श्री गोयल भी ब्रह्म को अपने अंतस्तल में देखते हैं –

"मन्दिर मस्जिद ढूँढा उसको,
फिर भी मिला नहीं मुझको,
झाँका जब अपने अन्दर तो,
मैं था उसका साया–सा।"

श्री गोयल ने जगत को मिथ्या, मायामय और नश्वर बताया है।

ये दुनिया ख़्वाब है, इस ख़्वाब का भरोसा क्या,
नहीं जो अपना वो अपना दिखाई देता है।
जो दिखता वह सच न होता
यह दुनिया तो माया है।
जिस्म पे इतना क्यों है गुरूर,
ये मिट्टी की काया है।

जीवन और मृत्यु जैसे गूढ़ रहस्य, जिन्हें सुलझाने में भारतीय–मनीषा चिरकाल से उपनिषदों की गहन वीथियों में भटकती रही है, श्री गोयल की ग़ज़लों में बड़े सरल शब्दों में सहज रीति से प्रस्तुत हो गये हैं।

ज़िन्दगी मौत की अमानत है,
मौत इस ज़िन्दगी की आदत है।
जिस्म मिट्टी है, सिर्फ मिट्टी है,
उसका कुछ न भरोसा करिये आप।
पल में जीना है, पल में मरना है,

फूल की तरह हँसते रहिये आप।''

श्री गोयल के दार्शनिक-विचारों में विराग की प्रधानता है। उनके दुखात्मक अनुभवों ने उन्हें जीवन और जगत के कठोर यथार्थ और कटु परिणामों से सुपरिचित करा दिया है। उनके अधिकांश विचार संत-काव्य और 'श्रीमद्भगवद्गीता' से प्रभावित हैं तथापि प्रस्तुतिकरण की शैली उनकी अपनी है। गीता के प्रभाव ने उनके अध्यात्म दर्शन को निवृत्तिमूलक होने से बचा लिया है। वे लोक के नश्वर स्वरूप को सही-सही अर्थों में पहचान कर भी उससे विमुख नहीं हैं। कर्म की निष्काम-भावानुप्राणित चेतना उनके काव्य में सतत विद्यमान है। यही उनके जीवन-दर्शन का प्रमुख आधार भी है। 'चरैवेति-चरैवेति' का आर्य-सत्य उनके जीवन-दर्शन का मूल मंत्र है।

''दूर मंजिल सफ़र बहुत मुश्किल, फिर भी चलते ही चलते जाना है।''

प्रेम के सुविस्तृत-प्रांगण में वास करने वाले श्री गोयल 'जिओ और जीने दो' के विश्वासी हैं। उनके लिये जीवन का अर्थ दूसरों को भी जीवन का अवसर प्रदान करना है –

''जीवन का अर्थ सिर्फ स्वयं जीना नहीं
औरों को भी जीने देना है।''

बिना परोपकार की भावना के दूसरों को जीवन की सुविधायें प्रदान कर पाना अत्यन्त दुष्कर कार्य है।

''काम जो आते हैं औरों के लिये दुनिया में,
वो ही जीते हैं, कभी मरते वो बेनाम नहीं।''

जीवन में दुखों की सघनता ने कवि को भाग्यवादी बना दिया है। नियति की सत्ता को उसने अपने जीवन दर्शन में पुनः पुनः स्वीकार किया है –

किसको पाना है, किसको खोना है, जो भी होना है, वह तो होना है।
पल में हँसना है, पल में रोना है, आदमी सिर्फ़ एक खिलौना है।''
हादिसे पूछ कर नहीं होते, आदमी हादिसों से हारा है।

इस प्रकार प्रेम, वेदना और दर्शन के त्रिकोण पर कवि श्री गोयल की सम्पूर्ण काव्य-चेतना सृजनरत है।

विभागाध्यक्ष, स्नातकोत्तर हिन्दी-विभाग
शास0कुसुम महाविद्यालय, सिवनी मालवा म0प्र0 461221

'एक समन्दर प्यासा-सा' में प्रकाशित प्राक्कथन

दिल की बात

राम प्रकाश गोयल

महान् वैज्ञानिक आइन्सटीन ने परमाणु बम के आविष्कार के द्वारा यह सिद्ध कर दिया कि पदार्थ (मैटर) में असीमित ऊर्जा (एनर्जी) छिपी है। उनका समीकरण था $e=mc^2$। इसमें e का अर्थ है इनर्जी (ऊर्जा), m का अर्थ (मैटर, पदार्थ का भार), और c का अर्थ है Velocity of Light (प्रकाश का वेग), जो 3,00,000 किलोमीटर प्रति सेकिण्ड होता है। 5 ग्राम भार वाले पदार्थ में जो ऊर्जा छिपी हुई है वह है 5x3,00,000x3,00,000। उनकी वह वैज्ञानिक उपलब्धि परमाणु बम का आधार बनी जो जापान के हिरोशिमा और नागासाकी के महाविनाश का कारण हुई।

जब इतनी अधिक ऊर्जा जड़ पदार्थ में छिपी है तो चेतन मनुष्य मे कितनी ऊर्जा और शक्ति छिपी होगी ? हर प्राणी असीम ऊर्जा का भण्डार और स्रोत है। इन्सान एक समन्दर है - चाहे जितना पानी उसमें से निकले, कोई कमी नहीं आती।

उपन्यास "टूटते सत्य", ग़ज़ल संग्रह "दर्द की छाँव में" और "रिसते घाव" तथा "सच्चे प्रेम पत्र" के बाद मुझे लगने लगा था कि मैं अन्दर से चुक गया हूँ, अब और बाहर आने को कुछ बाकी नहीं बचा। मगर दुनिया के थपेड़े जज़्बात पर चोट करते रहे। मैं अन्दर ही अन्दर टूटता और घुटता रहा। मुझे आज तक नही पता कि कौन, क्यों, कब, कैसे और क्या मुझसे लिखवाता रहा। मगर इतना सच है कि मैंने लिखने के लिये कभी ज़बरदस्ती नहीं की। हालात, हादिसात और एहसासात ने जब मजबूर कर दिया - तभी लिख सका।

यह दुनिया बड़ी अजीब है। जो दिखाई देता है, वह सच नहीं। जो सच है, वह दिखाई नहीं देता। इन्सान ने अपने चेहरे पर कई फरेबी चेहरे लगा रखे हैं जिनमें उसका असली चेहरा गुम हो गया

है।'' एक समन्दर प्यासा-सा'' में उस असली चेहरे तक पहुँचने और उसे पहचानने की कुछ कोशिश की गयी है।

मनुष्य का जीवन बहुरंगी और बहुआयामी है। वह कभी एक जगह नहीं रुकता न ठहर पाता है। पता नहीं किसकी तलाश है उसे क्या ख़लिश है, क्या बैचेनी है ? सुख-दुख, धूप-छाँव, रात-दिन आते-जाते रहते हैं मगर कभी न बुझने वाली एक प्यास बराबर इन्सान को परेशान और बेचैन बनाए रखती है। यह प्यास ही उसकी ताक़त है, उसकी ऊर्जा है जो उसे कुछ कर गुज़रने को मजबूर करती है। मुझे नहीं मालूम कि यह प्यास किसने और कब जगाई मेरे अन्दर। मगर वह प्यास आज भी वैसी ही बरक़रार है। ''शम्अ हर रंग में जलती है सहर होने तक'' - ग़ालिब की उस शम्अ के कुछ रंग मैं भी कभी-कभी महसूस कर सका हूँ।

''एक समन्दर प्यासा-सा'' को सजाने-सँवारने में डॉ0 उर्मिलेश, रईस बरेलवी, डॉ0 नागेन्द्र और रमेश गौतम का विशेष योगदान रहा है। मैं हृदय से उनके प्रति अपना आभार व्यक्त करता हूँ।

इन्सान की तरह समन्दर भी बहुत प्यासा है। कितनी नदियाँ पी चुका है अब तक और हमेशा पीता रहेगा। इंसान और समन्दर की यह प्यास ही ''एक समन्दर प्यासा-सा'' में है। इसकी एक बूँद भी अगर आपकी प्यास जगा सकी या बुझा सकी तो मैं अपने आपको बहुत खुशकिस्मत समझूँगा।

जी-12, रामपुर बाग, बरेली- 243001
फोन - 0581-475074

‘रिसते घाव’ से बना ‘एक समन्दर प्यासा-सा’ जिससे प्रेम का अमृत-रस छलकता है

डॉ0 कामिनी

कविता उद्विग्न हृदय का संगीत है। कविता का संगीत गूँजता रहता है युगों-युगों तक। कवि की वाणी में विस्फोटक क्षमता होती है। साहित्य सृजन तो एक जुनून है। कली को फूल बनने में एक लम्हा भर लगता है किन्तु कली की निर्मिति में बहुत वक्त लगता है। कली का निर्माण ही तो रचना का निर्माण है। साहित्य साधना तो एक अनुष्ठान है। उल्लास है, आनंद है, आनंद रस के स्वाद से मिलता है। रस जीवन का तत्व है और जीवन रस के लिए। श्री रामप्रकाश गोयल के अंतर्कलश में प्रेम का अमृत-रस छलकता है। अनुभूति का गहरा समंदर। दर्द का फैला हुआ आसमान। दर्द में कविता छिपी है। रिसते घावों से बना दर्द का एक समंदर।

प्रो0 राम प्रकाश गोयल की रचनाओं का मूल स्वर सही गयी पीडा है। यही दर्द कवि का सच्चा सुख है। अकेलेपन की कसक और किसी की यादें। शब्द और अर्थ और फिर भाव। इनके पीछे वेदना की अनगिनत हिलोरें। मन और आँखों को भिगोने वाली हृदयस्पर्शी रचनायें। व्यथा ही व्यथा। चेतना के आकाश पर मेघ घिरते और फिर बरसते हैं। तकलीफें, एहसास, मजबूरियाँ, हादसों और बेवफाइयों ने तोड़ा है कवि को। विश्वभर का दर्द, आँसू, सिसकियाँ, उच्छ्वास, छाले, जिस तरह आकर मिले सब वहाँ कवि का हृदय है। आग में तपे हुए दिल की आवाज़ जो शब्दों में ढल गई। तौली-तराशी गई अभिव्यक्ति। जिन्दगी की हर उलझन कविता की जुबान में पेश की। प्यार, इंसानियत और सच्चाई की झलक। पाक मुहब्बत जहाँ दो दिल धड़कते हैं, मुस्कुराते हैं -

घाव ही घाव हैं मेरे दिल में, जो कि रिस-रिस के मुस्कुराते हैं।

कविता हृदय की रसधार है। सृजन का सुख ही अलग होता है। गोयल जी के शब्दों में - ‘आग की तरह मन भी एक आग है।

जितना अधिक अँधेरा हो, उतना ही अधिक आग और मन चमकते हैं। जज़्बात की हथेली पर जलते हुए दिये के फ़साने का नाम है कविता।'

मैं जीतता भी तो शायद न इतना खुश होता।
मिली है जितनी खुशी तुझसे हार जाने में।।

हारने में जीत की खुशी, खुदी मिटाकर खुदा के क़रीब आना, अश्क पीकर मुस्कुराते हुए वफ़ा का निभाना-विस्तृत चिंतन और विशाल हृदय और मानवता के सूचक हैं। हर शेर अनुभूति की आँच से तपकर ज़िन्दगी के क़रीब है। हर बात मक़सद को लेकर कही गई है। दिल को छू जाने वाले शेर सोचने के लिए विवश करते हैं। शायर की खुद्दारी देखते बनती है। दोस्ती का पैग़ाम –

लोग अपनों से बैर रखते हैं, मेरा ग़ैरों से दोस्ताना है।

दिल को झकझोरने वाले क्षण, प्यार की गरमाहट और बिछुड़ने का दर्द खींचता है – बाँधता है। प्यार पाने के लिए मिट जाने का पैग़ाम, ज़ुल्म को बर्दाश्त करके ईश्वर से ज़ुल्म करने वाले की रक्षा करने की प्रार्थना करना, मोम दिल होने का परिचायक है –

तुम्हारा ज़ुल्म सलामत, बस अब खुदा हाफ़िज़।
सुकून ढूँढ़ ही लूँगा कहीं ज़माने में।

दिल की गहराइयों से चाहने वाला अपनी क़सम का निर्वाह करते हुए इंसानियत का सबक देता है –

दूर होना है उनको हो जाएँ
मुझको अपनी क़सम निभानी है।

कवि के पास जो कुछ होता है वह सबका होता है। उसकी पीड़ा, दुख-सुख, आशा-निराशा, जय-पराजय जो भी है समाज की है। उसका दर्द समाज का दर्द है। नयी तृषा, नया स्वाद, नयी तृप्ति आकांक्षा जगाती है। रचनाकार ने ज़िन्दगी न जाने कितने रूपों में जी है। वह कड़वे यथार्थ से अच्छी तरह वाक़िफ़ है। कई रचनाओं में आत्मिक-पीड़ा है। अपने प्रिय के साथ गुज़ारे गये एक-एक लम्हे को हृदय के भीतर क़ैद कर लिया है। वह उन अमूल्य क्षणों को भुला नहीं पा रहा है। सृजन की प्रक्रिया कितनी अनूठी है – ये सारे लम्हात सेरजे गये हैं, बुने गये हैं – वे अमर हैं और शाश्वत् हैं। कवि सारी

विसगतियों को रौंदकर, कुचलकर गतिशील रहना चाहता है। यहां जीवन है, यही कवि की महायात्रा है। वक्त सबसे ताक़तवर है। हम सब तो बहुत पीछे छूट जाते हैं। केवल समय जीता है और उस समय को रचनाकार ने अपने माफ़िक कर लिया है। ज़िन्दगी खराब है, नश्वर है किन्तु जो ज़िन्दगी मिली है वह सशक्तता से जीने के लिए है, सक्रिय बने रहने के लिए है। समय को गँवा देने पर सब कुछ छूट जायेगा। जिन्दगी में जो कुछ टूट रहा है, छूट रहा है, वही तो है कविता। ज़िन्दगी में प्यार का रिश्ता बड़ा कीमती है। प्यार मारता भी है और जिलाता भी है। निष्क्रिय भी कर देता है और सक्रिय भी। वह मौन भी है और मुखर भी। जिन्दगी धूल भी है, फूल भी है और शूल भी। ज़िन्दगी में मुहब्बत बड़ी परीक्षा लेती है।

हर ग़ज़ल आँसुओं में डूबी है, यह तेरे ग़म की मेहरबानी है।

चाहत की चरम सीमा यह है।

आईना जब भी देखता हूँ मैं, मैं नहीं उसमें यार होता है।

'तैश' में भी 'होश' की गंभीर बात है। जीने का उत्साह, पीड़ा, यथार्थ, व्यंग्य और सुझाव। 'दर्द की छाँव में' और रिसते घाव' ऐसी ही अनूठी कृतियाँ हैं। साथ ही 'सच्चे प्रेम पत्र' अमूल्य धरोहर हैं प्रेमी-जगत् के लिए। हर पत्र प्रेम की सात्विक सुगंध लिए हुये है। अश्लीलता से मुक्त। मदहोश कर देने वाली खुशबू। हर पत्र बहुत सुंदर, अद्भुत और बाँधने वाला। बहुमुखी प्रतिभा के धनी हैं गोयल जी अपनी पैनी दृष्टि से नयी सृष्टि कर रहे हैं, आज तक सक्रिय रह कर जीवन मूल्यों के प्रति सजग हैं वे। दृढ़ता और स्वाभिमान है उनमें -

खुद्दारी को ज़िन्दा रखना, मेरा है बस यह पैग़ाम।।

आज व्यक्ति हताश है, निराश है, रोज टूट रहा है। नफ़रत के भड़कते हुए शोलों को राख कर देने के लिए प्रतिबद्ध है। युग बोध, वक्त, प्रेम के संयोग और वियोग दोनों पक्ष, समाज, सियासत और सौंदर्य बोध पर सशक्त क़लम चलाता है। असाधारण प्रतिभा के धनी प्रो0 गोयल जी के 75 वें वसंत पर अभिनन्दन हिन्दी जगत् के लिए हर्ष, गर्व और गौरव की बात है। इस महान व्यक्तित्व पर जितना लिखा जाय कम है। गोयल जी अच्छे ग़ज़लकार, उपन्यासकार, पत्र-लेखक, नाटककार और अभिनय क्षमता में सिद्धहस्त हैं। वे एक

... रिचयत हैं उनका साहित्य ही उनकी पहचान है। उनका ... नक क्षेत्र विस्तृत है। उन्हें अपनी माँ स्व0 श्रीमती जयदेवी से भावुकता और संवदेनशीलता तथा अपने पिता स्व0 श्री मुकुट बिहारी लाल वकील से तार्किक शक्ति विरासत में मिली है। उन्होंने बरेली की माटी को गौरवान्वित किया है। सम्प्रेषणीयता और अध्यापन का विशिष्ट गुण उनके प्रोफेसर रूप में विद्यमान है। गोयल जी का कार्य क्षेत्र फैला हुआ और समृद्ध है। अनेक सम्मान, पुरस्कार, पदक और पारितोषिकों से वे अलंकृत हैं। उनका जीवन-दर्शन सत्य के निकट है, चेतना और प्रेरणा देने वाला। समय बोलता - बतियाता है उनकी रचनाओं में और ज़िन्दगी की कहानी कहता है कवि। सत्य, शिव और सुंदर की कल्पना। प्रो0 गोयल का रचना संसार सुनने, समझने और गुनने के लिए बाध्य करता है। वे समर्थ शब्द-साधक, सशक्त रचनाकार और सजग चिंतक हैं।

गोयल जी की शायरी का अलग मिज़ाज और अंदाज़ है। दुख के समंदर को तैरने की कोशिश। ज़हर पीकर अमृत बाँटने की कोशिश। संघर्षों के वातायन, धरती से जुड़े भाव, ज्वलंत चिन्तायें। प्रेम की मिठास और फूलों की खुशबू अंतरस को तरो-ताज़ा कर देती है। नैतिक और सामाजिक मूल्यों की पहचान अगली पीढ़ी के लिए सुरक्षित कर देने की फ़िक्र। क्षयी वातावरण के प्रति असंतोष, अवमूल्यन के प्रति आक्रोश, सांस्कृतिक हमलों के प्रति रोष और असहमति है।

गोयल जी प्रेम और कोमलता के पर्याय हैं। भावनायें जगा देने वाले शायर। अमृत रस से सराबोर कर देने वाले रचनाकार, चेतना को झंकृत कर देने वाले साहित्यकार, ज़मीर को जागृत कर मानवीय संवेदनाओं को बचाने वाले व्यक्ति हैं। उनका कृतित्व झनझनाता है। निर्देशित करता है। जीने की ताक़त देता है। अभिनंदन के इस पावन अनुष्ठान पर उनका शत्-शत् वंदन और अनंत शुभकामनायें अर्पित हैं।

रीडर एवं अध्यक्ष, हिन्दी विभाग
शासकीय गोविन्द महाविद्यालय, सेंवढ़ा, जिला दतिया (म0प्र0)

'एक [illegible] प्यासा-सा' एक प्रतिक्रिया

डॉ० मोहदत्त 'साथी'

'एक समन्दर प्यासा -सा' मेरे अभिन्न श्री रामप्रकाश गोयल की ग़ज़ल, गीत और अनुकांत कविताओं की पुस्तक का शीर्षक ज़रुर है मगर बहुत उनकी अपनी ज़िन्दगी पर ज्यादा चस्पाँ होता है। फ़र्क सिर्फ़ इतना-सा है कि वह प्यासे ज़रूर हैं मगर खारे नहीं हैं। खुद भी एक जगह वे इस हकीकत को बयान करते हुए कहते हैं:-

समन्दर सा है दिल में प्यार मेरे
समन्दर सा मगर खारा नहीं है।

जैसा मैंने देखा है और जाना है इस शख़्स की अजीब शख़्सियत है। पतले पतले होंठों पर कमसिनी मुस्कान, आँखों में झलकता हुआ बहुत कुछ और चेहरे के नाक-नक़्श दिली जज़्बातों को अयाँ करते हुये से। मैं बेहिचक कहूँगा कि उनका अपना रूप 'एक समन्दर प्यासा-सा' की ग़ज़लों, गीतों और अतुकान्त कविताओं में बड़े सटीक ढंग ये रूपायित हुआ है।

यह ज़रुरी नहीं हैं कि किसी की अपनी शख़्सियत या ज़िन्दगी उसके काव्य में रुपायित हो मगर जब किसी का वह निजीपन सार्वजनिक और सार्वभौमिक तरीके से अभिव्यक्त होता है तो फिर निजी नहीं रहता। जो शख़्स अपने निजी अनुभवों को जितनी सघनता से सबका बना देता है वह उतना ही बड़ा शायर और कवि होता है। प्रेम -वियोग, रिश्तों का दर्द, कुछ रिसते घाव और आसपास की ज़िन्दगी की सम्वेदनायें- वे शाश्वत सत्य हैं जो कविता की सही जमीन कहे जा सकते हैं। जब हम किसी शायर या कवि की अभिव्यक्ति को जाँचते परखते हैं तो यह देखना ज़रुरी है कि किस हद तक और अपनी सच्चाई से वह कवि या शायर इन चीज़ों से खुद दो चार होता है और अपनी कविता या शायरी में कितनी सघनता, स्पष्टता और कलात्मकता से इनकी अभिव्यक्ति करता है। अपना निजीपन किस हद तक दूसरों के अनुभवों में अनुवादित कर पाता है। कविता में अपना कुछ नहीं होता, सब कुछ दूसरों का ही होता है।

कविता या शायरी एक ऐसा प्रिज़्म है जिसमें ज़िन्दगी का हर रंग झलकता है। 'एक समन्दर प्यासा सा' इस दृष्टि से एक बायार संकलन कहा जा सकता है जिसमें प्रेम, वियोग, नाते-रिश्ते, आपस भाईचारा, राजनीति, साम्प्रदायिकता, नफ़रत की आग, दर्शन, अध्यात्म इत्यादि बहुआयामी अनुभवों का एक कीमती ख़ज़ाना है। कहीं से भी शुरू करें, आपको जगह व जगह इन सबकी झलक दिखाई देगी।

'एक समन्दर प्यासा-सा' की सबसे अहम विषय वस्तु उस बुलबुल की काँपती हुई आवाज़ है जिसके सीने में काँटा गड़ा हुआ है फिर भी वह अपनी मीठी सुरीली तान से पूरे जंगल को गुंजा रही है प्रेम वियोग की एक अकथनीय दास्ताँ है। 'एक समन्दर प्यासा सा' सब कुछ निराशा, पीडा, दुःख और यातना की नाउम्मीदी में कुछ उम्मीद झलक रही है-

वो जिसने कोई भी वादा नहीं निभाया है,
हम उस की राह में पलकें बिछाये बैठे हैं।

जन्म जन्मों का साथ था जिससे, उसको पाकर भी खो दिया मैंने
यादों का जब सिलसिला शुरू होता है तो कितना कुछ मिल जाता है

याद आई तो दे गयी है गज़ल,
जब गयी तो दे गयी रुबाई है।

और फिर तमाम गिले-शिकवों के बाद यह स्वीकारोक्ति-
बहुत आसान है करना मुहब्बत, मगर दुश्वार उसका इम्तिहाँ है। या फिर यह सच्चाई-

पाया है प्यार करने का कितना बड़ा सिला,
हम इस तरह मिटें हैं कि मंसूर हो गये।

'एक समन्दर प्यासा- सा' के अशआर में हृदय की टीस है दुःख-दर्दों का सैलाब है, नाते-रिश्तों की टूटन है, दोस्तों की बेवफ़ाई है तो उस सामाजिक सत्य का निरूपण भी है और उस व्यवस्था का बेपर्दा भी किया गया है-

इससे बढ़कर अज़ाब क्या होगा, चन्द सिक्कों में लाइली बेची
जिस्म जलेंगे कितने और, गर्म अभी भी हैं तन्दूर।

रहनुमा बनके हम को लूट रहे हैं, ऐसी इस दौर की सियासत है।

हम न हिन्दू, न मुसलमाँ, न सिख ईसाई,
हम हैं इन्साँ हमें इन्सान समझते रहिये।
मंदिर मस्जिद ढूँढा उसको, फिर भी मिला नहीं मुझको,
झाँका जब अपने अंदर तो मैं था उसका साया-सा।
तन्हा आया है तू जग में, तन्हा ही बस जायेगा,
दो दिन के सब नाते-रिश्ते, यह जग की पहचान है।
प्यासा दरिया बहता पानी,
अपनी इतनी राम कहानी।
ये चला आया है दुनिया का हमेशा से उसूल,
बद तो अच्छा है मगर अच्छा है बदनाम नहीं।

ुबान की यह मुहावरेदारी सादगी में चार चाँद लगाती है मगर जब
द से ज़्यादा सपाट हो जाती है तो फिर तारीफ़ करना मुश्किल हो
ाता है। मिसाल के तौर पर -

पाँव जब चादर से हो जायें बड़े
दूसरी चादर नयी ले आइये।

ा फिर पूरी कहानी को एक शेर में बाँधने की कोशिश हो तब भी
ारियत का गला घुटने लगता है -

दूध की लाया नहर फ़र्हाद पत्थर काट कर
पर न शीरीं मिल सकी खुद उसको ही मरना पड़ा।

ुक समन्दर प्यासा-सा के गीतों और अतुकांत कविताओं के बारे में
जितना कहा जाय उतना ही बेहतर है।

इस प्रतिक्रिया को अपने एक शेर से यूँ ख़त्म करना चाहूँगा-
कागज़ समझ के दिल के वरक़ यूँ न मोड़िये,
पढ़ने की चीज़ हैं इन्हें पढ़ना न छोड़िये।

ए-78, आवास विकास, बदायूँ

"एक समन्दर प्यासा-सा" की वैचारिक संपदा

डॉ. ओंकार त्रिपाठी

जगत में प्रेम को सर्वोच्च स्थान प्राप्त है, मानव जीवन के सिद्धावस्था की प्राप्ति का प्रबलतम साधन प्रेम ही है। कविवर श्री गोयल जी के विरही कंठ से जो प्रेम वेदना निकली है वह कहीं नितान्त व्यक्तिगत है और कहीं कहीं गंभीरता और दर्शन का आश्रय लेने लगती है; वेदना के शब्द अपने अर्थ को दूर फेंकने लगते हैं।

इस संसार में जो आया है वह अपने कर्मो का भोग करने के लिए ही आया; यदि किसी के काम आ जाये तो अति उत्तम है। सृष्टि के सभी जड़-चेतन जीव कर्म-भोग और भोग-कर्म की शृंखला में बंधे रहते हैं। इन्हीं भावों को कवि इस प्रकार कहता है:-

"काम आ जाये किसी के तो ये जाँ हाज़िर है
यूँ तो हर आदमी बोझ अपना यहाँ ढोता है।"

दुर्भाग्य के क्षणों में जीवन-पथ के हर राही का परीक्षण होता है। अत्याचार के सम्मुख कवि कभी भी न झुकने का संकल्प लेता है:-

"मैं झुकूँगा न कभी जुल्मो-सितम के आगे,
इम्तिहाँ मेरा तो हर पल ही यहाँ होता है।" पृष्ठ-2

अति विश्वास में ग़ज़लकार धोखा बहुत खा चुका है। जिसको वह मित्र समझता है उससे उसे विश्वासघात मिलता है। इसी तरह का आज का समाज है। धोखा खाने की बात को वह बार बार रेखांकित करता है।

प्रो0 गोयल साहब ने वेदना को अंग लगाया है। इनकी रचना में युग बोध, यथार्थ चित्रण, सत्यासत्य का वर्णन, प्रेम की पीड़ा है। ये दर्द के कवि एवं शायर हैं। जीने की अदम्य लालसा, दुख को भुलाने की ललक, वेदना की टीस, मानवीय एकता, राष्ट्रीय एकता एवं करुणा के गीत गाने वाला कवि आतंकवादी एवं साम्प्रदायिक शक्तियों के उत्पात से चिन्तित है। नीतिबद्ध मार्ग पर चलना कवि का उद्देश्य है। वह अपने सहज मानवीय सिद्धांतों से विचलित नहीं होना चाहता। कवि इस संसार में 74 वर्ष बिता चुका है। उसके विचार जीवन पथ की अनुभूतियों से मण्डित हो चुके हैं; उसके चिंतन में छल प्रपंच,

कृत्रिमता और अतिश्योक्ति को स्थान नहीं। प्रेम, सदभावना, सहानुभूति, आत्मीयता, हमदर्दी और कृतज्ञता के बदले में कृतध्नता और अविश्वास .ने वाले व्यक्ति की चर्चा बार बार हुई है।

सत्याचरण सर्वश्रेष्ठ पथ्य है। इससे समुद्र की प्यास बुझ जाती र, आदमी की तितिक्षा संतुष्ट हो जाती है।

"सच को याद रखने की जरूरत नहीं
झूठ को याद रखना पड़ता है
ताकि दुबारा वही कह सकें
जो पहले कह चुके थे।" पृष्ठ-116

श्री गोयल साहब अपने जीवन में कुछ छिपाते नहीं। जहाँ उन्हें स्नेह मिला, आत्मीयता मिली, उसे कह दिया और जहाँ उपेक्षा, बेवफ़ाई और अन्यमनस्कता मिली या जहाँ संसार ने उन्हें कहीं देखा तो उसे भी निसंकोच ग़ज़लों में उतार दिया है। ग़ज़लकार के जीवन पथ की भावनात्मक यात्रा इन रचनाओं में चित्रित है। हृदय खोलकर पाठक के समक्ष या समाज के समक्ष रख देने में श्री गोयल साहब संकोच नहीं करते अथवा यों कहा जाये कि भावाधिक्य की तीव्रता के कारण गोयल साहब की अन्तः वेदना और चेतना कविता के रूप में सहजतया हृदय से बाहर हो गयी है। सीमा का उल्लंघन न करने के कारण ही धीर-गंभीर समुद्र की सहनशीलता और सौमनस्यता की प्रशंसा संसार में होती है और इसी कारण ही तो वह कवियों की कविताओं का प्रमेयालंबन बना हुआ है।

नदियाँ पिलाएँ बादल ले लें, चाहे जितना भी पानी।
अपनी सीमा कभी न लाँघे, सागर बड़ा सयाना-सा।।
सबसे पूछा कोई अभी तक, मुझे न बतला पाया है।
चाहता क्या है, क्यों ये समन्दर, रहता हरदम प्यासा सा।।" पृष्ठ-1

यह संसार झूठा है असार है। कवि भी इसी बनावटी व्यवहार की असारता का उद्घोष करता है। कवि का अनुभव है कि संसार में कोई किसी का नहीं है। कृत्रिमता और छद्म है, अविश्वास और कृतघ्नता है:-

दोस्त समझे थे जिसे, उसने निकाली दुश्मनी,
दोस्त बनकर ही तो अब पीछे से करता वार है।
कोई भी तेरा शरीके ग़म न दिल से है यहाँ,
तू जिसे अपना समझता ग़ैर का वो यार है। पृष्ठ-4

ये दुनिया ख्वाब है इस ख्वाब का भरोसा क्या
नहीं जो अपना वो अपना दिखाई देता है।'' पृष्ठ-7
सारी दुनिया होगी तुम्हारी
गर बोलोगे मीठी बानी।'' पृष्ठ-5

कन्या के पिता की पीड़ा से कवि व्यथित है-
''रात में मुझको नींद न आती, मेरी बेटी हुई सयानी।'' पृष्ठ-

कवि अंदर से कहीं बहुत घायल है। वह बार बार उस पीड़ा भूलना चाहता है किन्तु हृदय की वेदना, आंतरिक पीड़ा अपने भा के अनुरूप शब्द ग्रहण कर लेती है। कवि की अपरिमित पीड़ा तड़प देखिए:-

जलते हुए दिल का मेरे मंजर नहीं देखा,
इस आग के दरिया ने समन्दर नहीं देखा।- पृष्ठ-6
अंदाजा लगा पायेगा क्या दर्द का मेरे,
तर अश्कों से जिसने मेरा बिस्तर नहीं देखा।- पृष्ठ-6
बोल रहा है मुझसे मीठी बोली जो,
छुरा पीठ में वही भोंकने वाला है।
मुँह से जपते राम, बगल में ईंटें हैं
आस्तीन में साँप, हाथ में माला है।-पृष्ठ-9

ईश्वर ही सत्य है और सत्य ही ईश्वर है। सच्चा प्रेम कभी हारता नहीं। वह तो ईश्वर का सहोदर है। प्रेम ईश्वर का वरदान है। प्रेम ही पूजा है। जो प्रेम को पवित्र पूजा मानकर आगे बढ़ता है वह कभी हारता नहीं है :-

मुहब्बत जिसने समझी है इबादत
मुहब्बत में कभी हारा नहीं है।- पृष्ठ-10

एक मिटता है दूसरा जनम लेता है। एक के त्याग में दूसरे की प्रसन्नता निहित है। 'दाना खाक में मिलकर गुले गुलजार होता है।'। कवि अत्यंत निरीह प्राणी चींटी से भी दुश्मनी नहीं करना चाहता। जीवन की सत्यता को जीवित रखने के लिए वह अपनी हस्ती मिटा देना चाहता है:-

दुश्मनी जितनी चाहे वो माने, मुझको फिर भी उसे
मनाना है।
दीन-दुखियों के काम आऊँ मैं, अपनी यूँ जिंदगी बिताना है।
जिंदा रखने को सच जमाने में,
अपनी हस्ती मुझे मिटाना है।- पृष्ठ-14

वादा खिलाफ़ी कवि की विचार–परिधि में नहीं है:–

कोई उनका यकीं नहीं करता,
अपना वादा जो तोड़ देते हैं।–पृष्ठ–15
दरिद्र–नारायण –सेवा सर्वोच्च ईश्वर सेवा है:–
जिसकी आँखों में हों आँसू किसी मुफ़लिस के लिए,
ऐसे इंसान को भगवान समझते रहिए।–पृष्ठ–17

सुख और सम्मान से जीने के लिए नक़ली चेहरा उतारना पड़ेगा अन्यथा तुम धराशायी हो जाओगे। कवि को झूठ से नफ़रत है।

दोस्तो चेहरा लगाना छोड़ दो,
गिर पड़ोगे एक दिन तुम खाई मे।–पृष्ठ 721

वेदान्त के 'चरैवेति' का संदेश देता हुआ कवि कर्म निष्टता पर विशेष ध्यानाकर्षण कराता है। कर्म से सभी सपने पूर्ण हो जायेंगे–

जो भी चाहो ज़रूर पाओगे,
तुमको बस कर्म करते रहना है।–पृष्ठ–26

प्रकृति परिवर्तन शील है। इससे कोई आहत होता है और कोई राहत पाता है। इस मरण–शील संसार की प्रकृति ही ऐसी है जिसे मूलतः रोका नहीं जा सकता। जो जितने दिन के लिए यहाँ आया है उतने ही दिन के लिए यहाँ रहेगा, उससे किसी को दुख हो या सुख। कवि की पीड़ा इन्हीं विचारों के समानान्तर है जिसमें वह अपनी भाग्यरेखा पर चिंतित है:–

आज तक मैंने किसी का भी बुरा चाहा नहीं,
हर क़दम पर मेरी क़िस्मत में ये ठोकर क्यों है।
दूर हो जायेगा तुम जिसको बहुत चाहोगे,
कोई समझा नहीं दुनिया में ये अकसर क्यों है।–पृष्ठ–27
अश्क पलकों से जब ढ्ले मेरे, मिसले शबनम
बिखर गया कोई।
कोई इसका सबब बताए तो, क्यूँ इधर से उधर गया कोई
जिसकी दुनिया में सिर्फ खुशियाँ थीं, रंजो–ग़म में बिखर
गया कोई।
कैसा मुंसिफ निज़ामे–कुदरत है, मार कर मुझको मर गया
कोई।–पृष्ठ–37

कवि को जीवन में हमेशा आघात लगते रहे हैं। कभी वह हँस नहीं पाया। दुर्वासा बनकर परिस्थितियाँ सामने खड़ी होती रहीं।

चाहा कितनी बार है मैंने, कभी तो खुलकर हँस लेता,
हर पग पर मिलता ही रहा है, एक ऋषि दुर्वासा सा।''-पृष्ठ-2

ईश्वर की सर्वव्यापकता का चित्रण दृष्टव्य है:-

''मंदिर-मस्जिद ढूँढा उसको, फिर भी मिला नहीं मुझको,
झाँका जब अपने अंदर तो, मैं था उसका साया-सा।''पृष्ठ-2

बड़ी ऊँची बात को सरल लहजे में कहना कवि की विशेषता है

''सीधा सच्चा उसूल कुदरत का,
जैसा करता वो वैसा पाता है।'' पृष्ठ-44

''हर गुनाह की हमें मिलेगी सज़ा,
सब फ़कीरों ने यह बताया है।
दोगे दुख तो मिलेगा तुमको दुख,
ये हमेशा से होता आया है।'' -पृष्ठ-52

''अब तो बाकी यही तमन्ना है,
काम आऊँ दुखी की आहों में।
सारी दुनिया की ठोकरें खाकर,
हम समाए खुदा की बाँहों में।'' -पृष्ठ-53

नितांत व्यक्तिगत आहों की अभिव्यक्ति शांत रस में हुई है,

''ढाँकती अपने ही हाथों से बदन,
कोई कपड़ा दे अभागिन के लिए।
जितना चाहे वो सता ले मुझको और,
मैं हूँ ज़िंदा सिर्फ़ कुछ दिन के लिए।'' -पृष्ठ-53

'ख़याल सबका उसे मेरा ही नहीं', 'आज आयें हमें मनाने हैं, 'कौन से ग़म की मय पिये हैं वो', और 'हम उनकी याद को दिल से लगाए बैठे हैं', को गंभीरता से पढ़ने पर पाठकों को ऐसा प्रतीत होता है कि कवि पुत्र शोक में भी ईश्वर को उलाहना नहीं देना चाहता। पार्थिव रूप से न होने पर भी वह बेटा हृदय से अलग नहीं हो पाता है। वह 'सर्वेभवन्तु, सुखिनः' में संतोष करता है:-

''खयाल सबका उसे मिरा ही नहीं,
फिर भी मुझको कोई गिला ही नहीं।
मैंने चाहा कि उससे दूर रहूँ,
क्या करूँ दिल तो मानता ही नहीं।
सब रहें खुश हमेशा दुनिया में,
इससे बढ़कर कोई दुआ ही नहीं।'' -पृष्ठ-59

मन शांति के प्रयास में वह दर्द को छिपाना चाहता है, फिर भी जब हृदय सहसा संतान-व्यथा से उबल पड़ता है तब उसके हृदय का चीत्कार सामान्य जनों को भी रुला देता है:-

"क्या करेंगे सुना के हाले ग़म, जख़्म दिल के हमें छुपाने हैं।
मौत और ज़िंदगी में फ़र्क नहीं, जागने सोने के बहाने हैं।
क़तरे क़तरे में ख़ून के वो है, उनके सिजदे में सर
झुकाने है।"-पृष्ठ-60

वंश का दीपक उजाला करके चला गया और अपने पीछे बुझते हुए दीपक का दृश्य छोड़ कर गया:-

"रोशनी दे रहे थे जो कल तक,
आज बुझते हुए दिए हैं वो" -पृष्ठ-61

"जो एक पल को भी मुझसे कभी जुदा न हुआ,
जुदाई उसकी बहुत दिल को खल रही है आज।
मिरे ख़याल में मंदिर है वह वही मस्जिद,
जहाँ भी प्यार की एक शम्मा जल रही है आज।" -पृष्ठ-63

मानव जब अनिवारणीय परिस्थितियाँ पा जाता है तब वह दुख को ही साथी बना लेता है और अन्ततोगत्वा वह आत्मदर्शन करना चाहता है।

"मैं भटक रहा हूँ इधर उधर, कभी इसके दर कभी उसके दर,
जो मिला सके मुझे मुझ से ही, उसी राहबर की तलाश है।"
-पृष्ठ-67

कवि देशवासियों से देश भक्ति की कामना करता है। कश्मीरी उग्रवादियों के प्रति कवि दुखी है और उनको कश्मीर से बाहर करना चाहता है : -

"संविधान राष्ट्र - ध्वज जो जलाते हैं,
दुश्मनों को देश में जो बुलाते हैं,
ऐसे देश द्रोहियों से मुक्ति चाहिए।" -पृष्ठ-94

अपने मन को संतुष्ट करता हुआ कवि कहता है कि भावनाओं की मृत्यु नहीं होती, उसकी कोई निश्चित आयु नहीं है। अयोध्या प्रसंग को कवि तटस्थ भाव से, इंसानियत की निगाह से देखता है, परखता है। सच्चा मानव बनने के लिए वह ज्ञान की ज्योति जलाना चाहता है:-

"लड़वाया इंसानों को है, मंदिर मस्जिद वालों ने,
आग लगाई है हर दिल में, उनकी गंदी चालों ने।" -पृष्ठ 98

गर्मों में कवि की दार्शनिकता देखिए : -

"एक जीवन तक नहीं, संबंध सीमित है।
मरण की बिछुड़न क्षणिक, अनुबंध जीवित है।
हूँ तेरी पतवार मैं, मझधार नहीं हूँ।"-पृष्ठ 100

'जिंदगी-एक कैलेंडर' में राष्ट्र के राजनेताओं पर व्यंग्य अंकित है। एक राष्ट्र दूसरे राष्ट्र से समझौता करके भी मुकर जाता है और विश्वास घात करता है। भारत के प्रधानमंत्री श्री अटलजी पाकिस्तान गये हाथ मिलाने। पाकिस्तान ने दोस्ती की कसमें खाई लेकिन भारतीय सीमा में कारगिल पहाड़ियों पर कब्ज़ा कर लिया। इन्हीं विचारों का दर्शन करे : -

"अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में निर्णय होता है-
कोई देश किसी देश पर आक्रमण नहीं करेगा।
निर्णय की स्याही सूख नहीं पाती-
हमले शुरू हो जाते हैं।" पृष्ठ-105

'जीवन और अस्तित्व', 'मेरा दुख', 'तुम मुझसे झूठ बोल रहे', में अनेक सुंदर विचारों का समावेश है। कोई भी व्यक्ति अपने कर्मों से संसार में यशस्वी बनता है और शरीर न रहने पर उसके सिद्धांत जीवित रहते हैं। अपने राष्ट्र पुरूषों और परमात्मा का स्मरण करता हुआ कवि प्रेम के प्रसार पर बल देता है।:-

'नफ़रत से नफ़रत और प्यार से प्यार उगता है
वैसे ही जैसे बबूल से बबूल और आम से आम उगता है।
नफ़रत प्यार नहीं देती, प्यार ही प्यार देता है।"
प्यार का ख़ज़ाना लुटा दो, प्यार बो दो
प्यार की फसल बढ़ने दो
आने वाला कल, प्यार की फसल काटेगा
और उसे फिर फिर बोयेगा
प्यार ही जीवन है। -पृष्ठ 107

मानव को मायावी संसार के यथार्थ सुख और दुख सहने पड़ते हैं ; वह अलौकिक कैसे हो सकता है। जब उसकी जड़ ही मोह राग से निर्मित है तब उसकी कोपलें ममता-मोह से रहित कैसे होंगी। यथार्थ भोगने के लिए देवता भी मनुष्य बनना चाहते हैं। कवि मानव जीवन को भोग की अनिवार्यता से जोड़ता है जो सार्वभौमिक सत्य है

"मैं मर्यादा पुरुषोत्तम राम नहीं, योगेश्वर कृष्ण भी नहीं
मैं ममता-मोह, राग-अनुराग द्वारा निर्मित मनुष्य हूँ

सुख में अवश्य हँसूँगा दुख में अवश्य रोऊँगा
इसीलिए देवता तक मनुष्य देह पाने को तरसते हैं।–पृष्ठ–113

'क्षणिकाओं के अन्तर्गत सुख दुख को मन का विकल्प माना गया है। धन रहते हुए कोई आहें भरता है और कोई धनहीन खर्राटे की नींद सोता है। यह मन की ही करामात है : –

"मेरे पास धन है, फिर भी मैं दुखी हूँ
तुम्हारे पास धन नहीं, फिर भी तुम सुखी हो
सुख धन में नहीं, मन में है।"– पृष्ठ–116

जीवन का वास्तविक अर्थ इस प्रकार है।–

"जीवन का अर्थ, सिर्फ़ स्वयं जीना नहीं
औरों को भी जीने देना है।।" – पृष्ठ –116

दहेज़ दानव को अपनाने वाले लोगों पर व्यंग्य कितना सटीक है।:–

"तुमने बहू को पंखे से लटकाया, फिर भी स्कूटर न मिला
अब तुम फाँसी पर लटको
ऊपर स्कूटर तुम्हारा इंतज़ार कर रहा है।" – पृष्ठ –115

कवि श्री रामप्रकाश गोयल के जीवन का अनुभव प्रस्तुत कृति में मानवीय मूल्यों को उदघाटित करने में सफल रहा है। उनकी गजलों में, गीतों में, क्षणिकाओं में अनेक हित साधक भावनाएँ और समाधान अनुस्यूत हैं

"काम जो आते हैं औरों के लिए दुनिया में
वो ही जीते हैं कभी मरते वो बेनाम नहीं।"

प्रवक्ता–हिन्दी विभाग
विद्यामंदिर, इंटर कालेज,
मिल्कीपुर, फ़ैजाबाद

एक समन्दर प्यासा-सा : जीवन के मूल्यों के दर्पण में

रईस बरेलवी

श्री रामप्रकाश गोयल का कलाम पुरानी एवं नई रिवायतों का संगम है। उनके कलाम में जहाँ मीर, ग़ालिब और चकबस्त का ग़मे जानाँ, ग़मे दौराँ और ज़िंदगी का फ़लसफ़ा पुराने रिवायती अन्दाज़ में मिलता है वहीं फ़िराक़ और हाली की नयी क़दरें भी देखने को मिलती हैं। वह सामाजिक मरहलों एवं जीवन के फ़लसफे से सम्बन्धित किसी भी मफ़हूम को कवित्व करने में शेरियत व तग़ज्जुल का भरपूर ख़याल रखते हैं। उनके यहाँ अल्फाज़ में सादगी और सरलता है लेकिन मफ़हूम में गहराई देखने को मिलती है।

दिल मिले दिल से तो हालात बदल सकते हैं।
उसके आँसू मिरी आँखों से निकल सकते हैं।

उनके यहाँ मुबालग़ा कम हक़ीक़त ज़यादा मिलती है।

मैं जिसे ज़िन्दगी समझता हूँ, वह मिरी मौत का बहाना है।
दिल को दिल से मिलने में कुछ वक़्त तो लगता है।
नयी इमारत बनने में कुछ वक़्त तो लगता है।
दूर जितना मैं उनसे जाता हूँ, उनको उतना क़रीब पाता हूँ,

राम प्रकाश गोयल साहब जो महसूस करते हैं उसे बग़ैर किसी झिझक के बेबाकी से अपने कलाम में नज़्म कर देते हैं।

जो नज़र नज़र से मिला सके, मुझे उस नज़र की तलाश है
हुई जिससे कोई ख़ता नहीं, मुझे उस बशर की तलाश है।
दोस्तों ने तो दोस्ती बेची, हमने उनके लिये ख़ुशी बेची,

उनके कलाम की यह भी एक ख़ूबी है कि उनकी मुबालग़ा-आराई ा हक़ीक़त-आराई महसूस होने लगती है। इशारे किनाए उनके ज़ाम का खास हुस्न है। कहीं कहीं उनके शेर का असल मतलब ़ीक़ी न होकर मजाज़ी होता है और अजीब लुत्फ़ देता है। जैसे -

चार तिनकों का आशियाँ मेरा,

है वही बर्क़ की निगाहों में।

उनके गीत और ब्लैंक वर्सेज उनकी इन्फ़िरादियत को दर्शाते हैं। यहाँ भी वह अपने कलाम की पुख़्तगी का खुबूत पेश करते हैं। मैं यह कहने पर गर्व महसूस करता हूँ कि उनके गीत, ग़ज़ल एवं ब्लैंक वर्सेज का यह संस्करण 'एक समन्दर प्यासा-सा' हिन्दी और उर्दू काव्य के एक संगे मील की हैसियत रखता है।

वह भीड़ में भी तो तन्हा दिखाई देता है,
वह जाने क्या है मगर क्या दिखाई देता है।

रईस मार्केट, ईसाइयों की पुलिया,
बरेली

एक समन्दर प्यासा-सा : जीवन के तल्ख़ और मीठे एहसासों से साक्षात् करातीं ग़ज़लें

डॉ० उर्मिलेश

कोई भी सच्चा कवि परम्परा के नाम पर किसी रूढ़ि को स्वीकार नहीं करता और न ही आधुनिकता के नाम पर चालू, फ़ैशन को अपने रचना-कर्म से जोड़ता है। श्री राम प्रकाश गोयल बेशक परम्परावादी लहजे के ग़ज़ल-गो कवि हैं लेकिन आधुनिकता से बिल्कुल मुँह फेरे हों, ऐसा भी नहीं। 'एक समन्दर प्यासा-सा' संग्रह की ग़ज़लों, क़तात, शेर, गीत, अतुकांत कविताओं तथा क्षणिकाओं, सभी में श्री गोयल जैसे है वैसे ही प्रस्तुत हुए हैं। उनकी रचनाओं में बुनावट है लेकिन बनावट नहीं है। वे शोर के नहीं बल्कि शऊर के शायर और कवि हैं। मुझे उर्दू की नयी कविता के प्रतिष्ठित हस्ताक्षर श्री शुजा ख़वर का यह शेर ध्यान में आ रहा है -

तूफ़ान हो सीने में मगर लब पे ख़मोशी
हज़रात यही होते हैं आसार ग़ज़ल के।

अपनी इन ग़ज़लों में श्री राम प्रकाश गोयल एक दर्दआशना दिल रखने वाले शायर के रूप में नज़र आते हैं। कवि का व्यक्तित्व

उसकी रचना से अलग होकर दर्द की अनुभूतियों के इर्द गिर्द ही ज्यादा रहता है। 1972 में प्रकाशित उनका मनोवैज्ञानिक उपन्यास 'टूटते सत्य' जहाँ त्रिकोण प्रेम को लेकर लिखा गया, वहीं उनका 1987 में प्रकाशित ग़ज़ल संग्रह 'दर्द की छाँव में' भी प्रेम और दर्द की अनुभूतियों पर ही केन्द्रित रहा। इसी तरह 1992 में प्रकाशित उनका दूसरा ग़ज़ल संग्रह 'रिसते घाव' भी मूलतः प्रेम और विरह के अनुभवों से ही सम्पन्न दिखा। और तो और इसी वर्ष उनके द्वारा सम्पादित 'सच्चे प्रेम पत्र' नामक पुस्तक जो डायमण्ड पॉकेट बुक्स दिल्ली ने प्रकाशित की उसकी भूमिका श्री गोयल के प्रेम और वियोग के अनुभवों से ही ज़्यादा जुड़ी दिखी। उन्होंने एक नाटक 'दिल और दिमाग़' भी लिखा है जिसमें उन्होंने मनुष्य के हृदय और मस्तिष्क में चलने वाले द्वन्द्व का प्रतीकात्मक चित्रण किया है। यदि उन सभी कृतियों को मनोविकलन प्रणाली से समीक्षायित किया जाए तो यह निष्कर्ष सहज ही निकल सकता है कि श्री राम प्रकाश गोयल प्रेम और दर्द के भोगे हुए क्षणों के निश्छल रचनाकार हैं। अपनी इस निश्छलता की अभिव्यक्ति में कहीं-कहीं वे इतने सरल हो जाते हैं, जैसे सीधे-साधे हमसे बतिया रहे हों।

रातें गुज़री जागते जिनके लिए,
वो नहीं मिल पाए एक दिन के लिए।
बेरुख़ी उसकी सह रहे हैं हम,
फिर भी हमसे गिला नहीं होता।
हम उनकी याद को दिल से लगाए बैठे हैं
उधर वो प्यार से नजरें चुराए बैठे हैं।
पाया है प्यार करने का कितना बड़ा सिला,
हम इस तरह मिटे हैं कि मंसूर हो गये।
तू तो तस्वीर कला की है मुजस्सम ऐसी,
जबसे देखा है तुझे मुझको खुदा याद नहीं।
तुमको मैंने लिखे थे जो भी खुतूत।
उनको दिल से लगाके देखो तो।
प्यार होता नहीं कभी नाकाम,
इसपे ईमान लाके देखो तो।
मुहब्बत एक ऐसी दास्ताँ है
कहीं चुप है कहीं यह बाज़बाँ है।

मनुष्य कैसा है, केवल यही बताना कविता का धर्म नहीं होता बल्कि उसे कैसा होना चाहिए, इसे यदि कविता नहीं बतायेगी तो और कौन बतायेगा। जबसे कविता से 'प्रेम भाव' को छिछला मानकर आउट डेटेड करार दिया, तबसे ही हम इसके कुपरिणाम उग्रवाद, लूट, हिंसा, दमन, साम्प्रदायिक दंगे, रिश्तों की टूटन आदि के रूप में देख रहे हैं। आज के उत्तर आधुनिकवादी भी बड़ी शिद्दत से कविता में प्रेम की वापसी को तरजीह देते दिखाई देने लगे हैं। गोयल साहब इस दृष्टि से कहीं ग़लत नहीं हैं। भले ही उनका अन्दाज़ उन ग़ज़लों में पुराना दिखे लेकिन प्रेमानुभूतियों की सरल-सहज अभिव्यक्ति उन्हें कहीं से भी ग़लत साबित नहीं कर सकती। दोस्ती, रिश्ते, आपसी प्रेम, भाईचारा, जो कभी इन्सानियत की बुनियाद हुआ करते थे आज की भौतिकताओं और स्वार्थपरताओं ने उन्हें खोखला कर छोड़ा है।

दोस्तों की दुश्मनी ज़िन्दा रहे,
उनसे मिलिए और हँसते जाइये।
वो जो कहता है कि अब दोस्त ज़माने में नहीं,
उसने तो मुझसे अभी तक नहीं मिलकर देखा।
जिसकी आँखों में हों आँसू किसी मुफ़लिस के लिए,
ऐसे इन्सान को भगवान समझते रहिये।
काम जो आते हैं औरों के लिए दुनिया में,
वो ही जीते हैं कभी मरते वो बेनाम नहीं।
जो मुहब्बत करें नफ़रत से सदा दूर रहें,
ऐसे इन्सानों की एक बस्ती बसाई जाये।
सबके दिल में ख़ुदा का जल्वा है,
हर बशर कितना ख़ूबसूरत है।

श्री राम प्रकाश गोयल की ग़ज़लों में फैली यह जज़्बाती कैफीयत उनके व्यक्तित्व का एक हिस्सा बन गई है। मानवीय एकता और प्रेम के लिए वे जितने व्यग्र हैं उतने ही साम्प्रदायिक और अलगाववादी ताकतों की वजह से फैली नफरतों से दुखी भी।

नहीं तू हिन्दू, नहीं तू मुस्लिम, नहीं तू सिख-ईसाई है
इस धरती का तू बेटा है तू ही हिन्दुस्तान है।
हम न हिन्दू, न मुसलमाँ, न सिख, ईसाई
हम हैं इन्साँ हमें इन्सान समझते रहिए।

श्री गोयल जातीय और साम्प्रदायिक उन्माद के लिए राजनीति को ही दोषी मानते हैं। आज की नीतिविहीन राजनीति ने माँ-बेटे पिता-पुत्र, बहिन-भाई, और भाई-भाई के रिश्तों तक में दरारें डाल दी हैं।

हुआ क्या है आज निज़ाम को, कहीं अम्न है न सुकून है
जो फ़ज़ा में आग लगा सके मुझे उस शरर की तलाश है
क्या अजब सियासी ये दौर है हुए लोग इसमें हैं बदगुमाँ
जहाँ दोस्त बनके सभी रहें मुझे उस नगर की तलाश है।
रहनुमा बनके हमको लूट रहे
ऐसी इस दौर की सियासत है।

श्री गोयल बुरे दौर को अच्छे दौर में बदलता हुआ देखना चाहते हैं। साम्प्रदायिक और जातीय प्रश्नों का एक नायाब हल उनके पास है –

बैठकर दिल की गाँठे खोलें हम
दूर रहकर कहाँ गुजारा है।
क्यों इतना बेचैन ख़लिश क्यों दिल में है
मैंने कोई जुर्म कहीं कर डाला है।
समन्दर-सा है दिल में प्यार मेरे
समन्दर-सा मगर खारा नहीं है।

'एक समन्दर प्यासा-सा' की ग़ज़लों का एक उज्जवलतम पक्ष यह है कि तमाम निराशाओं और नाकामयाबियों के बीच रहकर भी इन ग़ज़लों का शायर आस्था और विश्वास के दामन को छोड़ता नहीं।

औरों की बैसाखी पर तू चल तो सकता है लेकिन
पहले ये अन्दाजा कर ले खुद कितना बलवान है।
थक गए पाँव दूर है मंज़िल
फिर भी चलते ही हमको रहना है।
सबसे मिलने का सिलसिला रखना
तन्हा जीने का हौसला रखना।

इन ग़ज़लों का एक और प्रभावी पक्ष है दर्शन और अध्यात्म अभिव्यक्ति। श्री गोयल का दार्शनिक सोच जीवन की गहरी घाइयों से जुड़ा है। हम जो भोगते और सुनते आये हैं, उसकी

सरलतम अभिव्यक्ति ही उनके दार्शनिक शेरों में हुई है। यह दर्शन कतई दायवी नहीं है प्रत्युत जीवन के यथार्थ से जोड़े रखता है। मसलन कुछ शेर देखें –

पहले अपनी खुदी मिटाना है, फिर खुदा के क़रीब जाना है।
चाहते हो सुख तो दुख को भी सहो,
दुख तो जीवन के लिए वरदान है।
ये दुनिया ख़्वाब है इस ख़्वाब का भरोसा क्या,
नहीं जो अपना वो अपना दिखाई देता है।
मौत और ज़िन्दगी में फ़र्क नहीं, जागने सोने के बहाने हैं।

उपरोक्त अशआर शंकराचार्य के 'ब्रह्म मिथ्या' और गीता के संदेश से अनुप्राणित हैं। जीवन को 'जागना' और मौत को 'सोना' पहले भी कई कवियों ने बताया है। श्री गोयल के पास अनुभवों का विपुल भण्डार है। उनके अनुभव उम्र की कड़ी धूप में तपे हैं, सच्चाइयों से रु–ब–रु हुए हैं।

आपको जो भी जितना प्यारा हो, उससे उतना ही दूर रहिए आप।
मंज़िलें उस तरफ़ भी होती हैं, जिस तरफ़ रास्ता नहीं होता।

कुछ शेर कहने की दृष्टि से काफ़ी सरल और सादा हो कर भी अपनी प्रभाव–शक्ति से खाली नहीं है। व्यंग्यात्मकता इन ग़ज़लों की अतिरिक्त विशेषता है।

मुझको दुनिया में मिले हैं कई ऐसे भी खुदा,
जिनको तक़लीफ खुदा से कि वो ऊपर क्यों है।

इन ग़ज़ल–संग्रह के साथ श्री गोयल ने कुछ गीत, कुछ क़तात, कुछ क्षणिकाएँ और कुछ अतुकान्त कविताएँ भी जोड़ दी हैं। गीतों में जहाँ राष्ट्रीय सन्दर्भ हैं वहीं प्रेम, विरह और दर्शन की अभिव्यक्ति भी हुई है। क़तात और क्षणिकाएँ श्री गोयल के अनुभवों के निचोड़ को बड़ी बारीकी से हमारे समक्ष रखती हैं। उनकी अतुकान्त कविताओं में कवि सुलभ चिन्तन के कई आयाम उद्घाटित हुए हैं।

रीडर एवं शोध निदेशक, हिन्दी–विभाग
नेहरू मेमोरियल शिवनारायण दास स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
बदायूँ (उ0प्र0)

जीवन की गहन अनुभूतियों की सहज अभिव्यक्ति 'एक समन्दर प्यासा-सा'

डॉ० रामस्वरूप आ

'एक समन्दर प्यसा-सा' एक ऐसा काव्य-संग्रह है जिसमें कवि ने संसार में जो कुछ देखा, भोगा तथा अनुभव किया उसे बेबाक शब्दों में कविता के माध्यम से प्रस्तुत किया है। हमारा एक जीवन सहज सरल तथा सतही है तथा दूसरा गहन परत-दर-परत गूढ़, जिसे आसानी से समझना कठिन है। 'एक समन्दर प्यासा-सा' में इस जीवन की गहन अनुभूतियों को सहज रूप में अंकित किया गया है। प्रेम-भाव, मैत्री, ईर्ष्या-द्वेष, मानवता, धार्मिक सहिष्णुता आदि को कवि ने इस रूप में प्रस्तुत किया है कि वे सहज ही हृदयंगम हो जाते हैं। कवि ने प्रेम को उच्च मानवीय धरातल पर स्थापित किया है

प्यार ही सब कुछ जहाँ में दोस्तो,
जाइए नज़दीक सबके जाइए।
प्यार दिलों में है न किसी के दूरी बढ़ती जाती है,
इसीलिए तो हर इन्साँ ही, लगता हारा हारा-सा।

पता नहीं संसार में दोस्त कब दुश्मन बन जाएँ।

दोस्त समझे थे जिसे, उसने निकाली दुश्मनी
दोस्त बन कर ही तो अब पीछे से करता वार है।

फिर भी कवि को इसका गिला नहीं है

सबसे मिलने का सिलसिला रखना,
तन्हा जीने का हौसला रखना।
आज जो दोस्त कल वही दुश्मन,
इसका दिल में न कुछ गिला रखना।
दोस्ती सोच कर ही करना तुम,
आजकल हमसफ़र नहीं होता।
दुश्मनी करके भला किसने सुकूँ पाया कभी,
बीज बर्बादी के इन्सान तो खुद बोता है।
दुश्मनों से भी प्यार करिए आप,
और बेफ़िक्र हो के रहिए आप।
हाथ में दोस्तों के पत्थर हैं,

तोल कर अपनी बात कहिए आप।

त्मनिरीक्षण के लिए कवि दृष्टि में आईना सर्वोत्तम है।

देवता खुद को कहने से पहले, आईना सामने तो रखिए आप।

झूठ ही जब सच कभी लगने लगे,
आईने के सामने आ जाइए।
आईना कहता है तुम तो बड़े झूठे हो दोस्त,
हाथ अपना कभी दिल पर नहीं रखकर देखा।
पीटता फिरता था सच का जो ढिंढोरा अपने,
सामने आईना उसने नहीं रखकर देखा।

रोधाभासों को कवि ने सहज रूप में प्रस्तुत किया है।

दूर हो जाएगा तुम जिसको बहुत चाहोगे
कोई समझा नहीं दुनिया में यह अक्सर क्यों है
चाहते सब हैं रहे अम्न हमेशा ही यहाँ,
ऐसी बर्बादी का फिर दुनिया में मंज़र क्यों है।
तुम तो कहते थे, बिछुड़ कर न कभी रोएँगे हम,
आज अश्कों का यह आँखों में समन्दर क्यों है।
उम्र बढ़ती है मगर ज़िन्दगी घटती जाए,
बेख़बर मौत से इंसान बराबर क्यों है।

कवि ने 'कान्तासम्मित उपदेश' का सफल प्रयोग किया है।

बात दिल की न सबसे कहना तुम,
हर कोई मोतबर नहीं होता।
सज़ा से बच न पाओगे, गलत उठाना क़दम नहीं।
औरों की बैसाखी पर तू चल तो सकता है लेकिन,
पहले यह अंदाज़ा कर ले, खुद कितना बलवान है।
सच्चे इन्सान बन सको तो बनो,
बस यही एक मेरी वसीयत है
चाहते हो सुख तो दुख को भी सहो,
दुख तो जीवन के लिए वरदान है।
इस दुनिया का गोरख-धंधा, कोई समझ नहीं पाया,
संत फ़कीरों की वाणी है, दुनिया एक तमाशा-सा
मन्दिर-मस्जिद ढूँढा उसको, फिर भी मिला नहीं मुझको,
झाँका जब अपने अन्दर तो, मैं था उसका साया-सा।

हिन्दी-शोध संस्थान
बी-14, नयी बस्ती, बिजनौर (उ0प्र0)

'एक समन्दर प्यासा-सा' - काव्य और के आईने में

कान्तिस्वरू

'एक समन्दर प्यासा-सा' में यदि एक ओर प्रेम की मृगतृष्णा है तो दूसरी ओर युग-यथार्थ द्वारा प्रताड़ित मानवता ीस भरी संवेदना भी।

'सोचने पर सबकी निकली इक मुसीबत की वजह,
कोई भी करता किसी को अब न दिल से प्यार है।'
'दोस्त समझे थे जिसे उसने निकाली दुश्मनी,
दोस्त बनकर ही तो अब पीछे से करता वार है।'

ार में वियोग की उष्मा और भटकन तथा बेवफ़ाई देखिए

'जलते हुए दिल का मेरे मंजर नहीं देखा
इस आग के दरिया ने समन्दर नहीं देखा।
क़िस्मत में लिखा जिसकी हो वीराँ में भटकना
जंगल के मुसाफिर ने कभी घर नहीं देखा।
रोने भी न दे, जुल्म भी करता रहे हर दम
दुनिया में कहीं तुम सा सितमगर नहीं देखा।'

मानवता के प्रति कवि की गहरी आस्था है।

इससे बढ़कर भलाई कुछ भी नहीं,
जो मिले उसको ही हँसाना है।
दीन-दुखियों के काम आऊँ मैं
अपनी यूँ ज़िन्दगी बिताना है।

इन्सान को उसने इतना ऊँचा उठाया है कि उसे भगवान र्जा दे दिया।

'दूसरे की ख़ता जो कर दे मुआफ़
वह नहीं इन्सान, वह भगवान है'

कवि राम प्रकाश गोयल के काव्य में आज के अति भौकितताव

ग में घोर यथार्थ के कुछ सजीव चित्र मिलते हैं –

'बाप को बेटे ने मारा, ख़बर यह कुछ भी गरम नहीं है।
इन्साँ मतलब में है अंधा, किसी का कोई धरम नहीं है।'

था –

'दूर है इन्सान से इन्सानियत
हँस रही है हर तरफ़ हैवानियत
और सच के गीत गाने पर रहे हम .....।'

ी गोयल के काव्य में यत्र-तत्र तीखे व्यंग्य दर्शनीय हैं।

'रहनुमा बन के हमको लूट रहे
ऐसी इस दौर की सियासत है।'

''मैं परेशान हूँ, आता न समझ में मेरी
जख़्म हर पीठ पे, हर हाथ में खंजर क्यों हैं ?''

'उम्र बढ़ती है मगर, ज़िन्दगी घटती जाये
बेख़बर मौत से इन्सान बराबर क्यों हैं ?'

काव्य में सार्वकालिक सत्य तथा सूक्तियाँ बिखरी पड़ी हैं।
'जीवन का अर्थ सिर्फ़ स्वयं जीना नहीं, औरों को भी जीने देना है।
सुख धन में नहीं, मन में है।''

सच न घटता है, और न बढ़ता है,
झूठ को घटते-बढ़ते रहना है।
वो नहीं अपनी जगह से हिलते,
जो उसूलों पे अपने चलते हैं।
जिस्म मिट्टी है, सिर्फ़ मिट्टी है,
उसका कुछ न भरोसा करिए आप।
क़द्र जिसने न की वक़्त की वक़्त पर
ज़िन्दगी भर वह फिर हाथ मलता रहा।' आदि

कवि के काव्य में मानव-मात्र के लिए कुछ नसीहतें भी हैं, जैसे–

'दोस्त किसको कहें किसे दुश्मन, मुझसे यह फ़ैसला नहीं होता,
दोस्ती सोचकर ही करना तुम, आजकल हमसफ़र नहीं होता।'

दीपक विद्या मन्दिर, साहूकारा, बरेली

'एक समन्दर प्यासा-सा' साहित्य का माधुर्य

डॉ० अफ़ज़ल बिजनौरी

'एक समन्दर प्यासा-सा' वह समन्दर है जिसमें मीठा और सिर्फ मीठा पानी भरा है। वह ऐसी फुलवारी है जिसमें गुलाब, जूही, चम्पा, बेला, गेंदा, हरसिंगार के फूल खिले हैं। अपनी पसन्द का जो चाहें चुन लीजिए।

देहलवी का यह शेर मैं गोयल साहब की ख़िदमत में पेश करता हूँ :-

जहाँ तक देखता हूँ मैं, जहाँ तक सोचता हूँ मैं,
कोई तेरे सिवा तारीफ़ के क़ाबिल नहीं मिलता।

शायर गोयल ने वही सब कुछ लिखा है जो हमारी रोज़ाना की ज़िन्दगी में हमारे आस-पास हो रहा है। कोई शेर ऐसा नहीं लिखा जो दूसरे धर्मों में विश्वास करने वाले लोगों को चुभे। गोयल साहब करते हैं :-

हिन्दू, मुस्लिम न सिख ईसाई कोई,
यह तो एक आपसी जहालत है।
हम न हिन्दू, न मुसलमान, न सिख ईसाई,
हम है इन्साँ, हमें इन्सान समझते रहिये।

हुस्न और इश्क़ शायरी की आत्मा है। इसके बग़ैर शायरी ऐसी ही है जैसे बग़ैर गहनों के कोई स्त्री हो। गोयल साहब कहते हैं :-

दिल की धड़कन ये कह रही मुझसे,
सिर्फ़ मेरे लिये जिये हैं वो।
पूछा उनसे है प्यार कितना उन्हें,
मुझको सीने से वो लगाते रहे।

गोयल साहब के कुछ सूफ़ियाना अंदाज़ देखिए :-

ढूँढ़ता फिरता था खुद को दर ब दर,
मुझको मेरा 'मैं' मिला तन्हाई में।
एक साया-सा साथ रहता है, मैं अकेला कहीं न जाता हूँ।
दोस्ती हो गयी मिरी उससे, जो मिरा दिल दुखाने वाला है।
जिन निगाहों में सिर्फ़ धोखा था,
उन निगाहों से प्यार कर बैठे।

बानखाना, बरेली

एक अतृप्त प्यास की कृति "एक समन्दर प्यासा–सा"

डॉ0 ऊषा ठाकुर

साहित्यकार का सृजन ही उसका परिचय होता है। मैंने "एक समन्दर प्यासा–सा" काव्यकृति को आद्योपान्त पढ़ा तथा इस निष्कर्ष पर पहुँची कि कवि का हृदय संवेदनशील होता है तथा "दर्द" उसे "दर्द" नहीं अपितु "छाँव" बना जाता है जिसमें बैठकर वह अपनी अनुभूतियों को काव्य कलेवर पहना कर, उन्हें गेय बना देता है। रामप्रकाश गोयल के ग़ज़ल संग्रह का नाम भी "दर्द की छाँव में" है। सम्भवतः इसी सोच के कारण उन्होंने अपने ग़ज़ल संग्रह को ऐसा नाम दिया है।

"एक समन्दर प्यासा–सा" काव्य संग्रह में भी सर्वत्र इसी "दर्द" की छाया व्याप्त है जिसमें बैठकर रामप्रकाश गोयल ने अपनी अनुभूतियों की अभिव्यक्ति चारुता से की है। कवि एवं साहित्यकार ने सदैव विष पीकर मानवता को अमृत ही प्रदान किया है।

किसी भी कवि के लिए मानव बनना आवश्यक होता है। रामप्रकाश गोयल के व्यक्तित्व और कृतित्व में सामंजस्य है। भले ही वे बहुत बड़े शायर और कवि नहीं हैं किन्तु सहृदय इंसान अवश्य हैं। 'एक समन्दर प्यासा–सा" की प्यास समन्दर की प्यास होने के साथ साथ अतृप्त मनुष्य की प्यास भी है जो पर्याप्त पाने के बाद भी शान्त नहीं होती। 'प्यास' के भी अनेक प्रकार हैं। विद्यानुराग की उत्तम कोटि की तथा भौतिक पदार्थ की प्यास अत्यन्त अधम कोटि की है जो अमूल्य जीवन का तिरस्कार सिखाती है।

रामप्रकाश गोयल की ग़ज़लों का मूल स्वर है प्रेम की प्यास, जिसके अभाव में वह दर्द का स्वर बनकर उनकी ग़ज़लों में बोलती है। उनकी इस कृति में जीवन की विसंगतियों, निष्ठुरता, बेवफ़ाई, टूटन तथा सियासी दौर का परिदृश्य संवेदना के साथ मिलता है। निराशा के बीच रहकर भी इन ग़ज़लों का शायर आस्था और विश्वास से परिपूर्ण है। वह सर्वत्र निराशा के अन्धकार से उबरने के लिए अध्यात्म का सहारा लेता है।

पहले अपनी खुदी मिटाना है,
फिर खुदा के क़रीब जाना है।

त्रिभुवन विश्वविद्यालय, काठमाडू (नेपाल)

"एक समन्दर प्यासा-सा" की प्यास

धर्मराज अर्याल

भारतीय साहित्यकारहरुमा एक सुपरिचित, सुविख्यात कवि उपन्यासकार, गज़लकार का नाम राम प्रकाश गोयल। सन् 1925 में, जुनमा बरेलीमा जन्मनु भए का कवि का थुप्रै साहित्यिक कृतिहरु प्रकाशनमा आएका छन्। 'टूटते सत्य', 'आईना', 'सच्चे प्रेम पत्र', 'रिसते घाव', 'दिल और दिमाग', 'एक समन्दर प्यासा-सा' जस्ता अनेकौ कृति फुटकर रचना प्रकाशित छन्। मनको तारलाई छुनै विलिकै रचना कोरी हाले गोयल बरेली कालेज का रिडर तथा पुराना अधिवक्ता पनि हुनहुछ। कर्म गर फलको इच्छा नगर भले हालसम्मको उहाँ की अन्तिमत कृति हो।

'एक समन्दर प्यासा-सा' भन्ते हिन्दी शब्द को नेपाली रुपान्तर हुच्छ एउटा प्यासी समुन्द्र। एउटा गम्भीर प्रश्न उठन सबछ आखिर जब समुद्र मैं प्यारी छ भने त्यसको पानी खाने को होला ?

गत एक महिना अधिक काठमाण्डौमा नेपाल भारत हिन्दी साहित्य सम्मेलन सम्पन्न भयो। त्यसै अवसरमा बरेली विश्व विद्यालय की रिडर महाश्वेता चतुर्वेदी को सौजन्यताबाट मलाई प्रति उक्त गजल संग्रह प्राप्त भर को हो।

गज़ल संग्रह आफै संग्रह बनेको छैन यसभित्र धरेबटा कुन्ठा, घात अर्न्तघात र घाउहरु लेप लागेर बसेका छन्। दुःखमा राम्रोसंग नपरी आखिर मानिस मानिस बल सक्दोरहेनछ भले कटु सत्यलाई कवि राम प्रकाश गोयलले चरितार्थ गर्नु भएको छ।

आफ्नों पुत्र वियोग को विषयलाई लिएर लेखिएका यी गज़लहरुलै हरेक मानवलाई रुवाउन सफल भएको छ। मानिस आखिर केही होइन, जसलाई जति माया गर्‍यो, ऊ त्यति चाँडो आफ्बाट बिदा हुन्छ भन्ने साश्वस्त सत्यको चित्रण पनि उहाँले गर्त भएको छ।

उमेरले परिपक्व भएपछि सन् 1983 मा उनको पुत्र विवेक गोयल को निधन पश्चात उनको स्मृतिमा प्रकाशित यो संग्रह को हरेक अक्षर-अक्षरमा आँसु छ। अक्षरमा आँसु छ। अक्षरमा कोरिएका गज़लमा री पंक्तिहर स्व0 अर्थमा आंशु नै हुन कि जस्ता छन्।

दैनिक नेपाली चितवन पोस्ट में दिनांक 5-2-2000 को प्रकाशित)

प्यासे श्री गोयल का 'एक समन्दर प्यासा-सा'

माँ शोभना

श्री राम प्रकाश गोयल की रचना "एक समन्दर प्यासा-सा" मैंने आद्योपान्त पढ़ी है। सरल शब्दों में गूढ़ बात को अभिव्यक्त करने की उनकी शैली से मैं प्रभावित हुई हूँ।

उनकी पुस्तक का नाम उनके जिस गीत पर आधारित है वह आरम्भ में ही है। इसकी अन्तिम पंक्तियाँ :-

"सबसे पूछा कोई अभी तक, मुझे न बतला पाया है
चाहता क्या है क्यों ये समन्दर रहता हरदम प्यासा-सा।

अपने में एक रहस्य छिपाये है। व्यक्ति इतनी दौड़-धूप करता है किन्तु उसको स्वयं ही पता नहीं है कि किस झंझावात में फँसा है उसको रास्ता नज़र नहीं आता। वह विराट् समन्दर की भाँति जीवन भर प्यासा का प्यासा रह जाता है। यह ग़ज़ल भौतिकता की दौड़ से मनुष्य को अध्यात्म की गहराई की ओर ले जाने का एक प्रयास है।

श्री गोयल ने जीवन को कई आयामों में जिया है फिर भी 'एक समन्दर प्यासा-सा' की रचना की। लगता है कि कहीं अवचेतन में प्यासे समन्दर की भाँति अतृप्ति की अनुभूति उन्हें भी आकुल करती है। यह अतृप्ति किसी बाह्य उपलब्धि से कभी भी तृप्त नहीं हो सकती है। यही इस पुस्तक का संदेश है। इसके पाठक श्री गोयल के शब्दों से प्रेरित होकर अवश्य ही अपने भीतर छिपे अमृत की खोज में अवश्य ही संलग्न होंगे जिससे सारी प्यास मिट जाती है।

5-ए, प्रगति नगर,
निकट श्री गुलाब राय मॉन्टेसरी स्कूल
नैनीताल रोड, बरेली

अबूझ तृषा से आकुल 'एक समन्दर प्यासा-सा'

डॉ० रामसनेही लाल शर्मा 'यायावर

आज का युग काव्यदृष्टा है। पात्रिकता, अतिबौद्धिकता, मूल्यहीनता और प्रश्नाकुलता की तप्त शलाकाएँ, मानवीय संवेदनशीलता की हत्या कर रही हैं जो काव्य का प्राण तत्व है। इस दुखद परिवेश में भी जो रचनाधर्मी अपनी रचना धर्मी ऊर्जा से निरन्तर वाग्देवी के भवन को प्रकाशित कर रहे हैं वे धन्य हैं। आयु के 74 वसन्त देख चुके, बरेली के वरिष्ठ साहित्यधर्मी श्री राम प्रकाश गोयल इन्हीं ऊर्जस्वी रचनाकारों में से हैं। उनका काव्य संग्रह 'एक समन्दर प्यासा-सा' एक ओर उनकी रचनाधर्मी ऊर्जा का ऐतिहासिक दस्तावेज है तो दूसरी ओर यह उनकी जीवन, जगत और समकालीन परिवेश पर संवेदनशील प्रतिक्रियाओं का संग्रह भी है। उनके पास दर्द में भीगा मन और मानवीय हित के लिए आकुल आत्मा है। संग्रह में 84 ग़ज़लें, एक नज़्म, 28 कत्‌आ:, 38 शेर, 8 गीत तथा 14 क्षणिकाएँ हैं। इसके कारण सकलन बहुआयामी और बहुरूपी है। संग्रह की भूमिका में प्रतिष्ठित कवि एवं शायर डॉ० उर्मिलेश ने ठीक ही लिखा है – "उनकी रचनाओं में बनावट है, बुनावट नहीं है। वे शोर के नहीं शऊर के शायर और कवि हैं। ग़ज़लों में वे एक दर्द आशना दिल रखने वाले शायर के रूप में नज़र आते हैं। वे प्रेम और दर्द के भोगे हुए क्षणों के निश्छल रचनाकार हैं और एकता और प्रेम के लिए जितने व्यग्र हैं उतने ही साम्प्रदायिक और अलगाववादी ताकतों की वजह से फैली नफ़रतों से दुखी भी। इसीलिए एक ओर वे –

मैं तो ज़िन्दा ही मर गया होता।
पास गर उनका घर नहीं होता।

जैसे ग़ज़ल के रवायती (परम्परागत) शेर कह लेते हैं तो दूसरी ओर जाति वर्ग, वर्ण और सम्प्रदायों के आधार पर समाज को टुकड़ा-टुकड़ा देखकर पीड़ित स्वर में नये तेवर के साथ यह भी कह लेते हैं–

चलते-चलते जाने हम कैसे मकाँ में आ गये
छत नहीं हरसू यहाँ दीवार ही दीवार है।

श्री गायल की गजलों से गुजरते हुए बार बार यह एहसास होता है कि वे गजल की शास्त्राय पग्म्परा से परिचित हा नहीं उससे भली प्रकार जुड़े भी हैं।

गज़ल, कत्‌अः रुबाई और शेर फ़ारसी से विरासत में मिली उर्दू की अपनी विधाएँ हैं, जिनमें से ग़ज़ल को छोड़कर शेष को हिन्दी कवियों ने मुक्तक विधा के अन्तर्गत समेट लिया है। श्री गोयल उर्दू परम्परा से भली प्रकार परिचित हैं। इसलिए उन्हें इन सभी विधाओं में महारत हासिल है। उनके कत्‌अः हृदय को गहराई तक प्रभावित करते हैं और शेरों में उक्ति वैचित्र का चमत्कार हैं देखें :-

अब जुदा होने लगीं परछाइयाँ
कितनी बढ़ती जा रही तन्हाइयाँ,
प्यार की राहों में कुछ तो मिल गया
फ़ासले तय कर गयी रुस्वाइयाँ (पृ089)
आईना दिखला के मैंने यह कहा,
अक्स किसका है ज़रा पहचानिए। (पृ0 93)

उर्दू की शास्त्रीय परम्परा में प्रशिक्षित कवियों की सबसे बड़ी कमज़ोरी उनकी गीत-रचनाएँ होती हैं, ठीक उसी प्रकार जैसे हिन्दी परम्परा के प्रशिक्षित (या अप्रशिक्षित या अल्प प्रशिक्षित) रचनाकारों में बहुत कम ठीक-ठाक ग़ज़लें कह पाते हैं।

श्री राम प्रकाश गोयल के पास एक सहजभाषा और अकृत्रिम शिल्प है। उनकी रचनायें स्वतः स्फूर्त हैं। वे न सायास अंलकारों का प्रयोग करते हैं न प्रतीकों और बिम्बों का। ग़ज़ल में सर्वाधिक फबने वाला अंलकार विरोधाभास है जिसका कवि ने बड़ी कुशलता से प्रयोग किया है।

1 वो भीड़ में भी तो तन्हा दिखाई देता है
2 मुस्कुरा के रुला देते हैं
3 तू मिरे दिल पे छा गया लेकिन,
दिले नादान को पता ही नहीं।

इत्यादि पँक्तियाँ विरोधाभास का जीवन्त उदाहरण हैं

पुस्तक में मुद्रण व प्रूफ की भूलें नहीं है। मुख पृष्ठ बहुरंगा प्रतीकात्मक और आकर्षक है। काग़ज बढ़िया व चिकना प्रयुक्त हुआ है। ये सारी विशेषतायें संग्रह की गुणवत्ता को बढ़ाती हैं। पुस्तक काव्य-प्रेमियों के लिए पठनीय भी है और संग्रहणीय भी।

रीडर, शोध एवं स्नातकोत्तर हिन्दी विभाग
एस0आर0के0 (पी0जी0) कालेज, फीरोजाबाद

'एक समन्दर प्यासा-सा' : अनूठा उपहार

अनिल शर्मा 'अनिल'

सुविख्यात रचनाकार और बहुमुखी प्रतिभा के धनी श्री राम प्रकाश गोयल ने काव्य संकलन 'एक समन्दर प्यासा-सा' उन हालात, हादिसात, एहसासात, मजबूरियों, रुसवाइयों और बेवफ़ाइयों को समर्पित की है जिन्होंने ये ग़ज़लें लिखवाई हैं।

उन ग़ज़लों के अध्ययन करने पर यह स्पष्ट हो जाता है कि ग़ज़ल को पारम्परिक विषय इश्क-मुहब्बत और शराब-शबाब से बाहर लाकर आम जीवन से ग़ज़ल को जोड़ने वाले कलमकारों की शृंखला में राम प्रकाश गोयल एक सशक्त हस्ताक्षर हैं।

'एक समन्दर प्यासा-सा' की ग़ज़लों में जहाँ ऐतिहासिक व पौराणिक घटना पात्रों को शेरों में रखा गया वहीं वर्तमान घटनाओं से भी रचनाकार अनभिज्ञ नहीं। एक ओर जहाँ दहेज, तन्दूर, चूड़ियाँ, मजबूरी, पत्थर, दोस्ती, दुश्मनी, प्रीतम, प्यार आदि को ग़ज़लों में रखा है वहीं दूसरी और मुहावरों और लोकोक्तियों का बहुत सहजता से प्रयोग किया गया है।

दर्शन-अध्यात्म व चिन्तन जैसे गम्भीर विषयों पर शेर कहते हुए भी रामप्रकाश गोयल बहुत सहज हैं। लगता ही नहीं कि रचनाकार उपदेश दे रहा है। वो तो कबीर-रहीम-बिहारी की तरह अपनी बात सहजता से कह जाता है जो पाठक के हृदय पर सीधे प्रभाव डालती है।

राम प्रकाश गोयल ने बहुत सादगी के साथ सीधे-सरल शब्दों में वर्तमान समय की मजबूरियों, विसंगतियों व समाज की विभिन्न प्रवृत्तियों को शेरों में ढाला है।

रात को मुझको नींद न आती, मेरी बेटी हुई सयानी।
कितनी बड़ी सौग़ात मिली है,
दिल में मुहब्बत आँख में पानी है।

लगता है कि हमारा ही अक्स इन ग़ज़लों में झलक रहा है। दुनिया समाज की हर घटना से सबक लिया है रचनाकार ने और उसी का

लाभ वह पाठकों को देना चाहता है मानो कोई समाज सुधारक धर्मोपिदेशक हमसे बात कर रहा है। ग़ज़लों में जीवन के दार्शनिक व आध्यात्मिक चिन्तन को भी अभिव्यक्ति मिली है। ज़िन्दगी, मौत, श्रीर, माया, दुनिया आदि के सम्बन्ध में बहुत से दार्शनिक शेर हृदय पर सीधे असर करते हैं।

रामप्रकाश गोयल ने अपनी ग़ज़लों में लोकोक्तियों, मुहावरों और ऐतिहासिक घटनाओं और पात्रों का समयानुकूल विषयानुसार प्रयोग किया है जिससे ग़ज़ल का भावपक्ष ही नहीं कलापक्ष भी मुखरित हुआ है – एक उदाहरण देखें :-

मुँह से जपते राम बग़ल में ईंटें हैं,
आस्तीन में साँप हाथ में माला है।

एक साथ 3–4, मुहावरों का एक ही शेर में प्रयोग का ऐसा अन्य उदाहरण शायद ही मिले। उन्होंने द्रौपदी, दुर्वासा, राम–रावण, दुर्योधन जैसे पौराणिक पात्रों को लिया तो सिकन्दर, फ़रहाद जैसे ऐतिहासिक पात्र भी लिये हैं। मुहावरों व इतिहास को ग़ज़ल में प्रयोग करना राम प्रकाश गोयल की अद्वितीय विशेषता है।

इन रचनाओं में कही गयी बातें किसी देश–काल की सीमा के साथ नहीं बँधी हैं। वे सार्वभौमिक व सार्वकालिक हैं। यह कृति काव्य प्रेमियों के लिए अनूठा उपहार है जिसमें रचनाकार का रचनाकौशल, उनके अनुभवों के साथ पुष्ट होकर पाठकों पर अपना प्रभाव छोड़ रहा है।

82, मुहल्ला–गुजरातियान
अमर प्रिन्टिंग प्रेस, धामपुर –246761
(बिजनौर) उ0प्र0

"सच्चे प्रेम पत्र" प्रेम का आईना

डॉ० अनीता जौहरी, डी०लिट्

श्री राम प्रकाश गोयल जी की पुस्तक "सच्चे प्रेम पत्र" में प्रेम के सम्बन्ध में लेखक का अपना एक विलक्षण दृष्टिकोण है। यह दृष्टिकोण मात्र काल्पनिक ही नहीं वरन उसे शब्द-रूपी माला में पिरोकर प्रेम रुपी तूलिका से इन्द्रधनुषी आभा प्रदान करने का उनका यह प्रयास निस्सन्देह ही स्तुल्य है।

प्रेमोत्पत्ति, अनुभूति, भावावेश की स्थिति एवं अभिव्यक्ति के चक्रव्यूह में प्रवेश करते हुए प्रेम की संकीर्ण गलियों में लेखक ने उन्मुक्त विचरण किया है। कहीं प्रीत के रहस्य का पर्दाफाश किया है तो कहीं प्रेमी युगल के मध्यस्थ सम्बन्धों को परत दर परत उजागर किया है। इन पत्रों में आने वाले शब्दबोध पाठकों को झकझोर देने की अद्भुत क्षमता रखते हैं। उनकी सुप्त भावनाओं को जागृत कर उनमें अदम्य उत्साहवर्द्धन करते हैं और एक नवीन रहस्य का उद्घाटन कर एक नव सृजन उद्भासित करते हैं। वर्णित शब्द एक ऐसा उपवन सजाते हैं जहाँ सब कुछ व्यवस्थित है, तर्कसंगत है, सुन्दर है और पारदर्शी है। एक नियम में आबद्ध होने पर भी जहाँ उच्छृंखलता नहीं, रोमांच तो है पर अश्लीलता नहीं। सब कुछ अस्त-व्यस्त है अर्थात मस्त-मौला की स्थिति होने पर भी एक सटीक अनुभूति है, एक तथ्यपूर्ण प्रस्तुतीकरण है।

प्रस्तुतीकरण अपने इस संकलन में भारतीय प्रेम की निश्चल पराकाष्ठा की परम्परा का सुन्दरता से निर्वाह किया है। प्रेम की अनुभूति ही सर्वश्रेष्ठ सुख है जिसमें अभूतपूर्व चुम्बकीय आकर्षण निहित है। गूँगे के गुड़ के समान प्रेम का स्वरूप अनिर्वचनीय है। सच्चा प्रेम जीवन के मरुस्थल में अमृतरस प्रवाहित कर देता है। प्रेम की मादकता ही प्रेमी का धन है, उसकी स्थायी सम्पदा है। प्रेम का सुदृढ़ सम्बल थाम मनुष्य अपने जीवन में कठिन से कठिन कार्य को भी पूर्ण कर लेता है।

लेखक ने अपनी पुस्तक में प्रेमी युगलों का विशेष रूपेण उत्साहवर्द्धन किया है। उनके टूटे हुए प्रेम को जोड़ने की कोशिश की है, रसिकों व सुधी पाठकों को समाधि की सी तल्लीनता प्रदान कर

ान निर्झर में अवगाहन करने का, रसाबोर होने का आनन्द उपलब्ध कराया है। यह प्रतीति पाठकों को और प्रेमी युगलों को एक नयी उपलब्धि के सुख से पुलकित करेगी, ऐसा परम विश्वास है।

स्नेह-सुर-सरिता, लावण्य उनकी लेखन साधना में सर्वत्र मनमोहक रूप में ही व्याप्त रहा है। प्रेम शब्द की व्याख्या, प्रकृति में प्रेम भावना का समावेश एवं निश्छल स्नेह का पारस्परिक आदान-प्रदान लेखक के अद्भुत कौशल्य का परिचायक है। प्रेम का सांगोपाँग निरूपण, समुचित शब्द-चयन तथा भाषा प्रवाहमयता पाठकों को तल्लीनता की उस चरम-सीमा का स्पर्श सहज ही करा देती है, जहाँ रस है, सौन्दर्य है अकथनीय, अवर्णनीय परमानन्द की प्राप्ति है। जहाँ प्रेमागन में प्रेम-प्रसून का पल्लवन एवं प्रस्फुटन अपनी सुरभि दिकीर्ण करता है, प्रेम कलिका की अपरिपक्वता जहाँ उद्यान को आकर्षित करती है तो प्रेमाधिक्य की अनुभूति का परम सुख पाठक अपनी मुट्ठी में आबद्ध कर लेना चाहता है। वह उस परमानन्द से पल भर भी दूर होना नहीं चाहता। समाधिस्थ योगी की भाँति जब तन्द्रा टूटती है तो वह ठगा सा रह जाता है। यथार्थ और कल्पना में भेद नहीं कर पाता, नहीं समझ पाता कि वह कोई पुस्तक पढ़ रहा था या स्वयं की परिक्रमा कर रहा था। आगे पीछे लिखा हुआ प्रत्येक अध्याय, प्रत्येक पृष्ठ प्रसंग सब कुछ तो उसे वास्तविक जान पड़ता है।

तो क्या यह प्रेमालिंगन की सूझ, स्नेह की परख, अनुभूति की कसौटी पर खरी उतरती है ? क्या यह तर्कसंगत है ? क्या यह सूझ मौलिक है ?

उद्भट विद्वान, मनीषी साहित्यकार एवं कुशल समालोचक, लेखन प्रतिभा के परम धनी श्री राम प्रकाश गोयल ने विशद विस्तीर्ण एवं व्यापक समीक्षा की अवधारणा ही अपनी इस पुस्तक में की है। अपनी चिन्तन प्रणाली में प्रेम जैसे विवादास्पद विषय का समन्वय करने का उन्होंने सफल प्रयास किया है। न केवल हिन्दी जगत में अपितु विश्व में प्रेम पर जो पुस्तकें लिखी गई, उनके मध्य में इस पुस्तक का प्रकाशन सर्वथा सराहनीय एवं मांगलिक है।

प्रवक्ता, संगीत (गायन), कन्या महाविद्यालय
आर्य समाज, भूड़, बरेली

सच्चे प्रेम पत्र : एक अध्ययन

डॉ० एन. एल. शर्मा

शेक्सपीयर ने कहीं लिखा है – दे लव नॉट हू डू नॉट एक्सप्रेस देअर लव। प्रेम पत्र भावनाओं की अभिव्यक्ति के सबसे सरल, सहज, सफल तथा प्रभावी और पूर्ण माध्यम हैं। जब प्रिय पात्र दूरस्थ हो तो अपनेपन के भाव से रचे पत्र ही भावाभिव्यक्ति कर सकते हैं। यूँ भी प्रिय पात्र को समक्ष और समीप पाकर जहाँ वाणी मौन होने लगती है, कण्ठ अवरुद्ध होने लगता है वहाँ लेखनी भाव व्यक्त करने के लिये और भी व्यग्र हो जाती है। मुखरित लेखनी प्रेम का जो भाव चित्र अंकित कर जाती है उसकी बराबरी तूलिका कभी नहीं कर सकती।

"सच्चे प्रेम पत्र" में गोयल साहब की लेखनी खुल कर प्रेम का खुलासा करती है। प्रेम, दाता और गृहीता के सम्बन्ध को स्वीकार नहीं करता तथापि वायवी दृष्टि से प्रेम के ये दो पक्षकार होते ही हैं और दोनों की अनुभूतियों का इस पुस्तक में सशक्त चित्रण किया गया है।

यूँ तो श्री राम प्रकाश गोयल मूलतः कवि और शायर हैं। उनके दो ग़ज़ल संग्रह "दर्द की छाँव में" तथा "रिसते घाव" प्रकाशित हो चुके हैं। उपन्यास नाटक और इस अधुनातन आलेखमयी पत्रात्मक अभिव्यक्ति जैसी विधाओं के माध्यम से राम प्रकाश गोयल जी एक समर्थ लेखक सिद्ध होते हैं। इससे पूर्व वे अपनी सशक्त गद्य लेखनी का परिचय अपने मनोवैज्ञानिक त्रिकोण प्रेम पर आधारित उपन्यास "टूटते सत्य" के माध्यम से दे चुके हैं।

इन पत्रों के माध्यम से गोयल साहब के ढाई आखर के पाठ की संपूर्णता सिद्ध होती है। वह प्रेम पंथ के पहुँचे हुये यात्री हैं और उनकी पहुँच प्रेम की भावनाओं के गुह्य से गुह्यतर कक्ष और पक्ष तक विस्तृत है। वह खुल कर प्यार करते हैं, सबसे प्यार करते हैं, सबको प्यार बाँटते हैं और सबको प्यार सिखाते भी हैं। वह प्यार का प्यारा स्वरूप हैं।

प्रेम के पाठ के पठन पाठन के प्रवीण श्री राम प्रकाश गोयल ने घटनाओं को नाटकीयता से सजा कर तथा भावनाओं को कल्पनाओं की चाशनी में पाग कर इन प्रेम पत्रों के माध्यम से जो मधुरिमा पाठकों को सुलभ करायी है उसका रसास्वादन बार बार इन पत्रों को पढ़ने से किया जा सकता है।

प्रवक्ता, बरेली कॉलेज, बरेली

सच्ची व पवित्र भावनाओं की अभिव्यक्ति है "सच्चे प्रेम-पत्र"

डॉ0 निर्मल

श्री राम प्रकाश गोयल की पुस्तक "सच्चे प्रेम पत्र" हिन्दी साहित्य में पनपे वादों और गुटबन्दियों से दूर शृंगार रस से ओत-प्रोत एक ऐसी अनूठी रचना है जिसके माध्यम से प्रेमी युगल ऐसे पत्रों का निःसन्देह सृजन कर सकते हैं जो अश्लीलता से मुक्त हों। पत्रों का शरीर लिखे गये शब्द हो सकते हैं किन्तु उनकी आत्मा उस कागज़ से कभी विलग नहीं हो सकती है जिस पर वे लिखे गये . . "मिट गये मेरी उम्मीदों की तरह हर्फ़ मगर, आज तक तेरे ख़तों से तेरी खुशबू न गयी। प्रेम समस्त मानवीय सम्बन्धों में सर्वश्रेष्ठ सुख है। संसार के अनेक महान व्यक्तियों ने अपने दिल की गहराइयों में डूबकर प्रेम पत्र लिखे हैं।" "सच्चे प्रेम पत्र" को पढ़ने से ज्ञात होता है कि लेखक राम प्रकाश गोयल ने बड़ी ही गहराई से महान आत्माओं के पत्रों का अध्ययन किया है। प्रेमिका जूलियट का पत्र उदाहरण स्वरूप देखें 'मेरे आराध्य, कैसा पत्र तुमने लिखा। अपनी आँखों में अपना दिल भरकर मैंने उसे पढ़ा। ऐसा लगा कि पत्र का एक एक शब्द सूर्य की किरणों की तरह मेरी हड्डियों में उतरता चला गया।" विदेशी संदर्भों के अतिरिक्त राधा-कृष्ण, लैला मजनू, शीरीं, फरहाद, सोहनी-महीवाल, हीर-राँझा, के पवित्र प्रेम का हवाला देते हुये लेखक ने प्रेमी और प्रेमिका के मनोभावों को स्पष्ट किया है। यद्यपि पुस्तक की विषय वस्तु ऐसी है कि किसी के लिए भी अश्लीलता की गलियों में भटक जाने की सम्भावना हो सकती थी किन्तु राम प्रकाश गोयल जी ने "सच्चे प्रेम पत्र" को खुदा की इबादत तक ही सीमित रक्खा है . . . "मेरे महबूब की सूरत खुदा से मिलती जुलती है, मुहब्बत की मुहब्बत है, इबादत की इबादत है।" कुल मिलाकर इस पुस्तक के समस्त पत्र ऐसे हैं कि पढ़ने वाला प्रेम-रस में सराबोर हुये बिना नहीं रह सकता। 'सच्चे प्रेम पत्रों' के माध्यम से राम प्रकाश गोयल जी ने आज के नवयुवक और नवयुवतियों को मर्यादा के अंतर्गत रहते हुये इस प्रकार का आचरण करने की प्रेरणा दी है जिसमें प्रेम जैसा शब्द घटिया अर्थों में प्रयुक्त न किया जा सके।

राम प्रकाश गोयल ने पत्र लेखन शैली की अपनी अनूठी पुस्तक से हिन्दी साहित्य जगत को एक अनोखा रत्न प्रदान किया है। पुस्तक की साज-सज्जा व प्रिंटिंग उत्कृष्ट कोटि की है।

(दिनांक 12-5-93 के दैनिक जागरण, बरेली में प्रकाशित)

'सच्चे प्रेम पत्र' के सफल रचनाकार प्रो. रामप्रकाश गोयल

डॉ0 बृज मोहन सिंह

मुझे प्रो0 गोयल द्वारा रचित एवं सम्पादित तथा डॉयमंड पॉकेट बुक्स नयी दिल्ली द्वारा 1992 ई0 में प्रकाशित 'सच्चे प्रेम पत्र' नामक पुस्तक ने कौतूहल में डाल दिया। इनके विषय में श्री गोयल से चर्चा करने पर यह अंदाज़ न लगा कि 67 वर्ष की आयु के इस प्रौढ़ साहित्यकार एवं विधिवेत्ता के हृदय में 18-20 वर्ष के नवयुवक जैसी प्रेम-पत्र लिखने की उमंग हिलोरें लेकर उनसे इस अमूल्य कृति का सृजन कैसे कराया ? यद्यपि अनेक विदेशी साहित्यकारों ने इस विधा पर लेखनी चलाई है परन्तु हिन्दी साहित्य में अन्य साहित्यकारों द्वारा लिखित प्रेम पत्र श्री गोयल के मुकाबले अधूरे एवं बौने प्रतीत होते हैं।

यह प्रेम-पत्र प्रेमी-प्रेमिकाओं के सच्चे प्रेम पत्रों का संकलन है। इसमें श्री गोयल ने प्रेम, विछोह, वेदना एवं दूरियों का तथा प्रेमिका से मिलन की आस का जितना सजीव एवं मोहक चित्रण किया है – वह प्रेम शास्त्र की अमूल्य धरोहर है। इन पत्रों के सम्पादन के उपरान्त श्री गोयल ने 'दिल की बात' के अन्तर्गत 'एक समन्दर प्यासा-सा' में लिखा है ''सच्चे प्रेम पत्र'' के बाद मुझे लगने लगा था कि मैं अन्दर से चुक गया हूँ। अब और बाहर आने को कुछ नहीं बचा ?'' इस प्रकार स्पष्ट है कि श्री गोयल अपनी समस्त साहित्यिक ऊर्जा को इन पत्रों के रचने एवं सम्पादन करने के बाद रिक्त महसूस करने लगे थे।

यह प्रेम-पत्र जहाँ एक ओर युवाओं एवं युवतियों के हृदय को स्पंदित करते हैं, नये भाव, नये विचार देते हैं वहीं 67 वर्षीय प्रौढ़ साहित्यकार श्री गोयल द्वारा सम्पादित यह पत्र प्रौढ़ों को संदेश देते हैं कि प्रेम करने की, प्रेम को समझने की एवं महसूस करने की कोई आयु सीमा नहीं होती। प्रेम एक संक्रामक रोग है जिससे यदि कोई ग्रसित हो गया तो वह जीवन भर इस प्रेम रोग के उपचार हेतु भटकता है और उसका उपचार साहित्यकार की लेखनी से रचित सच्चे प्रेम पत्रों द्वारा ही होता है।

श्री गोयल के दीर्घ जीवन की कामना करते हुये उनसे आशा रखता हूँ कि भविष्य में प्रेम शास्त्र विधाओं में नयी कड़ी जोड़ेंगे।

प्रधानाचार्य, आत्मा राम इंटर कालेज, बलिया, जिला-बरेली

'सच्चे प्रेम पत्र'

'सच्चे प्रेम पत्र' श्री राम प्रकाश गोयल द्वारा एकत्रित किए गए प्रेम पत्रों का संकलन है। यह पुस्तक अपने आप में एक विचित्र किन्तु सराहनीय प्रयोग है। गोयल जी के कथनानुसार यह पत्र पूर्णतया सच्चे हैं अर्थात् सच्चे निष्ठावान प्रेमी प्रेमियों के मध्य किए गए भावनात्मक आदान प्रदान के सच्चे दस्तावेज हैं।

प्रयोग विचित्र है क्योंकि इससे पूर्व इस तरह का प्रयास करने का साहस शायद ही किसी लेखक ने किया हो। किसी भी व्यक्ति के सच्चे प्रेम पत्रों को प्राप्त कर प्रकाशित करने का काम वही कर सकता है जिस पर प्रेम पत्र लेखक विश्वास करते हों।

भारतीय समाज में जहाँ प्रेम सम्बन्ध सामान्यतया परिवार व समाज को मान्य नहीं है, वहाँ ऐसी पुस्तक का प्रकाशन अपने आप में एक विद्रोह है लेकिन यह विद्रोह गोयल जी को बधाई का पात्र बनाता है क्योंकि संकलित पत्र निष्ठा व व्यक्तिगत समर्पण के प्रमाण हैं।

किसी भी आयु के संवेदनशील पाठक के लिए पुस्तक न सिर्फ़ रुचिकर होगी बल्कि कोरे अहंवाद व दोहरी मान्यताओं के पक्षधर लोगों के मर्म पर कहीं प्रहार भी करेगी। क्योंकि 'प्रेम' चर-अचर सृष्टि का आधार है। व्यक्तिगत व आध्यात्मिक संतुष्टि का एक मात्र स्रोत है। प्रेम आयु, वर्ग, जाति, लिंग सभी तरह की भेदबुद्धि को परास्त करने वाली भावनाओं का प्रवाह है। इसका बीज आत्मा में है। यह पनपता मन में है। शरीर तो मात्र इसकी अभिव्यक्ति का आधार है।

मार्गदर्शन विहीन युवाओं के लिए यह पुस्तक गोयल जी जैसे वरिष्ठ व्यक्ति द्वारा दिया गया मार्गदर्शन का सेतु भी है।

सही मार्ग दर्शन के अभाव में जहाँ आज युवा पीढ़ी 'पश्चिमी बेस्ट सेलर्स' या देशी सस्ती अश्लील पुस्तकों व पत्रिकाओं की तरफ़ आकर्षित हो रही है वहीं यह पुस्तक स्पष्ट कर रही है कि प्रेम एक ऊर्जा है जिसे इबादत बनाकर व्यक्ति अपने जीवन को ऊर्ध्वगामी बना सकता है, वासना की कीचड़ नहीं जो व्यक्ति की ऊर्जा का ह्रास कर उसे पतन के अँधेरों में ढकेल देती है।

इस प्रयास के लिए गोयल जी प्रशंसा के पात्र हैं।

"'राष्ट्रीय जनादेश'' फरीदाबाद में 21-9-97 को प्रकाशित

1992 में प्रकाशित रिसते घाव की समीक्षाएँ

मेरी बात

रामप्रकाश गोयल

विश्वनियन्ता परमपिता तक पहुँचने के तीन मार्ग हैं - सत्यम् शिवम्, सुन्दरम्। ये तीन मार्ग नहीं, बल्कि संसार में तीन प्रकार के व्यक्ति हैं जो अपने-अपने ढंग से चलते हैं। बुद्ध उसी मार्ग पर चले हैं जिस पर महावीर और रवीन्द्रनाथ। बुद्ध का मार्ग सत्य के खोज का है, महावीर का शिवम् अथवा पवित्र आचरण को निखारते चले जाने का और रवीन्द्रनाथ का मार्ग है सौन्दर्य का, कला का। बुद्ध सत्य के आधार पर सब तोलते हैं, महावीर शिव के आधार पर और रवीन्द्रनाथ सौन्दर्य अथवा कला के आधार पर। रवीन्द्र नाथ का यह मार्ग ही काव्य का मार्ग है।

काव्य बहता है हृदय की रसधार से अथवा मस्तिष्क से। हृदय करता है सृजन (क्रिएशन) और मस्तिष्क करता है निर्माण (कांस्ट्रक्शन)। सृजन का अर्थ है शून्य से अस्तित्व में लाना। जहाँ कुछ भी न था वहाँ अचानक शून्य से कुछ अवतरित होता है। वही असली काव्य है। दूसरा एक काव्य है जहाँ हमारा मस्तिष्क कार्य करता है। हम जमाते हैं, खोजते हैं, सुन्दर शब्द बिठाते हैं। व्याकरण, छन्द, मात्राएँ संगीत सब व्यवस्थित कर देते हैं। कोई हमारी कविता को देखे, तो एक भी कमी न निकाल पाए। यह एक उपक्रम है, प्रयास है - अनायास नहीं होता है यह।

अँग्रेजी का महाकवि कॉलरिज जब मरा, तो उसके घर में चालीस हज़ार अधूरी कविताएँ पाई गई। अपने जीवन में उसने केवल सात कविताएँ ही पूरी की थीं। अनेक बार उसके मित्रों ने उससे कहा कि तुम सात कविताओं के बल पर महाकवि हो गए हो, अगर तुम्हारी ये सारी कविताएँ पूरी हो जाएँ तो संसार में किसी भाषा में तुम्हारा मुकाबला नहीं रहेगा। कॉलरिज कहता था- "पूरा करना मेरे बस में नहीं है। ये सात कविताएँ भी मैंने पूरी नहीं की हैं। अगर मैंने की होतीं, तो मैं चालीस हज़ार भी पूरी कर देता। मैं तो केवल माध्यम हूँ। जितनी उतरती गई, उतनी मैं लिखता रहा। कभी तीन उतरतीं, तो

तीन लिख देता चौथा नहीं उतर रही है – मैं क्या करूँ? राह देखता हूँ प्रतीक्षा करता हूँ। दो–चार साल बाद अचानक चौथी कड़ी आ जाती है, तब मैं लिख देता हूँ। मैं अपनी तरफ़ से नहीं जोड़ता। अगर मैं जोडूँगा तो वह मेरी होगी और पेबन्द की तरह अलग से मालूम होगी। वह परमात्मा से नहीं आई होगी।''

रवीन्द्रनाथ ने जब गीतांजलि का अँग्रेजी में अनुवाद पूरा कर लिया, तो उसे दिखाने के लिए वे अँग्रेजी के विद्वान् सी0एफ0 एन्ड्रूज के पास गए। उन्होंने चार स्थानों पर व्याकरण की भूलें बताईं जिन्हें रवीन्द्रनाथ ने सुधार लिया। कुछ दिनों बाद लंदन में अँग्रेजी के प्रख्यात कवि ईट्स को जब उन्होंने 'गीतांजलि' की कविताएँ सुनाईं, तो ईट्स ने उन्हीं चार स्थानों पर आपत्ति की और कहा कि और तो सब ठीक है, नदी ठीक बह रही है, किन्तु चार स्थानों पर कुछ अड़चन आ गई है और लगता है कि चट्टान पड़ गई हो। रवीन्द्रनाथ चौंके। उनके पूछने पर ईट्स ने ठीक वे ही चार स्थान बताए जो एन्ड्रूज ने सुधारे थे। ईट्स ने कहा कि भाषा का गणित पूरा है, व्याकरण ठीक बैठा है किन्तु इन चार स्थानों पर काव्य की धारा टूट गई है। तब रवीन्द्र नाथ ने अपने पहले वाले शब्द बताए। ईट्स ने कहा – यही ठीक है, भाषा की भूल है किन्तु काव्य सरलता से प्रवाहित हो रहा है। काव्य के लिए भाषा आवश्यक है, अनिवार्य नहीं। काव्य भाषा की अधिक चिन्ता नहीं करता। काव्य के पीछे भाषा आती है। केवल काव्य के गणित में कुशल होना पर्याप्त नहीं, हम उसमें डूब न पाएँगे। वह हमारे प्राणों को पुलकित न कर पाएगा। कवि रामावतार त्यागी ने इसी सम्बन्ध मे कितनी विचारणीय और सारगर्भित बात कही है –

> ''स्वर्ण को खोटा–खरा घिसकर बताती है कसौटी,
> पर कसौटी एक पत्थर है, स्वयं में कंचन नहीं है
> कोश में सबसे अधिक हैं शब्द लेकिन,
> कोश को कविता कहा जाता नहीं है
> काव्य उस अनुभूति का संयत प्रकाशन,
> बिन कहे जिसको रहा जाता नहीं है
> काव्य के गुण–दोष गिनना काम है उन पण्डितों का,
> बुद्धि जिनकी मात्र पूँजी, पास जिनके मन नहीं है।

काव्य का जन्म मात्र व्यथा से नहीं अपितु व्यथा और वैचारिक अनुभूति के सहयोग से होता है। सच्चा काव्य वही है जिसे पढ़कर लगे कि यह तो हमारी ही कथा है। इसी कारण काव्य और साहित्य की

तुलना दर्पण से की गई दर्पण हमारे अन्तर्जगत के बिम्ब व प्रतिबिम्बित करता है.

काव्यजगत् की पीड़ा जब अन्तर्जगत् को उद्वेलित करती है, तो हम विचार करने के लिए बाध्य हो जाते हैं और ऐसी तन्मयता के क्षणों में ही काव्य का अनायास ही जन्म होता है। इसीलिए शैली ने कहा – Our sweetest songs are those that tell of saddest thought.

आग की तरह मन भी एक आग है। जितना अधिक अँधेरा है उतना ही आग और मन चमकते हैं। अँधेरे के पत्थर की रगड़ पाकर रोशनी की किरण और अधिक तीक्ष्ण हो जाती है। जज़्बात की हथेली पर जलते हुए दिये के फ़साने का ही नाम है 'ग़ज़ल'। ग़ज़ल फ़ारसी से उर्दू में आई और उर्दू से हिन्दी में। फ़ारसी में ग़ज़ल को स्वतन्त्र नाम मिला, मगर उसका स्रोत अरबी शायरी ही है। अपने बादशाहों की तारीफ़ में अरबी शायर क़सीदे लिखते थे, जो प्रेम और शृंगार से लबालब भरे रहते थे। इन्हीं को ग़ज़ल कहा गया। फ़ारसी में ग़ज़ल का अर्थ है – औरतों से बातें करना। औरतें एक विषय पर तो बात करती नहीं, बल्कि कई विषय होते हैं उनकी बातों में। इसी तरह ग़ज़ल का हर शेर अपने में आज़ाद होता है, क्योंकि उसमें एक स्वतन्त्र चिन्तन प्रक्रिया होती है। ग़ज़ल के अन्य अर्थ हैं – 'जवानी के हाल का बयान करना' अथवा 'इश्क़ व जवानी का ज़िक्र'।

कवि कुँअर बेचैन कहते हैं – "गीत की तरह ग़ज़ल भी 'प्रतिबिम्ब' को "छाँव" बनाने की ही प्रक्रिया का दूसरा नाम है। निराशा और दुःख के क्षणों में जो काव्य पंक्तियाँ अनायास ही होंठों पर आ जाती हैं, वे साहित्य और जीवन दोनों ही क्षेत्रों की अमूल्य धरोहर हैं। ज़िन्दगी की कड़ी धूप में ये पंक्तियाँ छाँव का काम करती हैं। ग़जल की दो पंक्तियों की चिमटी हमारी ज़िन्दगी की उँगलियों में लगी हुई हज़ारों फाँसों को निकाल कर उनके घाव में स्निग्धता भरती रहती हैं। ग़ज़ल रेगिस्तान के प्यासे होंठों पर उतरती हुई शीतल तरंग की उमंग है। ग़ज़ल घने अन्धकार में टहलती हुई चिंगारी है, नींद से पहले का सपना है, जागरण के बाद का उल्लास है। ग़ज़ल गुलाबी पाँखुरी के मंच पर बैठी हुई खुशबू का मौन स्पर्श है। ग़ज़ल बहुत बड़ी चीज़ है, बहुत ऊँची और गहरी चीज़। ग़ज़ल की तलाश ही ग़ज़ल की ओर बढ़ना है और ग़ज़ल को पा लेना ग़ज़ल से वापसी का नाम है।"

ग़ज़ल का आधार प्रेम है। प्रेम मनुष्य को मनुष्य से जोड़ने वाला तत्व है। वह अनेक को एक करता है। प्रेम में आकर्षण है,

जीवन है। प्रेम से ऊँची जीवन की और कोई अनुभूति नहीं। ईसा ने परमात्मा को प्रेम कहा है और प्रेम को परमात्मा। जिसने प्रेम को नहीं जाना, वह जीवन को भी नहीं जान पायेगा। ग़ज़ल सौन्दर्य गाथा से अधिक प्रेम गाथा है। वह लौकिक पक्ष से होती हुई अलौकिकता की ओर बढ़ती है। फ़िराक़ साहब का कहना है कि "ग़ज़ल के शेरों में इंसानियत का होश आ जाता है। वह दुनिया के दिल और दिल की दुनिया की कहानी है।"

कुछ लोगों का मानना है कि अरब में एक व्यक्ति था, जिसने अपनी सारी उम्र शराब पीने और इश्क़ में गुज़ारी। वह हमेशा हुस्न और इश्क़ की तारीफ़ किया करता था। उस व्यक्ति का नाम था 'गज़ल'। इसीलिए ऐसे शेरों को 'ग़ज़ल' कहा जाने लगा जिनमें हुस्न और इश्क़ का इज़हार हो। 'ग़ज़ल' का एक अर्थ उस कराह से भी है, जो ग़ज़ाला (हिरन) तीर चुभने के बाद बेकसी के आलम में निकलती है। इसीलिए ग़ज़ल में एक कसक और टीस रहती है, जिसमें दुनिया की बेवफ़ाई का ज़िक्र रहता है। 'ग़ज़ल' चिन्तन, विचार तथा भावना के मिश्रण की कला है। उसके मिज़ाज में लोच है। यह बहुत आवश्यक है कि अनुभूति के साथ-साथ अभिव्यक्ति की शैली भी सशक्त हो। अभिव्यक्ति की शैली का ही दूसरा नाम तहज़ीब है। इसलिए 'ग़ज़ल' केवल शायरी ही नहीं, तहज़ीब भी है।

अमीर खुसरो को भारत में ग़ज़ल का प्रथम प्रतिष्ठाता कहा जाता है। अमीर ख़ुसरो की एक ऐसी ग़ज़ल मिलती है, जिसमें एक पंक्ति फ़ारसी में हैं और दूसरी हिन्दी में। इस ग़ज़ल की मिठास ज़रा देखिए-

"जे हाल मिसकी मकुन तग़ाफ़ुल, दुराय नैना बनाय बतियाँ,
किताबे हिजराँ न दारम ऐ जाँ, न लेहु काहे लगाय छतियाँ।
शबाने हिजराँ दराज़ चू ज़ुल्फ़ो, रोज़े वसलत चूँ उम्र कोताह,
सखी पिया को जो मैं न देखूँ, तो कैसे काटूँ अंधेरी रतियाँ।"

ख़िलजी दरबार में भी ईरानी कलाकार ग़ज़लें गाते थे। इन कलाकारों में मुहम्मद बिन सिक्का, ईसूमसिया और मुहम्मद नुकरी आदि सूफ़ी सन्तों ने भारत में ग़ज़ल का सबसे ज़्यादा प्रसार किया। उन्होंने अतीन्द्रिय और अलौकिक प्रेम की अभिव्यक्ति के लिए ग़ज़ल को अपनाया।

कुछ इतिहासकार कबीर को पहला ऐसा हिन्दी कवि मानते हैं जिसने ग़ज़ल लिखी है। कबीर लिखते हैं -

हमन ने इश्क मस्ताना हमन को होशियारी क्या
आजाद रहे या जग मे हमन की इन्तजारी क्या।
कबीरा इश्क़ का मारा दुई को दूर कर दिल से,
जो चलता राह नाजुक है हमन सिर बोझ भारी क्या।''

हुमायूँ को भी ग़ज़ल का शौक था। अकबर के दरबार में भी ग़ज़लों को प्रोत्साहन मिला। मीराबाई के पदों में भी कहीं-कहीं ग़ज़ल का छन्द दिखलाई पड़ता है। शाहजहाँ के काल में भी नासिर, अफज़ल इलाहाबादी एवं पं0 चन्द्रभान, उर्दू ग़ज़ल के मशहूर शायर थे। औरंगज़ेब के समय में ग़ज़ल का पतन हुआ। वह संगीत कला को विलासिता का साधन मानता था। उसी के समय में ग़ज़ल का वास्तविक जनक 'वली' दक्षिण भारत से दिल्ली आया था। वली के उत्तर भारत में आने के बाद ग़ज़ल का विकास दिल्ली में शुरू हुआ और वह फलने-फूलने लगी।

औरंगजेब के बाद मुहम्मद शाह रँगीले का युग आया। वाजिदअली शाह के समय में लखनऊ और दिल्ली ग़ज़ल के लिए बहुत प्रसिद्ध रहे। दिल्ली के प्रमुख शायर दाग़, मोमिन, ग़ालिब, मीर और जफ़र हुए। मीर ने जुबान को एक नया आयाम दिया। इस मामले में उनकी बराबरी करने वाला कोई दूसरा नहीं दीखता -

''हस्ती अपनी हबाब की सी है, यह नुमाइश सराब की सी है।
नाजुकी उसके लब की क्या कहिए, पंखुड़ी एक गुलाब की सी है।
मीर इन नीमबाज़ आँखों में, सारी मस्ती शराब की सी है।''

ग़ालिब ने ग़ज़ल को एक नया रास्ता दिखलाया। भाषा, भाव और अलंकार सबमें उन्होंने अपनी मौलिकता को अभिव्यक्त किया।

''हजारों ख़्वाहिशें ऐसी कि हर ख़्वाहिश पे दम निकले,
बहुत निकले मेरे अरमान लेकिन फिर भी कम निकले।
मेहरबाँ होके बुला लो मुझे चाहो जिस वक्त,
मैं गया वक्त नहीं हूँ कि आ भी न सकूँ।

उस अज़ीम शायर ग़ालिब ने कहा था कि जब से मेरे सीने का नासूर बन्द हो गया है, मैंने शेर कहना छोड़ दिया है।''

बहादुरशाह जफ़र ने किस सादगी के साथ अपनी पीड़ा को ज़ाहिर किया है -

उम्रे दराज़ माँग के लाये थे चार दिन,
दो आरजू में कट गये, दो इंतज़ार में।''

आधुनिक काल के शायरों में जिगर मुरादाबादी, इक़बाल और

फ़ैज अहमद फैज प्रमुख है फैज का कहना है कि शेर लिखना जुर्म न सही, लेकिन बेवजह शेर लिखते रहना ऐसी अक्लमन्दी भी नहीं है। फ़ैज का यह कहना कितना सही है कि 'शायर का कर्त्तव्य है कि वह जीवन से अनुभव प्राप्त करे और उस पर अपनी छाप लगाकर उसे फिर से जीवन को लौटा दे।'' अपने रूमानी एहसास को कितने हसीन अलफ़ाज़ के साथ ब्यान कर रहे है फ़ैज़ –

''मुझसे पहली सी मुहब्बत मेरी महबूब न माँग।
लौट जाती है उधर को भी नज़र क्या कीजे ?
अब भी दिलकश है तेरा हुस्न, मगर क्या कीजे ?
और भी दुःख हैं ज़माने में मुहब्बत के सिवा,
राहतें और भी हैं वस्ल की राहत के सिवा,
मुझसे पहली सी मुहब्बत मेरी महबूब न माँग।।''

फ़िराक़ गोरखपुरी किस सादगी से उस रहस्यमय शक्ति के प्रति समर्पित हैं –

''पाल ले एक रोग नादाँ ज़िन्दगी के वास्ते,
सिर्फ़ सेहत के सहारे ज़िन्दगी कटती नहीं।''
''तुम मुख़ातिब भी हो, क़रीब भी हो,
तुमको देखूँ कि तुमसे बात करूँ।''
''उम्र भर का है तजुर्बा अपना,
शायरी उम्र भर नहीं आती।''

शकील बदायूँनी, साहिर लुधियानवी तथा कैफ़ भोपाली ने ग़जल को अपने–अपने रंग से नये रंग दिये हैं। साहिर कहते हैं –

''तआज्जुब है कि जब हम ताक़ते परवाज़ खो बैठे,
क़फ़स ने यूँ कहा चुपके से जा, आज़ाद करता हूँ।''
''अश्कों में जो पाया है वह गीतों में दिया है,
इस पर भी सुना है कि ज़माने को गिला है।
जो तार से निकली है वह धुन सबने सुनी है,
जो साज़ पे गुज़री है, वह किस दिल को पता है।
हम फूल हैं, औरों के लिये लाये हैं ख़ुशबू,
अपने लिए ले दे के बस इक दाग़ मिला है।''

शकील भी अपने रंग का एक अजब शायर था –

''सुबह का अफ़साना कहकर शाम से,
खेलता हूँ गर्दिशे अय्याम से।

उनकी याद, उनकी तमन्ना उनका ग़म,
कट रही है ज़िन्दगी आराम से।

"ग़मे आशिक़ी से कह दो रहे आम तक न पहुँचे,
मुझे ख़ौफ़ है ये तोहमत मेरे नाम तक न पहुँचे।
मैं नज़र से पी रहा था तो ये दिल ने बद्दुआ दी
तेरा हाथ ज़िन्दगी भर कभी जाम तक न पहुँचे।

क्रान्तिकारियों ने भी देशभक्ति से ओत-प्रोत होक
मातृभूमि के प्रति ग़ज़लें लिखीं। महान् क्रान्तिकारी रामप्रसाद
कहते हैं –

"सरफ़रोशी की तमन्ना अब हमारे दिल में है,
देखना है ज़ोर कितना बाजु-ए-क़ातिल में है।
वक़्त आने दे बता देंगे तुझे ऐ आसमाँ,
हम अभी से क्या बतायें क्या हमारे दिल में है।"

अपनी पीड़ा का किस अन्दाज में इज़हार कर रहे हैं-

"हम भी आराम उठा सकते थे घर पर रह कर,
हमको भी पाला था माँ-बाप ने दुःख सह-सहकर,
वक़्ते रुख़सत उन्हें इतना भी न आये कहकर,
गोद में आँसू कभी टपके जो रुख़ से बहकर,
तिफ़्ल उनको ही समझ लेना जी बहलाने को।"

काकोरी-शहीद अशफ़ाक़उल्ला की वतन-परस्ती देखिए –

"वतन हमारा रहे शादकाम और आज़ाद,
हमारा क्या है अगर हम रहे, रहे न रहे।"

आज के इन्सान का दर्द बड़ी ही सरलता और मासूमि
ायान कर रहा है दुष्यन्त –

"कहाँ तो तय था चिराग़ाँ हर एक घर के लिए,
कहाँ चिराग़ मयस्सर नहीं शहर के लिए।
यहाँ दरख़्तों के साये में धूप लगती है,
चलो यहाँ से चलें और उम्र भर के लिए।"

रामावतार त्यागी ने भी गीतों के साथ ग़ज़लों में भी
योग किये। भाषा की सहजता और रवानगी देखिए उनकी ग़ज़ल

"रोशनी तो चाहिए, पर लौ ज़रा मद्धम रखो,
चाहिए मुझसे गजल तो आँख मेरी नम रखो।
मैं हुआ तैयार तुलने को तभी कहने लगे,

दूसरे पलड़े मे अपनी जिंदगी के गम रखो
आँख मेरी देखकर कहने लगे बूढे हकीम
इनमें बरखुरदार ख़्वाबों का वजन कुछ कम रखो।"

कुँअर बेचैन का तो अपना रंग ही निराला है –

"दो चार बार हम कभी जो हँस–हँसा लिए,
सारे जहाँ ने हाथ में पत्थर उठा लिए।
रहते हमारे पास तो यह टूटते जरूर,
अच्छा किया जो आपने सपने चुरा लिए।"

हिन्दी कवियों के अतिरिक्त आज उर्दू शायरों ने भी अनेक गजलें हिन्दी के रंग में लिखी हैं जिनमें कृष्णबिहारी 'नूर', बशीर बद्र, वसीम बरेलवी, बेकल उत्साही और सागर आज़मी प्रसिद्ध हैं। कृष्णबिहारी 'नूर' में ग़ज़ल की नफ़ासत के साथ ही सोच की नयी दिशायें भी खुलती हैं–

"मैं देवता की तरह क़ैद अपने मन्दिर में,
वह मेरे जिस्म से बाहर मिरी तलाश में है।
मैं जिसके हाथ में इक फूल दे के आया था,
उसी के हाथ का पत्थर मिरी तलाश में है।"

लौकिक रंग में आध्यात्मिक रंग का अनायास मिलन ही ग़ज़ल की अपनी खूबी है। आज के समाज के दर्द को साफ़–साफ़ कहना और चुपके से उनके कारणों पर व्यंग्य भी कर जाना आज की सफल ग़जल की सार्थकता है। व्यर्थ की लाग–लपेट ग़ज़ल को सहन नहीं। विषमताओं से जूझते हुए व्यक्ति की कराह, रोज़मर्रा की तकलीफ़ों, दुश्चिन्ताओं और भविष्य के प्रति एक डर की अभिव्यक्ति आज की गजल की विशेषता है। ग़ज़ल वर्तमान व्यवस्था से लड़ने की ताक़त दे रही है। अंगार के ऊपर की राख को उठाने का कार्य ग़ज़ल के हाथों हो रहा है।

जी–12, रामपुर बाग,
बरेली– 243001
फ़ोन – 0581–475074

कहता हूँ सच कि झूठ की आदत नहीं मुझे

कृष्ण बिहारी 'नूर'

तारीख और सन् तो याद नहीं। हाँ, इतना ध्यान ज़रूर है कि एक बार जब मैं बरेली आया तो राम प्रकाश गोयल मुझे मेरी बेटी के घर से ले आए और चुपके से कहने लगे कि मैं भी कुछ टूटा-फूटा कह लेता हूँ, आप सुन लें – इस ख़याल से कि अभी कुछ शायरी का सिला मिल सकता है तो आगे क़दम उठाऊँ वरना अभी भी वक्त है, काहे को उलझन में पड़ूँ ? मैं हैरान था, क्योंकि कई साल की मुलाक़ात के बावजूद इस तरफ़ कभी उन्होंने इशारा तक नहीं किया था। ख़ैर, ग़ज़लों के शेर सुने और कहीं-कहीं खयाल की रानाई नजर आई तो दाद भी दी। सोचा कि अगर यह शख़्स मेहनत करे, तो हो सकता है कि कुछ अरसे बाद एक सलीक़ेमन्द शायर हो जाए। चुनाँचे चन्द मोटी-मोटी बातें समझाकर मैंने मशिवरा दिया कि वह अपना शायरी का सफ़र जारी रखें। मगर यह ध्यान रहे कि शायरी तफ़रीह के लिए न हो बल्कि एक तपस्या हो, एक पूजा हो। मुझे ख़ुशी है कि उन्होंने मेरे मशिवरे पर अमल किया और इस अमल में बराबर मुझसे जुड़े रहे। वह इस तरह कि कभी लखनऊ आकर वह अपना सब कुछ सुना देते जो पिछली मुलाक़ात के बाद कहा होता। जब कभी मैं बरेली आता तो वह मुझे अपने अख़्तियार में कर लेते।

गोयल साहब में इतना ख़ुलूस, इतनी अक़ीदत और अदब से इतना लगाव था कि किसी ख़िदमत से इन्कार मेरे बस में न रहा। हाँ साहब, तो तक़रीबन पाँच साल बाद गोयल साहब ने यह ख़ुशख़बरी सुनाई कि वह अपना मज्मूए कलाम "दर्द की छाँव में" शाया करवा रहे हैं। फिर कुछ ही दिनों बाद वह किताब भी हाथ में आ गई जिसे देखकर बेहद मसर्रत हुई। मेरी नज़रों के सामने वह मंजर आ गया जब उन्होंने अपनी शायरी का सफ़र जारी रखने या न रखने के बारे में मुझसे दरयाफ़्त किया था। "दर्द की छाँव में" अदबी हल्कों में मक़बूल हुई और लोगों ने गोयल साहब को शायर की हैसियत से तस्लीम कर भी लिया। ग़ज़लें महफ़िलों में गाई जाने लगीं और अच्छे गुलूकार ताज़ा कलाम को अपने सुरों में ढालकर

रेकार्ड कराने में जुट गए (टी सीरीज ने उनकी आठ गजलों का कैसेट 'आईना' 1988 रिलीज़ किया।)

गोयल साहब के माज़ी के अलाव को कुरेदें तो खुद मान जाएँगे कि ये चिंगारी क्यों अभी तक अपना असर नहीं छोड़ पाई। मुझे भी उत्सुकता हुई तो मैंने उन्हीं से बातों-बातों में इसका पता लगा लिया। दरअसल उनका मुस्तक़बिल उनका अकेला लाड़ला बेटा विवेक था जो उनसे साढ़े सोलह साल की अवस्था में ही हमेशा-हमेशा के लिए बिछुड़ गया। इस तारीकी का उन पर असर पड़ना स्वाभाविक था। जो कुछ उनके पास था, वह उनका इकलौता बेटा ही था। बेटियाँ तो पराया धन होती हैं। चारों बेटियाँ अपने-अपने गृहस्थ जीवन में सुखी हैं। शरीके हयात की बीमारी ने तो आधा तोड़ ही रखा था उन्हें। अब पूरी तरह टूटे इन्सान की ज़िन्दगी इन परिस्थितियों में क्या होगी- यह बात क़ाबिले ग़ौर है। ग़म को भुलाने के लिए इन्सान क्या-क्या जतन करता है ? कोई शराब का सहारा लेता है तो कोई दीवानगी की गर्द में खो जाता है। यह अच्छा हुआ कि यह किसी लत में गिरफ़्तार न होकर शायरी की दुनिया में आ गए। मैंने देखा कि उनकी इज्ज़त भी है और यह शोहरत के ज़ीने पर क़दम भी जमा चुके हैं।

कुछ दिन हुए गोयल साहब ने एक मसर्रत आमेज़ ख़बर दी कि उनका दूसरा मज्मूए कलाम 'रिसते घाव' प्रेस में जाने के इंतज़ार में है। 'रिसते घाव' के यह अश्आर आपके सामने रख दूँ। जो मुझे बेहद पसंद हैं।

मैं गिर रहा था तो तुमने मुझे सम्हाला था,
हयात अब तो किसी से नहीं सम्हलती है।
इस घुटन से तो यह बेहतर है कि बेघर कर दे,
जिस्म की कै़द से अब रूह को बाहर कर दे।
यही नहीं कि हर एक साँस है हमीं पर बार,
हयात किसके सम्हाले सम्हल रही है आज।
मिरे ख़्याल में मंदिर है वो, वही मस्जिद,
जहाँ भी प्यार की एक शम्मा जल रही है आज।
सताकर मुझको अपनी बेरुखी से,
मुझे अपने से जोड़ा है किसी ने।
फ़ासिले फिर भी दिल में रहते हैं,
जब कोई फ़ासिला नहीं होता।

और हो जाओगे परेशाँ तुम
यह न कहना खुदा नहीं होता।
क्यूँ न ख़्वाबों में तेरा साथ रहे,
मैं तिरा ध्यान करके सोता हूँ।
न सुख में हँसते ही देखा, न दुख में रोते ही,
अजीब क़िस्म का एहसास है दीवाने में।
मुझसे कोई भी रूठ सकता है, मैं किसी से ख़फा नहीं होता
आईने क्यूँ न हों ख़फा उनसे,
जिनके रुख़ पर नक़ाब होता है।
ये शोले भड़के तो नफ़रत को राख कर देंगे,
यह आग पहुँचेगी किस-किस के आशियाने में।
मैं जीतता भी तो, शायद न इतना खुश होता,
मिली है जितनी खुशी तुझ से हार जाने में।
हादिसे पूछकर नहीं होते, आदमी हादिसों से हारा है।
मंज़िलें उस तरफ़ भी होती हैं, जिस तरफ़ रास्ता नहीं होता।
ज़िंदगी जैसे रात का सपना, सुबह होते ही टूट जाना है।
मेरा दामन छोड़ के जाए, ग़म के बस की बात नहीं।
कौन कहता मैकदा है ज़िंदगी,
आदमी ख़ाली-सा इक पैमाना है।

अगर यह सच है कि शायर का कलाम, उसकी सोच, उसके किरदार, उसकी क्षमताओं का आईना होता है, तो आपको इन शब्दों के दर्पण में गोयल साहब साफ़-साफ़ नज़र आ जाएँगे। उन्होंने इश्क़ किया तो दुख-दर्द को सीने से लगाने का हौसला भी रखा। (जो आँच उनके कलाम में है, उससे यही ज़ाहिर होता है) और यह भी हक़ीक़त है कि शेरगोई के लिए या किसी फ़न की उपलब्धि के लिए किसी-न-किसी आग का दिल में होना बहुत ज़रूरी है। ख़ैर, यह फ़ैसला आप पर छोड़ता हूँ। हर शख़्स का अपना-अपना नज़रिया होता है। यह न किसी तरह जायज़ है न मुनासिब कि मैं अपनी बात मनवा के रहूँ। गोयल साहब के इस मजमूए कलाम को सराहा जाए, और ईश्वर करे कि अगली किताब इससे भी खूबसूरत आये ताकि अदब में कुछ इज़ाफ़ा हो सके।

67, गौस नगर, रक़ाबगंज, लखनऊ

प्रो. राम प्रकाश गोयल : अपनी शायरी के आईने में

अनवर चुगताई

शायर कैसा भी शेर कहे, कैसे ही मज़मून को नज़्म करे, अगर उसका अंदाज़े बयान अच्छा है तो वह ज़रूर पसन्द आएगा। लेकिन शायर ने ऐसा शेर क्यों कहा, वह किन हालात से दो-चार है, किस माहौल में जी रहा है, उसके मिज़ाज का रचाव कैसा है-यह जानने के बाद शेर और शायर दोनों की अहमियत बढ़ जाती है। गोयल साहब की ग़ज़लें मुझे बेहद रसीली और सच्चाई से भरपूर नज़र आती हैं क्योंकि मैंने उनकी ज़िन्दगी को बहुत क़रीब से देखा है। वह मेरे बहुत गहरे, बहुत पुराने हममिज़ाज और हमख़्याल दोस्त हैं। स्व० बाबू रामजी शरण सक्सेना एडवोकेट की कोठी पर आमतौर से हर हफ़्ते एक कवि गोष्ठी होती थी। जिसमें ज़्यादातर हिन्दी के कवि इकट्ठे होते थे और उनमें एक मैं उर्दू का शायर भी शरीक होता था। गोयल साहब बाबू रामजी शरण सक्सेना के जूनियर वकील थे, इसलिए घर के सदस्य की तरह हर गोष्ठी में मिलते। न ग़ज़ल पढ़ते, न कोई कविता, मगर ऐसा लगता जैसे उनका ज़हन साहित्य और अदब की रंगारंगी में रचा हुआ है। कवियों को उनकी रचनाओं पर भरपूर दाद देते और मेरे शेरों की भी लेकिन किसी शेर पर दाद का ज़्यादा शोर सुनकर जब मैं उनकी तरफ़ देखता तो लगता कि उनकी मुस्कुराती आँखों की तह से मेरा शेर उनके दिल में उतर गया है। मैं सोचता कि ख़ूबसूरत लफ़्ज़ों और शायरी के उसूलों की जकड़ बन्द में घिरे शेर के जज़्बाती पहलू को समझकर दाद देना हर सुनने वाले के बस की बात नहीं। ज़रूर इस शख़्स के अन्दर कोई कवि, कोई साहित्यकार विराजमान है। शहर की हर अदबी महफ़िल और कवि-गोष्ठी में गोयल साहब से मुलाक़ात होती रही। उनके ज़हन का अदबी सफ़र जारी रहा और उनके सोच की धारा बह निकलने के बहाने ढूँढ़ती रही। सबसे पहले उन्होंने अपने एक उपन्यास 'टूटते सत्य' के ज़रिए अपने ख़्यालात को लफ़्ज़ों का लिबास पहनाया जो काफ़ी पसन्द किया गया। इस तरह गोयल साहब का हौसला बढ़ा और उनके दिल के कोनों में दुबके जज़्बात के परिन्दे उड़ाने भरने लगे। इसी बीच उनके इकलौते नौजवान बेटे की मौत ने उन्हें दर्द के तपते सहरा में छोड़

दिया जिसे अपनी आदत के मुताबिक़ गोयल साहब ने "दर्द की छाँव में" का लक़ब दिया और इसी छाँव में उन्होंने अपनी शायरी का मुस्तक़िल पड़ाव बना लिया।

राम प्रकाश गोयल ने क़तए, रुबाईयाँ, हिन्दी कवियों के अन्दाज़ में कविताएँ और आज़ाद नज़्में भी लिखीं, जिनसे उनके शऊर की गहराई और सोचने के अन्दाज़ की बुलन्दी का पता चलता है। मगर उनके मिज़ाज का ज़्यादा झुकाव ग़ज़ल की तरफ़ है जिसके पीछे उनकी घरेलू तहज़ीब, शराफ़त, इन्सानी दोस्ती, और पाकीज़ा हुस्नपरस्ती का हाथ है। उनकी ग़ज़ल का महबूब बाज़ारू नहीं, नाज़ो-अदा का पुतला है जो सताता भी है और प्यार भी करता है। जफ़ाएँ सहकर वफ़ा पर क़ायम रहना, नफ़रत को मुहब्बत से जीतना, अपने अरमानों का खून करके महबूब की ख़ुशी में ख़ुश रहना और आख़िरी दम तक उसी का दम भरना। अगर इन बातों को शायरी के आम इश्क़िया पहलू से हटकर सोचा जाए तो ईश्वर भक्ति की तस्वीर सामने आ जाती है। गोयल साहब की ग़ज़लें इसी मिज़ाज के रंग में रँगी हुई हैं। उनकी ग़ज़लें पढ़कर उनके ख़याल और एहसास को समझने के लिए दिमाग़ के ख़ानों को खँगालने की ज़रूरत नहीं पड़ती बल्कि ऐसा लगता है जैसे वह आम इन्सानी ज़िन्दगी की बातें हैं जिनसे हर आदमी आए दिन दो-चार होता है। उन्होंने दुनिया को बहुत करीब से देखा है और समझा है। हर बात को अपने ज़ाती तजुर्बे और अपनी सुलझी हुई संजीदा तबीयत के मुताबिक सोच-समझकर बयान करने की कोशिश की है।'

गोयल साहब जज़्बात के शायर हैं। अपने दिल की बात सीधी-सादी ज़ुबान में कह जाते हैं। न उर्दू के मुश्किल लफ़्ज़ों से शेर को बोझल करते हैं न हिन्दी के ऐसे लफ़्ज़ इस्तेमाल करते हैं जिनका मतलब समझने के लिए शब्द-कोश की मदद लेना पड़े। वह आम बोलचाल की भाषा में अपने जज़्बात पेश करते हैं जो आम और ख़ास हर आदमी के दिल को आसानी से छू लेते हैं।

दरहक़ीक़त राम प्रकाश गोयल की शायरी बराए शायरी नहीं, उनके दिल को झँझोड़ने वाले ग़म-ओ-ख़ुशी के लम्हों और ज़िंदगी में गुज़रे हुए हादिसों को बयान करने का एक ढंग है। इसीलिए उनकी हर ग़ज़ल में प्यार की गर्मी, इन्सानियत की नरमी और सच्चाई की झलक मिलती है।

67, मौलानगर, बरेली (उ0प्र0)

आईने क्यूँ न हों ख़फा उनसे, जिनके रुख़ पर नक़ाब होता है।

जैसा कि 'ग़ज़ल' का शाब्दिक अर्थ है – तीर खाए हिरन के मुँह से निकली कराह'। 'रिसते घाव' गोयल जी के संवेदनशील प्रेमी हृदय का सघन भाव–अभिव्यक्ति है। अनुभूति का प्रचण्ड प्रवाह है जो शब्दों के किनारों में खूबसूरती से बाँधा गया है।

सबसे बड़ी बात उनकी कला साधना, पूजा अर्चना की पवित्रता से ओत प्रोत है।

जुल्म करना तो ध्यान में रखना
हश्र के दिन हिसाब होता है
मत करो हुस्न पर गुमाँ इतना,
हुस्न कुछ रोज का है, फ़ानी है।
मैं इम्तहान में क़ायम रहा वफ़ा के साथ,
वो टूट टूट गये मुझको आज़माने में

कह कर वह अपनी दृढ़ निष्ठा प्रदर्शित करते हैं। उनके अन्दर प्रेम की तपस्या की अग्नि में जलने का एक जज़्बा है जब वह कहते हैं 'जुल्म ढाना ही है फ़ितरत जिसकी, उसको हम अपना पता देते हैं'

उनके लिए भक्ति योग ही आध्यात्मिक साधना का मार्ग है:–

मेरे ख़याल में मन्दिर है वह, वही मस्जिद,
जहाँ भी प्यार की इक शम्मा जल रही है आज

उपासना में समर्पण ही सफलता का मापदण्ड है :–

है अजीब प्यार की रहगुज़र, जहाँ चाँदी सोना है बेअसर
वह जो लुट गया वह अमीर था, जो बचा रहा वह ग़रीब है।

उनके लिए भावनाओं की सच्चाई ही जीवन की सच्चाई है। किसी अन्य बँधन में बाँधना उनके लिए बेमानी है।

आईने क्यूँ न हों ख़फा उनसे, जिनके रुख़ पर नक़ाब होता है।
प्यार ने ही शमा जलायी है, जब कभी इन्क़लाब आए हैं।

अपनी भावनाओं की सशक्त अभिव्यक्ति के लिए गोयल जी का ग़ज़ल सग्रह निश्चित रूप से पठनीय है।

('राष्ट्रीय जनादेश' फ़रीदाबाद में 21–9–97 को प्रकाशित)

प्रो. राम प्रकाश गोयल : काँधे रखी दर्द की काँवर

डॉ0 नागेन्द्र

श्री राम प्रकाश गोयल एक ओर समाज में प्रसिद्ध समाजसेवी, प्रतिष्ठित एडवोकेट, विभिन्न सामाजिक और साहित्यिक संस्थाओं के मेरुदण्ड तथा आज के युग में दुर्लभ सहृदय व्यक्ति हैं और दूसरी ओर भावुकतापूर्ण प्रबुद्ध कवि व शायर, जिज्ञासु पाठक एवं काव्य कला के मनोज मर्मज्ञ हैं। 'कविर्मनीषी परिभू स्वयंभू' की आत्मा उनमें विद्यमान है। वे एक ऐसे सत्कवि हैं जो प्रेम की सरिता में डूबने के भय से किनारे नहीं बैठे रहे हैं प्रत्युत भली-भाँति अवगाहन कर स्नेह की रोली के आगन्तुक-स्वागतार्थियों का मुदित मन से तिलक कर रहे हैं –

प्यार की राह में वही आए, अपनी हस्ती जिसे मिटानी है।

'टूटते सत्य' (1972) उपन्यास और 'दर्द की छाँव में' (1987) काव्य के पश्चात् 'रिसते घाव' तीसरी काव्य-कृति प्रस्तुत है। श्री राम प्रकाश गोयल उस उत्खनक की भाँति हैं जो कोयले को, एक ओर हटाता जाता है और हीरों के अन्वेषण में दत्तचित्त होकर लगा रहता है जिनका मूल्यांकन सहज नहीं है।

कदाचित् ऐसे ही कुछ हीरे ग़ज़ल-क़तअः आदि के रूप में पुस्तकाकार हार के रूप में भेंट किये गए हैं। इस हार की दीप्ति में अपनों का तिरस्कार, सहयोगियों और सहकर्मियों की ईर्ष्या पीड़ा की बौछारें, पुत्र-शोक और समाज में जीने के लिए दोहरे और चौहरे मानदण्डों को फेंटकर श्री गोयल ने अपूर्व स्निग्धता परिवेष्टित कर दी है।

मुझे साहिल से अपने साथ लाकर,
चढ़े दरिया में छोड़ा है किसी ने।

यह स्थिति समाज में अकेले गोयल साहब की नहीं है। पता नहीं समाज में कौन-कौन किसे-किसे किस-किस स्थिति में लें जाकर छोड़ रहा है। इसीलिए श्री रामप्रकाश गोयल की –

हर गज़ल आँसुओं में डूबी है, ये तिरे ग़म की मेहरबानी है।

वर्तमान गतिविधियों से क्षुब्धता इस सीमा तक बढ़ी है कि

अग्रचेता कवि नवान सृष्टि और उत्तम जीवन-दृष्टि के लिए चिंगारी को तलाशता है जिससे पूरा निजाम, शासन तंत्र, बदला जा सके-

हुआ क्या है आज निजाम को, कहीं अम्न है न सुकून है,
जो फ़जा में आग लगा सके, मुझे उस शरर की तलाश है।
तुम्हारा जुल्म सलामत बस अब खुदा हाफ़िज,
सुकून ढूँढ़ ही लूँगा कहीं ज़माने में।

आदमी का चैन आदमी ने ही छीना है। सुख अपहृतकर्ता आज के युग में मित्र कहलाते हैं। इस मित्रता की छवि कितनी मलिन है इसका यथार्थ चित्र श्री गोयल के शब्दों में इस प्रकार का है -

नाज़ था जिनकी दोस्ती पे हमें, पीठ पर वह ही वार कर बैठे।

दोस्तों को अपने स्वार्थ से लगाव था, वह पूरा किया और चल दिए। इस प्रकार जब तक उनका स्वार्थ सधता रहा तब तक डटे रहे और फिर न वायदे, न बज़्म और न हबीब रहे -

जो थे करते वादे बड़े-बड़े, वह नज़र बचा के चले गए,
ये गरज़ के बन्दों की बज़्म है, यहाँ कौन किसका हबीब है।
दूर अपने से रखना रहबर को, आग वह ही लगाने वाला है।
दोस्त की शक्ल में है जो दुश्मन है, उसको जीने की दुआ देते हैं।

समाज का नग्न-चित्र किसके सामने नहीं है - आज झूठ का, छल का, फ़रेब का, अधिकार, अपहरण और अधमता के साथ ओछे हथकण्डों का सर्वत्र बोल-बाला है लेकिन फिर भी लोग इन्हीं का सहारा लेकर जीने में अतीव गौरव का अनुभव करते हैं जबकि वास्तविकता यह है कि झूठ का अस्तित्व होता ही कितना है-

झूठ के पैर ही नहीं होते, झूठ कब कामयाब होता है।

झूठ का प्रभाव हम देख रहे हैं कि आदमी के हृदय से दया, करुणा, ममता, सहयोग और बन्धुता का लोप होता जा रहा है। धनी अपने वैभव मद में चूर है और निर्धन दो रोटियों को भी तड़प रहा है। 'सुपर ईगो' की अहमन्यता को लक्ष्य करके गोयल साहब एक ही शेर में पूरी बात कह जाते हैं। आदमी के खोखले सांसारिक दम्भ पर और क्या कहा जाए -

दर पे इक भूखा भिखारी मर गया,
घर में बजती ही रहीं शहनाईयाँ।

आदमी जब अहं में होता है तब वह किसी को समझना ही

नहीं चाहता है लेकिन समाज में एक दिन इस अहंकार और निरंकुशता के विरुद्ध जब शोले भड़कते हैं तब यह बतलाना बहुत कठिन होता है कि किस-किस का क्या-क्या नष्ट होगा ?

ये शोले भड़के तो नफ़रत को राख कर देंगे,
यह आग पहुँचेगी किस किसके आशियाने में।

इतनी भयावाह स्थिति उत्पन्न क्यों हुई है ? इस रहस्य को कवि उद्घाटित करते हुए कहता है -

इस दौरे सियासत में ये सौग़ात मिली है,
अब लोग किसी पे भी, भरोसा नहीं करते।

आज की गन्दी सियासत ने सर्वत्र ऐसा दलदल फैलाया है कि कोई यह नहीं कह सकता कि वह उसके प्रभाव से अछूता है। दूर-दूर तक आशा की किरण दिखाई नहीं दे रही है - आदमी हताश है, निराश है !

रोशनी की किरन नहीं दिखती, आदमी ज़ुल्मतों का मारा है।

कवि इस बात को भली-भाँति जानता है कि युग-परिवर्तन करने वाले कभी हवा के साथ नहीं बहते हैं। उनकी दृढ़ता और स्वाभिमान ही एकमात्र सहारा है। प्रत्यक्ष में कवि के उद्गार इस प्रकार हैं -

हम ज़माने को मोड़ देते हैं, वक़्त के साथ बह नहीं सकते।

समय एक ऐसा चेतन तत्त्व है जो अपनी आवश्यकता के अनुरूप भंगिमाएँ उत्पन्न करता है और आदमी को अवतार और पत्थर को देवता बना देता है -

देवता बन गया है इक पत्थर, वक़्त ने जब उसे सँवारा है।

दूर से साधारण से लगने वाले प्रेम भाव ने असाधारण कार्य किए हैं। कवि प्रेम की व्यापकता की महत्ता प्रतिपादित करते हुआ कहता है कि आदमी को अपने हृदय में, व्यवहार में, और कर्त्तव्य में प्यार की शमअ् जलानी चाहिए -

प्यार ने ही शमअ् जलाई है, जब कभी इन्क़िलाब आए हैं।

श्री राम प्रकाश गोयल का स्पष्ट अभिमत है कि प्रेम में स्वार्थ को, भोग और दबाव को कोई स्थान नहीं है। जो अपने अस्तित्व को मिटाकर पथिक बनता है, उसका व्यवहार ही प्रेम है -

प्यार जज़्बा है और जज़्बे का, यार कोई सिला नहीं होता।
प्यार की राह में वही आए, अपनी हस्ती जिसे मिटानी है।

जब कोई रचना करता है तब वह उसमें स्वयं भी अवश्य होता है। यह 'होना' ही सब कुछ होता है। इससे उसकी मौलिकता आँकी जाती है और उसकी यही पहचान भी बनती है। यह वह स्थल होता है जहाँ रचनाकार का वास्तविक व्यक्तित्व सामने आता है। गोयल साहब ने अपने जीवन में गोपन जैसी कोई चीज़ नहीं रखी है जिसे बताने में कोई हिचक रखते हों। स्पष्टवादिता उनके व्यक्तित्व की खूबी है –

जो न ज़माने से कह पाऊँ, ऐसी कोई बात नहीं।

कविता का ब्रह्मण्ड भावनाओं से ओत-प्रोत है। भावनाएँ ही अच्छे और बुरे काम कराती हैं। प्रेम के लिए भावुकता अनिवार्य तत्त्व है –

आप किसी के हो न सकेंगे, आप में जब जज़्बात नहीं।

प्रेम में उग्रता की नहीं, नम्रता और गम्भीरता की आवश्यकता होती है जिस प्रेमी मन में यह गुणवत्ता होगी, वही तो यह कह सकेगा–

प्यार में ज़ब्त के सिवा क्या है, ज़ब्त ही प्यार की कहानी है।

प्रेम में द्वैत का भाव नहीं होता है। प्रेमी दो देह और एक प्राण होते हैं। धड़कनों में बसने की बात कहकर कवि ने इस अनुभूत सत्य को ही रूपायित किया है –

दिल की धड़कन में बस गए हैं वो,
अब तग़ाफुल को सह नहीं सकते।

यदि धड़कनों में बसा प्रिय बेरुख़ी करने लगे तब तो प्रेमी का जीना ही दुश्वार हो जाता है। श्री गोयल का प्रेमी मन ऐसी स्थिति मे 'ग़म' को सहता है लेकिन 'गिला' को कोई स्थान नहीं देता–

बेरुख़ी पर गिला न करने वाले वियोगियों के पास स्मृतियों का अनन्त आकाश और उसमें कल्पना के डैनों को फैलाकार उड़ना, शेष जीवन का सहारा बनता है। कल्पना में उनकी रातें सुहानी होती हैं–

तेरी यादें मिरे तसव्वुर में, रात यह किस क़दर सुहानी है।

आत्मीय के प्रस्थान पर आँखों में आँसुओं की अस्वाभाविक परिणति नहीं है। इस स्थिति में मोह का अवशिष्ट कार्यरत होता है। मोह को तोड़ने को निर्वेद अपेक्षित है। नश्वरता को आधार बनाकर कविवर संतोषपूर्वक कहते हैं –

अश्क क्यों आपकी हैं आँखों में,
जो भी आया है उसको जाना है।
जिन्दगी बन गयी पहेली है,
उसकी तन्हाई ही सहेली है।
भीड़ ही भीड़ है हर इक जानिब,
और वह भीड़ में अकेली है।

जिस तरह श्री रामप्रकाश गोयल ने युग-बोध, समाज, सम
सियासत, प्रेम, मित्र, संयोग-वियोग आदि पर गम्भीरता से लिखा
उसी तरह उन्होंने अपना सौन्दर्य-बोध भी शब्दायित किया है-

मांसल सौन्दर्य — बहके-बहके क़दम पड़ें जब भी,
बस समझ लो कि ये जवानी है।
निगाहों से पिलाकर मय मुसलसल,
मेरी तौबा को तोड़ा है किसी ने।

शब्द सौन्दर्य — चाहे जितना भी छेड़िए उसको,
वह कभी भी ख़फ़ा नहीं होता।

भाव सौन्दर्य — सताकर मुझको अपनी बेरुख़ी से,
मुझे अपने से जोड़ा है किसी ने।

नाद सौन्दर्य — मेरा दामन छोड़ के जाए,
ग़म के बस की बात नहीं।

विचार सौन्दर्य — ज़िन्दगी जैसे रात का सपना,
सुबह होते ही टूट जाना है।

योगी प्रतीक्षारत है। आशा निराशा उसे घेरे है। इस स्थिति को कवि
ण्ड बिम्बों में प्रस्तुति देता है-

तिरा मेरे पास आना, कहीं और टल न जाए,
कहीं तू बदल न जाए, कहीं रात ढल न जाए।

मन की ऊहापोहात्मक स्थिति, पास आने का निश्चय, निश्चय
विलम्बन, अनिश्चय और रात का ढलना आदि सफल बिम्ब-विधान
बिम्बों के शताधि रूपों में से कुछ बिम्ब यहाँ दिए जा रहे हैं -

स्मृति बिम्ब — रात-भर मैं तिरे तसव्वुर में,
तेरी आग़ोश में ही सोता हूँ।

स्पर्श बिम्ब — यह और बात कि सोया नहीं हूँ बरसों से,
लगेगा तुमको मगर एक पल सुलाने में।

मूर्त बिम्ब हर तरफ़ तीरगी के साये हैं,
ऐसे में फिर शम्अ जलाना है।

अमूर्त बिम्ब क़त्ल किया खुद उसने मेरा,
और रक्खा मुझ पर इल्ज़ाम।

काव्य की शोभा बढ़ाने वाला धर्म अलंकार होता है। इस धर्म का पालन जितना स्वाभाविक होगा, उतना ही प्रभावशाली होगा। श्लेष पुष्ट रूपक का एक स्वाभाविक प्रयोग दृष्टव्य है –

बुझ ही जायेगा चिरागे ज़िन्दगी, ख़त्म हो जाएँगी सब परछाइयाँ।

प्रस्तुत संग्रह की ग़ज़लों की चर्चा का सिंहावलोकन करने से पूर्व संग्रह की अन्य रचनाओं की चर्चा न करना, उनके प्रति उपेक्षा का भाव माना जाएगा। यदि ग़ज़लों में दूध की मलाई का आनन्द है तो कतअ् और शेरों में खुरचन का मज़ा है। अतुकान्त हिन्दी कविताओं में हृदय पक्ष सबल है। कहीं-कहीं भावुकता की दीप्ति रेणुका में सीपी की रजत हास सदृश है। 'तन्हा इन्सान' में कवि का अन्तर्मन्थन है, 'दीवाली' में वर्तमान पर करारा व्यंग्य किया है। 'यह पल' काल चिन्तन प्रधान है, 'स्वतंत्रता दिवस' भारतीय अस्मिता पर लगे प्रश्नचिन्ह को व्यक्त करता है, 'सम्बन्ध' में नर-नारी सम्बन्धों की अभिव्यक्ति मिली है और अन्तिम रचना 'जीवंत प्यार' में संयोगावस्था का सुन्दर और स्वाभाविक चित्रण है।

कहीं जीने का उत्साह, कहीं पीड़ा, कहीं यथार्थ, कहीं व्यंग्य और कहीं सलाह-प्रस्तुत कृति का प्रतिपाद्य है। इस प्रतिपाद्य में इस दौर की कचोट है जो कवि को बार-बार तिलमिलाने को बाध्य करती है। 'जोश' में 'होश' बना रहे आदमी का, यह बहुत बड़ी बात है। ऐसी युक्तिसंगति हमें श्री राम प्रकाश गोयल के रचनाकार में मिलती है। हमें आशा है कि ऐसे समर्पित गम्भीर रचनाधर्मी की द्वितीय काव्य कृति का उर्दू और हिन्दी साहित्य जगत् में गर्मजोशी से स्वागत किया जायेगा।

'प्रभादीप'
12, इन्दिरा कालोनी,
रामपुर-224901

'दर्द की छाँव में' से 'रिसते घाव' तक

प्रो० कृपा नन्दन

श्री राम प्रकाश गोयल को मैं लगभग पच्चीस वर्ष से जानता हूँ और उनकी आँखों से मुझे अनकही इजाज़त मिलती रही है कि मैं उन्हें अपना मित्र कह सकता हूँ। हर माशूक़ की तरह उनके भी कितने ही पहलू हैं और इन अनेक रुख़ों के चाहने वाले भी बहुत हैं।

मैं जहाँ तक समझ पाया हूँ उनको अपना वह रूप सबसे अधिक पसंद है जिसमें वह अपने एहसासात और ख़यालात को 'कविता' या 'शेर' के माध्यम से व्यक्त करते हैं।

रामप्रकाश जी ने जीवन में और बहुत कुछ करने के साथ-साथ ग़ज़लें, कतए, रुबाइयाँ और कविताएँ भी लिखी हैं। उनकी कविताओं को पहला संग्रह 'दर्द-की छाँव में' 1987 में प्रकाशित हुआ था। उन्होंने उस समय भी मुझसे कुछ लिखने को कहा था। मैं उनका हुक्म न मान सका था और मैंने उसके लिए उनसे क्षमा माँगी थी। इस बार मैं उनके महत्वपूर्ण आग्रह की ज़द में आ ही गया।

राम प्रकाश जी का पहला काव्य संग्रह 'दर्द की छाँव में' मेरे सामने है। मैं पन्ने उलटता जा रहा हूँ और हुस्न-औ-इश्क, फुर्कत और विसाल, उम्मीद और मायूसी, हुज़्न और यास, मिलन और विरह, विश्वास और निराशा की एक लम्बी दास्तान की मनमोहक महक और उसी में से निकली एक कसक और टीस भरी 'आह' लगातार मेरे कानों में उतर रही है और मैं एक दुआ किए जा रहा हूँ – "खुदाया, उनकी ग़ज़लों से यह 'आह' बराबर निकलती रहे, फिर उन्हें निवेदन करने की आवश्यकता ही न होगी, पाठकों के मुँह से 'वाह' आप ही फूट पड़ेगी।" कुछ नमूने पेश कर रहा हूँ उस ग़ज़ल संग्रह के –

यह पता है कि वह न आयेंगे,
फिर भी क्यूँ इन्तजार होता है।

दुश्मनों का नहीं हमें दरकार

दोस्तों की बहुत इनायत है।

जैसे दीवाने को एहसासे ख़ुशी है न अलम,

मेरे एहसास को ऐ दोस्त तू पत्थर कर दे।

उसका अंदाज़ बेरुख़ी वाला,

प्यार करना सिखा गया मुझको।

अब ग़मे दुनिया नहीं लगता है ग़म

यह तिरे ग़म की अजब तासीर है।

नश्शः उतरेगा तब वह समझेंगे,

हुस्न की मय अभी पिए हैं वो।

जब भी आया, ख़ुशी का इक झोंका,

ग़म की चादर उढ़ा गया मुझको।

वक़्ते रुख़सत थे अश्क आँखों में,

उनको किस ज़ब्त से पिया मैंने।

सबने मेरी हँसी को देखा है,

किसने देखी है मेरी मजबूरी।

देखिये तो बशर भीड़ के साथ है,

सोचिये तो अकेला ही चलता रहा।

'दर्द की छाँव में' में 724 दफ़ा उर्दू के अल्फ़ाज का, 77 बार हिन्दी के शब्दों का प्रयोग किया गया है। इस संग्रह 'रिसते घाव' में 925 बार उर्दू के अल्फ़ाज़ और 106 बार हिन्दी के शब्दों का प्रयोग किया गया है।

ग़ज़लों में जगह-जगह बिखरे हुए इस तरह के अश्आर ने इस यकीन को पुख़्ता किया गया था कि गोयल साहब ग़ज़ल के मिज़ाज को बख़ूबी सिर्फ़ समझे ही नहीं, अपने बजूद में पूरी तरह समो भी चुके हैं और उनका अन्दाज़-ए-फ़िक्र और उसलूब-ए-बयान उस मज़िल की निशानदेही कर रहा है जहाँ पढ़ने वाले को और भी ज़्यादा नफीस और हसीन ग़ज़लें देखने और सुनने को मिलेंगी।

गोयल साहब के एक अज़ीज़ दोस्त के0पी0 सक्सेना की कामना कि 'पहले संकलन के बाद दूसरा आये . . . . पूरी हुई है। गोयल साहब को मुबारकबाद और दुआ देने वाले की उम्र दराज़ हो।

मेरी एक गुजारिश है किसी कवि को दिल में जगह दीजिए
दिमाग से उसके पर न नोचिए

राम प्रकाश जी की गजलें सरापा सोज़ हैं। उनमें दर्द है तीर है, चुभन है, पढ़ने वाले को कँपा देने और तड़पा देने की शक्ति है और अक्सर ऐसा महसूस होता है जैसे वह कह रहे हों -

दो दिलों में जो कहीं अहद-ए-वफ़ा देखता हूँ,
काँप उठता हूँ कहीं मेरा सा अन्जाम न हो।
नहीं जानता हूँ मैं क़ाफ़िया, न रदीफ से मुझे वास्ता,
जो दिलों में सीधी उतर सके, मुझे उस बहर की तलाश है।

वह शायरी में आशिक़ का मिज़ाज रखते हैं और जिन्दगी में उनका अन्दाज़ माशूक़ाना है। उनके चाहने वालों में किसी से पूछकर देख लीजिए। वह उनके नफ़ीस अन्दाज़-ए-गुफ्तगू, उनकी खिली मुस्कुराहट, उनकी आत्मीयता की दास्तान छेड़ देगा। यह सब ख़ूबियाँ उनकी ग़ज़लों में जगह-जगह बिखरी नज़र आती हैं।

यह प्रश्न उठना स्वाभाविक है कि उनका जीवन इतना व्यस्त और शिगुफ़्ता (प्रसन्न) है तो उनकी ग़ज़लों में पैवस्त बेपनाह दर्द कहाँ से आता है और आता है तो उनकी रोजमर्रा तथा सामाजिक जिन्दगी पर असर क्यूँ नहीं होता ? ग़ौर से पढ़िए, दर्जनों शेर ऐसे मिलेंगे जिनमें इस सवाल का जवाब मिल जाएगा।

उनको शबाब का न मुझे दिल का होश था,
इक जोश था जो महव-ए-तमाशाए जोश था।

मगर यह जज़्बा देर तक क़ायम नहीं रहता। उन्होंने इतने कचोके झेले हैं, इतने धोके खाए हैं, इतनी बेवफाइयाँ और वादा शिकनियाँ भुगती हैं कि उम्मीद का दामन हाथ से छूटता-सा-लगता है। मगर वह खुद पर क़ाबू पाकर कुछ इस तरह की बात कहने पर मजबूर हो जाते हैं

हर वादा करके तोड़ दिया आपने मगर,
हर वादा एतबार बढ़ाता चला गया।

पूर्व विभागाध्यक्ष अँग्रेजी
बरेली कालिज, बरेली (उ0प्र0)

'रिसते घाव' का यथार्थवादी मिज़ाज

हरिशंकर शर्मा

वकालत के उलझन भरे पेशे से जुड़े और क़लम के सिपाही श्री राम प्रकाश गोयल की शायरी का अंदाज़ दुखांत है। वैयक्तिक अनुभूतियों के स्तर से ऊपर उठकर उन्होंने चरम और परम की ओर संकेत किया है। 'रिसते घाव' ग़ज़ल संग्रह उनकी अनुभूतियों की पूँजी है। सभी गजलें विवेक का परिचायक हैं लेकिन भावातिरेक के कारण कहीं-कहीं घाव रिसने लगे हैं ग़ज़ल-रूप में। श्री गोयल के शब्दों में "इन ग़ज़लों के झरोखों से मैंने ज़िन्दगी में झाँकने की कोशिश की है। ग़ज़लों में मेरा पुत्र विवेक मुखर हुआ है। उसके चिर वियोग ने मेरे अन्दर के सोए कवि को बाहर निकाला है।" वस्तुतः यह प्यार, जुदाई, बेवफ़ाई और एहसान फ़रामोशी की ग़ज़लें हैं। उनके शब्दों में-
"घाव ही घाव हैं मेरे दिल में, जो कि रिस-रिस के मुस्कुराते हैं"

यथार्थ के धरातल पर लिखी यह ग़ज़लें उनके सत्रह वर्षीय एक मात्र पुत्र की वियोग कथा है। पितृ हृदय की पीड़ा ग़ज़ल बन गयी है। "अश्क पीना है, मुस्कुराना है, मुझको अहदे वफ़ा निभाना है।"

"जिन्दगी से कहो ठहर जाए, मौत को आईना दिखाना है।"

उनकी शायरी में पुत्र वियोग की पर्तें हैं। पुत्र, पिता का बिम्ब है। अपने हमदम (पुत्र) का ही दर्द उन्हें जीवन भर मिला है। यही उसकी निशानी है। अजीब भटकाव दिया है इस वियोग ने उन्हें -

मैं भटक रहा हूँ इधर-उधर, कभी इसके दर कभी उसके दर,
जो मिला सके मुझे मुझसे ही, उसी राहबर की तलाश है।
हमको जन्नत ज़मी पे मिल जाए, काश कहदे कि तू हमारा है।

वे "रिसते घाव" के इस दर्द को अनाम नाम देकर 'रुसवा' नहीं होने देना चाहेंगे। पितृ हृदय की यह पीड़ा बड़े से बड़ा त्याग करने को तैयार है। पिता जब स्वयं ही जगत-पिता का विस्तार अनुभव करने लगे, तब अन्तर मिट जाता है। श्री गोयल शायरी में बहके नहीं हैं।

ग़ज़लों में कहीं कहीं उलटबाज़ियों का प्रभाव भी आ गया है-
मंजिलें उस तरफ़ भी होती हैं, जिस तरफ़ रास्ता नहीं होता।

श्री गोयल अपनी ग़ज़लों में दुख दर्द की ही बात कहते हैं। उनके इस दर्द में ज़माना शामिल है -

"दर्द तो सिर्फ़ मेरा अपना है, उसमें शामिल मगर ज़माना है।"

"सबके दुख दर्द में शरीक रहूँ, मुझको दौलत यही कमाना है।"

काव्य आत्म का विस्तार कर्म है। शायरी के इस दौर में श्री राम प्रकाश गोयल दुखों का महासागर अपने हृदय में समेटे हुए हैं। उनकी जीवन नौका डूबती–उतराती है किन्तु वे पतवार को मज़बूती से पकड़े रहे हैं। शायरी में उनकी खुद्दारी जीवित है। खुद्दारी के इस सफ़र में जीवन भी तपस्या है। दिन–रात, दुख–सुख में उन्हें उस हमसफ़र की तलाश है।

दोस्त किसको कहें, किसे दुश्मन, हमसे यह फ़ैसला नहीं होता।

स्मृतियों के गलियारे में उन्होंने दुख को ही हमदम, हमसफ़र, दोस्त और न जाने क्या क्या नाम दिए हैं। इस अनाम नाम के पीछे एक ही नाम है – विवेक। पिता–पुत्र का यह रिश्ता शरीर का विषय नहीं, एक आत्मीय सम्बन्ध का नाम है। यही रिश्ता शायरी में दिया है–

"क़द्र जिसने न की वक़्त की वक़्त पर,
ज़िंदगी भर वो ही हाथ मलता रहा।"

"ज़ुल्म करना तो ध्यान में रखना,
हश्र के दिन हिसाब होता है।"

नफ़रतों को मिटा कर दोस्ती को बढ़ाने की नसीहत देता यह शेर उनकी क़ाबलियत को दर्शाता है –

"लोग अपनों से बैर रखते हैं, मेरा ग़ैरों से दोस्ताना है।"

आज सारा देश जहाँ मंदिर–मस्जिद के विवाद में पड़ कर बारूद के ढेर की तरफ बढ़ रहा है, वहीं श्री गोयल का शायर मन इस मुद्दे को कुछ इस तरह हल कराने की चाह रखता है।–

'मेरे ख़याल में मंदिर है वो, वही मस्जिद,
जहाँ भी प्यार की एक शम्मा जल रही है आज।"

जहाँ ग़ज़लों में गुलाब की सुगंध है, वहाँ अतुकांत कविताओं में हमारे समाज में व्याप्त दुर्भावना, स्वार्थ लोलुपता, भ्रष्टाचार और एहसान फ़रामोशी को पाठकों के सामने उजागर किया गया है। शायर को वास्तविकता में ही विश्वास है।

पद लालित्य, भाव, प्रतीक, लय, गीत, छन्द तथा बिम्ब का उत्तम उदाहरण है उनकी शायरी। परिस्थितियों ने ही उन्हें दर्द का शायर बनाया है।

53, कालीबाड़ी, बरेली – 243005

रिसते घाव एक अभिमत

डॉ0 सुरेश चन्द्र गुप्त

मुस्कराहट पीड़ा का अविकल अनुवाद होती है। गोयल साहब के चेहरे पर खिली मुस्कराहट उनकी हार्दिक पीड़ा की परिचायक है। पीडा के अनेक रूप हैं। कारण भी भिन्न–भिन्न हो सकते हैं। "दर्द की छाँव में" भी उनकी आन्तरिक वेदना का बिम्ब है।

सबने मेरी हँसी को देखा है, किसने देखी है मेरी मजबूरी। पीडा के पालने में झूलते कवि के व्यक्तित्व का ही परिचय देती है। स्वयं गोयल साहब स्वीकारते हैं कि "हर ग़ज़ल आँसुओं में डूबी है।"

महादेवी जी ने लिखा था – "विरह का जलजात, जीवन विरह का जलजात"। लगता है कि गोयल साहब के कवि व्यक्तित्व का निर्माण भी विरह से हुआ है। यह एक मार्मिक सत्य है कि गोयल साहब को अपने एकमात्र पुत्र के असामयिक निधन की पीड़ा को झेलना पडा था। उनकी खूबी यह है कि पीड़ा को वे पी गये और इसी पीडा ने पहले जन्म दिया "दर्द की छाँव में" को और अब उसी पीडा से जन्मा है 'रिसते घाव'।

कवि–पीड़ा मुख्यतः विरहानुभूति के रूप में अभिव्यक्त हुई है।

अश्क पीना है, मुस्कराना है,
मुझको अहदे वफ़ा निभाना है।

प्यार करे और सुख भी पाये
कब होता है यह अन्जाम।

यह भी कभी सोचा है हमें छोड़ के तुमने
जब हम न रहेंगे तो किसे याद करोगे।

जो मेरी ज़ीस्त का सहारा है,
मुझको पत्थर उसी ने मारा है।

बरबाद किया किसने वह है दोस्त हमारा
हम नाम बताकर उसे रुसवा नहीं करते।

दिल कहाँ मेरे पास होता है,
जब तेरे रूबरू मैं होता हूँ।

प्यार में जब्त के सिवा क्या है,
ज़ब्त ही प्यार की कहानी है।

शेरों से लगता है कि कवि ने वास्तव में ही गहरी चोट ?
है। स्वयं कवि का मानना है कि किसी के प्यार, बेवफाई, जुदाई,
एहसान-फरामोशी ने ये गज़लें लिखवाई हैं। उसने स्पष्ट शब्दों
स्वीकार किया है कि "घाव ही घाव हैं मेरे दिल में, जो कि रिस-
के मुस्कराते हैं।"

प्रसन्नता की बात यह है कि कवि की यह विरह वेद
उदात्तीकृत होकर अनेक दार्शनिक प्रपत्तियों का भी अभिव्यंजन
गई है।

मत करो हुस्न पर गुमाँ इतना,
हुस्न कुछ रोज़ का है, फ़ानी है।
आदमी में निखार आता है,
इश्क़ में जब वह ख़्वार होता है।
यार दुनिया से दिल लगाना क्या,
जो भी आया है, उसको जाना है।

"रिसते घाव" की गज़लों में कवि का जीवन दर्शन भी
सराहनीय रूप में अभिव्यक्त हुआ है -

प्यार पाने के लिए मिट जाओ
मुझको पैगाम यह सुनाना है।
सबके दुख-दर्द में शरीक रहूँ,
मुझको दौलत यही कमाना है।
खुद्दारी को ज़िन्दा रखना,
मेरा है बस यह पैगाम।
जुल्म करना तो ध्यान में रखना,
हश्र के दिन हिसाब होता है।
मुझे साहिल से अपने साथ लाकर,
चढ़े दरिया में छोड़ा है किसी ने।

प्रेम, विरह, वफ़ा, विश्वासघात, पीड़ा, व्यंग्य, यथार्थ, राजनीति, दर्शन
आदि जीवन के विविध पक्षों को स्पर्श करते ये "रिसते घाव" बड़े ही
मार्मिक हैं। गोयल साहब का कवि-व्यक्तित्व आन्तरिक पीड़ा से
तपकर निखरा है। वे एक दृष्टा कवि की भाँति बड़े साहस से कहते
-

हम ज़माने को मोड़ देते हैं, वक्त के साथ बह नहीं सकते।

वरिष्ठ प्रवक्ता, हिन्दी विभाग
बरेली कालेज, बरेली

"रिसते घाव" का दर्द

शकुन्तला मंगलसेन

श्री राम प्रकाश गोयल को, एक अच्छे गायक, प्रतिष्ठित अधिवक्ता तथा उसके पश्चात् एक उपन्यास लेखक के रूप में मैं 50 के अंतिम दशक से जानती रही। शनिवारीय क्लब नाम से हम बुद्धिजीवियों की एक संस्था हुआ करती थी। सर्वप्रथम मेरा परिचय उनसे तथा उनकी पत्नी सरला जी से वहीं हुआ। दोनों कभी ड्यूअट के माध्यम से ग़ालिब की ग़ज़लें गाते तो समा बँध जाता। धीरे-धीरे यह परिचय पारिवारिक मिलने जुलने में बदलता गया।

चार पुत्रियों के बाद गोयल साहब के घर में पुत्र का जन्म हुआ। अपार हर्ष होना स्वाभाविक ही था। पुत्र विवेक के जन्मोत्सव में शामिल होने की याद आज भी ताज़ा है और फिर लगभग 17 वर्ष तक लाड़ प्यार में पले उस सुदर्शन व होनहार बालक की उस असमय मृत्यु का हृदयविदारक दृश्य क्या कभी भूला जा सकता है। प्रतिभाशाली लेखक और योग्य एवं सफल अधिवक्ता राम प्रकाश गोयल कुछ समय के लिए शोक के अँधेरे में डूबे रहे। इतना बड़ा सदमा उन्हें गतिहीन व शराबी भी बना सकता था पर अज्ञात पथ के पथिक विवेक के पिता ने विवेक से काम लिया। उनके भीतर का शायर व कवि जो अभी तक सोया पड़ा था वह बाहर आ गया और लगातार उन्होंने काव्य पुस्तकों में अपने हृदय का दर्द उँडेल दिया। 'रिसते घाव' उनकी ग़ज़लों की दूसरी पुस्तक है जिसके माध्यम से उन्होंने बहुत कुछ कह डाला है। वे कहते हैं -

हादसे बेसबब नहीं होते, सब के पीछे कोई कहानी है।
अश्क पीना है मुस्कुराना है, मुझको अहदे वफ़ा निभाना है।
मुझे साहिल से अपने साथ लाकर,
चढ़े दरिया में छोड़ा है किसी ने।

224, सिविल लाइन्स, बरेली

रिसते घाव की रिसन

ब्रज भूषण सिंह गौतम 'अनुराग'

श्री राम प्रकाश गोयल आज के आदमी के अन्तर्द्वन्द्व, अन्तर्विरोधों तथा विवशता की नियति को अच्छी तरह पहचानते हैं। उनकी ग़ज़लों का सम्बन्ध सामान्य आदमी के जीवन से है। ग़ज़लों में परिपक्वता, मौलिकता तथा अनुपमता के दर्शन सर्वत्र होते हैं। उनमें अर्थ की गहराई तथा अभिव्यक्ति की व्यापक ऊँचाई है और यह अनुभूति श्री गोयल के केवल अपने विचारों की न होकर, समस्त विश्व के सेतु से सम्बद्ध है।

श्री गोयल की ग़ज़लों में उनके मौलिक चिन्तन ने उन्हें एक अमिट तथा विशेष व्यक्तित्व प्रदान कर दिया है। ये ग़ज़लें उनकी प्रखर प्रतिभा की परिचायिका हैं। उनकी गणना उर्दू के प्रमुख शायरों में होनी चाहिए। प्रत्येक पंक्ति पर उनकी अपनी छाप है। वह तीव्र बुद्धि-चातुर्य का प्रयोग सहज स्वाभाविक रूप में करते हैं। उनकी ग़ज़लों में दर्शन की काल्पनिक किरनियों तथा यथार्थ की गहरी रेखाओं का मिलन स्पष्ट दृष्टिगत है। वह जहाँ आज की परिचालित प्रथाओं, परम्पराओं से प्रश्न पूछते हैं, वहीं उनका सम्मान करने में भी भूल नहीं करते हैं।

बर्बाद किया जिसने वह है दोस्त हमारा,
हम नाम बताकर उसे रुसवा नहीं करते।
देख तो लेते हैं हम उनको भरी महफ़िल में
यह अलग बात, नहीं बात हुआ करती है।
तू न मेरा हुआ तो रंज न था, ग़ैर के साथ देख रोता हूँ।
इस क़दर हम पे पड़ा उनकी जुदाई का असर,
खो गई आँख की बीनाई भी रोते-रोते।

इन पंक्तियों में मानव-हृदय की कैसी व्यापक और गहरी [अ]नुभूतियाँ झाँक रहीं हैं, इस अभिव्यक्ति पर उनके व्यक्तित्व की छाप [है]।

श्री गोयल व्यक्तिवादी न होकर, मानवतावादी हैं। वह न केवल

अपने पीड़ा से आकुल है वरन समूची मानव पीड़ा की टीस से व्यथित-व्याकुल हैं। वह सभी के दर्द को अपना दर्द समझते हैं।

सबके दुःख दर्द में शरीक रहूँ, मुझको दौलत यही कमाना है।

लेकिन जब गोयल जी के विश्वास को उनके अपने ही तोड़ते हैं, तब उनके अन्तर्मन से सहसा ऐसे शब्द फूट पड़ते हैं, जिनमें भारी पीड़ा, सघन व्यथा एवं प्रखर चुभन है परन्तु कवि सभी कुछ सहन करता है।

नाज़ था जिनकी दोस्ती पे हमें, पीठ पर वो ही वार कर बैठे।

श्री गोयल रूप और प्यार के महान पुजारी हैं। वह रूप और प्यार को एक पूजा, एक उपासना, एक तपस्या मानते हैं।

आईने क्यों न हों खफ़ा उनसे, जिनके रुख़ पर नक़ाब होता है।

जो सदा रहते थे मुझसे दूर-दूर,अब सताती हैं उन्हें तन्हाइयाँ।

श्री गोयल मानव-मनोविज्ञान के बड़े ही पारखी हैं। उन्होंने इस संसार को अत्यधिक तन्मयता से, उसके पास जाकर निरखा-परखा है। मित्रता, बैर, वफ़ादारी, बेवफाई, राजनीतिक हलचलें, जीवन की हर प्रकार की कठिनाइयों का सामना उन्होंने किया है।

वह जो हमदर्दियाँ दिखाता है, आग खुद ही लगाने वाला है। कविताओं के गहन निरीक्षण से आभासित है कि श्री गोयल अगम, अथाह सागर में डुबकी लगा मोतीवाली सीप को खोज लाने में समर्थ हैं। उनको काव्यकला का मर्मज्ञ कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी। वह कम से कम शब्दों में अधिक से अधिक बात कह जाते हैं। वह काव्य के ऐसे मर्मज्ञ हैं जो हर परिस्थिति को भाँपकर उसे ग़ज़ल का रूप देने में सफल हैं।

जिस पिता का इकलौता साढ़े सोलह साल का बेटा किशोरावस्था में ही सदैव के लिए उससे बिछुड़ गया हो, उसके सीने में कितनी वेदना, कितनी तपन और कितनी आग होगी, वह सामन्यजन के लिए कल्पनातीत है। पुत्र के विछोह की यह भयानक ज्वाला तथा सांसारिक प्रेम की तपन श्री गोयल के काव्य में सर्वथा बिखरी देखने को मिलती है।

कुमार कुंज, गुलज़ारीमल धर्मशाला रोड,
मुरादाबाद फोन : 310606

(1987 में प्रकाशित "दर्द की छाँव में" प्राक्कथन)

अपनी बात

रामप्रकाश गोयल

बहेलिए के बाण से घायल हुए कामपीड़ित क्रौंच पक्षी को आदि कवि बाल्मीकि ने जब देखा तो उनका हृदय असह्य वेदना से चीत्कार कर उठा और शाप-रूप में स्रोत की तरह फूट पड़ी संसार की सर्वप्रथम कविता-

"मा निषाद प्रतिष्ठां त्वमगमः शाश्वतीः समाः।
यत्क्रौंचमिथुनादेकम् अवधीः काममोहितम्।।

(अरे बहेलिए, तू ने कामपीड़ित क्रौंच को मारा है, तुझे कभी प्रतिष्ठा नहीं मिलेगी।)

कवि वड्र्सवर्थ से जब कविता के संबंध में पूछा गया, तो उन्होंने कहा – "कविता शान्ति के समय की गई उत्कट भावनाओं का स्वच्छन्द प्रवाह है।" **Poetry is spontaneous overflow of powerful feelings. It takes its origin from emotions recollected in tranquility**

डॉ० जॉनसन ने कहा – "कविता सत्य और आनन्द सम्मिश्रण की वह कला है जिसमें बुद्धि की सहायता के लिए कल्पना का प्रयोग किया जाता है।" **Poetry is the art of pleasure with truth by calling imagination to the help of reason.**

हडसन एक कदम और आगे बढ़े और उन्होंने कविता को कल्पना और भावना के द्वारा जीवन की व्याख्या करने वाली बताया। Poetry is the interpretation of life through imagination and emotion.

आचार्य विश्वनाथ ने रसमय वाक्य को ही काव्य कह दिया "वाक्यं रसात्मकम् काव्यं।"

कविता की किसी भी परिभाषा को हम क्यों न लें यह निश्चित है कि कोई प्राणी, कोई पदार्थ, कोई परिस्थिति हमारे मन-मस्तिष्क पर छा जाती है और ऐसी तीव्र प्रतिक्रिया छोड़ जाती है कि हम उबल पड़ते हैं और बाध्य हो जाते हैं लिखने को। इसीलिए कहा जाता है कि कविता लिखी नहीं जाती, कोई लिखवा जाता है। एक अनाम बेचैनी, असह्य पीड़ा, अजीब सी छटपटाहट है, जो हमें विवश कर देती

है बिना काया की कोई छाया कोई साया हर पल, हर लम्हा पीछा करता रहता है और तब तक पीछा नहीं छोड़ता जब तक वह लिखवा न ले।

अपने विचारे हुए सत्य के अनुरूप ही व्यक्ति सौन्दर्य की सृष्टि करना चाहता है। सौन्दर्य ही सृष्टि के संचालन में ऊर्जा प्रदान करता है, गति देता है, नियन्त्रित करता है। प्रेम समस्त मानवीय संबंधों में सर्वश्रेष्ठ संबंध है। सर्वश्रेष्ठ सुख है। प्रेम ने आज तक किसी को गिराया नहीं, बल्कि सूर, तुलसी, शैली, ख़लील जिब्रान जैसे महापुरुषों का निर्माण किया है। अनैतिक मनुष्य प्रेम कर ही नहीं सकता। प्रेम प्रेमी के हृदय का स्पन्दन है। प्रेम पूजा है, अर्चना है, वन्दना है। प्रेम की युक्ति युक्तिहीन है। प्रेम केवल देना जानता है, लेना नहीं। वह अपने प्रिय के सुख में स्वयं को विलीन कर देता है। प्रेम की आँख वह देखती है जो कोई अन्य आँख देख नहीं पाती। प्रेम का कान वह सुनता है, जो कोई दूसरा कान सुन नहीं सकता। ग़ज़ल ऐसे ही प्रेम का आधार है।

1940 में अपने मित्रों के सहयोग से मैंने एक कवि-दरबार का आयोजन किया था, जिसमें मैं पं0 सुमित्रानंदन पन्त बना। अगले वर्ष पुनः कवि-दरबार किया, जिसमें डॉ0 हरिवंशराय 'बच्चन' बनकर मैंने उनकी – 'मधुशाला' का झूम-झूमकर सस्वर पाठ किया। इन्हीं दिनों बरेली के सुप्रसिद्ध कवि श्री निरंकारदेव सेवक से मेरा परिचय हुआ और कविता के प्रति एक सम्मोहन मेरे मन में जागृत हुआ।

नगर के प्रख्यात वकील स्व0 बाबू रामजीशरण सक्सेना के शिष्यत्व में 1951 में मैंने वकालत शुरू की । बाबूजी न केवल एक प्रखर और तेजस्वी वकील थे वरन् उच्चकोटि के कवि और शायर भी थे। सप्ताह में एक दिन अवश्य ही उनके यहाँ काव्य-गोष्ठी का आयोजन होता था जिसमें नगर और देश के प्रसिद्ध कवि भाग लेते थे। बाबूजी के साथ बीती शामें आज भी मेरी स्मृति में तरोताज़ा हैं। उनके यहाँ ही मेरा परिचय देश के ख्याति-प्राप्त गीतकार श्री नीरज, श्री भारत भूषण और श्री किशन सरोज से हुआ। मुझे गर्व है कि बाबूजी के चरणों में बैठकर मैंने वकालत और कविता का अ-ब-स सीखा।

1964 में साहू गोपीनाथ कन्या विद्यालय के प्रांगण में नगर-प्रमुख साहित्यिक संस्था 'आलोक' ने 'भोर का तारा' नामक एकांकी नाटक का मंचन किया। नाटक के प्रमुख पात्र कवि शेखर का जब मैंने अभिनय किया तो मुझे लगा कि मैं केवल अभिनय नहीं कर

रहा, वरन् वास्तव में ही कवि हूँ। यह वह अवसर था जब मेरे अन्दर छिपा कवि बाहर आने को मचलने लगा, किन्तु वह मचलता ही रह गया, बाहर न आ सका। 1964 में ही त्रिकोण प्रेम की ज्वलंत समस्या (पति, पत्नी और वह) को आधार बनाकर मैंने अपना मनोवैज्ञानिक उपन्यास 'टूटते सत्य' लिखा। लिखने के बाद आठ वर्ष तक मैं और मेरे अन्दर का लेखक सोते रहे और 1972 में यह उपन्यास प्रकाशित हुआ।

मेरे जीवन की सबसे दुखद और हृदय-विदारक घटना तब घटी, जब 14 फरवरी 1983 को मेरा सोलह वर्षीय एक मात्र पुत्र काल के क्रूर हाथों द्वारा सदैव के लिए मुझसे छीन लिया गया। उसके विछोह के दारुण दुख ने मुझे ऐसा मर्माहत और पागल कर दिया कि एक वर्ष तक मैं कुछ भी न कर पाया। हर पल, हर लम्हा एक बेकली के आलम में गुमसुम पड़ा रहता था। यह वह आघात था जो मुझे बुरी तरह तोड़ गया और जिसने मजबूर कर दिया मेरे अन्दर के छिपे कवि को, ग़ज़लगो को, बाहर निकलने के लिए। ज़िन्दगी की ठोकरें, झंझावत, असहाय निराशा, अपनों के धोखे, अहसान-फ़रामोशी, स्वार्थ का नग्न नृत्य, आत्मीयता का नितान्त अभाव और जीवन की क्षणभंगुरता ही वे उपादान थे जिन्होंने मुझसे ग़ज़लें लिखवाईं। इन ग़ज़लों को लिखने का श्रेय यदि मैं अपने को दूँ तो यह मेरी आत्म प्रवंचना होगी, दुरभिमान और अहंकार होगा। विश्वास मानिए मैं तभी लिख पाया हूँ जब मजबूर हो गया हूँ और इस मजबूरी में ही मैं कह सका–

सबने मेरी हँसी को देखा है,
किसने देखी है मेरी मजबूरी।
अब ग़मे-दुनिया नहीं लगता है ग़म,
ये मिरे ग़म की अजब तासीर है।

मेरी क़िस्मत में दिन नहीं शायद, रात के बाद रात आई है।
कैसा मुंसिफ निज़ामे कुदरत है, मार कर मुझको मर गया कोई।
देखिए तो बशर भीड़ के साथ है, सोचिए तो अकेला ही चलता रहा।
वक़्त से क़ब्ल मर गया कोई, फूल बनकर बिखर गया कोई।
अब तो खुद मैं एक साया बन गया, रह गई परछाइयाँ परछाइयाँ।

वो एक रूह जो मुझसे कभी जुदा न हुई,
खुदा की तरह मिरे जिस्मों-जाँ में रहती है।
तुम गये क्या मेरी दुनिया ही गयी,
अब तो तन्हाई मुझे भाने लगी।

जब भी आया खुशी का एक झोंका
ग़म की चादर उढ़ा गया मुझको।
यह लग रहा है कि करवट बदल रही है आज,
हयात मौत के साए में पल रही आज।

आरम्भ से ही नगर की प्रायः सभी साहित्यिक संस्थाओं के साथ मेरा निकट का संबंध रहा है और आज भी है। उनके द्वारा आयोजित गोष्ठियों तथा अन्य कार्यक्रमों में नगर के प्रमुख साहित्यकारों से मेरा घनिष्ठ परिचय हुआ। उनके सम्पर्क और प्रेरणा ने मुझे बहुत कुछ सिखाया। अपने उन मित्रों में से श्री निरंकारदेव सेवक, स्व0 श्री होरीलाल शर्मा 'नीरव', स्व0 श्री सतीश चन्द्र 'सन्तोषी', श्री किशन सरोज, श्री रघुनाथ सहाय 'वफा', श्रीमती ज्ञानवती सक्सेना, श्रीमती शान्ति अग्रवाल, मेरे बड़े भाई श्री सूरज प्रकाश गोयल, श्री कृष्णकान्त खण्डेलवाल, प्रो0 कृपानन्दन, डॉ0 ज्योतिस्वरूप, डॉ0 विष्णुनारायण सक्सेना, श्री प्रतापचन्द्र आजाद, श्री अनवर चुगताई, श्री रवि सारस्वत, श्री आर0के0 सक्सेना, श्री धर्मपाल गुप्त 'शलभ', श्री जे0बी0 खरे, श्री हरीशचन्द्र राय, श्री हरीश जौहरी, श्री रामेश्वर पाण्डे तथा श्री ब्रजराज पाण्डे का मैं हृदय से कृतज्ञ हूँ।

धन्यवाद देने के लिए मेरे पास शब्द नहीं हैं अपने मित्र श्री कृष्णबिहारी 'नूर', श्री किशन सरोज और श्री रघुनाथ सहाय 'वफ़ा' के लिए, जिन्होंने समय-समय पर इन ग़ज़लों के संबंध में मुझे अपने बहुमूल्य सुझाव और परामर्श दिए।

मित्र डॉ0 कुंअर बेचैन, श्री के0पी0 सक्सेना, श्री सोम ठाकुर तथा डॉ0 माहेश्वर तिवारी ने ग़ज़लों पर अपनी सम्मति लिखकर मुझ पर जो एहसान किया है, उसे मैं कभी न भुला सकूँगा।

इन ग़ज़लों में मैंने नया कुछ भी नहीं लिखा है और न ही नयेपन का मुझे कोई भ्रम है। अपने पाठकों से मेरा विनम्र निवेदन है कि इनको पढ़कर यदि उनके मुँह से 'आह-वाह' निकले तो मुझे लिख भेजने की कृपा करें। मैं हृदय से उनके पत्रों का स्वागत करूँगा और उनकी अनुकम्पा के लिए उनका कृतज्ञ रहूँगा।

जी-12, रामपुर बाग,
बरेली- 243001
फोन - 0581-475074

(1987 में प्रकाशित "दर्द की छाँव में" की समीक्षा)

हिन्दुस्तानी सोच और शायरी का सफ़र

माहेश्वर तिवारी

शायरी बेहतर इंसान बनाने का एक खूबसूरत शऊर है लेकिन यह शायरी तब पैदा होती है जब इंसान में मुहब्बत का जज़्बा हो और दर्द की छटपटाहट भरी राहों से उसने सफर तय किया हो। शायरी अपने बचाव का एक रास्ता भी है। कुछ लोग इसे पलायन कहेंगे लेकिन वास्तविकता यह है कि वह ज़िंदगी की धड़कनों, उसकी खुशियों, दुखों और संघर्षों में शामिल होने का एक सलीक़ा हमें सिखाती है।

श्री राम प्रकाश गोयल और उनकी शायरी को ठीक-ठीक समझने के लिए ऊपर कही बातों को अपने ध्यान में रखना बहुत ज़रूरी है। उन्हें शायरी और एक संवेदनशील वकील के संस्कार अपने गुरु स्व0 बाबू रामजी शरण सक्सेना एडवोकेट से मिले। गोयल साहब ने गज़लें, नज़्में, कत्आत, गीत, मुक्त छंद की रचनाएँ – सभी लिखी हैं लेकिन अगर सचमुच उनकी शायरी के बेहद क़ीमती और खूबसूरत रास्ते से होकर गुज़रना और अपने लिए कुछ फूल चुनना चाहते हैं तो उसके लिए उनकी ग़ज़लों के पास जाना होगा। उनकी शायरी जिन्दगी, उसकी खूबसूरती उसके हाद्सात का एक खूबसूरत अलबम है, ऐसा अलबम जिसके चित्र बोलते हैं। आप से अकेले में बतियाते हुए से लगते हैं। उनकी एक ग़जल का पहला शेर है –

दर्द ठहरा रहा, ख़्वाब चलता रहा,
दर्द की छाँव में, ख़्वाब पलता रहा।

दर्द की छाया में स्वप्नों, आशाओं और आकांक्षाओं का यह पलना ही तो शायरी है। समय की कठिनाइयाँ उसे जैसे ही थोड़ी सी फुर्सत देती हैं, वह अपने सुख-सपनों में खो जाता है। प्रतीक्षा क्या है ? जीते रहने का एक खूबसूरत बहाना। भविष्य के प्रति संसक्तिपूर्ण एक गहरी आश्वस्ति।

दुख को आँसू बहाकर पराजित नहीं किया जा सकता। यह तरीक़ा तो आत्म-दया का, उसके सामने असहाय समर्पण का है। क़द्दावर लोग इसे पसंद नहीं करते। वे तो उसे चुनौती देते हैं अपने

क़हक़हों से और सिर्फ चुनौती ही नहीं देते उसे अपने बेलौस कहकहों में डूबो देते हैं

जो भी आँसू बहे न आँखों से, क़हक़हों में डुबो दिए हैं वो।

मानवीय रिश्ते अब पहले जैसे नहीं रह गए और न ज़िन्दगी का संकट इतना आसान है कि आराम से एक साँस में तय कर लिया जाए।

धूप है तेज़ बहुत राहों में, आओ ठहरें ज़रा तो छाँवों में।

यह कठिनाई और भी बढ़ जाती है जब रिश्तों की गरमाहट ख़त्म हो गई हो। आज इंसानी ज़िन्दगी की यह कड़वी सच्चाई है –

किसको फुर्सत है दोस्ती के लिए, आग ठंडी पड़ी अलाव में।

दूसरों को नसीहतें देना अब एक फैशन बन गया है।

वो जो आए थे हमको समझाने, जी रहे हैं बड़े तनाव में।

हमने दुश्मन को दोस्त समझा है हमसे ग़लती हुई चुनाव में।

जीवन का यथार्थ इतना मारक है कि पुराने ज़माने में जिस माशूक़ के दामन में सारी ज़िन्दगी गुज़ार देते थे या गुज़ार देने को तैयार बैठे रहते थे, ज़िन्दगी की कशमकश उससे ही अलग होने को मजबूर करती है –

भूलकर तुमको मुझे तन्हा सफ़र करना पड़ा।

क्या बताऊँ मैं कि ख़ुद से किस क़दर लड़ना पड़ा।

ख़ुद से लड़ने की बात में कितनी टीस, छटपटाहट और खीझ है – यह सिर्फ़ रचनाकार ही अनुभव कर सकता है। इसमें 'भूलकर तुमको' कहने के बावजूद भूलना नहीं है और न ही परिस्थितियों से समझौता करने के बाद उपजी तटस्थता। इसमें भूलना याद करने का पर्याय-सा है। यही याद जब आती है तो ग़ज़ल में ख़ुद को ढाल लेती है और जब जाती है तब भी रुबाई की शक्ल में एक गुनगुनाहट छोड़ जाती है –

याद आई तो दे गई है ग़ज़ल, जब गयी दे गयी रुबाई है।

महबूब की ख़ूबसूरती का बखान करता है –

रूप की धूप से बच के जाता कहाँ,

बर्फ़ की तरह पल-पल पिघलता रहा।

उनके चेहरे पे पड़ गयी जो नज़र,

चाँदनी में नहा के आई है।

ग़ज़ल की एक बहुत बड़ी विशेषता है कथन-भंगिमा में विरोधाभासों

का ऐसा संयोजन जिसे पढ़ते या सुनते ही 'आह' और 'वाह' फूट पड़े।

किस जतन से वो पा गया मुझको,
यानी मुझसे छुड़ा गया मुझको।

श्री राम प्रकाश गोयल ख़ालिस हिन्दुस्तानी सोच और ज़ुबान के शायर हैं। अगर आपके पास उन्हीं जैसा सीधा-सादा खुला मन है तो आप उनकी शायरी के पास पहुँच जायँगे। वे बड़बोले नहीं, बड़ी बोल और मोल के शायर हैं और इंसान इतने खूबसूरत कि आमना-सामना होने पर फ़िराक़ साहब की तरह द्विविधा में फँस सकते हैं -

तुम मुख़ातिब भी हो, क़रीब भी हो,
तुमको देखें कि तुमसे बात करें।

प्रकाश भवन, गोकुलदास रोड,
मुरादाबाद

मेरी कामना

'टूटते सत्य' जैसा उपन्यास पढ़ने के बाद मैं राम प्रकाश जी को मूलतः एक कथाकार के रूप में जान सका था। यह नहीं पता था कि अन्दर कहीं अन्तर्मन की तहों में एक कवि, एक ग़ज़लगो पिन्हाँ है। याराना सोहबतों में इनके शेर सुने . . . फिर और सुने। लगा कि यह शख़्स उपन्यास लिखकर पाजामे के ग़लत पाँयचे में पाँव डाल बैठा है। धीरे-धीरे राम प्रकाश के ऊपर के वकील पर अन्दर का कवि हावी होता गया और जजमेंट स्वरूप यह ग़ज़ल संग्रह 'दर्द की छाँव में' आपके हाथों में है। इसमें उस्तादी वाली पुख़्तगी भले ही न हो पर कहीं कुछ ऐसा ज़रूर है जो मन को छू जाता है। मैं चाहता भी नहीं कि गोयल साहब में उस्तादी पुख़्तगी आए। इससे सीधा-साधापन छिन जाता है। मैं न शायर हूँ, न शेर को ज़रूरत से ज़्यादा समझ सकता हूँ। सिर्फ़ एहसास का, शब्दों के मखमलीपन का क़ायल हूँ . . . और यह हुनर राम प्रकाश जी के पास है। यही कामना है कि यह संकलन अच्छे ढंग से आगे खिसके . . . . दूसरा आए. . .. तीसरा आए आते रहें . . . . और बस।

दोस्त होने का दावेदार
के.पी. सक्सेना, लखनऊ

(1987 में प्रकाशित दर्द की छाँव में की समीक्षा)

राम प्रकाश गोयल : आँसुओं के सागर में तैरती एक नाव

डॉ0 कुँअर बेचैन

संसार के प्रत्येक रचनाकार ने किसी न किसी रूप में प्रेम को अपने जीवन और अपनी रचनाओं में अभिव्यक्ति दी है। यह अभिव्यक्ति जितनी ही गहरी है, उतनी ही उसने ऊँचाइयाँ छू ली हैं। बड़ी अनोखी स्थितियाँ हैं यह साहित्य और कला में। जितनी ही जहाँ गहराई होगी, उतनी ही ऊँचाई भी। प्रेम स्वयं में ही एक गहरी चीज़ है अतः उसकी अभिव्यक्ति उथलेपन से सम्भव है ही नहीं। सागर की सतह में छिपे मोती को गहरे उतरकर ही पाया जा सकता है।

कविवर श्री राम प्रकाश गोयल की गज़लें प्रेम की विविध स्थितियों को अपने हृदय में छिपाये हुए हैं, जो बाहर इसी प्रकार महक रही हैं जैसे फूल की पांखुरियों में क़ैद रहने पर भी सुगंध। जैसे फूल कहता है कि औरों की बात और ही जाने मगर मेरा धर्म तो खुशबू देना है, उसी प्रकार कविवर राम प्रकाश भी यह कहते हैं –

शेख़ की बात शेख़ ही जाने, मेरा ईमान तो मुहब्बत है।

क्योंकि वह यह मानते हैं कि जीवन में प्रेम बहुत आवश्यक है, उसके बिना जीवन या तो रेत है या पत्थर। प्रेम ही वह तरलता है, वह प्रवाह है, जिसमें बहकर ज़िन्दगी धन्य होती है। प्रेम सचमुच प्रत्येक इंसान की ज़रूरत है –

सिर्फ़ यह तेरी मेरी बात नहीं, प्यार हर एक की ज़रूरत है।

वह न हो तो ज़िन्दगी सूख जाय, टूट जाय, थक जाय। मगर इस प्रेम की नगरी में आजकल वे घर कहाँ मिलते हैं जिनके दरवाज़े, दीवारें, आँगन और जिनका कण-कण 'वफ़ा' के रंग में रँगा हो। जिधर देखो उधर बेवफ़ाई है। यदि पूरी ज़िन्दगी में एक पल भी वफ़ा का मिल जाय तो वह अनेक जन्मों से कहीं बड़ा है –

एक लम्हे की ज़िन्दगी के लिए, शम्म-ए-दिल जला के देखो तो।

मगर बेवफाई भी कुछ न कुछ सिखा जाती है जैसा कि गोयल साहब के साथ हुआ -

उसका अन्दाज बेरुख़ी वाला, प्यार करना सिखा गया मुझको

वियोग जीवन में अँधेरा भर जाता है. किन्तु, इसी बहते हुए अँधेरे की लहरियों पर कभी-कभी कोई जलता हुआ दीपक भी दिखाई दे जाता है। भले ही यह दीपक कहीं दूर बहता हो किन्तु उसकी रोशनी आँखों में समायी रहती है -

जब पास थे तो सामने रहते थे रात-दिन,
अब दूर जा के आँख के वह नूर हो गये।

पास रहना कभी-कभी दूर रहने-जैसा ही हो जाता है। इसलिए निकटता में बड़ी दूरी है और दूरी में निकटता भी। प्रेम इस स्थिति की सबसे सुन्दर और मोहक पहचान है -

दूरियों में निहाँ है नज़दीकी, शायरी में सुना सा लगता है।
आप इतने क़रीब आ भी गये,
फिर भी क्यूँ फ़ासला-सा लगता है।

इसका अर्थ यह भी नहीं कि प्रिय के विरह ने इस कवि को सताया नहीं। बहुत सताया उसे और इसी कारण वह घबराकर कह उठा-

जो एक पल को भी मुझसे कभी जुदा न हुआ,
जुदाई उसकी बहुत दिल को खल रही है आज।

प्रतीक्षा की घड़ियाँ समय की सुइयों को बड़ा लम्बा कर देती हैं। एक-एक पल नुकीली सुई की तरह चुभता है। तेज़ दौड़ता समय भी लगता है कि ठहर गया है। जिसका इन्तज़ार है, पता है कि वह कभी नहीं आयेगा, फिर भी ऐसे मोहक इन्तज़ार में एक अलग प्रकार की मोहक मिठास है -

यह पता है कि वह न आयेंगे, फिर भी क्यूँ इन्तज़ार होता है।

प्रेम में द्वैत मिट जाता है। प्रिय और प्रिया दोनों एक रूप हो जाते हैं। यही प्रेम का सबसे सुन्दर और सम्मोहक बिन्दु है, जहाँ पहुँचकर तू भी मैं हो जाता है। कविवर राम प्रकाश गोयल को भी उसकी सच्ची और ईमानदार अनुभूति हुई है -

आईना जब भी देखता हूँ मैं, मैं नहीं उसमें यार होता है।

यह अनुभूति केवल अपने लिए ही नहीं है, वरन् दूसरे पक्ष की ओर से भी हुई है। कवि को यह विश्वास है कि दूसरा पक्ष भी चाहे दूर-दूर

दिल की धड़कन ये कह रही मुझसे
सिर्फ मेरे लिये जिये हैं वो

श्री गोयल भी मानते है कि प्रेम की आग में जलकर ही निखार आता है -

यह इश्क़ आग है लिक्खा है ये किताबों में,
मगर इस आग में ही ज़िंदगी निखरती है।

श्री राम प्रकाश गोयल की ग़ज़लों का विषय जहाँ एक ओर प्रेम रहा है वहीं दूसरी ओर सौन्दर्य भी। उनकी सजल भीगी आँखें जिस प्रकाश में आभान्वित होती हैं, उसकी किरणें सौन्दर्य की ही किरणें है। उसकी नज़र किसी शीतल चाँदनी में नहाती रहती है -

उनके चेहरे पे पड़ गयी जो नज़र, चाँदनी में नहा के आयी है।

रूप के प्रभाव से, सौन्दर्य की उमंग से भला कौन बच सकता है ? इसी कारण कवि राम प्रकाश कह उठते हैं -

रूप की धूप से बच के जाता कहाँ,
बर्फ़ की तरह पल-पल पिघलता रहा।

हुस्न भी एक शराब है, जिसका नशा कम नहीं होता। जब नशा उतरता है, तो वास्तविकता नज़र आती है -

नश्शः उतरेगा तब वो समझेंगे,
हुस्न की मय अभी पिए हैं वो।

प्यार को मज़हब बनाने से अनेक समस्याओं का हल अपने आप ही निकल आता है, क्योंकि जहाँ प्यार का दीपक जल रहा है, वहाँ अपने आप ही मन्दिरों और मस्जिदों की सृष्टि मानी जा सकती है।

मिरे ख़्याल में मन्दिर है वह, वही मस्जिद,
जहाँ भी प्यार की इक शम्मा जल रही है आज।

कवि ने आज के यथार्थ जीवन पर भी सारगर्भित टिप्पणियाँ की हैं। ये टिप्पणियाँ कहीं व्यंग्यात्मक हो गई हैं, कहीं सूचनात्मक। वैज्ञानिक और भौतिक प्रगति ने हमें बहुत कुछ दिया मगर बहुत कुछ छीन भी लिया। छीन लिया वह एहसास, जो व्यक्ति और व्यक्ति के बीच एक भावात्मक कड़ी के रूप में आकर उन्हें जोड़ता था। यही कारण है कि कवि कह उठता है -

एक मस्नूई ज़िन्दगी के लिए, सादगी छोड़ आये गाँवों में।

और अब हर व्यक्ति औरों से मिलते हुए भी अपने में इतना सिमट गया है कि उसे न तो दूसरों के गम सुनने की फुरसत है और न दूसरों को अपना दुख सुनाने की यह भीड़ से तो मिलता है किन्तु उसकी आवाज़ उसी भीड़ में खो जाती है –

देखिए तो बशर भीड़ के साथ है,
सोचिए तो अकेला ही चलता रहा।

मिल–बैठकर अपनी हृदयानुभूतियों को अभिव्यक्त करने की उमंग जैसे अब ठंडी पड़ गई है –

किसको फुर्सत है दोस्ती के लिए, आग ठंडी पड़ी अलाव में।

सारी दुनिया में झूठ इस क़दर व्याप्त हो गया है कि सच ने अपनी पहचान ही खो दी है –

जो सुनेगा वह झूठ समझेगा, मैंने ऐसी सदा लगायी है।

और यही कारण है कि लोगों ने दिल की आवाज़ का गला घोट दिया है या फिर वह स्वयं ही धीरे–धीरे दम तोड़ने लगी है –

रफ़्ता–रफ़्ता हो गयी मद्धम मेरे दिल की सदा,
ज़िन्दगी के साज़ को हर हाल में बजना पड़ा।

कविवर राम प्रकाश ने कहीं–कहीं उन शाश्वत सत्यों को अपनी ग़ज़ल के शेरों में कहा जो नीतिशास्त्र की पुस्तक में आने योग्य हैं। उन्हें लिखवाकर अपने कमरे की दीवार पर सजाया जा सकता है। जैसे–

क़द्र जिसने न की वक़्त की वक़्त पर,
जिन्दगी भर वह फिर हाथ मलता रहा।
अपनी खुद्दारी को वो छलते हैं,
जो हवाओं के साथ चलते हैं।

काव्य में बिम्ब–विधान का बहुत ऊँचा स्थान है। बिम्बों के सहारे कवि अपनी बात को मूर्त्तरूप प्रदान करता है। व्यक्ति का यह स्वभाव है कि वह इतना सुनकर नहीं जान पाता, जितना देखकर। बिम्ब–विधान शब्दों के माध्यम से किसी भी बात को सुनाने नहीं, दिखाने का विधान है। बिम्बों को प्रस्तुत करने में कवि नेत्र, कान, नासिका, जिह्वा तथा त्वचा इन पाँच ज्ञानेन्द्रियों और इनके विषयों तथा गुणों का आधार बनाता है। इन्हीं से दृश्यबिम्ब, शब्दबिम्ब, गन्धबिम्ब, स्वादबिम्ब और स्पर्शबिम्ब बनते हैं। श्री गोयल की ग़ज़लों में इस प्रकार के अनेक बिम्बों का प्रयोग अनायास ही हो गया है।

जैसे

कौन से ग़म की मय पिए हैं वो,
डगमगाते हुए जिए हैं वो। (दृश्य बिम्ब)
रफ़्ता-रफ़्ता हो गयी मद्धम मेरे दिल की सदा,
ज़िन्दगी के साज को हर हाल में बजना पड़ा। (शब्द बिम्ब)
प्यार जिस्मों के मिलन को ही नहीं कहते हैं,
जन्म-जन्मों का यह रिश्ता कभी बदनाम न था। (स्पर्श बिम्ब)
जब भी उतरा तेरी यादों का खुमार,
जाम पर जाम पी लिया मैंने। (स्वाद बिम्ब)

एक शेर में उन्होंने केवल दो शब्दों-'देखिए' तथा 'सोचिए' का इतना खूबसूरत प्रयोग किया है कि पढ़ने वालों के लिए अलग-अलग दो प्रकार के वातावरण प्रस्तुत कर जाते हैं, एक देखने का और दूसरा सोचने का। देखना तो फिर भी क्षणिक हो सकता है किन्तु सोचने की प्रक्रिया तो अनन्त है -

देखिए तो बशर भीड़ के साथ है,
सोचिए तो अकेला ही चलता रहा।

कितनी गहराई से हमारे इस कवि ने इन दोनों दृश्यों को पकड़ा है। यह एक बात ही ऐसी है जिसके अकेले प्रयोग से ही किसी कवि को कवि होने की गरिमा मिल सकती है। सचमुच यहाँ कवि ने अपने अन्दर छिपे बड़े कवि होने का प्रमाण दिया है। इसी प्रकार एक अन्य स्थान पर भी हमारे इस कवि ने 'चुनाव' शब्द का प्रयोग इतनी सहजता से कर दिया है कि उसके शब्द-प्रयोग ने ही अर्थ की अनेक दिशाएँ खोल दी हैं। हमारा ध्यान कभी राजनीति की ओर जाने लगता है और कभी उसकी विसंगति पर अपना अफ़सोस जाहिर करते हुए कभी चोट करता है तो कभी लोक-व्यवहार पर चोट करता है -

हमने दुश्मन को दोस्त समझा है, हमसे ग़लती हुई चुनाव में।

उपर्युक्त पंक्तियों में 'चुनाव' शब्द का प्रयोग श्लेषार्थ में है। यहाँ भी 'चुनाव' शब्द इन दिनों राजनीतिक चुनावों के लिए रूढ़ हो गया है और दूसरी ओर व्यक्ति के द्वारा किए गए उन चुनावों की ओर भी इंगित करता है जिन्हें वह अपने जीवन में चुनता है। कवि ने दोनों पर ही व्यंग्य किया है और अपनी सादगी को बरकरार रखा है।

कवि ने ऊपर जिस प्रकार श्लेष अलंकार का प्रयोग किया है

वसे ही एक अन्य स्थान पर रूपक का भी बहुत सुन्दर प्रयोग किया है जिसमें उसने रूप को धूप का रूपक और खुद को बर्फ का रूपक बनाया है

रूप की धूप से बचके जाता कहाँ,
बर्फ़ की तरह पल-पल पिघलता रहा।''

काव्य में प्रतीकों का भी महत्वपूर्ण स्थान होता है। प्रतीक किसी विशेष भाव की अभिव्यक्ति के लिए एक स्थान पर उसी के अनुकूल भावों की अभिव्यक्ति रखने वाले दूसरे शब्द को रखने का विधान है।

एक शेर में उन्होंने सुकरात का प्रतीक लिया। सभी जानते है कि सुकरात को सच बोलने पर जहर पीना पड़ा था। लोकजीवन में सुकरात इसी रूप में जाना जाता है। अतः कवि ने अपने सन्दर्भ में भी सुकरात के प्रतीक से बड़ी बात कह दी -

मैं भी सुकरात-सा सच बोल रहा हूँ तो फिर,
क्या अजब दुनिया मुझे प्याला जहर भर कर दे।

इसी प्रकार उन्होंने एक स्थान पर रात का प्रतीक चुना। रात निराशा, दुख और कठिनाइयों का प्रतीक मानी जाती है। कवि को निरन्तर निराशाएँ प्राप्त हुई और सुख का दिन कभी मिला ही नहीं। इस बात को उन्होंने जिस खूबसूरती के साथ कहा है वह देखते ही बनती है--

मेरी क़िस्मत में दिन नहीं शायद, रात के बाद रात आई है।

यह शेर सचमुच सम्पूर्ण पुस्तक का शीर्षक शेर है। इसमें अर्थ की व्याप्तियाँ बहुत दूर तक है। शेरियत का पूरा रंग, पूरी भंगिमा इसमें है। भाषा की सादगी और कहन सभी कुछ अच्छा-अच्छा है। एक पुराने प्रतीक को एक नया रंग देना बहुत मुश्किल काम है। यह मुश्किल काम श्री राम प्रकाश गोयल ने इस शेर में कर दिखाया है।

श्री राम प्रकाश गोयल ने ये गजलें ऐसे ही नहीं लिख दी है वरन् वे किसी ने लिखाई हैं उनसे। जिस सत्ता ने उनसे ये रचनाएँ लिखवाई हैं वह निश्चय ही उनके मन पर राज्य किए हुए है।

2 एफ - 51,
नेहरू नगर, गाजियाबाद (उ0प्र0)

'दर्द की छाँव में' प्यार और पीड़ा

भारत भूषण

'दर्द की छाँव में' श्री रामप्रकाश गोयल का ग़ज़ल और कविताओं का संग्रह पढ़ा। एक सुखद आश्चर्य हुआ। रामप्रकाश जी मेरे बहुत पुराने मित्र हैं। पहले उनका एक उपन्यास 'टूटते सत्य' प्रकाशित हो चुका है। मुझे यह पता ही नहीं था कि वे ग़ज़लें और कविता भी लिखते रहे हैं। किशोर बेटे के बिछोह ने रामप्रकाश जी के प्राणों को तपा कर कविता के बीज को अंकुरित कर दिया। रामप्रकाश जी का मन अत्यन्त तरल है। प्रेम और उसका दर्द उनके मानसरोवर में लहरें उठाता ही रहता है। प्राणों की बेचैनी इन रचनाओं में अभिव्यक्त हुई है। डॉ0 कुंवर बेचैन और श्री सोम ठाकुर ने इस संग्रह का आँकलन बहुत ठीक किया है। विश्वास करता हूँ कि हिन्दी ग़ज़ल के संग्रहों में यह संग्रह एक सम्मानजनक स्थान पाएगा। बड़े उस्तादाना अंदाज़ में कहा है–

प्यार होता नहीं कभी नाकाम, इस पे ईमान लाके देखो तो
कैसी मजबूरी है क्या तक़दीर है चल रहा हूँ पाँव जंजीर है।

राम प्रकाश जी के काव्य का आधार वही शाश्वत प्रेम भावना है जो पूरी सृष्टि का आधार है, जीवन का मूल है और जिसकी अनुपस्थिति मृत्यु है, अंधकार है, समाप्ति है। वही उनका ईमान है और इसी की आवश्यकता उन्हें ही नहीं सभी को सदा रही है।

शेख़ की बात शेख़ ही जाने, मेरा ईमान तो मुहब्बत है।
सिर्फ़ यह तेरी मेरी बात नहीं, प्यार हर एक की ज़रूरत है।

प्रेम जब तक शरीर तक रहता है व्यक्ति रहता है। शरीर से परे होकर विराट हो जाता है। प्रेम की इसी अनुभूति को कवि ने नयी नयी तरह से जिया है।

रोज़ उनके तग़ाफ़ुल ने दी ज़िन्दगी,
रोज़ जीने का पहलू बदलता रहा।
ज़िन्दगी फिर से मुस्कुराई है, क्या उन्हें मेरी याद आई है।

यह नहीं कि हर एक सांस है हमीं पर बार
जिन्दगी किसक सम्हाले सम्हल रही है आज

हिन्दी की रचनाओं में 'कौन करेगा इतना प्यार' और 'यह सौभाग्य तुम्हारा कोई लिख पाए कविता तुम पर' अच्छी रचनाएँ है। मुक्त, छंद में लिखी गई 'जीवन और अस्तित्व' और 'जिन्दगी एक कैलेण्डर' सशक्त रचनाएँ हैं।

मैं जानता हूँ कि राम प्रकाश गोयल जी को न मंच से कुछ मतलब है न अपने प्रचार की लिप्सा से। वे चुपचाप अपनी हयात को जैसे तैसे सम्हाले हुए हैं। शायरी ही एक जिजीविषा है जो उनके प्राणों की हर धड़कन को जीवन देती रहती है। मैं तो अपने इस दोस्त के दर्द को नहीं बाँट सकता। कोई नहीं बाँट सकता लेकिन यह वाणी (शायरी) का प्रकाश उनके अँधेरे को सदा सर्वदा ज्योतिर्मय करता रहेगा। आशा करता हूँ कि उनसे हमें ऐसे ही उपहार और मिलेंगे।

ब्रह्मपुरी, मेरठ

हार्दिक बधाई

श्री राम प्रकाश गोयल के बहुमुखी कर्तृत्व से मैं विगत तीस वर्षों से परिचित हूँ। वे बड़े सशक्त गद्यकार तथा समर्थ कवि हैं। कविता के क्षेत्र में उनकी प्रतिभा ने अनेक आयामों को धन्य किया है। ग़ज़ल चूँकि मूलतः उर्दू की विधा है अतः उन्होंने अपनी ग़ज़लों को गुलाबी उर्दू की महक से वंचित नहीं होने दिया है। उनकी दृष्टि में हिन्दी की सम्पन्नता है। अतः दोनों के समान योग से नागरी-उर्दू की अद्‌भुत ग़ज़लों की सृष्टि उनसे अनजाने में हो गयी है। मुक्तकों (क़त्‌ए) में दर्शन और चिंतन का पुट है। उन जैसे साधक रचनाकार से छन्द-मुक्त रचनाओं में विचार की पुष्ट परिपाटी प्रयोग धर्मिता के साथ रूपायित हुई है। "दर्द की छाँव में" के प्रकाशन पर हार्दिक बधाई एवं भविष्य के लिये शुभकामनाएँ।

सोम ठाकुर, आगरा

दर्द की छाँव में ?

निरंकार देव सेवक

बरेली के कवियों में राम प्रकाश गोयल का एक अपना स्थान है। यहाँ कोई कवि सम्मेलन या गोष्ठी ऐसी नहीं होती है जिसमें वह उपस्थित न हों। बरेली नगर में ऐसी साहित्यिक संस्थायें भी कम ही होंगी जिनसे वह सक्रिय रूप से जुड़े न हों। स्वभाव से कोमल और मधुर। उनसे बात करके ही कोई यह समझ सकता है कि वह कुछ लिखते अवश्य होंगे। कुछ वर्ष पूर्व उनका एक उपन्यास टूटते सत्य प्रकाशित हुआ था। तब लोग उन्हें एक गद्य लेखक के रूप में ही जान पाये थे। अब उनकी कविताओं का यह संकलन 'दर्द की छाँव में' प्रकाश में आया है। इसमें उनकी लिखी अधिकतर ग़ज़लें कुछ मुक्तक और कुछ अतुकान्त कवितायें संकलित हैं। संकलन का नाम इस अर्थ में बड़ा सार्थक है कि दर्द को वह प्रेम करने या कवि होने के लिए आवश्यक मानते हैं। उस दर्द के अनेक पहलू उनकी ग़ज़लों में सामने आये हैं जैसे –

सबने मेरी हँसी को देखा है, किसने देखी है मेरी मजबूरी

या

शेख़ की बात शेख़ ही जाने, मेरा ईमान तो मुहब्बत है।

रुबाईयों, मुक्तकों और अतुकान्त कविताओं में उनका वैचारिक पक्ष उजागर हुआ है। वह किसी विचार धारा से जुड़े महान दार्शनिक का नहीं बल्कि उस इन्सान का है जो जैसा सोचता है वैसा कह देता है। डॉ० कुँअर बेचैन और डॉ० माहेश्वर तिवारी ने अपने आलेखों में उनकी कविता के भाव और कला पक्ष पर विस्तार से प्रकाश डाला है। तिवारी जी ने उन्हें सोच और जुबान में फ़िराक़ गोरखपुरी के समकक्ष रख दिया है। कुँअर बेचैन के शब्दों में 'यह विश्वसनीय ही कहा जा सकता है कि इस दर्द की छाँव में संकलन का सर्वत्र स्वागत होगा।'

सिविल लाइन्स, बरेली

'दर्द की छाँव में' – प्यार और वियोग

डॉ० विनोद कुमार रस्तोगी

यह मुख्य रूप से ग़ज़ल संकलन है लेकिन इसमें कतआत शेरों, गीतों और कविताओं को भी स्थान मिला है। संवेदनशील कवि ने अपनी बात के माध्यम से अपने कवि का प्रेरणा-स्रोत सोलह वर्षीय पुत्र के असामयिक निधन से उत्पन्न दुख को माना है। यह सच भी है कि इस संकलन का मूल स्वर वियोग है तथापि यह वियोगी अरबी भाषा में विद्यमान ग़ज़ल के अर्थ को ही मुखरित करता है। इस प्रकार इस संग्रह में प्रणयानुभूति को स्वर मिला है। यह अपने वास्तविक रूप में कवि के प्रेमी व्यक्तित्व का दर्पण है परन्तु कवि प्रेम के उस रूप में विश्वास नहीं करता जो जिस्म से जिस्म के मिलन का पर्याय बनकर अपने लिजलिजेपन के कारण सड़ान्ध पैदा करता है। भारतीय संस्कृति के अनुसार विवाह की भाँति प्रेम जन्म-जन्म का बन्धन है। कवि गोयल इसी विश्वास को मानने वाले हैं –

> प्यार जिस्मों के मिलन को ही नहीं कहते हैं।
> जन्म-जन्मों का यह रिश्ता कभी बदनाम न था।।

शायद इसीलिए वे 'प्यार को हर एक की ज़रूरत' मानते हुए 'मेरा ईमान तो मुहब्बत है' की घोषणा कर अपने उस व्यक्तित्व का परिचय देते हैं जो साहित्य और साहित्यकार के बीच वांछित संबंधी कसौटी है। महादेवी वर्मा ने कहा भी है – महान साहित्यकार अपनी कृति में इस प्रकार व्याप्त रहता है कि उसे कृति से पृथक् रखकर देखना और उसके व्यक्तिगत जीवन की सब रेखाएँ जोड़ लेना कष्ट साध्य ही होता है। गोयल जी के इस ग़ज़ल संकलन में इश्क़ आग है इस आग में ही ज़िन्दगी निखरती है से उद्‌भूत उनके प्रेम का स्वर इतना प्रभावकारी और इतना अपनापन लिए हुए है कि संकलन को पढ़ते हुए यह आभास ही नहीं होता कि यह सब हमारा अपना नहीं। इसका कारण है कि कवि की अभिव्यक्ति का अनुभूति की सच्चाई से मेल। किसी भी कवि की निर्वैयक्तिकता में बदली यही वैयक्तिकता उसके स्थायी महत्व की आधारशिला है "दर्द की छाँव में" ग़ज़ल

संग्रह के संबंध में यह कहना उचित प्रतीत होता है। इस संकलन की ग़जलों के कुछ शेर स्मरण पथ पर सदैव विद्यमान रहेंगे -

कद्र जिसने ने की वक़्त की वक्त पर।
जिन्दगी भर वह फिर हाथ मलता रहा।।
कौन है किसकी दास्ताँ सुनता, दर्द कितना भी हो सदाओं में।
प्यार होता नहीं कभी नाकाम, इस पे ईमान ला के देखो तो।
मेरे ख़याल में मन्दिर है वह, वही मस्जिद,
जहाँ भी प्यार की इक शम्मा जल रही है आज।

कठिन उर्दू शब्दों के अर्थ देकर इस संकलन को जहाँ सर्वग्राही बनाने का प्रयास किया गया है, वहीं आरम्भ में डॉ0 कुँअर बेचैन और माहेश्वर तिवारी द्वारा संकलन की ग़ज़लों के विषय में दिए गए पृथक्-पृथक् परिचयात्मक लेख ग़ज़ल से कम आनंद प्रदान नहीं करते।

कत्आत, शेरों, गीतों और कविताओं में भी कवि की लेखनी विश्वास के साथ चली है। कत्आत जहाँ भिन्न-भिन्न विषयों से संबंधित हैं वहीं अशआर प्रमुखतः प्रेम प्रधान हैं। इसी प्रकार जहाँ गीतों में प्रणयानुभूति को अभिव्यक्ति मिली है, वहीं कविताओं में विभिन्न विषयों को वाणी।

कलापक्ष की दृष्टि से भी गोयल साहब का यह संकलन हमें निराश नहीं करता। क्या भाषा की सरलता की दृष्टि से, सुगनता, प्रवाहमय, अर्थबोधकता और क्या बिम्बविधान और प्रतीकात्मक की दृष्टि से। सभी दृष्टियों से इस संकलन को उत्कृष्ट कहा जा सकता है।

विश्वास है कि उर्दू और हिन्दी का समान्वित रूप प्रस्तुत करने वाले राम प्रकाश गोयल के 'दर्द की छाँव में' काव्य संग्रह का उर्दू अदीबों और हिन्दी के अनुरागियों द्वारा समान रूप से स्वागत किया जायेगा।

प्रूफ रीडिंग में बरती गयी सावधानियों, मनोहारी छपाई और सादगीयुक्त आवरण पृष्ट को देखकर मन बरबस ही प्रकाशक और चित्रकार को धन्यवाद देने को मचलने लगता है।

534/495, मुलूकपुर, बरेली

1972 में प्रकाशित उपन्यास 'टूटते सत्य' की समीक्षाएँ

'टूटते सत्य' उपन्यास : एक दृष्टि

डॉ० महाश्वेता चतुर्वेदी

'टूटते सत्य' एक मनोविश्लेषणात्मक उपन्यास है जिसमें पात्रों के बाह्य रूप रंग की अपेक्षा आन्तरिक द्वन्द्वों का चित्रण है। कुंठाओं का यहाँ सूक्ष्म निरूपण है। संघर्ष का उदय 'प्रेम' को लेकर हुआ। अन्ततः प्रेम की परिणति असफलता में हुई है। सभी पात्र व्यक्तित्व प्रधान हैं। प्रभा, साधना, निशि, अनिल, रवि एवं असित आदि पात्र परस्पर विशृंखलित होते हुए भी एक शृंखला में बँधे हैं। वह शृंखला है अतृप्त प्रेम की शृंखला। लेखक के तर्कपूर्ण संवाद उसके तार्किक एवं सुविज्ञ होने का परिचय देते हैं।

इस उपन्यास का मुख्य रूप से कोई नायक नहीं। पुरुष पात्र अनिल, असित, रवि अपने-अपने जीवन के नायक हैं। उपन्यास के सभी पात्र अपने लक्ष्य में असफल रहे हैं। लेखक ने इन पात्रों के माध्यम से प्रेरणा दी है कि अपरिपक्व विचार, उथलापन, परस्पर वैषम्य एवं असहिष्णुता आदि दाम्पत्य जीवन की हरियाली को शुष्क करने में पूर्णतया समर्थ हैं।

साधना एवं अनिल के जीवन में प्रभा का प्रवेश, जो स्वयं परित्यक्ता है, कटुता उत्पन्न करता है। प्रभा का पति गृह त्याग एवं पति की प्रेयसी को पत्नीत्व प्रदान कराना उसके भावुक एवं दुर्बल चरित्र का परिचायक है। स्वयं जिस विष को वह नहीं पी सकी, वही विष साधना एवं अनिल के जीवन में घोलने का दुस्साहस उसने कैसे किया? उसको सच्चरित्रा की श्रेणी में न रखकर मात्र विवशताओं का शिकार कह सकते हैं। विषमता का शिकार दुर्बल मनोवृत्ति के व्यक्ति ही बन सकते है।

इन पात्रों के माध्यम से आधुनिक सभ्यता के खोखलेपन एवं अनैतिकताओं पर पूर्ण प्रकाश पड़ता है। जहाँ विवेक का दीप बुझा, वहाँ दुराशा का दुर्निवार अन्धकार अन्तर से बाहर तक व्याप्त हो जाता है। उस तिमिराच्छादित पथ में व्यक्ति अपने पथ से भटक कर पतन के गर्त में गिर जाता है। उपलब्धियों की मृग मरीचिका अन्ततः उसका सर्वस्व हरण कर लेती है। शेष रह जाता है केवल धुँआ। यही 'टूटते सत्य' नामक उपन्यास का महानतम लक्ष्य प्रतीत होता है।

प्रोफ़ेसर कालोनी, श्यामगंज, बरेली

'टूटते सत्य' उपन्यास जीवन का यथार्थ

ईश्वर शरण सिंहल

उपन्यास 'टूटते सत्य' बड़ी रुचि से पढ़ा। स्त्री–पुरुष के बीच प्रेम–संबंधों की कहानी उतनी ही पुरानी है जितनी कि मानव–जाति का इस पृथ्वी पर इतिहास। हम आज भी उसी तरह प्रेम करते हैं, उसमें उसी तरह उलझते और सुलझते हैं, डूबते और उबरते हैं जैसे आदिकालीन स्त्री–पुरुष ने किया होगा। इस शाश्वत सत्य को विभिन्न परिस्थितियों और सामाजिक सन्दर्भों में रखते हुए बड़ी योग्यता एवं दक्षता से चित्रित किया है। स्त्री और पुरुष का अलग–अलग मनोविज्ञान, उनकी वैयक्तिकताओं और चारित्रिक भिन्नताओं को इस तरह खोलकर रख दिया गया है जैसे लेखक ने मानव–स्वभाव का बडी गहराई से अध्ययन किया हो।

उपन्यास में जीवन के घोर एवं घृणित यथार्थ के साथ–साथ कुछ पात्रों के माध्यम से उच्च आदर्शों को भी प्रतिपादित किया है। लेखक की लेखनी यथार्थ और आदर्श के चित्रण में प्रशंसनीय रूप से निष्पक्ष रही है अर्थात एक वस्तुनिष्ठ दृष्टि से जीवन की सच्चाइयों का दिग्दर्शन कराया है। कहीं–कहीं अभिव्यक्ति बड़ी मार्मिक एवं सशक्त बन पड़ी है। उदाहरण के लिये पृष्ठ 93 पर अवैध सन्तान के संबंध में जो कुछ प्रस्तुत किया गया है बहुत ही विचारोत्पादक और प्रभावी है और प्रचलित सामाजिक मान्यताओं पर करारी चोट करता है।

इसी तरह प्रेम और वासना की व्याख्या बड़े अच्छे ढंग से की गयी है। उदाहरण के लिये पृष्ट 97 पर कहा है, "वासना भी प्रेम का एक आवश्यक अंग है। प्रेम का प्रकटीकरण प्रायः वासना के माध्यम से होता है। जिसे हम प्रेम कहते हैं वह शून्य में नहीं रहता।" रवि के माध्यम से कुछ बहुत ही संयमित और ऊँचे विचार पाठकों तक पहुँचाये हैं जो इस तेजी से भ्रष्ट होते समाज को प्रकाश देते नज़र आते हैं। जीवन केवल रोमांस नहीं है वरन् एक कर्त्तव्य भी है – "जीवन के विष को अमृत के समान ग्रहण करने में ही मनुष्यता है" आदि आस्थाओं पर ही आज यह समाज टिका हुआ है।

राजद्वारा, रामपुर

'टूटते सत्य' – एक विहंगम दृष्टि

त्रिकोणात्मक प्रेम पर आधारित यह पुस्तक जीवन के यथार्थ की मुखर अभिव्यक्ति है। पुस्तक के सभी पात्रों के प्रेम त्रिकोणात्मक हैं जो एक सर्वथा नूतन प्रयोग लगता है।

नारी भावना प्रधान होती है, तर्क प्रधान नहीं। प्रेम अद्वितीय कोमल भावना है जो जाति, कुल, देश और बंधन की सीमा से परे होती है। लेखक ने इस शाश्वत सत्य को क़रीब से देखा है, परखा है और अभिव्यक्त किया है। भावना-प्रवाह में बहती साधना जहाँ पत्नीत्व को त्याग कर रवि के प्रेम को अपनाना चाहती है वहीं आदर्श प्रेमी रवि उसे अपने कर्तव्य की शिक्षा देता है।

'नारी का व्यक्तित्व पुरुष पर आश्रित है' के यथार्थ को सुशील की मृत्यु के बाद निशि और असित का वैवाहिक संबंध और सुखी जीवन व्यक्त करता है।

कर्त्तव्य की कठोर शृंखलाओं में आबद्ध अनिल अपनी पत्नी साधना को खोकर भी प्रभा को अपना नहीं पाता। व्यक्तित्व और आदर्श की दौड़ में नारी, पुरुष को पीछे छोड़ जाती है। "साधना बहन में ही मेरे स्वरूप को देखने का प्रयत्न करना" कहकर प्रभा पत्नी के प्रति पति-धर्म का उपदेश देती है।

प्रेम एक आग है, जलन है और वियोग ही उसका जीवन है। लेखक ने इस सत्य को स्वीकार किया है। 'प्रभा' और 'रवि' ने अपने आराध्यों के सुखी भविष्य के लिए अपने को होम करना श्रेयस्कर समझा है। दूसरों को अमृत-दान का प्रयास कर स्वयं विषपान किया है।

लेखक ने समाज की गर्हित एवं हेय भावना पर भी पौराणिक उदाहरणों के माध्यम से करारी चोट की है।

पुस्तक रोचक है, भाषा प्रांजल है। लेखक ने त्रिकोणात्मक प्रेम के साथ मनोविज्ञान, कल्पना और रोमांस के त्रिकोण पहलुओं को बड़े सहज ढंग से पाठकों के सम्मुख रखा है।

समाचार पत्र 'परिकल्पना' मोतीहारी में 6-8-73 को प्रकाशित

अनुपम 'टूटते सत्य'

आचार्या सारंगादेश 'असीम'

श्री राम प्रकाश गोयल एडवोकेट द्वारा रचित 'टूटते सत्य' एक उत्कृष्ट कोटि का मनोवैज्ञानिक उपन्यास है जो मानव जीवन के यथार्थ धरातल पर एकदम खरा उतरता है।

प्रस्तुत उपन्यास में मनोविज्ञान, कल्पना और रोमांस तथा बुद्धि निष्ठता सर्वत्र लक्षित होती हैं। त्रिकोण प्रेम पर आधारित इस उपन्यास का प्रत्येक पात्र पाठक के हृदय को गहराई से छू लेने की सामर्थ्य रखता है, सर्वथा नवीन और मनोवैज्ञानिक शैली पर आधारित इस उपन्यास में मानव-मन के भावों का तथा मानव जीवन के उतार-चढ़ाव का हर पहलू से जीवन्त चित्रण किया है। नारी मन के हर पहलू को उपन्यासकार ने बड़ी गहराई से समझा है। इस उपन्यास की जीवन्तता को भुक्त भोगी मानव मन बड़ी जल्दी पहचान सकता है। लगता है, पुरुष व नारी दोनों के जीवन के कटु सत्य को हर कोण, हर बिन्दु से उपन्यासकार ने देखा है, जिया है, भोगा है।

विधवा, परित्यक्ता व पत्नी तथा किसी भी प्रेयसी के मन की उलझन तथा अन्तर्द्वन्द्व का निशि, प्रभा तथा साधना के माध्यम से बहुत ही मनोवैज्ञानिक चित्रण करने में उपन्यासकार सफल रहा है और इस तरह के त्रिकोण प्रेम की परिणति भी वस्तुतः सही स्पष्ट की गई हैं। प्रस्तुत उपन्यास का उद्‌देश्य है कि विवाह सम्बन्ध केवल प्रेमी प्रेमिका में ही होना चाहिए ताकि उन्हें पूर्णता मिल सके अर्थात् उनका सकेत है कि विवाह सम्बन्धों के लिए मानसिक तथा भावात्मक आधार पर समानता होना आवश्यक है। यह उपन्यास सरसरी तौर पर नहीं पढा जा सकता बल्कि इसका एक-एक शब्द गहराई से पढ़ा जाए।

कुल मिलाकर इस उपन्यास की एक एक पंक्ति में उपन्यासकार की प्रखर मनोवैज्ञानिक शक्ति स्पष्ट लक्षित होती है।

मनोवैज्ञानिक व जीवन की यथार्थता की ऊँचाईयों को छूता हुआ 'टूटते सत्य' वस्तुतः एक मार्मिक व सफल उपन्यास है।

62, मलिक अहमद, पीलीभीत – 262001

टूटते सत्य उपन्यास – सम्पादक की दृष्टि में

आजकल अनेक उपन्यास छप रहे हैं किन्तु जो बात 'टूट सत्य' में पढ़ने को मिली वह अन्यत्र नहीं पाई। इस उपन्यास क पृष्ठ-भूमि त्रिकोण-प्रेम है (पति-पत्नी तथा प्रेमिका)।

तीन प्रेमी-प्रेमिकाओं का चित्रण इस उपन्यास में किया गया है। पात्रों के माध्यम द्वारा प्रेम के अनेक दृष्टिकोण रखे गये है। पात्र एक दूसरे के व्यक्तित्व से आकर्षित होते हैं। उनके आकर्षण का कारण बाह्य रूप सौन्दर्य नहीं वरन उनका विकसित एवं निखरा हुआ व्यक्तित्व है। आकर्षण और पारस्परिक निकटता से धीरे-धीरे और अपने स्वाभाविक रूप में सेक्स भी आ जाता है। लेखक ने इस बात पर बल दिया है कि प्रेम एक सस्ती और बाज़ारू चीज़ नहीं है। यह पवित्र एवं उदात्त भावना है, भले ही फिर उसमें सेक्स ही क्यों न आ जाय। सेक्स सम्बन्धों का अत्यन्त सूक्ष्म विवेचन होते हुए भी उपन्यास की भाषा में कहीं भी अश्लीलता और हल्कापन नहीं है।

गृहस्थ-जीवन से हटकर किया हुआ प्रेम प्रायः विनाशकारी सिद्ध हो सकता है। उसके कारण जीवन कितना कटु तथा विषाक्त हो सकता है – इस तथ्य को लेखक ने अत्यन्त हृदय स्पर्शी, मार्मिक एवं मनोवैज्ञानिक ढंग से चित्रित किया है। घटनायें इतने स्वाभाविक ढंग सम्मुख आती हैं कि ये जीवन की वास्तविकतायें ही लगने लगती ।

त्रिकोण-प्रेम पर इतना सशक्त तथा सजीव उपन्यास कदाचित ज तक नहीं छपा है। एक वकील होते हुए भी श्री राम प्रकाश यल ऐसा उपन्यास लिख पाए – यह उनकी सूक्ष्म दृष्टि, गहन ययन तथा साहित्यिक प्रतिभा का द्योतक है। इसके लिए वे हार्दिक ई के पात्र हैं।

हमें आशा ही नहीं वरन् पूर्ण विश्वास है कि साहित्य जगत में मनोवैज्ञानिक एवं मार्मिक उपन्यास को एक उच्च स्थान मिलेगा हिन्दी जानने वाला हर व्यक्ति इसको अवश्य पढ़ेगा।

(प्रकाशित बरेली समाचार दिनांक 10-12-72)

'टूटते सत्य' का अन्तर्द्वन्द्व

हरिशंकर सक्सेना

'टूटते सत्य' स्त्री पुरुष सम्बन्धों वाली दुनिया का रोचक उपन्यास है। इस उपन्यास में प्रेम और यौन सम्बन्धों के लिए व्यग्र स्त्री-पुरुष की वासना स्त्री के सहज आकर्षण और स्त्री की वासना पुरुष के व्यक्तित्व और वैचारिक मतैक्य से पनपी है। चूंकि उपन्यास के पात्र नागरिक परिवेश के समृद्ध परिवारों से सम्बद्ध हैं अतः लेखक की दृष्टि आम आदमी के भरण-पोषण की समस्या और सामाजिक परिवेश के तनाव से मुक्त रहकर केवल कल्पना, रोमांस और सुख-सुविधाओं पर ही केन्द्रित है।

लेखक की दृष्टि में स्त्री और पुरुष के बीच प्रेम के लिए सर्मपण आवश्यक है और सर्मपण के लिए वासना-पूर्ति भी। इस तरह 'वासना भी प्रेम का आवश्यक अंग है।' वासना की इस समस्या को उभारने के लिए लेखक ने पात्रों के विचार-विमर्श और अर्न्तद्वन्द्व को मनोवैज्ञानिक ढंग से चित्रित करने की कोशिश की है।

उपन्यास के प्रमुख पात्रों में तीन पुरुष पात्र हैं- असित, अनिल, रवि और तीन स्त्री पात्र हैं- निशि, प्रभा, साधना। निशि किशोरावस्था में ही विधवा हो जाती है। वह संयमी है परन्तु फिर भी नवयुवक असित से प्रभावित होकर उसके प्यार में डूब जाती है और अन्त में दोनों का प्यार 'परिणय-सूत्र-बन्धन' में बँध जाता है। प्रभा भरपूर यौवन और आकर्षण के बावजूद अपने चरित्रहीन पति द्वारा ठुकरायी जाती है। ऐसी शोषित परित्यक्ता नारी प्रोफेसर अनिल की ओर झुकती है और अनिल का प्यार पाकर अपना सारा विवेक खो बैठती है। प्रो० अनिल विवाहित है और उसकी पत्नी साधना अपने पुराने प्रेमी रवि को पाने के लिए छटपटाती है। अन्त में जब ये प्यार के किस्से खुलते हैं तो दोनों ही घर बरबाद हो जाते हैं और कोई किसी को प्राप्त नहीं कर पाता। दरअसल भारतीय समाज में इतनी वासनात्मक मानसिक विकृति अनपेक्षित है, इस दृष्टि से उपन्यास का अन्त संतोष जनक बन पड़ा है।

प्रवक्ता, तिलक इंटर कालेज, बरेली

खण्ड : दो

प्रो० राम प्रकाश गोयल
की
चयनित रचनाएँ, लेख,
आकाशवाणी, वार्ताएँ तथा
उनके अपने मुकदमें

प्यासा दरिया, बहता पानी

प्यासा दरिया बहता पानी
अपनी इतनी राम कहानी।
साथ नहीं कुछ ले जाओगे,
माया तो बस आनी जानी।
दिल न दुखाना कभी किसी का,
रुकनी इक दिन खूँ की रवानी
सारी दुनिया होगी तुम्हारी,
गर बोलोगे मीठी बानी।
प्यार करें हर इन्सॉं से हम,
यह दौलत है हमें कमानी।
एक समय वह भी आया था,
मैं था राजा, तुम थीं रानी।
दुख दोगे तो दुख पाओगे,
मात यहीं पर सबको खानी।
देश का नक्शा बदलेंगे हम,
अपने दिल में है यह ठानी।
रात में मुझको नींद न आती,
मेरी बेटी हुई सयानी।
कितनी बड़ी सौगात मिली है,
दिल में मुहब्बत आँख में पानी।
प्यार का भूखा है हर इन्साँ,
ऋषियों तक ने बात ये मानी।
हुस्न पे इतना मत इतराओ,
चार दिनों की है ये जवानी।

पी गया कितनी नदियाँ अब तक, एक समन्दर प्यासा-सा

पी गया कितनी नदियाँ अब तक एक समन्दर प्यासा-सा,
मीठा पानी पीकर इतना, क्यों है अब तक खारा-सा।

नदियाँ पिलायें, बादल ले लें, चाहें जितना भी पानी,
अपनी सीमा कभी न लाँघे, सागर बड़ा सयाना-सा।

पूनम की रातों में सागर, कैसी कुलाँचे भरता है,
चन्दा के चुम्बन को आतुर, हो जाता दीवाना-सा।

सागर तो सारा ही खारा, एक बूँद भी मीठी नहीं,
बरसाता पर मीठा पानी, दाता है वह न्यारा-सा।

प्रीतम की बाँहों में समाने, पागल हैं नदियाँ सारी,
प्रेमी सागर बाहुपाश में भरने को बौराया-सा।

सबसे पूछा कोई अभी तक, मुझे न बतला पाया है,
चाहता क्या है, क्यों ये समन्दर, रहता हरदम प्यासा-सा ?

ाँ हँसता है कभी और कभी रोता है

इन्साँ हँसता है कभी और कभी रोता है,
वही होता है जो क़िस्मत में लिखा होता है।

मैं बदल डालूँगा हाथों की लकीरों को ज़रूर,
मेरा अपना भी मुक़द्दर[1] है अभी सोता है।

वो जो कल तक था हमारा वो है अब ग़ैर के साथ,
ये तो दुनिया है यहाँ रोज़ यही होता है।

काम आ जाए किसी के तो ये जाँ[2] हाज़िर है,
यूँ तो हर आदमी बोझ अपना यहाँ ढोता है।

मैं झुकूँगा न कभी जुल्मों-सितम के आगे,
इम्तिहाँ मेरा तो हर पल ही यहाँ होता है।

दुश्मनी करके भला किसने सुकूँ[3] पाया कभी,
बीज बर्बादी के इन्सान तो खुद बोता है।

ये तो एहसास[4] है जो रखता है बाँधे हमको,
बेग़रज़[5] दोस्त भला कौन यहाँ होता है।

मक़सदे ज़ीस्त[6] है क्या किसको पड़ी जो सोचे,
आदमी खाता है, पीता है और सोता है।

, 2- जान, 3-चैन, 4- भावना, 5-बिना मतलब का,
का लक्ष्य

साथ उनका अगर नहीं होता

साथ उनका अगर नहीं होता
मुझसे तय यह सफ़र नहीं होता
प्यार है मुझसे वर्ना उनका कभी,
मेरे काँधे पे सर नहीं होता।

बात दिल की न सबसे कहना तुम,
हर कोई मोतबर[1] नहीं होता।
मैं तो ज़िन्दा ही मर गया होता,
पास गर उनका घर नहीं होता।

आप कितना भी बोलें सच फिर भी,
दुनिया पे कुछ असर नहीं होता।
रास्ता प्यार खुद बनाता है,
कोई भी राहबर[2] नहीं होता।

मोम जैसे हैं अब भी लोग यहाँ
संगदिल[3] हर बशर[4] नहीं होता।
प्यार उनका न मिलता मुझको तो,
मेरा ऐसा जिगर नहीं होता।

जिस्म जलता है चाँदनी में मिरा
तुम बिना अब गुज़र नहीं होता।

1–विश्वसनीय, 2–रास्ता दिखाने वाला 3–पत्थर के हृदयवाला
4–इन्सान

फूल के दामन में यारो ख़ार ही बस ख़ार है

फूल के दामन में यारो ख़ार[1] ही बस ख़ार है,
फूल बन जीना यहाँ दुश्वार[2] ही दुश्वार है।

मैंने अपने दिल से की बातें तो उसने ये कहा,
पास तेरे है सभी कुछ, बस नहीं एक प्यार है।

जब बढ़े मेरे क़दम तेरे मकाँ की ओर तो,
लौट आया रास्ते से तू नहीं अब यार है।

सोचने पर सबकी निकली इक मुसीबत की वजह,
कोई भी करता किसी को अब न दिल से प्यार है।

दोस्ती करने चला तो दिल ने पूछा ये सवाल,
वो तो है दुश्मन तिरा, हो सकता कैसे यार है।

दोस्त समझे थे जिसे, उसने निकाली दुश्मनी,
दोस्त बनकर ही तो अब, पीछे से करता वार है।

कोई भी तेरा शरीके ग़म न दिल से है यहाँ,
तू जिसे अपना समझता ग़ैर का वो यार है।

चलते-चलते जाने हम कैसे मकाँ[3] में आ गये,
छत नहीं हरसू[4] यहाँ दीवार ही दीवार है।

1-काँटा, 2-मुश्किल, 3-मकान, 4-चारों तरफ़

सुकूने दिल किसे प्यारा नहीं है

सुकूने[1] दिल किसे प्यारा नहीं है,
मगर इसमें मेरा चारा नहीं है।
लिये फिरता है पत्थर हाथ में वो,
जो उसने आज तक मारा नहीं है।

कहाँ तक आज़माओगे उसे तुम,
कभी जो प्यार में हारा नहीं है।
समन्दर-सा है दिल में प्यार मेरे,
समन्दर-सा मगर खारा नहीं है।

बहुत नफ़रत भरी है अब दिलों में,
किसी को कोई भी प्यारा नहीं है।
जिधर चाहे ढुलक जाए उधर को,
ये दिल मेरा कोई पारा नहीं है।

न हो साहिल[2] से जिसका कुछ तआल्लुक़
वो मौजों[3] से कभी हारा नहीं है।
लगा लेता है जो चेहरे पे चेहरा,
किसी की आँख का तारा नहीं है।

मिरे जज़्बात[4] से क्यों खेलते हो,
मिरा दिल इतना आवारा नहीं है।
मुहब्बत जिसने समझी है इबादत[5],
मुहब्बत में कभी हारा नहीं है।

1-चैन, 2-किनारा, 3-लहरों
4-भावनाओं, 5-पूजा

मुख्तसर जीस्त का फसाना है

मुख़्सर[1] जीस्त[2] का फ़साना[3] है,
जो भी आया है उसको जाना है

पहिले अपनी खुदी[4] मिटाना है,
फिर खुदा के क़रीब जाना है।

मैं जिसे ज़िन्दगी समझता हूँ,
वह मिरी मौत का बहाना है।

लोग अपनों से बैर रखते हैं,
मेरा ग़ैरों से दोस्ताना है।

बेवफ़ाई तो उसने की है मगर,
बात दुनिया से यह छुपाना है।

सबके दुख–दर्द में शरीक रहूँ,
मुझको दौलत यही कमाना है।

खून पानी में कोई फ़र्क नहीं,
कैसा बदला हुआ ज़माना है।

रूह तक क़ैद है मिरी इसमें,
यूँ तो कहने को आशियाना[5] है।

ज़िन्दगी से कहो ठहर जाए,
मौत को आईना[6] दिखाना है।

-सा, 2–ज़िन्दगी, 3–कहानी, 4–घमंड, अहंकार
6– दर्पण, शीशा

जो नज़र नज़र से मिला सके, मुझे उस नज़र की तलाश है।

जो नज़र नज़र से मिला सके, मुझे उस नज़र की तलाश है,
हुई जिससे कोई ख़ता नहीं, मुझे उस बशर[1] की तलाश है।

मेरी जिंदगी के सुख और दुख, ये तो रात दिन की तरह से हैं,
जो न पहुँचे शाम तलक कभी, मुझे उस सहर[2] की तलाश है।

मुझे लग रहा है कि नाखुदा[3] नहीं अपने होशो-हवास में,
जो सफ़ीना[4] पार लगा सके, उसी बाहुनर[5] की तलाश है।

हुआ क्या है आज निज़ाम[6] को, कहीं अम्न[7] है न सुकून[8] है,
जो फ़ज़ा[9] में आग सके, मुझे उस शरर[10] की तलाश है।

क्या अजब सियासी यह दौर है, हुए लोग इसमें है बदगुमाँ[11],
जहाँ दोस्त बन के सभी रहें, मुझे उस नगर की तलाश है।

कई मोड़ आए हयात[12] में, कभी सुख मिला कभी दुख मिला,
मैं हूँ आज ऐसे मक़ाम पर, जहाँ दीदावर[13] की तलाश है।

किये मैंने कितने गुनाह हैं, नहीं उनका कोई हिसाब है,
जो मुआफ़ फिर भी मुझे करे, किसी उस नज़र की तलाश है।

मैं गुनाहगार[14] ज़रूर हूँ, कि मिरी ख़ता[15] मिरा इश्क़ है,
जो गले से मुझको लगा सके, मुझे उस बशर की तलाश है।

मैं भटक रहा हूँ इधर-उधर, कभी इसके दर कभी उसके दर[16],
जो मिला सके मुझे मुझ ही से, उसी राहबर[17] की तलाश है।

1-व्यक्ति, 2-सुबह, 3-मल्लाह, 4-किश्ती, 5-होशियार व्यक्ति 6-शासन-तन्त्र, 7-शान्ति, 8-चैन, 9-वातावरण, 10-चिंगारी, 11-किसी की ओर बुरा ख्याल रखने वाला 12-जीवन, 13-पारखी व्यक्ति, 14-अपराधी, 15-अपराध, 16-दरवाजे, 17-रास्ता दिखाने वाला, मार्गदर्शक

प्यार का खूब सिला देते हैं

प्यार का खूब सिला[1] देते हैं।
मुस्कुरा कर वह रुला देते हैं।

जिसने बर्बाद किया है हमको,
उस सितमगर[2] को दुआ देते है।

दिल में जागी है मुहब्बत उनके,
अपना सर हम भी झुका देते हैं।

हमको जो भूल चुका है उसकी,
याद कर खुद को सज़ा देते हैं।

दोस्त की शक्ल में जो है दुश्मन,
उसको जीने की दुआ देते हैं।

जुल्म[3] ढाना ही है फ़ितरत[4] जिसकी,
उसको हम अपना पता देते हैं।

१, इनाम, 2–अत्याचारी, 3–अत्याचार,

हम कितने पास थे मगर अब दूर हो गये

हम कितने पास थे मगर अब दूर हो गये,
यह कौन जान पाएगा मजबूर हो गये।

कोशिश तो हमने लाख छुपाने की की मगर,
वो इस तरह मिले हैं कि मशहूर हो गये।

ये उम्र का तक़ाज़ा है या हुस्न का कमाल,
मिलते हैं इस अदा से कि मग़रूर[1] हो गये।

दिल दे रहा हूँ आपको रखिए सम्हाल कर,
लौटा के यह न कहिएगा मजबूर हो गये।

ताउम्र[2] साथ रहने की खाई थी जो क़सम,
उसको भुला के किस तरह हम दूर हो गये।

जब पास थे तो सामने रहते थे रात दिन,
अब दूर जा के आँख के वो नूर[3] हो गये।

पाया है प्यार करने का कितना बड़ा सिला[4]
हम इस तरह मिटे हैं कि मंसूर[5] हो गये।

1– घमंडी 2–उम्रभर 3–ज्योति 4–इनाम 5–एक मुस्लिम महात्मा जिसने 'अनल हक़' (मै ब्रह्म हूँ) कहा और इस अपराध में उसकी गर्दन काटी गयी थी।

निश्चय यदि तू कर ले बंदे, हर मुश्किल आसान है

निश्चय यदि तू कर ले बंदे, हर मुश्किल आसान है
डरता है तू क्यों दुनिया से, नाम तेरा इन्सान है
यूँ तो मिलता है तू सबसे, कभी तो मिल ले अपने से,
जो चाहेगा वो कर लेगा, तुझमें ही भगवान है।
तन्हा आया है तू जग में, तन्हा ही बस जाएगा,
दो दिन के सब नाते रिश्ते, यह जग की पहचान है।
कंकर पत्थर जोड़ के तू ने, महल बनाया सपनों का,
साथ नहीं जाएगा कुछ भी, तू इससे अंजान है।
नहीं तू हिन्दू, नहीं तू मुस्लिम, नहीं तू सिख ईसाई है,
इस धरती का तू बेटा है, तू ही हिन्दुस्तान है।
यह भारत है देश हमारा, हमको प्राणों से प्यारा,
देश की खातिर अपना तन मन धन सब कुछ बलिदान है।
गर्दन नीची शर्म से सबकी, लगी द्रौपदी दाँव पर,
हारा जुआरी भूल गया था, यह नारी अपमान है।
औरों की बैसाखी पर तू चल तो सकता है लेकिन,
पहले यह अंदाजा कर लें, खुद कितना बलवान है।
पारस पत्थर छिपा है तुझमें, इसका तुझको ज्ञान नहीं,
लोहे को भी सोना कर दे, तू इतना गुणवान है।
नहीं वो तेरा नहीं ये मेरा, जो कुछ है वह सबका है,
तेरा मेरा छोड़ के जीना, सचमुच तेरी शान है।
चलते चलते पहुँचेगा तू, खुद ही अपनी मंजिल पर,
नहीं असम्भव कुछ भी जग में, दिल में जब अरमान है।
नहीं डिगा पाएगा कोई, तेरे दृढ़ संकल्पों को,
कभी न रुकना, कभी न झुकना, यह तेरा ईमान है।

शम्मा के पास जाके देखो तो

शम्मा के पास जाके देखो तो,
अपनी हस्ती मिटा के देखो तो।

साज़े दिल को मिला के देखो तो,
मेरे नज़दीक आके देखो तो।

राज़[1] अपना बता के देखो तो,
मुझ पे ईमान लाके देखो तो।

तुमको मैंने लिखे थे जो भी ख़ुतूत[2]
उनको दिल से लगा के देखो तो।

मेरी ग़ज़लों में तुम ही रक़्साँ हो[3]
तुम इन्हें गुनगुना के देखो तो।

आग बस आग है मिरे दिल में,
इससे दामन बचा के देखो तो।

हाथ में जो तिरे लकीरें हैं,
उनको मुझसे मिला के देखो तो।

इश्क़ पर कौन रख सका काबू,
इससे दामन बचा के देखो तो।

प्यार होता नहीं कभी नाकाम[4],
इस पे ईमान[5] ला के देखो तो।

तेरे ख़त आज भी हैं मेरे पास,
उनकी स्याही मिटा के देखो तो।

दिल को अपने तो एक बार कभी
दिल से मेरे लगा के देखो तो।

द, 2–ख़त का बहुवचन, बहुत ख़त 3–नाच रही हो
,फल 5–विश्वास।

...लते हुए दिल का मेरे मजर नहीं

जलते हुए दिल का मेरे मज़र[1] नहीं देखा
इस आग के दरिया ने समन्दर नहीं देखा
क़िस्मत में लिखा जिसकी हो वीराँ[2] में भटकना,
जंगल के मुसाफ़िर ने कभी घर नहीं देखा।
हर बात ही मुमकिन[3] है जो हो पक्का इरादा,
हमने कभी क़िस्मत का सिकन्दर नहीं देखा।
फिर कैसे खुदा तुमको मिले सोच लो साहिब,
जब अपनी खुदी[4] को ही मिटाकर नहीं देखा।
देता हो बुराई का भलाई से जो बदला,
इस दौर में ऐसा कोई पैकर[5] नहीं देखा।
है आग ही बस आग भरी दिल में है मेरे,
अच्छा हुआ तुमने मुझे छूकर नहीं देखा।
अंदाजा लगा पाएगा क्या दर्द का मेरे,
तर अश्कों से जिसने मेरा बिस्तर नहीं देखा।
हो जिसकी निगाहों में फ़क़त[6] मंज़िले मक़सूद[7]
उसने तो कभी मील का पत्थर नहीं देखा।
रोने भी न दे जुल्म भी करता रहे हर दम
दुनिया में कहीं तुमसा सितमगर[8] नहीं देखा।
घुटता ही रहा है जो ग़रीबी के सबब से,
उस बाप ने बेटी का स्वयंवर नहीं देखा।
क्यों तुमको शिकायत है न आने की मुझी से,
तुमने तो कभी दिल से बुलाकर नहीं देखा।
हर फूल महकता है अलग अपनी महक[9] से,
कोई भी ज़माने में बराबर नहीं देखा।

2–सुनसान, जंगल 3–सम्भव 4–अहम् 5–श
7–वह जहाँ पहुँचना है 8–अत्याचारी 9–खुशबू

मिले दिल से तो हालात बदल सकते हैं

दिल मिले दिल से तो हालात बदल सकते हैं,
उनके आँसू मेरी आँखों से निकल सकते है।

ऐसा अंजाम[1] वफ़ा का कभी सोचा ही नहीं,
होके रुसवा[2] तेरे कूँचे[3] से निकल सकते हैं।

घर खुदा के गये तन्हा तो बहुत रोएँगे हम,
वह चलें साथ तो हँस हँस के भी चल सकते हैं।

मैं हूँ जिस राह पे तेरी है यकीं हो जाए,
लड़खड़ाते हुए ये पाँव सम्हल सकते हैं।

बात दुश्वार[4] नहीं कोई जहाँ में यारो,
दिल की क्या बात है पत्थर भी पिघल सकते हैं।

एक या दो नहीं लाखों हैं मिसालें[5] ऐसी,
इश्क़ सच्चा हो तो दुनिया को बदल सकते हैं।

मौत ने जब भी सदा[6] दी तो मिला उसको जवाब,
देंगे वो हमको इजाज़त तभी चल सकते हैं।

वक्त आ जाए तो पीछे नहीं रह सकते हम,
अपने हालात[7] को खूँ दे के बदल सकते हैं।

दे सकेंगे नहीं एहसानों का बदला उनके,
वो अगर चाहें तो तक़दीर बदल सकते हैं।

ाम 2–बदनाम 3–गली 4–मुश्किल 5–उदाहरण
ज़ 7–परिस्थितियाँ 8–खून

कोई ये बात भी लिख दे मिरे फसाने में

कोई ये बात भी लिख दे मिरे फसाने[1] में,
कि उनको मुझसे मुहब्बत थी एक जमाने में।

ज़बाँ पे आते ही मशहूर हो ज़माने में,
अजीब बात है इस प्यार के फ़साने में।

ये और बात कि सो न सका हूँ अरसे से,
लगेगा तुमको मगर एक पल सुलाने में।

किया है दूर उसे मुझसे मेरी चाहत ने,
मगर यक़ीन किसे आएगा ज़माने में।

मैं जीतता भी तो शायद न इतना खुश होता,
मिली है जितनी खुशी तुमसे हार जाने में।

फ़रेब[2] खा ही गये दोस्त जो उन्हें समझा,
थी दुश्मनी ही निहाँ[3] उनके दोस्ताने में।

कोई है ग़र्क़[4] नजर में तो कोई साग़र[5] में,
किसी को होश नहीं है शराबख़ाने में।

मैं इम्तहान में क़ायम रहा वफ़ा के साथ,
वो टूट टूट गये मुझको आज़माने में।

तुम्हारा ज़ुल्म[6] सलामत बस अब खुदा हाफ़िज़[7]
सुकून[8] ढूँढ ही लूँगा कहीं ज़माने में।

1- कहानी 2-धोखा 3-छिपी हुई 4-डूबा हुआ 5-शराब का प्याला 6-अत्याचार 7-ईश्वर आपकी रक्षा करें 8-चैन

जान लेवा शबे जुदाई है

जान लेवा शबे जुदाई[1] है,
कितनी मुश्किल से नींद आई है।

क्या उम्मीदे वफ़ा[2] करें उनसे,
जिनकी फ़ितरत[3] में बेवफ़ाई[4] है।

हो गये दूर मुझसे सब अहबाब[5],
जब तबाही क़रीब आई है।

कल तक अपनी थी जो नज़र ए दिल,
आज वो ही नज़र पराई है।

प्यार मेरी कभी थी मजबूरी,
अब ये मजबूरी पारसाई[7] है।

याद आई तो दे गयी है ग़ज़ल
जब गयी दे गयी रुबाई।

उनके चहरे पे पड़ गयी जो नज़र,
चाँदनी में नहा के आई है।

उनसे मिलने का आज है वादा,
लग रहा कै़द से रिहाई है।

मौत क़िस्सा तमाम[8] कर देगी,
ज़िन्दगी किसको रास[9] आई है।

वह नहीं बिछुड़े मुझसे ए हमदम[10]
रूह की जिस्म से जुदाई है।

मेरी क़िस्मत में दिन नहीं शायद,
रात के बाद रात आई है।

1- वियोग की रात 2-वफ़ादारी की उम्मीद 3-स्वभाव 4-कृतघ्नता 5-मित्रगण (हबीब का बहुवचन) 6-बर्बादी 7-संयम, इंद्रिय निग्रह 8- समाप्त 9-अनुकूल 10-हर समय का साथी।

वक्त से कब्ल मर गया कोई

वक्त से क़ब्ल[1] मर गया कोई,
फूल बनकर बिखर गया कोई।

नाम दुनिया में कर गया कोई,
और बेनाम[2] मर गया कोई।

बेवफाई थी याकि मजबूरी,
वादा करके मुकर गया कोई।

साथ देने की खाई थीं क़समें,
अपनी क़समें बिसर गया कोई।

सिर्फ़ देखे की बस मुहब्बत है,
वक्त आया तो डर गया कोई।

अश्क[3] पलकों से जब ढले मेरे,
मिस्ले शबनम[4] बिखर गया कोई।

कोई इसका सबब[5] बताए तो,
क्यूँ इधर से उधर गया कोई।

जिसकी दुनिया में सिर्फ़ खुशियाँ थीं,
रंजो–ग़म में बिखर गया कोई।

कैसा मुंसिफ निज़ामे–कुदरत[6] है,
मार कर मुझको मर गया कोई।

– पहिले 2–बिना नाम के 3–आँसू 4–ओस की तरह 5–कारण
–प्रकृति का नियम कितना न्याय–प्रिय है।

उनके ग़म से मिरा दिल बहलता रहा

उनके ग़म से मिरा दिल बहलता रहा,
दर्द की छाँव में जख़्म पलता रहा।

रूप की धूप से बच के जाता कहाँ,
बर्फ़ की तरह पल पल पिघलता रहा।

रोज़ उसके तग़ाफ़ुल[1] ने दी ज़िंदगी,
रोज़ जीने का पहलू बदलता रहा।

देखिए तो बशर[2] भीड़ के साथ है,
सोचिए तो अकेला ही चलता रहा।

डूबते और निकलते रहे मिह्र-ओ-मह[3]
रात दिन एक जादू सा चलता रहा।

अब कोई आग उसको जलाएगी क्या,
प्यार की आग में जो कि जलता रहा।

क़द्र जिसने न की वक़्त की वक़्त पर,
ज़िंदगी भर वो फिर हाथ मलता रहा।

पेक्षा 2–व्यक्ति, मनुष्य 3–सूरज और चाँद।

सबसे मिलने का सिलसिला रखना

सबसे मिलने का सिलसिला रखना,
तन्हा जीने का हौसला रखना।

जब कभी आए दिल किसी पर तो,
हो सके उससे फ़ासला रखना।

जिन्दगी कामयाब करनी हो,
सामने कोई मरहला[1] रखना।

कितना पाया है, कितना खोया है,
खुद ही तुम इसका फ़ैसला रखना।

जब भी भर जाए दिल ज़माने से,
किसी मुफ़लिस[2] का मरहला[3] रखना।

आज जो दोस्त कल वही दुश्मन,
इसका दिल में न कुछ गिला[4] रखना।

दिल की फ़ितरत[5] तो है बहकना ही,
इसको इतना न मनचला रखना।

आज भी हम वफ़ा पे क़ायम हैं,
बेवफ़ा से तो क्या गिला रखना।

है बदलनी जहाँ की सूरत तो,
कुछ भी हो दिल में वल्वला[6] रखना।

याद आए अगर शहीदों की,
सामने अपने कर्बला[7] रखना।

1– मंज़िल, कठिन काम 2–गरीब 3–समस्या 4–शिकायत 5–स्वभाव 6–उत्साह, उमंग 7–ईराक़ का एक प्रसिद्ध स्थान जहाँ हज़रत इमाम हुसैन शहीद हुए थे और जहाँ उनकी मज़ार है।

दोस्तों ने तो दोस्ती बेची

दोस्तों ने तो दोस्ती बेची,
हमने उनके लिये खुशी बेची।

ले सकूँ चन्द और साँसें मैं,
क़तरा क़तरा ये ज़िन्दगी बेची।

इससे बढ़कर अज़ाब[1] क्या होगा,
चंद सिक्कों में लाड़ली बेची।

न सताएँ हसीन रातें कभी,
एक विधवा ने चाँदनी बेची।

पेट भरने को रोते बच्चों का,
बीच बाजार में खुदी[2] बेची।

बेवफ़ा हो गया है जब साया,
हमने घबरा के रोशनी बेची।

अब भी आया नहीं भरोसा उसे,
जिसकी ख़ातिर ही बंदगी बेची।

कैसी मजबूरियाँ रही होंगी,
जिसने खुद अपनी जानकी बेची।

1- पापों का वह दंड जो यमलोक में मिलता है, यातना, पीड़ा
2-स्वाभिमान

क्या बताऊँ ये क्यों किया मैंने

क्या बताऊँ ये क्यों किया मैंने,
अपने होटों को सी लिया मैंने।

प्यार में उनके फ़ासला-सा रहा,
इस सितम[1] को भी सह लिया मैंने।

जब भी उतरा खुमार[2] यारों का,
जाम पर जाम पी लिया मैंने।

वक़्ते रुख़्सत[3] थे अश्क[4] आँखों में,
उनको किस ज़ब्त[5] से पिया मैंने।

उसकी कुर्बत[6] को या तग़ाफ़ुल[7] हो,
ज़िन्दगी तुझको जी लिया मैंने।

जो जलाने लगा था हाथों को,
उस दिये को बुझा दिया मैंने।

अत्याचार 2-नशा 3-विदाई 4-आँसू 5-सहनशीलता
ऩदीकी 7-उपेक्षा

प्यार में गर असर नहीं होता

प्यार में गर असर नहीं होता,
ज़िन्दा कोई बशर नहीं होता।

दोस्ती सोचकर ही करना तुम,
आज कल हमसफ़र[1] नहीं होता।

प्यार है कितना उसको वर्ना वो,
ख़्वाब में रात भर नहीं होता।

न बदलती लकीरें हाथों की,
दिल सिकंदर अगर नहीं होता।

यह तो उनकी इनायतें[2] वर्ना,
मुझमें कोई हुनर नहीं होता।

प्यार पर अपने है भरोसा जिन्हें,
उनको दुनिया का डर नहीं होता।

जान भी आप दे दें जिनके लिये,
फिर भी उन पे असर नहीं होता।

क्यों किसी से मिसाल[3] देते हो,
कोई एक-सा बशर नहीं होता।

इतना नज़दीक कैसे आते वो,
प्यार उनको अगर नहीं होता।

जो भी आया है उसको जाना है,
कोई इन्साँ अमर नहीं होता।

ने वाला 2-कृपाएँ 3-उदाहरण

छोडकर तुमको मुझे तन्हा सफर करना पड़ा

छोड़कर तुमको मुझे तन्हा[1] सफ़र करना पड़ा,
क्या बताऊँ मुझको खुद से किस कदर लड़ना पड़ा।

मैं तो समझा था कि मेरी ज़िन्दगी से तुम गये,
याद जब आई तो दिल को ज़ब्त ही करना पड़ा।

अब न लो ऐ दोस्त मेरे इश्क़ का तुम इम्तिहाँ,
वर्ना तुम तो जानते हो कैस[2] को मरना पड़ा।

रफ़्ता रफ़्ता हो गयी मद्धम मिरे दिल की सदा[3]
ज़िंदगी के साज़ को हर हाल में बजना पड़ा।

दूध की लाया नहर फ़र्हाद पत्थर काट कर,
पर न शीरीं मिल सकी, खुद उसको ही मरना पड़ा।

ज़ब्त[4] को आख़िर कहाँ तक हम निभाते इश्क़ में,
जो हमारा था उसी से ही जुदा[5] रहना पड़ा।

तुम से मिलकर यूँ लगा, आई है गुलशन[6] में बहार[7],
थी ख़िज़ाँ[8] क़िस्मत में मेरी रंजो-ग़म सहना पड़ा।

1– अकेले 2–मजनू 3–आवाज़ 4–धैर्य 5–अलग 6–बाग़
7– वसन्त 8–पतझर

लग रहा है कि करवट बदल रही है आज

ये लग रहा है कि करवट बदल रही है आज,
हयात[1] मौत के साये में पल रही है आज।

कभी बहक के चली थी सम्हल रही है आज,
ये ज़ीस्त[2] किसके इशारे पे चल रही है आज।

ये उस निगाह की मस्ती है और कुछ भी नहीं,
शराब बन के जो नस-नस में ढल रही है आज।

यही नहीं कि हर इक साँस है हमीं पर बार[3],
हयात किसके सम्हाले सम्हल रही है आज।

गुनाह हमने किया उस पे एतबार[4] किया,
उस एक शै[5] पे जो पल-पल बदल रही है आज।

जो एक पल को भी मुझसे कभी जुदा न हुआ,
जुदाई उसकी बहुत दिल को खल रही है आज।

मिरे ख़याल में मंदिर है वह वही मस्जिद,
जहाँ भी प्यार की एक शम्मा[6] जल रही है आज।

जेंन्दगी 2-ज़िन्दगी 3-बोझ 4-विश्वास 5- चीज़ 6-दीपक

उसे बेवफ़ा मैं समझ गया, मिरी सोच कितनी अजीब है

उसे बेवफ़ा मैं समझ गया, मिरी सोच कितनी अजीब है,
वह हज़ार मुझपे सितम करे, मिरे दिल के फिर भी क़रीब है।

कोई किस पे आज यक़ीं करे, कि हर एक देता दग़ा यहाँ,
जिसे दोस्त कोई न मिल सके, वही आदमी तो ग़रीब है।

मुझे शिकवा उनसे कोई नहीं, मुझे है गिला तो है ख़ुद से ही,
नहीं बस है इसपे किसी का भी, ये तो अपना अपना नसीब है।

जो थे करते वादे बड़े बड़े, वह नज़र बचा के चले गये,
ये ग़रज के बन्दों की बज़्म है[1], यहाँ कौन किसका हबीब[2] है।

किया दिल से प्यार उसे मगर, मैं उसे यक़ीं न दिला सका,
जो न अपनी बात को कह सका, वह इक आदमी भी अजीब है।

है अजीब प्यार की रह गुज़र[3], यहाँ सोना चाँदी है बेअसर[4],
वह जो लुट गया वह अमीर था, जो बचा रहा यह ग़रीब है।

उसे रूह से ही है वास्ता, उसे जिस्म से नहीं कुछ ग़रज़,
वह मुसाफ़िरे-रहे इश्क़[5] है, मगर राह उसकी अजीब है।

1- मतलबी लोगों की महफ़िल 2-दोस्त 3-रास्ता, मार्ग 4-व्यर्थ, बेकार 5- प्यार के रास्ते पर चलने वाला मुसाफ़िर

ने महकाया मिरी ज़ीस्त के वीराने को

जिसने महकाया मिरी ज़ीस्त[1] के वीराने को,
बन के अब फूल चमन गैर का महकाएगी,
जो सजाती थी शबो-रोज मेरे सपनों को,
अब किसी और के ख़्वाबों में नज़र आएगी।
जिसको कस्तूरी-सा रक्खा था छुपाकर मैंने,
जिसकी खुशबू ने था दीवाना बनाया मुझको,
जिसकी आग़ोश[2] में मदहोश हुआ मेरा वुजूद[3],
जिसकी ख़ामोश निगाहों ने पुकारा मुझको।
अब नज़र आती नहीं हद्दे-नज़र[4] तक वो लहर,
बीच मँझधार मिली थी जो किनारे की तरह,
लिख दिया मेरे मुक़द्दर[5] में अँधेरा उसने,
जो हर एक रात चमकती थी सितारे की तरह।
लाख हो दूर मगर है वह मिरे दिल के क़रीब,
शिकवा[6] होठों पे जो आया तो मुहब्बत कैसी,
वह मेरी थी, वह मेरी है, वह रहेगी मेरी,
जब यक़ीं है तो भला उससे शिकायत कैसी ?
बस यही अब तो खुदा से मैं दुआ करता हूँ,
उसके आँचल में जहाँ भर की वह खुशियाँ भर दे,
पाने वाला उसे इस दर्जा उसे प्यार करे,
कतरा क़तरा ही सही उसको समन्दर कर दे।
उसके दिल से मिरा हर नक्श[7] मिटा दे यारब[8]
भूल से भी न हो उस सम्त कभी मेरा गुज़र,
मैं तभी समझूँगा था मुझको कभी पासे-वफ़ा[9],
मैं तभी मानूँगा है मेरी मुहब्बत में असर।

न, ज़िन्दगी 2-गोद 3-अस्तित्व 4-जहाँ तक दृष्टि जाती है,
6-शिकायत 7-निशान 8-ऐ खुदा 9-वफ़ादारी का ख़याल।

देशवासियों में देशभक्ति चाहिए

देश वासियों में देशभक्ति चाहिए,
देश पर जो मिट सके वह व्यक्ति चाहिए,
संविधान राष्ट्र-ध्वज जो जलाते हैं,
दुश्मनों को देश में जो बुलाते हैं,
ऐसे देश द्रोहियों से मुक्ति चाहिए।

राम-राज्य ला सकें फिर से देश में,
स्वाभिमान को जगाएँ अपने देश में,
शासकों के पास ऐसी युक्ति चाहिए।
है नहीं ये भूमि ये तो माँ हमारी है,
ये नहीं शरीर, ये तो जाँ हमारी है,
मातृ-भूमि के लिये आसक्ति चाहिए।

मोड़ देंगे हम समय की धार ही स्वयं,
और जलाएँगे शमा भी प्यार की स्वयं,
अपनी आत्मा में इतनी शक्ति चाहिए।
नफ़रतों की आग को बुझा के रहेंगे,
आपसी ये दूरियाँ मिटा के रहेंगे,
हम सभी में ऐसी आत्म-शक्ति चाहिए।

देश के लिए स्वयं को जो मिटा सके,
सोये हुए नागरिकों को जो जगा सके,
हम को हर डगर पे ऐसे व्यक्ति चाहिए।
कर्म करो फल की कभी चाह न करो,
भुला-बुरा कोई कहे, आह न भरो,
अपने मन में ऐसी ही विरक्ति चाहिए।

तुम क्यों न मुझे पहचान सकीं ?

तुम क्यों न मुझे पहचान सकीं ?
यह माया है सब ही जगती,
नश्वर काया सबको ठगती,
है प्यार अमर, है प्यार अमर,
गूँजा करता बस ये ही स्वर,
फिर क्यों अपना ये अमर प्यार,
दे मुझको कभी न दान सकीं,
तुम क्यों न मुझे पहचान सकीं ?
ये आयु जो बढ़ती जाती है,
सच कह दूँ घटती जाती है,
जो कुछ भी बाह्य् दिखावा है,
सचमुच वो मात्र छलावा है,
छलनामय प्यार न प्रिय मुझको,
क्यों इसे न अब तक जान सकीं ?
क्यों न मुझे पहचान सकीं ?
तुम प्रायः पूछा करती हो,
"क्यों करता हूँ मैं तुम्हें प्यार ?"
पर क्या तुम बतला सकती हो,
"क्यों करती हो तुम मुझे प्यार ?"
प्रश्नों में प्यार नहीं बँधता,
तुम इसे न शायद मान सकीं,
तुम क्यों न मुझे पहचान सकीं ?

काया तो धुँधली रेखा है
जीवन अनबाँचा लेखा है
अब जन्म हुआ अब मरण हुआ
यह रूप सभी का देखा है,
"भावों" की आयु नहीं होती,
तुम क्यों न कभी अनुमान सकीं?
तुम क्यों न मुझे पहचान सकीं?
हम एक जन्म से नहीं जुड़े,
ये जन्म जन्म के नाते है,
मिलना और बिछुड़ना दोनों,
भाग्य भाग्य की बातें हैं,
तुमको तो मैं पहचान गया,
तुम क्यों न मुझे पहचान सकी?
तुम क्यों न मुझे पहचान सकीं?

कौन करेगा इतना प्यार ?

कौन करेगा इतना प्यार ?

गंगा-यमुना के संगम-सी,
तन-वीणा पर मृदु सरगम-सी,
करती तुम साँसों में नर्तन,
कैसे रुक पाए अभिसार?

कौन करेगा इतना प्यार ?

समझ न पाई अब तक तुमको,
एक पहेली से तुम मुझको,
क्यों करते हो प्यार मुझे तुम?
प्रश्न कर रही बारम्बार।

कौन करेगा इतना प्यार ?

क्यों करता है प्यार तुम्हें मन,
समझ न पाया सारे जीवन,
कैसे दूँ मैं इसका उत्तर?
क्यों तुम पर इतना अधिकार?

कौन करेगा इतना प्यार ?

तन नश्वर, मन भी है नश्वर,
ईश्वर केवल एक अनश्वर,
फिर तन मन में अन्तर ही क्या ?
समझ न पाता क्यों संसार?

कौन करेगा इतना प्यार ?

जब मन तेरा ही अब मेरा,
कैसे अलग रहे तन तेरा?
मन यदि हार गया तो समझो,
तन की निश्चित होगी हार,

कौन करेगा इतना प्यार?

कत्आत

उनको पाता हूँ और खोता हूँ,
रोज तन्हाइयों में रोता हूँ,
ज़िन्दगी हो गयी बहुत बोझिल,
जिस्म का बोझ अपने ढोता हूँ,

कितने जन्मों का साथ है तुमसे,
मुझको हर मोड़ पर रिझाते हो
मुझसे कोई गुनाह हुआ है ज़रूर,
याद करते हो भूल जाते हो।

जिसकी बर्बादी ने उसको किया होगा आबाद,
किस क़दर उसकी तबाही ने दुआ दी होगी,
ज़िन्दगी ने जो जलाई थी कभी खुश होकर,
आज वह शम्अ खुद उसने ही बुझा दी होगी।

चाहत ने तो चाहा है सौ बार बुलाना,
फुर्क़त[1] ने भी चाहा है सौ बार रुलाना
मर मर के जिलाता रहा इस जज़्बए दिल को
चाहत को भी, फुर्क़त को भी, सौ बार भुलाना।

दिल ने तो तुमको बुलाया बार बार,
अक्ल ने तुमको भुलाया बार बार
मुझसे दोनों तब से रुख़्सत[2] हो गये,
प्यार ने जब से रुलाया बार बार।

मैं बार बार तिरे पास आ के लौट आया,
बहुत अजब सा ही एक फ़ासिला लगा है मुझे,
खुदा को तू ने ही शामिल किया था क़समों मे,
तिरे ही दिल में मगर ज़लज़ला[3] लगा है मुझे।

जिससे मिलना है तबीयत से मिलो,
दुश्मनी छोड़ मुहब्बत से मिलो,
प्यार का दिल में समन्दर है मिरे,
डूबना है तो इस हसरत[4] से मिलो।

गुनाह कितने किए इसका कुछ हिसाब नहीं,
मिलेगी कितनी सज़ा इसका भी जवाब नहीं,
मुआफ़ करना मिरे सारे ही गुनाहों को,
हूँ आदमी मगर इतना तो मैं ख़राब नहीं।

आज वो क्यों ख़फ़ा ख़फ़ा-सा है।,
उसको लगता है फ़ासिला-सा है,
दिल की धड़कन में वो समाया है,
कैसे कह दूँ कि बेवफ़ा-सा है।

हर कोई देखता है सूरत को,
कौन समझा किसी की सीरत[5] को,
ये गुनाहो-सबाब[6] कुछ भी नहीं,
हम तो बस देखते हैं अज़्मत[7] को।

चार तिनके चुने थे गुलशन[8] में
आग उसमें लगाई है तुमने,
मुझको तुम पर बहुत भरोसा था,
बेरुख़ी क्यों दिखाई है तुमने?

कितना पीता मैं सिर्फ़ आँखों से,
तुमको आया नहीं पिलाना भी,
कौन कहता है मैं नहीं आता,
तुमको आया नहीं बुलाना भी।

वह जितना मुझसे दूर है उतना क़रीब है,
बीमारे दिल का एक वही तो तबीब[10] है।
वह शख़्स जिसने दर्द की सौग़ात[11] दी मुझे,
दुनिया में बस वही तो मिरा एक हबीब है।

ज़िन्दगी में जितना रोते जाएँगे,
दोस्तों को उतना खोते जाएँगे,
प्यार से बोलो, मिलो, बातें करो,
सब तुम्हारे साथ होते जाएँगे।

ख़ुद से कितना दूर अब हम हो गये,
दोस्तों की भीड़ में बस खो गये,
हर क़दम पर कारवाँ बढ़ता गया,
आ के मंज़िल पर अकेले हो गये।

खुशियों की थी तलाश मगर ग़म ही मिला है
गैरो से नहीं अपनो से ही इसका गिला है
अच्छा ही हुआ टूट गया रिश्ता वफ़ा का ,
उल्फ़त में मुझे और नहीं कुछ भी मिला है।

अब जुदा होने लगीं परछाइयाँ,
कितनी बढ़ती जा रहीं तन्हाइयाँ,
प्यार की राहों में कुछ तो मिल गया,
फ़ासले तय कर गयीं रुस्वाइयाँ[15]।

स्वर ही नहीं रूप भी संगीतमयी है,
सान्निध्य तुम्हारा तो जीवंतमयी है।
देखा जब से तुम्हें विश्वास हुआ है मुझको,
माया उस ब्रह्म की आनंदमयी है।

पूछी उसने मुझसे परिभाषा जीवन की,
था मेरा उत्तर है यह एक तपस्या,
कोई भी अब तक इसे नहीं समझा है,
जीवन रहता आजीवन एक समस्या।

होती हर पल यहाँ परीक्षा है,
वक्त करता नहीं प्रतीक्षा है,
अपनी मंजिल पे गर पहुँचना है,
करनी अपनी तुम्हें समीक्षा है।

द्वेष ईर्ष्या में पड़े, रोगी हैं वह
क्रोध, भय में गल रहे भोगी हैं वह
और ऊपर उठ गये हैं इनसे जो,
हैं मनुज[16] पर असल में योगी हैं वह।

तन तो कहता है कि कुछ मत छोड़िये,
बुद्धि कहती है कि मन को मोड़िये,
सार जीवन का निहित[17] इस तथ्य में,
आत्मा को ब्रह्म से बस जोड़िये।

ाग, जुदाई 2–विदा 3–भूचाल 4–इच्छा 5–स्वभाव 6–पाप–पुण्र
पन 8–बाग 9–उपेक्षा 10–इलाज करने वाला 11–भेंट, उपहा
कायल 13–प्यार का सम्बन्ध 14–प्यार 15–बदनामियाँ
नुष्य 17–छिपा हुआ।

शेर

लहू में तुम हो रवाँ रूह में समा जाओ,
जुदा न हों कभी हर पल ही मैं विसाल[1] करूँ।

अपने हालात का इल्ज़ाम न दूँगा मैं उन्हें,
ये अलग बात कि हालात के बाइस[2] वो हैं।

मेरी बर्बादी की कुछ भी न मिले उनको सज़ा,
उनको तकलीफ़ ज़रा-सी भी हो मंजूर नहीं।

गर बुलाओगे तो पलकों से चला आऊँगा मैं,
वरना खुद्दार[3] हूँ खुद तो न मैं आऊँगा कभी।

अजीब क़िस्म की उनकी मेरी मुहब्बत है,
हूँ बावफ़ा मगर वो बेवफ़ा ही कहते हैं।

हमारी और उनकी गर मुहब्बत हो तो ऐसी हो,
कहूँ उनको मैं मजनू और वो लैला कहें मुझको।

मुझसे अगर वो दूर हैं तो दूर ही रहें,
चेहरे पे उनके मेरे ही मेरे निशान हैं।

मेरे होंठों पे रुका आ के बस उनका ही नाम,
वो ही आग़ाज़े[4] वफ़ा वो ही है अंजामे[5] वफ़ा।

हो गए हैं दूर वो जब से ज़माने के लिये,
आ गया हूँ पास मैं उनको मनाने के लिये।

रो लेता औरों के आँसू समेट कर,
मुझको तो अपने आँसू बहाना नहीं आता।

तुम्हारी आँखों के आँसू हैं जिसकी आँखों में,
वही तुम्हारी मुहब्बत की जुस्तजू[6] में है।

भीड़ में रहकर भी जो तन्हा[7] रहे,
ज़ख्म होंगे किस क़दर उसके हरे।

खुदा ने मुझको तो अच्छा भला बनाया था
हुआ ये कैसे कि शैतान बन गया हूँ मैं

फनकार[8] बुरे हों तो कोई फ़र्क नहीं है,
इन्सान बुरे हों तो बहुत फ़र्क पड़ेगा।

यूँ तो हर चीज़ मयस्सर[9] है जहाँ[10] में लेकिन,
इक वफ़ा है जो न ढूँढे से कहीं मिलती है।

जिन्दगी ने दोस्त ही उनको चुना,
जो चुभे हैं ख़ार[11] बन दिल में मिरे।

और छोड़ोगें किसको दुनिया में,
तुम ख़ुदा तक को धोखा देते हो।

मुआफ़ करना मिरे गुनाहों को,
अब गुनाह उम्र भर नहीं होंगे।

उनकी याद आई है, साँसों ज़रा धीरे चलो,
दिल धड़कने से तसव्वुर में ख़लल[12] पड़ता है।

तू मिरी और मैं तिरी, साँसो में शामिल हो गये,
फ़ासला जो कुछ बचा था, वह भी पूरा गया।

पूछते हैं मुझसे आकर ख़्वाब में,
क्यों बुलाया है ज़रा बतलाइए।

यक़ीन है कि कभी भी न उनको भूलूँगा,
दिलो-दिमाग़ पे मेरे वो ऐसे छाए हैं।

मुत्मइन[13] हो के मुहब्बत से मुझे देख ए दोस्त,
मैं बदल डालूँगा हाथों की लकीरें तेरी।

तुम्हें फुर्सत हो ग़ैरों से तो आना मेरी बाहों में,
तुम्हारी दास्ताँ[14] होगी मिरी ख़ामोश आहों में।

अपने हाथों की लकीरों को पढ़ा है जब भी,
उनमें बस तेरी ही तस्वीर नज़र आई है।

तुम ज़रा और क़रीब आके मुझे देखो तो,
तुमको शायद कहीं एहसासे-वफ़ा हो जाए।

आईना[15] दिखला के मैंने यह कहा,
अक्स[16] किसका है ज़रा पहचानिए।

जिस तरफ भी हम गये तुम मिल गये,
हर तरफ़ थीं याद की परछाइयाँ।

वक्त बीता जा रहा है किस तरह,
क्या कभी पूछा है खुद से आपने?

मैं तो सहरा[17] में तड़प जाऊँगा पानी के लिये,
चन्द बूँदें मिरी क़िस्मत में मयस्सर कर दे।

आज मुझको फिर से उनके वास्ते रोना पड़ा,
उनको क्या मालूम मुझको क्या से क्या होना पड़ा।

दूर रहकर जो ख़यालों में बुला लेते हो,
कितने मासूम हो शोलों को हवा देते हो।

जो कह रहे थे मुझसे ज़रा अश्क रोकिए,
हालात हुए ऐसे कि वो खुद ही रो दिए।

अहदे-वफ़ा किया था कभी तुमने किसी से
अब मुझसे पूछते हो क्या तुम तो वो नहीं थे?

1-मिलन 2-कारण 3-स्वाभिमानी 4-आरम्भ 5-अंत 6-तलाश
7-अकेला 8-कलाकार 9-प्राप्त 10-संसार 11-काँटे
12-ध्यान करने में बाधा पड़ती है। 13-निश्चित होकर 14-कहानी
15-शीशा, दर्पण 16-परछाई 17-जंगल

तुम कौन हो देवी ?

तुम कौन हो देवी ?
कौन हो तुम मेरी ?
आराध्या, पूज्या, वंदनीया, चिरपरिचिता
श्वाँस, श्वाँस स्वामिनी
रक्त बिन्दु घुली घुली
रोम रोम अधिकारिणी
कौन हो तुम स्वर्ग अप्सरे ?
कौन हो तुम मेरी ?
वियोग अभिशप्ता,
जन्म जन्मों सहचारी,
काव्य-संगीत प्रेरणा,
चिर प्रतीक्षिता,
प्राण-मन स्वामिनी
कौन हो तुम सुन्दरी ?
कौन हो तुम मेरी ?
कलामयी,
सुसंस्कृत, सुसभ्य, सुसंस्कारित,
शालीन ममतामयी
जीवंत प्रेम-प्रतिमा
अभिनंदनीया,
देवदूता
मेरी
बस मेरी
केवल मेरी हो तुम
हे देवी ! हे सुन्दरी !! हे स्वर्ग अप्सरे !!!

मेरा दुख

मैं बहुत सुखी हूँ
मेरे पास आलीशान कोठी है
बहुत बड़ी कार है
लाखों का बैंक बैलेंस है
फैक्ट्रियाँ हैं
सुन्दर पत्नी है, बच्चे हैं
स्वस्थ हूँ, बहुत सुखी हूँ मैं।
मगर, इस सुख को,
एक दुख दबाए हुए है
सुन सकेंगे आप ?
सह सकेंगे आप ?
आप ही का तो दिया हुआ है यह दुख,
आप नहीं जानते हैं ?
क्यों जानेंगे आप ?
आप सुखी है न ?
बस यही तो मुझे दुख है,
आप दुखी हो जाइए-
मुझे सुख मिल जाएगा
और जब तक आप सुखी हैं
मेरे जीवन में दुख ही दुख रहेगा।
क्या आप मेरे सुख के लिए
इतना कर सकते है ?
देखिए, मैं आपके लिये दुखी हूँ
आप मेरे लिये दुखी नहीं होंगे ?
त्याग की भी एक महानता है
मुझे सुखी करने के लिये
आपका दुखी होना बहुत ज़रूरी है,
मुझे विश्वास है
मुझे सुखी करने के लिये
आप यह त्याग ज़रूर करेंगे।

ज़िदगी–एक कैलेंडर

इंसान की ज़िंदगी क्या है ?
एक कैलेंडर
जो हर साल वक्त की दीवार पर टाँग दिया
जाता है,
इसान हर साल नयी मुबारकबादियों के साथ
कैलेंडर–सा टँग जाता है।
वक्त चलता रहता है
आगे बढ़ता है
और आदमी वहीं का वहीं है
वह नहीं बदला
बदला है सिर्फ़ बाहरी रूप
कॉस्मेटिक सभ्यता ने उसे और अधिक
दिखावटी बनाया है,
जंगलीपन को और ज़्यादा जंगली बनाया है
कहते हैं विज्ञान की तरक्की और ईजादों ने
फासलों को कम किया है,
मगर इंसान को इंसान से बहुत दूर किया है।
बाहरी नज़दीकियों ने अन्दरूनी दूरियाँ पैदा की हैं
नफ़रत और लड़ाई पैदा की है।
इस एटमी सभ्यता में
हम हवा में उड़ते हैं
अन्तरिक्ष में तैरते हैं
चाँद मंगल पर पाँव धरते हैं
समुद्र की गहराइयाँ नापते हैं
मगर बेसहारा इंसान पर गोली चलाते हैं
मासूम बच्चों और अस्पतालों पर बम बरसाते हैं

आर दम भरते हैं
हम अपने देश को आगे बढ़ा रहे हैं।
कहते हैं "राष्ट्र की प्रगति के लिए यह सब
बहुत आवश्ययक है"
अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन में निर्णय होता है–
"कोई देश किसी देश पर आक्रमण नहीं
करेगा"
निर्णय की स्याही सूख नहीं पाती–
हमले शुरू हो जाते हैं –
और हम जैसे पिछले साल थे
उससे और ज़्यादा खूँख्वार बन जाते हैं
यही है आज की जिन्दगी का कैलेंडर
जो हर साल खून से रंग जाता है
और नया साल आने पर नया कैलेंडर
दीवार पर टाँग दिया जाता है
ताकि
साल के आख़ीर तक
फिर खून से रँग सके
और आने वाले साल में
फिर एक साफ़-सुथरा कैलेंडर
टँग सके।

जीवन और अस्तित्व

जीवन और अस्तित्व
दोनों एक नहीं।
मैं ज़िन्दा तो हूँ
पर जी नहीं रहा।
अस्तित्व नाम है–
साँस के आने जाने का
खाने पीने का
सोने जागने का
और आख़िर में
इन सब के रुक जाने का।
अस्तित्व मरता है, मिटता है।
और जीवन ?
साँस के आने जाने का
खाने पीने का
सोने जागने का
नाम भर नहीं
वह जीता है
राम और रहीम में
कृष्ण और करीम में
ईसा और मुहम्मद में
नानक और कबीर में
बुद्ध और गाँधी में
जो अस्तित्व के बिना भी
आज तक जीवित हैं
इतिहास के पृष्ठों में
मंदिरों, मस्जिदों, गिरजाघरों और गुरुद्वारों में
माटी के कण कण में
वे मेरे तुम्हारे पास खड़े

अपनी खुशबू फैला रहे हैं।
हमें बुला रहे हैं
हमसे कह रहे हैं
' नफ़रत से नफ़रत
और प्यार से प्यार उगता है
वैसे ही जैसे बबूल से बबूल
और आम से आम उगता है-
नफरत प्यार नहीं देती
प्यार ही प्यार देता है।''
जो दोगे, वही पाओगे
पाने की पहली शर्त है
देना, सिर्फ़ देना, बस देना
जिन्होंने दिया वे ही आज जीवित हैं
तुम्हारे मेरे चारों तरफ खड़े कह रहे हैं
अस्तित्व तो बस मिट्टी है
मिट्टी का है
वह मिटने के लिए ही बना है
जरूर ही मिटेगा।
और जीवन ?
वह कभी नहीं मिटता
वह कभी नहीं मरता
वह जितनी देर भी रहे
जी लो
प्यार का ख़जाना लुटा दो
प्यार बो दो
प्यार की फ़सल बढ़ने दो
आने वाला कल प्यार की फ़सल काटेगा
और उसे फिर फिर बोएगा
प्यार ही जीवन है
जो अस्तित्व के बिना भी
जीवित रहता है।

तन्हा इन्सान

कितना तन्हा है इन्सान ?
चारों तरफ़ भीड़ ही भीड़
मेला ही मेला
दोस्त ही दोस्त
और हैं
क्लब, संस्थाएँ, खेल-तमाशे
और उनमें अपने को गुम करने की कोशिश
मगर, इस सबके बावजूद
हम कितने तन्हा हैं ?
पता नहीं किसकी तलाश है ?
क्या बेचैनी है ?
क्या ख़लिश है ?
जो हर लम्हा पागल-सी बनाए रखती है
और महफ़िल में भी तन्हा रखती है,
कभी भी मुझे खुद से
मिलने नहीं देती
और चारों तरफ़ से
हर वक़्त घेरे रहती है
एक अजीब अजीब सी उदासी
जिसकी वजह मुझे खुद भी मालूम नहीं
जिसे आज तक मैं समझ नहीं पाया,
मगर जिसका एहसास
मुझे हर लम्हा सालता रहता है
और मैं कोशिश करता हूँ
मतलब निकालने का
जो आज तक निकल नहीं पाया।

क्षणिकाएँ

अँधेरा मुझे अच्छा लगता है
क्योंकि अँधेरे में मुझे,
अन्दर का उजाला दिखाई देता है।

झूठ सम्मानित है
सच दंडित
झूठ दंडित हो
सच सम्मानित
वह दिन ज़रूर आएगा।

मैंने उसे धोखा दिया
उसने मुझे
मैं उससे झूठ बोला
वह मुझसे
काश, हम दोनों एक दूसरे को धोखा न देते
झूठ न बोलते,
तो कितने सुखी होते।

मैं हँसता हूँ– तुम्हें रुलाकर
तुम हँसते हो – मुझे रुलाकर
कितना अच्छा हो यदि
हम दोनों
एक साथ हँसें
एक साथ रोएँ।

मैंने उसके झूठ को भी सच माना
और तुम्हारे सच को भी झूठ
बस यही अन्तर है उसमें और तुम में।

तुमने बहू को पखे से लटकाया
फिर भी स्कूटर न मिला
अब तुम फाँसी पर लटको
ऊपर स्कूटर तुम्हारा इंतज़ार कर रहा है।

मैंने ग़लती की
क्षमा माँग ली
एक तुम हो
ग़लती भी करते हो
और सीने पर भी चढ़ते हो।

मैं बोलता बहुत हूँ,
सुनता कम, सोचता तो बिल्कुल भी नहीं
काश,
मैं बोलूँ कम
सुनूँ ज़्यादा
सोचूँ और भी ज़्यादा।

यहाँ पानी बहुत है
यहाँ दूध भी बहुत है
मगर इनको मिलाओ मत
तभी दुनिया ठीक से चल पाएगी।

अच्छाई ने बुराई ने पूछा-
"तुम कैसे जन्मीं?"
बुराई हँसी और बोली-
"तुम ही तो मेरी माँ हो
जब तुम थक जाती हो
तभी मैं चुपके से आती हूँ
तुम्हें रुलाती हूँ
स्वयं हँसती हूँ
और तुम्हीं में समा जाती हूँ।

मैं रोज़ जीता हूँ
रोज मरता हूँ
फिर भी ज़िंदा हूँ
इसी का नाम तो ज़िन्दगी है।

"सच" को याद रखने की ज़रूरत नहीं
"झूठ" को याद रखना पड़ता है
ताकि दोबारा वही कह सकें
जो पहले कह चुके थे।

मेरे पास धन है,
फिर भी मैं दुखी हूँ,
तुम्हारे पास धन नहीं,
फिर भी तुम सुखी हो,
सुख धन में नहीं,
मन में है।

मैं बहुत व्यस्त हूँ
इसी लिये अस्त-व्यस्त हूँ

जीवन का अर्थ
सिर्फ़ स्वयं जीना नहीं
औरों को भी
जीने देना है।

नाटक–दिल और दिमाग़

राम प्रकाश गोयल

। उठता है मंच पर खड़ा "दिमाग़" अपनी प्रशंसा कर रहा

मैं इंसान का दिमाग़ हूँ। मेरी वजह से ही ये दुनिया है। यहाँ जो कुछ है और जो कुछ हो रहा है – सब मेरा ही खेल है। अगर मैं न रहूँ तो आदमी बेकार हो जाये। 'विचार' मेरा बेटा है। मन कर रहा है आज अपने बेटे विचार से बात करूँ। विचार, ओ विचार ! बेटे जरा मेरे पास तो आओ।

आया पिताजी, आ रहा हूँ। (विचार का मंच पर प्रवेश) क्या बात है पिताजी ? कैसे याद किया आपने ?

आज तुमसे बातें करने का मन हो रहा है बेटे। यह बताओ, क्या इंसान को मेरी ज़रूरत है ?

क्या बात है पिताजी ? आज बहुत परेशान लग रहे हैं। आख़िर क्यों ? क्या बात है मुझे तो बताइये।

बस मन उचट रहा था। सोचा तुमसे बातें करूँ। तुमने मेरे सवाल का जवाब नहीं दिया बेटे ?

आप भी कैसी बातें करते हैं ? आपके बग़ैर तो आदमी बेकार है। आप हैं तभी तक इंसान–इंसान है। आपके बिना इंसान–इंसान रहता ही कहाँ है।

क्या मेरे बिना आदमी नहीं रह सकता ?

रह सकता है। ज़रूर रह सकता है। मगर इस दुनिया में नहीं। एक और दूसरी दुनिया है जिसे पागलख़ाना कहते हैं–वहाँ पर रह सकता है। इसीलिये जिसका दिमाग़ ख़राब हो जाता है उसे पागलख़ाने में दाख़िल कराया जाता है।

तुम तो मज़ाक कर रहे हो बेटे। मैं तो तुमसे आदमी की ज़रूरत की बात पूछ रहा हूँ।

मैं भी ज़रूरत की बात का ही जवाब दे रहा हूँ पिताजी। आपके बग़ैर आदमी रहेगा कैसे इस दुनिया में।
कुछ लोग मुझे बुरा कर रहे हैं। कह रहे हैं कि मैंने इंसान को शैतान बना दिया है। बेटे, आज मैं बहुत परेशान हूँ। मुझे ज़रा समझाओ।
मैं आपका बेटा हूँ पिताजी। पहले मैं था ही कहाँ। मेरा जन्म तो बहुत बाद में हुआ। आदमी जंगलों में रहता था जानवरों का शिकार करके उनका मांस खाता था। पेड़ के पत्ते और घास–फूँस तक खाता था। आदमी का भी शिकार करके उसे खा जाता था। आदमी को अपनी जिस्मानी ताक़त पर बहुत घमंड था, बहुत गुरूर था। जिसके बाजुओं में जितनी ताक़त होती थी, वह उतना ही जुल्म ढाता था। औरतों तक को जबरदस्ती पकड़ कर अपने घर ले जाता था। उसके कोई उसूल नहीं थे। आदमी बिल्कुल जंगली था। यह सब इसीलिए था पिताजी कि आप तो थे लेकिन मेरा जन्म उस वक्त तक नहीं हुआ था। आदमी के पास दिमाग़ था ज़रूर, मगर वह सोच नहीं सकता था। उसने सोचना शुरू नहीं किया था। उसके सब काम अपने मतलब को पूरा करने के लिये होते थे। वह सोचता ही नहीं था कि सबके साथ मिलजुल कर रहने में ही उसका भला है।
मैं खुद भी इन हालात से बहुत परेशान और दुखी था। सोचता रहता था कि यह भी कोई ज़िन्दगी है ? वह क्या ज़िन्दगी जिसमें कोई आदर्श न हो, सिद्धान्त न हो, नियम और उसूल न हो। इस मारकाट की ज़िन्दगी से मैं बहुत परेशान और दुखी हो चुका था। हर वक्त कुढ़ता रहता था कि क्या करूँ, कैसे इस इंसान को बदलूँ? कैसे इस दुनिया में इंसानियत पैदा करूँ? और मेरे इस दुःख और चिन्ता के कारण ही तुम्हारा जन्म हुआ। मगर, मैं तुम्हें जन्म देकर भी आज दुखी हूँ, चिन्तित हूँ। मुझे बहुत बेचैनी हो रही है।

हाँ पिताजी । मेरे बिना आप अधूरे थे। बेटे के बिना पिता और पिता के बिना बेटा अधूरा ही रहता है। आदमी में धीरे – धीरे समझ आने लगी। उसने सोचा मिलजुल कर रहने में ही आदमी का अपना फ़ायदा है। और बेटे तुम्हारी बजह से ही आदमी को समाज की ज़रूरत महसूस होने लगी उसने एक दूसरे के फ़ायदे नुक़सान की बात सोचनी शुरू की। आदमी ने सोचा कि वह कुछ उसूल बनाये, कुछ नियम बनाये जिसका मानना हर एक के लिये ज़रूरी हो। धीरे-धीरे राजा और राज्य बने। राजा के सामने आदमी अपना दुख दर्द सुनाता था और इंसाफ पाता था। लोगों ने एक दूसरे पर जुल्म करना कम कर दिये। वे एक दूसरे के दुख दर्द को समझने लगे। उन्हें डर लगने लगा कि अगर उन्होंने क़ानून तोड़ा तो उन्हें सज़ा मिलेगी। सज़ा के डर से धीरे धीरे अमन चैन आने लगा।

(लाईट धीरे-धीरे हल्की होकर अँधेरा हो जाता है। दिमाग और विचार मंच से हट जाते है। धीरे-धीरे लाइट फिर आती है। मंच पर एक कुर्सी रखी हैं। कुर्सी के आगे "दिल" खड़ा है। वह कोमल आवाज़ में कह रहा है।)

मैं इंसान का दिल हूँ। जन्म से लेकर मृत्यु तक आदमी का साथ देता हूँ। जब तक धड़कता रहता हूँ, तभी तक आदमी ज़िन्दा रहता है। मैं सबसे वफ़ादार दोस्त हूँ इंसान का। बहुत साफ़ सुथरा हूँ, सीधा सच्चा हूँ। कभी लगी लिपटी बात नहीं करता। कला, साहित्य, संगीत, कविता, संस्कृति सब मेरी ही तो संतानें हैं। मेरी सबसे प्यारी संतान – मेरी बेटी – "प्यार" है। प्यार के बिना कोई व्यक्ति जीवित नहीं रह सकता।

(एक नर्तकी का मंच पर प्रवेश होता है . . . पीछे से "ग़ज़ल" गाई जा रही है। नर्तकी नाच रही है। "दिल" कुर्सी पर बैठकर उसे सुनता है) ग़ज़ल समाप्त होने पर दिल कहता है –

दिल की दुनिया भी कितनी अजीब दुनिया है। आज की दुनिया मतलब की, स्वार्थ की दुनिया हो गई। कोई दिल से किसी को नहीं चाहता। आपसी भाईचारा, प्यार तो खत्म ही होता जा रहा है।

(इसी समय ''प्यार'' एक सुन्दर लड़की - का मंच पर प्रवेश होता है। स्वर अति कोमल और मधुर है।)

पिताजी, मेरा नाम लिया आपने। आज अपनी बेटी ''प्यार'' को कैसे याद किया आपने ?

अरे बेटी प्यार - तुम । तुम तो हमेशा मुझमें समाई रहती हो। बेटी तुम मुझसे अलग हो ही कहाँ ?

(उलाहने के स्वर में) मगर कभी कभी आप मुझे भूल जाते हैं पिताजी। अपने से दूर कर देते हैं पिताजी।

तभी मैं दुखी होने लगता हूँ बेटे। मेरे पास प्यार के सिवाय और है ही क्या? दिल का दूसरा नाम ही प्यार है। आज का आदमी तो जानवर से भी ज़्यादा गया बीता हो गया है। जो कुछ भी थोड़ी बहुत शांति और चैन दिखाई पड़ता है, वह मेरे कारण है। मैं ही उसे एक दूसरे से जोड़े हुये हूँ। हर आदमी प्यार चाहता है, प्यार का भूखा है वह।

प्यार का ही आध्यात्मिक रूप भक्ति है। इसलिये ईसा मसीह ने कहा था कि प्रेम परमात्मा है और परमात्मा प्रेम है। दिल ही एक व्यक्ति को दूसरे से जोड़ता है दिल ही दिल की आवाज़ और पुकार सुन सकता है।

हर व्यक्ति का कोई न कोई कहीं न कहीं प्रेम ज़रूर होता है। प्रेम ही एक को दूसरे से जोड़ता है। नज़दीक लाता है। देश-भक्त अपनी मातृ भूमि से प्रेम करता है और खुद को बलिदान कर देता है। भगतसिंह, बिस्मिल, सुभाषचन्द्र, महात्मा गाँधी इन सबको अपने देश से प्रेम था और उसकी आज़ादी के लिये उन्होंने अपना सब कुछ कुर्बान कर दिया। दुनिया में दिल और प्यार ही सब कुछ हैं।

दिल – हाँ बेटी, आज की यह स्वार्थी दुनिया सिर्फ़ प्यार की वजह से बर्बाद होने से बच गयी वरना आदमी तो आदमी को ही खा जाता है।

(धीरे धीरे लाइट कम होकर बुझ जाती है और दोनों मंच से हट जाते हैं।)

(धीरे धीरे लाइट जलती है। दिमाग़ मंच पर आता है)

दिमाग – मैंने दुनिया को बड़ी बड़ी फ़िलासफ़ी दी है। इतने विद्वान, विचारक, वैज्ञानिक, डाक्टर और इन्जीनियर मैंने पैदा किये। यह सांइस भी तो मेरी संतान है। रेल, हवाई जहाज़, टेलीफ़ोन, टेलीविज़न, कम्प्यूटर सिर्फ़ मेरी देन हैं। यहाँ से हम हज़ारों मील पर बैठे हुये अपने दोस्त से बाते कर लेते हैं। मीलों दूर की तस्वीरें टेलीविज़न में देख लेते हैं। हवा में उड़कर लम्बे से लम्बा सफ़र कुछ घन्टों में पूरा कर लेते हैं। कितना नज़दीक ला दिया मैंने दुनिया को ? दुनिया बहुत छोटी हो गई है। हज़ारों मील पर हुई किसी भी घटना की ख़बर ज़रा देर में ही सारी दुनिया में फैल जाती है। कितना भला किया है मैंने इंसान का और दुनिया का।

(इसी समय 'दिल' का मंच पर प्रवेश होता है।)

दिल – यह तुम्हारी वजह से नहीं हुआ है दोस्त। मेरी वजह से हुआ है। तुमने तो मुझे मार ही डाला था। तुम ही आदमी को नचा रहे थे। उससे मारकाट करवाते रहे और मैं चुपचाप तुम्हारी करतूतें देखता रहा। तुमने मेरी आवाज़ आदमी को सुनने ही नहीं दी। तुम उसे गुमराह करते रहे। उससे अपनी मनमानी करवाते रहे।

दिमाग़ – अरे, 'दिल' तुम (व्यंग्य के स्वर में)। तुम मुझसे बात करने की हिम्मत कर रहे हो। तुम तो चौबीस घन्टे लुहार की धौंकनी ही तरह धड़कते रहते हो। तुम्हारा इस दुनिया में क्या काम ? तुम तो सिर्फ़ एक मज़दूर हो जो सिर्फ़ जिस्म का बोझ ढोता रहता है।

दिल – और अगर मैं धड़कना बन्द कर दूँ तो क्या हो ? कभी

तुमने यह भी सोचा है। मैं ही तुम्हें जिन्दा रक्खे हुये हूँ दोस्त ! मगर मैं जानता हूँ कि तुम एहसान फ़रामोश हो। मेरा कोई एहसान तुम नहीं मानोगे। आदमी तुम्हारे बगैर ज़िन्दा रह सकता है। मगर मेरे बग़ैर वह एक पल भी ज़िन्दा नहीं रह सकता।

और तुमने मेरी कब सुनी है। (स्वर तेज़ होता है) तुम्हारी वजह से लोग ग़लत रास्ते पर भटक जाते हैं। तुम आदमी को बहकाते हो, फुसलाते हो। तुम्हारी चिकनी चुपडी बातें इंसान को बर्बाद कर देती हैं।

मैं बहकाता हूँ ? मैं बरबाद करता हूँ ? अरे मेरे कारण ही माँ बच्चे को दूध पिलाती है। खुद गीले में सोकर अपने बच्चे को सूखे में सुलाती है। माँ की ममता का मुकाबला दुनिया में कोई नहीं कर सकता। कभी सोचा है तुमने कि यह ममता कहाँ से आती है ? दिल से, सिर्फ़ दिल से।

माँ की ममता (व्यंग्य के स्वर में) ऊँह। अरे बच्चे को दूध पिलाने में, उसे बड़ा करने में, उसे पालने में माँ का स्वार्थ छिपा होता है। वह इस उम्मीद पर अपनी संतान को बड़ा करती है कि बुढ़ापे में वह उसका सहारा बनेगा। उसकी देखभाल करेगा। दुनिया में सब लेन-देन है। कोई अपने मतलब से, स्वार्थ से ख़ाली नहीं।

यही तो तुम्हारी भूल है। तुम्हें हर बात में स्वार्थ की,मतलब की गन्ध आती है। तुमने दुनिया का जितना बुरा किया है उतना किसी ने नहीं किया। तुम्हें अपने ऊपर बहुत घमन्ड है, गुरूर है। रावण और कंस तुम्हारी ही तो संतानें थीं। कितने अंहकार में डूबे रहते थे वे। रावण के रूप में तुम बहुत विद्वान थे। चारों वेदों के ज्ञाता थे कितनी तपस्या की रावण ने। तीनों लोक रावण से घबराते थे। कितने अत्याचार किये तुमने ऋषि मुनियों पर। मार मार कर उनकी हड्डियों के ढेर लगा दिये। बहुत खुश होते थे तुम मन ही मन। और सुनो,

तुम कितने नीच, कायर, और डरपोक थे। सती साध्वी माँ सीता को साधु का झूठा वेश धर के जबरदस्ती उठा लाये। अकेले अशोक वाटिका में बन्द करके उन पर दबाव डालते रहे कि वे तुमसे विवाह कर लें। कितने नीच थे तुम। तुम तो . . . . . ।

(बीच में दिमाग़ बात काट देता है और कहता है)

- (बीच में बात काटकर) बस-बस रहने दो। बहुत हो गया तुम्हारा भाषण। मेरे ऊपर इसका कोई असर होने वाला नहीं। ज़रा अपने गिरेबान में मुँह डालकर तो देखो। तुमने कितना गुमराह किया है इस दुनिया को। तुम सिर्फ धड़क सकते हो, सोच नहीं सकते।
- मैं अपनी बात तो बाद में करुँगा। पहले तुम्हारी कहानी तो तुम्हें सुना दूँ। तुम मुझे आज तक नहीं समझ पाये। कभी समझोगे भी नहीं। क्योंकि तुम रावण हो रावण। तुम्हें तुम्हारी पत्नी मंदोदरी, भाई विभीषण, अंगद, हनुमान सभी ने कितना कितना समझाया कि राम से बैर मत करो। सीता माँ को लौटा दो। अभी कुछ नहीं बिगड़ा है। मगर तुम। तुम पर अहंकार का, घमन्ड का और अपनी ताक़त का नशा छाया हुआ था। तुमने अपने भाई विभीषण को लात मार कर निकाल दिया और गुरूर है तुम्हें कि तुम्हारे अन्दर दस आदमियों के बराबर दिमाग़ था। लोग तुम्हारे दस सिर लगाते हैं। तुमने कभी किसी की नहीं सुनी। तुम्हारे अन्दर तो एक सिर के बराबर भी अक्ल नहीं थी।
- (तेजी से कहता है) क्यों सुनू मैं किसी की ? जिसे तुम अहंकार और घमण्ड कह रहे हो वह मेरा आत्म विश्वास था। मुझे खुद पर भरोसा था। मैं किसी का गुलाम नहीं। हाँ, मेरा सबको गुलाम होना पड़ता है। दिमाग़ के बिना दुनिया एक पल को भी नहीं चल सकती।
- (उलाहने के स्वर में कहता है) रस्सी जल गई मगर ऐंठन नहीं गयी। आज भी तुम्हें अपने किये पर पश्चाताप

और दुःख नहीं है। यही तो तुम्हारी सबसे बड़ी मूर्खता है। मगर तुम उसे अपनी बहुत बड़ी ताकत समझे बैठे हो। नाम ज़रूर तुम्हारा दिमाग़ है, मगर तुम्हारे पास दिमाग़ नाम की कोई चीज नहीं।

(इसी समय विचार मंच पर आता है)

आप पिताजी का सिर्फ़ एक रूप देख रहे हैं। बुरा रूप, रावण का रूप। कभी आपने यह भी सोचा कि हमने दुनिया को कितनी बड़ी बड़ी फ़िलास्फी दी है। कितने विद्वान, ऋषि मुनि, चिंतक, फ़िलासफ़र, वैज्ञानिक, डाक्टर, इजीनियर पैदा किए हैं।

ये सब मेरे ही तो बेटे हैं। आज दुनिया में जितनी तरक्क़ी हो रही है उसका कारण मैं ही तो हूँ। साइंस मैंने ही ईजाद की। दुनिया को कितना नज़दीक ला दिया है मैंने। कितना भला किया है इंसान का मैंने। तुमने क्या किया ? सिवाय लोगों को धोखा देने के और अपनी चिकनी चुपड़ी बातों से बहलाने फुसलाने के।

(उलाहने के स्वर में) और वह एटम बम किसने बनाया था ? जापान के हिरोशिमा और नागासाकी पर बम गिराकर तुमने ही तो तबाही मचाई। सद्दाम भी तो तुम्हारी औलाद है। कितना बरबाद किया तुमने कुवैत को। करोड़ों रूपये के तेल के कुएँ जला डाले तुमने। लाखों इंसानों को मौत के घाट उतार दिया। बूढ़ों और दूध पीते मासूम बच्चों तक को नहीं छोड़ा तुमने। जहरीली गैस भी तो तुम्हारी ईजाद है। 50 हज़ार बेगुनाह कुर्द लोगों को तुमने मार डाला और मेरे सामने अपने सोच की, चिन्तन की, फिलासफ़ी और साइंस की शेख़ी बघार रहे हो। तुम्हें अपने पर शर्म आनी चाहिये। तुम्हें तो डूब मरना चाहिये।

देखो दिल। बहुत बढ़-चढ़ कर बातें न करो। तुमने कभी यह भी सोचा कि दुनिया का तुमने कितना बुरा किया है। कितना गुमराह किया है तुमने। जिसने तुम्हारी सुनी

वह बरबाद हो हो गया।

दिल – मैं इतना साफ़ सुथरा और सीधा, सच्चा हूँ – यही तो मेरी कमजोरी है। जैसा अन्दर हूँ वैसा बाहर हूँ। मेरे कारण ही कला और संस्कृति का जन्म हुआ। साहित्य, संगीत, कविता, चित्रकारी यह सब मेरी ही संतानें हैं। संसार का पहला महाकवि मेरा बेटा बाल्मीकि यदि न होता तो आदर्श पुरुष मर्यादा पुरुषोत्तम राम को कौन जानता संसार में। आज के बाल्मीकि मेरे बेटे तुलसी के कारण घर घर में रामायण का प्रचार हुआ। मेरे ही कारण समाज में आदर्श और सिद्धान्त स्थापित होते हैं। इन आदर्शों के कारण ही आज की यह स्वार्थी दुनिया बची हुई है। तुम क्या करोगे मेरी बराबरी ? तुम समझते हो तुम्हारे कारण संसार चल रहा है। भूलते हो तुम। तुमने आदमी को आदमी से दूर किया है, बाँटा है आदमी को, नफ़रत पैदा की है इंसानों में। मैं इंसान को जोड़ता हूँ तुम तोड़ते हो। आज इंसान को तुमने शैतान बना दिया है। मेरी बेटी "प्यार" अगर दुनिया में न होती तो अब तक प्रलय हो गयी होती। सारी दुनिया ही मिट गई होती। "प्यार" ही इस धरती को रोके हुये है।

विचार – "प्यार" (हँसता है ज़ोर से) सारी झगड़े की जड़ तो तुम्हारी यह बेटी "प्यार" ही है। इसने जितने जुल्म दुनिया में ढाये हैं, उसके तो दस प्रतिशत भी मैंने नहीं किये। जो इस "प्यार" के चक्कर में पड़ा, बरबाद होकर ही रह गया। ऊपर से कितनी मासूम है तुम्हारी यह बेटी, मगर है ज़हर। ऐसे ही जैसे सोने के घड़े में ज़हर भरा हो। बाहर से बहुत लुभावनी और भोली भाली मासूम दीखती है, मगर आदमी की जान ले लेती है यह।

(तभी "प्यार", एक सुन्दरी का मंच पर प्रवेश होता है। कोमल और लुभावनी है।)

प्यार – कुछ मेरी बात हो रही थी ? क्या बात है पिताजी ? (दिल को संकेत करके पूछती है।)

बेटी तुम्हारी बुराई कर रहे थे ये (विचार की तरफ़ इशारा करके कहता है)। कह रहे थे कि दुनिया में जितने झगड़े हैं, सिर्फ़ तुम्हारी बजह से हैं। तुम न हो तो सब तरफ़ शान्ति हो जाये।

कितनी उल्टी बात कर रहे हैं यह लोग (नम्रता से कहती है)। आज जो कुछ भी थोड़ी बहुत शान्ति और व्यवस्था दिखाई पड़ रही है, वह सिर्फ़ मेरे ही कारण है। आज का इंसान तो जानवर से भी ज़यादा गया बीता हो गया है। मैं ही उसे एक दूसरे से जोड़े हुये हूँ। सच बताइये, क्या आप अपने पिता दिमाग़ से प्यार नहीं करते ? कौन है ऐसा जिसका प्रेम केन्द्र कहीं न कहीं न हो ? प्रेम के कारण ही तो व्यक्ति महान बनता है।

मैं नहीं मानता यह। मैं विचार हूँ। विचार कभी किसी की कही सुनी बातों पर विश्वास नहीं करता। उसके दरवाज़े और खिड़कियाँ हमेशा खुले रहते हैं जिससे ताज़ी हवा के झोके अन्दर आ सके। इस दुनिया की न कोई शुरुआत है न कोई आखिर। मनुष्य बराबर उन्नति के मार्ग पर आगे बढ़ रहा है। जो कल तक की मान्यतायें थीं आज वे धीरे धीरे बदल रही हैं। ठहरा हुआ पानी तालाब में रहकर सड़ जाता है। इसी तरह आज फिर से हमें नये सिरे से प्यार पर विचार करना पड़ेगा।

मुझे कोई आपत्ति नहीं है। अवश्य विचार करो, क्योंकि विचार का धर्म ही सोचना है। मगर एक बात का ध्यान रखना। "प्यार" विचार करने की चीज़ ही नहीं है। वह सोच समझ कर नहीं किया जाता। इसीलिये कहा जाता है कि "प्यार किया नहीं जाता, हो जाता है।" मगर आप तो इसे भी घिसी पिटी बात कहेंगे। इसे भी तर्क की कसौटी पर कसने की कोशिश करेंगे किन्तु प्यार न बदला है, न बदला जा सकेगा।

यही तो मुश्किल है तुम लोगों के साथ । तुम लोग कुछ मान्यतायें मानकर चलते हो। अपने संस्कारों की ज़ंजीरों

में इतने जकड़े हुये हो कि खुले मन से सोचना ही नहीं चाहते।

दिल – अच्छा एक बात बताओ। तुम नहीं जकड़े हुये हो अपनी मान्यताओं और संस्कारों की ज़ंजीरों में ? तुम्हें भी तो बहुत गुरूर है कि हर बात को तर्क की कसौटी पर कसना चाहिये। यह भी तो एक मान्यता ही हुई न। मान्यता तो मान्यता है, संस्कार तो संस्कार हैं। फिर वह चाहे तुम्हारा हो या मेरा। हर एक का अपना अपना धर्म है, स्वभाव है। उसे कैसे बदला जा सकता है ?

प्यार – छोड़िये पिता जी इन बातों को। दुनिया में जो है और हो रहा है उसकी बातें करें। प्रेम भी जीवन की एक वास्तविकता है, एक सच्चाई है। कोई व्यक्ति प्रेम के बिना जीवित नहीं रह सकता। कल्पना और बहस की हम चाहें जितनी बातें क्यों न करें, प्रेम ही एक इंसान को दूसरे इंसान से जोड़े हुये है। आप आकाश में जो नक्षत्र और तारे देख रहे हैं, सूरज और चाँद देख रहे हैं, यह सब एक दूसरे के आकर्षण से, खिंचाव में बँधे हुये हैं। उनके टिके होने का, उनके संतुलन का आधार प्रेम है। अगर उनके बीच प्रेम न हो, तो वे एक स्थान पर स्थिर और रुके हुये नहीं रह सकते। इसी तरह मनुष्य के संतुलन का आधार भी केवल प्रेम है। प्रेम ही जीवन है।

दिमाग़ – इसमें ख़ास बात क्या है? यह तो प्रकृति का एक नियम है, जैसा नियम बना दिया प्रकृति ने वैसा हो रहा है।

दिल – यह ठीक है कि जो नियम बन गया वैसा हो रहा है। मगर यह नियम क्यों बना? और यह हमें क्या बता रहा है? तुम तो दिमाग़ हो। तुम्हारा काम ही विचार करना और सोचना है। यह सोच कर बताओ कि यह नियम किस बात की तरफ इशारा कर रहा है? क्या परिणाम निकालें हम इस नियम से? यह संतुलन, यह प्यार क्यों है दुनिया में, क्यों ज़रूरत है इसकी दुनिया को ?

यह नहीं बता पायेंगे पिताजी । इन्होंने तो एक सिद्धान्त की बात कहकर सब कुछ जड़ से ही समाप्त कर दिया। मैं बताती हूँ। इस सिद्धान्त के द्वारा प्रकृति और परमात्मा दोनों ही बता रहे हैं कि दो व्यक्तियों और वस्तुओं में आकर्षण बहुत स्वाभाविक है। न सिर्फ़ स्वाभाविक है, बल्कि आवश्यक भी। जिस आकर्षण और प्रेम को यह लोग झगड़े की जड़ कह रहे हैं, उसी के कारण यह संसार टिका हुआ है। आपने कभी चुम्बक को देखा है ? कैसा लोहा चुबंक की तरफ़ खिंचा चला आता है और अगर कुछ वक्त तक लोहा चुम्बक से सम्पर्क में रहे तो खुद चुम्बक बन जाता है। यह बात आज का विज्ञान कह रहा है। वह विज्ञान जो दिमाग़ की उपज है। (दिमाग़ की तरफ़ इशारा करती है।) दिमाग़ आज खुद प्रकृति के रहस्यों को धीरे-धीरे खोल रहा है-और भी न जाने कितने सबूत हैं आकर्षण के, खिंचाव के, प्रेम के। (विचार और दिमाग़ की तरफ़ मुख़ातिब होते हुये) आपने समुद्र जरूर देखा होगा। ज़रा चाँदनी रात में उसके किनारे पर खड़े होकर देखिये। कैसी मचलती हैं लहरें चाँद को चूमने के लिये। लहरें पागल हैं चाँद के लिये। चाँद को अपने में डुबो लेना चाहती हैं, चाँद को निगल जाना चाहती हैं वे। वे पागल हैं चाँद के प्यार में। लहरें चाँद से दूरी बरदाश्त नहीं कर सकतीं।

(व्यंग्य करता हुआ दिल पर) यही तो मैं भी कहता हूँ। प्यार ने आदमी को पागल बना दिया है। तुम्हारे कारण उसमें सोचने समझने की बुद्धि ही नहीं रही। उसका विवेक समाप्त हो गया है। अरे भाई, मजनू भी तो तुम्हारा ही बेटा था। कैसे अपने कपड़े फाड़ता फिरता था। सड़कों पर "लैला-लैला" चिल्लाता था, रोता था, हँसता था। दीवाना था लैला के लिये। उसके प्यार में पागल हो गया था। प्यार इंसान को पागल बना देता है। प्यार इंसान का दुश्मन है।

आप यही कहेंगे न कि मजनू मेरे कारण पागल था लैला के लिये। इस पागलपन को ही प्यार कहते हैं। प्यार पूर्ण समर्पण माँगता है। प्यार में दो रहते ही नहीं। एक हो जाते हैं दोनों। भक्त और भगवान, प्रेमी और प्रेमिका एक दूसरे में समा जाते हैं। अगर दिमाग़ से सोचा जाये तो यह स्थिति असम्भव है, कभी हो ही नहीं सकती। मगर प्यार में असम्भव ही सम्भव होता है। प्यार पूजा है, इबादत है। वह दिमाग़ से किया ही नहीं जा सकता। वह तो दिल और सिर्फ़ दिल का मामला है – आपने वह शेर नहीं सुना क्या –

प्यार की राह में वही आये,
अपनी हस्ती जिसे मिटानी है।

(दिमाग और विचार की ओर देखकर कहता है) दोस्त। मैं नहीं कहता कि हर इंसान प्यार करे। हर इंसान प्यार कर ही नहीं सकता, क्योंकि प्यार का आधार त्याग है, बलिदान है। प्यार की बहुत बड़ी कीमत चुकानी पड़ती है प्यार करने वाले को। हर आदमी इसे चुकाने को तैयार नहीं, इसीलिये वह प्यार नहीं कर सकता। और फिर प्यार पर ही उल्टा इल्ज़ाम लगाता है। अपनी कमी को छिपाता है। प्यार सिर्फ देता ही है, पाने की उम्मीद कभी नहीं करता। प्यार में अपने व्यक्तित्व को अपने अहं और ईगो को मिटाना पड़ता है। इसीलिये शायर को कहना पडा –

प्यार पाने के वास्ते मिट जाओ,
मुझको पैग़ाम यह सुनाना है।

लेकिन यह तो सोचो मित्र कि प्यार तो अंधा होता है। क्या अंधा होने पर हमारा विवेक, हमारी बुद्धि और हमारी समझ कहीं रह जायेगी। ऐसी स्थिति में हम दुनिया में कैसे जी सकेंगे? मनुष्य की बुद्धि उसकी सबसे बड़ी दौलत है और किसी से प्यार हो जाने के बाद आदमी की बुद्धि ख़त्म हो जाती है। वह प्यार में

अंधा हो जाता है। उसका सोचना ख़त्म हो जाता है। क्या यह सम्भव नहीं कि मनुष्य में विवेक बुद्धि भी रहे और वह प्यार भी करता रहे ? प्यार का आधार हमारी बुद्धि और विवेक नहीं हो सकते क्या ? क्या दिल और दिमाग़ दोनों के सहयोग से हम प्यार नहीं कर सकते। आपका प्रश्न बहुत कठिन है किन्तु ऐसी स्थिति असम्भव तो नहीं होनी चाहिये। हमें नये सिरे से सोचना पड़ेगा कि क्या "प्यार" और "विचार" मिल सकते हैं। क्या हम विचार पूर्वक प्यार नहीं कर सकते ? क्या दिल और दिमाग़ का गठबन्धन सम्भव नहीं ?

दुनिया में असम्भव कुछ भी नहीं है। अगर आदमी दिल में पक्का इरादा कर ले तो असम्भव मालूम पड़ने वाली बातें भी सम्भव हो जाती हैं। मगर इतना याद रखना कि "दिल और दिमाग़" "प्यार और विचार" दिल के पक्के इरादे से ही मिल सकते हैं, दिमाग़ से नहीं। मैं ही सारी दुनिया को जोड़ने की शक्ति रखता हूँ। जहाँ चाह है, वहाँ राह ज़रूर निकलती है।

मैं भी सोचता हूँ कि मैं अकेला पड़ गया हूँ। मैंने आदमी को सुविधायें तो बहुत दी हैं -बिजली, रेल, टी0वी0, फ्रिज, टेलीफ़ोन कितनी सुविधायें मैंने दी हैं आदमी को। और जितना आराम मैं इंसान को पहुँचाता जा रहा हूँ, उतना ही आदमी आलसी होता जा रहा है। एक दूसरे के लिये उसमें भावना ही नहीं रही। उसका घमंड और अहंकार बढ़ता ही जा रहा है। वह अपनी ही दुनिया में मस्त रहना चाहता है। इसकी वजह यह है कि हमारे दिल दूर हो गये हैं। हम एक दूसरे के दुःख दर्द को भूल गये हैं, हमारी दृष्टि सीमित हो गयी है। हम सिर्फ़ अपना-अपना ही सोचते हैं। दूसरे के लिये कोई भावना और विचार ही दिमाग़ में नहीं आता।

मैं भी यही महसूस करता हूँ कि दुनिया में जीने के लिये मैं ही काफ़ी नहीं हूँ, दिमाग़ की भी ज़रूरत है। मैं अक्सर इंसान को गुमराह कर देता हूँ। अगर मैं बुद्धि

का सहारा लेता रहूँ और बुद्धि मेरा सहारा लेती रहे, तो हम एक नयी दुनिया की ईजाद कर सकते हैं – जहाँ इसान बुद्धिमत्ता पूर्वक प्यार करे। प्यार में अंधा न हो जाये। कुछ करने से पहले यह सोचे कि इसमें समाज का, संसार का, भला हो नुक़सान न हो। दिल, दिमाग़ की सुने और दिमाग़, दिल की सुने। दोनों का संतुलन यदि बना रहे तो समाज में व्यवस्था रहेगी। दोनों एक दूसरे के बिना अधूरे हैं, अपाहिज हैं। मैं समझता हूँ इसमें तुम्हें भी कोई आपत्ति नहीं होगी दिमाग़।
(दिमाग़ की तरफ़ मुख़ातिब होकर कहता है)
बिल्कुल ठीक। मैं खुद ही यह कहने वाला था। सिर्फ विचार और बुद्धि आदमी को बेकार और आलसी बना देते हैं। मुझे भी तुम्हारे सहारे की ज़रूरत है दोस्त। नीति का गठबंधन प्रीति से होना बहुत आवश्यक है। नीति का आधार प्रीति और प्रीति का आधार नीति होनी चाहिए।
(दिल की ओर देखकर कहता है)
(प्यार से कहता है) और प्यार, तुम्हें भी इसमें कोई आपत्ति न होगी। तुम और मैं – विचार और प्यार – दोनों मिलकर एक नयी सोच को, नये विचार को जन्म देंगे। जहाँ व्यक्ति विचार पूर्वक प्यार करेगा। दिल, दिमाग़ का सहारा लेगा, और दिमाग़ दिल का।
हाँ, यह बहुत ठीक है –
(दिल और दिमाग़ गले मिल जाते हैं)
(विचार और प्यार एक दूसरे का हाथ पकड़ कर ऊपर उठा लेते हैं।)
दिल दिमाग़ दोनों कहते हैं – हम दोनों मिलकर चलेंगे, साथ साथ रहेंगे।
विचार और प्यार कहते हैं – हम विचार पूर्वक प्यार करेंगे।

जी–12, रामपुर बाग, बरेली
फ़ोन : 0581–475074

रुहेलखण्ड विश्वविद्यालय की स्थापना कैसे हुई?

रामप्रकाश गोयल

अपनी स्थापना के 25 वर्ष पूरे करके 15 फरवरी 2000 को रुहेलखण्ड विश्वविद्यालय अपने 26 वें वर्ष में प्रवेश कर रहा है।

विश्वविद्यालय की स्थापना में पहल करने वालों में बरेली कालेज के दर्शनशास्त्र विभाग के पूर्व विभागाध्यक्ष डॉ० एम० एन० रस्तोगी की प्रमुख भूमिका रही। 7 जनवरी 1974 को उत्तर प्रदेश के तत्कालीन मुख्यमंत्री श्री हेमवती नन्दन बहुगुणा राजकीय इन्टर कालेज, बरेली में स्वतन्त्रता संग्राम सेनानियों के सम्मेलन में भाग लेने आने वाले थे।

5 जनवरी 1974 को बरेली स्पोर्टस स्टेडियम में अन्तर्विश्वविद्यालय महिला हॉकी टूर्नामेन्ट चल रहा था। वहीं स्टेडियम पर डॉ० एम०एन० रस्तोगी तथा बरेली कॉलेज के अन्य प्रोफ़ेसर्स डॉ० पी० एल० शुक्ला, डॉ० के० एल० शर्मा, प्रो० आर०सी० अग्रवाल तथा कुछ छात्र नेताओं ने एक मीटिंग की और "रुहेलखण्ड विश्वविद्यालय स्थापना समिति" का गठन किया जिसका अध्यक्ष बरेली कॉलेज बरेली के अँग्रेज़ी विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो० कृपानन्दन को मनोनीत किया गया। इस समिति ने रुहेलखण्ड विश्वविद्यालय की स्थापना के लिए एक रुप रेखा तैयार की तथा समाज के सभी वर्गो से सम्पर्क करने का निश्चय किया।

अन्तर्विश्वविद्यालय महिला हॉकी प्रतियोगिता में आयी हुई छात्राओं ने भी इस आन्दोलन में सहयोग करने की सहमति दी।

7 जनवरी 1974 को इस स्थापना सीमिति ने एक जुलूस निकाला जिसमें अनेक शिक्षकों, छात्र-छात्राओं तथा बरेली के नागरिकों ने भाग लिया। यह जुलूस मुख्यमंत्री श्री हेमवती नन्दन बहुगुणा जी को रुहेलखण्ड विश्वविद्यालय की स्थापना के सम्बन्ध में एक ज्ञापन देना चाहता था किन्तु इसी बीच कुछ असामाजिक तत्वों ने इस जुलूस में गड़बड़ी की और अराजकता पैदा कर दी। परिणाम स्वरूप पुलिस को लाठी चार्ज करना पड़ा और कर्फ्यू लगाना पड़ा। बरेली कॉलेज के शिक्षक स्व० चौधरी नरेन्द्र सिंह तथा अनेक छात्रों को गिरफ्तार करके जेल भेज दिया। इस गिरफ्तारी ने आन्दोलन की आग में घी का काम

किरण और बरेली कालेज के शिक्षक तथा छात्र छात्रायें संगठित हो गये

अब तो रुहेलखण्ड विश्वविद्यालय की स्थापना कराना बरेली के शिक्षकों, छात्रों और जागरुक नागरिकों का लक्ष्य और संकल्प बन गया। सबने मिलकर यह निर्णय लिया कि बरेली कॉलेज में 24-24 घंटे के क्रमिक अनशन पर शिक्षक, छात्र और नागरिक बैठें और जब तक विश्वविद्यालय की स्थापना की औपचारिक घोषणा नहीं हो जाती तब तक इस क्रमिक अनशन को जारी रखा जाय।

नित्य ही क्रमिक अनशन पर सभी वर्गों के व्यक्ति 24 घंटे के लिए बैठते थे किन्तु सरकार की ओर से विश्वविद्यालय की स्थापना की घोषणा नहीं हो रही थी। आन्दोलनकारियों तथा अनशन पर बैठने वाले लोगों में नगर पालिका के पूर्व सदस्य सर्वश्री बसन्त कुमार कश्यप, मास्टर किशन नारायन सक्सेना, वीर बहादुर सक्सेना, दिनेश कुमार मेहरोत्रा तथा मोहम्मद फ़ाज़िल आदि थे। बरेली कॉलेज के शिक्षकों में प्रो0 महेश वर्मा, प्रो0 डी0के0 जैन, गुलाब राय इन्टर कॉलेज के जी0 आर0 गोयल थे। छात्र नेताओं में श्री संतोष गंगवार (वर्तमान राज्यमंत्री भारत सरकार), जग मोहन सिंह व्यास, राजीव शर्मा, सरदार जिया, घनश्याम शर्मा, सुरेन्द्र अग्रवाल, मनमोहन खन्डेलवाल, प्रवीन मिश्रा आदि थे।

मैं उस समय बरेली कॉलेज के विधि विभाग में प्रवक्ता था। 19 जनवरी 1974 की शाम को 4 बजे मैं भी 24 घंटे के क्रमिक अनशन पर बैठा। उसी शाम को ही मुख्यमंत्री का संदेश आया कि विश्वविद्यालय की स्थापना के सम्बन्ध में एक प्रतिनिधि मंडल लखनऊ आकर उनसे मिले। अतः 20 जनवरी को प्रो0 कृपानन्दन के नेतृत्व में प्रो0 के0एल0 शर्मा, प्रो0 एस0पी0 गुप्ता, प्रो0 पी0एल0 शुक्ला तथा छात्र नेता ज़ाहिद ख़ाँ लखनऊ रवाना हो गये। इस प्रतिनिधि मंडल की मुख्यमंत्री श्री बहुगुणा जी से बातचीत हुयी और उन्होंने काफ़ी विचार विमर्श के बाद यह स्वीकार कर लिया कि रुहेलखण्ड विश्वविद्यालय की स्थापना की जायेगी।

मुख्यमंत्री की स्वीकृति मिलने पर प्रतिनिधि मंडल ने लखनऊ से हम लोगों को सूचित किया कि विश्वविद्यालय की स्थापना की स्वीकृति हो गयी और प्रतिनिधि मंडल रात्रि के 10 बजे तक बरेली अनशन स्थल पर पहुँच रहा है। कुछ अनशनकारियों ने इस सूचना के मिलते ही अपना अनशन तोड़ दिया किन्तु मैने यह कहा जब तक

प्रतिनिधि मंडल बरेली नहीं आ जायेगा और मैं उनके मुँह से यह शुभ समाचार नहीं सुन लूगा तब तक मैं अनशन नहीं तोड़ूँगा। रात्रि के लगभग 10 बजे प्रतिनिधि मण्डल अनशन स्थल पर पहुँचा और उसने सूचित किया कि मुख्यमंत्री ने रुहेलखण्ड विश्वविद्यालय की स्थापना की स्वीकृति दे दी है। फिर मैंने अपना अनशन तोड़ दिया। सभी लोग खुशी से झूम उठे और वहाँ नाच गाने का माहौल बन गया। बाद में गिरफ्तार हुए शिक्षक स्व0 चौधरी नरेन्द्र सिंह तथा अन्य छात्रों की मैंने न्यायालय से ज़मानत कराई और वे छोड़ दिये गये।

जन आकांक्षाओं का प्रतीक रुहेलखण्ड विश्वविद्यालय आज के पावन और पुनीत दिन 15.2.74 को राजाज्ञा 10/113/15046 74 द्वारा अस्तित्व में आ गया।

मात्र 15 दिन की लगन और संकल्प के आधार पर रुहेलखण्ड विश्वविद्यालय की स्थापना करवा कर हम लोगों ने चैन की साँस ली।

इस विश्वविद्यालय की स्थापना में नगर के तत्कालीन प्रमुख राजनेताओं में स्व0 श्री जगदीश शरण अग्रवाल, स्व0 श्री राम सिंह खन्ना, स्व0 श्री लक्ष्मण दयाल सिंघल तथा समाज सेवी पं0 भवानी शंकर का विशेष योगदान था।

आज इस विश्वविद्यालय में उत्तर प्रदेश के आठ जिले बरेली, शाहजहाँपुर, बदायूँ, पीलीभीत, मुरादाबाद, रामपुर, बिजनौर और ज्योतिबाफुले नगर (अमरोहा) आते हैं।

इन ज़िलों के 56 महाविद्यालय इस विश्वविद्यालय से सम्बद्ध हैं।

विश्वविद्यालय के प्रथम कुलपति डॉ0 आनन्द शरण रतूड़ी तथा प्रथम कुल सचिव डॉ0 जय नारायण सिंहल थे।

आज विश्वविद्यालय में 18 विभाग तथा 9 फैकल्टीज़ हैं।

जी–12, रामपुर बाग, बरेली
फोन : 475074

(रुहेलखण्ड विश्वविद्यालय, बरेली द्वारा प्रकाशित "रजत जयन्ती स्मारिका" दिनांक 15 फरवरी 2000 में प्रकाशित लेख।)

ग़ज़ल की एक शाम–मुन्नी बेगम के नाम

राम प्रकाश गोयल

ग़ज़ल के दीवाने बड़ी बेसब्री से 5 अप्रैल, 1999 की शाम का इन्तजार संजय कम्युनिटी हॉल, बरेली में कर रहे थे। नगर की प्रमुख सास्कृतिक संस्था ''सुर–वंदन'' ने अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त ग़जल गायिका ''मुन्नी बेगम'' के नाम यह शाम लिख दी थी। अपनी आवाज़ का जादू बिखेरने मुन्नी बेगम जब मंच पर आयी और खचाखच भरे हाल में बैठे ग़ज़ल प्रेमियों ने तालियों की गड़गड़ाहट से अपनी मेहमाने–खुसूसी का इस्तक़बाल किया तो मल्का–ए–ग़ज़ल ने अपनी दिलकश मुस्कान से अपने चाहने वालों की दीवानगी और भी बढा दी।

ग़ज़लों का जो सिलसिला शुरू हुआ और मल्का–ए–ग़ज़ल ने अपने स्वर की मीठी–मीठी थपकियों से वक्त को मदहोश करके थम जाने पर मजबूर कर दिया। तीन घंटे कब गुज़र गये इसका एहसास ग़जल प्रेमियों को तब हुआ जब इस दिलकश आवाज़ ने अपनी आख़िरी ग़ज़ल सुनाकर एकाएक सोते वक़्त को झझकोर कर उठा दिया।

मल्का–ए–ग़ज़ल ने एक से बढ़कर एक ग़ज़लें सुनाईं। तारीफ की बात तो यह थी कि हर अगली ग़ज़ल पिछली ग़ज़ल को पीछे छोड़कर आगे बढ़ती गई। ग़ज़ल की यह पुरनूर अदायगी बरसों मुन्नी बेगम की याद से ज़हन को तरोताज़ा रखेगी।

संरक्षक राम प्रकाश गोयल ने स्वर साम्राज्ञी मुन्नी बेगम का परिचय कराया। अध्यक्ष डॉ0 वी0 नारायणन ने सभी ग़ज़ल प्रेमियो का अभिनन्दन किया तथा संस्था के सचिव खुर्शीद अली ख़ाँ ने आभार व्यक्त किया।

न भूलने वाली इस हसीन शाम ने यह साबित कर दिया कि किसी भी तबके का इंसान क्यों न हो, ग़ज़ल का जादू उसके सर पर जरूर चढ़ता है और आहिस्ता–आहिस्ता उसे मदहोश कर देता है।

जी–12, रामपुर बाग, बरेली

फोन : 475074

(साँस्कृतिक संस्था 'सुर वंदन' द्वारा प्रकाशित स्मारिका 'मुन्नी बेगम' में प्रकाशित लेख)

BHAJAN - ORIGIN AND DEVELOPMENT

RAM PRAKSH GOEL
Advocate and Law Lecturer,
Bareilly College Bareilly

Music is said to be food of the Angels Ghazal is face to face amorous expression to the sweet-heart on terrestrial plane. Bhajan is symphonic manifestation of the deeprooted sentiment of praise of the Omnipotent, Omnipresent and the Omniscient on the celestial plane

The Great Mystic Poet Kabir believed in the transitoriness of life and exhorted to lead a simple, pious and dedicated life. His Bhajans - Beet gae din bhajan bina re, Maya maha thagini ham jani, and man lago mairo yar fakiri men (बीत गये दिन भजन बिना रे, माया महा ठगिनि हम जानी, मन लागो मेरो यार फकीरी में) warn us from the evil effects of the worldly mirage.

When Meera found herself completely lost and oblivious to the mundane environment, and danced and danced to the bewitching flute of Lord Krishna, hymning Pag Ghungroo bandh Meera nachee re. And, Mere to Girdhar Gopal dosro na koi (पग घुंघरू बाँध मीरा नाची रे, मेरे तो गिरिधर गोपाल दूसरो न कोई) she was presented a Venomous Cup. which she readily consumed without the least mortal effect.

Soor, the Great Blind Saint Poet, resolutely and unreservedly resigned himself to the Will Absolute chanting - Ankhiyan hari darshan ki piyasee, and Udho man na bhaye das bees (अखियाँ हरि दरसन की प्यासी, ऊधौ मन न भए दस बीस)

The fleshy eyes without deceived him; the eyes within perceived and conceived everything for him.

Tulsi, the matchless devotee of Super-man Ram, depicted his relentless and unflinching conviction in the Almighty as a last resort for the mortal and ephemeral beings in his Bhajans - Janki Nath Sahai Karain to kaun bigar kare nar tero, And, Hari tum bahut anoograha keenhon (जानकी नाथ सहाय करैं तो कौन बिगार करै नर तेरो, हरि तुम बहुत अनुग्रह कीन्हों)

Baba Hari Das, the Hermit Guru of Baijoo Bawara and Tanseen, was a land mark in the world of Classic Bhajans. The two stalwarts glorified their master's name when Deepak and Malhar Rags lit lamp and caused thunderous downpour from their Music.

Among moderns, Mohammand Rafi cannot be lost sight of His

I . Od y kcr Kl ile sun dard bharc n.ere 1.ale. (आ दुनिया के छवाले सुज दर्द भरे मेरे लाले), is still melodiously ringing in our ears

Hari Om Sharan hardly needs introduction amongst the gallaxy of hajan Pioneers.

And last, but not the least, ANUP JALOTA, the illustrious son of e Great Musician Purshotam Das Jalota, arrests our conscious attention his Bhajans drip and drip into our ears like nectar drops Anup is a name ynonymous with Bhajans. His music is Magic.

The Symphony Cultural Association is feeling elated and exalted n presenting the Bhajan-Ghazal Wizard before this august elite

(सिम्फ़ानी कल्चरल एसोसियशन, बरेली द्वारा आयोजित प्रसिद्ध गायक अनूप जलोटा के बरेली कार्यक्रम दिनांक 16.1.84 को एसोसिएशन की पत्रिका में प्रकाशित)

जलियाँवाला बाग़

राम प्रकाश गोयल

1914 का विश्व युद्ध छिड़ा हुआ था। हमारे देश वासियों ने अँग्रेजों की भरपूर सहायता की थी। दस लाख भारतीय सैनिक अँग्रेज़ों की ओर से लड़े। युद्ध कोष में डेढ़ अरब डालर हमारे देश ने इकट्ठा करके अंग्रेज़ों को दिए। विश्व युद्ध ने भारत में जागृति की लहर दौड़ाई। जनता राजनीति में दिलचस्पी लेने लगी। भारतीय सोचने लगे कि युद्ध के बाद वे भी भारत में लोकतन्त्र की स्थापना करेंगे।

मगर युद्ध के भयंकर परिणाम निकले। यहाँ की आर्थिक स्थिति कमज़ोर हो गई। आवश्यक वस्तुओं की क़ीमतें आसमान को छूने लगीं। पूँजीपति मुनाफ़ा कमाने में लगे। अनाज और कपड़ा दुर्लभ हो गया। अकाल और महामारी फैल गई।

उन दिनों पंजाब का गवर्नर था अँग्रेज़ी दरिंदा सर माइकेल ओडायर। उसका कठोर और नृशंस शासन, सेना में भर्ती करने के उसके अत्याचारी तरीके, युद्ध के लिए जबर्दस्ती वसूल किया गया धन और राजनीतिक ...ओं पर किये अत्याचारों के कारण जनता में अत्यधिक असंतोष था ... ऐसे में जनता को पीस डालने के लिए 18 मार्च 1919 को आया

दमनकारी काला कानून रोलट एक्ट। फौजदारी के मुकदमों की प्रक्रिया बदल गई। सुरक्षा के नाम पर एक सामान्य नागरिक को जेल में बन्द किया जाने लगा। मृत्यु दन्ड के मुकदमे जल्द बाजी में तय होने लगे और वह भी गुप्त रूप से । बेगुनाहों से जबर्दस्ती ज़मानतें ली जाती थी कि वे कोई अपराध नहीं करेंगे और अपना घर छोड़कर कहीं नहीं जाएंगे। उन्हें थाने में हाजिरी देने के लिए बाध्य किया जाता। न्याय के मूलभूत सिद्धान्त, व्यक्ति की स्वतन्त्रता और उसके मौलिक अधिकार समाप्त कर दिये गये। कानून नाम की कोई चीज़ न रही। न अपील, न दलील, न वकील।

जनता ने इसका डटकर विरोध किया। 30 मार्च और 6 अप्रैल 1919 को सारे देश में हड़ताल हुई। दुकानें, दफ्तर, स्कूल-कालेज सब बन्द। दिल्ली में हड़तालियों की भीड़ पर अँग्रेज शासन ने गोलियाँ चलाई जिसमें अनेक व्यक्ति मारे गये।

लोकमान्य तिलक और विपिन चन्द्रपाल के पजाब में प्रवेश करने पर रोक लगा दी गई। 7 अप्रैल को बम्बई से दिल्ली आ रहे महात्मा गाँधी को गिरफ्तार करके बम्बई वापस भेज दिया गया। अमृत बाजार पत्रिका और इन्डिपेन्डेन्ट जैसे निर्भीक समाचार पत्र पंजाब में नहीं जा सकते थे। प्रसिद्ध जनप्रिय नेता डॉ0 सैफुद्दीन किचलू और डॉ0 सत्यपाल को गिरफ्तार करके अमृतसर से दूर भेज दिया गया। जनता में उत्तेजना फैल गई। अँग्रेजों ने उन पर गोलियाँ बरसाई। जनता ने अँग्रेज़ों को मारा, टेलीफ़ोन के तार काट डाले, बैंक लूटे गए। सार्वजनिक इमारतें नष्ट की गयीं। शेर-वुड नामक एक ईसाई धर्म प्रचारिका को जनता ने मार-मार कर अधमरा कर दिया। अमृतसर ज़ालिम जनरल डायर के चार्ज में सेना के सुपुर्द हो गया।

12 अप्रैल को अनेक गिरफ्तारियाँ हुई। सभाएँ करने और एक स्थान पर एकत्रित होने पर प्रतिबन्ध लगा दिया गया। मगर जनता को इन आदेशों की कोई सूचना नहीं दी गई।

गवर्नर माइकेल ओडायर खुले आम कहता था - एक अँग्रेज़ की मौत के बदले हम एक हजार हिन्दुस्तानियों को मारेंगे। डिप्टी कमिश्नर माईल्स ने कहा, "The revenge will be taken upon you and your children" (तुमसे और तुम्हारे बच्चों से बदला लिया जाएगा)

रविवार 13 अप्रैल 1919 बैसाखी का पर्व था। शाम के 4.30 बजे जलियाँवाला बाग़ में बीस हज़ार की भीड़ अपने नेताओं के विचार सुनने के लिए इकट्ठा थी। अपनी एकता प्रदर्शित करना और अपने अधिकारों की रक्षा करना ही इन लोगों का उद्देश्य था। कुछ दूध पीते बच्चे और स्त्रियाँ

भी थीं। ला0 हंसराज भाषण दे रहे थे कि जनरल डायर अपने नब्बे राईफल और खुकरी से लैस सिपाहियों के साथ आ धमका। बिना किसी चेतावनी के उसने फायरिंग का हुक्म दे दिया। 10 मिनट तक लगातार गोलियों की बारिश निरीह, निःसहाय और निहत्थी जनता पर होती रही। फायरिंग के 1650 राउन्ड तब तक चलते रहे जब तक कारतूस और बारूद खत्म न हो गया। हर तरफ़ खून, खून और खून के फ़ब्वारे छूट रहे थे। नीच और पत्थर-दिल ज़ालिम डायर ठहाके मार-मार कर हँस रहा था। साक्षात् मृत्यु ताण्डव नृत्य कर रही थी।

इस कत्लेआम को देख रहा था अनाथालय का एक बीस वर्षीय ग़रीब नवयुवक। उसने प्रण किया कि वह अपने निर्दोष देश वासियों के बहाए गए खून का बदला अँग्रेज़ दरिंदों से ज़रूर लेगा।

और 21 वर्ष बाद लन्दन में 13 मार्च 1940 को जलियाँबाग़ के कत्ले आम के लिये ज़िम्मेदार ज़ालिम गवर्नर, माइकेल ओडायर को एक भारतीय बन्दूक़ची ने गोलियों ने भून डाला। पंजाब के भूतपूर्व लेफ्टीनेंट गवर्नर सर लुई डेन को और बम्बई के गवर्नर लार्ड लेमिंग्टन को बुरी तरह जख्मी कर दिया। वह नवयुवक और बन्दूक़ची था भारत माता का वीर सपूत ऊधम सिंह उसने अपना प्रण पूरा किया। अपने देशवासियों के बहाये गये खून का बदला ले लिया।

लन्दन में अँग्रेज़ों की अदालत में उस पर मुक़दमा चला। उसने अदालत में ज़ोर से कहा, "He (Michael O'Dwyer) deserved it. I do not care. I do not mind dying. I am dying for my country. माइकेल ओडायर इसी लायक था। मुझे परवाह नहीं। मुझे मरने का कोई गम नहीं। मैं अपने देश के लिए मर रहा हूँ।"

10 जून 1940 को ऊधम सिंह को सजाये मौत का हुक्म हुआ। और दो दिन बाद वह वीर फाँसी के तख्ते पर झूल कर शहीद हो गया।

जलियाँवाला बाग़ शहीदों का तीर्थ है, सारी दुनिया के देश भक्तों का प्रेरणा केन्द्र है। बैसाखी के पावन पर्व पर बहे बेगुनाह, निरीह और मासूम शहीदों के खून के धब्बे आज भी मिटे नहीं हैं। शहीदों की राख आज भी गर्म है।

अध्यक्ष राष्ट्रवादी विचार मच,
जी-12, रामपुर बाग, बरेली, फ़ोन : 475074

(राष्ट्रवादी विचार मंच बरेली की 1986 में प्रकाशति पत्रिका से)

आकाशवाणी वार्ताएँ
आकाशवाणी, रामपुर

वार्ताकार - रामप्रकाश गोयल

विषय - ख़ाली समय का सही उपयोग

प्रसारण 26.5.81 रात्रि 7.45 से 8 बजे तक।

प्रत्येक व्यक्ति के पास कुछ न कुछ ख़ाली समय अवश्य होता है। प्रश्न है इस ख़ाली समय के सही उपयोग का। एक दार्शनिक ने कहा है कि किसी व्यक्ति के व्यक्तित्व का मूल्यांकन इस बात से होता है कि वह अपने ख़ाली समय का उपयोग किस प्रकार करता है।

इस समस्या को हम दो दृष्टियों से देख सकते हैं। (1) स्थूल दृष्टि से और (2) सूक्ष्म दृष्टि से।

स्थूल दृष्टि से हर व्यक्ति की अपनी कोई न कोई रुचि होती है। अपनी रुचि के अनुसार व्यक्ति ख़ाली समय बिताता है। ताश और शतरंज को ही लें। जिन्हें इनका शौक़ है उन्हें पता ही नहीं चलाता कि कब कितना समय बीत गया। शतरंज का खेल तो मस्तिष्क के केन्द्रीकरण के लिए अच्छा ख़ासा अभ्यास है।

जिन लोगों को रेडियो सुनने का शौक़ है वे रेडियो सुनकर अपना ख़ाली समय बिताते हैं। सिनेमा भी एक अच्छा और सस्ता साधन है। वे टी0वी0 देखकर अपना ज्ञान-वर्द्धन करते हैं।

मैदान में खेल खेलना भी समय का उपयोग है। क्रिकेट, हॉकी, फुटबाल आदि अच्छे शौक़ हैं। जिनको खेल देखने का शौक़ है उन्हें खेल देखकर बहुत आनन्द मिलता है।

बाग़बानी भी एक शौक़ है जो आजकल पढ़े-लिखे व्यक्तियों में बढ़ रहा है। अपने घर में फल-फूल लगाकर उसे सुन्दर बनाकर एक मानसिक सुख की प्राप्ति होती है।

कुछ व्यक्तियों की रुचि सैर और भ्रमण में होती है। जंगल में, खेतों में और पहाड़ों की ओर निकल जाइये। प्रकृति माँ की गोद हमें अपने में समेट लेती है और विस्मृति के गर्त में चला जाता है कटुतापूर्ण यथार्थ।

ऐतिहासिक स्थानों को देखना भी कम शिक्षाप्रद नहीं होता। ये स्थान सहज ही हमें हमारे स्वर्णिम और गौरवमयी कला की झाँकी का दिग्दर्शन करा जाते हैं।

कुछ लोगों को फ़ोटोग्राफ़ी अथवा चित्रकारी में रुचि होती है। कुछ पुराने टिकिट अथवा सिक्के एकत्रित करते हैं किन्तु ये शौक़ जरा क़ीमती होते हैं।

महिलायें समय का उपयोग कई अन्य प्रकार से भी कर सकती हैं। आजकल पत्र-पत्रिकाओं में कढ़ाई-बुनाई और तरह-तरह के स्वादिष्ट भोजन बनाने की विधियाँ छपती रहती हैं। वे उनको सीखें। नये-नये स्वादिष्ट व्यंजन बनाकर अपने परिवार को बनाकर खिलायें। जो महिलायें जितने अधिक प्रकार के व्यंजन बनाकर अपने परिवार को खिलाती हैं, वह परिवार की उतनी ही प्रिय होती हैं। एक लेखक ने तो यहाँ तक लिखा है कि जो पत्नी अपने पति को जितना स्वादिष्ट भोजन खिलाती है, वह उतना ही अधिक पति का प्यार पाती है किन्तु कितनी महिलायें हैं जो इस ओर ध्यान देती हैं। अतः महिलाओं को अवश्य इस गुण को विकसित करने का प्रयास करना चाहिए।

ख़ाली समय को उपयोग करने के जो रूप अब तक बताये गये, वे स्थूल एवं बाह्य थे। कुछ रूप ऐसे भी हैं जिनसे हमारे व्यक्तित्व का वास्तविक विकास होता है। इनको सूक्ष्म रूप की श्रेणी में रखा जा सकता है।

मनुष्य असीम शक्तियों का भण्डार है। प्रयत्न और परिस्थिति छिपी और दबी हुई शक्तियों को उजागर करते हैं। देखा जाये तो ख़ाली समय का उपयोग कर सकना भी एक कला है। सृजन करने की स्वाभाविक प्रवृत्ति हर मनुष्य में है। कुछ बनाकर, कुछ रचकर मन में एक विचित्र सुखानुभूति होती है।

कुछ व्यक्तियों की साहित्यिक प्रवृत्ति होती है। वे अपने समय का उपयोग पढ़ने-लिखने में कर सकते हैं। पुस्तकों से अच्छा और स्वामिभक्त अन्य कोई मित्र नहीं है। अपनी रुचि के अनुसार कोई पुस्तक उठा लीजिए, और उसमें डूब जाइए। आपको खाने-पीने की भी सुधि न रहेगी।

यदि आपको लिखने का शौक़ है तब तो कहना ही क्या? लिखिये, अवश्य लिखिये। स्वान्तः सुखाय लिखिये। आत्म-अभिव्यक्ति से बढ़कर अन्य आनन्द नहीं। कितनी बातें, कितने विचार हैं जो हमारे मन में घुटते रहते हैं। लिखकर व्यक्त कर देने से लगता है कि कितना बोझ था जो उतर गया किन्तु लेखन में प्रामाणिकता और सच्चाई अत्यावश्यक है। अपने को धोखा मत दीजिये। जो विचार जिस रूप में अन्दर घुट रहा हो उसे वैसा ही व्यक्त कीजिए। यही तो लेखन की सच्चाई और ईमानदारी है।

कुछ व्यक्ति स्वभाव से कवि-हृदय होते हैं। कवित्व रस से बढ़कर

अन्य रस नहीं। परमात्मा ने जिन्हें कविता लिखने का गुण दिया है वे कविता लिखे बिना रह ही नहीं सकते।

यही बात संगीत के सम्बन्ध में है। गायन, वादन एवं नृत्य-जिसमें जिसकी रुचि हो – उसका अभ्यास किया जाये।

कविता और संगीत का आनन्द गूँगे के गुड़ जैसा है। इसे केवल अनुभव किया जा सकता है, व्यक्त करना असम्भव है।

जिन्हें कविता और संगीत सुनने में रुचि हो वे सुनकर अपने समय का उपयोग अवश्य करें।

एक अन्य सूक्ष्म रूप और समय के उपयोग का है जिसे हम चिन्तन-मनन कहते हैं। चिन्तन-मनन द्वारा व्यक्तित्व व जीवन में निखार आता है और जीवन की समस्याओं को शान्त मन से गम्भीरता पूर्वक विचार करने का अभ्यास पड़ता है। आज का मनुष्य सुबह से रात तक एक मशीन की तरह काम करता रहता है। चिन्तन-मनन का समय ही उसके पास नहीं। अपने किये गये कार्यो और जीवन की समस्याओं पर निष्पक्ष भाव से चिन्तन-मनन कर सकना सरल नहीं होता किन्तु अभ्यास से सब कुछ सम्भव है।

अन्त में ख़ाली समय के सही उपयोग के एक और रूप की ओर भी ध्यान आकर्षित करना चाहूँगा। कुछ देर के लिए हम अपने को ऐसी स्थिति में ले आयें जब कोई विचार हमारे मस्तिष्क में न आये। इसको पातजलि योग दर्शन में 'योगाश्चित्तवृति निरोध' कहा गया है। नितान्त विचार शून्यता की स्थिति State of complete Thoughtlessness सुनने में हास्यास्पद-सा लगता है कि जिस मस्तिष्क का कार्य विचार करना है वह विचार-शून्य कैसे हो सकता है ? किन्तु अभ्यास से यह सम्भव है। विचार शून्यता की स्थिति आने से मानसिक तनाव स्वभावतः कम हो जाता है और मन को अद्भुत शान्ति मिलती है। मस्तिष्क को विश्राम मिलने से हम एक विचित्र आन्तरिक भार-हीनता और आत्मिक सतोष की अनुभूति करते हैं। परिणाम यह होता है कि हमारी दबी और छिपी हुई शक्तियाँ उभरकर मन के चेतन स्तर पर आ जाती हैं। आज के संघर्षमय जीवन में यदि सतत अभ्यास द्वारा हम ऐसा कर पायें तो इससे अच्छा ख़ाली समय का सदुपयोग अन्य कोई न होगा और यह स्वयं में एक उपलब्धि भी होगी।

आकाशवाणी, बरेली

विषय - उपभोक्ता संरक्षण अधिनियम

प्रसारण - 26-6-93

वार्ताकार - राम प्रकाश गोयल

उपभोक्ता वह व्यक्ति है जो कीमत देकर कोई माल ख़रीदता है और अपेक्षा करता है कि वह माल गुणवत्ता, मात्रा, क्षमता, शुद्धता और मानक के अनुसार सही हो किन्तु ऐसा हो नहीं पाता। पूरी क़ीमत देकर भी उपभोक्ता को शुद्ध और मात्रा में पूरा माल नहीं मिलता। जब वह माल वापस करने दुकानदार के पास जाता है तो दुकानदार झगड़ा करता है और वापस करने के बहाने बताता है।

उपभोक्ता के अधिकार के सम्बन्ध में अब तक कुछ क़ानून थे जैसे (Prevention of Food Adulteration Act) (खाद्य अपमिश्रण निवारण अधिनियम) (Essential Commodities Act) (आवश्यक वस्तु अधिनियम) तथा (Weight and Measurement Act) (बाट और माप अधिनियम) आदि। इन क़ानूनों के द्वारा मिलावट रोकने, कालाबाज़ारी और जमाख़ोरी ख़त्म करने तथा सही मात्रा और वज़न में उपभोक्ता को माल दिलाने का प्रयत्न किया गया। हज़ारों व्यक्तियों के चालान किये गये और यह मुक़दमें अदालतों में चल रहे हैं। बहुतों को सज़ाएँ हुयी किन्तु फिर भी व्यवस्था नहीं सम्भली और मिलावट, कालाबाज़ारी, जमाख़ोरी आदि अपराध होते रहे और उपभोक्ता पहले से और अधिक परेशान रहा।

उपभोक्ताओं का शोषण रोकने, उनके हितों को और अधिक दृढ़ता से संरक्षण प्रदान करने तथा उनमें अपने अधिकारों के प्रति जागरूकता उत्पन्न करने के उद्देश्य से भारत सरकार ने "उपभोक्ता संरक्षण अधिनियम 1986" बनाया। देश के सामाजिक एवं आर्थिक कानूनों के इतिहास में यह अधिनियम एक महत्वपूर्ण क़दम है जो भारत सरकार द्वारा इग्लैंड, अमरीका, आस्ट्रेलिया और न्यूजीलैंड में लागू उपभोक्ता संरक्षण क़ानूनों तथा व्यवस्थाओं का गहराई से अध्ययन करने के बाद उठाया गया है। यह कानून अन्य वर्तमान कानूनों की तरह दण्डात्मक तथा निरोधात्मक नहीं है। इसके उपबन्धों में उपभोक्ता को शोषण से बचाने और क्षतिपूर्ति करने की व्यवस्था है। उपभोक्ता की शिकायत की शीघ्रता से, सरल तरीके से तथा बिना

किसी खर्चे क दूर करने की व्यवस्था है यह अधिनियम सभी वस्तुओं तथा सेवाआ पर निजी, सार्वजनिक तथा सभी सहकारी क्षेत्रों पर लागू है। इसमें माल के विपणन के विरुद्ध (जो जीवन और सम्पत्ति के लिए खतरनाक हो) संरक्षण पाने का अधिकार, माल की गुणवत्ता, मात्रा, क्षमता, शुद्धता, मानक और मूल्य सूचित किये जाने के अधिकार और उपभोक्ता को शोषण के विरुद्ध क्षतिपूर्ति के अधिकार का उल्लेख है।

इस अधिनियम में राष्ट्रीय, राज्य तथा ज़िला स्तरों पर एक तीन स्तरीय अर्द्ध न्यायिक तन्त्र की स्थापना करने की व्यवस्था है। अधिनियम में उपभोक्ताओं के अधिकारों का उल्लेख किया गया है।

यह अधिनियम सभी वस्तुओं तथा सेवाओं पर लागू होता है। केवल वही वस्तुएँ तथा सेवाएँ इसके अन्तर्गत नहीं आयेंगी जिन्हें केन्द्रीय सरकार ने विशिष्ट रूप से छूट दे दी हो। बैंकिंग, फाइनेन्सिंग, इंश्योरेन्स, ट्रान्सपोर्ट, बिजली, टेलीफ़ोन और होटल आदि की सेवाएँ इस अधिनियम के अन्तर्गत आती हैं।

हर वह व्यक्ति उपभोक्ता है जो पैसा देकर कोई वस्तु ख़रीदता है अथवा सेवा प्राप्त करता है। यदि ख़रीदी गयी वस्तु की गुणवत्ता, मात्रा, क्षमता, शुद्धता, मानक और मूल्य के बारे में ख़रीददार उपभोक्ता को कोई शिकायत है तो वह अपनी शिकायत फ़ोरम के समक्ष प्रस्तुत कर सकता है। इसी प्रकार यदि पैसा देने के बाद भी सेवाएँ ग़लत तरीक़े से अथवा त्रुटिपूर्ण ढंग से उपभोक्ता को प्राप्त होती हैं तो इसकी शिकायत कर सकता है। शिकायत दायर करने का कोई शुल्क अथवा कोई फ़ीस लगाने की आवश्यकता नहीं है।

यदि माल अथवा सेवाओं का मूल्य तथा क्षतिपूर्ति के लिए माँगी गयी रक़म पाँच लाख रुपये तक है तो शिकायत जिला फ़ोरम मे दायर होगी। यदि यह राशि पाँच लाख रुपये से अधिक किन्तु बीस लाख रुपये तक है तो शिकायत 'राज्य आयोग' में दायर होगी। यदि माल अथवा सेवाओं का मूल्य तथा क्षतिपूर्ति की माँगी गयी राशि बीस लाख रुपये से अधिक है तो शिकायत नयी दिल्ली स्थित 'राष्ट्रीय आयोग' में दायर की जा सकती है।

शिकायतकर्ता को तथ्य लिखकर सादे काग़ज़ पर देने होते हैं जिसमें अपना नाम तथा पता, विरोधी पक्ष का नाम और पता, शिकायत से सम्बन्धित तथ्य, वह कब और कहाँ पैदा हुए, शिकायत में लगाये गये आरोपों के समर्थन में दस्तावेज़ (यदि कोई है) तथा वह राहत जो शिकायतकर्ता चाहता है, होने चाहिये।

उपभोक्ता फ़ोरम दोनों पक्षों के सबूत लेने के बाद अपना निर्णय देता है और आदेश दे सकता है कि माल की त्रुटि दूर की

जाये, माल को बदला जाये अथवा अदा किया गया मूल्य वापस किया जाए अथवा उपभोक्ता द्वारा सहन की गयी हानि या क्षति को पूरा किया जाये। ज़िला फ़ोरम के निर्णय के विरुद्ध राज्य आयोग में, राज्य आयोग के निर्णय के विरुद्ध राष्ट्रीय आयोग में, राज्य आयोग के निर्णय के विरुद्ध सर्वोच्च न्यायालय (सुप्रीम कोर्ट) में 30 दिन के अन्दर अपील की जा सकती है। अपील में भी कोई शुल्क नहीं लगेगा तथा वही प्रक्रिया होगी जो शिकायत करने की है। अपील के आवेदन पत्र में ज़िला फ़ोरम, राज्य आयोग अथवा राष्ट्रीय आयोग के आदेश की प्रतिलिपि लगेगी और अपील दायर करने के कारण और आधार का उल्लेख होना चाहिए।

फ़ोरम के आदेश की मान्यता उसी प्रकार से है जैसे दीवानी न्यायालय द्वारा किसी मुक़दमे के निर्णय की होती है तथा यह आदेश उसी प्रकार निष्पादित किया जा सकता है।

एक दण्डात्मक प्राविधान भी इस अधिनियम के अन्तर्गत बनाया गया है। यदि निर्णय हो जाने के बाद भी विपक्षी निर्णय का पालन नहीं करता है तो उसे कम से कम एक मास के लिए और अधिक से अधिक 3 वर्ष के लिए कारावास की सज़ा अथवा कम से कम 2000/- का जुर्माना और अधिक से अधिक 10000/- का जुर्माना अथवा दोनों से दंडित किया जा सकता है।

इस अधिनियम से सम्बन्धित लाखों मुक़दमे देश के भिन्न भिन्न ज़िलों में चल रहे हैं और उपभोक्ताओं को सरल तरीक़े से बिना कुछ ख़र्च किये न्याय मिल रहा है। इस सम्बन्ध में कुछ दिलचस्प मुक़दमों का विवरण देना आवश्यक होगा।

लखनऊ के एक उपभोक्ता ने 26 रुपये का डाक टिकट लगाकर स्पीड पोस्ट सेवा से 31.5.90 को एक पत्र गोआ भेजा जिसमें उसने अपने छोटे भाई की विधवा पत्नी की बीमारी की सूचना अपने पुत्र को भेजी थी और उसे तुरन्त लखनऊ आने के लिए लिखा था। यह पत्र 5.6.90 को उपभोक्ता के पुत्र को मिला जबकि 5 6 90 को ही उसकी चाची की मृत्यु लखनऊ में हो गयी और वह उसे देख भी न सका। उपभोक्ता ने स्पीड पोस्ट सेवा त्रुटिपूर्ण होने के कारण डाक विभाग के विरुद्ध शिकायत दायर की। फ़ोरम ने डाक विभाग को 1000/- बतौर हर्जाना व 26/- डाक टिकट का मूल्य शिकायतकर्ता को भुगतान करने का आदेश दिया।

उपभोक्ता चाँदी के ज़ेबर की दुकान करता था और उसने अपनी दुकान में उपलब्ध चाँदी के आभूषणों का एक लाख पिच्चासी हजार का बीमा कराया। 18/19 जनवरी 1990 की रात में दुकान में चोरी

हो गयी जिसकी क्षतिपूर्ति के लिये उसने फोरम में दावा दायर किया बीमा कम्पनी के विरोध का आधार यह था कि ज़ेवर बर्गलर प्रूफ़ सेफ़ मे नहीं रखे थे, इसलिए क्लेम नहीं दिया सकता।

उपभोक्ता ने बीमा कराने के लिए जो फार्म भरा था उसमें इस बात का स्पष्ट उल्लेख किया गया था कि उसके पास बर्गलर प्रूफ़ सेफ नहीं है बल्कि वह साधारण लोहे की अलमारी में ही जेबर बन्द करके रखता है। दुकान के बाहर लोहे का शटर बन्द करता है। बीमा कम्पनी ने उसका यह फ़ॉर्म स्वीकार करके प्रीमियम लिया था। फोरम ने निर्णय दिया कि बीमा कम्पनी को क्षतिपूर्ति के रूप में 75775/- देने होगें जिस पर 1 जुलाई 1990 से 18 प्रतिशत व्याज भी देय होगा।

एक और बड़ा दिलचस्प मामला फ़ोरम के सामने निर्णय के लिए आया। परिवादी ने सिनेमा स्टैड पर अपना स्कूटर रक्खा जिसके लिए एक रुपया स्कूटर स्टैंड के मालिक को दिया। सिनेमा ख़त्म होने के बाद जब वह स्टैण्ड पर आया तो उसे स्कूटर नहीं मिला। उसने स्कूटर गुम होने की रिपोर्ट थाने में लिखवायी तथा स्कूटर स्टैण्ड मालिक के विरुद्ध शिकायत दर्ज करायी और अनुरोध किया कि या तो उसे स्कूटर वापिस दिलाया जाए अथवा उसकी कीमत 16000/-. स्टैण्ड मालिक से दिलायी जाये। फ़ोरम ने निर्णय दिया कि स्कूटर परिवादी को वापिस नहीं देने से उसकी सेवा दोषपूर्ण रही तथा स्टैण्ड का मालिक परिवादी को स्कूटर की कीमत 14000/- दो माह के अन्दर अदा करे।

इस प्रकार हम देखते हैं कि इस अधिनियम के अंतर्गत उपभोक्ता को सरल, सुलभ और बिना किसी जटिलता के न्याय मिल रहा है और उसे अपने मुक़दमे के लिए कुछ खर्च भी नहीं करना पडता है। इंश्योरेन्स, टेलीफ़ोन, बिजली, फ़ाइनेन्स कम्पनी, रेलवे, ट्रान्सपोर्ट और दुकानदारों के खिलाफ़ कितने ही मुक़दमे उपभोक्ता संरक्षण फ़ोरम ने निपटाये हैं और लाखों परिवाद अब भी लम्बित हैं। देश की प्रगति और उपभोक्ता के अधिकारों के संरक्षण की दिशा में यह क़ानून मील का पत्थर साबित हुआ है।

जी-12, रामपुर बाग़, बरेली
फ़ोन 0581-475074

आकाशवाणी – बरेली

विषय – क़ानून और न्याय व्यवस्था
वार्ताकार – राम प्रकाश गोयल एडवोकेट
प्रसारण – 19.2.94 सायं 6 बजे

क़ानून उन सिद्धान्तों की श्रृंखला को कहते हैं जो राज्य द्वारा न्याय संगत प्रशासन के लिये निर्धारित और मान्य की गयी हैं। क़ानून न तो अधिकार का ही और न केवल शक्ति का नाम है बल्कि इन दोनों का पूर्ण समन्वय है।

कानून राजाओं का भी राजा है। उससे शक्तिशाली अन्य कोई नहीं। इसकी सहायता से कमज़ोर से कमज़ोर व्यक्ति भी शक्तिशाली व्यक्ति पर विजय प्राप्त कर सकता है।

क़ानून सत्ता का वह आदेश है जिसे नागरिक मानने को विवश हैं और न्यायालय उन सिद्धान्तों को जनता से अपने आदेश के द्वारा मनवा सकता है। यह कहना उचित होगा कि क़ानून राज्य द्वारा लागू किये गये अधिकारों और कर्त्तव्यों की व्याख्या का दूसरा नाम है।

डेमिस्थिनीज ने तो यहाँ तक कहा है कि क़ानून भगवान की देन है और ऋषि मुनियों का निर्णय है।

मानव सभ्यता के आरम्भ से ही क़ानून को ईश्वरीय आदेश अथवा देश की परम्पराओं के रूप में माना गया है।

क़ानून राज्य की आवाज़ के रूप में मनुष्यों द्वारा की गयी न्याय की पुकार है।

क़ानून के अन्तर्गत वे सभी नियम आते हैं जिनके अनुपालन में न्यायालय अपने निर्णय देते हैं और जिन्हें वकील अपने पेशे के अन्तर्गत प्रयोग में लाते हैं।

क़ानून का मुख्य उद्देश्य न्याय करना है। यह स्वयं में एक साधन मात्र है जिसका साध्य और सिद्धि न्याय करना है। कितना भी अच्छा क़ानून क्यों न बना हो किन्तु यदि उसके द्वारा व्यक्ति को न्याय नहीं मिलता तो ऐसे क़ानून का कोई अर्थ नहीं। यही सिद्धि किसी भी राज्य के बनने और स्थिर रहने का मुख्य उद्देश्य भी है।

क़ानून के निश्चित और दृढ़ सिद्धान्तों के कारण एक रूपता एव निश्चयात्मकता आती है। निरंकुश, एवं पक्षपातपूर्ण निर्णय से मुक्ति

मिलती है तथा व्यक्तिगत निर्णयों की त्रुटियों से बचाव होता है। हर व्यक्ति और न्यायाधीश का अपना अपना सोच और विचार है और उसके अनुसार ही वह व्यक्ति अपने विवेक का उपयोग करता है। कानून के निश्चित हो जाने से व्यक्ति उसके अनुसार ही सोचने और निर्णय देने के लिये विवश है।

वास्तविक न्याय वही है जो किसी तर्कसंगत एवं युक्तियुक्त व्यक्ति को उचित प्रतीत होता हो। न्याय के सामने छोटा बड़ा, ग़रीब अमीर, कमज़ोर ताक़तवर सब बराबर हैं। न्याय व्यक्ति का अधिकार है। शासित और शासन राजा और प्रजा दोनों बराबर हैं और समान रूप से न्याय पाने के अधिकारी हैं।

भारत के संविधान ने नागरिकों को अनेक स्वतंत्रताएँ प्रदान की हैं जैसे –

1 भाषण और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता। व्यक्ति अपने विचारों को खुलकर बिना किसी भय के व्यक्त कर सकता है।
2 शान्तिपूर्वक और बिना हथियारों के इकट्ठा होने की स्वतंत्रता।
3 संघ बनाने की स्वतंत्रता। नागरिक अपने विकास के लिए संगठन और संस्थाएँ बना सकता है।
4 भ्रमण की स्वतंत्रता। नागरिक देश के एक कोने से दूसरे कोने तक बिना किसी रोक–टोक या प्रतिबंध के आ जा सकता है।
5 आवास की स्वतंत्रता। नागरिक जहाँ चाहे रह सकता है। अपनी शक्ति और सामर्थ्य के अनुसार मकान ले सकता है।
6 पेशे अथवा व्यवसाय की स्वतंत्रता । अपने अनुकूल कोई भी पेशा अथवा व्यवसाय अपना सकता है।

ये सब स्वतंत्रताएँ हमें संविधान ने दी हैं – जिन्हें नागरिक का मूल अधिकार कहते हैं। यदि कोई व्यक्ति इन स्वतंत्रताओं का उलंघन करता है, तो न्यायालय अपने आदेश के द्वारा उस व्यक्ति को इन्हें मानने के लिये बाध्य कर सकता है – चाहे वह राज्य या शासक ही क्यूँ न हो।

अपराध के मामलों में भी न्याय व्यवस्था ने कुछ अधिकार अपराधी को दिये हैं। अपराधी को दंड एक निश्चित प्रक्रिया के द्वारा ही दिया जायेगा। अपराध करते समय जो क़ानून होगा उसके अनुसार ही अपराधी को दंड मिलेगा।

एक अपराध के लिये उसे केवल एक बार ही दंडित किया जाएगा। यदि वह निरपराध घोषित किया जाता है तो उसी अपराध के

लिये उस पर दोबारा मुक़दमा नहीं चलेगा।

प्रायः देखने में आता है कि पुलिस अपराधी को पकड़कर बद कर देती है और कई दिन तक उसको अपनी हिरासत में रखकर प्रताड़ित करती है। ऐसी परिस्थितियों से बचने के लिए संविधान ने स्पष्ट आदेश दिये हैं-

1 अपराधी को गिरफ़्तार करने के बाद शीघ्रातिशीघ्र उसे यह जानने का अधिकार है कि उसे क्यों और किस अपराध में गिरफ़्तार किया गया है।

2 उसे अपनी इच्छा के अनुसार अपना वकील करने और बचाव करने का अधिकार है।

3. गिरफ्तारी के बाद 24 घंटे के अन्दर पुलिस उसे किसी मैजिस्ट्रेट के समक्ष अवश्य पेश करेगी और बिना मैजिस्ट्रेट की आज्ञा के अपराधी को 24 घंटे के बाद हिरासत में नहीं रखा जा सकता।

यदि इन संरक्षणों का उल्लंघन पुलिस करती है तो व्यक्ति न्यायालय की शरण में जाकर अपनी गिरफ्तारी को अवैध घोषित करा सकता है।

इस प्रकार हम देखते हैं कि क़ानून और न्याय व्यवस्था एक दूसरे के पूरक हैं। वह क़ानून व्यर्थ है जिससे समाज को न्याय न मिले। क़ानून तो मात्र साधन है साध्य तो न्याय प्राप्ति है। सबसे अच्छा शासन वही है जो क़ानून के अनुसार चले और जिससे जनता के हर वर्ग को न्याय मिले। किन्तु हम देखते हैं कि क्रियात्मक रूप में ऐसा हो नहीं पाता। क़दम क़दम पर आज क़ानून और न्याय व्यवस्था की धज्जियाँ उड़ाई जा रही हैं। व्यक्ति का जीवन अत्यन्त असुरक्षित हो गया है। घर से निकलने के बाद वह घर वापिस भी आ सकेगा - यह विश्वास आज नागरिक को नहीं रह गया है। कब किस मामले में पकड़ कर व्यक्ति को बंद कर दिया जाये, इसका उसे पता नहीं होता।

बड़े दुख की बात है कि आज अपराध का राजनीतिकरण हो रहा है और राजनीति का अपराधीकरण। यही वजह है कि न्याय व्यवस्था से नागरिक का विश्वास उठता जा रहा है। अच्छा प्रशासन वही है जहाँ शासक और प्रजा दोनों समान रूप से क़ानून का पालन करें और न्याय के शासन को स्थापित करने में एक दूसरे का सहयोग करें। क़ानून और न्याय व्यवस्था से ही समाज में सुख, शाँन्ति और सौहार्द स्थापित हो सकता है।

प्रो0 राम प्रकाश गोयल के अपने मुक़दमे

मुक़दमेदारी का लम्बा सफ़र

1968 में बरेली कॉलेज बरेली के लॉ डिपार्टमेन्ट में दो स्थान खाली हुए थे। 27 वकील इण्टरव्यू के लिए आए। कॉलेज की चयन समिति ने मेरे मित्र स्वर्गीय श्री मुरारीलाल सक्सेना का और मेरा लॉ लेक्चरार के लिए चयन किया और हम दोनों ने 22 जुलाई 1968 को पढ़ाना शुरू किया।

उन दिनों बरेली कॉलेज, आगरा विश्वविद्यालय से सम्बद्ध था। कॉलेज द्वारा की गई नियुक्ति अनुमोदन के लिए वाइस चांसलर (कुलपति) को भेजी गई। उन्होंने केवल एक वर्ष के लिए इन नियुक्तियों की स्वीकृति दी और उसके बाद अनुमोदन नहीं दिया। अतः कॉलेज ने हमारी सेवाएँ समाप्त कर दीं।

मैं बहुत परेशान हो गया, क्योंकि कुलपति ने अस्वीकृति देने का कोई कारण नहीं बताया था। मेरा कोई दोष नहीं था। हम दोनों के पढ़ाने से प्रिंसिपल, प्रबन्ध समिति और विद्यार्थी सन्तुष्ट थे। मैं बराबर सोचता रहा कि यह अन्याय है। अनेक साथी वकीलों से सलाह मशविरा किया मगर उन्होंने ने भी कोई रास्ता नहीं सुझाया। एकाएक मुझे ध्यान आया कि क्यों न आगरा विश्वविद्यालय अधिनियम के अनुमोदन से सम्बन्धित प्राविधानों का अध्ययन किया जाय। मैं सुबह 6 बजे तक बराबर पढ़ता रहा मगर कोई भी नतीजा नहीं निकला और मैं निराश होकर लेट गया। मुझे बहुत बेचैनी हो रही थी और नींद नहीं आ रही थी। हिम्मत करके मैं एक बार फिर उठा और पढ़ना शुरू किया। अकस्मात ही मुझे क़ानून की किताब में अपना रास्ता मिल गया और मैं खुशी से नाच उठा।

25 मई 1969 को इलाहाबाद हाईकोर्ट गया। उन दिनों हाईकोर्ट की गर्मियों की छुट्टियाँ हो चुकी थीं और अच्छे वकील छुट्टियाँ मनाने बाहर जा चुके थे। जो वकील थे उन्हें मैंने अपना

कानूनी दृष्टिकोण बताया मगर उन्होंने कोई आश्वासन नहीं दिया। मैं तीन चार दिन तक अकेला परेशानी और मानसिक तनाव में सुबह से शाम तक इलाहाबाद की गर्मी में वकीलों के चक्कर काटता रहता। आख़िर में श्री राजाराम अग्रवाल एडवोकेट से सलाह करके मैंने रिट दायर कर दी। हाईकोर्ट के जज महोदय ने स्टे देने से पहले यूनीवर्सिटी का पक्ष सुनने का आदेश दिया और एक महीने की तारीख़ डाल दी। मैं जहाँ का तहाँ रह गया और निराश होकर बरेली वापस आ गया।

एक महीने बाद मैं फिर हाईकोर्ट गया। दोनों पक्षों की बहस सुनने के बाद जज महोदय ने मुझे स्टे दे दिया और आदेश दिया कि मुझे पढ़ाने से न रोका जाय और जब तक रिट का निर्णय न हो जाय तब तक मेरे स्थान पर कोई नियुक्ति न की जाय। मैं स्टे लेकर बरेली आया और प्रिंसिपल महोदय को उसकी प्रतिलिपि दी। वे भी बहुत खुश हुए।

मैंने अपने मित्र सक्सेना को बहुत गालियाँ दीं और बाध्य किया कि वह भी रिट दायर करके स्टे ले आएँ क्योंकि अब उन्हें कोई परेशानी न होगी और पकी पकाई खीर खालें। उनकी समझ में मेरी बात आ गयी और वे भी स्टे ले आए। हम दोनों ने जौलाई में फिर शिक्षण कार्य आरम्भ कर दिया।

8 सितम्बर 1969 को न्यायमूर्ति श्री सतीश चन्द्रा के सामने हमारी रिट की बहस शुरू हुई। उस दिन मेरा बुरा हाल था। मुझे अनुभव हो रहा था कि मुक़दमे के कारण कोई मुवक्किल कितनी परेशानी और तनाव में रहता है। मैं वकील होते हुए भी एक मुवक्किल बना हुआ था। हमारी बहस का आधार आगरा विश्वविद्यालय अधिनियम की धारा 25 (4) थी। उसमें लिखा था कि नियुक्ति का अनुमोदन तो कुलपति स्वयं कर सकता है किन्तु यदि वह अनुमोदन नहीं करना चाहता है तो इसके लिए विश्वविद्यालय द्वारा गठित 'चयन समिति' की स्वीकृति लेनी आवश्यक होगी। चयन समिति की स्वीकृति के बाद ही वह नियुक्ति की अस्वीकृति करेगा। चूँकि कुलपति ने चयन समिति की स्वीकृति के बिना ऐसा किया था इसलिए उनका आदेश निरस्त होने योग्य था। जज महोदय ने यह तर्क मान लिया और कुलपति का आदेश निरस्त कर दिया।

कुलपति महोदय ने उच्च न्यायालय में दो जजों के सामने अपील कर दी और स्टे आर्डर प्राप्त कर लिया। एक जज द्वारा दिया गया निर्णय अपील का निर्णय होने तक रोक दिया गया। परिणाम यह हुआ कि हमारी सेवाएँ समाप्त हो गईं और हमें शिक्षण कार्य से रोक दिया गया।

पूरी रात जागकर हम दोनों ने स्टे आर्डर के विरुद्ध अपना जवाब तैयार किया और सुबह की गाड़ी पकड़कर इलाहाबाद जा पहुँचे। खण्डपीठ (दो जज) के सामने स्टे आर्डर के विरुद्ध बहस हुई। जज महोदय ने आदेश दिया कि अपील के निर्णय होने तक हम लोग पहले की तरह शिक्षण कार्य करते रहेंगे। हम लोगों ने शिक्षण कार्य फिर आरम्भ कर दिया।

30 जनवरी 1970 को अपील में बहस हुई। खण्डपीठ ने एक जज वाले निर्णय को यथावत् रक्खा किन्तु अपने आदेश में यह लिख दिया कि कुलपति महोदय चाहे तो नियुक्ति की स्वीकृति पर पुनः विचार कर सकते हैं। कुलपति इस निर्णय से बहुत प्रसन्न हुए क्योंकि उन्हें हमारे विरुद्ध आगे की कार्यवाही करने का अधिकार प्राप्त हो गया।

कुलपति ने चयन समिति की स्वीकृति ले ली और हमारी नियुक्ति को अपने मार्च 1970 के आदेश द्वारा अस्वीकृत कर दिया। हम लोग फिर पूर्व स्थिति पर आ गए।

इन आठ महीनों में मेरे इलाहाबाद के आठ चक्कर लगे थे। मैं बहुत थक चुका था। मानसिक खिंचाव भी बहुत था। दोबारा अस्वीकृति हो जाने के कारण मैं बहुत निराश हुआ। कुलपति के पिछले आदेश में जो कमी थी वह पूरी हो गई। अब कोई रास्ता दिखाई नहीं दे रहा था। अब तक की लड़ाई सब बेकार हो गई। मैंने सच्चे मन से परमात्मा का ध्यान किया और प्रार्थना की कि वह मेरा मार्गदर्शन करे। दो वकील ही क़ानून के जाल में फँस गए थे। मैंने नए सिरे से क़ानून का अध्ययन किया। क़ानूनी मुद्दे ये थे कि क्या एक नियुक्ति की एक से अधिक बार स्वीकृति / अस्वीकृति हो सकती है? तथा क्या एक अस्वीकृति न्यायालय द्वारा रद्द होने के पश्चात दुबारा दी जा सकती है। प्रमुख विचारणीय प्रश्न यह भी था कि एक वर्ष का

परीक्षणकाल (प्रोवेशन पीरियिड) ख़त्म हो जाने के बाद क्या नियुक्ति की स्वीकृति अपने आप नहीं हो गई ? क्योंकि यह अस्वीकृति प्रोवेशन पीरियड के बीत जाने के बाद दी गई थी। अतः क्या यह अवैध नहीं है ? ऊपर लिखे इन आधारों पर हमने सिविल जज बरेली के न्यायालय में 26 मार्च 1970 को मुक़दमा दायर कर दिया। न्यायालय ने आदेश दिया कि अगले आदेश तक हम लोगों की सेवाएँ समाप्त न की जायें और हमे कार्य करने दिया जाए।

इस आदेश की एक प्रति कुलपति महोदय के पास आगरा भेज दी गई। बरेली न्यायालय में दोनों ओर से काफ़ी बहस हुई। सिविल जज महोदय ने अपना पिछला आदेश यथावत् रक्खा। उनका निर्णय था कि परीक्षण काल के अन्दर ही नियुक्ति की स्वीकृति / अस्वीकृति की जा सकती है। यदि परीक्षण काल समाप्त हो गया है तो स्वीकृति / अस्वीकति नहीं दी जा सकती और नियुक्ति की स्वीकृति स्वयमेव मान ली जाएगी।

कुलपति ने इस आदेश के विरुद्ध ज़िला जज के न्यायालय में अपील दायर कर दी किन्तु वहाँ से भी उन्होंने मुँह की खाई और उनकी अपील ख़ारिज हो गई। अपील के निर्णय के एक माह बाद हमे इलाहाबाद हाई कोर्ट का नोटिस मिला जिससे पता चला कि ज़िला जज के निर्णय के विरुद्ध कुलपति ने हाईकोर्ट में रिवीजन दायर कर दिया है। एक बार फिर हम लोग त्रिवेणी संगम पर इलाहाबाद जा पहुँचे। वहाँ फिर बहस हुई मगर हाई कोर्ट ने सिविल जज के आदेश के क्रियान्वयन को नहीं रोका। इस प्रकार रिवीजन हाईकोर्ट में, मुक़दमा बरेली में और हम लोग यथावत् कॉलेज में चलते रहे।

उन दिनों श्री शीतल प्रसाद कुलपति थे, उनका कार्यकाल फरवरी 1972 में समाप्त होने वाला था। मैंने सोचा मैं अपने मुक़दमे को फ़रवरी 1972 तक टालता रहूँ ताकि इन कुलपति का कार्यकाल समाप्त हो जाय।

मेरी नियुक्त के बाद इन तीन वर्षों में पाँच वकीलों की लॉ डिपार्टमेन्ट में नियुक्ति और हो गई थी। इनमें से एक लेक्चरार तो मेरे ख़िलाफ़ खुले आम कुलपति महोदय की ओर से न्यायालय में

वकालत कर रहे थे तथा और भी लेक्चरार उनका साथ दे रहे थे। वे सभी चाहते थे कि मैं मुक़दमा हार जाऊँ और मेरी सेवाएँ समाप्त हो जाएँ ताकि वे लोग मुझसे वरिष्ठ हो जाएँ।

मैं बरेली के मुक़दमे को फरवरी 1972 तक टालता रहा और श्री शीतल प्रसाद कुलपति का कार्यकाल समाप्त हो गया। उनके स्थान पर श्री बाल कृष्ण राव कुलपति नियुक्त हुए। वे अँग्रेज़ों के वक़्त के आई0सी0एस0 थे। उनकी समझदारी और निष्पक्षता की काफ़ी शोहरत थी। हम लोगों ने विचार किया कि उनसे मिला जाय और अपने केस की वास्तविक स्थिति से उन्हें अवगत कराया जाय।

अप्रैल 1972 में हम दोनों आगरा जाकर उनसे मिले और अपने केस की पूरी जानकारी उन्हें दी। उन्होंने बहुत ध्यान से हमारी बात सुनी। मैंने उनसे निवेदन किया कि हमारा दोष अथवा अपराध बताया जाय, जिसके कारण नियुक्तियों को अस्वीकृत किया गया था। उन्होंने यह बात मानी कि आप लोगों के साथ अन्याय हुआ है। मगर उनका कहना था कि आप मुझे कोई ऐसा क़ानून बताइये जिससे मैं पिछले कुलपति के आदेश पर पुनर्विचार कर सकूँ। मैंने उन्हें ऐसा कानून दिखाने के लिए एक मास का समय माँगा।

कुछ दिनों बाद मैं पचास क़ानून की किताबें दो सन्दूकों में भरकर कुलपति महोदय के पास आगरा पहुँचा। वे उस समय बहुत व्यस्त थे अतः मेरी पूरी बात नहीं सुन सके। मैंने बरेली से कई बार उन्हें फ़ोन किया और उनसे समय लेकर आगरा गया। मैंने उन्हें सब कानून दिखाया और वे सन्तुष्ट हो गए किन्तु वे कहने लगे कि मैं इलाहाबाद हाईकोट के वकीलों से सलाह मशविरा करके कोई निर्णय लूँगा। मैं हारे थके मुसाफ़िर की तरह बरेली लौट आया।

इस बीच मैंने कई बार उनसे फ़ोन पर बात की और उनका इलाहाबाद जाने का कार्यक्रम पूछा। उन्होंने अपना कार्यक्रम बताया। मैंने उनसे निवेदन किया कि यदि वे आज्ञा दें तो मै भी इलाहाबाद आ जाऊँ जिससे अपना पक्ष उनके वकील के सामने रख सकूँ। उन्होंने इलाहाबाद आने की अनुमति दे दी।

मैं इलाहाबाद गया और उनसे मिला। वे व्यस्त थे और उन्होंने दो दिन बाद आने को कहा। मजबूरन मुझे इलाहाबाद में रुकना पड़ा।

दो दिन बाद उन्होने मुझसे पूछा कि तुम क्या चाहते हो ? मैंने कहा, 'नियुक्ति की स्वीकृति'। उन्होंने कहा कि वे आगरा पहुँचकर इस पर विचार करेंगे। मामला फिर जहाँ का तहाँ अटक गया।

दो महीने बाद मैं फिर आगरा गया। मैं कुलपति तथा कुलसचिव श्री प्रेम नारायण मेहरोत्रा से भी मिला। श्री मेहरोत्रा ने स्वीकारा कि हम लोगों के साथ अन्याय हुआ है और वे कुलपति महोदय से बात करेंगे।

कुछ दिनों बाद कुलपति महोदय को फ़ोन किया तो उन्होने कहा कि वे नियुक्ति की स्वीकृति का आदेश शीघ्र ही भेज रहे हैं।

एक महीने तक उनका कोई आदेश प्राप्त नहीं हुआ। बरेली से मैंने कई फ़ोन उन्हें किए किन्तु उनसे बात न हो सकी। मैं फिर आगरा गया तो उन्होंने बताया कि स्वीकृति कॉलेज को भेजी जा चुकी है। मुझे विश्वास हो गया कि हमारे लॉ विभाग के साथियों ने स्वीकृति आदेश को दफ़्तर में इधर-उधर करवा दिया है। मैंने कुल सचिव श्री मेहरोत्रा से प्रार्थना की कि वे स्वीकृति आदेश रजिस्टर्ड डाक द्वारा भेजने की कृपा करें और उसकी एक प्रति मेरे पास भी भेजने का कष्ट करें। वे बहुत समझदार थे। वे समझ गए कि कॉलेज के दफ़्तर में कुछ गड़बड़ की जा रही है। उन्होंने मेरी बात मान ली।

अप्रैल 1973 के दूसरे सप्ताह में रजिस्टर्ड डाक से हमारे पास कुलपति महोदय की स्वीकृति आ गई। हमारे लिए इससे और अधिक खुशी की क्या बात हो सकती थी। न्यायालय में हमने आवेदन पत्र देकर अपना मुक़दमा ख़ारिज करा दिया।

इस प्रकार चार वर्षों तक जबरदस्ती थोपी गई मुक़दमेदारी का अन्त हुआ। मैंने ठंडक की साँस ली।

6 मास पश्चात

एक दिन मैं जिला जज बरेली के न्यायालय में काम कर रहा था तो मेरे एक मित्र वकील ने तीन पृष्ठों का टाइप किया हुआ रजिस्टर्ड पत्र मुझे दिया और कहा कि गोयल साहब, यह पत्र आपसे सम्बन्धित है और किसी ने मेरे नाम से फ़र्ज़ी, आगरा विश्वविद्यालय की कमेटी के एक सदस्य के पास आगरा भेजा है मगर वहाँ से इस कारण लौट आया क्योंकि वे सदस्य अमेरिका गए हुए थे।

मैंने जब पत्र को पढ़ा तो मैं दंग रह गया। यह पत्र चांसलर (गवर्नर उत्तर प्रदेश) को लिखा गया था जिसकी एक प्रति उन सदस्य के पास भेजी गई थी। पत्र में मेरी नियुक्ति से लेकर कुलपति की स्वीकृति तथा इलाहाबाद हाईकोर्ट और बरेली न्यायालय की मुक़दमेदारी का पूरा इतिहास लिखा था। कुलपति श्री बालकृष्ण राव के विरुद्ध आरोप था कि उन्होंने गैर क़ानूनी तरीके से नियुक्ति की स्वीकृति दी है और गवर्नर महोदय कुलपति के विरुद्ध कार्यवाही करें और स्वीकृति को निरस्त करें।

पत्र पढ़कर मुझे हँसी आई और दुख भी हुआ। मुझे विश्वास हो गया कि मेरे तथाकथित मित्र अभी भी मेरा पीछा नहीं छोड़ रहे हैं। उस पत्र में कोई क़ानूनी मुद्दा न होने के कारण कुछ भी नहीं हुआ।

इस प्रकार 17 वर्षों (1968 से 1985) तक मैंने बरेली कॉलेज के लॉ विभाग में अध्यापन कार्य किया तथा 1985 में अवकाश प्राप्त किया।

मुझे रह रह कर वह शेर याद आ रहा था -

ऐ आसमान तेरे खुदा का नहीं है ख़ौफ़
डरते हैं ऐ ज़मीन तेरे आदमी से हम।

जी-12, रामपुर बाग, बरेली
फ़ोन : 0581-475074

'टूटते सत्य' के जिल्दसाज़ पर मुक़दमा

राम प्रकाश गोयल

त्रिकोण प्रेम पर आधारित मनोवैज्ञानिक अपना उपन्यास 'टूटते सत्य' 1972 में मैंने हिमालय ऑफ़सेट प्रिण्टर्स, बरेली जो 'अमर उजाला' दैनिक का एक हिस्सा था, से छपवाया। यह मेरी पहली रचना थी और चाहता था कि कोई त्रुटि प्रूफ में न रहे। 'अमर उजाला' के भरपूर सहयोग से मेरा उपन्यास छप गया।

अब उपन्यास के पृष्ठों की जिल्द बँधने का कार्य होना था। (उन दिनों यह प्रेस जिल्द का कार्य नहीं करता था, केवल छपाई ही होती थी।) मैंने बरेली नगर के कई जिल्दसाज़ों से सम्पर्क किया। अन्त में एक जिल्दसाज़ से बात तय हुई। पुस्तक की 5000 प्रतियों की जिल्द बँधनी थी। अतः जिल्दसाज़ ने दो मास का समय लिया।

पुस्तकें जिल्द बँधने के बाद मेरे पास आ गयीं। मैंने उन पुस्तकों को मित्रों को भेंट करना शुरू कर दिया। अभी एक सप्ताह ही हुआ था कि मित्रों ने पुस्तकें वापिस करनी शुरू कर दीं। कुछ पुस्तकों में अनेक पृष्ठ नहीं थे, कुछ में पृष्ठ दोबारा लगे थे, कुछ मे पृष्ठ उल्टे लगे थे, कुछ में पृष्ठों का क्रम गडबड़ था। यानी अधिकतर पुस्तकों की जिल्द ग़लत और लापरवाही से बाँधी गयी थी जिसके कारण पढ़ने वाले को उपन्यास का पढ़ना न पढ़ना बराबर सा था। पुस्तकों में कुछ पृष्ठों के न होने के कारण उपन्यास को पूरी तरह समझा ही नहीं जा सकता। मुझे बहुत दुख हुआ और जिल्दसाज़ पर क्रोध भी आया।

मैं जिल्दसाज़ के पास गया और उन्हें पुस्तक की वे सब प्रतियाँ दिखायीं और कहा कि उनकी लापरवाही से मेरा बहुत नुक़सान हुआ है और वे इन सब पुस्तकों को एक बार फिर से देखकर उनकी कमियाँ दूर करे और ठीक जिल्द बाँधे। जिल्दसाज़ ने ऐसा करने से साफ़ इन्कार कर दिया।

अब मैं क्या करूँ ? कुछ समझ में नहीं आ रहा था। बहुत सोच विचार करने के बाद मैंने धारा 427 भारतीय दंड विधान का

मुक़दमा फौजदारी अदालत में जिल्दसाज़ के ख़िलाफ दायर कर दिया।

धारा 427 भारतीय दंड विधान में यह प्रविधान है कि यदि कोई व्यक्ति किसी अन्य की सम्पत्ति अथवा वस्तु को इस प्रकार की क्षति या हानि पहुँचाता है जिससे उसकी उपयोगिता व्यर्थ या कम हो जाती है – तो वह 'मिस्चिफ़' का अपराध करता है जिसके लिये उसको दो वर्ष का कारावास का दंड दिया जा सकता है।

जिल्दसाज़ कई तारीख़ पर हाज़िर नहीं हुआ और सम्मन लेना टालता रहा है। अंततः मैजिस्ट्रेट महोदय ने उसके विरुद्ध वारंट गिरफ्तारी भेजा। जिल्दसाज़ बराबर अदालती कार्यवाही पीछे से देखता रहता था। जब उसने समझा कि अब तो वारंट का हुक्म हो चुका है। और अब अदालत में हाज़िर होने के अतिरिक्त कोई चारा नहीं है, तो उसने अदालत में समर्पण करके अपनी ज़मानत करा ली।

कई तारीख़ें वह टालता रहा। मैजिस्ट्रेट ने एक दिन कड़ा रुख़ अपनाकर उससे पूछा कि तुमने ग़लत जिल्दें बनाकर क्यों गोयल साहब का इतना नुक़सान किया और अब ये उपन्यास कोई कैसे पढ़कर समझ सकेगा जब उसमें पृष्ठ ही पूरे नहीं है। उन्होंने यह भी कहा कि इस मामले में उसकी सज़ा हो सकती है। इसके बाद वह मेरे पास आया और अपनी ग़लती और लापरवाही की क्षमा माँगी और कहा कि वह पुस्तकों की जिल्दें ठीक करके सही पृष्ठ लगा देगा। उसने ऐसा करने के लिये एक मास का समय माँगा। एक मास में उसने सब जिल्दें ठीक कीं। तब कहीं जाकर मेरा उपन्यास 'टूटते सत्य' पढ़ने योग्य बन सका। बाद में मैंने मुक़दमा ख़ारिज करा दिया।

जी-12, रामपुर बाग़, बरेली
फ़ोन : 475074

'रिसते घाव' के प्रकाशक पर मुक़दमा

राम प्रकाश गोयल

1992 में दिल्ली के एक प्रकाशक ने मेरा ग़ज़ल संग्रह 'रिसते घाव' छापा। मैंने संग्रह की प्रतियाँ अपने मित्रों को भेंट कीं। कुछ दिन बाद ही अनेक मित्रों ने मुझे पुस्तकें वापस कीं। कारण यह था कि पुस्तकों में अनेक पृष्ठ दोबारा लगे हुए थे और कुछ पुस्तकों में पृष्ठ ही कम थे। कुछ पुस्तकें ऐसी थीं जिनमें कवर और जिल्द पर तो 'रिसते घाव' लिखा था किन्तु अन्दर कोई और ही पुस्तक थी।

इस सम्बन्ध में मैंने प्रकाशक से कई बार फ़ोन पर बात की किन्तु उसने इसे गम्भीरता से नहीं लिया। मैंने उसे नोटिस दिया कि वह पुस्तकें ठीक करे अथवा दूसरी छाप कर दे किन्तु प्रकाशक पर कोई असर नहीं हुआ। मजबूरन मैंने जिला उपभोक्ता संरक्षण फोरम बरेली मे प्रकाशक के विरुद्ध मुक़दमा दायर कर दिया। प्रकाशक का कहना था कि कुछ पुस्तकों में इस प्रकार की त्रुटियाँ स्वाभाविक हैं। फ़ोरम ने उसकी यह बात नहीं मानी और निर्णय दिया कि वह एक मास में ख़राब पुस्तकों को ठीक करे अथवा दोबारा छापकर दें। प्रकाशक ने इस निर्णय पर भी कोई ध्यान नहीं दिया।

उपभोक्ता संरक्षण अधिनियम की धारा 27 में यह प्रविधान है कि यदि कोई व्यक्ति फोरम के आदेश का पालन नहीं करता है तो उसे तीन वर्ष की जेल एवं 10 हजार रुपये का जुर्माना हो सकता है और इसके लिए फ़ोरम वारण्ट गिरफ़्तारी जारी कर सकता है। फोरम ने प्रकाशक के विरुद्ध दिल्ली के पते पर वारण्ट गिरफ़्तारी जारी कर दिया।

प्रकाशक कई तारीख़ों तक वारण्ट टालता रहा। अन्त में एक दिन सुबह मेरे घर आया और रोने लगा एवं मुझसे माफ़ी माँगी। उसने कहा, मैं आपकी सभी किताबें ठीक कर दूँगा या दोबारा छापकर दूँगा, आप मुझे दो मास का समय फ़ोरम से दिलवा दीजिए। मैंने उसकी दयनीय दशा को देखकर उसकी बात मान ली और उसे समय दिलवा दिया।

दो महीने के अन्दर प्रकाशक महोदय फिर आए और उन्होंने सभी ख़राब पुस्तकों को मुझसे वापस लेकर दूसरी ठीक पुस्तकें मुझे दीं।

जी-12, रामपुर बाग़, बरेली

फ़ोन : 475074

टेलीफ़ोन विभाग के विरुद्ध मुक़दमें

राम प्रकाश गोयल

बहुत दिनों से टेलीफ़ोन के बिल ग़लत आ रहे थे। टेलीफ़ोन कई-कई दिन तक ख़राब रहता था। बार-बार शिकायतें करने पर भी न कोई टेलीफ़ोन ठीक करने आता था और न बिल ही ठीक होते थे। जो कॉल मैंने की ही नहीं वे मेरे बिलों में दिखा दी जाती थीं। टेलीफ़ोन से मैं बहुत परेशान हो गया था। लिहाज़ा मैंने टेलीफ़ोन विभाग के ख़िलाफ़ उपभोक्ता संरक्षण फोरम में बिल को सही करने तथा टेलीफ़ोन को ठीक रखने के लिए 1991 में मुक़दमा दायर कर दिया।

विभाग ने मुक़दमे की ख़िलाफ़त की। मैंने समय-समय पर विभाग को दी गई लिखित शिकायतें दाख़िल कीं और बताया कि इतने अधिक रुपयों के बिल कभी नहीं आए जितने इस मुक़दमें में दिए गए बिलों में आए थे। बहस सुनने के बाद फ़ोरम ने निर्णय मेरे पक्ष में दिया और सभी साल बिल निरस्त किए और आदेश दिया कि विभाग नियमित और सही सेवाएँ देता रहे। फोरम ने क्षतिपूर्ति के रूप में 500/- भी मुझे दिलायें।

इस निर्णय के विरुद्ध विभाग ने लखनऊ में राज्य आयोग के समक्ष अपील की किन्तु वहाँ भी कुछ नहीं हुआ।

इसके बाद भी टेलीफोन विभाग का रवैया नहीं बदला और बराबर ग़लत एवं फ़र्जी बिल आते रहे। टेलीफोन भी अधिकतर खराब पड़ा रहता था। मजबूरन मुझे तीन मुकदमे अलग-अलग समय पर विभाग के विरुद्ध और दायर करने पड़े।

इनमें दो मुक़दमें अपील में लखनऊ चल रहे हैं तथा एक मुक़दमा अभी भी बरेली फोरम में विचाराधीन है।

मेरे इन चार मुकदमों का परिणाम यह निकला कि अब फोन की सेवाएँ ठीक हैं और बिल भी सही आ रहे हैं।

अगर मैं ये मुकदमे दायर न करता तो न बिल ठीक आते और न मेरा टेलीफ़ोन ठीक रहता।

जी-12, रामपुर बाग, बरेली
फ़ोन : 475074

बिजली विभाग के विरुद्ध न्यायालय की अवमानना का मुक़दमा

राम प्रकाश गोयल

मेरे मकान का एक भाग बिजली विभाग की किराएदारी में कई वर्षों से था। वह न किराया बढ़ाते थे और न मकान ख़ाली करते थे। मैंने उन्हें कई नोटिस दिए किन्तु उन पर कोई असर नहीं हुआ। मजबूरन मुझे किराया बढ़ाने का मुक़दमा रेन्ट कन्ट्रोल आफीसर के न्यायालय में धारा 21 (8) रेन्ट कन्ट्रोल एक्ट के अन्तर्गत दायर करना पड़ा।

रेन्ट कन्ट्रोल आफीसर ने कुछ किराया बढ़ा दिया किन्तु उतना नहीं बढ़ाया जितना मैंने माँगा था। लिहाजा मैंने ज़िला जज बरेली के न्यायालय में अपील दायर कर दी। दोनों पक्षों की बहस के बाद जज महोदय ने उतना ही किराया बढ़ा दिया जितना मैंने माँगा था। इस बढे हुए किराए को देने के लिए मैंने बिजली विभाग को नोटिस दिया किन्तु उन्होंने किराया अदा नहीं किया। मैंने इसके आधार पर उनके खिलाफ़ मकान ख़ाली कराने का मुक़दमा दायर कर दिया।

उधर विभाग ने अपील के निर्णय के विरुद्ध हाईकोर्ट में रिट दायर कर दी। विभाग ने बहुत कोशिश की कि हाईकोर्ट उन्हें रिट के दौरान मुकदमे की कार्यवाही को रोकने का स्टे आर्डर दे दे किन्तु हाईकोर्ट ने ऐसा नहीं किया।

हाईकोर्ट में लगभग 10 तारीख़ें पड़ीं। मैं हर तारीख़ पर हाईकोर्ट जाता था मगर रिट की सुनवाई नहीं हो पाती थी। अन्त में रिट की सुनवाई हुई और विभाग की रिट ख़ारिज हो गई और अपील द्वारा बढ़ा हुआ किराया वैसा का वैसा रहा।

रिट के ख़ारिज होने के बाद विभाग ने बहुत कोशिश की कि मुक़दमा ख़ारिज हो जाय और उन्हें दफ़्तर खाली न करना पड़े किन्तु न्यायप्रिय जज ने मुक़दमा मेरे पक्ष में निर्णीत किया। विभाग को आदेश हुआ कि वह मकान ख़ाली करे और बढ़ा हुआ किराया अदा करे।

कई महीने तक विभाग ने न किराया अदा किया और न मकान ख़ाली किया। मजबूरन मैंने किराये की वसूली और मकान

ख़ाली कराने के लिए इजराय की कार्यवाही शुरू कर दी।

विभाग बराबर टालमटोल करता रहा। एक दिन विभाग के वकील ने अदालत में यह लिखकर दिया कि विभाग दो महीने में मकान ख़ाली करके किराया अदा कर देगा। मगर दो महीने बीतने पर भी विभाग ने ऐसा नहीं किया।

मैंने विभाग के वरिष्ठ अधिकारियों के ख़िलाफ न्यायालय की अवमानना (कन्टेम्पट ऑफ़ कोर्ट) की कार्यवाही शुरू कर दी। मेरा कहना था कि जब विभाग के वकील ने न्यायालय में यह लिखकर अन्डर-टेकिंग दी है कि वह दो महीने में मकान ख़ाली करके किराया दे देंगे तो उन पर यह बाध्य है कि वे ऐसा करें। यदि नहीं करते हैं तो यह न्यायालय की अवमानना है। इस सम्बन्ध में मैंने सुप्रीम कोर्ट तथा अन्य न्यायालयों के कई निर्णय न्यायालय में प्रस्तुत किए। विभाग बराबर तारीखें लेता रहा।

इसी दौरान मुझे फ़रवरी 1998 में हार्ट अटैक हो गया और मैं बरेली के एक अस्पताल में भर्ती हुआ। बरेली के डाक्टरों का कहना था कि मेरी शल्य चिकित्सा (हार्ट बाईपास सर्जरी) दिल्ली में होनी चाहिए। भगवान की अति कृपा कि विभाग को कुछ सद्‌बुद्धि आई और उसने मेरा किराया बरेली अस्पताल में आकर चेक के जरिये अदा कर दिया। मुझे आप्रेशन के लिए पैसों की सख्त ज़रूरत थी। इस दैविक सहायता से मैंने दिल्ली के अपोलो अस्पताल में अपनी बाईपास सर्जरी कराई और दस दिन तक अस्पताल में रहा।

विभाग ने इस दौरान मकान भी ख़ाली कर दिया किन्तु पानी का ख़र्चा जो हर मास वह देता था, नहीं दिया। मेरा कहना था कि जब तक पूरा पैसा विभाग नहीं देगा तब तक विभाग के वकील की अन्डर टेकिंग पूरी नहीं होगी। न्यायालय ने भी इस पर कड़ा रुख़ लिया और विभाग के अधिकारियों से कहा कि यदि वे यह पैसा नहीं देंगे तो उनके विरुद्ध न्यायालय की अवमानना की कार्यवाही पूरी कर ली जाएगी। अन्त में विभाग ने पानी के ख़र्च का पैसा भी मुझे दिया। विभाग के अधिकारियों के बार-बार निवेदन करने पर मैंने अवमानना का मुक़दमा ख़ारिज करा लिया क्योंकि मैं हर तरह से अपने मुक़दमे में जीत चुका था।

जी-12, रामपुर बाग, बरेली
फ़ोन : 475074

अपने मुवक्किल बैंक के ख़िलाफ मुक़दमा

राम प्रकाश गोयल

कई वर्षों से मैं न्यू बैंक ऑफ इन्डिया बरेली का वकील था और उनके मुकदमे की पैरवी न्यायालय में करता था। बैंक मैनेजर को यह गलतफहमी हो गई कि उसने मुझे कुछ अधिक फीस दे दी है, जो उसे नहीं देनी चाहिए थी। इस गलतफहमी में उसने बिना मेरी स्वीकृति के और बिना मुझे बताए कुछ रुपये मेरे बैंक खाते से निकालकर बैंक के एकाउन्ट में डाल दिए। जब मैंने अपनी पास बुक ठीक कराई तो मुझे इसका पता चला और मैंने बैंक मैनेजर से इसकी शिकायत की। अपनी फीस का हिसाब भी उन्हें समझाया, मगर वे मानने को तैयार न हुए।

मैंने उन्हें नोटिस दिया कि बिना किसी खातेदार की स्वीकृति के उसके खाते से कोई भी पैसा निकालने का अधिकार बैंक को नहीं है और इस प्रकार बैंक की सेवाएँ त्रुटिपूर्ण हैं। मेरे इस नोटिस पर भी मैनेजर ने कोई ध्यान नहीं दिया।

मैं बहुत पशोपेश में था कि अपने मुवक्किल के ख़िलाफ मुक़दमा दायर करूँ कि नहीं। मुझे रह-रहकर यह बात काट रही थी कि बिना मेरी मर्ज़ी के बैंक ने मेरे खाते को क्यों छुआ ? अगर मैनेजर के हिसाब से मेरे पास फीस ज्यादा भी पहुँच गई थी, तो वह मुझे पत्र लिखते और फ़ीस वापिस माँगते या आगे की फ़ीस में समायोजित करते। मैं इस अन्याय को सहने के लिए तैयार नहीं था।

मैंने बैंक मैनेजर के ख़िलाफ़ उपभोक्ता संरक्षण फ़ोरम में मुक़दमा दायर कर दिया और मुक़दमें में कहा कि जो पैसा मेरे खाते से बिना मेरी मर्ज़ी के निकाला गया है उस पैसे को मैनेजर मेरे खाते में जमा करें।

मुक़दमें के दौरान कई तारीखें पड़ती रहीं। एक दिन मैनेजर महोदय मेरे घर आ गए और बोले कि मैं आपकी फ़ीस का हिसाब-किताब समझना चाहता हूँ। मैंने उन्हें हिसाब समझाया तो उल्टे मेरी ही फ़ीस के कुछ रुपये बैंक की तरफ निकले। मैंने जब मैनेजर से कहा तो वे बहुत शर्मिन्दा हुए। मैंने उनसे यह भी कहा कि यह मुक़दमा रुपयों की वजह से दायर नहीं किया है बल्कि इसलिए किया है कि बिना खातेदार की मर्ज़ी के अथवा बिना उसके इल्म में लाए बैंक को उसके खाते को छूने का अधिकार नहीं है। मैनेजर ने अपनी ग़लती मानी और जो रुपया उसने मेरे खाते से निकाला था वह दोबारा डाल दिया।

सरकार के सी0आई0डी0 विभाग पर मुक़दमा

राम प्रकाश गोयल

मेरे मकान के एक हिस्से में पुलिस के सी0आई0डी0 विभाग का कार्यालय कई वर्षों से किराए पर था। वह मकान ख़ाली नहीं करते थे और जब किराया बढ़ाने के लिए कहता था तो टाल देते थे। मैंने किराया बढ़ाने की कार्यवाही सरकार के ख़िलाफ धारा 21 (8) रेन्ट कन्ट्रोल एक्ट के अन्तर्गत, रेन्ट कन्ट्रोल आफ़ीसर के यहाँ शुरू कर दी। सरकार की तरफ़ से मुक़दमे में डटकर पैरवी की गई।

रेन्ट कन्ट्रोल आफ़ीसर ने अपने आदेश में कुछ किराया बढ़ाया किन्तु जितना मैंने माँगा था, वह नहीं दिया। मैंने इस निर्णय के विरुद्ध जिला जज के यहाँ अपील दायर कर दी। विभाग ने भी बढ़े हुए किराए के विरुद्ध ज़िला जज के यहाँ अपील दायर की।

दोनों अपीलों की बहस अतिरिक्त ज़िला जज न्यायालय में एक साथ हुई। जज ने विभाग की अपील ख़ारिज कर दी और मेरी अपील स्वीकार करके मेरे द्वारा माँगा गया किराया सही ठहराया जो 2146/- रुपये प्रतिमाह था।

मैंने बढ़ा हुआ किराया अदा करने को विभाग को नोटिस दिया मगर उन्होंने किराया नहीं दिया। मैंने किराया और बेदख़ली का वाद अप्रैल 1994 में सरकार के ख़िलाफ़ दायर कर दिया। रेन्ट कन्ट्रोल एक्ट में यह प्राविधान है कि यदि किराएदार चार महीने का किराया नोटिस पाने के एक माह के अन्दर भी नहीं देता है तो उसकी बेदख़ली कराई जा सकती है। इसके अतिरिक्त और कोई आधार बेदख़ली का नहीं था। इसी दौरान रेन्ट कन्ट्रोल एक्ट में एक नया प्राविधान यह आ गया कि यदि मासिक किराया दो हज़ार रुपये से अधिक है तो रेन्ट कन्ट्रोल एक्ट के प्राविधान नहीं लगेंगे। मेरा किराया 2146/- रुपये था। इसी आधार पर मुक़दमा मेरे पक्ष में तय हुआ और विभाग को मकान ख़ाली करके मुझे कुल किराया देना पड़ा।

जी-12, रामपुर बाग, बरेली
फ़ोन : 475074

परिशिष्ट

चेतना ! चरित्र !! एकता !!!

अखिल भारतीय साहित्य कला मंच

स्थापना

'अखिल भारतीय साहित्य कला मंच' की अपनी साहित्यिक गतिविधियों, अपने अनेक प्रकाशनों तथा हिन्दी के प्रचार-प्रसार के अपने पारदर्शी उद्देश्यों के कारण भले ही दशकों पुराना-सा लगे किन्तु अपनी उम्र से बहुत बड़ा-सा लगने वाले इस मंच की उम्र मात्र 12 वर्ष है। वर्ष 1988 में 4 मार्च को मंच के संस्थापक अध्यक्ष डॉ० महेश 'दिवाकर' डी०लिट० (हिन्दी), रीडर, हिन्दी विभाग, गुलाब सिंह हिन्दू (स्नातकोत्तर) महाविद्यालय, चाँदपुर (बिजनौर) के आवास पर आयोजित गोष्ठी में उपर्युक्त महाविद्यालय के तत्कालीन अंग्रेजी विभाग के रीडर व अध्यक्ष स्व० डॉ० सुभाष चन्द्र सक्सेना, (मंच के संस्थापक-संयोजक) की अध्यक्षता में यह मंच वैचारिक स्तर पर अस्तित्व में आया।

मंच ने अपनी यात्रा 'नवजात साहित्यकार मंच' के नाम से आरम्भ की। आरम्भ में इसका स्वरुप और क्षेत्र केवल चाँदपुर तक सीमित था। कुछ ही समय में जनपद की सीमाएँ पार कर इसने कई प्रान्तों के सुधी पाठकों / साहित्यकारों को अपनी निजता का परिचय दिया। विस्तृत स्वरूप व क्षेत्र के अनुरूप कुछ परिवर्तन के साथ मंच को 1992 में 'साहित्य कला मंच' नाम दिया गया। मंच के साहित्यिक कार्यों में निरन्तर फैलाव होता रहा। अपने आरम्भ (1988) से मंच ने अनेक महत्वपूर्ण कार्यक्रम आयोजित किए। अनेक काव्य संकलनों व अन्य साहित्यिक ग्रंथों का प्रकाशन किया। अखिल भारतीय स्तर पर साहित्यिक प्रतियोगिताएँ आयोजित की गयीं। कुछ प्रमुख पत्रिकाओं में साहित्यकारों के विशेषांक प्रकाशित कराये गये। मंच की ओर से अब तक प्रकाशित काव्य-संकलनों और ग्रंथों में उल्लेखनीय हैं।, 'यादों के आर-पार', 'तुलसी वांगमय विमर्श', 'प्रणय

गधा प्रेरणा के दीप अतीत की परछाइयाँ 'नेह के सरसिज 'नूतन दोहावली', 'काव्य-धारा', 'बाल सुमनों के नाम', 'समय की शिला पर', 'वंदेमारतम्', 'सम्राट', 'गज़लपुर', 'साहित्यकार बाबू सिंह चौहान : अभिनन्दन ग्रंथ', 'संस्कृत महाकाव्यों में राम का स्वरूप-विकास', 'गुरु गोविन्द सिंह के काव्य में हिन्दी संस्कृति के मूलतत्व', 'धीरज', 'निष्कलंक सुभाष', 'कथाकार नागार्जुन', डॉ0 महेश 'दिवाकर' : सृजन के विविध आयाम', 'आकाश भर आनन्द', 'संवेदना के स्वर', 'एक शिव संकल्प', 'पंत का वैचारिक व्यक्तित्व', 'चक्रव्यूह' आदि। वस्तुत: इन्हीं कुछ उपलब्धियों के कारण 'साहित्य कला मंच' ने भारत के लगभग हर प्रदेश को सुवासित किया है। फलतः 'कार्यकारिणी' ने अपने साहित्यकारों के परामर्श पर वर्ष 1996 में इसका स्वरूप 'अखिल भारतीय साहित्य कला मंच' कर दिया। साथ ही 'मंच' ने मेरठ, बरेली, फैजाबाद, नैमिषारण्य, लखनऊ, सुल्तानपुर, गाजियाबाद आदि नगरों में अपनी शाखाएँ स्थापित की हैं, और यह विस्तार निरन्तर जारी है।

आश्चर्य जनक लग सकता है किन्तु यह सत्य है कि 'अखिल भारतीय साहित्य कला मंच' ही सम्भवतः एक मात्र ऐसा साहित्यिक मच है जिसका अभी तक कोई भी मासिक, वार्षिक अथवा अन्य किसी प्रकार का सदस्यता शुल्क नहीं है। साहित्य के प्रति सहृदयता रही है। 'मंच' के द्वारा आयोजित किए जाने वाले साहित्यिक-समारोहों / आयोजनों और प्रकाशनों का अधिकांश व्यय श्रीमती शान्ति देवी माहेश्वरी, मंच की 'संस्थापक-संरक्षिका' और स्व0 श्री सतीश चन्द्र अग्रवाल, 'संस्थापक-संरक्षक' करते रहे हैं। अब मंच के नये संरक्षक श्री राज कुमार अग्रवाल का सहयोग भी हमें मिलता है। यदा-कदा कुछ स्थानीय समाज-सेवी और सरस्वती के उपासक तथा हिन्दी-प्रेमी भी साहित्यिक-कार्यक्रमों में अपना आंशिक सहयोग करते रहे हैं, जिसके परिणाम स्वरूप माँ सरस्वती की कृपा से 'मंच' के अब तक के सारे साहित्यिक अनुष्ठान सफलता पूर्वक सम्पन्न होते जा रहे हैं। 'मंच' की ओर से प्रत्येक वर्ष स्थायी रूप से स्व0 सतीश चन्द्र अग्रवाल (संस्थापक संरक्षक) की स्मृति में 2101/- का समग्र साहित्य सम्मान / पुरस्कार 1998 निरन्तर दिया जा रहा है जिसे

उनके पुत्र श्री मनोज कुमार अग्रवाल एडवोकेट चांदपुर अपने करकमलों से प्रदान करते हैं

उद्देश्य

'अखिल भारतीय साहित्य कला मंच' अपनी स्थापना से ही अराजनीतिक एवं अव्यावसायिक संस्था के रूप में चिरपरिचित है इसका उद्देश्य 'चेतना, चरित्र एवं एकता का विकास' करना है जिसे बिन्दुश: उद्देश्यों में विभाजित किया गया है –

1 हिन्दी का प्रचार-प्रसार करना और सामयिक गोष्ठियाँ कराना
2 साहित्यकारों को संगठित एवं प्रोत्साहित करना।
3 बाल प्रतिभाओं / नवोदित प्रतिभाओं को प्रकाश में लाना।
4 सांस्कृतिक चेतना व राष्ट्रीय सौहार्द को बढ़ावा देना।
5 अप्रकाशित साहित्य को प्रकाशित करके लोकार्पण-समारोह करना और साहित्यकारों को 'साहित्यश्री' 'कला श्री' व 'पत्रकार श्री' से सम्मानित करना।
6 साहित्यकारों के सम्मान हेतु 'साहित्यिक न्यास' की स्थापना और 'हिन्दी भवन' का निर्माण करना।

प्रतीक

माँ सरस्वती का प्रतीक चिन्ह ही मंच का प्राण है।

मंच की उपलब्धियाँ

मंच द्वारा प्रकाशित एवं सम्पादित पुस्तकें

1 'यादों के आर-पार' (कविता-संकलन).....1988 ई0
2 'तुलसी वांगमय विमर्श' (निबन्ध संकलन) 1989 ई0
3 'प्रणय गंधा' (कविता-संकलन) 1990 ई0
4 'प्रेरणा के दीप' (कविता-संकलन)..........1992 ई0
5 'अतीत की परछाइयाँ' (कहानी-संकलन) 1993 ई0
6 'नेह के सरसिज' (कहानी-संकलन)..........1994 ई0
7. नूतन दोहावली-स्व. सुबोध शर्मा 'नूतन' 1994 ई0
8 'काव्यधारा' (कविता-संकलन) 1995 ई0
9. 'बाल सुमनों के नाम' (बाल कविता-संकलन)........ 1996 ई0

'सम्राट' - लेखक डॉ0 राजवीर सिंह 'क्रान्तिकारी'......1997ई0
'गजलपुर' (ग़ज़ल-संकलन) – सं0 सागर मीरजापुरी.....1997ई0
'समय की शिला पर' (दोहा-संकलन) 1997 ई0
'वंदेमातरम्' (देशभक्ति गीत-संकलन) 1998 ई0
साहित्यकार बाबू सिंह चौहान : अभिनन्दन ग्रन्थ 1998 ई0
संस्कृत महाकाव्यों में राम का स्वरूप-विकास-
डॉ0 अंजू चौधरी.........1998 ई0
गुरु गोविन्द सिंह के काव्य में भारतीय संस्कृति के मूलतत्व-
प0 विश्वप्रकाश दीक्षित 'बटुक'.......1998ई0
'धीरज' (उपन्यास) – लेखक-राजकुमार 'रसिक' 1998ई0
'निष्कलंक सुभाष' - प्रो0 क्रान्तिकारी.........1999 ई0
कथाकार नागार्जुन-लेखक डॉ0 जी0डी0 हरित........1999ई0
डॉ0 महेश 'दिवाकर' : सृजन के विविध आयाम......1999ई0
रुहेलखण्ड के प्रमुख स्वातंत्रयोत्तर साहित्यकार 1999ई0
'आकाश भर आनंद'-कवि योगेन्द्र पाल सिंह विश्नोई2000ई0
'संवेदना के स्वर' – कवि बलवीर सिंह 'वीर' 2000ई0
पंत का वैचारिक व्यक्तित्व – डॉ0 किरन गर्ग.....2000ई0
प्रो0 विश्वनाथ शुक्ल : अभिनन्दन ग्रंथ 2000ई0
'गगन न देगा साथ' – कवि रामलाल 'अंजाना' 2000 ई0
गीतकार गंधर्व सिंह तोमर - अभिनन्दन ग्रंथ.......2000 ई0
भारत की हिन्दी सेवी प्रमुख संस्थाएँ.......2000 ई0
'सारे चेहरे मेरे'..........कवि रामलाल 'अंजाना' 2000 ई0
'चक्रव्यूह' – डॉ0 दिनेश गोस्वामी.......2000ई0
'नयी शती के नाम' – काव्य संकलन.....2001 ई0
प्रो0 राम प्रकाश गोयल : अभिनन्दन ग्रन्थ.........2001 ई0
अभिव्यक्ति और सामाजिक दायित्व............2001 ई0
पीलीभीत के गौरव स्व0 डॉ0 रामकुमार वर्मा
स्मृति ग्रन्थ..........2000 ई0

मंच का वर्तमान स्वरूप

संस्थापक संरक्षक
स्व0 सतीश चन्द्र अग्रवाल
'मोहन भवन'
स्टेशन रोड, चान्दपुर
(बिजनौर) उ0प्र0
दूरभाष : 01345-20350,
21234

संस्थापक संयोजक
स्व0 डॉ0 सुभाष चन्द्र सक्सैना
अध्यक्ष, अंग्रेजी-विभाग
गुलाब सिंह हिन्दू (स्नातकोत्तर)
महाविद्यालय, चान्दपुर
(बिजनौर) उ0प्र0

संस्थापक संरक्षिका
श्रीमति शान्ति देवी माहेश्वरी
'शान्ति भवन', मौ0 साहूवान
चान्दपुर (बिजनौर) उ0प्र0
दूरभाष : 01345-20800
20200

संरक्षक
श्री राजकुमार अग्रवाल
मंडी कोटला
चान्दपुर (बिजनौर) उ0प्र0
दूरभाष : 01345-20763

संस्थापक अध्यक्ष
डॉ0 महेश 'दिवाकर' डी0लिट0
अध्यक्ष, रीडर एवं शोध निदेशक, हिन्दी - विभाग
गुलाब सिंह हिन्दू (स्नातकोत्तर) महाविद्यालय,
चान्दपुर (बिजनौर) उ0प्र0
दूरभाष : 01345-20098 (चान्दपुर)
0591-430111 (मुरादाबाद)

महासचिव
डॉ0 रनवीर सिंह परमार,
पी-एच.डी. (हिन्दी)
सहा. प्रबन्धक (राजभाषा)
8/409, सेक्टर-3, राजेन्द्र नगर
साहिबाबाद, गाजियाबाद, उ0प्र0
दूरभाष : 0120-4631951

कोषाध्यक्ष
गजराज सिंह, सहलेखाकार
गुलाब सिंह हिन्दू (स्नातकोत्तर)
महाविद्यालय, चान्दपुर
बिजनौर, उ0प्र0
दूरभाष : 01345-41045

प्रधान सम्पादक

डॉ0 महेश 'दिवाकर'

जन्म तिथि : 25 जनवरी, 1952
जन्म स्थान : ग्राम-महलकपुर मांफी, दिल्ली रोड, पो0 पकवड़ा, मुरादाबाद, उ0प्र0
शिक्षा : एम0ए0 (हिंदी व अंग्रेजी), पी-एच.डी. एवं डी.लिट्. (हिन्दी)
कार्यक्षेत्र : अध्यक्ष, रीडर एवं शोध निदेशक हिन्दी विभाग, जी0एस0एच0 (पी0जी0) कॉलेज, चाँदपुर (बिजनौर) उ0प्र0
लेखन विधाएँ : कविता, मुक्तक, गीत, दोहा, कहानी, निबन्ध, शोध, समीक्षा, साक्षात्कार, सम्पादन, पत्रकारिता, अनुवाद आदि।
संस्थापक अध्यक्ष : अखिल भारतीय साहित्य कला मंच।
उपसम्पादक : 'राज़कुल', हिन्दी मासिक पत्रिका, दिल्ली 'भाववीथिका', हिन्दी, द्वैमासिक पत्रिका, चन्दक (बिजनौर)
प्रकाशित कृतियाँ : 1. मौलिक कृतियाँ - एक दर्जन से अधिक 2. सम्पादित कृतियाँ - दो दर्जन से अधिक।
सम्मान / पुरस्कार : देश-विदेश की हिन्दी सेवी अनेकानेक संस्थाओं द्वारा विभिन्न अलंकरणों / उपाधियों से सम्मानित।
सम्पर्क : ए-57, चन्द्र नगर, मुरादाबाद (उ0प्र0)
दूरभाष 0591 43011